Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

श्री शिव महापुराण

भाषा

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

3,924
20.12.69

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

श्री
शिव महापुराण-भाषा

(सम्पूर्ण—सातौंकाण्ड)

प्रकाशकः—
श्री कृष्ण पुस्तकालय
बम्बई
मन्त्रों में मुद्रित

Sh. Ghulam Mohamed & Son
Booksellers & Publishers
MAISUMA BAZAR.
SRINAGAR.

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

* ॐ नमः शिवाय *

* सचित्र *

श्री शिवमहापुराण-भाषा

(सम्पूर्ण-सातों खण्ड)

3924
294.592
Pwr | Vinyas

सम्पादकः
पं० बसन्तलाल व्यास

प्रकाशकः

श्रीकृष्ण पुस्तकालय

बम्बई

अक्षरों में मुद्रित

सन् १९६८

द्वितीय संस्करण]

[मूल्य १४)

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

प्रकाशक—
श्री कृष्ण पुस्तकालय
वृन्दावन दरवाजा,
मथुरा।

द्वितीय संस्करण
सर्वाधिकार सुरक्षित
१९६८

Archaeological Survey of India,
Frontier Circle Library, Srinagar.
Acc. No: 3924
Date ... 20.12.69

मुद्रक—
रामायण प्रेस,
मथुरा।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

श्री शिव-महापुराण

—की—

* विषयानुक्रमणिका *

अध्याय	विषय	पृष्ठ
	शिवार्चन विधि ६ से ३२ तक माहात्म्य	
१	महापुराण की महिमा	३३
२	देवराज को शिव लोक प्राप्ति	३५
३	चंचुला वैराग्य	३७
४	चंचुला वैराग्य शिवपद प्राप्त	३६
५	बिन्दुग उद्धार	४१
६	शिव पुराण श्रवण बिधि	४३
७	श्रोताओं के पालन करने योग्य नियम	४६
	१ विद्येश्वर संहिता	
१	प्रयाग में मुनियों का समागम	४६
२	संहिताओं के भेद	५०
३	ब्रह्माजी का उपदेश	५२
४	सनत्कुमार व्यास सम्बाद	५३
५	लिंगेश्वर परिचय	५४
६	ब्रह्मा विष्णु युद्ध	५५
७	शिव निर्णय	५६
८	ब्रह्मा का अभिमान भंग	५७
६	शिव जी का ज्ञानोपदेश	५८
१०	ब्रह्मा विष्णु के उपदेश	५६
११	शिवलिंग स्थापन विधि	६१
१२	शिवक्षेत्र का वर्णन	६३
१३	सदाचार का विवेचन	६४
१४	यज्ञ आदि का विवेचन	६६
१५	स्थापन व काल का निरूपण	६८
१६	पार्थिव का पूजन	६६
१७	प्रणय पंचाक्षरी का माहात्म्य	७१
१८	बन्ध और मोक्ष	७२
१६	पूजा भेद	७५
२०	पार्थिव पूजन रूप	७६
२१	शिवलिंग की संख्या	७८
२२	शिव नैवेद्य और विल्व महात्म्य	७६
२३	शिव नाम महिमा	८०
२४	भस्म-महिमा	८१
२५	रुद्राक्ष-माहात्म्य	८४
	२—रुद्र संहिता	
१	ऋषिगणों की वार्ता	८७
२	नारद की काम विजय	८८
३	नारद मान भंग	६०
४	विष्णु को श्राप	६२
५	नारद ब्रह्मा वार्ता	६३
६	तत्व वर्णन	६४
७	बुन्या उत्पत्ति	६६
८	प्रवण व्याख्या	६७
६	ब्रह्मा विष्णु को उपदेश	१००
१०	ब्रह्मा विष्णु और रुद्र की आयु	१०१
११	शिव पजन विधि	१०१
१२	देवताओं के उपदेश	१०३
१३	शिवपूजन विधि	१०४
१४	पुष्पों द्वारा शिव पूजन फल	१०५
१५	कलाश आदि की उत्पत्ति	१०८
१६	सृष्टि-उत्पत्ति	१०६
१७	पापी गुणनिधि	११२
१८	गुणनिधि मोक्ष	११३
१६	गुणनिधि को कुबेर पद प्राप्ति	११५
२०	सदाशिव का कैलाश गमन	११६
	रुद्र संहिता सती खण्ड	
१	सती चरित्र	११७
२	शिव पार्वती चरित्र	११८
३	ब्रह्मा काम सम्वाद	११६
४	काम रति विबाह	१२१
५	शिवजी का वरदान	१२२
६	संध्या की तपस्या	१२३
७	संध्या चरित्र	१२५
८	ब्रह्माजी का कामदेव को वरदान	१२६

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

अध्याय	विषय	पृष्ठ
९	ब्रह्मा-कामदेव संबाद	१२७
१०	ब्रह्मा और विष्णु संवाद	१२८
११	काली आख्यान	१२९
१२	दक्ष द्वारा देबी की आराधना	१३०
१३	ब्रह्मा नारद संवाद	१३१
१४	सती का लालन पालन	१३२
१५	सती की तपस्या	१३३
१६	शिवजी से विवाह की प्रार्थना	१३३
१७	उमा को बर प्राप्ति	१३५
१८	शिव सती विवाह	१३६
१९	ब्रह्माजी पर शिवजी का कोप	१३७
२०	ब्रह्मा की विरूपता वर्णन	१३८
२१	शिव-सती बिहार	१३९
२२	शिव-सती का हिमालय गमन	१३९
२६	शास्त्रों के मोक्षादि वर्णन	१४०
२४	सती-शंका	१४२
२५	शिवजी का सती से वियोग	१४३
२६	दक्ष का शिव से विरोध	१४६
२७	दक्ष यज्ञ	१४७
२८	सती का दक्ष-यज्ञ में आना	१४८
२९	सती का अपमान	१५०
३०	सती का देह त्याग	१५१
३१	आकाशवाणी	१५१
३२	वीरभद्र और महाकाली की उत्पति	१५२
३३	सैन्य जुटाव	१५३
३४	आकाशवाणी	१५४
३५	दक्ष को शिवोपदेश	१५४
३६	वीरभद्र का युद्ध	१५६
३७	दक्ष का शिर छेदन	१५७
३८	दधीच की अमरत्व प्राप्ति	१५८
३९	विष्णु-दधीच-संवाद	१५९
४०	ब्रह्माजी का उद्योग	१६१
४१	दक्ष का पुन-जीवित होना	१६२
४२	सतीखंड का श्रुतिफल	१६४

रुद्र संहिता—पार्वती खंड

१	हिमालय विवाह	१६६
२	पूर्व कथा	१६७
३	उमा की स्तुति	१६९
४	देवताओं को सान्त्वना	१६९
५	हिमाचल का तप	१७०
६	पार्वती जन्म	१७२
७	नारदजी का उपदेश	१७२
८	पार्वती का स्वप्न	१७३
९	भौम जन्म	१७४
१०	शिव-हिमाचल संवाद	१७५
११	शिव-पार्वती संवाद	१७६
१२	वज्राङ्ग जन्म	१७८
१३	तारकासुर का जन्म और तप	१८०
१४	तारकासुर का स्वर्ग त्यागना	१८२
१५	कामदेव का शिवजी के पास गमन	१८३
१६	कामदेव द्वारा प्रयत्न	१८३
१७	कामदेव का भस्म होना	१८५
१८	शिव-क्रोधाग्नि की शान्ति	१८६
१९	पार्वती को नारद का उपदेश	१८८
२०	पार्वती की तपस्या	१८९
२१	देवताओं का शिवजी के पास आना	१८९
२२	शंकरजी की स्वीकृति	१९०
२३	पार्वती जी की परीक्षा	१९२
२४	शिवजी द्वारा परीक्षा	१९४
२५	शिव पार्वती संवाद	१९५
२६	पार्बतीजी को शिव दर्शन	१९६
२७	शिव-पार्वती संवाद	१९७
२८	शिवजी द्वारा पार्वती याचना	१९८
२९	शिव माया वर्णन	१९९
३०	सप्त ऋषियों का आगमन	२०१
३१	वशिष्ठ मुनि का उपदेश	२०२
३२	अनरण्य राजा की कथा	२०४
३३	पद्मा पिप्पलाद की कथा	२०६
३४	शिव के पास सप्त ऋषियों का आगम	२०८
३५	लग्न पत्री भेजना	२०९
३६	मण्डप रचना	२१०
३७	शिवजी का देबों को निमन्त्रण	२१०
३८	वर यात्रा	२१२
३९	मण्डप वर्णन	२१४
४०	देवों तथा पर्वतों का मिलाप	२१५
४१	शिब की अनुपम लीला	२१६
४२	मैना को समझाना	२१८
४३	शिव का स्वरूप वर्णन	२२१
४४	वर आगमन वर्णन	२२२
४५	हिमाचल के घर में प्रवेश	२२३
४६	हिमाचल द्वारा कन्यादान	२२४
४७	ब्रह्मा को मोह होना	२२५
४८	शिवजी से हँसी	२२६
४९	शिव द्वारा काम को जीवन दान	२२८

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्याय	विषय	पृष्ठ
५०	बढ़हार तथा शिव शयन	२२९
५१	शिव यात्रा	२३०
५२	पतिव्रता-धर्म वर्णन	२३२
५३	शिव का कैलाश गमन	२३४
	रुद्र संहिता—कुमार खंड	
१	शिव पार्वती बिहार	२३६
२	स्वामी कार्तिकेय का जन्म	२३७
३	स्वामी कार्तिकेय का चरित्र	२४०
४	कार्तिकेय की खोज और नन्दी संवाद	२४२
५	कुमाराभिषेक	२४३
६	कुमार का चरित्र	२४५
७	युद्धारम्भ वर्णन	२४६
८	देवासुर युद्ध	२४७
९	तारकासुर की वीरता	२४८
१०	तारकासुर बध	२४९
११	कुमार को प्रलम्ब विजय	२५०
१२	कार्तिकेय चरित्र	२५१
१३	गणेश चरित्र	२५१
१४	गणों से गणेशजी का विवाद	२५३
१५	गणों से गणेशजी का युद्ध	२५५
१६	गणेश शिरौच्छेदन	२५६
१७	गणेश जीवन	२५७
१८	गणेश गौरव	३५९
१९	गणेश विवाद का उपक्रम	२६०
२०	गणेशजी का विवाह	२६२
	रुद्र संहिता—युद्ध खंड	
१	त्रिपुरासुर की कथा	२६४
२	देवताओं द्वारा स्तुति	२६५
३	भूतों और त्रिपुरों का धर्म	२६६
४	नास्तिक शास्त्र का प्रादुर्भाव	२६८
५	नास्तिक मत से त्रिपुर-मोहन	२७०
६	त्रिपुर वध की कथा	२७२
७	देवताओं द्वारा शिव स्तवन	२७३
८	शिव-रथ का निर्माण	२७४
९	शिव यात्रा	२७५
१०	तारकासुर वध	२७६
११	देवगणों को बरदान	२७७
१२	देवताओं द्वारा वर प्राप्ति	२७८
१३	इन्द्र को जीव-दान	२७९
१४	जलंधर की उत्पत्ति	२८०
१५	देव जलन्धर युद्ध	२८२

अध्याय	विषय	पृष्ठ
१६	विष्णु जलन्धर युद्ध	२८४
१७	विष्णु जलन्धर युद्ध	२८५
१८	नारद का कपट जाल	२८६
१९	दूत सम्वाद	२८७
२०	शिवगणों का असुरों से युद्ध	२८९
२१	द्वन्द युद्ध	२९१
२२	शिव जलन्धर युद्ध	२९२
२३	वृन्दा का पतिव्रत भंग	२९४
२४	जलन्धर वध	२९६
२५	देवों द्वारा स्तुति	२९७
२६	तुलसी का आभिर्भाव	२९८
२७	शंखचूड़ उत्पत्ति	२९९
२८	शंखचूड़ विवाह	३००
२९	शंखचूड़ राज्य प्रशंसा	३०१
३०	देवगणों का प्रस्थान	३०२
३१	शिवजी द्वारा आश्वासन	३०३
३२	पुष्पदन्त-शँखचूड़ वार्ता	३०४
३३	शंकर की युद्ध यात्रा	३०५
३४	शंखचूड़ की युद्ध यात्रा	३०५
३५	शंखचूड़ का दूत भेजना	३०६
३६	देव दानव युद्ध	६०७
३७	शंखचूड़ का युद्ध	३०७
३८	भद्रकाली का युद्ध	३०९
३९	शंखचूड़ की सेना संहार	३१०
४०	शंखचूड़ वध	३११
४१	तुलसी शाप वर्णन	३१२
४२	हिरण्याक्ष वध	३१३
४३	अन्धक जन्म की कथा	३१६
४४	अन्धक की अन्धता	३१७
४५	युद्धारम्भ	३१९
४६	अन्धक युद्ध समाप्ति	३२१
४७	शुक्राचार्य का निगल जाना	३२३
४८	शुक्र की मुक्त करना	३२३
४९	अन्धक का गाणपत्य वृतान्त	३२४
५०	शुक्र को मृतसंजीवनीविद्या प्राप्ति	३२६
५१	बाणासुर आख्यान	३२७
५२	ऊषा चरित्र वर्णन	३२९
५३	ऊषा बिहार	३३१
५४	कृष्णादि युद्ध वर्णन	३३२
५५	बाणासुर भुजा खंडन	३३३
५६	बाणासुर को गाणपत्य पद प्राप्ति	३३४
५७	गजासुर बध वर्णन	३३५

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

अध्याय	विषय	पृष्ठ
५८	निर्ऋतादि वध	३३६
५९	विदल उत्पल दैत्यों का बिनाश	३३७

शिवमहापुराण–उत्तरार्द्ध

(३) सतरुद्र संहिता

१	शिव के पाँच अवतार वर्णन	३४०
२	शिव मूर्ति वर्णन	३४२
३	अर्द्धनारीश्वर शिव	३४२
४	ऋषभदेव चरित्र	३४३
५	शिवअवतार वर्णन	२४५
६	नन्दिकेश्वर अवतार	३४६
७	नन्दीश्वर अवतार	३४८
८	भैरव अवतार	३४९
९	भैरवजी का अभिवादन	३५२
१०	नरसिंह लीला वर्णन	३५४
११	शरभअवतार	३५५
१२	शरभावतार वर्णन	३५७
१३	शिवानर वरदान	३५७
१४	गृहपति अवतार	३५९
१५	गृहपति अवतार वर्णन	३६०
१६	यज्ञेश्वर अवतार	३६२
१७	शिव दशावतार	३६४
१८	एकादश रुद्रों की तत्पति	३६५
१९	दुर्वासा चरित्र	३६६
२०	हनुमान अवतार	३६८
२१	महेश अवतार बर्णन	३७०
२२	वृषभावतार वर्णन	३७०
२३	अवतार लीला वर्णन	३७२
२४	पिप्पलाद चरित्र	३७४
२५	पिप्पलाद लीला	३७६
२६	वैश्यनाथ अवतार	३७७
२७	द्विजेश्वर अवतार	३७९
२८	यतिनाथ हंस रूप अवतार	३८२
२९	कृष्णदर्शन अवतार	३८३
३०	अवधूतेश्वर अवतार	३८५
३१	भिक्षुवर्य अवतार	३८७
३२	सुरेश्वर अवतार	३८९
३३	ब्रह्मचारी अवतार	३९२
३४	सुनट नर्तक अवतार	३९५
३५	शिवजी का द्विज अवतार वर्णन	३९५
३६	अश्वत्थामा अवतार बर्णन	३९८
३७	पाण्डवों को व्यास दर्शन	४००

अध्याय	विषय	पृष्ठ
३८	शिवजी किरात अवतार	४०२
३९	किरातावतार	४०५
४०	किरात अर्जुन विवाद	४०६
४१	किरातेश्वर महादेव की कथा	४०७
४२	द्वादश ज्योतिर्लिंग	४०९

(४) कोटिरुद्र संहिता

१	ज्योतिर्लिंग एवं उपलिंग का वर्णन	४१२
२	पूर्व दिशा के शिवलिंग	४१४
३	अनुसूइया तथा अत्रि का तप	४१५
४	अत्रीश्वर महिमा वर्णन	४१७
५	नन्दिकेश महिमा	४२०
६	ब्राह्मणी सदगति	४२१
७	नन्दिकेश्वर महिमा	४२५
८	महाबल शिवमहात्म्य	४२७
९	चण्डाली की मुक्ति	४२८
१०	महाबल शिव माहात्म्य बर्णन	४३०
११	पशुपतिनाथ माहात्म्य	४३२
१२	लिंगरूप का कारण	४३३
१३	बटुक नाथ की उत्पत्ति	४३८
१४	सोमेश्वर नाथ की उत्पत्ति	४३८
१५	मल्किार्जुन की उत्पति	४४०
१६	महाकालेश्वर उत्पति	४४१
१७	महाकाल महिमा	४४१
१८	ओंकारेश्वर महिमा	४४५
१९	केदारेश्वर महिमा	४४७
२०	भीम उपद्रव वर्णन	४४७
२१	भीमेश्वर उत्पत्ति	४५०
२२	काशीपुरी में शिवागमन	४५१
२३	बिश्वेश्वर महिमा	४५३
२४	गोतम प्रभाव	४५५
२५	गोहत्या का दोष	४५६
२६	गौतम गङ्गा का प्राकटय	४५८
२७	अम्बकेश्वर महिमा	४६०
२८	वैद्य नाथेश्वर महिमा	४६१
२९	राक्षसों का उपद्रव	४६४
३०	नागेश्वर की उत्पत्ति तथा महिमा	४६५
३१	रामेश्वर महिमा बर्णन	४६७
३२	सुदेहा की कथा	४६८
३३	घुश्मेश्वर शिव की उत्पत्ति	४७१
३४	विष्णु की सुदर्शन प्राप्ति	४७३
३५	शिव सहस्त्रनाम	४७४

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

अध्याय	विषय	पृष्ठ
३६	सहस्त्रनाम फल	४८४
३७	शिव भक्तों की कथा	४८४
३८	शिवरात्रि व्रत विधान	४८६
३९	उध्यापन विधि	४८६
४०	निषाद चरित्र	४९०
४१	मुक्ति वर्णन	४९४
४२	सगुण निर्गुण भेद	४९५
४३	ज्ञान निरूपण	४९६
	(५) उमा सँहिता	
१	कृष्ण उपमन्यु सम्वाद	५००
२	शिव भक्तों का आख्यान	५०२
३	शिव माहात्म्य वर्णन	५०३
४	शिव माया वर्णन	५०६
५	महान पातकियों का वर्णन	५०७
६	पाप पुण्य का वर्णन	५०८
७	नरक वर्णन	५१०
८	नरक वर्णन	५१२
९	साधारण नरक गति वर्णन	५१३
१०	नरक भोग वर्णन	५१४
११	अन्नदान महिमा	५१६
१२	जल दान तथा तप महिमा	५१७
१३	पुराण महात्म्य	५१९
१४	सामान्य दानों का वर्णन	५२०
१५	पाताल लोक वर्णन	५२१
१६	मुक्ति के उपाय	५२१
१७	जम्बू दीप का वर्णन	५२३
१८	सातों द्वीपों का वर्णन	५२५
१९	राशि एवं लोक वर्णन	५२७
२०	तप से मुक्ति के उपाय	५२९
२१	युद्ध धर्म वर्णन	५३१
२२	देह तथा वैराग्य	५३२
२३	बाल अवस्था के दुःख	५३४
२४	स्त्री स्वभाव वर्णन	५३६
२५	काल का ज्ञान वर्णन	५३७
२६	काल चक्र के निवारण के उपाय	५४०
२७	शिव प्राप्ति	५४३
२८	छाया पुरुष का बर्णन	५४४
२९	आदि सृष्टि का वर्णन	५४५
३०	सृष्टि रचना क्रम	५४६
३१	सृष्टि वर्णन	५४७
३२	कश्यप बंश का वर्णन	५४९

अध्याय	विषय	पृष्ठ
३३	सृष्टि वर्णन	५५०
३४	मन्वन्तर उत्पत्ति	५५१
३५	वैवस्वत मन्वन्तर	५५४
३६	मनुपुत्रों का कुल वर्णन	५५५
३७	मनुवँश वर्णन	५५८
३८	सागर वंश वर्णन	५५९
३९	वैशश्वत वँश के राजाओं का वर्णन	५६०
४०	श्राद्ध कल्प प्रभाव	५६१
४१	सात व्याध पुत्र	५६३
४२	हिमरों का प्रभाव	५६४
४३	आचार्य पूजन का नियम	५६५
४४	व्यास जी का जन्म	५६८
४५	मधु कैटभ बध, महाकाली वर्णन	५६८
४६	महालक्ष्मी अवतार	५७०
४७	चन्ड मुन्ड आदि का वध	५७२
४८	सरस्वती का प्रकट होना	५७४
४९	उमा की उत्पति	५७५
५०	शताक्षी अवतार	५७६
५१	क्रिया योग वर्णन	५७८
	(६) कैलाश संहिता	
१	व्यासजी से सौनकादि की बार्ता	५८१
२	पार्वतीजी का प्रणवप्रश्न	५८३
३	प्रणव पद्धित	५८४
४	सन्यास आचार	५८६
५	सन्यास मँडल की विधि	५८७
६	सन्यास पद्धति का न्यास	५८८
७	शिवजी का ध्यान और पूजन	५८९
८	वरण पूजा बर्णन	५९०
९	प्रणव पद्धति	५९१
१०	सूतोपदेश बर्णन	५९२
११	बामदेब द्वारा ब्रह्मा निरूपण	५९३
१२	सन्यास की विधि	५९५
१३	प्रणव का अर्थ	५९६
१४	शिव रूप वर्णन	५९७
१५	उपासना मूर्ती	५९८
१६	शिव तत्व विबेचन	५९९
१७	सृष्टि क्रम वर्णन	६००
१८	शिष्य करने की बिधि	६०१
१९	योग पट्ट वर्णन	६०३
२०	स्नानादि विधि	६०३
२१	योगियों के मरने के बाद	६०५

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

अध्याय	विषय	पृष्ठ
२२	एकादशी पद्धति	६०५
२३	शिष्य धर्म वर्णन	६०७

(७ वायवीय—संहिता (पूर्वार्द्ध)

१	विछावतार का कथन वर्णन	६०८
२	ब्रह्माजी से प्रश्न	६११
३	नैमिषारण्य की कथा	६१४
४	वायु का आगमन	६१४
५	शिव तत्व वर्णन	६१५
६	शिवतत्व ज्ञान	६१७
७	काल महिमा	६१८
८	तीनों देवों की आयु	६२०
९	प्रलय कर्ता का वर्णन	६२१
१०	सृष्टिरचना-क्रम	६२२
११	सृष्टि आदि का वर्णन	६२५
१२	सृष्टि वर्णन	६२६
१३	ब्रह्मा-विष्णु सृष्टि वर्णन	६२८
१४	रुद्र की उत्पत्ति	६३१
१५	शिवशिवा की स्तुति	६३१
१६	मैथुनी सृष्टि	६३२
१७	मनु की सृष्टि	६३३
१८	दक्ष को शिव-शाप	६३५
१९	वीरगण का यज्ञ में जाना	६३७
२०	दक्ष यज्ञ का वर्णन	६३९
२१	देवदण्ड वर्णन	६४०
२२	देवों पर शिव कृपा	६४१
२३	मन्दराचल पर निवास	६४३
२४	कालिका की उत्पत्ति	६४५
२५	सिंह पर दया	६४७
२६	श्री गौरी मिलाप	६४८
२७	सोम, अग्नि ज्ञास	६४९
२८	छः मार्गों का वर्णन	६५०
२९	सगुण निर्गुन भेद	६५२
३०	ज्ञानोपदेश	६५४
३१	अनुष्ठान का विधान	६५८
३२	पाशुपत व्रत का रहस्य	६६१
३३	उपमन्यु की भक्ति	६६४
३४	उपमन्यु की कथा	६६६

अध्याय	विषय	पृष्ठ

वायवीय—संहिता (उत्तरार्द्ध)

१	श्री कृष्ण को पुत्र प्राप्ति	६६९
२	शिवगुणों का वर्णन	६७०
३	अष्ट मूर्ति वर्णन	६७१
४	गौरीशंकर की विभूति	६७२
५	पशुपतित्व ज्ञानयोग	३७३
६	शिव तत्व वर्णन	६७४
७	शिव तत्व वर्णन	६७५
८	व्यासावतार चरित्र	६७६
९	शिव-शिष्य वर्णन	६७७
१०	शिवोपासना निरूपण	६७८
११	ब्राह्मण कर्म निरूपण	६७९
१२	पंचाक्षर मंत्र महिमा	६८०
११	कलि नाशक मंत्र	६८१
१४	व्रत ग्रहण विधान	६८३
१५	दीक्षा विधि	६८४
१६	शिव भक्ति वर्णन	६८५
१७	शिव दीक्षा विधि	६८७
१८	षड़ध्व शुद्धि निरूपण	६८९
१९	साधन भेद निरूपण	६९०
२०	अभिषेक प्रकार	६९१
२१	नैमित्तिक कर्म निरूपण	६९२
२२	पूजन न्यास निरूपण	६९३
२३	मानसिक पूजन	६९४
२४	पूजन निरूपण	६९५
२५	नित्य कृत्य विधि	६९५
२६	साँगो पांग पूजन	६९६
२७	अग्नि कृत्य विधान	६९६
२८	नैमित्तिक पूजन विधि	६९८
२९	काम्य कर्म निरूपण	६९९
३०	पूजन विधान	७००
३१	शिवस्तोत्र	७००
३२	कर्म निरूपण	७०१
३३	योगगति में विघ्न	७०२
३४	योग वर्णन	७०४
३५	नैमिषारण्य से गमन	७०५
३६	मुनियों को मोक्ष	७०७

—o—

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

सम्पादकीय

जिस प्रकार श्री मद्भागवत् साक्षात कृष्ण का वाङ्मय स्वरूप है, श्री रामायण श्री राम का वाङ्मय स्वरूप है इसी प्रकार शिवपुराण भी भगवान शिव का वाङ्मय स्वरूप है। अत् शिव पुराण को शिवरूप ही मान कर भक्ति श्रद्धा से पूजन तथा अध्ययन एवम् मनन् करना चाहिये।

भगवान शङ्कर वैदिक देव हैं, और उनकी लिंग पूजा ही सनातन है, यह लिंग पूजा आर्यों द्वारा ही प्रचलित है। शिवलिंग चिन्मय है, यह स्थूल अङ्ग विशेष नहीं है। चिन्मय आदि पुरुष ही लिंग है जिससे चराचर विश्व की उत्पत्ति हुई है लिंग पीठ अर्थात प्रकृति ही पार्वती हैं और लिंग चिन्मय पर ब्रह्म पुरुष हैं। पीठ श्री अम्बा मय है और शिवलिंग चिन्मय पुरुष हैं। सारा ब्रह्माण्ड लिंग के अनुरूप ही बनता है। ब्राह्मण सभी ज्योतिर्लिङ्ग अनन्त कोटि हैं, चराचर विश्व की सृष्टि लिंग ही के अन्तरगत है, लिंग मय है और अन्त में लिंग में ही सारी सृष्टि का लय होता है।

यथा

आकाशं लिंग मित्याहुः पृथ्वी तस्य पीठिका।
आलयः सर्व देवानां लयना लिंग मुच्यते॥

आकाश लिंग है पृथिवी उसकी पीठिका है सब देवताओं का आलय है। इसमें सब का लय होता है इसीलिये इसे लिंग कहते है।

शिव पुराण शिव भक्तों के लिये साक्षात् प्राण स्वरूप है। इसी विचार को रखते हुए शिव पुराण का भाषानुवाद अत्यन्त सरल व रोचक भाषा में किया है। यदि इससे जनता ने लाभ उठाया तो मैं तथा प्रकाशक अपने परिश्रम को सफल मानेंगे।

पं० बसन्तलाल व्यास

श्री कृष्ण जयन्ती

सं० २०२३

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

* शिवोपासना *

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च
नमः शङ्कराय च मयस्कराय च
नमः शिवाय च शिवतराय च ॥

॥ अथ शिवस्तुति चालीस ॥

❀ दोहा ❀

जै गणेश गिरजा सुवन, मङ्गल मूल सुजान ।
कहत अयोध्या दास तुम देव अभय वरदान ॥

॥ चौपाई *

जै गिरजा पति दीनदयाला । सदा करत सन्तन प्रतिपाला ॥
भाल चन्द्रमा सोहत नीके । कानन कुण्डल नाग फनी के ॥
अङ्ग गौर शिर गङ्ग बहाये । मुण्डमाल तनछार लगाये ॥
वस्त्र खाल बाघम्बर सोहै । छबि को देख नाग मुनि मोहै ॥
मैंना मातु कि हवे दुलारी । बाम अङ्ग सोहत छवि न्यारी ॥
कर त्रिशूल सोहत छबि भारी । करे सदा शत्रुन क्षयकारी ॥
नन्दि गणेश सो हैं तहँ कैसे । सागर मध्य कमल है जैसे ॥
कार्तिक श्याम और गणराऊ । या छविको कहि जात न काऊ ॥
देवन जबही जाय पुकारा । तबही दुख प्रभु आप निहारा ॥
किया उपद्रव तारक भारी । देवन सब मिलि तुमहि जुहारी ॥
तुरत षड़ानन आप पठायउ । लवनिमेष महँ मारि गिरायउ ॥
आप जलंधर असुर संहारा । सुयश तुम्हार बिदित संसारा ॥
त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई । सबहिं कृपाकर लीन बचाई ॥
किया तपहिं भागीरथ भारी । पुरब प्रतिज्ञा तासु पुरारी ॥
दानिन महँ तुमसम कोउ नाहीं । सेवक स्तुति करत सदाही ॥
वेद नाम महिमा तव गाई । अकथ अनादि भेद नहि पाई ॥
प्रगटेउ दधिमंथन में ज्वाला । जरे सुरासुर भये बिहाला ॥
कीन्ह दया तहँ करी सहाई । नीलकण्ठ तव नाम कहाई ॥
पूजन रामचन्द्र जब कीन्हा । जीत के लङ्क विभीषण दीन्हा ॥
सहस कमल के हो रहे धारी । कीन्ह परीक्षा तबहिं पुरारी ॥
एक कमल प्रभु राखे गोई । कमलनैन पूजन चह सोई ॥
कठिन भक्ति देखी प्रभु शंकर । भये प्रसन्न दिये इच्छित बर ॥

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

जय जय जय अनन्त अविनासी। करत कृपा सबके घट वासी॥
दुष्ट सकल नित मोहि सतावै। भ्रमत रहे मोहि चैन न आवै॥
त्राहि त्राहि मैं नाथ पुकारो। यहि अवसर मोहि आन उबारो॥
लै त्रिशूल शत्रुन को मारो। सकट से मोहि आन उबारो॥
मात पिता भ्राता सब होई। संकट में पूछत नहीं कोई।
स्वामी एक है आस तुम्हारी। आप हरहु अब सङ्कट भारी॥
धन निरधन को देत सदाहीं। जो कोई जाँचे बा फल पाहीं॥
अस्तुति केहि विधि करौं तुम्हारी। क्षमहु नाथ अब चूक हमारी॥
शङ्कर हो शङ्कट के नाशन। विघ्न बिनाशन मङ्गल कारन॥
योगी यती मुनि ध्यान लगावै। शारद नारद शीश नवावैं॥
नमो नमो जै नमो शिवाये। सुर ब्रह्मादिक पार न पाये॥
जो यह पाठ करै मन लाई। तापर होत हैं शम्भु सहाई॥
ऋनिया जो कोई हो अधिकारी। पाठ कर सो पावन हारी॥
पुत्र होन कर इच्छा कोई। निश्चय शिवप्रसाद ते होई॥
पंडित त्रियोदशी को लावै। ध्यान पूर्वक होम करावें॥
त्रयोदशी व्रत करैं हमेशा। तन नहिं ताके रहे कलेशा॥
धूप दीप नैवेद्य चढ़ावै। शंकर सन्मुख पाठ सुनावै॥
जन्म जन्म के पाप नसावै। अन्त बास शिवपुर में पावै॥
लहे अयोध्या आस तुम्हारी। जानि सकल दुख हरहु हमारी॥

॥ दोहा ॥

नित्त नेम कर प्रात ही, पाठ करो चालीस।
तुम मेरी मनकामना, पूर्ण करहु जगदीश॥
मृगसर छठि हेमन्त ऋतु सम्वत चौंसठ आन।
अस्तुति चालीसा शिवहिं, पूर्ण कीन कल्यान॥

॥ अथ शिवस्तुति प्रारम्भ ॥

श्री गिरिजापति बन्दि कर, चरण मध्य शिरनाय।
कहत अयोध्या दास तुम, मोपर होहु सहाय॥

❀ कवित्त ❀

नन्दी की सवारी नाग शृङ्गीकर धारी नित, सन्त सुखकारी नीलकण्ठ त्रिपुरारी है। गले मुंडमाला भारी; सिरसोहे जटाधारी, बाम अङ्ग में बिहारी; गिरिजा सुतवारी है॥ दानी बड़े भारी शेष शारदा पुकारी, काशीपति मदनारी कर शूल चक्रधारी हैं।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

कला उजियारी लख देव सो निहारी यश गावैं वेद चारी सो हमारी रखवारी हैं ॥ १ ॥
शंभु बैठे मृगछाला अङ्ग हो रहे निहाला पीवैं भंग का प्याला अहि अङ्ग पैं चढ़ाये हैं।
गले सो है मुण्डमाला, कर डमरू विशाला, अरु ओढ़ै मृगछाला, भस्म अङ्गमें लगाये हैं ॥
सग सुरभीं सुतशाला, करै जगत प्रतिपाला मृत्यु हरते हैं अकाला शीश जटाको बढ़ाये हैं ॥
कहे रामलाला करो मोहि तुम निहाला गिरजापति आला जैसे काम को जलाये हैं ॥ २ ॥
भारा है जलंधर और त्रिपुर को सहारा जिन जारा है काम जाके शीश गंग धारा है।
धारा है अपारा जासु महिमा है तिनलोक, भाल सोहे चन्द्र जाकी सुखमाकी सारा है ॥
सारा बात सब खाया हलाहल जानि जक्त के अधार जाहि वेदन उचारा है।
चारा है भाग जाके द्वार है गिरीश कन्या कहत अयोध्या सोई मालिक हमारा है ॥३॥
अष्ट गुरु जानीं जाके मुख वेदबानी भवन में भवानी सुख सम्पति लहा करे।
मुण्डन के माल जाके चन्द्रमा ललाट सोहे दासन के दास जाके दारिद दहा करैं ॥
चारो द्वार बन्दी जाके द्वारपाल नन्दी कहत कवि अनन्दी नाहक नर हहाकरै।
जगत रिसाय यमराज को कहा बसाय शङ्कर सहाय तो भयङ्कर कहा करैं ॥ ४ ॥

सवैया—गौर शरीर में गौरि बिराजत मौर जटा शिर सोहत जाके।
नागन को उपवीत लसे ये अयोध्या कहै शशिभाल मैं वाके ॥
दान करैं पल में फल चारि औ टारत अङ्क लिखे विधना के।
शङ्कर नाम निमंक सदाही भरोसे रहे निशि वासर ताके ॥ ५ ॥

दोहा—मगसर मास हेमन्त ऋतु, छठ दिन है शुभबुद्ध।
कहत अयोध्या प्रातः ही, शिवके विनय 'समुद्ध ॥

* भजन *

नमामि तात शङ्करं सुरम्य चन्द्र शेखरम्। नमः उमा महेश्वरं स्वभक्त कल्प पादयम् ॥
त्वमेकमीकमीश्वरं शिवमं अनादि आधि दैवतत्। नमामि प्रेम मंगल, जगद्गुरुच शाश्वतम्

* भजन *

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर पाहिमाम। मनमथेश्वर मनमथेश्वर मनमथेश्वर त्राहिमाम।
गंग धारी ताप हारी सौख्यकारी एतिमाम। कष्ट गंजन भय विभंजन् इष्ट दानं देहि माम ॥

* त्रिगुणा आरती शिवजी की *

जे शिव ओंकारा हरिशिव ओंकारा, ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्धङ्गी धारा ॥ टेक ॥
एकानन चतुरानन पन्चानन राजो, हंसानन गरुड़ासन वृषवाहन छाजैं ॥ जो शिव० ॥
दो भुज चार चतुर्भुज दशभुजते सोहै, त्रिगुणारूप निखरता त्रिभुवन जनमोहै ॥ जें शिव० ॥
अक्षमाला बनमाला मुण्डमाला धारी, चंदनमृग मदचंद्र भालपैंसो है शुभकारी ॥ जैंशिव० ॥
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे, ब्रह्मादिक सनकादिक भूतादिक संगे। जै शिव० ॥

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

करके मध्य कमंडल चक्र त्रिशूल धरता, जगकरता जगभरता जगसंहार करता ॥ जैशिव ॥ ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका, प्रणवाक्षर दोउ मध्ये ये तीनों एका ॥ जैशिव० ॥ त्रिगुणात्मक की आरति जो कोई गावै, भणत शिवानन्दस्वामी सुख संपति पावै ॥जैशिव॥

❀ शिवजी की दूसरी आरती ❀

शीश गङ्ग अर्धपार्वती सदाविराजत कैलाशी । नंदीभृङ्गी नृत्य करत हैं गुनिभक्तन शिवकी दासी ॥ शीतल मंद, सुगन्ध पवन् वहै बैठे हैं शिव अविनाशी । करत गान गन्धर्व सप्तसुर रागरागनी सब गासी । यक्ष रक्ष भैरवजहँ डोलत बोलत हैं बन के वासी । कोयल शब्द सुनावत सुन्दर भ्रमण करत है गुञ्जसी । कल्पद्रुम अरुपारिजात तरु लागत हैं जहँ लक्षयासी कामधेनु कोटिक जहं डोलत करत फिरत हैं भिक्षासी ॥ सूर्यकांति सम पर्वत शोभित चंद्र कांति भवसी बासी । छअ ऋतु निति फलत रहत हैं पुष्प चढ़त हैं वर्षासी ॥ देव मुनि जनकी भीड़ पड़त हैं निगम रहत जो नित गासी । ब्रह्मा विष्णु जाका ध्यान धरत हैं कछु शिव हमको फरमासी ॥ ऋषि सिद्धि के दाता शङ्कर सदा अनन्दित सुख रासी । जिनके सुमिरण सेवा करे ते टूट जाय यम की फांसी॥त्रिशूल धरजीको ध्यान निरन्तर मन लगाये कर जो ध्यासी । दूर करे बिपता शिवतनुकी जन्म शिवपद पासी ॥ कैलाशी काशीके बासी अविनाशी मेरी सुधि लीज्यो । सेवक जान सदा चरणीन को अपनो जान दरश दीज्यो ॥ तुम तो प्रभूजी सदा सयाने ओगुण मेरे सब ढकियो । सब अपराध क्षमाकर शङ्कर किंकर की विनती सुणियो

* भजन कीर्तन *

भजमन शंकर भोलानाथ डमरू मधुर बजाने वाले । पूरन ब्रह्म सदा अविनाशी शीश जटा जल गङ्ग विलासी ॥ मुक्ती हेतु बसाई काशी विजया भोग लगाने वाले । अङ्ग बिभूति गले मुन्डमाला, कर त्रिशूल पहिरे मृगछाला । भोले ऐसे दीन दयाला बिगड़े काम बनाने वाले । सकल मनोरथ पूरण कारा भावीउ मेट सकें त्रिपुरी ॥ गिरजा पति कैलाश विहारी प्रभू महादेव कहाने वाले । जो नित गान प्रभू का गावे, सब सुख भोग परम पद पावे । सेवक निशि दिन शीश नवावे, आवागमन छुड़ाने वाले ।

* भजन *

दानी कहुँ शंकर सम नाही । दीन दयालु दिबोई भावै, जाचक सदा सोहाही ॥ मारिकै मार थप्यो जग में, जाकी प्रथम रेख भटमाहीं । ता ठाकुर की रीझि निवाजिबो, कह्यो क्यों परत मो पाही ॥ जो कोटि करि जो गति हर सों, मुनि मांगत सकुचाही । वेद विदित तेहि पद पुरारि पुर, कीट पतंग समाहीं ॥ ईत उदार उमापति परिहरि, अनत जे जाचन जाही ॥ ,तुलसीदास, । मूढ़मांगते, कबहुँ न पेट अघाही ॥

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

।। अथ शिवमहिम्न् स्तोत्रम् ।।

महिम्नः पारन्ते परमविदुषो यद्यसदृशी, स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरिः ।
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधिगृणन्, ममाप्येषस्तोत्रे हर निरपवाद, परिकरः ॥
अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयोरतद्व्यावृत्त्यायं चकितमभिधत्ते श्रुतिरिपि ।
स कस्य स्तोतव्यः कतविधिगुणः कस्य विषयः,पदे त्वर्वाचीने पपति न मनः कस्य न वचः।
मधुस्फीता वाचः परममृतं निर्मितवतस्तवब्रह्मन् किं वागबिसुरगुरो विस्मपदम् ।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः, पुनामीत्यर्थेऽस्मिम् पुरमथनबुद्धि र्व्यवसिता ॥
तवैश्वर्य यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्, त्रयीवस्तुव्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासुनुषु ।
अभव्यानामस्मिन्वरद रमणीयामरमणीं विहन्तुं व्याक्रोशी विदधत इहैके जडधियः ॥
किमीहःकिङ्कायः स खजु किमुपायस्त्रिभुवनम्,किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च ।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुः स्थो हतधियः, कुतर्कोऽयंकाँश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः ॥
अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगनामधिष्ठातारं कि भवविधिरनादृत्य भवति ।
अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरो यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे ॥
त्रयी साङ्ख्यं योग पशुपतिमतं वैष्णवमिति, प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च ।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां नृणामेको गम्यस्त्वमसिपयसामर्णव इव ॥
महोक्षः खट्वाङ्गम्परशुरजिनं भस्म फणिनः, कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम् ।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति तु भव द्भ्रूप्रणहितां, नहि स्वत्मारामं विषय मृगतृष्णा भ्रमयति ॥
ध्रुवं कश्चित् सर्व सकलमपरस्तव ध्रुवमिदं, ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गहति व्यस्तविषये ।
समस्तेऽप्येतस्मिन्पुरमथन तैर्विस्मित इव, स्तुवञ्जिहेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ॥
तवैश्वर्यं यत्नाद्यदुपरिविरञ्चिर्हरिरधः, परिच्छेदत्तुं यातावनलमनिलस्कन्धवपुषः ।
ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरुणद्भ्याँ गिरिश यत् स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनु वृत्तिर्नफलति ॥
अयत्नादापाद्य त्रिभुवनम वैरव्यतिकरं, दशास्यो यद्बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान् ।
शिरःपद्मश्रेणी रचितचरणाम्भोरुहबले, स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमि दम् ॥
अमुष्य त्वत्सेवा समधिगतसारं भुजवनं, वलात्कैलासेऽपि त्वदधिवसतौविक्रमयतः ।
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलितांगुष्ठशिरसि, प्रतिष्ठा त्वय्यासीद्ध्रुवमुपचितोनुह्यति खलः ॥
यदृद्धि सुम्त्राम्णो वरुद ! परमोच्चैरपि सतीमधश्चक्रेबाणः परिजनविधेयस्त्रिभुवनः ।
न तच्चित्रं तस्मिन्वरिबसितरित्वच्चरणयोः, न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः ॥
अखण्डब्रह्माण्डत्रयचकितदेवासुरकृपा, विधेयस्याऽसीद्यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः ।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरूते न श्रियमहो, विकाराऽपिश्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः ॥
असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे, निवर्तन्ते नित्यं जगति जयनो यस्य विशिखाः ।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत्, स्मरःस्मर्तव्यात्मा न हि वशिषु पथ्यः परिभवः॥
महो षादा पादाघातादवजति सहसा संशयपदम्, पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहणम् ।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

मुहुर्द्यौर्दास्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा, जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता ।
वियद्व्यापीतारागणगुणितफेनोद्गम रुचिः, प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते ।
जगद् द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमित्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिमदिव्यं तव वपुः ॥
रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिगेन्द्रो धनुरथो; रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति ।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधिर्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः ॥
हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयोर्यदेकोने तस्मिन्निजमुदहरन्नेत्रकमलम् ।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा, त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम् ॥
क्रतौ सुप्ते जागृत्वमसि फलयोगे क्रतुमताम्, क्व कर्म प्रध्वस्तं फलातिपुरुषाराधनमृते ।
अतस्त्वां संप्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः ॥
क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृताम्, ऋषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः ।
क्रतुभ्रंसस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः ॥
प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरम्, गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा ।
धनुःपाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुम्, त्रसन्तन्तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः ।
स्वलावण्याशंसा धृतधनुषमह्नायतृणवत, पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वापुरमथन पुष्पायुधमपि ।
यदिस्त्रैणं देवी यमनिरतदेहार्धघटनाद्, अवैतित्वामद्धा वत वरद मुग्धा युवतयः ॥
स्मशानेष्वक्रीडास्मरहर पिशाचाः सहचराश्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकराटीपरिकरः ।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलम्, तथापि स्मर्तॄणां वरद परमं मङ्गलमसि ॥
मनः प्रत्यक्चित्तैः सविधमवधायात्तमरुतः, प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिल्लोत्सङ्गितदृशः ।
यदालोक्याह्लादंह्रद इव निमज्यामृतमये, दधत्यन्वस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान् ॥
त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वंहुतवहस्त्वमापस्त्वं व्योमत्वमुधरणिरात्मत्वमिति च ।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतु गिरम्; न विद्मस्तत्तत्त्वंवयमिह तु यत्त्वं न भवसि ॥
न्नयी त्रिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपिसुरा, नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्णविकृति ।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभि, समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम् ॥
भवःशर्वो रुद्र, पशुपतिरथोग्रः सह महाँस्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम् ।
अमुष्मिन्प्रत्येकं प्रविचरति देवः श्रुतिरपि, प्रियायास्मै धाम्नेप्रणिहितनमस्योऽस्मि भवते ॥
नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो, नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः ।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो, नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति शर्वाय च नमः ॥
बहुलरजसे विश्वत्पत्तौ भवाय नमो नमः, प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः ।
जनसुखकृते सत्वोद्रिक्तोमृडाय नमो नमः, प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः ॥
कृशपरिणतिचेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं, क्वच तव गुणसीमोल्लङ्घिनीशश्वदृद्धिः ।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्वरदचरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् ॥
असितिगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे, सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी ।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं, तदपि तव गुणानामीशपारं न याति ॥

असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौलेर्ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य ।
सकलगुणवरिष्ठ पुष्पदन्ताभिधानो, रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार ॥

CC-0. ASI Srinagar Circle Jammu Collection

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

अहरहनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान्यः ।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथात्र, प्रचुरतरधनायुः पुत्रवानकीर्तिमांश्च ॥
महेशान्नपरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्तितत्त्वगुरोःपरम् ।
दीक्षा दानं तपस्तीर्थज्ञानंयागादिकाः क्रियाः । महिम्नस्तवपाठस्य कलांनार्हन्तिषोडशीम् ॥
कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः शशिधरवरमौलेर्देवदेवस्य दासः ।
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्यरोषात्; स्तवनमिदमकार्षीद्दिव्यदिव्यं महिम्नः ॥
सुरवरमुनिपूज्य स्वर्गमोक्षैकहेतु पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः ।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः स्तवनमिदममाघं पुष्पदन्तप्रणीतम् ॥
श्रीपुष्पदन्तमुखपङ्कजनिर्गतेन स्तोत्रेण किल्विषहरेण हरप्रियेण ।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः ॥
आममाम्नमिद स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्वभाषितम् । अनौपम्यं मनोहारि शिवमीश्वरवर्णनम् ।
तव तत्त्वन जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर । यदृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः ।
एककालँ द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः । सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते ।
इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः । अर्पिता तेन देवेशप्रीयतां मे सदाशिवः ॥

॥ शिवताण्डवस्तोत्रम् ॥

जटाकटाहसंभ्रमभ्रमन्निलिम्प निर्झरी विलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्धनि । धगद्धग-द्धगज्ज्वलल्ललाट पट्टपावके किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम ॥ १ ॥ जटाटवीगलज्जल-प्रवाहपावितस्थले गलेऽवलम्ब्यलम्बितांभुजङ्गतुङ्गमालिकाम् । डमड्डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं चकारचंडतं तनोतु नःशिवः शिवम्॥२॥धराधरेन्द्रनंदिनीविलासबन्धुबन्धुर स्फुरद्दिगन्तसंतति-प्रमोदमानमानसे। कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापति क्वचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि।३। जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभाकदम्बकुङ्कमद्रवप्र लिप्तदिग्वधूमुखे।मदान्धसिंधुरस्फुरत्त्वगुत्त-रीयमेदुरे मनोविनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि ॥४॥ ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभा निपीतपन्चसायकं नमन्निलिम्पनायकम् । सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं महाकपालिस-म्पदेशिरोजटालमस्तु नः॥५॥ सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर प्रसूनधूलिधोरणी विधूसराङ्घ्रि-पीठभूः । भुजङ्गराजमालयानिबद्धजाटजूटकः श्रियैचिरायजायताञ्जकोरबन्धुशेखरः ॥ ६ ॥ करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज्वलद्धनञ्जयाहुतीकृतप्रचण्डपन्चसायके । धराधरेन्द्रनन्दिनी-कुचाग्रचित्रपत्रकप्रकल्पनैकशिल्पनित्रिलोचनेरतिर्मम ॥७ ॥ नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदुर्धरस्फुर-त्कुहूनिशीथिनीतमःप्रबन्धबद्धकन्धरः । निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतुकृत्तिसुन्दरःकलानिधानबन्धुर श्रियं जगद्धुरन्धरः ॥ ८ ॥ प्रफुल्लनीलपंकज पन्चकालिमप्रभावलम्बिकंठकन्दलीरुचि वद्ध-कंधरम् । स्मरच्छिदंपुरच्छिदंभवच्छिदंमखच्छिदं गजच्छिदान्धकच्छिदंमन्तकच्छिदंभजे ॥९॥ अखर्वसर्वमङ्गलाकलाकदम्बमञ्जरीरसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम्। स्मारान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं गजान्तकान्धकान्तकन्तकन्तमन्तकान्तकं भजे॥१०॥जयत्यदभ्रविभ्रमस्फुरद्भु-जङ्गमश्वसद्विनिर्गमक्रमस्फुरत्करालभालहव्यवाट् । धिमिद्धिमिद्धिमिद्ध्वनन्मृदुङ्गमंङ्गल-

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

ध्वनिक्रमप्रवर्त्तितप्रचण्डताण्डवः शिवः ॥११॥ दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजोर्गरि-ष्ठ रत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षयोः । तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः । सगप्रवृत्तिकःकदा सदा शिवं भजाम्यहम् ॥१२॥ कदानिलिम्पनिर्झरीनिकुन्जकोटरेवसन् विमुक्तयुर्मतिः सदा शिरस्थमन्जलिं वहन् । विमुक्तलोललोचनो ललामभाललग्नक शिवेतिमन्त्रमुच्चरन्सदासुखी-भवाम्यहम् ॥१३॥ निलिम्पनाथनागरीकदम्बमौलिमल्लिका निगुम्फनिर्भरक्षरन्मधूष्णिका मनोहरः । तनोतु नो मनोमुदं विनोदिनीमहर्निशं परश्रियःपरम्पदन्तङ्गजत्विषाच्छाय ॥१४॥ प्रचण्डवाडवानल प्रभाशुभप्रचारिणी महाष्टसिद्धिकामिनीजनावहूतजल्पना । विमुक्तवामला-चनाविवाहकालिकध्वनिः शिवेतिमन्त्रभूषणाजगज्जयायजायताम् ॥१५॥ पूजावसानसमयेदश वक्त्रगीतं यः शम्भुपूजनमिदं पठति प्रदोषे । तस्यस्थिरा रथगजेंद्र तुरङ्गयुक्ता लक्ष्मीं सदैं-वसुमुखीं प्रददाति शम्भूः ॥१६॥

॥ अथ श्री शिवाष्टकम् ॥

प्रभुं प्राणनाथ विभुं विश्वनाथं जगन्नाथसदानन्दभाजाम् ॥ भवद्भव्य भूतेश्वर शिव शङ्कर शम्भुमीशानमीडे ॥१॥ गले मुण्डमाल तनौ सर्पजाल महाकालकाल गणेशा-धिपालम् ॥ जटाजूट गङ्गोत्तरगैविशाल शिव कङ्कर शम्भु मीशानमीडे ॥२॥ मुदामाकर मण्डनं मण्डयन्तं महामंडलं भस्मभूषाधरन्तम् । अनादिह्यपहारं महामोहमारं शिवं शंकर शम्भुमीशानमीडे ॥३॥ तटाधो निवासं महाट्टाट्टहासं महापापनाशं सदा सुप्रकाशम् ॥ गिरिशं गणेशं सुरेशँ महेशं शिवँ शङ्करं शम्भुमीशानमीडे ॥४॥ गिरीन्द्रात्मजा संगृहीतर्धदेह गिरौ संस्थितं सर्वदासन्नगेहम् ॥ परब्रह्मब्रह्मादिभिर्वन्द्यमानं शिवशङ्करं शंभुमीशनमीडे ॥५॥ कपालं त्रिशूलं कराभ्यां दधानं पदाम्भोजकाम्राय कामं ददानम् ॥ बलीबर्दयानंसुराणांप्रधान शिवं शङ्कर शम्भुमीशानमीडे ॥ शरच्चन्द्रगात्रं गुणानन्दपात्रं त्रिनेत्रं पवित्रं धनेशस्य मित्रम् ॥ अपर्णाकलत्रं चरित्रं विचित्रं शिवं शङ्कर शुम्भुमीशानमीडे ॥७॥ हरं सर्पहारं चिताभू विहारं भवं वेदासारं सदानिर्विकारम् ॥ स्मशाने वसन्तं मनोजं दहन्तं शिवं शङ्करं शंभुमीशानमीडे ॥८॥ स्तवं यः प्रभाते नरःशूलपाणेः पठेत्सर्वदाभर्ग भावानुरक्तः ॥ सपुत्रं धनं धान्यमित्रं कलत्रं विचित्रं समसाद्यमोक्षं प्रयाति ॥९॥

॥ शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम् ॥

श्री गणेशाय नमः ॥ नागेन्द्रहाराय त्रिलो चनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय । नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मैं नकाराय नमः शिवाय ॥१॥ मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वरप्रथमनाथमहेश्वराय । मन्दारपुष्पबहु-पुष्पसुपूजिताय तस्मैं मकाराय नमः शिवाय ॥२॥ शिवाय गौरीवन्दनाब्जवृन्दसूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय । श्रीनीलकण्ठाय वृषाभाध्वजाय तस्मै शिकाराय नमः शिवाय ॥३॥ वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्यमुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय । चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मैं वकारायः नमः शिवाय ॥४॥ यक्षस्वरूपाय जटाधाराय पिनाकहस्ताय सनातनाय । दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै यकाराय नमः शिवा ॥५॥ पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ । शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥६॥

CC-0. ASI Srinagar Circle. Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

।। अथ शिव मानस पूजा ।।

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं नानारत्नविभूषितं मृगमदा मोदांकितं चन्दनम् ।। जातीचम्पकविल्वपत्ररचितं पुष्पं च धूपं तथा दीपं देव ! दयानिधे ! पशुपते ! हृत्कल्पितं गृह्यताम् ॥ १ ॥ सौवर्णे मणिखण्डरत्नरचिते पात्रे घृतं पायसं भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं पानकम् ॥ शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखण्डोज्वलं ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु ।। २ ॥ छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं वीणा भेरि मृदङ्ग काहल कला गीतं च नृत्यं तथा । साष्टांग प्रणतिः स्तुतिर्बहुविधे चैतत्समस्तं मया ॥ संकल्पेन समर्पितं तव विभो पूजा गृहण प्रभो ! ॥ ३ ॥ आत्मा त्वं गिरिजापतिः सहचराः प्राणाःशरीरं गृहं पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः । संचारः पदयोः प्रदक्षिण विधि स्तोत्राणि सर्वा गिरा यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ॥ ४ ।। करचरणकृतंवाक्कायजं कर्मजंवा । श्रवणनयनजंवा मानसंवाऽपराधम् ॥ विहितमबहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व । जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शम्भो ॥ ५ ॥

।। अथ लिंगाष्टकस्तोत्रम् ।।

ब्रह्ममुरारिसुरार्चितलिंगं निर्मलभाषितशोभितलिंगम् । जन्मज्जदोषविनाशन लिंगं तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम् ॥ १ ॥ देवमुनिप्रवरर्चितलिंगं । काम दहं करुणाकरलिंगम् ॥ रावणदर्पविनाशनलिंगं तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥ २ ॥ सर्वसुगन्धिसुलेपितलिंगं बुद्धिविबर्धनकारणलिङ्गम् ॥ सिद्धसुरासुरवन्दित लिंगं तत्प्रणमामि सदा शिवलिंगम् ॥३॥ कनक महामणि भूहितलिंगं फणिपतिवेष्टितशोभितलिंगम्।।दक्षसुयज्ञविनाशनलिंगं तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥ ४ ।। कुंकुमचन्दनलेपितलिंगं पंकजहारसुशोभितलिंगम्॥सश्चित्पापविनाशनलिंगं तत्प्रणामामि सदाशिवलिंगम् ॥ ५ ॥ देवगणार्चितसेवितेलिंगं भावैर्भक्तिभिरेव च लिङ्गम् ॥ दिनकरकोटिप्रभाकरलिंग तत्प्रणामामि सदाशिवलिंगम् ॥ ६ ॥ अष्टदलोपरिवेष्टितलिंगं सर्व समुद्भु वकारणलिंगम् । सुरगुरुसुरवरपूजितलिंग सुरवनपुष्पसदार्चितलिंगम् ॥ ७॥ परात्परं परमात्मकलिंगम् तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम् ॥८॥ लिंगाष्टाकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ शिवलोकमवाप्नोनि शिवेन सह मोदते ।। ९ ॥

।। अथ शिवापराधक्षमापनस्तोत्रम् ।।

आंदौ कर्म प्रसङ्गात् कलयति कलुषं मातृकुक्षौस्थितं मां बिण्मूत्रामेध्यमध्ये कथयति नितरां जाठरो जातवेदाः यद्यद्वैतत्र दुःख व्यथयति नितराँ शक्यते केन वक्तम् । क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेवशम्भो ॥ १ ॥ बाल्ये दुःखातिरेकान्मललुलितवपुः स्तन्यपाने पिपासा नो शक्तश्चेन्द्रियेभ्यो भवगुणजनिता जन्तवो मां तुदन्ति ॥ नानारोगादि, दुःखाद्रुदनपरवशः शङ्करन स्मरामि क्षन्तव्यो मेपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेवशम्भो

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

॥२॥प्रौढाऽहं योवनस्थो विषयविषधरैःपञ्चभिर्मर्मसन्धो दष्टो नष्टो विवेकः सुतधनयुवतिरवा दसौख्ये निपण्णः ॥ शैवीचिन्ताविहीनं मम हृदयमहो मानगर्वाधिरूढं क्षन्तव्यो मेपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेवशम्भो ॥३॥ वार्द्धक्ये चन्द्रियाणां विगतगतिमतिश्चाधिदैवाधितापैःपापैरोगैर्वियोगैं स्त्वनवसितवपुः प्रौढिहीनं च दीनम् ॥ मिथ्या मोहाभिलाषैर्भ्रमति मममनो धूर्जटेर्ध्यान शून्यम् । क्षन्तव्यो मेपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो॥४॥ नो शक्यं स्मार्तकर्मप्रतिपदगहनं प्रत्यवायाकुलाख्यम् । श्रौते वार्ता कथं मे द्विजकुल विहिते ब्रह्ममार्गे सुसारे ॥ ज्ञानो धर्मो विचारैः श्रवणमननयोः किं निदिध्यासितव्यम् । क्षन्तव्यो मेपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेवशम्भो ॥ ५ ॥ स्नात्वा प्रत्यूषकाले स्नपनविधिविधौ नाहृतं गाङ्गतोयम् पूजार्थं वा कदाचिद् बहुतरगहनात्खण्डविल्वोदलानि॥ना नीता पद्ममाला सरसि विकसिता गन्ध पुष्पैस्त्वदर्थम् क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिवभो श्रीमहादेवशम्भो ॥ ६ ॥ दुग्धैर्मध्वाज्यक्तैर्दधिसितसहितैः स्नापितं नैव लङ्गम् । नो लिप्तं चन्दनाद्यैःकनक बिरचितैः पूजितं न प्रसूनैः॥ धूपैः कर्पूरदीपैर्विविधरसयुतैर्नैव भक्ष्योपहारैः।क्षन्तयोमेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेवशम्भो ॥ ध्यात्वा चित्ते शिवाख्यं प्रचुरतधनं नैव दत्तं द्विजेभ्यः । हव्यंते लक्षसंख्यैर्हुतवहवदने नार्पितं बीजमन्त्रैः॥ नो तप्तं गङ्गतीरे व्रतजपनियमैं रुद्रजाप्यैर्न वेदैः । क्षन्तव्योमेपराध शिव शिव शिव भो श्रीमहादेवशम्भो।(८ ॥ स्थित्वा स्थाने सरोजे प्रणवमयमरुत्कुण्डले सूक्ष्म मार्गे । शान्ते स्वान्ते प्रलीने प्रकटितविभवे जयोतिरूपे पराख्ये ॥ लिङ्गज्ञे ब्रह्मवाक्ये सकलतनुगतं न स्मरामि । क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेवशम्भो ॥९॥ नम्नी निः सङ्गशुद्धस्त्रिगुणाविरहितो ध्वस्तमोहान्धकारो । नासाग्रे न्यस्तदृष्टिर्विदितभवगुणो नैव दृष्टः कदाचित् ॥ उन्मन्यावस्थया त्वाविग तकलिमलं शङ्कर न स्मरामि । क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेवशम्भो ॥१०॥ चन्द्रोद्भासित शेखरे स्मरहरे गङ्गाधरे शङ्करे । सर्पैर्भूषितकण्ठकर्णविवरे ॥ दन्तित्वक्कृतसुन्दराम्बरधरे त्रैलोकयसारे हरे मोक्षार्थं कुरु चित्तवृत्तिमखिलामन्यैस्तु किं कर्मभिः ॥११॥ किं बाऽनेन धनेन बाजिकरिभिः प्राप्तेन राज्येन किम् । किं वा पुत्रकलमित्रपशुभिः देहेन गेहेन किम ॥ ज्ञात्वैतत्क्षणभंगुरं सपदि रे त्याजयं मनो दूरतः स्वात्मार्थं गुरुवाक्यतो भज भज श्रीपार्वतीवल्लभम् ॥ १२ ॥ आयुर्नश्यति पश्चतां प्रतिदिनं याति क्षय यौवनम् । प्रत्यायान्तिगताः पुनर्न दिवसा कालो जगद्भक्षक ॥ लक्ष्मीस्तौत्र तरंगभङ्गचपला पिद्युच्चलं जीवितम् । तस्मान्मां शरणागतं शरणदस्त्वं रक्ष रक्षा धुना ॥१३॥ कर चरणकृत वा कायज कर्मज वा । श्रवणनयनज वा मानस वापराधम् । विहितमहित वा सर्वमेतत्क्षमस्व जय जय करुणाब्धे श्री महादेवशम्भो ॥१४॥

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

॥ अथ शँकरांष्टम् ॥

शीर्षजटा गणभारं गरलाहारं समस्तसंहारम् । कैलासाद्रिविहारं पारं भववारिधे रहं वन्दे ॥१॥ चन्द्रकलोज्ज्वलभालं कंठव्यालं जगत्त्रयीपयलम् । कृतनरमस्तकमालं कालं कालस्य कोमलं वन्दे ॥२॥ कोपेक्षणहातकाम स्वात्मारामं नगेन्द्रजावामम् । संस्मृतिशोक विरामं श्याम कंठेन कारणं वन्दे ॥३॥ कटि तट विलसितनांगं खंडितयागं महाद्भुत-त्याग विगतविषयरसरागं भाग यज्ञेषु विभ्रतं वन्दे ॥४॥ त्रिपुरादिकदनुजान्तँ गिराजाकान्तँ सदैव संशान्तम् । लीलाविजितकृतांतं भांतं स्वान्तेषु देहिना वन्दे ॥५॥ सुरसरिताप्लुतकेशं त्रिदशकुलेशं हृदालयावेशम् । विगताशेषक्लेश देशं सुर्वेष्टसंपद वन्दे ॥६॥ करतलकलित-पिनाकँ निगतजराकँ सुकर्मणां पाकँ परपदश्वीतवराकँ नाकङ्गमपूगवदिन्ताँ वन्दे ॥७॥ भूतविभूषितकार्यं दुस्तरमायं भव विवर्जितोपायँ प्रणाम समूह सहाय साय प्रातर्तिरन्तरं वन्दे ॥८॥ यस्तु पदाष्टकमेतदब्रह्मानन्देन निर्मिनित्यम् । पठति समाहितचेताः प्राप्नोत्यन्ते स शैवमेव पदम् ॥९॥

॥ अथ असितकृतशिवस्तोत्रम् ॥

जगत्गुरो नमस्तुभ्यँ शिवाम शिवदाय च योगीन्द्राणांयोगीन्द्र गुरूणां गुरवे नमः ॥१॥ मृत्योर्मृत्युस्वरूपेण मृत्युसँसारखन्डन । मृत्योरीश मृत्युबीज मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ॥२॥ कालरूपँ कलयतां कालकालेश कारण कालादतीत कालस्य कालकाल नमोऽस्तुते ॥३॥ गुणातीत गुणाधार गुणाबीज गुणात्मक । गुणेश गुणिनां बीज गुणिनां गुरवे नमः ॥४॥ ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मण ब्रह्मभावे च तत्पर । ब्रह्मबीजस्वरूपेण ब्रह्मबीज नमोऽस्तुते ॥५॥ इति स्तुत्वा शिवँ नत्वा पुरस्तस्थौ मुनीश्वरः । दीनवत्साश्रुनेत्रश्च पुलकाञ्जितविग्रहः ॥६॥ असितेन कृतँ स्त्रोत्रँ भक्तियुक्तश्च यः पठेत । स लभेद्वैष्णवँ पुत्रँ ज्ञानिनँ चिरजीविनम् । भवेद्धनाढ्यऽदुःखी च मूको भवति पन्डितः ॥७॥ अभार्यो लभते भार्या सुशीलां च पतिव्रताम् । इह लोके सुखभक्त्वा यात्यन्ते किवसन्निधिम् ॥८॥ इदं स्तोत्र पुरा दत्तँ ब्रह्मणा च प्रचेतसे ॥ प्रचेतसा स्वपुत्रासिताय दत्तमुत्तमम् ॥९॥

॥ अथ द्वादश ज्योतिर्लिंगानि कथ्यन्ते ॥

सोराष्ट्रे सोमनाथँ च श्रीशैले मल्किार्जुनम् । उज्जयिन्यां महाकालमोकांरममलेश्वरम् ॥१॥ पर्यल्यां वैद्यनाथ च डाकिन्यां भीमशङ्करम् । सेतुबन्धे तु रामेश नागेशं दारुकावने ॥२॥ वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकँ गौतमीतटे । हिमलये तु केदारँ घृष्णेशं शिवालये ॥३॥ एतानि ज्योतिर्लिङ्गानिसायं प्रातः पठेन्नरः । सप्तजन्मकृत पाणँ स्मरणेन विनश्यति ॥४॥

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

॥ अथ विश्वनाथष्टकम् ॥

आदि शंभु स्वरूप मुनिवर चन्द्रशीश जटाधरं। मुंडमाल विशाल लोचन वाहनं वृषभध्वजम् ॥ नागचर्म्म त्रिशूलडमरू भस्मअङ्ग विहंगमम्। श्रीनीलकंठ हिमालजलधर विश्वनाथ विश्वेश्वरम् ॥१॥ गङ्ग सङ्गप्रसङ्ग सरिता कामदेव सुसेवितं। नादबिन्दु संयोग-साधन पञ्चवक्त्र त्रिलोचनम् ॥ इन्दु विन्दु बिराज शशिधर सेतितं सुरवंदितं। श्रीनीलकंठ हिमालजलधर विश्वनाथ विश्वेश्वरम् ॥२॥ ज्योतिर्लिङ्ग सुलिंग फणिमणि दिव्यदेव सुसेवितं। मालती तनुपुष्पमाला ॥ गंधधूप निवेदितम् ॥ अनलकुम्भ सुकुम्भ झलक कलश कंचन शोभितं। श्रीनीलकण्ठ हिमालजलधर विश्वनाथ विश्वेश्वरम् ॥३। मुकुट क्राट सुकनक कुण्डल मण्डितं मुनि रंजितं। हार मुकता कनक रेखा रेखितं सुविशेषितम् ॥ गंध मादन शैलआसन आसनं परकासनं। श्रीनीलकंठ हिमालजलधर विश्वनाथ विश्वेश्वरम् ॥४॥ मेघडंबर छत्रधारन चरन कमल विशालतं पुष्परथपर मदनमूरति गौरिसंग सदाशिवम् ॥ क्षेत्रपाल सुपाल भैरव कुसुम नवग्रहभूषितँ। श्रीनीलकण्ठ हिमालजलधर विश्वनाथ विश्वेश्वरम् ॥५॥ त्रिपुरदैत्यसुदैत्य दानव प्राप्यते फलदायकं। रावणा दशकमल मस्तक अङ्गजलधर सायकम् ॥ श्रीनीलकंठ हिमालजलधर विश्वनाथ विश्वेश्वरम् ॥६॥ मथित दधि जल शेष विगलित भ्रमत मेरु सुमेरुकं। स्त्रवत विगलित दीपप्रनवत युग्मनेत्र सुनेत्रकं ॥ महादेव सुदेव सुरपति सर्वदेव विश्वंभरं। श्रीनीलकण्ठ हिमालजलधर विश्वनाथ विश्वेश्वरम् ॥७॥ रुद्ररूप सुतेजनं कृत भक्षपान हलाहलं। गगन वेधित अखिलधारा आदि अन्त समाहितम्। काम कुञ्जर मानकेशव महाकाल विश्वेश्वरम्। श्रीनीलकंठ हिमालजलधर विश्वनाथ विश्वेश्वरम्। ८॥ ऋतु वसन्त सुचक्र चौंदिशि प्राप्यते फलदायकं। पूर्वकाशी भयेवाशी मनुजमंगल दायकम् ॥ अम्बिकेतट वैद्यनाथं शैलशिखर महेश्वरं। श्रीनीलकण्ठ हिमालजलधरविश्वनाथ विश्वेश्वरम् ।९।

॥ अथ कालभैरवाष्टकम् ॥

देवराजसेव्यमानपावनांघ्रिपंकजं व्यालयज्ञसूत्रमिन्दुशेखरं कृपाकरम्। नारदादियोगिवृन्द वंदितं दिगम्बरं काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥१॥ भानुकोटिभास्करँ भवाब्धितारकँ परं नीलकंठमीप्सितार्थदायकं त्रिलोचनम्। कालकालमम्बुजाक्षशूलमक्षरँ काशिकापुराधिनाथ कालभैरव भजे ॥२॥ शूलटंक पाशदंडपाणिमादिकारणं श्यामकायमादिदेवमक्षरं निरामयम्। भीमविक्रम प्रभुं विचित्रतांडवप्रियं काशिकापुराधिनाथ कालभैरवँ भजे ॥३॥ भुक्तमुक्तदायक प्रशस्तचारुविग्रहं भक्तवत्सलस्थितसमस्तलोकविग्रहम्। विनक्कणन्मनोज्ञहेमकिंकिणीलसत्क-टिंकाशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥४॥ धर्मसेतुपालकं त्वधर्ममार्गनाशकं कर्मपाशमोचकं सुशर्मदायकं विभुम्। स्वर्णवर्णशेषपाशशोभितांग मंडलं काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥५॥ रत्नपादुकाप्रभाभिरामपादयुग्मकं नित्यमद्वितीयमिष्टदैवतं निरञ्जनम्। भृत्युदर्पनाशनँ-करालदंष्टमोक्षणं काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥६॥ अट्टहास भिन्नपद्मजाण्डकोशसन्ततिं दृष्टिपातनष्टपापजालमुग्रशासनम् अष्टसिद्धिदायकं कपालमालिकधरं काशिकापुराधिनाथकाल-

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

भैरवं भजे ॥ ७ ॥ भूतसंघनायकंविशालकीर्तिदायकंकाशिवासिलोकपुण्यपापशोधकंविभुम् । नीतिमार्गकोविदं पुरातनं जगत्पतिं काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥८॥ कालभैरवाष्टकं पठन्ति ये मनोहर ज्ञानमुक्तिसाधनं विचित्रपुण्यवर्धनम् । शोकमोहदैन्यलोभकोपतापनाशनं ते प्रयान्ति कालभैरवांघ्रिसन्निधिं ध्रुवम् ॥९॥

॥ अथ शिवरक्षा स्तोत्रम् ॥

अस्य श्रीशिवरक्षास्तोत्रमंत्रस्य याज्ञवल्क्याऋृषिः । श्रीसदाशिवो देवता ।
अनुष्टुप्छन्दः । श्रीसदाशिवप्रीत्यर्थं शिवरक्षास्तोत्रजपे विनियोगः ॥

चरितं देव देवस्य महादेवस्य पावनम् । अपारं परमोदारं चतुर्वर्गस्य साधनम् ॥ १ ॥
गौरीविनायकोपेतं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रकम् । शिवं ध्यात्वा दशभुजं शिरवक्षां पठेन्नरः ॥ २ ॥
गङ्गाधरः शिरः पातु भालमर्धेन्दुशेखरः । नयने मदनध्वंसी कर्णौ सर्वविभूषणः ॥ ३ ॥
घ्राणंपातु पुरारातिर्मुखं पातु जगत्पतिः । जिह्वाँ वागीश्वरः पातु कंधरां शितिकंधरः ॥ ४ ॥
श्रीकण्ठः पातु मे कंठं स्कंधौ विश्वधुरंधरः । भुजौ भूमारसंहर्ता करौ पातु पिनाकधृक ॥ ५ ॥
हृदय शंकरः पातु जठरं गिरिजापतिः । नाभिं मृत्युञ्जयः पातु कण्ठं व्याघ्राजिनांवरः ॥ ६ ॥
सक्थिनी पातु दीनार्तशरणागतवत्सलः । उरू महेश्वरः पातु जानुनी जगदीश्वरः ॥ ७ ॥
जंघे पातु जगत्कर्ता गुल्फौ पातु गणाधिपः । चरणौ करुणासिंधुःसर्वाङ्गानि सदाशिवः ॥ ८ ॥
एतां शिवबलोपेतां रक्षा यः सुकृती पठेत् । भुक्त्वासकलन्कामान् शिवसायुज्यमाप्नुयात् ॥९॥
ग्रहभूतपिशाचाद्यास्त्रैलोक्ये विचरन्ति ये । दूरदाशु पलायन्ते शिवनामाभिरक्षणात् ॥ १० ॥
अभयकर नामेदं कवचं पार्वतीपते । भक्त्या बिभर्ति यः कण्ठे तस्य वश्यं जगत्त्रयम् ॥११॥
इमांनारायणःस्वप्ने शिवरक्षाँयथाऽऽदिशत् । प्रातरुत्थाययोगीन्द्रो याज्ञवल्क्यस्तथाऽलिखत्१२

॥ अथ मृत्युञ्जय स्तोत्रम् ॥

कैलासस्योत्तरे शृंगे शुद्धस्फटिकसन्निभे । नमोगुणविहीने तु जरामृत्युविवर्जिते ॥ १ ॥ सर्वार्थं सम्पदाधारे सर्वज्ञान कृतालये । कृताञ्जलिपुटो ब्रह्मा ध्यानासीन सदा शिवम् ॥ २ ॥ पप्रच्छ प्रणतो भूत्वा आनुभ्यामवनिं गतः । सर्वार्थसम्पदाधारो ब्रह्मालोंकपितामहः ॥ ३ ॥

॥ ब्रह्मोवाच ॥

केनोपायेन देवेश चिरायुर्लोमशोऽभवत् । तन्मे ब्रूहि महेशान लोकानाँ हितकाम्यया ॥ ४ ॥

॥ श्रीसदाशिव उवाच ॥

शृणु ब्रह्मन्प्रवक्ष्यामि चिरायुर्मुनिसत्तमः । सजातः कर्मणा येन व्याधिमृत्यु विविर्जितः ॥५॥
तस्मिन्नेकार्णवोघरे सलिलीघपरिप्लुते । कृतान्तभयनाशाय स्तुतो मृत्यु जयः शिवः ॥६॥
तस्य सङ्कीर्त्तनान्नित्यँ मुनिमृत्यु विविर्जितः । तमेवं कीर्तयेब्रह्मन्मृत्यं जेतुं न संशयः । ७॥

॥ श्रीलोमश उवाच ॥

ॐ देवाधिदेवदेवेश सर्वप्राणभृताम्बर । प्राणिनामपि नाथस्त्वं मृत्यञ्जयु नमोऽस्तुते ॥८॥
देहिनाँ जीवभूतोऽसि जीवो जीवस्य कारणम् । जगतोरक्षकस्त्वं वै मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते॥९॥

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

हेमाद्रि शिखराकरं सुधावीचि मनोहरम् । पुण्डरीक परं ज्योतिर्मृत्युञ्जय नमऽस्तुते ॥१०॥ ध्यानाधारं महाज्ञानं सर्वज्ञानैककारणम् । परित्रासि च लोकानां मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते॥११॥ निहता येन कालेन सदेवासुरमानुषाः । गन्धर्वाप्सरसश्चैव सिद्धविद्याधरास्तथा ॥१२॥ साध्याश्च वसवो रुद्रास्तथाश्विनिसुतावुभौ । मरुतश्च दिशा नागाः स्थावराजङ्गमास्तथा॥१३॥ जितस्त्र सोऽपि त्वया ध्यायन्मृत्युञ्जय नमोस्तुऽते ॥१४॥ ये ध्यायन्ति परां मूर्तिम्पूजयन्त्यमरादयः । न ते मृत्युवंश यान्ति मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ॥१५॥ त्वमोङ्कारोऽसि वेदानां च सदा शिवः । आधारशक्तिः शक्तीनां मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ॥१६॥ स्थावरे जङ्गमे वापि यावत्तिष्ठति देहगेः जीवत्यपत्लोकोऽयं मृत्युञ्जय नमोस्तुते ॥१७॥ सोमसूर्याग्निमध्यस्थ व्योमव्यापिन्सदाशिवः । कालत्रयमहाकाल मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ॥१८॥ प्रबुद्धे चाप्रबुद्धे च त्वमेव सृजसे जगत् । सृष्टिरूपेण देवेश मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ॥१९॥ व्योम्नि तं व्योमरूपोऽसि तेजः सर्वत्र तेजसि । ज्ञानिनां ज्ञानरूपोऽसि मृत्यु नमोऽस्तुते ॥२०॥ जगत्जीवो जगत्प्राणः स्रष्टा त्वं जगतः प्रभुः कारणं च सर्वतीर्थानां मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ॥२१॥ नेतः त्वमिन्द्रियणांच सर्व ज्ञानप्रबोधकः । सांख्ययोगश्च हंसश्च मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ॥२२॥ रूपातीतः सुरूपश्च पिण्ड स्थपदमेव च । चतुर्योगकलाधार मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ॥२३॥ रचकेवन्हिरूपोऽसि सोमरुपोसि पूरके । कुम्भके शिवरूपोऽसि मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ॥२४॥ क्षयङ्करोपि पापानां पुण्यनामपि वर्द्धनम् हेतुस्त्वं श्रयसोनित्यं मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ॥२५॥ सर्वमाया कलातीत सर्वेन्द्रिय परावर । सर्वेन्द्रियकलाधीशं मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ॥२६॥ रूपं गन्धोरसः स्पर्श शब्दःसंस्कार एव च । त्वत्तः प्रकाश ऐतेषां मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ।२७॥ चतुर्विधानां सृष्टीनां हेतुस्त्वं कारणेश्वर भावाभावपरिच्छिन्न मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते॥२८॥त्वमेको निष्कलों लोके सकले भुवनत्रये । अति सूक्ष्मातिरुपस्त्वं मृत्युञ्जयनमोऽस्तुते॥२९। त्वं प्रबोधस्त्वमाधारस्त्वद्बीजं भुवनत्रयम् । सत्वं रजस्तमस्त्वं मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ॥३०॥ त्वं सोमस्त्वं दिनेशश्च त्वमात्मा प्रकृतेः परः । अष्टत्रिंशत्कलानाथ मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ॥३१॥ सर्वेन्द्रियाणामाधारः सर्वभूत गुणाश्रय । सर्वज्ञानमयानन्त मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ॥ ३२ ॥ त्वमात्मा सर्वभूतानां गुणानां त्वमधीश्वरः । सर्वानन्दमयाधार मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ॥३३॥ त्वं यज्ञःसर्वयज्ञानां त्वं बुद्धि र्बोधलक्षण । शब्दब्रह्मत्वमोङ्कार मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ॥३४॥

॥ श्रीसदाशिव उवाच ॥

एवं सङ्कीर्तयेद्यस्त शुचिस्तद्गतमानसः भक्त्या शृणोतियो ब्रह्मन्न स मृत्युवशो भवत् ॥३५॥ न च मृत्युभयं तस्य प्राप्तकालं च लघयेत् । अपमृत्यु भयं तस्य प्रणश्यति न संशयः ॥३६॥ व्याधयो नोपपद्यन्ते नोपसर्गभयं भवेत । प्रत्यासन्नय रे काले शतैकावर्तने कृते॥३७॥ मृत्यु र्न जायते तस्य रोगाम्मुंचतिनिश्चितम् । पांचस्याँ बा दशम्याँ वा पौर्णमास्यामयापिवा ॥३८॥ शतमावर्तयेद्यस्तु शतवर्ष स जीवति । तेजस्वी बलसम्पन्नो लभते श्रियमुत्तमाम्॥३९॥ त्रिविधं नाशयेत्पापं मनोवाक्कायसंभवम् । अभिचाराणि कर्माणि कर्माण र्थवणानि च । क्षीयन्ते नात्र सन्देहो दुःस्वप्नश्च विनश्यति ॥४०॥ इदं परम देव देव य शूलिनः । दुःश्वप्न नाशन पुण्यं सर्वविघ्नविनाशनम् ॥४१॥

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

अथ शिवनामावल्याष्टकम्

हे चन्द्रचूड़ मदमांतड़ शूलपाणो स्थाणो गिरिश गिरिजेश महेश शंभो । भूतेश भीतिभयसूदन ममनाथँ संसारदुःख गहनाञ्जगदीश रक्ष ॥१॥ हे पार्वती हृदयवल्लभ चन्द्रमौले भूताधिप प्रथमनाथ गिरीशजाप । हे वामदेव भव रुद्र पिनाकपाणो संसारदुःख गहनाञ्जगदीश रक्ष ॥२॥ हे नीलकंठ वृषभध्वज पञ्चवक्त्र लोकेश शेष वलय प्रमथेश शर्व । हे धूर्जटे पशुपते गिरजापते मां संसारदुःखगहनाञ्जगदीश रक्ष ॥३॥ हे विश्वनाथ शिवशंकर देवदेव गङ्गाधर प्रथमनायक नन्दिकेश । वाणेश्वरान्धकरियो हर लोकनाथ संसारदुःखगहनाञ्जगदीश रक्ष ॥४॥ वाराणसी पुरपते मणिकर्णिकेश वीरेश दक्षमकाल विभो गणेश । सर्वज्ञ सर्वहृदयैकनिवासनाथ संसार दुःखगहनाञ्जगदीश रक्ष ॥५॥ श्रीमन्महेश्वर कृपामय हे दयालो हे व्योमकेश शितिकण्ठ गणाधिनाथ । भस्मांगराग नकपालकलापमाल संसार दुःखगहनाञ्जगदीश रक्ष ॥६॥ कैलाश शैलविनिवाशवृषाभकेतो हे मृत्युञ्जयत्रिनयन त्रिजग निवास । नारायणप्रिय मदापह शक्तिनाथ संसार दुःखगहनाञ्जगदीश रक्ष ॥७॥ विश्वेश विश्वभवनाशित विश्वरूप विश्वात्मकत्रिभुवनैगुणाभिवेश । हे विश्वबन्धकरुणामय दीनबन्धो संसार दुःखगहनाञ्जगदीश रक्ष ॥८॥ गौरीविलासभुवनाय महेश्वराय पंचाननाय शरणागत कल्पकाय । शर्वाय जगतामधिपाय तस्मै दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय ॥९॥

अथ शिव सहस्त्रनाम

सूतउवाच ॥ श्रूयतामृषय श्रेष्ठाः कथयमि यथा श्रुतम् ।। विष्णुनाप्रार्थितो येनसंतुष्टः परमेश्वरः ।। तदहंकथयाम्यद्यपुण्यं नामसहस्त्रकम् ॥१॥ श्रीविष्णुरुवाच ॥ शिवोहरोमृडोरुद्रः पुष्करः पुष्पलोचनः । अर्थिगम्यः सदाचारः सर्वः शंभुमहेश्वरः ॥२॥ चन्द्रापीडश्चन्द्रमौलिर्विश्वंविश्वामरेश्वरः ॥ वेदांतसारसंदोहः कपालीनीललोहितः ॥३॥ ध्यानाधीरोऽपरिच्छेद्योगौरीभर्त्तागणेश्वरः ॥ अष्टमूर्तिर्विश्वमूर्तिस्त्रिस्वर्गसाधनः ॥४॥ ज्ञानगम्योदृढप्रज्ञोदेवदेवस्त्रिलोचनः वामदेवोमहादेवः पटुः परिवृढोदृढः ॥५॥ विश्वरूपोविरूपाक्षोवागीशः शूचिसत्तमः ॥ सर्वः प्रमाणसंवादीवृषाङ्कोवृषवाहनः ॥६॥ ईशः पिनाकीखट्वाङ्गीचित्रवेषश्चिरंतनः । तमोहरोमहायोगीगोप्तात्रयाणांवृजटिः ॥७॥ कालकालःकृत्तिवासाःसुभगःप्रणवात्मकाऽन्नधःपुरुषोजुष्यदुर्वासाः पुरशासनः ॥८॥ दिव्यायुधःस्थिरपुरुः परमेष्ठीपरात्परः । अनादिमध्यनिधनोगिरीशोगिरिजाधवः ॥९॥ कुबेरबन्धुःश्रीकंठोलोकवर्णोत्तमोमृदुः । समाधिवेद्यःकोदंडीनीलकंठः परस्वधीः ॥१०॥ विशालाक्षो मृगव्याधःसुरेशःसूर्यतापनः । धर्मधामक्षमाक्षेत्रं भगवान्भगनेत्र-

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

भित् ॥११॥ उग्रःपशुपतिस्तार्क्ष्यः प्रियभक्तः परंतपः । दातादयाकरोदक्षःकर्मदीकामशासनः ॥१२॥ श्मशाननिलयःसूक्ष्मःश्मशानस्थोमहेश्वरः । लोककर्त्तांमृगपतिर्महाकर्त्तामहौषधिः ॥१३॥ उत्तरोगोपतिर्गोप्ताज्ञानगम्यःपुरातनः । नीतिःसुनीतिःशुद्धात्मासोमःसोमरतःसुखी ॥१४॥सोमपोऽमृतपःसौम्योमहातेजामहाद्युतिः । तजोमयोऽमृतमयोऽन्नमयश्चसुधापतिः॥१५॥ अजातशत्रुरालोकःसंभाव्योहव्यवाहनः । लोककरोवेदकरः सूत्रकारःसनातनः ॥१६॥ महर्षि-कपिलाचार्योविश्वदीप्तित्रिलोचनः पिनाकपाणिर्भूदेवःस्वस्तिदःस्वस्तिकृत्सुधीः ॥१७॥ धातृधामाधामकरःसर्वगःसर्वगोचरः । ब्रह्मसृखिश्वस्रक्सर्गः कर्णिकारः प्रियः कविः ॥ १८ ॥ शाखोविशाखोगोशाख,शिकाभिषगनुत्तमः । गङ्गाप्लवोदकोभव्यः पुष्कलःस्थपतिःस्थिरः॥१९॥ विजितात्माविषयात्माभूतवाहनसारथिः । सगणोगणकायश्चसुतकीर्तिश्छिन्नसंशयः ॥ २० ॥ कामदेवः कामपालोभस्मोद्धलितविग्रहः । भस्मप्रियोभस्मशायीकामीकांतः कृतागमः ॥२१॥ समावर्तोनिवृत्तात्माधमपुंजः सदाशिवः । अकल्यपश्चतुर्बाहुर्दुरावासोदुरासदः ॥२२॥दुर्लभो दुर्गमोदुर्गः सर्वायुधविशारदः । अध्यात्मयोगनिलयःसुतंतुस्तन्तुवर्धनः ॥२३॥ शुभांगोलोक-सारङ्गोजगदीशोजनादनः । भस्मशुद्धिकरीमेरुरोजस्वीशुद्धविग्रहः ॥२४॥ असाध्यःसाधुसाध्य-श्चभृत्यमर्कटरूपधृक् । हिरण्यरेताः पौराणोरिपुजीवहरोबलः ॥ २५ ॥ महाह्रदोमहागर्त्तः सिद्धवृंदारवंदितः । व्याघ्रचर्माम्बरोव्याली महाभूतोमहनिधिः ॥ २६ ॥ अमृताशोऽमृतवपुः पाँचजन्या प्रभंजनः । पचविंशतितत्त्वस्थःपारिजातः परावरः ॥२७॥ सुलभःसुव्रतःशूरोब्रह्मवेद निधिर्निधिः । वर्णाश्रमगुरुर्वर्णीशत्रुजिच्छत्रुतापनः ॥२८॥ आश्रमःक्षपण क्षामोज्ञानवानचलेश्वर प्रमाणभूतोदुर्ज्ञेयः सुपर्णोवायुवाहनः ॥ २९ ॥ धनुर्धरोधनुर्वेदोगुणराशिर्गुणाकरः । सत्यः सत्यपरोदीनोधर्मागोधर्मसाधनः ॥३०॥ अनंतदृष्टिरानंदोदंडोदमयितादमः । अभिवाद्योमहा-मायोविश्वकर्माविशारद ॥ ३१ ॥ वीतरागोविनीतात्मातपस्वीभूतभावनः । उन्मत्तवेषप्रच्छ-न्नोजितकामोऽजितप्रियः ॥ ३२ ॥ कल्याणप्रकृतिःकल्पःसर्वलोकप्रजापतिः । तरस्वीतारकोधी-मान्प्रधानप्रभुरव्ययः ॥ ३३ ॥ लोकपालोऽन्तर्हितात्माकल्पादिःकमलेक्षणः । वेदशास्त्रार्थतत्व-ज्ञोऽनियमोनियताश्रयः ॥३४॥ चन्द्रःसूर्यःशनिःकेतुरांगोविद्रुमच्छविः । भक्तिवश्यःपरब्रह्म-मृगबाणार्पणोऽनघः॥३५॥ अद्रिरद्यालयःकाँतःपरमात्माजगद्गुरुःसर्वकर्मालयस्तुष्टोमङ्गल्यो-मङ्गलावृतः ॥३६॥ महातपादीर्घतपा-स्थाविष्ठःस्थविरोध्रुवः अहःसंवत्सरोव्याप्तिःप्रमाणं-परमंतपः ॥ ३७ ॥ संवत्सरकरोमंत्रप्रत्यय सर्वदर्शनः अजःसर्वेश्वरः सिद्धोमहारेतामहाबल ॥३८॥ योगीयोग्योमहातेजाःसिद्धिःसर्वादिरग्रहः । वसुर्वसुमनाः सत्यःसर्वपापहरोहरः ॥३९॥ सुकीर्तिःशोभनःश्रीमानबा मनसगोचरः । अमृतःशाश्वतःशाँतोबाणहस्तःप्रतापवान् ॥ ४० ॥ कमंडलुधरो धन्वी वेदांगो वेदविन्मुनिः आजिष्णुर्भोजनंभोक्तालोकनाथोदुराधरः ॥४१॥ अती-द्रियोमहामायः सर्वबासाश्चतुष्पथः ।कालयोगी महानादो महोत्साहोमहाबलः॥४२॥महाबुद्धि महावीर्यो भूतचारी पुरंदरः । निशाचरः प्रेतचारी महाशक्तिर्महाद्युतिः ॥४३॥ अनिर्देश्यवपु श्रीमान्सर्वाचार्यमनोगतिः । बहुश्रुती महामायो नियत माध्रुवोऽध्रुवः ॥ ४४ ॥ ओजस्तेजो-द्युतिधरो नर्तकःसर्वशासकः नृत्यप्रियोनृत्यनित्यः प्रकाशात्माप्रकाशकः ॥ ४५ ॥ स्पष्टाक्षरो

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

पुधो मंत्रः समानः सारसंप्लवः । युगादिकृद्युगावर्तो गंभीरो वृषवाहनः ॥४६॥ इष्टोविशिष्टः शिष्टेष्टः शलभःशरभोधनुः । तीर्थरूपस्तीर्थनामा तीर्थदृश्यः स्तुताऽर्थदः ।४७। अपांनिधिरधिष्ठानंविजयो जयकालवित् । प्रतिष्ठितः प्रमाणज्ञोहिरण्यकवचोहिरः ।४८। विमोचनः सुरगणोविद्येशोविंदुसंश्रयः । बालरूपोबलान्मत्तोविकर्तागहनोगुहः ।४९। करणंकारणंकर्तासर्ववंधविमोचनः । व्यवसायोव्यवस्थानः स्थानदोजगदादिजः ।५०। गुरुदोललितोऽभेदोभावात्मात्मनिसंस्थितः । वीरेश्वरोवीरभद्रोवीरासनविधि विराट् ।५१। वीरचूडामणिर्वेत्तातीव्रानन्दोनदीधरः । आज्ञाधारस्त्रिशूलीचशिपिविष्ट शिवालयः ।५२। बालखिल्यो महाचापस्तग्मा शुर्वधिरः खगः । अभिरामःसुशरणःसुब्रह्मण्यःसुधापतिः ।५३। मधवान्कौशिकोगोमान्विरामः सर्वसाधनः । ललाटाक्षोविश्वदेहःसारःसंसारचक्रभृत् ।५३। अमोघदंडोमध्यस्थोहिरण्यो ब्रह्मचर्यसी । परमार्थःपरोमायीशंवरोव्याघ्रलोचनः ।५५। रुचिर्विरचिः स्ववर्धुर्वाचस्पतिरहर्पतिः रविर्विरोचनः स्कन्दः शास्तावैवस्वतोयमः ।५६। युक्तिरुन्नतकार्तिश्रसानुरागः परंजयः । कैलासाधिपतिः काँतः सवितारविलोचनः ।५७। विद्वत्तमोवीतभयोविश्वभर्ताऽनिवारितः । नित्योनियतकल्याणः पुण्य श्रवणकीर्तनः ।५८। दूर श्रवाविश्वसहोध्येयोदुःस्वप्ननाशनः । उत्तारणोदुष्कृतिहाविज्ञ योदुःसहोऽभवः ।५९। अनादिर्भूर्भुवोलक्ष्मीः किरीटीत्रिदशाधिपः । विश्वयोनिस्रविश्वकर्त्तासुवीरोथचिरांगदः ।६०। जननोजनमन्मादिः प्रीतिमान्नीतिमान्धवः । वसिष्ठःकश्यपोभनुर्भीमोभीमपराक्रमः ।६१। प्रणवः सत्यथाचारोमहाकोशोमहाधनः । जन्माधिपोमहादेवः सकलागमपारगः ।६२। तत्वतत्वविदेकात्मा विभुर्विश्वभूषणः । ऋषिब्राह्मणऐश्वर्यजन्ममृत्युजरातिगः ।६३। पञ्चयज्ञसमुत्पत्तिर्विश्वेशोविमलोदयः । आत्मयोनिरनाद्यंतोवत्सलोभक्तलोकवृक् ।६४। गायत्रीवल्लभः प्राँशुर्विश्वासः प्रभाकरः । शिशुर्गिरिश्रितः सम्राट्सुषेणः सुरशत्रुहा ।६५। अमोघोऽरिष्टनेमिश्चकुमुदोविगतज्वरः । स्वयंज्योतिस्तनुज्योतिरात्मज्योतिरचंलः ।६६। पिंगलः कपिलश्मश्रुर्भालनेत्रस्त्रयीतनुः । ज्ञानस्कन्दोमहानीतिर्विश्वोत्पत्तिरुपपल्लवः ।६७। भगोविवस्वानादित्योयोगपारोदिवस्पतिः । कल्याणगुणनामाचपापहापुण्यदर्शनः ।६८। उदारकीर्तिरुद्योगीसदसंमयः । नक्षत्रमालीनाकेशः स्वाधिष्ठानपदाश्रयः । ६९। पवित्रः पापहारीचमणिपूरोनभोगतिः । हृत्पुण्डरीकमासीनः शक्रशाँतोवृषाकपि । ७० । उष्णोगृहपति कृष्णःसमर्थोऽनर्थनाशनः । अधर्मशत्रुरज्ञेयःपुरुहूतः पुरुश्रुतः ।७१। ब्रह्मदृग्भोब्रह्मदृग्भो धर्मधेनुधर्मनागमः । जगद्धितैषीसुगतःकुमार कुशलागमः । ७२ । हिरण्यवर्णोज्योतिष्मान्नानाभूतारती ध्वनिः । अरागोनयनाध्यक्ष विश्वमित्रोधनेश्वरः । ७३ । ब्रह्मज्योतिर्वसुधामा महाज्योतिरनुत्तमः । मातामहोमातरिश्वा नभस्वान्ननाहारधृक् । ७४ । पुलस्त्यः पुलहोऽगस्त्यो जातूकर्यः पराशरः । निरावरणनिर्वारो वैरंज्यो विष्टरश्रवा, । ७५ । आत्मभूरनिरुद्धोऽत्रिर्ज्ञानमूर्तिर्महायशाः लोकवीरराग्रणीर्वीरश्चंडः सत्य पराक्रमः । ७६ । व्यालाकल्पोमहाकल्पः कल्पवृक्षः कलाधरः । अलङ्करिष्णुरचलोरोचिष्णुर्विक्रमोन्नतः । ७७ । आयुः शब्दपतिर्वेगीप्लवनः शिखिसारथिः । असंस्जष्टोऽतिथिःशुक्रपमाथीपादपासनः । ७८ । वसुश्रवाहव्यवाहः प्रतप्तविश्वभोजनः । जप्योजरादिशमनोलोहितात्मातनूनपात् ।७९।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

वृहदश्वो नमोयोमि; सुप्रतीकस्तामिस्रहा । निदानघस्तपनोमेघः स्वच्छः परपुरञ्जय । ८० । सुखानिलः सुनिष्पन्नः सुरभिःशिशिरात्मकः । वसंतो माधवोग्राष्मोनभस्योवीजवाहनः ।८१। अङ्गिरागुरुरात्रेयोविमलोविश्वपावनः । पावनः सुमतिर्विद्वाँस्त्रैविद्योनरवाहनः । ८२ । मनोबुद्धिरहंकारः क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालकः । जमदग्निर्वलनिधिर्विंगालोविश्वगालवः । ८३ । अघोरोऽनुत्तरोयज्ञः श्रेयोः निः श्रेयसांपथ । शैलोगगनकुन्दाभोदानवारिररिंदमः ।८४। रचनीजनकश्चारुविशल्योलोककल्पधृक् । चतुर्वेदश्चतुर्भावश्चतुरश्चतुरप्रियः ।८५। आम्नायोऽथसमाम्नायस्तीर्थदेवशिवालयः । वहुरूपोमहारूप; शर्वरूपश्चराचरः ।८६। न्यायनिर्मायकोन्यायीन्यायगम्यो निरन्तरः । सहस्रमूर्धादेवेन्द्रःसर्वशास्त्रप्रभंजनः ।८७। मुण्डोविरूपोविः क्रांतोदंडीदाँतोगुणोत्तमः । पिंगलाक्षोजनाध्यक्षोनीलग्रीवोनिरामयः ।८८। सहस्रबाहुःसर्वेशः शरण्यःसर्वलोकधृक । पद्मासनःपरंज्योतिः परंपार परंफलम् ।८९। पद्मगर्भोमहागर्भो विश्वगर्भो विचक्षणः । चराचरज्ञोवरदोवरेशस्तुमहावलः ।९०। देवासुरगुरुर्देवोदेवासुरमहाश्रयः । देवादिदेवोदेवाग्निर्देवाग्निसुखदःप्रभुः ।९१। देवासुरेश्वरोदिव्योदेवासुरमहेश्वरः । देवदेवमयोऽचिंत्योदेवदेवात्मसंभव ।९२। सद्योनिरसुरव्याघ्रोदेवसिंहोदिवाकरः । विबुधाग्रवरश्रेष्ठःसर्वदेवोत्तमोत्तमः ।९३। शिवज्ञानरतःश्रीमांछिखिश्रीपर्वतप्रियः । वज्रहस्तःसिद्धि खड्गीनरसिंहनिपातनः ।९४। ब्रह्मचारीलोकचारीधर्मचारीधनाधिपः नन्दीनन्दीश्वरोऽनंतोनग्नव्रतधरःशुचिः । ९५ । लिंगाध्यक्षःसुराध्यक्षायोगाध्यक्षो युगावहः । स्वधर्मास्वर्गतः स्वर्गस्वरःस्वरमयस्वनः ।९६। वाणाध्यक्षोवीजकर्त्ताधर्मकृद्धर्म संभव । दंभोलोऽर्थविच्छम्भुः सर्वभूतमहेश्वरः ।९७। श्मशाननिलयस्त्र्यक्षःसेतुरप्रतिमाकृतिः । लोकोत्तरस्फुटालोकस्त्र्यम्बकोनागभूषणः ।९८। अंधकारिर्मखद्वेषी विष्णुकंधरपातनः । हीनदोषोऽक्षयगुणो दक्षारिः पूषदंतभित् ।९९। धूर्जटिःखंडपरशुःसकलोनिष्कलोऽनघः । अकालःसकलाधारःपांडुराभो मृडोनटः ।१००। पूर्णः पूरयितापुण्यः सुकुमारः सुलोचनः । सामगेयप्रियोऽक्रूरः पुण्यकीर्तिरनामयः ॥१०१॥ मनोजवस्तीर्थ करो जटिलो जीवितेश्वरः । जीवितांतकरो नित्यो वसुरेता वसुप्रदः ।१०२। सद्गतिः सत्कृतिः सिद्धिः सज्जातिः कालकंटकः । कलाधरो महाकालो भूतसत्यपरायणः ।१०३। लोकलावण्यकर्ताचलोकोत्तरसुखालयः । चंद्रसंजीवनः शास्ता लोकगूढ़ो महाधिपः ।१०४। लोकबंधुलोकनाथ कृतज्ञः कीर्तिभूषणः । अनपायोऽक्षरः काँतः सर्वशस्त्रभृतांवरः।१०५। तेजोमयोद्युतिधरो लोकानामग्रणीरणुः । शुचिस्मितः प्रसन्नात्मादुर्जेयोदुरतिक्रमः ।१०६। ज्योतिर्मयोजगन्नाथो निराकारो जलेश्वरः तुंबवीणोमहाकोपो विशाकःशोकनाशनः ।१०७। त्रिलोकपस्त्रिलोकेशःसर्वशुद्धिधीरजः । अव्यक्तलक्षणो देवो व्यक्ताव्यक्तो विशाँपतिः ।१०८। वरशीलो वरगुणः सारो मानधनो मयः । ब्रह्मा विष्णुः प्रजापालो हंसो हंसो हंसगतिर्वयः ।१०९। वेधा विधाता धाता च स्रष्टा हर्ता चतुर्मुखः । कैलासशिखरावासी सर्वावासी सदागतिः । ११० । हिरण्यगर्भो द्रुहिणो भूतपालोऽथभूपतिः । सद्योगी योगविद्योगी वरदो ब्राह्मणप्रियः । १११ । देवप्रियो देवतायो देवज्ञो देवचिन्तकः । विषमोक्षो विशालाक्षो वृषदो वृषवर्धनः । ११२ । निर्ममो निरहंकारी निर्मोही निरुपद्रवः । दर्पहा दर्पदो दृप्तः सर्वतुपरिवर्त्तकः । ११३ ।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

सहस्रजित्सहस्रार्चिः स्निग्धप्रकृतिदक्षिणः । भूतभव्यभवन्नाथः प्रभवो भूतिनाशनः॥११४॥
अर्थोऽनर्थो महाकोशः परकार्यैकपंडितः । निष्कंटकःकृतानंदोनिर्व्याजो व्याजमर्दनः ।११५।
सत्ववान्सात्विकःसत्यकीर्तिःस्नेहकृतागमः । अकंपितो गुणाग्राह्यो नैकात्मानैककर्मकृत् ।११६।
सुप्रीतःसुमुखः सूक्ष्मः सुकरो दक्षिणानिलः । नंदिस्कंधधरो धुर्यः प्रकटः प्रीतिवर्धनः ।११७।
अपराजितःसर्वसत्वो गोविंद सत्ववाहनः । अधृतः स्वधृतः सिद्धिः पूतमूर्तिर्यशोधनः ।११८।
वाराहशृङ्गधृक्शृङ्गीबलवानेकनायकः । श्रुतिप्रकाशः श्रुतिमानेकबंधुरनेककृत् ।११९।
श्रीवत्सलाशिवारंभः शांतभद्रःसमोयशः । भूशयो भूषणो भूतिर्भूतकृद्भूतभावनः ।१२०।
अकंपो भक्तिकायस्तु कालहा नीललोहितः । सत्यव्रतमहात्यागी नित्यशांतिपरायणः।१२१।
परार्थवृत्तिर्वरदो विविक्तस्तुविशारदः शुभदःशुभकर्ताशुभनामाशुभःस्वयम् ।१२२। अनर्थितोऽगुणः शास्त्री ह्यकर्ता कनकप्रभः । स्वभाव भद्रो मध्यस्थः शीघ्रगशीघ्रनाशनः ।१२३।
शिखंडी कवची शूली जटी मुंडी च कुंडली । अमृत्युःसर्वदर्शिसहस्तेजोराशिर्महामणिः।१२४।
असंख्येयोऽप्रमेयात्मा वीर्यवान्वीर्यकोविद । वेद्यश्चैववियोगात्मा परावरमुनीश्वरः ।१२५।
अनुत्तमो दुराधर्षो मधुरप्रियदर्शनः । सुरेश शरणं सर्व शब्द ब्रह्म सतांगतिः ।१२६। कालपक्षः कालकारी कंकणीकृतवासुकिः । महेष्वासो महीभर्ता निष्कलंको विशृङ्खलः ।१२७। द्युमणिस्तरणिर्धन्यः सिद्धिदसिद्धिसाधनः । विश्वत संवृतःस्तुत्योव्यूढोरस्को महाभुजः ।१२८। सर्वयोनिर्निरातंको नरनारायणप्रियः । निर्लेपो निष्प्रपंचात्मा निर्भोगो व्यङ्गनाशनः ।१२९।
स्तव्यःस्तवप्रियःस्तोता व्यासमूर्तिर्निरंकुशः । निरवद्यमयोपायो विद्याराशी रसप्रियः ।१३०।
प्रशान्तबुद्धिरक्षुण्य संग्रणी नित्यसुन्दरः । वयाघ्रधुर्योधात्रीश,शाकल्यः शर्वरीपतिः।१३१।परमार्थगुरुर्दृष्टिः शरीराश्रितवत्सलः,सोमोरसज्ञोरसद सर्वसत्वावलंबनः।१३२।एवं नाम्नांसहस्रेण तुष्टाव वृषभध्वजम् । प्रार्थयामास शंभुं चपूजयामासपंकजैः ।१३३। परीक्षार्थंहरेस्त्वीश,कमलेषु महेश्वरः ॥ गोपयामासकमलंतदैकंभुवनेश्वरः ।१३४। हृदिविचारितंतेनकृतोवैकमलङ्गतम् ॥ यातुयातुमुखेनैवनेत्रंकिकमलनहि ।१३५। ज्ञात्वातुनेत्रमुद्धृत्यसर्वसत्वावलंबनम् ।। पूजयामासभावेनस्तवेनाऽनेनसर्वथा ।१३६। मामेतिव्याहरन्नेवप्रादुरासीज्जगद्गुरुः ॥ ततस्तु तमथोदृष्ट्वातथाभूतंहरोहरिम् ।१३७। स्तमादवततताराशुमंडलात्पार्थिवस्यसः ॥ यथोक्तरूपिणंशंभुं तेजोराशिंसमुत्थितम् ।१३८। नमस्कृत्यपुरः स्थित्वास्तुतिंकृत्वाविवेषतः । पूजयामास देवेशः पार्वत्यासहितंशिवम् ।१३९। प्रसन्नवदनोभूत्वाशंभोश्चसमुखेस्थितः ॥ इत्थंभूतंहरोदृष्ट्वाकोटिभास्करभूषितः ।१४०। प्राणिनामीश्वरं, शंभुंदेवदेवोजनार्दनम् । तदाप्राहमहादेव, प्रहसन्निव शङ्करः । संप्रेक्षमाणंतविष्णुं कृतांजलिपुटंस्थितम् ।१४१। शङ्कर उवाच ॥ ज्ञातंमयेदंसकलंदेवकार्यंजनार्दन । सुदर्शनाख्यंचंचददामितवशोभनम् ।१४२। यद्रूपंभवताद्दृष्टसर्वलोकसुखावहम् । हितायतवदेवेशकृतंभावयसुव्रत ।१४३। रणाजिरेपिसंस्मृप्यदेवानांदुखनाशनम् । इदंचक्रमिदंरूपमिदंनामसहस्रकम् ।१४४। येशृण्वंतिसदाभक्त्यासिद्धि,स्यादनपायिनी । एवमुक्त्वाददौचक्रं सूर्यायुतसमप्रभम् ।१४५। विष्णुरपिचसंस्नात्वाजग्राहोदङ्मुखस्तदा । नमस्कृत्यतदादेवपुनर्वचनमब्रवीत् ।१४६। शृणुदेवमयाध्येयं पठनीयं चमेंप्रभो । दुखा-

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

नांनाशनार्थहिवदत्वंलोकशङ्कर ।१४७। इतिपृष्टस्तदातेनसंतुष्टस्तुशिवोऽब्रवीत् । रूपंध्येमंमदीयंवैसर्वानर्थप्रशाँतये ।१४८। अनेकदुःखनाशार्थपाठ्यं नामसहस्रकम् । धायचक्रं सदामेऽद्यसर्वानर्थप्रशांतये ।१४९। अन्येचयेपठिष्यंतिपाठयिष्यंतिनित्यशः तेषांदुःखंनस्वप्नेऽपिजायतेनात्रसंशयः।१५०। राज्ञांवसंकटेप्राप्तेशतावर्तचरेद्यदा । सांगंचविधियुक्तोहिकल्याणंलभतेनर।१५१। रोगनाशकरंह्येतद्विद्यादायकमुत्तमम् । समुद्दिश्यफलंश्रेष्ठं पठतिफलमुत्तमम् ।१५२। लभंतेनाऽत्रसंदेहः सत्यमेतद्ध चंमम । प्रातःसमुत्थायसदापूजांकृत्वामदीचिकाम् ।१५३। पठतोमत्समवैक्यं नित्यंसिद्धिर्नदूरतः । ऐहिकींसिद्धिमासाद्यपरलोकसमुद्भवाम् ।१५४। प्राप्नोतिपाठकोनित्यमष्टमासान्सुरेश्वर ॥ सायुज्यमुक्तिमायातिनाऽत्रकार्याविचारणा ।१५५। एवमुक्त्वातदाविष्णु शङ्करःप्रीतिमानसः ॥ उपस्पृश्यकराभ्याँचउवाचशङ्करः पुनः ।१५६। वरदोऽस्मिन्सुरश्रेष्ठवरान्वरयथेप्सितान् ॥ भक्त्यावशीकृतोनूनस्तवेनानेनवै पुनः।१५७।इत्युक्तोदेवदेवेनदेवदेवं प्रणम्यतम् ॥ यथेदानीकृपादेवक्रियतेचाऽप्यतः परम् ।१५८। कार्याचैवविशेषणकृपालु त्वात्वयाप्नभो ॥ त्वयिभक्तिमहादेवप्रयच्छवरमुत्तमम् । १५९ । नाऽन्यमिछामिभगवन्पूतर्णोऽहतेप्रसादतः॥ तच्छ्रुत्वावचनंतस्यदयावान्सुतरांभव ।१६०। प्राहत्वेनंमहादेवः परमात्मानंतच्युतम् ॥ मयिभक्तिश्चवंद्यस्त्वं पूज्यश्चैवसुरैरपि ।१६१। विश्वंभरस्त्वदीयंवैनामपापहरंपरम् ॥ भविष्यतिनसंदेहोमत्प्रसादात्सुरोत्तम् ।१६२। इत्युक्त्वाऽन्तर्दधेरुद्रोभगवान्नीललोहितः ॥ जनार्दनोऽपिभगवान्वचनाच्छंकरस्यच ।१६३। प्राप्यचक्रंशुभंध्यानंस्तोत्रमेतन्निरंतरम् ॥ पपाठाध्यापयामासभक्तेभ्यस्तदुपादिशत् ।१६४। अन्येऽपियेपठिष्यंतितेविंदंतुतथाफलम् ॥ इतिपृष्टंसमाख्यातंशृण्वतांपापहारकम् ।१६५। अतः परं च किं श्रेष्ठाः प्रष्टुमिच्छथ वै पुनः ।१६६।

* इति श्रीशिवमहापुराणे ज्ञानसंहितायां शिवसहस्रनामकथनं समाप्तम् *

* श्री गणेशाय नमः *

॥ शिवस्तुति ॥

चापेयगौरार्द्ध शरीरकाय कर्पूरगौरार्ध शरीरकाय । धम्मिल्लकाय च जटाँधराय नमः शिवाय च नमः शिवाय ॥१॥ रणत्कणत्कंकणनूपुराय मिलत्फणा भासुरन् पुराय । हेमांगदायै भुजगांगदायनमः शिवायै च नमः शिवाय ॥२॥ कस्तूरिकाकुङ्कुँमचर्चितायै चिताराजः पुंजविचर्चिताय । सुकुण्डलायैं फणिकुण्डलाय नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥ ३ ॥ मन्दारमालाकुलितालकायै कपालमालांकितशेखरायादिव्याम्बरायैं च दिगम्बरायनमःशिवायैं च नमः शिवाय । ४ । प्रोत्फुल्लनीलोत्पललोचनायै विकासपंकेरुहलोचनाय । समेक्षणायै विषमेक्षणाय नमः । शिवायै च नमः शिवाय । ५ । अम्भोरुहश्यामलकुन्तलायै तडित्प्रभाभासजटाधराय । जगज्जनन्ये जगदेकपित्रे नमः शिवायै च नमः शिवाय । ६ । सदाशिवानां प्रियभूषणायै सदाशिवानां प्रियभूषणाय । शिवन्वितायै शिवान्विताय नमः शिवाय च नमः शि० ।७। प्रपञ्चसृष्टेर्मुखवासदायै । त्रैलोक्यसंहारकृतान्तकाय । कृतस्वराय

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

विकृतस्मराय नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥८॥ नमस्ते भगवद्रुद्रभास्व रामिततेजसे । नमो भवाय देवाय शिवाय परमात्मने ।९। शान्ताय द्वि तरूपाय सदाऽसुरभिदे नमः । ईशानाय नमस्तुभ्यं स्पर्शमात्रायते नमः । १० । महादेवाय सोमाय अमृतेशाय ते नमः । उग्राय यजमानाय नमो मीदुष्टाय ते । ११ । नमोऽस्तुते शङ्कर शांतिमूर्ते नमोऽस्तुते चंद्र-कलावतंस। नमोऽस्तुते कारणकारणाय नमोस्तुते कारणवर्जिताय । ११ । स एव धन्यस्तव भक्तिभाजाँ तवार्चनं यः कुरुते सदैव । १३ । मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर । यत्पूर्जितम् मया देव परिपूर्ण तदस्तु मे । १४ ।

॥ अथ वेदसारशिवस्तोत्रम् ॥

पशूनां पतिं पापनाशं परेशं गजेन्द्रस्य कृत्तिं वसानं वरेण्यम् । जटाजूटमध्ये स्फुरद्गङ्गवारिं महादेवमेकं स्मरामि स्मरामि । १ । महेशं सुरेशं सुरारातिनाशं विभुं विश्वनाथं विभूत्यङ्गभूषम् । विरुपाक्षमिन्द्वर्कवन्हित्रिनेत्रं सदानन्दमीडे प्रभुं पञ्चवक्त्रम् । २ । गिरीशं गणेशं गले नीलवर्णं गजेन्द्राधिरूढं गुणातीतरूपम् । भव भास्करं भस्मना भूषिताङ्गं भवानी कलत्रं भजे पंचवक्त्रम् । ३ । शिवाकान्तशम्भो शशाङ्कार्धमौले महेशान शूलिन् जटाजूट-धारिन् । त्वमेको जगद्व्यापकोविश्वरूप प्रसीद प्रसीद प्रभो विश्वरूप । ४ । परात्मानमेकं जगद्बीजमाद्यं निरीहं निराकारमोंकार वेद्यम् । यतो जायते पाल्यते येन विश्वं तमीशं भजे लीयते यत्र विश्वम् ।५। न भूमिर्न चापो न वह्निर्न वायुर्नचाकाश मध्ये न तन्द्रा न निद्रा । न ग्रीष्मो न शीतं न देशो न वेषो न यस्यास्ति मूर्तिस्त्रिमूर्तिंस्तमीडे । ६ । अजं शाश्वतं कारणं कारणानां शिवं केवलं भासकं भासकानाम् । तुरीयं तमः पारमाद्यन्तहीनं प्रपद्ये परं पावनं द्वैतहीनम् । ७ । नमस्ते-नमस्ते विभो विश्वमूर्ते नमस्ते-नमस्ते चिदानन्दमूर्ते । नमस्ते-नमस्ते तपोयोगगम्यं नमस्ते-नमस्ते श्रुतिर्ज्ञानगम्यम् । ८ । प्रभो शूलपाणे विभो विश्वनाथ महादेव शम्भो महेश त्रिनेत्र । शिवाकान्त शान्त स्मरारे पुरारे त्वदन्यो वरेण्यो न तान्यो न गण्यः । ९ । शम्भो महेश करुणामय शूलपाणे गौरीपते पशुपते पशुपाशनाशिन् । काशीपते करुणया जगदेतदेकस्त्वंहरसिपासिविदिधासिमहेश्वरोऽसि । १० । त्वत्तो जगत्पति देव भवस्मरारे त्वय्येवतिष्ठति जगन्मृड विश्वनाथ । त्वय्येव गच्छति लयं जगदेतदीश लिङ्गात्मकं हर चराचर विश्व रूपिन् । ११ ।

॥ अथ शिवभुजंगप्रयातस्तोत्रम् ॥

गलद्दानगण्डं मिलद्भृङ्गखण्डं चलच्चारुशुण्डं गजत्राण शौण्डम् । लसद्दन्त कांडं पिवद्भङ्ग चंडं शिवप्रेमतुंडं भजे वक्रतुंडं । १ । अनाद्यन्तमाद्यं परं तत्वमर्थं चिदाकारमेकं तुरीयं त्वमेवम् । हरिब्रह्ममृग्यं परब्रह्मरूपं मनोवागतीतं महा शैवमीडे । २ । स्वशक्त्यादि शक्त्यन्त सिंहासनस्थं मनोहारिं सर्वाङ्गरत्नानि भूषम् । जटा इन्दु गङ्गाशिस्यर्कमौलं परंशक्तिमित्रं नमः पंचवक्त्रम् ॥ ३ ॥ शिवेशान तत्पुरुषा घोरवामादिभिर्ब्रह्मभिर्नर्हन्मुखै

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Eyaan Kosha

षडभिरंगैः । अनौपम्यषटत्रिंशतं तत्व विद्यामतीतं परं त्वाँ कथं वेत्ति को वा ॥ ४ ॥ प्रवाल प्रवाहप्रभाशोणमर्धं मरुत्वन्मणिश्रीमहः श्यामार्धम् । गुणस्यूतमेकं वपुश्चैकमन्सः मरामि स्मरापत्ति सम्पत्ति हेतुम् ॥ ५ ॥ स्वसेवा समायातदेवा सुरेन्द्रा नमन्मौलि मन्दार मालाभिषिक्तम् । नमस्यामि शम्भो पदाम्भोरुहन्ते भवाम्भोधिपोतं भवानीविभाव्यम् ॥६॥ जगन्नाथ गौरीशनाथ प्रपन्नानुकम्पिन्विपन्नार्ति हारिन् । महः स्तोममूर्ते समस्तैकबन्धो नमस्ते-नमस्ते पुनस्ते नमाऽस्तु ॥ ७ ॥ महादेवदेवेश देवाधिदेव स्मरारे पुरारे यमारे हरेति । बुवाणः स्मरिष्यामि भक्त्या भवन्तं ततो मे दयाशील देव प्रमीद ॥ ८ ॥ विरूपाक्ष विश्वेश विद्यादिकेश त्रयीमूल शम्भो शिव त्र्यम्बक त्वम् । प्रसोद स्मर त्राहि पश्चाऽवपुष्य क्षमश्चाप्नुहीतिः-क्षपांक्षिपामः ॥ ९ ॥ त्वदन्यः शरण्यः प्रपन्नस्य नेति प्रसीद स्मरन्देव हन्यास्तु दैन्यम् । नोचेत् भवेद्भक्त वात्सल्य हानिस्ततोमेदयालो दया सन्निधेहि ॥१०॥ अथं दानकालास्त्वहं दानपात्रं भवन्नाथ दाता त्वदन्यं न याचे । भवद्भक्तिमे स्थिराँ देहि मह्यं कृपाशीलशम्भो-कृताथोंऽस्मि तस्मात ॥११॥ पशुं वेत्सि चेन्मा त्वमेवाधि रूढः । कलां कीर्तिवा मूर्ध्नि-धत्से त्वमेव । द्विजिन्हिः पुनःसोऽपि ते कण्ठभूषा त्वदङ्गीकृताः शर्वः सर्वेऽपि धन्याः ॥१२॥ न शक्नोमि कर्तुं परद्रोहलेशं कथं प्रीयसे त्वं न जाने गिरीशं । तदाहि प्रसन्नोऽसि कस्यापि कान्ता सुत द्रोहिणी वा पितृ द्रोहिणी व ।१३। स्तुति ध्यानमर्चा पथावद्विधातु भजन्नप्य-जानन्म हेशावलम्ब । त्रसन्तं सुतं त्रानुमग्रे मृकण्डोर्यमप्राणनिर्वाषणं त्वत्पदाब्जम् ॥१४॥ अकंठे कलङ्कादनंगे भुजगादपाणौ कपालादभालेऽनलाद्वात् । अमौली शशङ्काँदवामे कलत्रा-दहं देषपन्यं न मन्ये न मन्ये ॥ १५ ॥

* अथ चन्द्रशेखराष्टकस्तोत्रम् *

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर पाहिमाम् । चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम् ॥ १ ॥ रत्न सानु सराशनं रजतादि शृङ्ग निकेतनम् । सञ्जीवनी कृत पन्नगेश्वरमच्युतानन सायकम् । क्षिप्र दग्ध पुरत्रयं त्रिदिवालयैरभिवन्दितम् । चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥२। पञ्चपाद सुपुष्प गन्ध पदाम्बुजद्वय शोभितम् । भाल लोचन जात पावक दग्ध मन्थन विग्रहम् । भस्म दिग्ध कलेवरं भवनाशनं भवमव्ययम् । चन्द्रशेखरमाश्रये मम कि करिष्यति वै यमः ॥३॥ मत्त वारण मुख्य चर्म कृतोत्तरीय मनोहरम् । पङ्कजासन पद्मलोन धूजिताँघ्रि सरोरुहम् । देवसिंधु तरङ्ग सीकर सिक्त शुभ्र जटांधरम् । चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिस्यति वै यमः ॥४॥ यक्षराज सख भगाक्ष हरं भुजङ्ग विभूषणम् । शैलराजसुता परिष्कृत चारु वाम कलेवरम् स्फुडेत नील गल परस्वध धारिणं मृग धारिणम् । चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥५॥ कुंडली कृतकुण्डलेश्वर कुण्ड वृष वाहनम् । नारदादि मुनीश स्तुति वैभवं भुवनेश्वरम् । अन्धकांध कमाश्रितं त्वत्पादकं शमनात्मकम् । चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥ ६ ॥ भेषजं भव रोगिणामखिलापदामपहारिणम् । दक्ष यज्ञ विनाशनम् त्रिगुणात्मकं त्रिविलोचन

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

भुक्तिमुक्तिफलप्रदं सकलाघसंघ निवर्हणम् । चन्द्रशेखर माश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥ ७ ॥ भक्त वत्सलमर्चितं निधि मक्षयं हरिदम्बरम् । सर्वभूतपतिं परात्परमाश्रये-यमनुत्तमम् ॥ सोम वारिद भूत हुताशन सोमपान लिखाकृतिम् । चन्द्रशेखरमाश्रये मम कि करिष्यति वै यमः ॥ ८ ॥ विश्वसृष्टिविधापिनं पुनरेव पालनपत्परम् । संहरन्तमपि प्रपंच महेश लोक निवासिनम् ॥ क्रीडयन्त्यहनिशं गणनाथ यूथ समन्वितम् । चंद्रशेखर-माश्रये मम कि करिष्यति वै यमः ॥ ९ ॥ मृत्युभीत मृकण्ड सूनु कृतस्तवं शिव सन्निधौ । यत्र कुत्र च यः पठेन्नहिन तस्य मृत्यु भयं भवेत् ॥ पूर्णमायुररोगितामखिलार्थ सम्पद सादरम् । चन्द्रशेखर एव तस्य ददाति मुक्ति सयत्नतः ॥१०॥

॥ अथ प्रदोषस्तोत्राष्टकम् ॥

सत्यं ब्रवीमि परलोकहितं ब्रवीमि सारं ब्रवीम्युपनिषद्धृदयं ब्रवीमि ॥ संसार मुल्व-णसारमवाप्य जन्तोः सारोऽयमीश्वरपदाम्बुरुहस्य सेवा ॥ १ ॥ ये नार्चयन्ति गिरिशं समये प्रदोषेः येनाचितं शिवमपि प्रणमन्ति चान्ये ॥ एतत्कथां श्रुतिपुटैर्न पिवन्ति मूढास्ते जन्मजन्मसुभवन्ति नरा दरिद्राः ॥ २ ॥ ये वै प्रदोषसमये परमेश्वरस्य कुर्वन्त्यनन्यमनसो ऽङ्घ्रि सरोजपूजाम् ॥ नित्यं प्रवृद्धधनधान्यकलत्रपुत्र सौभाग्यसंपदधिकास्तु इहैवलोके ॥३॥ कैलासशैलभुवने त्रिजगज्जनित्रीं गौरींनिवेश्य कनकाचिरत्नपीठे ॥ नृत्यं विधातुमभिवाञ्छति शूलपाणौ देवाःप्रदोषसमये तु भजन्ति सर्वे ॥ ४ ॥ वाग्देवी धृतवल्लकी शतमखा वेणुं दधत्पद्मजां । तालोन्निद्रकरा रमा भगवती सेयं प्रयोगान्विता ॥ विष्णुः सान्द्र मृगङ्गवादनप टुर्देवाः समन्तात्स्थिताः । सेवन्ते तमनु प्रदोष समये देवं मृडानापतिम् ॥५॥ गन्धर्वयक्षपत गोरगसिद्धसाध्याः । विद्याधरामरबराप्सरसां गणाश्च॥येऽन्ये त्रिलोकनिलयाः सहभूत वर्गाः । प्राप्ते प्रदोषसमये हरपार्श्व संस्थाः ॥६॥ अतः प्रदोषे शिव एक एव पूज्योऽथनान्ये हरिपद्म-जाद्याः । तस्मिन्महेशे विधिनेज्यमाने सर्वे प्रसादन्ति सुराधिनाथाः ॥७॥ एष ते तनयः पूर्व जन्मनि ब्रह्मणोत्तमः । प्रतिग्रहैर्व्ययो निन्ये, न दानाद्यैः सुकर्मभिः ॥८॥ अतो दारिद्र-पमापन्नः, पुत्रस्ते द्विज भामिनी । तद्दोषपरिहारार्थं शरणं यातु शङ्करम् ॥ ९ ॥

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

श्रीशिवायेनमः

❀ श्री शिव महापुराण ❀

[माहात्म्य]

* श्री शिव पुराण माहात्म्य *

* प्रथम अध्याय *

भवब्धि मग्नं दीन माँ समुद्धरं भवार्णवात् ।
कर्मग्राह ग्रीहीताङ्ग दासोऽहं तव शंकर ॥

(शौनकजी के प्रश्न करने पर सूतजी का उन्हें शिवपुराण की महिमा सुनाना ।)

श्री शौनकजी ने पूछा-सूतजी ! ज्ञान और वैराग्य के सहित भक्ति से प्राप्ति होने वाली विवेक वृद्धि कैसे होती है ? साधु पुरुष किस काम क्रोध आदि मानसिक विकारों का निवारण करते हैं कलियुग में जीव असुर स्वभाव के हो गये हैं उन्हें शुद्ध बनाने का उपाय क्या है ? आप मुझे कोई ऐसा साधन बताइये जो कल्याणकारी वस्तुओं में श्रेष्ठ हो जिसके करने से शीघ्र ही अन्तः करण की शुद्धि हो जावे तथा निर्मल पुरुष को सदा के लिए शिवजी की प्राप्ति हो जावे ।

श्री सूतजी बोले-श्रीव्यासजी ऋषिवृन्द आप धन्य हो ! आप में कथा सुनने की उत्सुकता है तो सुनिये मैं एक उत्तम शास्त्र का वर्णन करता हूं । यह शास्त्र भक्ति उत्पन्न करने वाला, शिव को प्रसन्न करने वाला, काल रूपी सर्व को नाश करने वाला, रसायन स्वरूप है । सर्व प्रथम इस शास्त्र को शिव ने अपने श्रीमुख से श्री सनत्कुमार जी से कहा था इस लिये इसका नाम शिव महापुराण है । श्री सनत्कुमारजी ने महर्षि वेद व्यासजी से इस शास्त्र का वर्णन किया । व्यासजी ने लोक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

Digitized by Gangotri Siddhanta Gyaan Kosha

उपकार के लिये संक्षेप से कहा। इस शास्त्र के श्रवण पठन तथा मनन करने से कलियुगी जीवों का मन शुद्ध होता है। और शिव पद प्राप्त करते हैं। इसके श्रवण मात्र से भक्ति मुक्ति तथा राजसूर्य यज्ञों का फल प्राप्त हो जाता है। इसके श्रोता गण शिवरूप होते हैं। इसके श्रोता गणों की चरण रज तीर्थ स्वरूप है। यदि श्रवण करने को समय नहीं मिलता तो दो ही घड़ी बैठ कर सुने यदि प्रति दिन न सुन सके तो पवित्र महिनों में श्रवण करे। एक मुहूर्त अथवा आधा क्षण ही सही इस पुराण को अवश्य श्रवण करे। इसी से दुर्गति नाश होती है। श्रोता संसार के कर्म बंधन को पार कर जाता है। हे महर्षियो ! सर्व प्रकार के दान एवं यज्ञों के करने से जिस फलकी प्राप्ति होती है, वह फल इसके श्रोता को स्वयंही प्राप्त हो जाते हैं। इसका श्रवण, शिव नाम कीर्तन कल्प वृक्ष के समान फलदायक है धर्माचरण त्यागने वाले दुर्बुद्धियों के लिये तो यह शिवपुराण अमृत ही है। अमृत से तो केवल पीनेवाला ही अमर हो जाता है। शिवपुराण की सात संहिता हैं चौबीस हजार श्लोक हैं सात संहितायें हैं १–विश्वेश्वर संहिता, २ रुद्र संहिता, ३ शतरूद्री, ४ कोटिरूद्री, ५ उमा संहिता, ६ कैलाश संहिता, ७ वायु संहिता यह सातों संहिता वाला शिवपुराण परम दिव्य है। सर्वोपरि ब्रह्म तुल्य है, शुभ गति देने वाला है। यह सातों संहिता वाले शिवपुराणको जो पढ़ लेता है वह जीवनमुक्त है। हे ऋषियो ! जब तक मनुष्य इस पुराणका श्रवण नहीं करता जब तक वह इस संसार में अज्ञान वश घूमता रहता है। जिस घर में इस पुराण की कथा होती है, वह तीर्थ है, उस घर के वासियों के पाप नष्ट हो जाते हैं। सहस्त्रों अश्वमेघ एवम् सैकड़ों वाजपेय यज्ञ इस शिवपुराण की सोलहवीं कला के बराबर भी नहीं। पाप करने वाला तभी तक पापी कहलाता है जब तक कि उसने भक्तिपूर्वक शिवपुराण नहीं सुना। गङ्गादि पवित्र नदियाँ, सातों पुरी तथा गया सभी इस पुराण की समता नहीं कर सकती। मनुष्य परम गति चाहे तो शिवपुराण का श्लोक सातों पुरी तथा गया सभी इस पुराण की समता नहीं कर सकती।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

मनुष्य परम गति चाहे तो शिवपुराण का श्लोक अथवा आधे श्लोक अपने मुखसे नित्य पढ़े। शिव पुराण का अर्थ समझकर जो मनुष्य पढ़ता है अथवा प्रेमपूवक पढ़ता है। वह निश्चय ही पुण्यात्माहै। अन्त समय में जो इसे सुनलेता है उसे शिव अपना पद दे देते हैं। इस शिवपुराण की जो नित्य श्रद्धा पूर्वक पूजा करता है,वह इस लोक के उत्तम सुखों को भोग कर अन्त में शिवपर्व पाताहै। इस शिवपुराण को रेशमी वस्त्र से सत्कार करे तो वह सदा सुखी रहता है। शिवपुराण शिव का सर्वस्व है। यह धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को देने वाला है। आत्मावेत्ता पुरुष को इस पुराण का सदा सेवन करना चाहिये। यह सर्व श्रेष्ठ, तीनों पापों का हरने वाला ब्रह्मा, विष्णु आदि देवताओं को प्राण प्रिय,सन्तों का पूज्य है। मैं श्रद्धा भक्ति पूर्वक इस पुराण की वन्दना करता हूं, जिससे शिव प्रसन्न होकर मुझे अपने चरणों में स्थान दें।

* दूसरा अध्याय *

(शिव पुराण के श्रवण से देवराज को शिवलोक प्राप्ति)

शौनकजी बोले–सूतजी ? आप धन्य हैं आपने हमें अद्भुत कथा सुनाईहै। जो पापों का नाश करने वाली,मनको पवित्र करने वाली और भगवान शिव को प्रशन्न करनेवालीहै। अब आप कृपा करके यह बतलाइये कि इस कथा के सुनने से कलियुग में कौन २ से पापी पवित्र होते हैं ?

सूतजी बोले–मुनि ! सुनिये जो दुराचारी, पापी, कामी एवम् दुष्ट-जन भी इस कथा द्वारा शुद्ध हो जातेहैं। जो लालची,मिथ्याभाषी,पिता माता को दुख देने वाले, दम्भी पाखण्डी, हिंसक भी शुद्ध हो जाते हैं। इसी के श्रवण करने से अपने वर्ण एवं आश्रम से पतित द्वेषी जन भी कलियुग में तर जाते हैं। छल कपट करने वाले, क्रूरात्मा निर्दय पुरुष भी कलियुग में इसके द्वारा पवित्र हो जाते हैं। जो ब्राह्मणों के धन से पलते हैं। महा व्यभिचारी हैं वे भी इसके द्वारा तर जाते हैं, पाप परायण शठ अपवित्र दुर्बुद्धि देव द्रव्य एवम् साधुओं का द्रव्य खा-ने वाले पुरुष भी इसके द्वारा पवित्र हो जाते हैं। एक प्राचीन इति-हास सुनिये, जिसके श्रवण से पापों का नाश होता है। किरात नगर

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

में एक दुर्बल और दुराचारी दरिद्री ब्राह्मण था देवता एवं धर्म से विमुख था। सन्ध्या तो क्या स्नान भी नहीं करता था उसका देवराज नाम था। उसने अधर्म द्वारा बहुत सा धन इकट्ठा किया और धर्म में एक कौड़ी भी न लगायी वह एक समय स्नान करने तालाब पर गया। वहाँ पर शोभावती नाम की वैश्या को देखकर व्याकुल हो गया। वह सुन्दरी भी एक धनी ब्राह्मण को अपने में आसक्त देखकर प्रसन्न हो गई वार्तालाप के द्वारा उन दोनों का सम्बन्ध हो गया। वे दोनों अपने आपको स्त्री पुरुष मानकर कामासक्त हो बहुत काल तक विहार करने लगे। ब्राह्मण उस वेश्या के साथ ही बैठना, खाना पीना, एवं शयन क्रीड़ा आदि करने लगा ब्राह्मण को माता पिता एवं पत्नी ने बार २ रोका किन्तु उसने उनकी एक न मानी। उस नीचने ईर्ष्या वश एक रात्रि को सोये हुये माता पिता को एवं पत्नी को मार डाला, और उनका धन हर लिया और उसे कामासक्त ने वैश्या को दे दिया वह पापी देव ? योग से प्रहस्तिनापुर में आया। वहां उसने शिवालय देखा जिसमें बहुत से साधुजन एकत्रित थे। वहां वह बीमार पड़ गया। इस अवस्था में उसने ब्राह्मण के मुख द्वारा शिव सम्बन्धिनी कथा श्रवण की। एक मास के अनन्तर देवराज मर गया। तब यमदूत उसे पकड़ कर यमपुर ले गये। उसी समय शरीर पर भस्म लगाये, रूद्राक्ष धारण किये, त्रिशूल उठाए रूद्रगण क्रोध में भर कर शिवलोक से चलकर यमपुरी पहुँचे, और यमदूतों को भगाकर देवराज को छुड़ा लिया। फिर उसे परम अद्भुत बिमान पर चढ़ाकर वे गण जब कि कैलाश को जा ही रहे थे कि यमपुरी में महा कोलाहल हुआ। जिसे सुनकर धर्मराज भी अनेक मसल से बाहर आगये। वहां साक्षात शिवजी के समान चार दूतों को देखा। धर्मराज ने उनकी विधि पूर्वक पूजा की। ज्ञान चक्षुओं के द्वारा धर्मराज सब कुछ जान गये। इस प्रकार पूजा एवं प्रार्थना कराकर शिव गण कैलाश पर पहुँचे। वहां श्री पार्वतीजी के साथ दयासागर शिव को उसे आकर अर्पित किया।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyan Kosha

* तीसरा अध्याय *

(चंचुला का पाप से भय एवम् संसार से वैराग्य)

शौनकजी ने कहा-हे प्रभु ! आप बुद्धिमान हो, भाग्यशाली एवम् सर्वज्ञ हो आपकी कृपा से मैं भी बार बार कृतार्थ हूँ इतिहास को सुनकर मेरा मन अत्यन्त प्रसन्न हुआ है। आप कृपा करके प्रेमवर्धिनी और मोक्ष दायिनी शिव कथा भी कहिये।

सूतजी बोले-शौनक ! तुम शिवभक्त और वेद ज्ञानी हो। इसलिए मैं तुम्हें उस गुह्य कथा को सुनाता हूँ समुद्र के निकट एक वाष्कल नाम का ग्राम था। वहाँ वैदिक धर्म को त्याग कर महापापी जन निवास किया करते थे वे बड़े दुष्ट थे, जिनकी आत्मा दुर्विषयी थी, शस्त्रधारी, पर स्त्री भोगी, खल, कपटी खेती करने वाले थे। ज्ञान वैराग्य एवम् सत् धर्म तो जानते ही न थे। उनकी स्त्रियाँ भी सबकी स्वेच्छच्चारिणी, कुटिला, पाप परायण, दुर्बुद्धि, व्यभिचारिणी थी इस प्रकार दुर्जनों से पूर्ण उस वाष्कल ग्राम में विन्दुग नाम का अधम ब्राह्मण भीथा। वह दुरात्मा महापापी था। वह सुधर्मणी चंचुला नाम की अपनी पत्नी को त्याग कर वैश्यागामी हो गया। इसी प्रकार उसे कुकर्म करते २ बहुत समय व्यतीत होगया। उसकी पत्नी चंचुला नाम पीड़ित होकर पहिले तो अपने धर्म के भयसे क्लेश सहती रही जब वह युवती हुई तो काम न सह सकने के कारण उसने भी अपना धर्म त्याग दिया और कुमार्ग गामिनी होगई। एक वार बिन्दुग ने काम पीड़ित अपनी पत्नी को अन्य पुरुष के साथ देख लिया। तब तो वह क्रोध में भर उसपर वेग से दौड़ा। उसे देख कर वह पुरुष तो कपट करके वहांसे भाग लिया। तब तो उसने अपनी स्त्री को पकड़ लिया और उस दुश्चरित्रा में खूब घूंसे जमाये। जब वह अपने पतिसे पिट चुकी तो उसे भी क्रोध आ गया और वह निर्भय होकर पति से बोली तुम्हें अपना विचार नहीं तुम भी तो मुझ नव यौवना पति सेवा परायण मुझ पत्नी को त्यागकर वैश्या-गामी होरहे हो। पत्नी रूपवती हो काम से व्याकुल हो उसे पतिका विहार प्राप्त न हो तो उसकी क्या गति होगी ? उत्तर दो में रूपवती नवयौवना

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

हूं। मुझे तुम्हारा सङ्ग प्राप्त नहीं। मैं किस प्रकार काम का दुःख सहन करूं सूतजी बोले–जब उस ब्राह्मण की पत्नी ने ऐसा कहा तो उस दुर्बुद्धि पापी ने पत्नी को कहा-तुमने सत्य कहा है। तुम्हारा मन भी काम से व्याकुल है। कान्ते! अब तुम्हें हित की बात कहता हूं. भय छोड़ कर सुनो। तुम निर्भय होकर औरों के साथ विहार करो पर उनसे धन भी तो लो। क्योंकि मैं वेश्यागामी होगया हूं और तू उनसे धन लेकर मुझे देती रह जिससे तेरा मेरा दोनों का स्वार्थ बना रहेगा। सूतजी बोले-इस पतिसे सुनकर वह चंचुला प्रसन्न हुई और पति की बात मान ली। अब तो वे दोनों कुकर्म में पड़ गये। इस प्रकार उन दोनों दुराचारियों को कुकर्म करते–करते बहुत सा समय बीत गया। कुमति दुष्ट ब्राह्मण समय आने पर मर गया एवं पापों के कारण नरक में गया। और बहुत काल पर्यन्त नरक भोगे। इसके अनन्तर वह पापी विन्ध्याचल पर्वत पर भयङ्कर पिशाच हुआ। अब बिंदुग पति के मर जाने पर मूर्खा चंचुला पुत्रों के साथ घर में रह गई। अन्य पुरुषों के साथ उसका विहार वैसा ही रहा समय की गति के कारण उसका यौवन बीतने लगा। एक बार दैवयोग से पुण्य पर्व के आने पर वह नारी बन्धुओं के साथ गोकर्ण क्षेत्र में आ गई। बन्धुओं के प्रसङ्ग से उसने भी तीर्थ पर स्नान किया। बन्धुओं के साथ इधर–उधर घूमने लगी। किसी देवालय में पहुंचकर उसने दैवज्ञ के मुख से शिवपुराण की पवित्र कथा सुनी। कथा में उसने सुना जो स्त्री पर पुरुषों के साथ व्यभिचार करती हैं यमलोक में यमदूत लोहे के परिघ तपा कर उसकी योनि में डाल देते हैं। इस वैराग्य—वर्धिनी कथा सुनकर वह भय से कांप उठी। जब कथा हो चुकी श्रोतागण भी चले गये, वह डरी हुई शिव भक्त कथा वाचक के पास गई और बोली–ब्राह्मण! मैं दुराचारिणी हूँ। मेरा चरित्र पापमय है। मुझ मूर्खा ने अपना योवन व्यभिचार में कामासक्त होकर व्यतीत कर दिया है। आपकी वैराग्यदायक कथा सुनकर मुझे ज्ञान हुआ है। दुराचार में पड़ी हुई स्वधर्म से पतित

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

महा निन्दनीय मेरी क्या गति होगी ?

प्रभु ! मैं क्या करूं ? कहाँ जाऊं किसकी शरण लूं नरक समुद्र में गिरती हुई मुझे कौन आकर बचायेगा ? हे ब्राह्मण ! आप ही मेरे पिता हो। मैं आपकी शरण हूं कृपा करके मेरा उद्धार करो। सूतजी बोले–वह इस प्रकार दुःखी होकर ब्राह्मण ने कृपा करके उसे उठाया।

* चौथा अध्याय *

(चंचुला को शिव पद प्राप्ति)

ब्राह्मण बोला–मुझे प्रसन्नता है तुझे समय पर ज्ञान हो गया। यह सदाशिव की कृपा है। तू भय मत कर। शिव की कृपा से तेरे सब प्रकार के पाप नष्ट हो जायेंगे। शिव कथा के श्रवण से तुम्हारी इस प्रकार की बुद्धि हुई है, विषयों में वैराग्य हुआ है। पश्चाताप संयुक्त तुम्हारी मति शुद्ध हो गई है। शिवपुराण की कथा के श्रवण से जिस प्रकार चित्त शुद्ध हो जाता है वैसा अन्य उपायों से नहीं होता है। चित्त के शुद्ध होने पर महादेवजी पार्वतीजी के उस हृदय में जाकर विराजमान होते हैं। तब वह शुद्धात्मा शिव के परम पद को पाता है। इसी कारण सब वर्ण इस कथा को सुनें। शिवने इसकी रचना की है। बहुत से पापी इस कथा के श्रवण से शिव का ध्यान पाकर पश्चाताप करते हुए सिद्ध को प्राप्त हुए। इसके श्रवण से सर्व प्रकार के मङ्गल होते हैं। शिव कथा को हृदय में मनन करने से सर्वथा चित्त की शुद्धि हो जाती हैं।

भक्ति विहीन माया के बन्धन में पड़े हुए पुरुष को पशु जानना चाहिये, वह संसार बन्धन से कभी मुक्त नहीं होता। इसलिये ब्राह्मणी ! तू भी इस परम पावनी कथा को सुन। विषयों से मन को हटाले। शङ्कर भगवान् की कथा के श्रवण से तेरी चित्त की शुद्धि हो जायगी तब मुक्ति को प्राप्त होगी।

सूतजी बोले–यह कहकर कृपालु श्रेष्ठ ब्राह्मण शिव ध्यान मग्न

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

होकर मौन होगये। चंचुला सुनकर प्रसन्न हो गई। उसकी आंखों से आँसू झरने लगे। तब हाथ जोड़ कर ब्राह्मण के चरणों में गिर पड़ी और बोली प्रभो! मैं कृतार्थ हुई। चरणों में से उठकर परम शान्तिसे गद्गद् वाणी द्वारा ब्राह्मण से वैराग्ययुक्त वचन बोली–शिवभक्त! आप धन्य हैं। परोपकार परायण हैं। श्रेष्ठजनों में वर्णनीय है। साधो! मैं नरक रूपी समुद्र में गिर रही हूँ। मेरा उद्धार करो। शिवपुराण की कथा अर्थ युक्त सुनकर मैं विषयों से विरक्त हो गई हूँ। अब मुझे इस पुराण के सुनने की बड़ी श्रद्धा है। सूतजी बोले–शिवपुराण सुनने की इच्छा से वह द्विजवर की सेवा में वहीं रहने लगी उनकी कृपा पाकर हाथ जोड़े सदा उपस्थित रहती। वह सर्व श्रेष्ठ ब्राह्मणी थी उसे शिव पुराण की कथा सुनाने लगे। इस प्रकार उस महाक्षेत्र में श्रेष्ठ ब्राह्मण से शिव पुराण की उत्तम कथा उसने सुनी। भक्ति ज्ञान वैराग्य वर्धिनी एवम् मुक्तिदायिनी कथा को सुनकर वह कृतार्थ हुई। शिव की कृपा से शिवरूप का ध्यान उसने प्राप्त कर लिया। वह नित्य ही तीर्थ जल में स्नान करती। जटा तथा वल्कल धारण कर लिये थे। सारे अङ्गों पर भस्म रमाये रहती थी रुद्राक्ष पहनती। वाणी का सँयम एवम् थोड़ा आहार करके गुरू उपदिष्ट मार्ण द्वारा शिवा नाम का जप करती हुई उसने शिव को सन्तुष्ट किया। इस प्रकार शिव का ध्यान करते चंचुला ने बहुत सा काल व्यतीत किया। समय के पूरा होने पर भक्ति, ज्ञान वैराग्य से युक्त उसने विना कष्ट के शरीर छोड़ा। तब तो शिवगणों से संयुक्त शोभायमान दिव्य विमान स्वयं शिव ने वहाँ भेजा। शिवगणों ने इसे झटपट विमान पर चढ़ा लिया और उसे दिव्य अङ्गों वाली दिव्य भूषण पहिने शिवपुरी में त्रिलोचन महादेवजी का दर्शन किया, शिव करोड़ों सूर्य के समान प्रभा वाले थे। गणेश, भृङ्गी नन्दीश्वर, वीरभद्र आदि जिनकी उपासना कर रहे थे। वे महादेव कीलकण्ठ पंच मुख त्रिलोचन चन्द्रशेखर रूप से दर्शन देरहे थे। जिनके वामाङ्ग में विद्युतकेसमान गौराजीविराजमानथी, कपूर के समान गौर, सर्व अलंकार विभूषित श्वेतभस्म रमाये श्वेतस्त्रधारी

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

गौरीश शङ्कर का दर्शन कर चंचुला परम प्रसन्न होकर वार वार प्रणाम करने लगी। श्रीपार्वतीजी ने तो उस चंचुला को दिव्यरूप देकर अपनी सखी बना लिया। वह परम सुखी होगई, उस ज्योति स्वरूप सनातन लोक में उसने निवास प्राप्त किया।

* पाँचवाँ अध्याय *

(चंचुला के प्रयन्त से विन्दुग का पिशाच योनि से उद्धार)

शौनक बोले—सूतजी आप धन्य हो, आपने हमें अद्भुत कथा सुनाई है। चंचुला ने सदगति पाकर क्या किया और उसके पतिका क्या हुआ?

सूतजी बोले-चंचुला एक दिन पार्वतीजी के पास जाकर हाथ जोड़ कर स्तुति करने लगी—पार्वतीजी ! आप स्कन्द माता हो। सब सुखों को देने वाली हो, आप प्रकृति सूक्ष्मा, सच्चिदानन्द रूपा, सगुण ब्रह्मादि देवों से श्रेष्ट हो। सृष्टि स्थिति प्रवलकारणी, त्रिसुरा लया हो। तीनों देवो की परम प्रतिष्ठा करने वाली हो। चन्चुला इस प्रकार पार्वतीजी की स्तुति कर प्रभो श्रु बहाती हुई नत मस्तक होकर मौन हो गई। तब भक्त वत्सला शङ्कर प्रिया पार्वतीजी ने प्रसन्न होकर चंचुला से कहा सखी चंचुले ! मैं तुम्हारी स्तुति से प्रसन्न हुई। तू वर मांग। तुम्हारे लिये कुछ भी अदेय नहीं। मस्तक झुकाकर चचुला बोली मैं अपने पति की गति नहीं जानती वह अब कहाँहै ? मुझे उससे युक्त करने की कृपा करें, दीन वत्सले ! महादेवि वह महापापी मुझसे पहले मरा है न जाने किस गति को प्राप्त हुआ है यह सुनकर श्रीपर्वतीजी प्रसन्न होकर बोली—तेरा पति बिंदूग वेश्याभोगी महापापी मर कर नरक में गया। अनेक वर्षों तक दुःख भोगकर अब पाप शेष से वह पापटी विंध्याचल पर पिशाच हुआ है। वह वहाँ वायु भोजी अनेकों क्लेश पारहा है।

सूतजी बोले—पार्वती के वचन सुन चंचुला पति के दुःख से बड़ी दुःखी हुई। कुछ धैर्य धर पार्वती को प्रणाम करके, दुःखी मन से वह बोली देवि कृपा कर दुष्ट पापी मेरे पति का भी उद्धार करो। किस उपाय द्वारा उस पापी की सद्गति हो कृपा शीघ्र कहैं। सूतजी बोले

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

इस प्रकार सुनकर श्रीपार्वतीजी ने चंचुला से कहा, यदि तुम्हारा पति शिवपुराण की कथा सुनले तो उसे सद्गति प्राप्त हो जायेगी। गौराजी के वचन सुनकर चंचुला बार-बार प्रणाम करने लगी। अपने पति के सब पापों की विशुद्धि के लिये एव सदगति के लिये कथा की प्रार्थना करने लगी। जब उस नारीने बार बार प्रार्थना की तो कृपालु पार्वती जी को दया आगई। तब उन्होंने शिव कीर्ति गायन करने वाले तुम्बरू गन्धर्व को बुलाकर कहा-कि तुम्बरू ! मेरा वचन मानकर इस स्त्री के साथ बिंध्याचल पर शीघ्र जाओ। तुम्हारा कल्याण हो। वहां एक भयङ्कर पिशाच रहता है, वह पिछले जन्म में वह विन्दुग ब्राह्मण मेरी इस सखी का पति था वह दुष्ट वैश्या का पति भी बना रहा। स्नान, सन्ध्या क्रिया आदि से वह हीन अशुद्ध क्रोधी दुर्भक्षी व्यभिचारी तथा सज्जनों से द्वेष करने वाला था। उसने वेश्या सङ्गमें पड़कर सत्कर्मों का नाश कर दिया। बित्त लोभसे अपनी पत्नीको भी वैश्या बना आयुभर वह दुराचारी रहा समय पाकर मरा तो यमपुरमें उसे घोर नरकमें डाला गया उस पापीने वहाँ घोरयम यातनायें भोगी अब वह विन्ध्याचल पर्वत पर पिशाच होकर पापों का भल भोग रहा है तुम वहाँ जाओ। तुम यत्नपूर्वक शिवपूराण की तुम पाप विनाशिनी दिव्य कथा उसके आगे कहो शिवपुराण की कथाके द्वारा वह शुद्ध होकर प्रेत भाव को त्याग देगा।

सूतजी बोले—पार्वतीजी ने कहा तब चन्चुला तुम्बरू के साथ विमान पर चढ़कर विन्ध्याचल पर्वत पर पहुँची। वहाँ उसने बड़े शरीर बाले महा हनु वाले हंसते अथवा रोते हुये विकट आकार वाले एक पिशाच को देखा। उस भयङ्कर पिशाच का महा बली तुम्बरू गन्धर्व ने बलपूर्वक पकड़ कर पाशों से बाँध दिया। तब उसे शिवपुराण सुनाने के लिये महान उत्सव मनाया उस उत्सव से यह प्रसिद्ध होगया कि गौरी की आज्ञा से पिशाच को तारने के लिए तुम्बरू गन्धर्व विन्ध्याचल पर शिवपुराण की कथा करेंगे। सब लोकों में महान कोलाहल हुआ। कथा सुनने के लिये देवर्षिगण वहां शीघ्र पहुंच गये। शिवपुराण सुनने

CC-0. ASI Sarnath Cirkel. Digitized by eGangotri

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

के लिये वहाँ बड़ा समाज इकट्ठा होगया सब में कथा सुनने की लालसा थी। पाशों से बंधे हुये पिशाच को वहाँ बिठाया गया। तब तुम्बरू हाथ में बीणा लेकर शिव कथा कीर्तन करने लगा। पहली संहिता से लेकर सातवीं संहिता तक माहात्म्य के साथ उसने शिवपुराण की कथा सुनाई सारे श्रोता गण सात संहिता वाले सम्पूर्ण शिवपुराण को सुन कर सब पापों से मुक्त हो गये। और पिशाच शरीर त्याग कर दिव्य रूप प्राप्त हुआ। उसकी पत्नी को देखकर सारे देवर्षि विस्मत एवं आनदित हुए और प्रसन्न होकर शिव यश गाते—गाते अपने—अपने लोक में गये। बिन्दुग भी विमान पर चढ़कर अपनी पत्नीकेसाथश्रीशङ्कर के गुण गाता तुम्बरू के साथ लोक में गया। श्रीपार्वतीजी के साथ शङ्कर भगवान ने उसका आदर किया और उसे अपना गण बना लिया जो इस इतिहास को भक्ति पूर्वक सुनता है एवँ कीर्तन करता है वह उस लोक भोगों को भोग कर अन्त में मुक्ति पाता है।

* छठा अध्याय *

(शिवपुराण के श्रवण की विधि)

शौनक ऋषि बोले सूतजी ! आप परम शैव हैं। कृपा कर शिवपुराण के श्रवण का विधान भी कहिये, जिससे श्रोतागण सम्पूर्ण फल प्राप्त कर सकें।

सूतजी बोले—शौनकजी ! अब सम्पूर्ण फल की प्राप्ति के लिए शिवपुराण के श्रवण का विधान सुनिये। प्रथम ज्योतिषी को बुलाकर पुराण की निर्विघ्न समाप्ति के शुद्ध मुहूर्त दिखवाये। उसके अनुसार देश देश में पत्र भेजे कि यहाँ शिव कथा होने वाली है। अन्तःशुभार्थी सज्जनों को शीघ्र पहुंचाना चाहिये। शिव तथा कीर्तन के प्रेमी सज्जनों को दूर दूर से भी आदर पूर्वक बुलाना चाहिये। शिवालय, तीर्थ, वन अथवा घर में ही शिवपुराण के श्रवण का उत्तम स्थल बनवाये। पृथ्वी को शुद्ध करके लीपे। धातुओं से शोभित करे। महान् उत्सव के लिये वहाँ दिव्य रचना करे। घर की बेकार चीजों को वहाँ से हटा दे। केले

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

के खम्भों से शोभायमान ऊँचा मंडप बनावे। उसके चारों ओर फल फूल वितान एवं पताकायें लगावे। चारों दिशाओं में ध्वजा पताकायें सुशोभित करे। यह सब काम भक्ति श्रद्धा पूर्वक करे। वेदी पर भगवान् शङ्कर का दिव्य आसन लगावे। वक्ता का भी सुखदायक एवं दिव्य आसन लगावे। श्रोताओं के बैठने का उत्तम स्थल बनावे। विवाह की भांति इस कार्य में मन लगावे, अन्य लौकिक चिन्तायें त्याग दे। उत्तर की ओर मुख करके वक्ता, पूर्व की ओर मुख करके श्रोता बैठे। वक्ता के सामने श्रोताओं के मुख होने चाहिये। जबपौराणिक ब्राह्मण व्यास आसन पर बैठे तो कथा प्रसङ्ग की समाप्ति तक किसी के आगे नमस्कार न करे। बालक, युवा, वृद्ध, दरिद्री अथवा दुर्बल पुराणज्ञ पुण्यात्माओं से सदा वन्दनीय है। जन्म से गुण से तो कई गुरू होते हैं किन्तु गुण ज्ञाता परम गुरू है। पुराणज्ञ से बढ़कर और गुरू है कौन? जो करोड़ों जन्मों में कष्ट उठाते हुए पुरुषों को मुक्ति दिलाता है। पुराणज्ञ भी शुद्ध चतुर शान्त साधु एवं दयालु होना चाहिए ऐसा चतुर ही इस कथा को कहे। सूर्योदय से लेकर साढ़े तीन प्रहर तक बुद्धिमान इस शिवपुराण की कथा बाँचे। कथा कीर्तन करने वाले, मलमूत्र त्यागने के लिये मध्यान्ह में दो घड़ी पर्यन्तकथा विराम करें। वक्ता को कथाप्रारम्भ से पहिलेदिन हजामत करा लेनी चाहिये। सारे नित्यकृत्यभी सक्षेपमें करते रहना चाहिये। वक्ताकी सहायता के लिये संशय छेदनकर्ता चतुर पण्डित वक्ता के पास बिठाना चाहिये। कथा निर्विघ्न समाप्त हो, इसलिये प्रथम नित्य ही गणेश पूजन करे। फिर कथा के स्वामी शिव तथा पुस्तक की पूजा करे। श्रोता शुद्ध हो। शुद्ध चित्त हो प्रसन्न होकर शिवपुराण की आदर पूर्वक कथा सुने। अनेक कर्मों में भ्रान्त चित्त, काम, क्रोधादि छैः विकारों से युक्त, व्यभिचारी, पाखण्डी, ऐसे वक्ता एवं श्रोता पुण्यभागी नहीं होते। सांसारिक चिन्ता, धनगृह, पुत्रादि की चिंता त्याग कर शुद्ध बुद्धि होकर कथा में चित्त लगाने वाला ही उत्तम फल पाता है श्रद्धा भक्ति से युक्त अन्य कार्यों में लालसा से रहित, वाणी रोकने

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वाला शुद्ध श्रोता ही पुण्य का भागी होता है। जो नराधर्म भक्तिहीन इस कथा को सुनते हैं उन्हें कोई फल नहीं मिलता, वे जन्म जन्म में दुःख पाते हैं। जो पुराण की पूजा यथाशक्ति भेंटों के द्वारा न करके इस कथा को सुनते हैं वे मूर्ख दरिद्र एवम् अपवित्र होते हैं जो मनुष्य कथा होते समय उठकर अन्यत्र चले जाते हैं भोगान्तरमें उनकी दारादि सम्पत्ति नष्ट हो जाती है। जो पान चबाते इस कथा को सुनते हैं उन्हें नरक में यमदूत उन्हीं की ही विष्टा खिलाते हैं। जो इस कथा को ऊंचे आसन पर बैठकर सुनते हैं वे सब नरकयातनायें भोगकर काक होते हैं और जो वीरादि आसन (कुर्सी) पर चढ़कर कथा को सुनते हैं वे नरक भोगकर विष वृक्ष होते हैं। जो वक्ता को प्रणाम न करके कथा सुनते हैं वे सब नरक भोगकर अर्जुन वृक्ष होते हैं। जो निरोग होकर भी लेट कर कथा सुनते हैं वे नरकों के अनन्तर अजगर आदि होते हैं। जो वक्ता के बराबर आसन पर बैठकर कथा सुनते हैं उन्हें नरक में गुरू शय्या पर चढ़ने का जितना पाप लगता है। पाग बाँधे कथा सुनने वाले मनुष्यों के पुत्र पापी एवम् कुलदूषक होते हैं। जो वक्ता की एवम् इस पवित्र कथा की निन्दा करते हैं वे नरक भोगकर सौ जन्म कुत्ते होते हैं। कथा होते समय जो बुरे वचन निकालते हैं वे घोर नरक भोग कर गधे होते है। जो इस पवित्र कथा को कभी नहीं सुनते, वे नरक भोगकर वन शूकर होते हैं। जो खल कीर्तन कथा में विघ्न डालते हैं वे करोड़ वर्ष नरक भोगकर ग्राम सूकर होते हैं। यही विचार कर श्रोता वक्ता दोनों को भक्तिवान प्रसन्न बुद्धिमान होकर कथा कहनी एवं सुननी चाहिये। नित्यकृत्य संक्षेपसेप्रायश्चित भी करे। नवग्रह पूजन सर्व पूजनकरे एवं नित्य विधि पूर्वक शिव पूजन तथा पुस्तक पूजन करे पूजन के अनन्तर भक्ति से हाथ जोड़ विनीत हो पुस्तक का शिवरूप समझ स्तुति करे।

शिवपुराण देव ? आप साक्षात् महेश्वर हो, प्रत्यक्ष हो श्रवण के लिये स्वीकृत हो अतः मुझ पर संतुष्ट होवो। मेरा यह सम्पूर्ण कथा

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

श्रवन करने का मनोरथ आपको सफल करना है। हे शिव मैं आपका दास हूं भवसागर में निमान हूं। कर्म रूप ग्राहों से पकड़ा गया दीन हूं। मेरा उद्धार करो। इस प्रकार शिवपुराण को साक्षात् शिव जानकर स्तुति करे। व्यासजी की पूजा करे। शिव पूजा की विधि से पुष्प वस्त्र भूषण धूप दीप आदि से वक्ता की भी पूजा करे। वक्ता से प्रार्थना करेकि आप शिव शास्त्र विशारद श्री व्यास रूप हो. शिव कथा के प्रकाश से मेरा अज्ञान दूर करो। शिव पंचार्ण मंत्र के लिये पांच ब्राह्मण का वरण करे। वे शिव पचाक्षार मंत्र को भक्ति से जपते रहें। यह मैंने कथा के श्रवण का सद्विधान वक्ता श्रोता आदि भक्तों का लक्षण सुना दिया। अब तुम क्या सुनना चाहते हो।

* सातवाँ अध्याय *

(श्रोताओं के पालन करने योग्य नियम)

शौनक बोले-सूतजी! आपने यह परम पवित्र एवम् अद्भुत कथा तो सुना दी अब कृपाकरके लोकहित के लिए शिवपुराण के श्रोताओं के नियम सुनाइये। सूतजी बोले-शौनक! दीक्षा रहित पुरुषों को कथा श्रवण करने का कोई अधिकार नहीं। अतः श्रोताओं को पहिले वक्ता से दीक्षा लेनी चाहिये। कथा व्रती को ब्रह्मचर्य भूमिशयन पत्रावली पर भोजनकरना चाहिये। भोजन कथा समाप्ति पर करें। शुद्ध होकर शिवपुराण भक्तिसे उपवास अथवा एक समय भोजन करें। शुद्ध होकर शिवपुराण भक्ति से सुने। घृतपान दुग्धपान, फलाहार अथवा एक समय भोजन करके सुख-पूर्वक कथा सुने। अथवा एकवार हविष्यान्न (खीर) भोजन करें। जिससे सुख पूर्वक कथा में विघ्न न पड़ने का भय रहता है। गरिष्ठ (भारी)दालें, जल,अन्न,निष्पाह (चौरा या राज सिंवी के बीज) मसूर की दाल बासी इन्हें कथा व्रती न खावे। पलांडु (प्याज) लहसन,हींग गाजर, नशीली वस्तु एवम् अमिष संज्ञक चीजों को श्रोता छोड़ दे। बैंगन, कलिन्द, पिच एड, मूली पेठा, नालिका शाक,भुना मूल इन्हें कथाव्रती न खावे। काम आदि विकार,ब्राह्मणों की निन्दा, एवं साधुजनों की निन्दा आदि न करे।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

श्रोता रजस्वला न देखे पति से बात न करे, ब्राह्मणद्वेषी, वेदों को न मानने वाले के साथ श्रोता न बोले। सत्य, शुद्धता, दया, मौन, सुधापन विनय मनकी उदारता आदि गुण श्रोता में होने चाहिये। निष्काम हो अथवा सकाम हो, नियमसे कथा सुने। सकाम की कामना सिद्धी, निष्काम को मुक्ति होती है। दरिद्र, रोगी, पापी, निर्भोगी, निःसन्तान पुरुष इस कथा का श्रवणकरें। सातोंप्रकार की कान्त वन्ध्या दुष्ट स्त्रियाँ एवम् जिन का गर्भस्थानहोताहै यह उत्तम कथा सुने इस शिवपुराणके दिन कोटियज्ञ के समान अति उतम मानने चाहिए। इन उत्तम दिनोंमें अल्प वस्तु भी विधिसे दान दी जाय तो उसका अक्षय फल प्राप्तहोताहै। इस प्रकार व्रतविधि पूरी करके कथा सुनकर परमआनन्द युक्त उद्यापनभी करे इसके उद्यापन धनी पुरुषों को चौदस के दिन करना चाहिये। निष्किंचन (गरीब) भक्तों को उद्यापन का आग्रह नहीं क्योंकि वे शम्भुकेभक्त निष्काम हैं श्रवण से ही पवित्र हो गये। इस प्रकार परायण के यज्ञोत्सव की समाप्ति होनेपर श्रोताओं को भक्ति पूर्वक पूजा करनी चाहिये। शिव पूजनकी भांतिपुस्तक का पूजन करे। उसके अनन्तर वक्ता का भी पूजन करे। पुस्तक आच्छादन के लिये नवीन वस्त्र एवं बांधने के लिए रेशमी डोर दे। जो पुराण के लिए नया वस्त्र, तथा रेशमी डोरी देते हैं वे युग में ज्ञान एवं भोग सम्पन्न होते हैं। बांचने वाले को बहुमूल्य बस्तुयें अनेकों प्रकार के वस्त्र भूषण दिव्यपात्र देने चाहिये। जो पुरुष पुस्तक के आसन के लिये कम्बल अजिन, रेशमी वस्त्र, चौकी पाट आदि देत हैं वे स्वर्ग में पहुंच मन चाहें भोगों को भोगकर ब्रह्मलोक में एक कल्प निवास करके फिर शिव लोक प्राप्त करते हैं। इस प्रकार वक्ता का पूजन करके सहायता के लिए बैठे हुए पण्डित का भी वक्ता से कुछ कम धन द्वारा पूजन करे। आये हुये ब्राह्मणों का अन्नधन आदि से सत्कार करे फिर गायन बाजे नृत्यआदि से महान उत्सव मनावे। श्रोत यदि विरक्त हो तो दूसरे दिनजो शिवने श्रीरामचन्द्रजीकी प्रीत कही है गीता का पाठ करे। श्रोता यदि गृहस्थहो तो कर्म की शान्ति के लिये शुद्ध हविके द्वारा हवन करे। रुद्रसंहिताकेप्रति

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

श्योक से अथवा तन्मयता से गायत्री मन्त्र से किंवा इस पुराण के तत्वसे होम करे अथवा मूलमन्त्र से होम करे। न्यूनाधिक दोषों की शान्ति के लिये भक्ति पूर्वक शिव सहस्रनाम का पाठ करे। इससे सब सफल है इसमें संशय ही नहीं ग्यारह ब्राह्मणों को मधु तथा खीर से भोजन करावे और दक्षिणा दे। शक्ति होने पर तीन फल जितने सोने का सुन्दरसिंह बनवा कर शिव संतुष्टि के लिये दान करे। इसी दान के प्रभाव से एवम् पुराणदान के प्रभाव सें शिवजी के अणुग्रह से भवबन्धनों से मनुष्य मुक्त हो जाता है।

शौनकजी ! मैंने शिवपुराण का महात्म्य सुना दिया। अब और क्या सुनना चाहते हो ? शिवपुराण पुराणों का तिलक है। जो जन्म-धारी इस संसार में सदा शिव का ध्यान करते हैं और उनकी वाणी शिवगणों की स्तुति करता है वे भवसागर से तर जाते हैं।

शिवपुराण–महात्म्य सप्तमोऽअध्यायः

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

नमोरुद्राय शान्तायें ब्राह्मणे परमात्मनेः

❀ श्री शिव महापुराण ❀

* विद्येश्वर संहिता *

* प्रथम अध्याय *

कथा-प्रसङ्ग

(तीर्थराज में मुनियों का समागम)

विशेद्रव स्थितिल यादिषु हेतु मेक।
गौरीपति विदिततत्व मनन्त कीर्तिम् ॥
मायाश्रय विगतमाय मचिन्त रूपा।
बोधास्वरूा भलं हिशिवं नमामि ॥

जो संसार की उत्पत्ति स्थितऔर अन्त आदि के एक मात्र कारण हैं तत्वज्ञहैं जिनकी कीर्ति का कहीं अन्त नहीं है जो माया के आश्रय होकर भी उससे अत्यन्त दूर हैं तथा जिनका स्वरूप अचिन्त्य है उन विमल वोध स्वरूप भगवान शङ्कर को मैं सादर प्रणाम करता हूं।

व्यासजी बोले–एक समय श्रीगङ्गा और यमुना के सङ्गम प्रयाग में जब मुनियों ने एक विराट सम्मेलन किया, तब परम पौराणिक सूत-जी के आने पर सभी लोगोंने अपने-अपने स्थानों से उठकर उनकी यथो-चित अभ्यर्थना की तथा पूजा-सत्कार करके हाथ जोड़कर यह प्रार्थना की कि,हे मुनीश्वर ! कलियुग में सभी प्राणी पाप, ताप से पीड़ित हो सत्कर्म रहित, परनिन्दक, चोर, पर-स्त्री गामी, दूसरों की हत्या करने वाले देहाभिमानी, आत्म-ज्ञान रहित नास्तिक, माता–पिता से द्वेषी और स्त्रियों के दास हो जाँयेगे। ब्राह्मण लोभी, वेद को बेचकर जीविका कर-ने वाले धन के इच्छुक और मद से मोहित अपनी जातिके कर्मों को छोड़ कर ब्रह्म-ज्ञान से रहित दयाहीन और व्रत को न करने वाले, कृषक

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

क्रूर और मलिन स्वभाव के हो जाँयेंगे। क्षत्रिय धर्म के विपरीत कुसंगी और पाप-परायण होंगे। रण से कायरता, धर्मसे विमुखता चोरी, नीचता और दास्ता ही उनका धर्म हो जायगा। इस प्रकार वैश्य भी संस्सकारहीन अपने धर्म से रहित कुमार्गी से धन कामना ही अपना मुख्य धर्म समझेंगे। वे गुरु देवता और ब्राह्मणों से रहित कामी, मलिन मोहाच्छन्न और परम लोभी होंगे। शूद्र भी अपने धर्म को छोड़ तिलक छाप लगा ब्राह्मणों का सा आचार करने वाले, नकली तपस्वी होम कर्ता कुटिल ब्राह्मणों के निन्दक धनवान कुकर्मी विद्यावान विवादी, धर्मलोक दंभी महाभिमानी, क्रूर वर्ण धर्म के नाशक, सर्व वर्णो से उच्च और दुष्कर्मी होजायेंगे। इस प्रकार स्त्रियोंमें भी धर्म का ह्रास हो जायेगा और वे तमोगुण से युक्त यारवासी पति से विमुखी, माता पिता की भक्ति से रहित नित्य रुग्ण रहा करेंगी। ऐसी नष्ट-बुद्धि सन्तानों की परलोक में क्या दशा होगी तथा वे किस काम उपाय से सदगति को प्राप्त होंगे। सूतजी ? आप इस पर प्रकाश डालिये। क्योंकि हम लोगों को इसी बात की बड़ी चिन्ता है कि जगत की क्या दुर्दशा होगी। परोपकार से बढ़कर दूसरा धर्म नहीं है। अतः इसके लिये जो सर्व सिद्धान्तों से मान्य हो—ऐसी कोई सरल युक्ति आप बतलाने की कृपा कीजिये।

* दूसरा अध्याय *

(श्रीशिवपुराण की महिमा और संहिताओं के भेद)

सूतजी बोले—मुनीश्वरो ? यह आपने त्रिलोक-हितकारी उत्तम प्रश्न किया है कलिके पापों का नाश करने वाला परमार्थदायक शिव-पुराण ग्रन्थ सब ग्रन्थों से उत्तम और वेदान्त सागर का भी सर्वस्व है। जिसके पढ़ने-सुनने से मनुष्यको सर्वोत्तम शिव-गति प्राप्त होती है। वेद व्यास के कहे हुये इस पुराण का बहुत महत्व है इसके कीर्तन और श्रवण से जो फल प्राप्त होता है, वह सब को मैं नहीं कह सकता किन्तु उसका कुछ माहात्म्य में आप लोगों से कहता हूं ध्यान देकर सुनिये व्यासजी ने कहा है, यदि शिवपुराण का एक या आधा श्लोक भी कोई

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

पढ़ेगा तो पाप से छूट जायगा और यदि सावधानी से सम्पूर्ण पढ़े तो जीवनमुक्त हो जावे और इसके अनुसार आचरण करे तो एक-एक अश्वमेध का फल पावे। श्रीशिवपुराण की पूजा करदे तो वह सब देवताओं की पूजा के समान फल प्राप्त करे। इसमें कोई सन्देह नहीं है। क्योंकि शिव-संहिता नामक इस सुधा की स्वयं श्री शिव भगवान ने उपनिषद रूपी समुद्र को मथकर उसमें से निकाला हे अतः जो इसका पान करेगा वह निश्चय ही अमर हो जावेगा। यदि कोई एक मास को पढ़े तो ब्रह्महत्यादिक पापों से भी वह मुक्त हो जावेगा और शिवालय में या विल्वके वनमें जो इस सहिता को पढ़ेगा वह अद्भुत फल लाभ करेगा। श्रीभैरवजी की मूर्ति के सामने इसका तीन बार पाठ करता है, उसके सभी मनोरथ पूर्ण होजाते है। यदि चतुर्थी के दिन निराहार रह विल्वकी मूल में बैठकर इसे पढ़े तो शिवजी की पूजाके समान है। इस में शिवजीकेदिये हुए अर्थ काम और मोक्ष चारों पदार्थों का विवेचन और उनकी प्राप्तिके उपाय तथा शिवजी की लीला और विज्ञान सब कुछ निहित हैं। अतएव यह सब प्रकार आदरणीय है। वेद और श्रीब्रह्माजीकी सम्मतिके अनुसार श्रीशिव ने ही प्रथम इस श्रीशिवपुराणकी रचना की, जिसमें १, विद्येश्वरसंहिता, २.रुद्र,-संहिता३. विनायक-संहिता, ४. उमासंहिता, ५. मातृ संहिता, ६. एकादश रुद्र-संहिता, ७. कैलाश-संहिता, ८. शतरुद्र संहिता, ९. कोटिरुद्र संहिता, १०. सहस्र कोटि रुद्र संहिता, ११. वायवीय सहिता और १२. धर्मसंहिता—इतनी संहितायें इस पुराण में सम्मिलित हैं। ये सभी पुण्य तर हैं इनमें १ विद्येश्वर, २ रुद्र, ३ विनायक ये तीनों संहितायें दश दश हजार उमा और मातृ ये तीनों आठ २ हजार और एकादश रुद्र संहिता तेरह हजार, कैलाश संहिता छः हजार, शतरुद्र तीन हजार कोटिरुद्र नौ हजार, सहस्रकोटि रुद्र ग्यारह हजार, वायवीय संहिता दश हजार और धर्मसहिता बारह हजार कुल एक लाख श्लोकोंका यह शिवपुराण है। परन्तु इसे शिवने अब केवल चौबीस हजारकाही सबके लिये रख

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

दिया है और यह पुराणों में यह चौथा पुराण कहा जाता है। परन्तु अब इसमें सात संहितायें ही हैं अन्यथा सृष्टिके आरम्भ में शिवजीने सौ श्लोकों में कहा था। अब यह चौबीस हजार संख्याओं वाला शिव-पुराण केवल इन सात संहिताओंमें ही शेष रह गया है। १ विद्येश्वर-संहिता, २ रुद्र-संहिता, ३ शतरुद्र, ४ श्रीकोटिरुद्र, ५ श्रीउमा ६ श्रीकैलाश और ७ वायवीय संहिता। जो इस सप्त-संहिता युक्त श्री शिव महापुराण को आदर सहित पूरा पढ़ेगा वह जीवन्मुक्त हो जायगा।

* तीसरा अध्याय *

(ब्रह्माजी का उपदेश)

व्यासजी बोले-सूतजी के ऐसा कहने पर उन समस्त ऋषियों ने पूछा कि महामुनि ! यदि आप हमें शिवमहापुराण सुनाते तो बड़ी कृपा होती। मुनियों से ऐसा सुनकर शिवपुराण का स्मरण करते हुए सूतजी बोले अच्छा तो अब आप दुर्लभ शिव महापुराणको ही सुनिये, जिसमें भक्ति ज्ञान और वैराग्य तीनों का वर्णन है। ऋषियो ! पूर्व समयमें जब कल्पों का क्षय होता गया और उसके पश्चात् और सब इस कल्प का प्रादुर्भाव हुआ तब सृष्टि सम्बन्धी कार्यों के आरम्भ होने पर षट-कुलीन अर्थात् छः कर्मोंके करने वाले उत्तम कुलके मुनियों में यह मतभेद पैदा होगया कि यह 'सब से पर' है या नहीं। तब इसके निर्णय के लिए वे लोग ब्रह्माजी के पास गये। ब्रह्माजी ने कहा जो सबसे पहले उत्पन्न हुआ जिसमें मन, वाणीकी कोई गति नहीं तथा जिससे ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र इन्द्रादिक महाभूतों और इन्द्रियों आदि संयुक्त सारे जगतकी उत्पत्ति है, वही 'सब से पर' है वह सर्वज्ञ जगदीश्वर शिव है जो परम भक्ति से दिखाई पड़ते हैं तथा रुद्रादि सभी देवता जिनके दर्शनों की अभिलाषा रखते है। अधिक क्या कहूँ, शिवजीकी भक्ति से संसार जाल कट जाता है। उनके प्रसादसेभक्तीऔरभक्तिसे हीउनके प्रसाद की प्राप्ति होती है। जैसे बीजसे अंकुर और अंकुर से बीजकी उत्पत्ति होती है। अतः ब्राह्मणों आप लोग महादेवजीका प्रसाद पानेके लिए एक हजार वर्षका दीर्घ

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

यज्ञ करें जिसमें शिव की कृपासे आपको साध्य और साधन का ज्ञान होगा। इस पर मुनियोंने पूछा कि, हे भगवन् यह साध्य और साधन क्या है? ब्रह्माजीने कहा, साध्य शिव-पद है और साधन उनकी सेवा है। परन्तु इसके लिए साधन को सर्वथा ही निस्पृह होना चाहिये। जब इस प्रकार वेद विधि से भगवान् शिवकी आराधना होती है, तब परमेशपद की प्राप्ति हो जाती है। इस सम्बन्ध में स्वयं शिव ने भी कई निर्देश दिये हैं। कानोंसे सुनना, वचन से कहना, मनसे मनन करना भी एक महान साधन है। क्योंकि वे महेश्वर सर्वथा ही सुनने, कीर्तन करने और मनन करने योग्य हैं। अतः साध्य तक पहुँचना हो तो साधन में डट जाना आवश्यक है प्रत्यक्ष का ही विश्वास होता है अतएव बुद्धिमान को चाहिये कि पहले गुरु मुखसे श्रवणकर कीर्तन औरमनन द्वारा शिव-योग को प्राप्त होवे। संभव है कि साधन में पहले तो कुछ क्लेश प्रतीत हो, परन्तु पीछे आनन्द ही प्राप्त होता है।

* चौथा अध्याय *

(सनत्कुमार व्यास सम्वाद)

मुनियों ने पूछाकि ब्रह्माजी! श्रवण और मनन क्या है, तथा कीर्तन कैसे किया जाता है? ब्रह्माजी बोले-ईश्वर के रूप, गुण, नाम और उनके बिलासों में अपनी पूजा और जप से रुचि बढ़ाना तथा निरंतर अपनी युक्तियों सहित अपने मन को उनके सन्मुख रखना मनन है, और श्री परब्रह्म महादेवजी अथवा शंभु भगवानके नाम का बारम्बार जप करना कीर्तन है, तथा दृढ़ हो भगवत् सम्बन्धी शब्दों को कानों से सुनना और उसे चित्त में स्थित करना श्रवण है। जब सत्संग में बैठकर भगवान् श्रीमहादेवजी की कृपा से श्रवण और कीर्तन करले, तब उसका मनन करे और वही सर्वोत्तम मनन है। जिससेआत्मा पवित्र हो जाती हैं। सूतजी बोले-मुनिश्वरो, मैं साधन सम्बन्धी एक प्राचीन इतिहास आप लोगों को सुनाता हूँ, एक समय सरस्वती नदी के तटपर मेरे गुरु पारासर पुत्र वेदव्यासजी तप कर रहेथे तो सनत्कुमारजी ने आकर उनके निकट

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

बैठकर पूछा कि भगवान्! शिवजी तो प्रत्यक्ष सबके सहायक हैं फिर आप ऐसा तप क्यों कर रहे हैं? व्यासजी ने उत्तर दिया मुक्ति के लिये। इसपर सनत्कुमारजी ने कहा-अवश्य? पहले मुझे भी ऐसाही भ्रम हुआ था, और मन्दराचल पर्वत पर जाकर तप करने लगा था परन्तु दयालु शिवजी की आज्ञा से नन्दिकेश्वर ने आकर मुझे यह बतलाया कि शिव जीके श्रवण, कीर्तन और मनन से मुक्ति प्राप्त होजाती है, तब मेरासारा सारा भ्रम दूर हो गया। अतएव ब्रह्मन! आपभी ऐसा ही करे। यह कह कर सनत्कुमार जी चले गये। इसपर ऋषियों ने सूतजी से पूछा कि जो श्रवण, कीर्तन और मनन नहीं करता उस जीवकी मुक्ति कैसे होती है तथा बिना यत्न किये भी वह कैसे मुक्ति प्राप्त कर सकता है।

* पाँचवाँ अध्याय *

(लिंगेश्वर परिचय)

सूतजी बोले-ऋषियो! श्रवण कीर्तन और मनन से असक्त प्राणी यदि शिवजी के लिङ्गवेर की स्थापना कर नित्य उसकी पूजा करें तो भी वह संसार सागर से तर जायगा। मुनियों ने पूछा यह कैसे! बेर मात्र में ही सब देवताओं की पूजा कैसे संभव हो सकती है और लिङ्गवेरके के द्वारा शिवजी कैसे पूजे जा सकते हैं! सूतजी बोले-मुनीश्वरो! यह स्वयं शिवने कहा है, किसी अन्य से नहीं। मैंने श्री गुरु मुखसे सुना है कि एक शिवजी ब्रह्मरूप और निष्फल अर्थात् कला रहित और कला सहित भी हैं इस निष्फल में निराकार लिङ्गकी प्रधानता है। परन्तु वे सभी कलाओं से युक्त हैं इस लिये शिवका साकार वेर स्वरूप भी हो जाता है और इस साकार और निराकार से ही शिव ब्रह्म संज्ञक भी हो जाते हैं। इसी से लोग उन दोनों स्वरूपों की पूजा करतेहैअन्य देवों में यह तत्व नहीं हैं। यही कारण है कि वे निष्कल लिङ्ग रूप से पूजित नहीं होते। ब्रह्म पदवी तो केवल शंकरजी को ही प्राप्त है इस वेदान्सार ॐ प्रणव के लिये भी सनत्कुमार जी ने मन्दराचल पर्वत पर श्रीनन्दके. श्वर से प्रश्न किया था जिस पर नन्दिकेश्वरने यह स्पष्ट कहाथा कि शिव

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

जी इस प्रकार पूजनीय हैं। कलापूर्ण भगवान शिव का वेर.पूजन लोक सम्मत है और वेदने जिसकोआज्ञा दी है। सनत्कुमारजी ने लिङ्गवेर की उत्पति पूछी तो नन्दिकेश्वर ने कहा कि पूर्व कालमें जब ब्रह्मा और विष्णुमें युद्ध हुआ तो उनके बीचमें निष्कल शिवजीने स्तम्भ रूप में प्रकट होकर विश्व.संरक्षण कियाथा, और तभी से महादेवजी का निष्कल लिङ्ग और सकल वेर जगत में प्रचलित हुये। वेर मात्र को देवताओं ने भी ग्रहण किया इससे शिवजी के अतिरिक्त वेर लिङ्ग से देवताओं की पूजा होने लगी, और वही उसका फलदाता हुआ। परन्तु शिवजी के लिङ्ग और वेर दोनों ही पूजनीय हुये।

* छटवाँ अध्याय *

(ब्रह्मा विष्णु युद्ध)

नन्दिकेश्वर बोले-पूर्व में जब श्रीविष्णु अपने सहायकों सहित श्रीलक्ष्मीजी के साथ शेषशय्या पर शयन कर रहे थे, तब ब्रह्मदेवताओं में श्रेष्ठ ब्रह्माजी स्वयं ही वहाँ जा पहुँचे और विष्णुजी को पुत्र कह कर पूछने लगे पुत्र! उठ मुझे देख मैं तेरा ईश्वर यहाँ आया हूं। इस पर विष्णुजी के भीतर क्रोध तो हुआ परन्तु उसे दवा कर उन्होंने ब्रह्माजी से कहा कि पुत्र! तुम्हारा कल्याण हो। आओ बैठो मैं तुम्हारा पिता हूं कहो कि तुम्हारा मुख टेढ़ा क्यों हो गया है ब्रह्माजी बोले समय के फेर से तुम्हें अभिमान हो गया है मैं तुम्हारा स्रष्टक ही हूं, किन्तु समस्त जगत का पितामय हूं। बोले चोर तू अपना पड़प्पन क्या दिखाता है है! सारा जगत तो मुझमें निवास करता है तू मेरी ही नाभि कमल से प्रकट हुआ मुझसे ही ऐसी बातें करता है। नन्दीकेश्वर बोले जब इस प्रकार रजोगुण से मुग्ध उन दोनों में विवाद होने लगा तब वे दोनों अपने को प्रभु कहते.कहते एक दूसरे को बध करने पर तैयार हो गये और युद्ध छिड़ गया। हँस और गरुड़ पर बैठे दोनों ईश्वर परस्पर युद्ध करने लगे। उनके वाहन भी लड़ने लगे ब्रह्माजी के वक्षस्थल में श्रीविष्णुजी ने अनेको अस्त्रों का प्रहारकर उन्हें व्याकुलकर दिया।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

इससे कुपित हो ब्रह्माजी ने भी उनके वक्षस्थल पर भयानक प्रहार किये। एक दूसरे के प्रति युद्ध से श्रमित विष्णुजी हाँफने लगे। और उन्होंने ब्रह्माजी पर माहेश्वर अस्त्र चला दिया। इससे ब्रह्माजी को चोट लगी और उन्होंने पाशुपत विष्णु के वक्षस्थल पर आघात किया। पारस्परिक आघातों से देवता लोग अत्यन्त व्याकुल हो उठे और उन्होंने कहा दोनों ही अराजकता उत्पन्न करते हैं यह हमारी सृष्टि शिवजी की है कि जिन त्रिशूलधारी की इच्छा बिना कोई एक तिनका भी इधर नहीं कर सकता। हम लोग शिवजी के पास जाते हैं। ऐसा कहकर देवगण चन्द्रशेखर श्रीमहादेवजी के पास गये। महादेवजी अपनी सभा में उमा सहित सिंहासन पर विराजमान थे। देवताओं ने साष्टाङ्ग दण्डवत कर महादेवजी को नमस्कार किया। उनको नमस्कार करते देख शिवजी ने उन्हें अपने पास बुला लिया और बोले।

* सातवां अध्याय *

(शिव–निर्णय)

महादेवजी बोले–पुत्रो! तुम कुशलसे तोहो? मैंनेसुना है कि ब्रह्मा और विष्णु परस्पर युद्ध कर रहे हैं, और तुम लोग बड़े दुःखी हो। अच्छा तो मैं अपने गणों के साथ चलता हूं। तुम लोग भय न करो। यह कहकर शिवजी ने अपने गणों को वहाँ चलने की आज्ञा दी। साथ ही स्वयं भी अपने भद्ररथ पर आरूढ़ हो चलने को तैयार हुये। देवताओं सहित इन्द्र जी उनके साथ हुये। वहां पहुँच शिवजी आकाश मण्डप में बादलों में छिपकर ब्रह्मा-विष्णु का युद्ध देखने लगे। शिवजी ने देखा ब्रह्मा और विष्णु परस्पर एक दूसरे के बध की इच्छा से माहेश्वर और पाशुपत अस्त्र का प्रयोग कर रहे हैं इस रूपको देख निष्कल शिवजी से न रहा और उनका युद्ध शांत करने के लिये महाअग्नि के तुल्य एक स्तम्भ के रूप में उन दोनों के मध्य में जा खड़े हुये। फिर तो उस महाअग्नि के प्रकट होते ही दोनों अस्त्र स्वयं शान्त हो गये। अस्त्रों को शान्त होने पर उस अद्भुत दृश्यको देखकर ब्रह्मा और विष्णु

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

परस्पर कहने लगे कि, यह इन्द्रियातीत अग्नि स्वरूप स्तम्भ क्या है, हमें इसका पता लगाना चाहिये ? ऐसा निश्चयकर दोनों वीर उसकी परीक्षा के लिये बहुत ही शीघ्र वहां से चले। भगवान् विष्णुने शूकर का रूप धारण किया और उसके मूलको देखने के लिये नीचेचले। ब्रह्मा नेहँस कारूप धारण कर ऊपर गमन किया। विष्णुजी पातालमें बहुत दूर चले गये परन्तु स्तंभका कुछ भी पता न चला। तब वह फिर युद्ध-भूमि में लौट आये। उधर ब्रह्माने आकाशमें जाकर केतकीका फूल देखा। उन्हें विश्वाश होगया किमैंने स्तंभकाअंतदेख लिया। वेकेतकीका फूललेविष्णु के पास आये। विष्णुजी ने उनके चरण पकड़ लिये। तव ब्रह्मा के छल को जानकर शिव को प्रकट होना पड़ा और विष्णुजी ने इनके भी चरण पकड़ लिये। विष्णु की महानता से शिव प्रशन्न हो गये और बोले विष्णु ! तुम सत्यवादी हो अतः मैं तुम्हें अपनी समानता प्रदान करता हूं।

* आठवां अध्याय *

(ब्रह्मा का अभिमान भङ्ग)

नन्दिकेश्वर बोले-महादेवजीने ब्रह्मा पर क्रोधित हो अपनी भौंहो के मध्य से भैरव प्रकट किया जिसने नमस्कार कर उनसे आज्ञा माँगी। शिवजी ने आज्ञा दी तुम अपनी तलवार से ब्रह्मा की पूजा करो। यह आज्ञा पाते ही भैरवजी ने ब्रह्माके शिर के केश जा पकड़े। ब्रह्मा थर थर कांपने लगा। भैरवजी ने ब्रह्मा का मिथ्याभाषी पाँचवाँ शिर काट लिया। भैरवने उनके और शिरों को भी काटना चाहा। ब्रह्माजी भैरव के चरणों में गिर गये। यह देख विष्णुजी ने शिवजी के चरणों का आश्रय लिया और हाथ जोड़कर यह प्रार्थना की आरम्भ में भी आपने कृपा कर इन्हें पाँचवाँ शिर प्रदान किया था, अतः इन्हें क्षमाकरें शिवजी की आज्ञा से भैरवने ब्रह्मा को छोड़ दिया फिर वे बोले तुम ने अपनी प्रतिष्ठा और ईश्वरके लिये छल किया। अतः तुम सत्कार स्थान और उत्सव से विहीन कीये जाते हो। ब्रह्माजी बोले स्वामिन बरद मुझे मेरा पाँचवाँ

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

शिर दे। ईश्वरने कहा मैं विश्व स्थिति को बिगड़ने न दूंगा पुत्र! जो अपराधी हैं उन्हें तुम दण्ड दो। लोक मर्यादा का पालन करो। मैं तुम्हें वर देता हूँ कि आज से तुम गणों के आचार्य हुए। कोई भी। यज्ञ तुम्हारे बिना पूर्ण न होगा। ऐसा कहकर ईश्वर केतकी के पुष्प से बोले-मिथ्याभाषी केतक दुष्ट! तू भाग जा तू मेरी पूजा के योग्य नहीं है। शिवजी के गणों ने उसे दूर भगा दिया। केतक शिवजी की प्रार्थना करनेलगा नाथ! कुछ तो सफल कीजिये। मेरे पापों को दूर कीजिये शिवजी ने कहा मेरा वचन मिथ्या नहीं होता। तू मेरे भक्तों के योग्य है और इस प्रकार तेरा भी जन्म सफल होगा और मेरी मंडप रचना का शिर मौर तू होगा।

* नवां अध्याय *

(शिवजी का ज्ञानोपदेश)

नन्दिकेश्वर बोले सनत्कुमार! ब्रह्मा विष्णु हाथ जोड़े हुए शिवजी के अगल-बगल में जा बैठे और उनकी पूजा की। पुनः ब्रह्मा विष्णु से पूजित शिवजी प्रसन्न हो उनसे बोले—वत्स तुम्हारी पूजा से मैं संतुष्ट हुआ। अतएव अब आज से इस दिन का नाम शिवरात्रि नाम से प्रसिद्ध एक बड़ा पवित्र दिन होगा कि जो मेरी प्रिय तिथि होगी। शिव रात्रि के दिन जो मेरे लिङ्गवेर (शिवकीपिण्डीको) को पूजा करेगा वह सृष्टि-विधायक तक होगा। यदि कोई जितेन्द्रि और निहार रहकर एक वर्ष निरन्तर मेरी पूजा करेगा वह बड़ा तपस्वी है। किन्तु जो एक दिन शिवरात्रिकी मेरी तिथि पर प्रपन्च रहित हो मेरी पूजा करेगा वह उसके समान होगा। क्योंकि जैसे चन्द्र दर्शन से समुद्र उमड़ता है। वैसे ही यह दिन भी मेरी भक्ति को उमड़ाने वाला है। मेरा स्तम्भ जो मैं पहले प्रकट हुआ (लिङ्गरूप) अद्रा नक्षत्र है। यदि कोई अगहन में आर्द्रा नक्षत्र में उमा सहित दर्शन करता है। वह मुझे कार्तिकेय से भी अधिक प्रियहै इस पुनीत दिन के दर्शन से ही महाफल प्राप्त होता हैऔर पूजन फल तो वाणीसे नहीं कहा जा सकता।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyan Kosha

इसस्थान में जहाँमें लिङ्गरूप से प्रकट हुआ हूं इसका यही नाम होगाऔरयह पूजन के समय छोटा होजायगा। यह भक्ति—मुक्ति दायक होने के साथ ही दर्शन स्पर्श और ध्यान से आवागमन से मुक्ति देने वाला है। इसका नाम अरुणाचल होगा और यहाँ शरीर त्यागने वाले को मुक्ति प्राप्त होगी। जो इस लिंग में मुझ लिंगेश्वर की पूजा करेंगे उन्हे सा लोक्य, सामीप्य, सारूप्य, सार्ष्टि और सायुज्य पांचों प्रकार की मुक्ति प्राप्त होगी। ब्रह्मा-विष्णु के युद्ध में जितनी सेना मारी गई थी उन सब को शिवजी ने अमृत बरसा कर जीवन दान प्रदान किया। और उन दोनों की परस्पर शत्रुता को भी यह कह कर समाप्त किया कि मेरे सकल और निष्फल दो स्वरूप हैं जैसा और किसी का नहीं है और इसलिए कोई और ईश्वर नहीं हो सकता। मेरा एक तो लिंग रूप है और दूसरा निष्फल सगुणरूप है। बड़ा आश्चर्य है कि तुम लोगों ने अज्ञान-वश अपने को ईश्वर मान लिया था। उसे ही दूर करने के लिये मैं संग्राम भूमि में आया अब अभिमान त्याग मेरी भक्ति करो। मैं ही परब्रह्म हूं और मेरी ही यह सब कलायें हैं जो निष्कल रूपमें दृगोचर हो रही हैं। मुझ गुरुदेव के वाक्य ही सर्वदा तुम्हारे लिए प्रमाण है। तुम्हारी प्रीति देख कर ही मैंने कहा है। मैं सगुण निगुण दोनों हूं। यह सब कुछ मेरा है और ब्रह्मज्ञान देने के लिए ही मैं निष्कल रूप में प्रकट हुआ हूं। मेरा यह निष्कलत्व ही ब्रह्म का बोध करावेगा जिससे मेरा आत्मिक सम्बन्ध है। लिंग और लिङ्ग के अभेद से यह नित्य ही पूजनीय है। जो मेरे इस लिंग रूपकी स्थापना करेगा वहाँ मैं अप्रतिष्ठित रूपसे रहता हूँ। लिंग के अभाव से बेर सहित भी वह स्थान क्षेत्र नहीं होता।

* दसवां अध्याय *

(ब्रह्मा-विष्णु को उपदेश)

ब्रह्मा और विष्णुजी बोले-प्रभो! सर्गादि पंचकृत्य का लक्षण हमको सुनाइये। श्रीशिवजी बोले कि मेरे सारे कार्य ज्ञानगुह्य हैं, तथापि

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

सुनो पुत्रो ! १ सृष्टि, २ स्थिति, ३ संहार, ४ तिरोभाव, ५ अनुग्रह ये मेरे पाँच कृत्य जगत में नित्य सिद्ध हैं। इसमें संसार के आरम्भ का नाम सर्ग, उसके रखने का नाम स्थिति, नष्ट का सहार, अदल-बदल का तिरोभाव और संसार का सर्ग से मुक्त होने का नाम अनुग्रह है। इन्हीं कर्मोंके द्वारा मैं संसारका संचालन करता हूँ। इस पंचकृत्या चलाने के लिये मेरे पांच मुख हैं चारों दिशाओं में चार और मुखों के मध्य में पांचवाँ मुख है जिसे विद्वान् जानते हैं। तुम दोनों ने अपनी तपस्या से सृष्टि और स्थिति इन दो कृत्यों को प्राप्त किया है। ऐसेही रुद्र और महेशने भी संहार और तिरोभाव ये दो कृत्य प्राप्त किये हैं। परन्तु अनुग्रह कोई भी न पा सका और अति प्राचीन होनेसे तुम दोनों कर्म को भूल गये। परन्तु रुद्र और महेश नहीं भूले। तब तुम्हारे भूलने से सृष्टिकी स्थिति के लिये रूप वेश, कृत्य, वाहन तथा आपुधादि सब को मुझे संग्रह करना पड़ा। क्योंकि तुममें मूढ़ता आगई और महेशने दान और रूप दोनों का संरक्षण किया। अब यदि तुम चाहते हो तो मेरा ॐकार नाम का मन्त्र अबसे जपो जिससे तुममें अभिमान न उत्पन्न हो। नन्दिकेश्वर कहते हैं कि उमासहित शिवजीने उत्तर की ओर मुख करके ब्रह्मा और विष्णु को मन्त्र उपदेश दिया। तब ब्रह्मा और विष्णुने देवाधिदेव महादेवजीसे हाथ जोड़कर बोले कि, सर्वेश ! आपको नमस्कार संसार के रचियिता, पाँच मुख वाले ! आपको प्रणाम है। जब इस प्रकार स्तुति कर दोनों ने गुरुदेव शिवजी को नमस्कार किया। महादेवजी बोले कि पुत्रो ! मैने तुमसे सभी तत्वों का वर्णन कर यह मंत्र भी बतला दिया है कि जिसको जपकर मेरे स्वरूप को जान सकते हो। मेरा बतलाया हुआ यह मन्त्र भाग्य-विधायक और सब प्रकार के ज्ञानका देनेवाला है। जोइसे (मार्गशीर्ष को) आर्द्रावाली चतुर्दशीमें जपता है और यदि आर्द्राकेसू में तो इस एक एक ही मन्त्र का जाप करोड़ गुना हो जाता है। इसमें प्रातः संध्या समय मेरा दर्शन भी उक्त फल देता है। मेरे लिंग (स्तभ) और वेर (मूर्ति) इन्ही दोनों

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

का पूजन करना उत्तम है। ओंकार मंत्र से लिंग का, पंचाक्षर (शिवायनमः) मन्त्र से बेर का (मूर्ति का) पूजन करना चाहिये। ब्रह्मा और विष्णु को उपदेश देकर शिवजी वहीं अन्तर्धान होगये।

* ग्यारहवाँ अध्याय *

(शिव लिङ्ग स्थापन विधि)

ऋषियोंने सूतजी से पूछा-कि लिंग की कैसे और कहाँ स्थापना करनी चाहिये और उसके क्या लक्षण हैं ! सूतजी बोले-ऋषियों ! गङ्गादिक पवित्र नदियों के तट पर अथवा जैसी इच्छा हो वैसे ही लिङ्ग की स्थापना करे, किन्तु पूजन नित्य होता रहे। पृथ्वी सम्बंधी द्रव्य जलमय अथवा तेज से अर्थात धातु आदिसे बना हुआ जैसी रुचि हो ऐसे लिंग की स्थापना करे। चल मूर्ति बनानी होतो छोटी बनावे, अचल बनानी हो तो बड़ी बनावे। शिवजी के लक्षणों से संयुक्त सिंहासन पर मूर्ति पधरावे। मिट्टी, पत्थर और लोहा आदि के साँचे से इन्ही धातुओं का बारह अगुलका लिङ्ग उत्तम होता है। यदि इससे न्यून होगा तो न्यून फलहोगा। अधिक का कुछ भी दोष नही है। लिंग या बेर दोनों ही पूजा शिवपद को देने वाली है। लिंग का स्थावर जङ्गम दो रूप हैं। स्थावर लिंग तरु, गुल्म, लता आदि हैं और जङ्गम लिंग कृमि, कीट आदि हैं। विद्वान् जन स्थावर जङ्गम में सुख पूर्वक अनुराग रखते एवं इस प्रकार की शिवपूजा करते हैं। कोई भक्त शिवकी गोदमें श्री उमा (पार्वती जी) को बैठाकर उनकी पूजा करते हैं। गुरु से जानकर स्नान, वस्त्र, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, ताम्मूल निवेदन. नैवैद्य, अर्घ्य, तर्पण और नमस्कार आदि करें। पिसी हुई मिट्टी में गोबर मिलाकर अथवा कनेरके फूल, अनेक प्रकार के फल, गुड़ मक्खन, भस्म, अन्न या जैसी इच्छा हो उससे लिंग बनाकर उसकी पूजा करे। कोई अंगूठे में ही शिवजी की पूजाकर लेते हैं। जो श्रद्धापूर्वक शिव भक्तिको लिंग दान लिंग मूल्य देता है उसे महान फल की प्राप्ति होती है जो नित्य दश हजार का जप करता है, अथवा प्रातः संध्या दोनों समय जो एक

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

२ हजार जप करे तो उसे शिव पद की प्राप्ति हो। ब्राह्मणों को पञ्चाक्षर (शिवायनमः) के जप में प्रणव लगाना चाहिये तथा फल प्राप्ति के लिये गुरु से दीक्षा लेनी योग्य है। गुरु ज्ञानी होना चाहिये और उसमें भी ब्राह्मण होना योग्य है। ब्राह्मण को नमःशब्दप्रथम बोलना चाहिये और वर्ण अन्त में नमः शब्द कहें। स्त्रिया अन्त में नमः शब्द लगावें। ब्राह्मण-स्त्री नमः पहले लगावे। जो पाँच करोड़ मन्त्र जपे तो वह शिव के समान हो जावे एक दो तीन चार करोड़ तो ब्रह्मादिकों का पद पावे। इस प्रकार जप और पूजन का क्रम चलावे तो नित्य एक दो ब्राह्मण को भोजन करावे। यदि कोई ब्राह्मण नित्य प्रायः एक हजार आठ यात्री काजपकरे या नित्य वेद सूक्त को जपेतो वह शिव पद को पावे। इससे अतिरिक्त और भी बड़े बड़े मंत्र है। यदि कोई 'ओ३म्' इस मंत्र को एक हजार बार जपे तो उसके सब मनोरथ पूर्ण हों। विद्वान् को चाहिये कि वह आमरण शिव क्षेत्र में निवास करे जहाँ कहीं मनुष्यों द्वारा लिंग पधराया होता है,वहाँसौ हाथ का क्षेत्र है। वहाँ जो भी पुण्यकर्मकियाजाता है उसका सौ गुनाफल मिलता है और जहाँ ऋषियोने लिंग पधराया हो वहाँ पर हजार हाथ की दूरीतक, और जो लिंग स्वय निकले होते है वहाँ पर दश हजार हाथकी दूरी तक शिव क्षेत्र माना जाता है कवियोंका कहना है कि पुण्य क्षेत्र में कुँआ, बावली, तलाब और तलाई आदि का होना आवश्यक है। उसे शिव गङ्गा कहते हैं। ऐसे स्थान में दान, जप करना सर्वथाही कल्याण प्रद है। दाह, दशास, मासिक, सपिंडीकरण, वार्षिक पिंडदान आदि शिवक्षेत्र में करने से सब पापों से मुक्ति करा देता है शिव क्षेत्र में सात, पाँच, तीन, या एक रात अवश्य ही निव स करे विशेष कर कलियुग में तो और भी सरल है। इतना सुनकर ऋषियों ने कहा कि, सूतजी अब आप हमें ऐसे सभी पुण्य क्षेत्रों का वर्णन संक्षेप में सुनाइये कि जिसका सभी स्त्री-पुरुष आश्रय लेकर शिव पद की प्राप्ति करते हैं।

——❀:०:❀——

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* बारहवाँ अध्याय *

(शिव क्षेत्र वर्णन)

सूतजी बोले—ऋषियों ! शिव-क्षेत्रों में पाप करना वज्र की तरह दृढ़ हो जाता है अतएव मुनियों ! पुण्य क्षेत्र में निवास करने पर किंचित भी पाप न करे और जैसे भी हो सके मनुष्य को चाहिये कि वह सर्वदा पुण्य क्षेत्र में निवास करे । गङ्गा आदि नदियों के तट पर अनेक तीर्थ हैं साठ मुख वाली सरस्वती नदी बड़ी ही पुनीत है । इसके तट पर निवास करने वाला ब्रह्म-पद को प्राप्त होता है । हिमालय से निकली शतमुखी गङ्गा नदी पतितपावन है । उसके तट पर बास करे काशी आदि अनेक पुण्य शेत्र है कि जिनमें जाकर बसे । सोन भद्र के तट पर बसे । उसमें स्नान करने और वहाँ व्रत करने से गणेश-पद प्राप्त होता है । महानदी नर्वदा के तट पर बसे जो चोबीसमुखोवालीऔरवैष्णव पद प्रदान करने वाली है । द्वादस मुखों वाली तमसा नदी दश मुख वाली नदी और महा पुण्यदायक गोदावरी नदी के तट पर बसे कि जहाँ बसने से ब्रह्महत्या तथा गोहत्या का भी पाप नष्ट हो जाता है । यह इक्कीस मुख वाली गोदावरी पुण्यलोक को देने वाली है । उनके अतिरिक्त मुख कृष्णा वेनी विष्णुलोक दायकी दशमुखी तुङ्गभद्रा ब्रह्मलोकदायकी और सुवर्ण मुखरी नदी जो नौ मुखों बाली है और जो ब्रह्मलोक से च्युतहुये प्राणियों को अपने तटपर जन्म देती है तथा सरस्वती पम्पा कन्या श्वेत नदी और महापुण्य कावेरी जिसके सत्ताइस मुख हैं ये सभी पुण्यदा शुभप्रद और स्वर्गदायनी हैं ये भी पुण्य क्षेत्र शिव-लोकदायक अभीष्ट भलप्रदायक है । इन सभी नदियों और क्षेत्रों में स्नानका अपना २ पर्व है । इन पर्वों और महूर्तों पर जो इन नदियों में स्नान करता है उसे उनके माहात्य के अनुसार उत्तमोत्तम फलों की प्राप्ति होती है । यदि समाचार सदवृति और सदभावना से बुद्धिमान पुरुष इन नदियों के तट पर निवास करता है तो उसे अनेकों प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त होती

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

है। किन्तु ऐसे पुंय क्षेत्रो ने थोड़ा भी किया पाप मनुष्य के बड़े बड़े पुन्य का नाश कर देता है और जब तक उतने ही समय तक के लिये प्राश्चित करे तब वह क्षय होता है क्योंकि पुन्य ही एश्वर्यको देने वाला है कायिक वाचिक पाप तो शीघ्र नष्ट हो जाते हैं, परन्तु मानसिक पाप वज्रलेप के समान होता है जो कल्प कल्पान्तक नहीं छूटता और केवल ध्यान से ही छूटता है।

* तेरहवाँ अध्याय *

(सदाचार विवेचन)

ऋषि बोले-सूतजीधर्म क्या है और अधर्म क्या है स्वर्ग और नरक लोकों में जाना पड़ता है। वह सदाचार क्या है कि जिनसे इन पर विजय प्राप्त की जावे ? सूतजी बोले-ऋषियों ! ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूत्र इन चारों बण को उचित है कि वह सूर्योदय से पूर्व उठ कर अपने इष्ट देव का ध्यान करे। पूर्व दिशाकी ओर मुख करके बैठने से उत्तम फल की प्राप्ति होती है। ब्राह्मण घर से दूर बाहर जाकर शौचादिक कर्मों से निवृत होकर दतौन करे और जल के देवताओं को नमस्कार स्नान करे। कंठ तक या कमर तक जलमें खड़े होकर स्नान करना उत-कर है। परन्तु ऐसा न कर सके तो घुटनोंतक जल में मन्त्रसे स्नान करे। और उस तीर्थके जल से वहाँ के तथा अपने इष्ट देवताओंको तृप्त करे। फिर पाँचों प्रकार के कपड़े पहने। फिर गीले बस्त्र को बिना साबुन के धोवे पितरों को जलदे। पश्चात् आचमन कर संध्योपासन करे गायत्री के मन्त्र जपे और सूर्य को अर्ध देवे। प्रातः काल सूयानुवाक् से और संध्या में अग्नि अनुवाक् से प्रोक्षण करे। संध्या समय पश्चिमकी ओर मुख करके तथा प्रातः एवं मध्यान्ह के समय में अँगुलियों से तीर्थ देवता को जल देवे। फिर अँगुलियों के छिद्र से सूर्य भगवान् को अस्त होता देखे और प्रदक्षिणा कर शुद्ध आचमन करे। संध्या हो जाने पर ही सन्ध्या करना योग्य है। नित्य प्रति जितना जप करना हो उससे

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

१०० गायत्री अधिक जपे। गायत्री जपने का यह प्रमाण है कि दश दिन में एक लाख गायत्री का जाप पूरा करे। ब्राह्मण को उचित है कि वह नित्य एक हजार गायत्री का मन्त्र जपे। सोऽहं भावना से जप करता हुआ जीव को परब्रह्म परमेश्वर से जोड़ देवे। इस प्रकार एक हजार बार का जप ब्रह्मपद और एक सौ का जप इन्द्रपद देने वाला है तथा इससे कमती-बढ़ती जप अपनी रक्षा के लिए और ब्राह्मण योनि प्राप्त होने के लिए है। धर्म से अर्थ (धन) अर्थ से भोग और भोग से वैराग्य होता है। परन्तु विपरीत अधर्म से पैदा किए धन के उपभोग से मोह की प्राप्ति होती है। अतः धर्म दो प्रकार का है। एक देह से, दूसरा धन से यज्ञादिक धर्म होता है और तप से दिव्य रूप की प्राप्ति होती है। किन्तु निष्काम कर्म से शुद्धि और उसके पश्चात् ज्ञान प्राप्त होता है। सतयुग के आरम्भ में तप की प्रशंसा थी। किन्तु कलयुग में उनकी प्रधानता है। सतयुग में ध्यान से ज्ञान की प्राप्ति होती है। त्रेता में तप से, द्वापर में प्रतिमा पूजन से ज्ञान की प्राप्त होती है। जो जैसा पाप-पुण्य करता है उसे वैसा फल मिलता है। हिंसा ही अधर्म का रूप है तथा सुखी ही धर्म का रूप है। यदि कोई उत्तम ब्राह्मण को सौ वर्ष तक वृत्ति (जीवन का खर्च) देता है तो उसे ब्रह्मलोक प्राप्त होता है तथा एक हजार चन्द्रायण करने से भी ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है। क्योंकि जब तक जिसका जो अन्न खाता है, तब-तक वह जो कुछ आत्म विचार कीर्तन, श्रवण आदि करता है इसका आधा फल दाता को पहुँचाता है। इसी प्रकार लेने वाले को चाहिये कि वह जो चीज ले उसका अंश दूसरों को दान करता रहे। वह तप करे या अन्य उचित साधनों से पाप सशोधन कर दे, अन्यथा वह रौरव नरक में पड़ता है। मनुष्य को चाहिये कि वह अपने प्राप्त किये धनका तीन भाग करे। १–धर्म २–वृद्धि, ३–नित्य नैमित्तिक काम्य कर्म। धर्म से चित्त को बढ़ावे, बचत का कोष नियत करे, किसी को पीड़ा न हो और अपना थोड़े में निर्वाह करे। यदि कृषि से उत्पन्न किया धन हो तो पाप शुद्धि के लिये उसका दसवां

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

भाग दान कर दे, शेष से धर्म पूर्वक अपना संसार चलावे. अन्यथा रौरव नरक में पड़ेगा, बुद्धि ही भ्रष्ट हो जायगी या अन्न ही पैदा न होगा। ऐसे ही व्यापार से पैदा किये हुए धनका छटा भाग दान कर देना चाहिये। क्योंकि अपने भोग की बृद्धि के लिए स्वयं बुलाकर दान देना अच्छा होता है याँचना करने वाले को यथाशक्ति सदैव दान दे। क्योंकि मांगने पर न देने से जन्मान्तर के लिये ऋणी रह जाता है। बुद्धिमान को उचित है कि वह दूसरों से न कहै। सुना और देखा दोष भी न कहे। प्रातः सायं दोनों समय संध्या और अग्निहोत्र करे। दोनों समय न हो सके तो एक समय तो अवश्य करे कभी न बुझने वाली अजस्र अग्नि स्थापित करे अथवा केवल जप मात्र और सूर्यदेव की बन्दना करे।

* चौदहवां अध्याय *

(यज्ञ आदिक-विवेचन)

ऋषि बोले-महर्षि। अग्नियज्ञ, देवयज्ञ, ब्रह्मयज्ञ, गुरुपूजा तथा ब्रह्मतृप्ति को क्रम से कहिए। सूतजी बोले-अग्नि में द्रव्य युक्त हवन करना अग्नियज्ञ है। ब्राह्मणो! यह कई प्रकार का होता है। एक तो वह जो समिधा अग्नि में हवन की जाती है। दूसरी ब्रह्मचर्य अग्नि, जिनमें ब्रह्मादिक का बाहुल्य होता है जब तक विवाह नहीं होता तब तक वह ब्रह्मचारी है। जब विवाह हो जावे तब दो समय अग्नियज्ञ करे। परन्तु महापुरुषों ने अपनी आत्मा में ही अग्नि आरोपण की हों और बनवासी हों ऐसे यतियों के लिए तो समय पर थोड़ा और हित कर भोजन कर लेना ही अग्नि होत्र है। विवाह के समय से अग्नि सधान को सदैव सुरक्षित रखना योग्य है उसे कुण्डियां भाँड में रक्खे ऐसी अग्नि अजस्र अग्नि कहलाती है। ब्राह्मणों! सायङ्काल की अग्नि आहुति से सम्पत्ति और प्रातःकाल की अग्नि आहुति से आयु बढ़ती है। तथा दिन में इन्द्रादिक सब देवताओं के उद्देश्य से अग्नि को जो आहुति दी जाती है वह देव यज्ञ कहलाता है ब्राह्मणो!

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

महादेवजी ने सर्व लोकों के उपकारार्थ औषधियों में औषधि प्रथम अपना वार अर्थात आदित्यवार बनायापुनः सप्ताह के शेष छः दिनों को उनके गुणों के अनुसार वैसी रचना की उन्होंने प्रत्येक दिन का उसका देवता और उसका फल नियत किया। जिनसे आरोग्य सम्पत्ति व्याधिनाश पुष्टि आयु भोग मृत्यु और हानि ये यथाक्रम से प्राप्त होते हैं इन दिनों के देवताओं की प्रीति से उनकी पूजा का वैसा फल देने वाले शिव हैं जिस देवता को प्रसन्न करना हो उसका मन्त्र होम दान और तप करे। नेत्र शिर रोग तथा कुष्ट की शान्ति के लिये आदित्य की पूजा कर ब्राह्मणों को भोजन करावे। तीन दिन तीन महिने या तीन वर्ष अथवा इससे भी अधिक पूजा करे। पापों की शान्ति के लिये रविवार के दिन की पूजा उत्तम है कि जिसमें जप आदि से इष्टदेव को प्रसन्न किया जा सकता है। लक्ष्मी के लिये सोमवार को लक्ष्मी की पूजा करे रोग शान्ति के लिये मङ्गलवार है और इस दिन काली आदि का भजन पूजन करे और उर्द मूंग आदि देकर ब्राह्मणों को भोजन करावे बुधवार के दिन विष्णु का दही सेव अनेक प्रकार से पूजन करे, तो सर्वदा पुत्र, मित्र, कलत्र (स्त्री) की पुष्टि होवे। बृहस्पति का दिन आयुवर्द्धक है। इस दिन ब्राह्मणों को गौ, देवताओं को उपवती वस्त्र चढ़ाकर क्षीर, दूध घी से पूजा सेवा करे। भोगों का इच्छुक शुक्रवार को जितेन्द्रिय हो षटरस भोजन युक्त देवताओं और ब्राह्मणों की पूजा करे। स्त्री प्रप्ति के लिये शनिवार के दिन रुद्र आदि का पूजन करे और तिल का होम तिल का दान और तिल का भोजन करावे देश काल पात्र का विचार कर जो श्रद्धा सहित इन वारों के नियम पालन करता है उसे इस देवापासन द्वारा सब कुछ प्राप्त हो जाता है। ब्राह्मणों को मन्त्र को तन्त्र विधि से पूजन करना योग्य है। धनवान हो तो तप से देवताओं की उपासना करे। धनी हो तो धन से पूजा करे फल प्राप्त होगा।

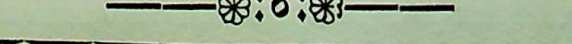

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyan Kosha

* पन्द्रहवाँ अध्याय *

(स्थान व काल निरूपण)

ऋषि बोले–सूतजी ! अब आप पूजा के योग्य स्थान व समय बतलाइये । सूतजी बोले–देव यज्ञादिकर्मों में शुद्ध गृह बरावर फल देने वाला होता है । उससे दस गुणा गोष्ठ (गौओं के बाँधने की जगह) उससे दसगुणा जल का तट उससे दसगुणा बेल, तुलसी, पीपल की जड़, देवालय, तीर्थ का तट, नदी, तीर्थ नदी का तट, सप्त गङ्गा का तट जिसमें गङ्गा गोदावरी, कावेरी, ताम्रपर्णी, सिन्धु, सरयू, रेवा ये सातों नदियाँ सप्तगङ्गा कहलाती हैं । इनसे दश गुणा फल समुद्र का तट और उससे दश गुणा पर्वत की चोटी पर पूजा करने से होता है । और सब से अधिक फल तो वहाँ जहां मन रमे । सतयुग में यज्ञ दानादि से पूर्ण फल की प्राप्ति होती है । त्रेता में तिहाई, द्वापर में आधा कलियुग में चौथाई और आधा से अधिक कलियुग बीतने पर इससे भी कम फल प्राप्त होता है । परन्तु शुद्ध हृदय से किया हुआ धर्म या पूजन बराबर फल देता है । इससे दश गुणा भल सूर्य सँक्रान्ति के दिन, उससे दश गुणा फल तुला, और मेष की संक्राति में तथा चन्द्रग्रहण में उससेभी दश गुणा फल सूर्य ग्रहण में तो उससे भी दशगुणा प्राप्त होता है । तपोनिष्ठ, ज्ञानिष्ठ और योगी यति पूजा के पात्र हैं । ऐसे समय में जो इनकी पूजा करता है उसके पाप क्षय हो जाते हैं । ब्राह्मण भी पूजा का पात्र है जिसने चोबीस लाख गायत्री का जप किया हो । वह सम्पूर्ण काल और भोग का दाता है । गायत्री के जप से शुद्ध हुआ ब्राह्मण शुद्ध है । नर-नारी आदि जीव कोई भी हो वही अन्न दान का पात्र है इच्छा वाले को देना ही अभिष्ट दायक है । माँगने पर दीया तो आधा फल, सेवक को दीया तो चौथाई फल, और यदि ब्राह्मण दीन हो तो उसे देने सें दस वर्ष का फल प्राप्त होता है । ब्राह्मण तो जाति से ब्राह्मण ही है । यदि

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

वेद पाठा है। गायत्री के जप से युक्त है तो उसे दान देने से बैकुण्ठ की प्राप्ति होती है! थोड़ा या बहुत देवार्पण बुद्धि से किया हुआ दान अनन्त भोग देता है। मनुष्य को तप और दान ये दोनों ही सर्वदा करना चाहिये। देवताओं की तृप्ति के लिए सभी भोग मिलते हैं।

* सोलहवाँ अध्याय *

(पार्थिव पूजन)

ऋषि बोले-सूतजी! अब आप हमें उस पार्थिव पूजन की विधि बतलाइये सूतजी बोले महर्षियों! मिट्टी से बनाई हुई प्रतिमा का पूजन करने से पुरुष हो या स्त्री सभी के मनोरथ पूर्ण होते हैं। इसके लिए नदी, तालाब, कुआ या जल के भीतर की मिट्टी लाकर सुगन्धित द्रव्य के चूर्ण से उसका शोधन करे दूध डाल अपने हाथ से सुन्दर प्रतिमा बनावे। पद्मासन से उस पार्थिव प्रतिमा का आदर से पूजन करे गणेश, सूर्य, विष्णु, पार्वती, शिवजी की मूर्ति और शिवजी के शिव लिंग का तो ब्राह्मण सदैव पूजन करे। इस प्रकार षोडशोपचार युक्त पूजन से मनोरथ अवश्य ही सिद्ध होते हैं। किसी भी देवता के स्थापित किये लिङ्ग पर तीन सेर नैवेद्य और स्वयं उत्पन्न हुए लिङ्ग पर पांच सेर नैवेद्य चढ़ाने का नियम है। इस प्रकार जो हजार नैवेद्य चढ़ाता है यदि वह ब्राह्मण है तो उसे सत्यलोक की प्राप्ति होती है बारह अंगुल चौड़ा और पच्चीस अंगुल लम्बा यह लिंग का प्रणाम है तथा पन्द्रह अंगुल ऊंचा लोहे या लकड़ी के बनाये पात्र का भी नाम शिव है। इनके अभिषेक से आत्मा बुद्धि, गन्ध चढ़ाने से पुण्य, नैवेद्य चढ़ाने से आयु तथा धूप देने से धन की प्राप्ति होती है। दीप से ज्ञान और तम्बूल से भोग मिलता है। अतएव स्नान आदि ये छः पूजन के अङ्ग का यत्न पूर्वक साधन करे नमस्कार और जप ये दोनों सभी अभीष्ट हैं। जो जिस देवताकी पूजा करता है वह उस देवता के लोक को प्राप्त होता है। साथ ही उनके बीच के लोकों में भी यथेष्ट भोग मिलते हैं। महर्षियों भू लोक में श्रीगणेशजी पूजनीय हैं। जैसा शिवजी ने नियत

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

किया है। उस के अनुसार तिथि वार नक्षत्र आदि का विचार कर जो सविधि इनकी पूजा करता है, उसके कौन से मनोरथ पूर्ण नहीं होते गणेश पूजन से सभी पाप दूर भाग जाते हैं और यह अपने सभी अभीष्टों को पूर्ण करते हुए मोक्ष तक पहुँच जाता है इसी प्रकार श्री विष्णुजीकी तथा और भी देताओं की जो जिसकी पूजा करना चाहता वह उन देवताओं के वार तिथि नक्षत्र का विचार कर षौडशोपचार पूजन भजन करे तो अभीष्ट की प्राप्ति होती है। शिवजी का पूजन तो सब मनोरथों को देने वाला है। महाआर्दा में माघ कृष्ण चतुर्दशी को शिवजी का पूजन करता है उसकीआयु बढ़तीहै। ऐसेही और भी नक्षत्रों महीनों और वारों में शिवणी की पूजा का अद्भुत माहात्म्य है। शिव का भजन भोग और मोक्ष का देने वाला है। कार्तिक मास में देवताओं का भजन विशेष फलदायक होता है। विद्वानों को उचित है कि वह इस महिने में सब देवताओं का भजन करें। यम नियम से दान तप होम और जप करे। क्योंकि कार्तिक में देवताओं का भजन सर्व व्याधिहर्ता है। कार्तिक मास में रविवार के दिन जो सूर्य की पूजा करता है तेल तथा कपास का दान करता है उसके यदि कुष्ट रोग है तो वह दूर हो जाताहै जो अपने मन को या जीवन को शिवजी को अर्पण कर देता है उसे शिवजी स्वासायुज्य मुक्ति प्रदान करते हैं। योनि और लिङ्ग इन दोनों स्वरूपों के शिवजी के स्वरूप में समाविष्ट होने के कारण शिवजी जगत के जन्म निरूपण हैं और इस नाते से जन्म की निबृत्ति के लिये श्रीशिवजी की जन्म पूजा का अलग बिधान भी है। जैसे अखिल जगत विन्दुनादात्मक है जिसमें बिन्दु शक्ति है और 'नाद' शिवजी का है। विन्दु का आधार वाद है जगत का आधार विन्दु है। अतः ये दोनों ही जगत के आधार हुए। विन्दु देवी और नाद शिव हैं। उसीसे यही दोनों शिवलिङ्ग इस नामसे कहे गये? अतः जन्म की निवृति के लिये शिव लिङ्ग को पूजे। देवी रूपी माता 'बिन्दु' और शिव रूप पिता 'नाद' है। शिव भक्ति के मिलाप

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

का नाम लिङ्ग है। शिवजी अपने लिङ्ग के पूजन करने से उत्पन्न हो जाते हैं। जो इस शिवलिंगको सादर पूजन करता है वह जन्मादि से निवृत्त होजाता है। आदित्यबारके दिन पंचगव्य द्वाराशिवजी को स्नान करावे ! गौबर, गोमूत्र,गोदुग्ध,गोघृत और मधु यही पंचगव्य हैं। फिर दुग्धादि से अलग स्नान करावे। शहद ईख का रस गोदुग्ध से अन्न का नैवेद्य बनाकर प्रणब पूर्वक चमोंवे। जो इस प्रकार आदित्यवार के दिन प्रणव पूर्वक महालिङ्ग की पूजा करता है उसका पुनर्जन्म नहीं होता। रुद्राक्ष धारण करने से चौथाई विभूति धारण करने से आधा मन्त्रजपने से पौन पूजन से पूर्ण भक्ति प्राप्त करता है।

* सत्रहवाँ अध्याय *

(प्रणव पञ्चाक्षरी का माहात्म्य)

ऋषियो ने पूछा—महामुनि ? प्रणव एवं षड् लिङ्ग का क्या माहात्म्य है तथा शिवजी की भक्ति पूजा का क्या विधान है, हमें सुनाइये। सूत-जी बोले--ऋषियो ? प्रकृति से उत्पन्न हुआ 'प्र' संसार को नौका स्वरूप है,इसलिये पण्डित उसे प्रणव कहते हैं। 'प्र' प्रपंच. 'न' नहीं और 'ब' तुमने अर्थात् तुममें कुछ प्रपंच नहीं है। यह प्रणव माया से रहित होने के कारण सर्वदा नवीन है। वह प्रणव सूक्ष्म, स्थूल दो प्रकार का है। इसको एकान्त में जपने से भोग की प्राप्ति होती है, और जो इसे छत्तीस करोड़ जप लेता है वह योगी हो जाता है। यह अकार, उकार, मकार,विन्द और नाद सहित तथा शब्द काल कला से युक्त हैं अर्थात् 'अ' 'ऊ' 'म' इन तीन दीर्घ अक्षरों और मात्राओं सहित प्रणव होता है जो योगियों के हृदय में निवास करता है यही शिव शक्ति की एकता स्वरूप यथा समस्त पापों का नाशक है। प्रवृत्ति के इच्छुकों का ह्रस्व प्रणव के जप से सारे पाप स्वयं ही दूर हो जाते हैं तथा निवृत्ति के इच्छुक को दीर्घ जप करना चाहिये वेद के आदि ने तथा दोनों समय की संध्या बन्दन में सर्व प्रथम ॐकार का प्रयोग करना चाहिये। प्रणव

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

के नौ करोड़ जप से पुरुष शुद्ध हो जाता है। फिर नौ करोड़ के जप से पृथ्वी, फिर इतने ही जप से तेज का, नौ करोड़ जप से वायु का और नौ-नौ करोड़ से गन्धादि का जप होता है। ब्राह्मण ! नित्य सहस्र मन्त्र जप करने से ओंकार से प्रबुद्ध हो शुद्ध योग को प्राप्त होता है। फिर जितेन्द्रिय होकर जो पांच करोड़ प्रणव का जप करता है शिवलोक को प्राप्त होता है। जहाँ नन्दी का स्थान और तप रूप वृषभ के दर्शन होते हैं। जहाँ नन्दी का स्थान है उसके आगे के शिव-वैभव को कोई नहीं जानता। वहां नन्दकेश्वर बाहर स्थित होकर पंचाक्षर मन्त्र की उपासना करते हैं। महात्माओंका वाक्य है कि शिवलोक की जानकारी बिना शिव की कृपा के नहीं होती। ब्राह्मण और गुरु से प्राप्त कर शिव पञ्चाक्षरी का ५ लाख जप करता है, उसकी आयु बढ़ती है स्त्री स्त्रीत्व से छूट जाती, क्षत्रिय क्षत्रित्व से छूट, कर ब्राह्मण हो जाता और पुनः मुक्त हो जाता है। वैश्य वैश्यत्व से छूट क्षत्रिय हो जाता है और वह ब्राह्मण कहलाता है तथा शूद्र २५ हजार जपे तो वह ब्राह्मण के समान हो जाता है क्योंकि यह मन्त्र शिव-स्वरूप है और जो इसको धारण कर लेता है वह शिव स्वरूप हो जाता है। भक्ति की यही महानता है। शिव-भक्त स्त्रीयाँ देवी लिंगरूप हो जाती हैं और वे जितना मन्त्र जपती हैं उनके शरीर में उतनी ही भगवती की समीपता प्राप्त होती है शिवजी की पूजासे विद्वान को आनन्द की प्राप्त होती है। शिव लिङ्ग की पूजा शिव शक्ति की पूजा है और जो भक्त भक्तिपूर्वक षोडशोपचार पूजन करता है वह शिव रूप होकर शिव को प्राप्त हो जाता है।

* अठारहवां अध्याय *

(बन्ध और मोक्ष)

ऋषि बोले-सूतजी ! बन्ध और मोक्ष क्या है ? सूतजी बोले-ऋषियों। प्रकृति के आठ बन्धनों के कारण ही आत्मा की जीव संज्ञा

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

है। इनसे छूटकर मुक्ति को पाता है। प्रकृति के आगे बुद्धि, बुद्धिके आगे गुणात्मक अहङ्कार और पञ्चतन्मात्रा यही सब आठों प्रकृति हैं इन्ही आठों से यह देह है और इससे जो कुछ क्रिया हो रही है उस का नाम कर्म है फिर कर्म से देह इस प्रकार बारम्बार होते हैं। स्थूल, सूक्ष्म और कारण ये तीन प्रकार के शरीर होते हैं स्थूल व्यापार करता सूक्ष्म इंद्रियों का भोग करता तथा कारण शरीर आत्मा के उपभोग निमित्त है। कर्मों के द्वारा ही यह पाप पुण्य भोगता है और इन्ही से सुख-दुख की प्राप्ती होती है इस काल में यह जीव कर्म रूपी डोर से बारम्बार बधकर, कर्मों से, तीनों शरीर सहित चक्रवत सदैव भ्रमता रहता है आठ प्रकृति ही आठ चक्र हैं, शिव इनसे परे हैं। वही चक्रकर्त्ता हैं वही आठों को वश में किये स्थित हैं। जो मन, वचन, शरीर और धन से बेर लिङ्ग या भक्त जनों में शिव भावना करके उनकी पूजा करते हैं, उनपर वे महेश जो प्रकृति से परे शिव हैं निःसन्देह अवश्य ही प्रशन्न होते हैं। सूतजी बोले-ब्राह्मणो! मैं लिङ्ग हूं जिससे सब कामनायें पूर्ण होती हैं। वह स्थूल भी है और सूक्ष्म भी। इसके अतिरिक्त पुरुषार्थ से और प्रकृति से भी बनाये हुये बहुत से लिंग हैं जिन्हे शिवजी ही जानते हैं अन्य नहीं। किन्तु पृथ्वी पर पाँच लिंग हैं १ स्वयंभू लिंग, २ विन्दु लिंग, ३ प्रतिष्ठित लिंग, ४ चर लिंग और ५ गुरुलिंग। जो लिङ्ग किसी देवता या ऋषि के तप से पृथ्वी को फोड़ कर वह स्वयंभू लिङ्ग है। उस लिंग की पूजा करने से स्वयं ज्ञान की वृद्धी होती है। सुवर्ण, चाँदी और पृथ्वी आदि को वेदिक में या लिंग को प्रवण मन्त्र से पत्र पर लिखकर उसकी प्रतिष्ठा और आवाहन करे तो बह विन्दु नादमय लिंग स्थावर और जंगम रूप शिव दर्शन के योग्य है। विधि पूर्वक लिंग को संपुट पात्र में रख नर पृथक गृह में स्थापनाकरे और नित्य भोजन निवेदन करे। यह ग्रहस्थ के लिये उचित है निबृत हुए जनों को सूक्ष्म लिंग काही विधान है। स्त्री हो यापुरुष उसे सदैव भस्म धारण करनी चाहिये। दिन हो यारात किसी समय भी सजल भस्मको

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

तृपुण्ड सहित धारण कर जो शिव की पूजा करता है उसे शिव पूजन का पूरा फल मिलता है। शिव-मंत्र द्वारा भस्म धारण करके श्रेष्ठ आश्रमी होता है शिव परायण ही शिवाश्रमी हैं शिव व्रती को अपवित्र और सूतक नहीं लगता। गुरु के हाथों सीखकर निस्म भस्म धारणकरना योग्य है। वही सच्चा गुरु है जो शिष्य के राजस्व, तामस तीनों गुणों को नाशकर शिवजी का बोध करता है। इसी कारण ज्ञानी गुरु सर्वथा ही पूज्य है। शिष्य पुत्र के समान है। यह मंत्र-पुत्र भी कहा जाता है उत्पन्न करने वाला पिता पुत्र को संसार में डुवादेता है परन्तु,ज्ञान दाता गुरु रूप पिता संसार से पार कर देता है। तन, मन और धन से गुरु सर्वथा ही पूजनीय है। सब कर्मों के आदि में विघ्न नायक गणेशजी का पूजन करना चाहिये। फिर सब बाधाओं को शान्ति के लिये देवताओ का पूजन करे। दैहिक, दैविक और भौतिक तीनों प्रकार के दोष पाप देवादिक पूजन से शान्त हो जाते हैं। दानादिक भी नियम पालन करना पड़ता है! प्रतिमा का भी दान किया जाता है। स्वर्ण प्रतिमा दान दक्षिणा सहित करे। संपूर्ण आयु की सिद्धि के लिये तिलका दान करे। व्याधि दूर करने के लिये घृतका पात्र दान करे। हजार ब्राह्मणको भोजन करावे दरिद्र होतो गौको भोजन करावे, धनभाव होतो यथा शक्ति भोजन करावे। भूत आदिकी शान्ती के लिये भैरवजी की पूजा करे। और सबके अन्त में शिव का महा अभिषेक करे तथा उन्हें नैवेद्य समर्पण कर बहुत से ब्राह्मणों को भोजन करावे। यदि इस प्रकार का यज्ञ प्रत्येक वर्ष फाल्गुनमास में करे तो बहुत से दोषों की शान्ति हो जाती है। परन्तु ऐसा सविधि दक्षिणायुक्त यज्ञादिक कर्म धनाभाव के कारण करने में असमर्थ हो तो स्नान करके कुछ दान देवे और एक सौ आठ मन्त्र द्वारा सूर्य को नमस्कार करे, दश हजार लक्ष अथवा करोड़ नमस्कार करे इस प्रकार के नमस्कार से संपूर्ण देवता प्रसन्न हो जाते हैं। फिर शिव भगवान् से प्रार्थना करे? शिवजी! आप सगुण और प्रकाशमय है। आपके स्वरूप में मैंने अपनी बुद्धि अर्पण कर दी है और जो कुछ

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

भी मेरा है वह सब मुझ सहित आपका है। मैं अपनी देह से नम्र हूं। हे प्रभो आप महान् हैं और आपका होने से ही मेरा स्वरूप शून्य नहीं है क्योंकि में आपका दास हूं। प्रार्थना कर नमस्कार पूर्वक आत्म-यज्ञ की कल्पना करे और आचार्य एव गुरु जैसा बतलावे वैसा पाप-नाशक निधान करे। शिव धर्मों में प्रदक्षिणा सबसे श्रेष्ठ है। क्रिया से युक्त जप प्रणव (ओंकर) ही प्रदक्षिणा है। जन्म और मरण माया चक्र है और इसी को शिव का बलिपीठ से प्रारम्भ करके प्रदक्षिणा के क्रम से नमस्कार द्वारा आत्म समर्पण करे अर्थात् जन्म और मरण दोनों को शिव की माया में अर्पण कर देवे। शिव की माया में अर्पण करने से फिर आत्मा को जन्म—मरण नहीं प्राप्त होता और मुक्ती को जाता है। जब तक शरीर क्रिया के आधीन है तभी तक बृद्ध होने से यह जीव कहा जाता है और स्थूल सूक्ष्म और कारण तीनों शरीरोंको वश करने पर विद्वानो द्वारा यही मुक्त कहा जाता है और शिवजी ही उस मायां-चक्र के प्रणेता हैं। शिवजी ही सबसे परम कारण हैं शिवजी की माया में अर्पित द्वन्द का शिवजी ही निवारण करते हैं। ब्राह्मणो! प्रदक्षिणा और नमस्कार शिवजी को अत्यन्त प्रिय है। जो परमात्मा शिव को इस प्रकार षोठशोपचार वाली पूजा प्रदक्षिणा नमस्कार करते हैं उन्हें महान फल की प्राप्ति होती है। शिव-मन्त्र के रहस्य को शिवजी ही जानते हैं अन्य नहीं शिव-भक्त को चाहिये कि नित्य ही शिव लिङ्ग का आश्रय कर वास करे।

* उन्नीसवाँ अध्याय *

(पूजा का भेद)

ऋषि बोले-सूतजी! आपने पार्थिव महेश्वर की जैसी महिमा श्री व्यासजी से सुनी हो वह सब हम लोगों को सुनाइये। सूतजी बोले-ऋषियों! मैं तुम्हारी भक्ति तथा आदर से प्रसन्न होकर शिव के पार्थिव लिङ्ग की महिमा का वर्णन करताहूं। विप्रो! सब लिङ्गों ने पार्थि-

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

व लिंग श्रेष्ठ है जिसके पूजन से बहुत से लोग सिद्ध होगये हैं। ब्रह्मा, बिष्णु और कितने ही ऋषि आदि को पार्थिव लिंग के पूजन से उनके मनोरथ पूर्ण हुए हैं। देवता असुर मनुष्य गंधर्व सर्प राक्षस शिव लिङ्ग की पूजाकर परम सिध्दी को प्राप्त हुए हैं। सतयुग में रत्न का, त्रेता में सुवर्ण का. द्वापर में पारे का और कलियुग में पार्थिव लिंग सर्वश्रेष्ठ है। पार्थिव मूर्ति के अनन्त पूजन से, तप से भी अधिक फल प्राप्त होता है। जैसे समस्त नदियों में गङ्गाजी श्रेष्ठ हैं ऐसे ही सब लिंगों में पार्थिव लिङ्ग श्रेष्ठ है जैसे सब मन्त्रों में ओंकार ही महान है, ऐस, सब लिंगों में पार्थिव श्रेष्ठ आराध्य और पूजनीय हैं। जैसे सब वर्गों में ब्राह्मण श्रेष्ठ है सब पुरियों में काशी श्रेष्ठ तम है जैसे सब ब्रतों में शिवरात्रि भी श्रेष्ठ है और जैसे शक्तियों में शैवी श्रष्ठपरा मानी गई है वैसे ही सब लिंगों में पार्थिव लिङ्ग श्रेष्ठ है। पार्थिव का आराधन पवित्र पूर्ण रूप और धन तथा तथा आयु का बढ़ाने वाला तुष्टि-पुष्टि लक्ष्मी का देने वाला तथा कार्य का साधन करने वाला है। जो पार्थिव लिंग बनाकर नित्य शिव जी का जीवन पर्यन्त पूजन करता है वह लोक का भागी होता है तथा असंख्य वर्षों तक वहां रहकर शिव लोक से लौट भरतखंड का राजा होता है। निष्काम भगवान से जो नित्य पार्थिव लिंग का पूजन करता है उसे सायुज्य मुक्ति प्राप्त होती है। जो ब्राह्मण होकरभी पार्थिव लिङ्ग की पूजा नहीं करता वह अत्यन्त दारुण शूल नामक घोर नरक को प्राप्त होता है। रत्न, सुवर्ण स्फटिक तथा पार्थिव पुष्पराग से उत्पन्न लिङ्ग हो उसे अच्छी तरह बनाकर पूजा करे।

* बीसवां अध्याय *

(पार्थिक पूजन रूप)

श्रीसूतजी बोले—वेद-सूत्रों की विधि से स्नान संध्या करके, फिर ब्रह्म-यज्ञ कर पीछे तर्पण करे तथा सम्पूर्ण नित्य कर्मों को करके शिव-

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

स्मरण पूर्वक भस्म तथा रुद्राक्ष तो पहिले ही धारण कर लेवे फिर भक्ति पूर्वक श्रेष्ठ पार्थिव लिंग की वेदोक्त विधि से भली प्रकार पूजा करे। किसी नदी के तट पर,पर्वत पर, जङ्गल में, शिवालय या पवित्र देश में पार्थिव पूजन करना चाहिए। शुद्ध देश में उत्पन्न हुई मिट्टी को प्रयत्न से लाकर सावधान हो शिव लिंग की पूजा करनी चाहिए। मृत्तिका को जल से शुद्ध कर धीरे २ उसके लिंग बनावें। 'नमः शिवाय' इस मन्त्र से पूजन सामग्री का शोधन करे। फिर भूरसि इस मन्त्र से क्षेत्र सिद्ध करे। आयोस्मान से जल का संस्कार करे। नमस्तेरुद्र इस मन्त्र से स्फाटिकबन्ध करे। नमःशिवाय उस मन्त्र से क्षेत्र की शुद्धि करे। और नमः पूर्वक पञ्चामृतक प्रोक्षण करे। नमोलग्रीवाय उस मन्त्र से लिंग की प्रतिष्ठा करे तथा एत्तरुद्राक्ष मन्त्र से भक्ति पूर्वक रमणीय आसन देवे। फिर नमोमहान्तम इस मन्त्र से आवाहन कर यातेरुद्र उस मन्त्रसे उपदेश करे (स्थिर करे)'यामिषुम' इस मन्त्र से प्रेम पूर्वक आधिवास करे तथा 'असौजी' इस मन्त्र द्वारा देवता न्यास और 'असोयौ व समर्पति इससे उपसमर्पथ करे। फिर 'नमोःन्तुनीलग्रीयाय' इस मन्त्र से मनु द्वारा पाद्यस्नान और रुद्रगायत्री से अर्घ्य देकर त्रिम्बक मंत्रसे आचमन करावे। 'दधिक्राण' इस मन्त्रसे दधि-स्नान 'घृतयाव' मन्त्र से दूध से स्नान करावे। इस प्रकार वेदोक्त विधि से जो बुद्धिमान् शङ्कर का पूजन न करता है उसको शिवजी उत्तम फल प्रदान करते हैं। शिव के नामों से ही पार्थिव लिंग को पूजा करे। 'हर महेश्वर शम्भु शूल पाणि पिनाकधारी शिव पमुपति महादेव' इस क्रम से मृतिका लाकर उसे मिलावे (साने या शोधन करे)। फिर प्रतिष्ठा और आवाहन कर स्नान पूजन और क्षमा कराकर बिसर्जन करे। ॐनमःशिवाय' का भक्ति पूर्वक जप करे शिवजी का ध्यान नित्य करता रहे। इस प्रकार गुरु के दिये हुए पंचाक्षरी मन्त्र को विधि पूर्वक सर्वदा जपे। शत रुद्रिय का पाठ करता रहे। हाथ में अक्षत और पुष्प लेकर भक्ति से प्रसन्न चित्त हो इस प्रकार शङ्कर भगवान् की प्रार्थना करे-हे मृड ! आपके गुणों को

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

जानने वाला. आप में चित्त लगाने वाला मैं आपका हूँ। भूतनाथ! ऐसा जानकर मुझ पर कृपा करें। शङ्कर अज्ञान से अथवा ज्ञान से मैंने जो कुछ भी आपका पूजादि किया है वह आपकी कृपा से सफल हो। गौरीश! मैं तो महापापी हूं आप महापवित्र है ऐसा जानकर आपकी जैसी इच्छा हो वैसा करो। हे महेश्वर! मैं सर्व भाव से आपका ही हूँ। हे परमेश्वर आप मेरी रक्षा करें। मुझ पर प्रसन्न होवें। इस प्रकार शिवजी के ऊपर (हाथ में लिये)उन पुष्पों और अक्षत को चढ़ावे। साष्टाङ्ग दण्डवत प्रमक्षिणा करे। फिर श्रद्धा पूर्वक स्तुति द्वारा देवेश का स्तवन करे। फिर गले से शब्द निकाल कर पवित्र हुआ नम्रता पूर्वक प्रणाम करे। और सादर पूजा बिसर्जन करे।

* इक्कीसवां अध्याय *

(शिव लिंग की संख्या)

ऋषि बोले-सूतजी! शिवजी के पार्थिव लिंग की कुल कितनी संख्या है। सूतजी बोले-ऋषियों! पार्थिव लिंग की संख्या कामना के अनुसार कही गई है। विद्यार्थी पुरुष प्रीति पूर्बक सहस्र पार्थिव शिव का पूजन करे। धन का इच्छुक पांच सौ, पुत्र का इच्छुक डेढ़ हजार, वस्त्र का चाहने वाला पाँच सौ, पार्थिव लिङ्ग को बनाकर पूजे। मोक्ष का इच्छुक एक करोड़ भूमि का इच्छुक एक सहस्र, दया का इच्छुक तीन सहस्र, तीर्थ की कामना वाला दो सहस्र, तथा इसी प्रकार जिसकी जैसी कामना हो उसके अनुसार वेदोक्त विधि से उतनी-उतनी संख्या में पार्थिव लिंग की पूजा करे। पार्थिव की पूजा करोड़ों यज्ञ का फल देने वाली है यथा कामार्थी मनुष्य को भक्ति और मुक्ति देने वाली है। कलियुग में और लोकों में जो लिङ्ग पूजा ही श्रेष्ठ कही है। उसके समान दूसरा कुछ नहीं है। यही शास्त्र का नियम है। भक्ति मुक्तिदाता लिंग अनेक आपत्तियों से बचाता है। इसे नित्य पूजने वाला शिवजी की सायुज्य मुक्ति को प्राप्त करता है। चार अंगुल ऊंचा सुन्दर वेदी से युक्त लिंग को उत्तम कहा गया है। उसके आधा मध्यम और उससे आधा अधम

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

कहा गया पुण्य नहीं है। विद्वान को उचित है कि वह सब कर्म जालों को छोड़कर नित्य एक लिंग की ही पूजा करे। क्योंकि लिङ्ग का अर्चन करने से सम्पूर्ण स्थावर जङ्गम पूजित हो जाता है। संसार से तरनेका इस से सुन्दर उपाय दूसरा नहीं है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, स्त्री तथा अन्य सभी जातियों को शिव लिङ्ग की पूजा करने का अधिकार है। द्विजों को वेदिक मार्ग से पूजा करनी चाहिए अन्य मार्ग से नहीं और दधीचि, गौतम आदि ब्राह्मणों के शाप से दग्ध चित्त वालों एवं उनके वंशजों को जिनकी वैदिक कर्म में श्रद्धा नहीं है, जो वेद-स्मृति के कर्म का अनादर कर दूसरे कर्म का आचरण करते हैं, उनके संकल्प नहीं प्राप्त होते। उन्हें चाहिए कि वे उसी स्थान पर त्रिजगन्मयी अष्टमूर्ति का पूजन करे। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा और यजमान ये आठ मूर्ति पूज्य हैं। शर्व भव, रुद्र, उग्र, भीम, ईश्वर महादेव पशुपति इनकी मूर्ति द्वारा पूजन करे, देवकर्म को रात्रि में सर्वदा उत्तराभिमुख होकर करें। इसी प्रकार पवित्रता से युक्त हो उत्तर की ओर मुख करके शिवजी का पूजन करे।

* बाईसवाँ अध्याय *

(शिवनैवेद्य और बिल्व महात्म्य)

ऋषि बोले-हमने पूर्व में सुना है कि शिव नैवेद्य ग्रहण योग्य नहीं हैं। हे मुनि ! इसका और बिल्वपत्र के महात्म्य का निर्णय कीजिये। सूतजी बोले-मुनियो ! शिवजी के नैवेद्य को देखकर तो पाप दूर से ही भाग जाते हैं। और उसको भक्षण करने पर तो अनेकों पुण्य प्राप्त होते हैं। शिव नैवेद्य का भक्षण करने से तो हजारों और अरबों यज्ञों से बढ़ कर शिव सायुज्य की प्राप्ति होती है। जिसके घर में शिवजी के नैवेद्य का प्रचार होता है उसका सारा घर तो पवित्र है साथ ही वह अन्य घरों को भी पवित्र कर देता है। अतएव शिव नैवेद्य को आया हुआ देख कर प्रसन्नता पूर्वक उसे शिरोधार्य कर शिवजी का स्मरण करता हुआ बड़े प्रयत्न से उसे भक्षण करना योग्य है। शिव नैवेद्य

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eSangotri Siddhanta Gyaan Kosha

ग्रहण कर ब्रह्महत्यारा भी पवित्र हो जाता है। हां, जहां चांडालों का अधिकार है वहां का महाप्रसाद भक्ति पूर्वक भक्षण करना चाहिते। वाणलिंग,लोह लिंग,सिद्ध लिंग और स्वयम्भू लिंग में तथा सम्पूर्ण प्रतिमाओं में चांडाल का अधिकार नहीं है। मुनीश्वरों ! लिंग के ऊपर का द्रव्य अवश्य ही अग्राह्य है, किन्तु जो लिंग स्पर्श से अलग है वह पवित्र है ! विल्व महादेवजी का स्वरूप है और इसकी देवताओं ने भी बड़ी स्तुति की है। इसकी महिमा कठिनता से जानी जाती है। संसार में जितने भी पवित्र और प्रसिद्ध तीर्थ हैं वे सब विल्व में ही निवास करते हैं क्योंकि विल्वभूल में लिंगरूपी अव्यव महादेव का वास रहता है और पुण्यात्मा इसकी पूजा करता है वह निश्चय ही शिवजी को प्राप्त होता है। विल्वभूल में जो शिवजी को जल चढ़ाता है जानों वह सब तीर्थों में स्नान कर चुका और वह पृथ्वी में पवित्र है। जो मनुष्य विल्वभूल को गन्ध पुष्पादि से पूजता है वह शिवलोक को जाता है तथा उसे सन्तान और सुख की वृद्धि होती है। जो आदर पूर्वक विल्वमूल में दीपक जलाता है तथा उसकी पूजा करता है, वह सब पापों से छूट जाता है। विल्वमूल में जो शिवभक्त को भोजन कराता है उसी एक के जिमाने से करोड़ गुना फल पाता है विल्व मूल में दूध ही में पका हुआ अन्न जो शिवभक्त को देता है वह दरिद्री नहीं होता। ब्राह्मणो ! प्रवृत्ति तथा निवृत्ति मार्ग दो प्रकार का है। प्रवृत्ति मार्गीय पाठ पूजा करे तो मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं अभिषेक के अनन्तर शालिअन्त से नैवेद्य दे फिर घर में लिंग को सम्पुटित कर शुद्ध स्थान में रखे। निवृत्ति मार्गीय सूक्ष्म लिंग पूजा है। बिभूति द्वारा पूजन कर विभूति भी निवेदित करे। पूजा करके लिंग को शिर पर धारण करे।

* तेईसवां अध्याय *

(शिव नाम महिमा)

ऋषि बोले-सूतजी ! रुद्राक्ष तथा नाम की महिमा किस प्रकार करनी चाहिये ? सूतजी बोले–भस्म, रुद्राक्ष,शिवनाम ये तीनों त्रिवेणी के सदृश

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

महा पुण्यमय है। जहाँ इन तीनों का निवास हो उसके दर्शन मात्र से त्रिवेणी के स्नान का फल प्राप्त होजाता है। यह तीनों जिसके शरीर में रहे उनका दर्शन भी पाप हारक एवं परम दुर्लभ है शिव नाम गङ्गाजी, भस्म यमुनाजी, रुद्राक्ष सरस्वती यह तीनों पाप विनाशक हैं अतः भस्म, रुद्राक्ष नाम सदा धारण करे।

ब्रह्माण्ड भर में असत् से परे केवल शिव ही जानते हैं। परम सत्य समझो शिव नाम दावाग्नि है, महापाप पर्वत है। उससे यह पाप पर्वत शीघ्र जल जाते हैं अनेकों पापमूल एक ही शिव नाम नष्ट हो जाते हैं। मुने ब्रह्महत्यादि पापों की राशि भी हों तो शिव नाम उस सबको नाश कर देता है। शिव नाम रूपी नाव पाकर संसार सागर से जो तर जाते हैं उनके संसार मूल पाप निःसंशय नष्ट हो जाते हैं।

मुनीश्वर ? अनेक जन्मों में जिसने तप किया है उसे सर्व पापनाशिनी शिव की भक्ति मिलती है अनेक पाप करके भी जिसका शिव में आदर हो चुका है उसी जपसे उसके निःसंशय सब पाप नष्ट हो जाते हैं। जिस के नित्य ही भस्म से अङ्ग पवित्र रहते हैं और शिवनाम के जप में आदर है शौनकजी ! वह घोर संसार से वह तर जाता है। मुने ! पहले इन्द्रद्युम्न नाम का एक राजा महापापी हुआ। एक ब्राह्मण पत्नी भी महापापिनी हो चुकी है। इन दोनों ने शिवनाम के प्रभाव से सद्गति प्राप्त की।

* चौबीसवाँ अध्याय *

(भस्म महिमा)

सूतजी बोले—भस्म दो प्रकार की हैं एक महा भस्म द्वितिय स्वल्प भस्म। श्रोता, स्मार्थ तथा लौकिक तीन प्रकार की महाभस्म है। स्वल्पसंज्ञक भस्म भी बहु प्रकार की है। श्रोता तथा स्मर्थ भस्म ब्राह्मणों के लियेहै दूसरे सबके लिए लौकिक भस्म है। ब्राह्मणों को मन्त्र द्वारा अन्य बिना मन्त्र धारण करें। उपलो से सिद्ध हुई राख आग्नेय नामक भस्म है दूसरे के यज्ञ से भी उत्पन्न भस्म त्रिपुण्ड धारने में श्रेष्ठ है। जवाल

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

उपनिषद् में लिखे अनुसार अग्नि इत्यादि मन्त्रों द्वारा सातवार जय से भिगोकर भस्म शरीर में लगावे। तीनों सन्ध्याओं में जो शिवभस्म से त्रिपुण्ड लगता है वह सब पापों से निर्मुक्त होकर शिव के साथ मोद पाता है। त्रिपुण्ड तथा भस्म रमकर ही विधि से जप करे निर्दय, अधर्मी, सर्वथा पापी, हत्यारा मूर्ख पतित भी हो किन्तु भस्म धारने से जिस देश में भीवह रहे वहाँ सब तीर्थ एवं यज्ञों का वास हो जाता है।

सारे उपनिषदों का यही सार है कि भस्म तथा त्रिपुण्ड धारण श्रेय कर है। इनकी निन्दा करने वाले यों ब्रह्मा की आय पर्यन्त घोर नरक में पड़कर अनेक यातनायें भोगते हैं। भस्म तथा त्रिपुण्ड तिलक धारी होकर जो श्रद्धा, यज्ञ, जप होम, बलि वैश्यदेव एव पूजन आदि करते हैं। उनकी आत्मा शुद्ध होजाती है मनको भी अपने वश कर लेते हैं। मल त्याग के अनन्तर जल स्नान देह को शुद्ध करता है,मन्त्र स्नान पापों को कष्ट कर शुद्ध कर देता है। ज्ञान स्नान से सद्गति मिलती है। किन्तु भस्म स्नान से सर्वदा शुद्धता प्राप्त हो जाती है जो ब्राह्मण होकर त्रिपुण्डधारी नहीं उनके स्नान, ध्यान, जपन, दास आदि सभी निष्फल हैं। वानप्रस्थी अदीक्षित एव कन्यायें ठीक मध्यान के १२ बजे जल मिली अथवा विना जल भस्म का त्रिपुण्ड प्रतिदिन लगावें तभी तो वे शिव भक्ति एवं मुक्ति के अधिकारी होते हैं।

मुनिगण ! मध्यावली अंगुली उसके साथ वाली अनामिका एवं छोटी अंगुली के साथ वाली इन दो अंगुलियों से भस्म लेकर भृकुटि के मध्य एवँ समाप्ति तक जितना भी विस्तार है उतने तीन २ लकीलों वाला त्रिपुण्ड तिलक मस्तक पर तथा अन्य अङ्गों में धारण करे। त्रिपुण्ड की प्रत्येक रेखा के नौ नौ देवता माने गये हैं। जैसे कि प्रथमा के आकार ग्राहपत्य,अग्नि पृथ्वी, तत्व धर्म रजोगण ऋग्देव क्रिया शक्ति एव प्रातःसवन इत्यादि नौ हैं। द्वितीया रेखा के उकार दक्षिण अग्नि आकाश तक यजुर्वेद आत्मा अन्तरात्मा इच्छा शक्ति मध्यन्दिन सवन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized By eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

एवं महेश्वर इत्यादि नौ देवता हैं। तीसरी रेखा के—मकार, आहवनीय अग्नि परमात्मा तमोगुण दिवा सामवेद ज्ञान शक्ति सांय सवन एवं महादेव इस प्रकार नौ देवता हैं। ब्राह्मण वृन्द! प्रत्येक रेखा को लगाते समय उन २ देवताओं का ध्यान एवं स्मरण आवश्यक है जिससे भक्ति-मुक्ति सहज प्राप्त होती है। भस्म बत्तीस, सोलह आठ किंवा पाँच अङ्गों में धारण करे। सिर,माथा, दोनों कान,दोनों नेत्र,नासिका के दोनों हाथ, मुंह,कण्ठ, दोनों कुहनी, दोनों मणिबन्ध हृदय,दोनों बगल, टूंड़ी अन्ड काल दोनों उरू दोनो घोटूं दोनों पिन्नी, जाघें दोनों पांवआदि २ बत्तीस अङ्गों में क्रमशः अग्नि पृथ्वी वायु देश दश दिशायें दस दिग्पाल, आठों बस्त्र धरा, ध्रुव, सोम आम अनिल, प्रातःकाल इत्यादि का नाम लेकर भस्म त्रिपुण्ड धारण करे। अथवा सिर, कण्ठ, मन्तक, नो-नों स्कन्ध, दोनों हाथ, कुहनियें, दोनों मणि, बन्धु युगल, टूंड़ी, दोनों बगलें, एवं पीठ इन सोलह अङ्गों में क्रमशः धारण करे तब अश्विनी कुमार शिव शक्ति रुद्र ईश नारद वाम इत्यादि नौ देवताओं के नाम स्मरण करके त्रिपुंड लगावे। अथवा सिर,बाल, कान, दोनों मुख दोनों हाथ, हृदय टूंड़ी, उरु युगल, दोनों पिन्नी, एवं दोनों पाँव इन सोलह अङ्गों में क्रमशः—शिव, चन्द्रमा, रुद्र ब्रह्मा गणेश लक्ष्मी बिष्णु शिव प्रजापति, नाग, दोनों, नाग कन्या दोनों ऋषि कुमारिका, समुद्र तीर्थ इत्यादि के नाम स्मरण कर त्रिपुंड भस्म धारे। अथवा माथा दोनों कर्ण दोनों स्कन्ध छाती टूंड़ी एवं गुह्य अङ्ग इत्यादि आठों अङ्गों में क्रमशः—सप्त ऋषि ब्राह्मणी का नाम लेकर धारण करे। ब्रह्मा रुद्र की उत्पत्ति करने वाले परब्रह्म परमात्मा शिव का ध्यान कर ॐ नमः शिवाय से त्रिपुंड धारे।

—❀:❀—

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

* पच्चीसवां अध्याय *

(रुद्राक्ष—महात्म्य)

सूतजी बोले शौनक ? रुद्राक्ष शङ्कर को अतीय प्रिय है। इसके द्वारा जपन करने से समस्त पाप निवृत्त हो जाते हैं। इसकी महिमा तो सदा शिव ने लोकोपकार के लिये श्रीपार्वतीजी को सुनाई है।

सदा शिव ने पार्वती जी से कहा-देवि ? मैंने पूर्व समय दिव्य सहस्र वर्ष पर्यन्त तपस्या की थी। उस समय मुझे कुछ भय लगा जिससे मैंने अपने नेत्र खोल दिये मेरे नेत्रों से आँसुओं की बिन्दुये गिरने लगी उसी से ही गौड देश से लेकर मथुरा—अयोध्या काशी लङ्का मलयाचल, सह्य पर्वत आदि देशों में रुद्राक्ष वृक्ष उत्पन्न हो गये-तभी तो इनका महात्म्य बढ़ गया वेदों ने इसकी महिमा गायी। अतएव इसकी माला समस्त पापों का नाश कर भुक्ति-मुक्ति देने वाली है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र जन सफेद, लाल या पीले एवं काले रुद्राक्ष धारे।

जप रुद्राक्ष माला द्वारा विशेष फलदायक है अन्य किसी से नहीं। गोल, स्निग्ध, (चिकना) मजबूत मोटा कांटेदार रुद्राक्ष मनोरथ साधन एवं भुक्ति-मुक्ति प्रदायक है। किन्तु कीड़ों से खाये गये वटे-फूटे काँटों से रहित फलों से पूर्ण एवं चपटे यह छः प्रकार के रुद्राक्ष नहीं धारण करना चाहिये। जिन रुद्राक्षों का छेद निकला हुआ हो वह उत्तम जिन के छेद मनुष्य निकालें वे मध्यम हैं। साढ़े पाँच सौ रुद्राक्षों का मुकुट तीन, लड़ीदार तीन सौ साठ रुद्राक्ष का यज्ञोपवीत. एक सौ एक रुद्राक्ष की माला,तीन रुद्राक्ष शिखा में छः छः कानों में ग्यारह २ दोनों कुह नियों में तथा दोनों मणिवन्धों में, तीन जनेऊ में पाँच कटि में इस प्रकार कुल ग्यारह सौ रुद्राक्षधारी मानव साक्षात् शिवरूप हैं।

गले में रुद्राक्ष, मस्तक पर त्रिपुण्ड धारी रुद्राक्ष पहिने 'ॐ नमः शिवायः' मन्त्र का जप करने वाले महात्मा यमपुर को नहीं जाता। रुद्राक्ष माला पर मन्त्र जपने का फल करोड़ गुना प्राप्त होता है। रुद्राक्ष

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan

धारी को दश करोड़ गुना फल मिलता है।

तीन मुख वाला रुद्राक्ष साधन सिद्ध करता है। यह प्रमुख विद्याओं में निपुण कर देता है। चार मुख वाला रुद्राक्ष ब्रह्मरूप है। इसके दर्शन में एवं पूजन से नर हत्या निवृत्त हो जाती है। धर्म, अर्थ, काम मोक्ष, आदि चारों पुरुषार्थों का फल देता है। कालाग्नि नाम पञ्चमुखी रुद्राक्ष रुद्र रूप है। यह कामनायें पूर्ण कर मोक्ष प्रदान करता है। अभोग्य स्त्रियों के भोगने के पाप तथा अभक्ष्य वस्तुओं के भक्षण करने से पाप निवृत्त करता है। छः मुखी रुद्राक्ष कार्तिक स्वामि रूप है। इसे दक्षिण हाथ में बाँधे इससे ब्रह्म हत्यादिक दोष निवृत्त होते हैं। सप्त मुखी रुद्राक्ष अनेक नामक हैं इसके धारण से धन प्राप्त होता है। अष्टमुखी रुद्राक्ष अष्ट मूर्ति भैरव का रूप है इसके धारण से दीर्घायु होता है मृत्यु के अन्तर शिव स्वरूप हो जाता है। नौ मुख वाला रुद्राक्ष भैरव तथा कपिला रूप है। इसकी अधिष्ठात्री नव स्वरूपा अम्बा देवी है इसे वाम भुजा में धारे जिससे समस्त भैरवों की प्राप्ति होती है। दशमुखी रुद्राक्ष विष्णु रूप है। इसके धारण से सर्व मनोरथ पूर्ण होते हैं। ग्यारह मुख वाला रुद्राक्ष आदित्य रूप है इसे मस्तक पर धारण करे उसका १२ सूर्य समान तेज बढ़ता है। तेरह मुख सम्पन्न रुद्राक्ष विश्वेदेव है इसके धारण से सौभाग्य तथा कामनायें सिद्ध होती हैं। चतुर्दशी मुखी रुद्राक्ष सदाशिव है इसे मस्तक पर धारे तो मनुष्य के सम्पूर्ण पाप निवृत हो जाते हैं। पार्वतीजी! रुद्राक्षों के मन्त्र क्रमशः श्रवण करोः—१ ॐहीं नमः, २ॐ नमः, ३ क्लीं नमः, ४ ॐह्री नमः, ५ ॐ ह्री नमः, ६ ॐहीं हुँ नमः, ७ ॐ हुं नमः, ८ ॐ हुँ नमः, ९ ॐ हुँ नमः, १० ॐ हहुं नमः, ११ ॐ हीं हुँ नमः, १२ ॐ हुं नम १३ ॐ क्रौं क्षौरों नमः, १४ ॐहीं नमः, ये मन्त्र एक मुख आदि रुद्राक्ष धारण करने के लिए हैं। मन्त्रों का उच्चारण करके रुद्राक्ष धारण करे। बिना मन्त्र रुद्राक्ष धारण करने से इन्द्र की आयु पर्यन्त नरक में पड़ने से जितना पाप होता है। मुनिगण!

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

यह आख्यान रुद्राक्ष की महिमा से परिपूर्ण है जिसे स्वयं शिवजी ने श्री पार्वतीजी के प्रति कहा है। सूतजी कहते हैं—मैंने भी आप लोंगों के प्रति कह सुनाया है। भस्म त्रिपुण्ड रुद्राक्ष की महिमा से पूर्ण इस अध्याय को नित्य प्रति जो पढेंगे, सुनेंगे वे पुत्र-पौत्रादि समस्त सुख प्राप्त कर के सुखमय जीवन व्यतीत कर अन्त में शिव रूप हो कर मुक्त हो जायेंगे।

॥ इति श्री विद्येश्वर संहिता सम्पूर्णं शुभमस्तु ॥

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

ॐ नमः शिवाय

अथ रुद्र संहिता प्रारम्भ

वन्देऽन्तरस्थं निज गूढ रूपं,
शिव स्वस्त्रष्टु मिंद विचष्टे।
जगन्ते वित्यं परितो भ्रमन्ति,
यत्सं निधो चुम्बक लोह वत्तम् ॥

जिस तरह लोहा चुम्बक से आर्कषित होकर उसके पास ही लटका रहता है, उसी प्रकार यह समस्त विश्व सदा शिव ओर जिसको आस पास भ्रमण करते हैं, जिन्होंने स्वयं ही से इस प्रपञ्चकी रचने की विधि बतलाई है जो सबके भीतर अन्तर्यामी रूप से विराज मान है, तथा जिनका अपना स्वरूप अत्यन्त गूढ़ है,ऊन भगवान्शंकर की मैं सादर वन्दना करता हूं ॥

* प्रथम अध्याय *

(ऋषिगणों की वार्ता)

ऋषि बोले–सूतजी ! आप शिव का प्राकट्य, उमा की उत्पत्ति, शिव उमा का विवाह, गृहस्थ धर्म एवं और भी शिव-चरित्र अनन्त है। कृपा करके सुनाइये।

सूतजी बोले-आप लोगों के प्रश्न ही श्री जगत पावनी श्री गङ्गाजी की तरह सुनने वालों को, कहने वालों को एवं पूछने वाले इन तीनों को पवित्र करने वाले हैं। मैं आपको आपके प्रश्नों के अनुसार शिव चरित्र सुनाता हूं। आप आदर पूर्वक श्रवण करें आपके प्रश्नों के अनुसार ही नारदजी ने अपने पिता ब्रह्माजी से यही प्रश्न किया था। ब्रह्माजी ने तब प्रसन्न होकर शिव-चरित्र सुनाया था। मुनिजनों ने पूछा हे सूतजी ! इस संवाद को हमें पूर्णतया सुनाइये। ईश सम्वाद में संसार से मुक्त कराने वाली, गौरीश की अनुपम आश्चर्य मयी लीलायें हैं।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* दूसरा अध्याय *

(नारद की काम विषय)

सूतजी बोले–ब्राह्मणो ! एक समय ब्रह्मा पुत्र नारदजी हिमालय पर्वत की एक गुफा में बैठकर मौन हो बहुत दिनों में पूर्ण होने वाला तप करने लगे उनके उग्र तप को देखकर इन्द्र डर गया वह विचार करने लगा कहीं ऐसा न हो कि नारद जी मेरे राज्य के लिये तप कर रहे हों इन्द्र ने कामदेव को बुलाया और कहने लगा हे कामदेव ! तुम मेरे परम सखा हो एवं हितू हो। नारद हिमाचल की गुफा में बैठकर दृढ़ासन से तप कर रहा है। कहीं ऐसा न हो कि वर में ब्रह्माजी से मेरा राज्य ही माँग बैठे? अतः तुम आज ही वहां जाकर उसके तप को खंडित करो। इन्द्र की इस प्रकार की आज्ञा से कामदेव वहां पहुँच गया। तप नष्ट करने के लिये नाना प्रकार के उपाय करने लगा। अनेकों प्रकार के ऐसे २ उपाय किये जिससे नारद जी का मन विचलित हो जाय, किन्तु वे नारदजी का कुछ भी बिगाड़न सके। यह तो श्री सदाशिव की कृपा ही थी। दूसरे उसी स्थान पर स्वयं सदाशिव ने भी तपस्या की थी इस नारद जी का तप खंडित न हो सका। कामदेव को भस्म कर देने का भी यही स्थान है। वैसे भी कामदेव की माया इस स्थानपर नहीं चल सकती थी क्यों कि जब सदाशिव ने उसको भस्म किया था तो काम की पत्नी ने पति के जीवित होने के लिये प्रार्थना की थी, देवताओं ने श्री महा देवजी से प्रार्थना की तब महादेवजी ने कहा था कि कामदेव कुछ काल के व्यतीत हो जाने पर जीवित हो जायगा परन्तु इस स्थान पर और इस स्थान के साथ जहाँ तक यह भस्म होता दिखाई देता है वहाँ तक उतने पृथ्वी खण्ड में इसकी माया एवं काम वाण नहीं चल सकेंगे। वह लज्जित होकर इन्द्र के पास लोट गया।

शिव माया थी जिसे न समझ कर इन्द्र ने नारदजी की तपस्या की प्रशंसा की। श्री शिव की महिमा का उसे पता ही न लगा। वह आश्चर्य में पड़ गया। सदाशिव की परम कृपा से नारदजी ने बहुत

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jaipur. Digitized by eGangotri

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

काल पर्यन्त तपश्चर्या की। अपने तप को पूरा हुआ समझ कर नारदजी उठे फिर उनको कामदेव पर विजय ध्यान आया, मन में अभिमान जग उठा। मैंने काम पर विजय पाई इस प्रकार के अभिमान से उनका ज्ञान नष्ट हो गया। अपनी विजय कथा श्रीमहादेवजी को ही सुनाने के लिये शीघ्र ही कैलाश पर्वत पर जा पहुँचे। अपनी वहां रुद्र को प्रणाम करके अपनी तपश्चर्या की सफलता का समाचार तथा कामदेव पर विजय पाने का सब समाचार कहा।

भक्तवत्सल सदा शिवजी ने नारद जी की प्रशंशा करते हुए कहा नारदजी तुम धन्य हो। परन्तु एक बात मेरी भी मानो। यह समाचार अन्य किसी देवता को न सुनाना विशेष कर श्री विष्णु भगवान को न सुनाना सदाशिव के इस प्रकार कहने पर भी होन हार बड़ी प्रबल होती है सदाशिव के वचन स्वीकार नहीं किये यह भी सदाशिव की माया ही है। तदन्तर नारद ब्रह्मलोकमें पहुँचे वहाँ ब्रह्माजी को नमस्कार करके अपने तपोबल से कामदेव पर विजय प्राप्ति का समाचार सुनाया। ब्रह्माजी ने भी शिव स्मरण करके सब कुछ जान लिया और इस वृतान्त को सब किसी के आगे प्रकट करने के लिये मना किया। किन्तु नारदजी ने ब्रह्माजी के वचनों पर ध्यान नहीं दिया। यह शिवकी मोहनी माया थी। नारदजी के मन में अभिमान के अङ्कुर दृढ़ हो गये। अभिमानसे बुद्धि मारी गई तब तो झट ही विष्णुजी के लोक में जा पहुंचे। श्रीविष्णु जी ने नारद को दूर से देखा अपने आसन से उठकर नारदजी को लेकर आये और आसन पर बिठाय तब शिवजी के चरण कमलों का ध्यान करके विष्णुजी बोले—नारद आप कहाँ से आरहे हो। इस लोक में आपका शुभागमन किस प्रकार हुआ? भगवान विष्णु के बचन सुनकर नारद ने अभिमान के साथ अपने तप के पूर्ण होने का एवं कामदेव पर विजय पाने का सम्पूर्ण आख्यान कह सुनाया तब विष्णु बोले सदा शिव! आपकी मोहनी परम धन्य है।

नारद तप के सागर आपकी कीर्ति निर्मल बुद्धि धन्य है मुनिवर

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

काम क्रोध एवं लोभ तो उन पुरुषों को आकर पीड़ित करते हैं जो कि भक्तिहीन है आप ज्ञान वैराग्य युक्त हो, सतत ब्रह्मचारी हो, भला वह विकारी काम आपका कर ही क्या सकता था। नारदजी कहने लगे- हे स्वामिन ! यह सब आपकी कृपा का फल है। आपकी कृपा के आगे कामदेव बेचारे की शक्ति ही क्या है जो मेरा कुछ बिगाड़ सके, में सदा इससे निर्भय हूं। भगवान को नमस्कार करके जहां कहीं अपनी इच्छा से घूमने वाले नारदजी विष्णु-लोक से चल दिये।

* तीसरा अध्याय *

(नारद मान भङ्ग)

सूतजी बोले–ब्राह्मण श्रेष्ठ ! नारदजी के चले जाने पर शिव इच्छा से भगवान विष्णु ने एक अद्भुत माया रची नारदजी जिस ओर जारहे थे उसी मार्ग में एक सुन्दर नगर रच दिया। उस नगर के राजा का नाम था शीलनिधि उस राजा की एक कन्या थी उसका स्वयम्वर था देशों से बहुत से नृप युवक वहां पहुँचे हुए थे। खूब चहल पहल थी। इस नगर की शोभा को देखकर ही नारदजी तो मोहित होगये। राजा ने देखते ही उन्हें प्रणाम किया और स्वर्ण सिंहासन पर उन्हें बैठाया और उनकी पूजा की। देव सुन्दरी अपनी कन्या को बुलाकर उनके चरणों में डालकर प्रणाम कराया। और बोला मुनिराज ! आप सर्व श्रेष्ठ त्रिकालज्ञ हैं। कृपा करके कहैं इसको कैसा वर प्राप्त होगा। राजा के वचन सुनकर नारदजी बोले राजन् ! आपकी कन्या भगवती है इसका पति तो त्रिलोकीनाथ तीनों लोनों में विजय पाने वाला, श्रीशिव के समान वीर,कामदेव को भी जीतने वाला महा-यशस्वी होगा। यह कहकर नारदजी चल पड़े। शिवमाया से मोहित होकर कामदेव के वशीभूत हो गये। उनके मन में विचार हुआ–यह कन्या मुझे प्राप्त हो। पर इसमें उपाय क्या करना चाहिये ? सब राजा के सन्मुख स्वयंवर में भला यह मुझे क्यों वरने लगी। हां ? एक उपाय है मैं विष्णु का रूप लेकर पहुंचू तभी कार्य बनेगा। यह विचार कर फिर विष्णुलोक में जा

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

पहुंचे। विष्णु भगवान् को नमस्कार कर बोले—प्रभो! राजा शीलनिधि की कन्या अत्यन्त सुन्दरी है उसका स्वयंवर हो रहा है। मैं यह चाहता हूं कि उसका विवाह मेरे साथ हो। आप अपना रूप मुझे प्रदान कर दीजिए। श्री विष्णु बोले—हे नारद! आप वहां जाये मैं आपका हित करूंगा। जिस प्रकार उत्तम वैद्य रोगी के वचनानुसार तो औषधि नहीं देता उसका हित सोचकर ही औषध देता है उसी प्रकार मैं आपका हित करूंगा यह कहकर परम दयामय विष्णुने नारदजी को बिदा किया। विदा करते समय बानर का रूप देकर यह भी कहा कि मैंने हरि का रूप दे दिया है नारदजी अतीव प्रसन्न होते हुये अपने को परम सुन्दर समझ कर शीघ्रतिशीघ्र उस स्वयम्बर में आगये। अपने आपको सभा में बैठे हुए इन्द्र के समान शोभायुक्त समझने लगे। उस सभा में दो रुद्रगण ब्राह्मण के रूप में बैठे हुए थे। वे इस भेद को भली-भाँति जानते थे। श्री नारदजी का वानर रूप केवल कन्या ही देखने वाली थी बाकी के नारदजी का वास्तविक रूप देख रहे थे।

स्त्रियों के साथ वह कन्या भी स्वर्ण की जयमाला लेकर आ पहुँची। वानर रूप में मुनि को देखकर वह कन्या अतीव क्रुद्ध हुई। नारदजी की ओर तो वह कन्या गई भी नहीं। जब उसे अपने योग्य कोई भी वर नहीं दिखाई दिया तो वह अत्यन्त उदास हो गई। कुछ बिलम्ब से स्वयं विष्णु ही वहाँ आ उपस्थित हुए किन्तु विष्णु का रूप किसी को भी दिखाई नहीं देता था। तब कन्या ने प्रसन्न होकर वह जयमाला विष्णु के गले में डाल दी। विष्णु भी उस कन्या को लेकर अपने लोक को चले गये। सब के सब राजा मुनि नारदजी के साथ निराश होकर वहां से उठ गये। नारदजी से ब्राह्मण रूपधारी उन दोनों रुद्रगणों ने आकर कहा—नारदजी! आप कामदेव से मोहित हो इसी कारण कन्या को पाने की व्यर्थ अभिलाषा में हो। आपका वानर जैसा कुरूप मुख है, जरा उसको तो देखो? तब नारदजी ने दर्पण में अपना मुख देखा। उसे वानर जैसा देखकर क्रोध में भर गये। सामने खड़े हुए

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

दोनों रुद्रगणों को शाप दे डाला। तुम दोनों ने ब्राह्मण रूप होकर मेरी हंसी उड़ाई है। इसी कारण तुम ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होकर राक्षस बन जाओ। रुद्रगणों ने शाप को सुना और नारदजी को कुछ भी नहीं कहा।

* चौथा अध्याय *

(विष्णु को श्राप देना)

ऋषि बोले-सूतजी रुद्रगणों के चले जाने पर कामदेव से व्याकुल नारदजी कहाँ गये? और क्या किया? सूतजी बोले-नारदजी क्रुद्ध होकर रुद्र गणों को शाप देकर तालाब पर आये वहाँ जल में अपनी परिछाँई देखी तो पूरी बानर जैसी आकृति उनको दिखाई दी। तब नारदजी क्रोध भरकर सीधे विष्णुलोक में आये और विष्णुभगवान से बोले-हरि तुम बड़े दुष्ट हो अपने कपट से विश्वभर को मोहने वाले दूसरे को सुखी होता तुम देख ही नहीं सकते तभी तो मोहनी रूप धारण कर दैत्यों से अमृत का कलश छीन लिया था अमृत के स्थान उनको बारुणी मदिरा पिला दिया। यदि भगवान शिव दया करके विष न पी लेते तो तुम्हारा सब कपट जाल प्रकट होता। देखिये वेद ब्राह्मण को उच्च कहते हैं। इसी बात को मैं आज प्रत्यक्ष करके दिखाऊंगा। जिससे फिर कभी ब्राह्मणों को तुम सता न सकोगे। विष्णु! तुमने स्त्री क्लेश से मुझे दुःखित और स्वयं कपट से राजा का रूप धारण किया अतएव जाओ तुम इसी रूप में मनुष्य-राजा होवोगे और इसी प्रकार स्त्री वियोग भोगोगे। वानरों जैसा मुख बनाया वे वानर ही आकर तुम्हारी सहायता करेंगे और तुम मनुष्यों की तरह स्त्री वियोग में दुखित रहोगे। इस प्रकार का शाप सुन कर श्री विष्णु भगवान ने शाप अङ्गीकार कर लिया। विष्णु के साथ जो कन्या दिखाई दे रही थी वह अदृश हो गई विष्णु तथा नारद अपने २ रूप में आ गये। इस प्रकार से नारदजी का माया से लुप्त हुआ ज्ञान फिर आकर उपस्थित हो गया। तब तो नारदजी पछताने लगे और अपने को धिक्का-

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

रने लगे। तब तो नारदजी विष्णु के चरणों में पड़कर बोले भगवान मुझे क्षमा करो मैं अज्ञान होकर आपको शाप दे बैठा। वह असत्य हो जाय। मैं तो घोर नरक में पड़ूंगा। भगवन ऐसा उपाय कीजिये जिस से मेरी इस पाप से मुक्ति हो। मैं आपका ही दास हूं मुझे नरकयाचना से बचाओ। तब विष्णु भगवान ने उनको उठा, गले लगाते हुए बोले नारदजी चिन्ता मत करो तुम परम श्रेष्ठ हो तुमने अभिमान किया शिव की आज्ञा का पालन नहीं किया। वही परमेश्वर हैं गर्व-हारी हैं यह मुझे परम निश्चित है। वह पर ब्रह्म सच्चिदानन्दसत्यराज-तम से परे हैं निर्गुण निर्विकार हैं नारदजी ब्रह्मा विष्णु रुद्र इन तीनों रूपोंमें अपनी माया द्वारा से ही प्रगट होते हैं। नारदजी अब आप समस्त संशयों को त्याग केवल उन्ही का गुणगान करो और शिव के शतयान-स्तोत्र का प्रेम से पाठ करो इससे तुम्हारे सब पाप-ताप नष्ट हो जायेंगे।

* पांचवां अध्याय *

(नारदजी ब्रह्माजी से प्रश्न करते हैं)

सूतजी बोले-नारदजी से इस प्रकार कहकर श्री विष्णु भगवान् अन्तर्धान हो गये। तब नारद जी पृथ्वी लोक में आकर शिवलिङ्गोंका दर्शन करने लगे। इस प्रकार भुक्ति-मुक्ति देने वाले अनेकों शिवलिंगों के दर्शन किये। तब उन रुद्रगणों ने नारदजी को देखा अपने शाप की मुक्ति के लिये वे दोनों उनके पास आकर चरणों में गिर पड़े और बोले महर्षि हम पर प्रसन्न होकर हमारा उद्धार करें। नारदजी बोले रुद्रगणो उस समय शिव की इच्छा से मेरी बुद्धि भ्रष्ट हो चुकी थी इसी कारण मोहवश होकर आप लोगों को शाप दे डाला। किन्तु मेरा कथन तो कभी असत्य नहीं होता अब मैं उस शाप उद्धार के लिये तुम लोगों को कुछ उपाय बताता हूँ। तुम दोनों मुनि वीर्य द्वारा एक राक्षसी से जन्म पावोगे। तुम्हारा प्रताप बल एवं वैभव दिनों दिन बढ़ता जायेगा। तुम सदाशिव के पूर्ण भक्त होवोगे। अनंतर भगवान अपने दूसरे रूप

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

से तुम्हारा उद्धार करेंगे।

सूतजी ने कहा—कि इस प्रकार नारदजी के कथन को सुनकर प्रसन्न होकर दोनों रुद्रगण चले गये एवं नारदजी भी शिव तीर्थों का भ्रमण करते हुए शीघ्र ही ब्रह्मलोक में आये श्री ब्रह्माजी को नमस्कार करके उनकी स्तुति की, तदनन्तर हाथ जोड़कर बोले—पितामह! आपतो पर-ब्रह्म का रूप भली-भाँति जानते हो आपकी ही कृपा द्वारा मैंने भगवान् विष्णु के स्वरूप को समझा किन्तु में शिवतत्व को नहीं सुन सका अब में शिव पूजन एवं उनके अनेक चरित्रों को सुनने की अभिलाषा कर रहा हूं। वे शिव सृष्टि के आदि में किस रूप से रहते हैं सृष्टि के मध्य में उनकी कैसी लीला होती है एवं अन्त में अर्थात् सृष्टि के प्रलव काल में वे सदा शिव महेश्वर कहाँ निवास करते हैं। सदाशिव प्रसन्न किस प्रकार होते हैं। अपनी प्रसन्नता से क्या फल देते हैं।

* छटवां अध्याय *

(ब्रह्माजी द्वारा तत्वो का वर्णन)

ब्रह्माजी बोले-ब्रह्मन् महाप्रलय के समय में सब स्थावर जंगम के नष्ट होने पर जब सूर्य, गृह- ताराओं से सब रहित होकर अन्धकारमय हो गया था चन्द्र, दिन, रात, अग्नि, पृथ्वी जल कुछ भी नहीं था, प्रधान आकाश और अन्य तेज भी शून्य हो गया। जब सत-असत स्वरूप कुछ भी न रह गया और जिसको योगी निरन्तर हृदयाकाश में देखते हैं जो मन, वाणी से परे इन्द्रियों के विषय से रहित नाम, रूप और वर्ण रहित स्थूल तथा सूक्ष्म भी नहीं है। जिसमें ह्रस्व, दीर्घ एवं लघु गुरु घटना बढ़ना भी कुछ नहीं होता। वह सत्य ज्ञान और अनन्त स्वरूप तथा परमानन्द परम पुरुष है। जो अमूर्त्त पर तत्व है वही सदा शिव की मूर्ति है। इसी को पण्डित अर्वाचीन और प्राचीन ईश्वर की मूर्ति कहते हैं उसने अपने शरीर से स्वच्छ शरीर वाली कभी नाश न होने वाली शक्ति प्रगट की। वही प्रकृति वही गुणमयी माया और वही विकाश से रहित, बुद्धि तत्व जन न कहलाई। वही

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

शक्ति अम्बिका, प्राकृति, सम्पूर्ण लोकों की ईश्वरी, त्रिदेवों की माता, नित्य और मूल कारण कही गई जिसकी आठ भुजाये हैं और जो विचित्र मुख वाली और शुभा है। सदा शिव ने उस शक्ति को साथ लेकर शिवलोक नामके क्षेत्र की रचना की। उसी को काशी कहते हैं जो परम मोक्ष को देने वाली और सर्वोपरि है। उस क्षेत्र में परमानन्द रूप शिव पार्वती सहित निवास करते हैं। धनुषधारी शिव-शिव के रमण करते रहने पर हे नारदजी! उन्हें किसी दूसरे पुरुष के निर्माण की इच्छा हुई और उन्होंने सोचा कि हम इसका भार किसी दूसरे पर देकर शान्ति से काशी में केवल शयन करें। इस प्रकार निश्चय कर इसके दक्षिणा के दशवें अंश में सुध रूप आसव का व्यापार किया जिससे त्रिलोकी में एक सुन्दर पुरुष का आविर्भाव हुआ जो शान्त और सत्व गुण से युक्त एवं गम्भीरता में सागर के समान था। तब उस अजय पुरुष ने प्रकट होकर परमेश्वर शम्भु को भी प्रणाम कर कहाकि, स्वामिन! मेरा नाम कह कर मेरे कर्मों को भी तो कहिये। यह सुन कर प्रभु शिवजी हँसकर बोले कि सर्वत्र व्यापक होने से जगत् में तुम्हारा विष्णु नाम प्रसिद्ध होगा। ऐसा कहकर शंकरजी ने अपने मार्ग से वेदों को दिया। तब अच्युत ने शिवजी को नमस्कार कर बड़ा तप किया और शिवजी अन्तर्धान हो गये। विष्णुजी ने दिव्य बारह वर्ष तक तपकिया किन्तु तबसे अब तक उन्होंने अपने मनोरथ कल्याणकारी शम्भु का कभी दर्शन न पाया। तब इन्हें इसकी चिन्ता हुई तो शिवजी ने यह शुभ वाणी उत्पन्न की कि तुम अपने मनोरथ कल्याणकारी शम्भु का फिर तप करो। विष्णुजी ने फिर बहुत दिन तक तप किया। तब शिवजी की माया से विष्णुजी के शरीर से अनेक प्रकार की जल धारायें निकली और वह सब जल शून्य से व्याप्त होकर फिर ब्रह्म रूप हो गया जिसके स्पर्श से पाप नाश होते हैं। फिर तो विष्णुजी थक कर प्रसन्नता से बहुत काल तक मोहित हुए और स्वयं ही उस जल पर सो गये। उसी समय उनका नारायण नाम हुआ उसी समय में उन महात्मा

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

से सब तत्वों की उत्पत्ति हुई। फिर उनका विस्तार हुआ। पहले प्रकृति से महान और महान से तीन गुण उत्पन्न हुये। फिर उस से तीन गुह्य और भेद वाला अहङ्कार उत्पन्न हुआ। उससे तन्मत्रा (शब्द, स्पर्श रूप, रस और गन्ध) उससे पञ्चभूत [पृथ्वी, जल, वायु] और उस नेत्र, कान, नाक, जिव्हा, और त्वचा, ज्ञानेन्द्रियाँ तथा वाणी हाथ, पर गुदा, और उपस्थ ये कर्मेन्द्रियाँ उत्पन्न हुई हैं। इस प्रकार पुरुष के बिना यह सब प्रकृति का जड़ रूप कार्य हुआ जो सब तत्व शिवजी की इच्छा से चौबिस प्रकार के हैं। ये सब एकत्र हो कर ब्रह्म रूप जल में सो रहे हैं।

* सातवां अध्याय *

(बुन्या की उत्पत्ति)

ब्रह्माजी बोले-श्रीनारायण शयन करने पर शिवजी की इच्छा से उनका नाभि में से कमल की उत्पत्ति हुई जिसकी अनन्त योजन की ऊँचाई थी। पार्वती सहित शिवजी ने मुझे उत्पन्न किया। मेरे चार मुख लाल मस्तक पर त्रिपुण्ड धारण किये हुए मैंने उस कमल के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं देखा। उस समय मुझे कुछ भी ज्ञान नहीं था जिससे मैंने न तो यह जाना कि मैं कौन हूँ और मुझे किसने उत्पन्न किया है। कुछ ही क्षण पश्चात मुझे बुद्धि प्राप्त हुई और कमल के नीचे मैं अपने कर्त्ता को ढूँढ़ने लगा। तब एक एक नाल को पकड़ता हुआ सौ वर्ष तक में नीचे को चला। किंतु मैंने वहाँ भी कमल की जड़ को न पाया। फिर मैं कमल के ऊपर जाने की इच्छा करने लगा। हे मुनि! जब इस नाल के मार्ग द्वारा मैं ऊपर आया वहाँ मुझे तप करने की मङ्गलमय वाणी सुनाई पड़ी। इस मोह नाशक आकाशवाणी को सुनकर मैं अपने पिता के दर्शन की इच्छा से फिर तप करने लगा और बारह वर्ष तक कठिन तप किया चार भुजाधारी सुन्दर नेत्र वाले भगवान विष्णु प्रकट हुए। सत असतमय उस महाभुज नारायण भगवान को देखकर मैं बड़ा प्रसन्न हुआ और शिव की मायावश अपने पिता

CC-0. NSG Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

को न जानकर उससे बोला तुम कौन हो ? फिर मैंने अपने हाथ से उस सनातन पुरुष को जगाया। परन्तु मेरे तीव्र हाथों द्वारा जगाए जाने पर वह क्षण मात्र के लिए ही जागे और मुख से बोले कि तुम निर्भय हो जाओ मैं तुम्हारी सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण करूँगा। तब उन मुस्कराते हुए विष्णुजी से ऐसे वचन सुनकर रजोगुण से विरोध मानकर मैंने उन जनार्दन से कहाकि—हे निष्पाप ! क्या तुम नहीं जानते कि मैं सबके संहार का कारण हूं मैं साक्षात् जगत का कर्ता प्रकृति का प्रवर्तक समातन आद्य ब्रह्म और विष्णु से उत्पन्न होने वाला और विश्व की आत्मा हूं। वेद मुझे स्वयम्भू स्वराट परमेष्ठी और श्रेष्ठ कहते हैं हे नारद जब मैंने ऐसा कहा तो रमापति भगवान मुझ पर क्रुद्ध हुए और कहने लगे कि अवश्य तुम लोकर्ता हो, मैं जानता हूँ, परन्तु तुम मेरे ही अविनाशी अँग से उत्पन्न हुए हो। कया अब तुम निर्दोष नारायण जगन्नाथ को भूल गये ? निसन्देह तुम मेरे नाभि से तो उत्पन्न हुए हो। चतुर्मुख देवों का ईश्वर मैं ही हूं। मैं ही सबका कर्ता हर्ता भरता और व्यापक हूं मैं ही अद्वितीय परब्रह्म पितामह और परमतत्व हूँ। तुम मेरी शरण आओ। मैं तुम्हारी रक्षा करूंगा। भगवान विष्णु ने ऐसा कहा तब मैं क्रुद्ध होकर बोला कि तुम कौन हो ? बहुत बकवाद न करो। तुम परब्रह्म ईश्वर नहीं हो। तुम्हारा भी कोई कर्ता होगा। और मैंने हरि से युद्ध आरम्भ कर दिया। तब मेरे और उनके बीच में लिङ्ग प्रकट हुआ। हम दोनों ने उस देव को नमस्कार कर अपना युद्ध बन्द किया और प्रार्थना की कि हे महाप्रभो ! आप शीघ्र ही हमें अपने बास्तविक रूप का दर्शन दें।

* आठवाँ अध्याय *

(प्रवण बाख्या)

ब्रह्माजी बोले—मुनिश्रेष्ठ ! जब हम दोनों का गर्व नष्ट हो गया तब सबके प्रभु, श्रीशिवजी ने गम्भीर वाणी सुनाई कि हे देवताओ ! ॐ ॐ

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

तब उस महानद को सुनाकर मैंने सोचा कि यह क्या है? उसी समय देवों के आराध्य विष्णु जी ने उस लिंग के दक्षिण भाग में सनातन आद्यवर्ण आकार को और उसके उत्तर भाग में उकार को देखा फिर मकार का मध्य में और अन्त में ॐ को देखा जो सभी सूर्य और चन्द्र मण्डल की भाँति स्थित थे और जिनके आदि अन्त और मध्य का कुछ भी पता न था तथा सत्य आनन्द और अमृत स्वरूप परब्रह्म परायण ही दृष्टिगोचर होरहा था। परन्तु यह कहाँ प्रकट हुआ है, इस अग्नि सदृश की हम परीक्षा करें और इसके नीचे की ओर जाकर देखें। हम उस वेद शब्द से उभय वेश वाले विश्वात्मना विचार कर ही रहे थे। कि उसी समय वहाँ एक परम ऋषि का अविभार्व हो गया। विष्णुजी ने उस ऋषि से पूछा समझकर एक एक ब्रह्म शरीरी शिवजीका ज्ञान प्राप्त किया कि जो अचिन्तनीय, वाणी अप्राप्त, मनका गम नहीं और केवल एक अक्षर ओंकार से जाना जा सकता है। वही एक क्षर रूप ऋत (सत्य) परम कारण, सत्य, आकन्द, अमृत, परत्पर और पर ब्रह्म है। उसी एकक्षर अकार से भगवान् बीजस्वरूप, अंड से उत्पन्न ब्रह्माजी हैं ओर उसी एकाक्षर आकार से हरि परम परत कारण हैं। फिर उसी मकार से नील मोहित महादेवजी हैं। परन्तु सबका दृष्टिकर्त्ता और ही है।

उकार मोहन करने वाला है और मकार तो नित्य ही अनुगृह कर्ता है मकार बिभु और बीजी है एवं आकार बीज है। ऐसे ही उकार रूप प्रधान पुरुष ईश्वर हरियोनि अर्थात् कारण है और बीजी बाज और योनि यह नारद संज्ञा वाले महेश्वर ही हैं। इन्हीं प्रभु बीजी के लिंग से आकार जो उकार रूप योनि में गिराकर चारों ओर बढ़ने लगा उसने सोने का अवेद्य अर्थात् न जानने योग्य और अलक्षण अर्थात् यक्षण से रहित एक अड उत्पन्न हुआ जो बहुत वर्षों तक जल में स्थित रहा और हजार वर्ष के बाद भगवान ने इसके दो भाग किये। जब जल में स्थित इस अंड को ईश्वर ने व्याघात कर दो भाग किया तब इसका सुवर्णमय

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

एक कपाल ऊपर स्थिर हुआ जिससे भु अर्थात् स्वर्गलोक प्रकट हुआ और कपाल के नीचे के भाग से पांच तत्वों वाली पृथ्वी प्रकट हुई। फिर उस अड से हकार नामक चार भुजावाले भव अर्थात् शंकर प्रकट हुएजो सब लोको के रचयता और वही तीन रूप धारी प्रभु। इसी कारण यजु-र्वेदीय इनको 'ॐ ॐ' ऐसा कहते हैं। यजु वचन सुन ऋक् और सामने भी सादर 'हे हरे हे ब्रह्मन कहा। तव इस प्रकार इन देवेश को यथा योग्य जानकर सबने उत्पन्न मन्त्रों से महादेवकी स्तुति करना आरम्भ किया और उसी समय से विश्व के पालक भगवान बिष्णु मेरे साथही उस एक सुन्दर रूप को देखने लगे जिसके पांच मुख दश भुजा कपूरके समान गौर वर्ण परम कान्तिमान अनेक भूषणों से भूषित महान उदार महाबीर्यवान और महापुरुषों के लक्षणों से युक्त थे और जिन्हें देखकर हरि कृतार्थ हो गये। तव तक परमेश्वर महेश भगवान प्रसन्न होकर अपने दिव्य शब्दमय रूप से स्थित हो गये जिन अगुण गुणात्मा का शब्दमय रूप देखकर मैं भी बहुत प्रसन्न हुआ। फिर हम दोनों ने उन्हें नमस्कार किया। तदनन्तर उन्हीं से सुन्दर अड़तीस अक्षरों वाला वह मन्त्र प्रकट हुआ कि उसे गायत्री चारों कालों में उत्तम और पञ्चशित ॐ नमः आठ कलाओं से युक्त हैं जिससे अभिचार अर्थात मरण आदि कर्म होते हैं और जिसकी उत्पत्ति श्वेत और शान्तिदायक तथा संहार का भी कारण है। सबमें अक्षरों की भिन्न भिन्न न्यूनाधिक क्रम सहार का है। इस श्रेष्ठ मन्त्र के कुल इकसट वर्ण हैं मृत्युञ्जय मन्त्र है ॐ जूं सः' अथवा त्यम्बक यजामहे इत्यादि कहा जाता है। इसके साथ ही पञ्चाक्षर मन्त्र है जिसमें केवल 'नमः शिवाय' मन्त्र और 'दम्यो चिन्ता मणि मन्त्र और दक्षिणा मूर्ति मन्त्र उत्पन्न हुआ पश्चात शिवका महावाक्य तत्वमसि नामक मन्त्र हुआ और इन पाँचों मन्त्रों को विष्णुजी ने ग्रहण कर जपना आरम्भ किया फिर ऋक, यजु, साम सहित मैंने और विष्णु ने उन वरदायक ताम्र शिव ईश्वर की प्रसन्नचित से स्तुति करना आरम्भ किया।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* नवां अध्याय *

(ब्रह्मा विष्णु को उपदेश)

ब्रह्माजी बोले–विष्णु की स्तुति से प्रसन्न हो महेश्वर प्रकट होगये। उसके पाँच मुख, तीन नेत्र थे और जिनके ललाट पर चन्द्रमा, शिर पर जटा विराजमान थी तथा जो गोर वर्ण, विशाल नेत्र, सर्वाङ्ग भस्म लपेटे दश भुजा वाले, नीलकण्ठ, सब भूषणों से भूषित, सर्वाङ्ग सुन्दर, मस्तक पर भस्मका त्रिपुण्ड लगाये हुये थे। महेशने अपनी श्वास से मुझ और विष्णुजीके लिये वेदों का ज्ञान दे दिया। फिर विष्णु ने पूछा कि हे देव! आप किस प्रकार प्रसन्न होते हैं तथा किस प्रकार मैं आपकी पूजा और ध्यान करूं। बोले कि हे श्रेष्ठ देवो मैं तुम दोनों की भक्ति से मेरा लिङ्ग सदा पूज्य है जैसे मैं इस समय लिङ्गरूप से पूजित हुआ और तुम लोगों का दुःख दूर हुआ इसी प्रकार दुःखी प्राणी मुझे लिङ्गरूप से पूजकर अपना दुःख दूर कर सकते हैं। मैं अनेक प्रकार के फलों और मनोरथों को देने वाला हूं। तुम दोनों ही मेरे दाँये—बाँये अङ्ग से उत्पन्न हुए। ब्रह्मा दायें से और तुम बायें से उत्पन्न हुए हो। मैं तुम दोनों पर प्रसन्न हूं। अब तुम मेरी पार्थिव मूर्ति बनाकर मेरी सेवा करो अब मेरी आज्ञा है। कि तुम और ब्रह्मा चराचर का पालन करो। तुमने जो मेरी बहुत स्तुति की और युद्ध के समय जो रक्षा के हेतु ब्रह्माजी ने मेरी स्तुति की मैं उसे सत्य करूंगा तुम्हारे अंग से जो मेरा रूप प्रकट होगा वह रुद्र कहलायेगा और मेरा अंश होने से सामर्थ्य में वह न्यून होगा। मेरा वही शिव रूप जैसा है वैसा ही रुद्र रूप होगा। शिव और रुद्र में कभी भी भेद नहीं समझना चाहिये मैं आप ब्रह्मा और रुद्र सब एक ही हैं। इनमें जो भेद मानेगा। हे ब्रह्मन! सुनो तुम दोनों प्रकृति से अपनी इच्छा से ही ब्रह्मा की भौंहों से उत्पन्न हुये हो परन्तु मैं सनातन शिवरूप मूल भूत सत्य ज्ञान और अनन्त ही हूँ। इन तत्वों में जान कर सर्वदा मनसे मेरा ध्यान करना

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

योग्य है कब सृष्टि के कर्त्ता बनो और हरि भगवान सृष्टि के पालक बनें और यह जो मेरा अंश रुद्र का यह लय करने वाला होगा तथा यह जो उमा नाम वाली परमेश्वरी प्रकृति देवी है उसी की शक्ति वाग्देवी अर्थात सरस्वती ब्रह्मा की अर्द्धाङ्गिनी होगी और एक जो दूसरी शक्ति प्रकृति से उत्पन्न होगी वह लक्ष्मी रूप से सर्वदा विष्णु के आश्रम में रहेगी और वही कभी काली नाम से मेरे अंश को प्राप्त होगी।

* दशवाँ अध्याय *

(ब्रह्मा विष्णु और रुद्रों की आयु)

महादेवजी बोले–विष्णु ? तुम सर्वदा सब लोकों में पूज्य और मान्य होओगे। ब्रह्मा के बनाये लोकों में कभी दुःख उत्पन्न होगा तो तुम्ही उसे नष्ट करने को तत्पर होगे। तुम अनेकों अवतार धारण कर जीवों का कल्याण कर अपनी कीर्ति का विस्तार करोगे। हे नारद ऐसा ऐसा कहकर मुझ ब्रह्म का हाथ विष्णु के हाथ में धरकर शिवजी ने कहा कि तुम सर्वदा इसके दुःख में सहायता करना इस तीनों देवताओं की आयुर्बल को सुनो। चार हजार युग का ब्रह्मा का दिन होता है और उसी और इसी क्रम से रात भी जाननी चाहिये। तीस दिन का एक महिना और बारह महिने का एक वर्ष इस–प्रकार के वर्ष–प्रदाण से ब्रह्म की सौ वर्ष की आयु होती है और ब्रह्माजी का एक वर्ष विष्णुजी का एक दिन वह भी इसी प्रकार के प्रमाण से सौ वर्ष जीवेंगे तथा विष्णु का एक वर्ष रुद्र के एक दिन के बराबर हो और इसी क्रम से वह भी सौ वर्ष स्थित रहेंगे। तब ऐसा शिव के मुख से एक श्वास उत्पन्न होता है जिसमेंउनके इक्कीस हजार और छः सौ दिन रात होते हैं। उनके छः उच्छबास और निश्वास का एक पल, आठ पल की एक घड़ी और साठ घड़ी का एक दिन होता है शिव के उच्छवास—निश्वास अर्थात भीतर-बाहर श्वास लेने की संख्या नहीं है। इसी कारण शिव का उत्थान अक्षय है। अतः तुम मेरी आज्ञा से मेरे रूप की रक्षा करते हुए अनेक प्रकार के

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

गुणों से सृष्टि का कार्य करो। ब्रह्माजी कहते हैं कि जब शिवजी ने ऐसा कहा तब उनके वचनों को सुनकर विष्णुजी ने विश्वेश को प्रणाम कर कहा कि कृपा सिन्धो! मैं आपकी सब आज्ञाओं को सर्वदा के लिये शिरोधार्य करता हूँ शिवजी अपना मङ्गलमय हाथ विष्णुजी के सर्वाङ्ग पर फेरकर अन्तर्ध्यान होगये। उसी समय से इस लोक में लिङ्ग पूजा की विधि चली।

* ग्यारहवां अध्याय *

(शिव पूजन)

ऋषि बोले-सूतजी! अब आप ब्रह्मा और नारदजी के संवाद के माध्यम से शिव पूजनकी विधि बतलाइये कि जिसके करने से शिवजी प्रसन्न होंवे। ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चारों वर्णों को शिवजी की पूजा का अधिकार है उसका क्या क्रम है? सूतजी बोले-मुनिश्वर! जैसा आपने पूछा है ऐसा ही पहले श्री व्यासजी ने सनत्कुमार से पूछा था और जिस उपमन्यु ने सुना था। उसी को फिर व्यासजी ने मुझे पढ़ाया और उपमन्युने श्री कृष्ण से सुना। तब जिसे सबसे पहले ब्रह्माजी ने कहा है वही सब मैं ब्रह्मा-नारद संवादके रूप में आपसे कहता हूं। ब्रह्माजी बोले-नारद! अब मैं तुम्हें लिङ्ग पूजन संक्षेप में कहता हूँ, प्रातः ब्रह्म मुहूर्त से उठकर गुरुदेव और शिवजी का स्मरण करता हुआ सब तीर्थों का स्मरण करे और हरि का ध्यान करे। साथ ही मेरा और देवताओं तथा मुनियों का भी ध्यान करे। फिर शिव स्तोत्र का पाठ करे और तब उठकर मल त्याग को दक्षिण दिशा को जावे। वहाँ एकान्त में मल त्याग करे और ब्राह्मण हो तो शुद्धि के लिये पाँच बार हाथ धोवे, क्षत्रिय चार बार, वैश्य तीन बार और शूद्र दो बार हाथ धोवे। गुदा और लिंग में एक बार, बायें हाथ में दस बार फिर दोनों हाथों में सात बार मिट्टी लगावे। इसी प्रकार दोनों पैरों में तीन बार लगाकर फिर तीन बार हाथ में लगावे। स्त्रियों को शूद्र की भाँति मिट्टी लेकर हाथ-पैर धोना चाहिये। दतौन

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

के लिये ब्राह्मण बारह अंगुल की, क्षत्रिय ग्यारह अंगुल की, वैश्य और शूद्र नौ अंगुल की, दतौन करे। सृष्टी, अमावश, नौमी और व्रत के दिन, रविवार को संध्या के समय और श्राद्ध के दिन दतौन न करे। फिर एकांत और उत्तम स्थान में सन्ध्या करे। फिर सविधि शिवजी को पूजे। पहिले गणेशजी का पूजन कर लेवे तदनन्तर शिवजी की स्थापना करे। तीन बार आचमन कर तीन प्राणायाम करे जिसमें मध्यमें शिवजी का ध्यान करे। जिनके पाँच मुख, दश भुजायें, सब भूषणों से युक्त और जो बाघम्बर ओढ़े हुए हैं। फिर प्रणव मन्त्र अर्थात् ओंकार से ही षडन्यास कर शिवजी की पूजा आरम्भ करे। जिसकी ओर बहुत सी विधियाँ गुरुदेव से प्राप्त कर लेवे। फिर शिवजी पर सहस्र जलधारा वेद मन्त्रों द्वारा चढ़ावे। फिर शिवजी के ऊपर चंदन ओर पुष्पादि चढ़ावे। और प्रणव बनके और सुगन्धि की सामग्री रख देवे। फिर नाना प्रकार के वेद मन्त्रों से उनकी स्तुति करते हुये उन्हें नमस्कार करे। फिर अर्घदेकर शिवजी के चरणों में पुष्प बिखेर देवे। फिर देवेश को प्रणाम कर आत्मा से शिवजी की आराधना करे प्रार्थना करते समय हाथ में पुष्प लेकर उनके सामने खड़ा होवे और कहे कि शङ्करजी! मैंने ज्ञान से अथवा अज्ञान से आपकी जो कुछ भी सेवा की है वह सफल होवे, हर्षित होकर शिवजी के ऊपर पुष्प चढ़ावे और स्वस्ति वचन कह अनेक प्रकार के आशीर्वाद ग्रहण करे। फिर शिवजी के ऊपर पूजा की चढ़ाई सब सामिग्री हटाकर नमस्कार करे और अपराध क्षमा के लिये फिर आचमन करावे। फिर अघोर मन्त्र से शिवजी की प्रार्थना करे।

* बारहवां अध्याय *

(देवताओं को उपदेश)

ब्रह्माजी बोले-एक समय मैंने सब ऋषियों को साथ लेकर क्षीरसागर के तट पर भगवान् विष्णु की बड़ी स्तुति की तो प्रसन्न होकर बोले-ब्रह्मादि देवताओ! तुम क्यों आये हो? तुम्हारा क्या कार्य है, मुझसे

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

कहा। ब्रह्माजी बोले-महाराज ? दुःखों को दूर करने वाली सेवा किस की करनी चाहिये ? तब विष्णु भगवान् बोले-ब्रह्मन् ? सुनो। भगवान् शङ्कर ही सब दुखों के दूरकर्त्ता और परमसेव्य हैं। सुख चाहने वालों को कभी भी शिवजी की पूजा नहीं छोड़नी चाहिये। जैसे भी हो, लिङ्ग की पूजा करे। सकाम शिवार्चन करना ही योग्य है। ब्रह्माजी कहते हैं कि जब इस प्रकार विष्णु ने कहा तो देवताओं ने उन हरि को प्रणाम किया और सब कर्मों की सिद्धि के लिये लिङ्गों की प्रार्थना की। तब भगवान् ने विश्वकर्मा को बुलाकर कहा कि, हे मुनि ? मैं तो जीवों के उद्धार में लगा हुआ हूं, तुम मेरी आज्ञा से देवताओं के लिये शिवलिंगों की कल्पना करो। ब्रह्माजी बोले कि तब विश्वकर्माने हरि की आज्ञा से देवताओं के लिये लिङ्गों की कल्पना कर उन्हें वे लिङ्ग प्रदान किये। पद्मराग मणि का लिङ्ग इन्द्र को, सुवर्ण का कुवेर को, पीतामणि का धर्मराज को, श्यामवर्ण का वरुण को, इन्द्रनीलमणि का विष्णु को और सुवर्ण मय लिंग ब्रह्माजी को, और चाँदी का विश्वे देवा यौ वसुओं को बनाकर दिया। पीतल का अश्विनी कुमारों को. स्फटिक का लक्ष्मी को, ताम्बे का आदित्यो को, मोती का चन्द्रमा को और वजलिङ्ग ब्राह्मणों को दिया। फिर ब्राह्मणों की स्त्रियों को मिट्टी का, नागों को चन्दन का मक्खन का देवी को, भस्म का योगी को, वधिका यज्ञों को और मिट्टी का छाया को दिया।

* तेरहवाँ अध्याय *

(शिव पूजन विधि)

ब्रह्माजी बोले-नारद ? ब्रह्म मुहूर्त में उठकर पार्वती सहित शिव जी का स्मरण करे और भक्ति-पूर्वक हाथ जोड़कर उन्हें शिर झुकावे तथा इस प्रकार प्रार्थना करे कि, हे देवेश ? अब आप उठिये और ब्रह्मण्ड का मङ्गल कीजिये। गुरु के चरणों का स्मरण का शौचादि क्रिया से निवृत्त हो मिट्टी और जल से देह को शुद्ध कर दतौन करे सूर्य के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

निकलने से पहले दतौन करके जलसे सोलह बार कुल्ला करे, तथा षष्टी आदि यम की तिथि और नौमी को रविवार हो तो इन दिनों में दातौन न करे नदी अथवा घर में यथा समय स्नान करे। देश काल के अनुसार स्नान करे। रविवार, श्रद्धा, संक्रान्ति तथा ग्रहण, महादान तीर्थ तथा गरम जल से स्नान न करे और क्रम से वारों को देखकर ही तेल लगावे। और ऋषियों और पितरों की प्रसन्नता के लिए तर्पण करे और धुला हुआ वस्त्र धारण करे। मृग चर्मादि पर आसन लगा त्रिपुण्ड लगावे। भस्म के अभाव में जल से ही त्रिपुण्ड लगा लेना चाहिये रुद्राक्ष धारण करे। शिवजी की आराधना करे। फिर मन्त्र पूर्वक तीन वार आचमन करे फिर गुरु से सीखे हुए विधान से यथाशक्ति सब पूजन सामग्रियों के समीप स्थापित करे और धीरता पूर्वक जल, गन्ध, अक्षत से युक्त एक अर्घ्यपात्र लेक विघ्ननाशक शिवजी की पूजा करे। फिर द्वार पर स्थित मपोदर नामक द्वारपाल की पूजा करे। पश्चात् और उन पर चन्दन कुंकुम और अनेक प्रकार के धूप दीपों से उनकी और नाना प्रकार के नैवेद्यों से शिवजी की पूजा करे। फिर धीरे-धीरे शिवकी परिक्रमा करे। फिर साष्टाङ्ग दण्डवत् कर इस मन्त्र से भक्ति पूर्वक पुष्पाञ्जलि अर्पित करे और कहे कि शिवजी ? मैंने ज्ञान से अथवा अज्ञान से आपकी जो कुछ भी पूजा की है, वह सब आपकी कृपा से सफल होवे। गौरीश ! भूतनाथ ! मुझ पर प्रसन्न होइये। मैं आप की शरण हूं ऐसा कह कर पुष्पाञ्जलि अर्पित करे, हे प्रभो ! अब आप अपने परिवार के सहित अपने स्थान को जाइये और हे नाथ ? मेरी पूजा के समय आप इसी स्थान पर आ जाइयेगा।

* चौदहवां अध्याय *

(पुष्पों द्वारा शिवपूजन फल)

ऋषियों ने पूछा—महाभाग ! अब आप यह बतलाइये कि शिवजी की किन—किन फूलों से पूजा की जावे और उनके क्या

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

फल हैं ? सूतजी बोले-ऋषियो यही प्रश्न नारदजी ने ब्रह्माजी से किया था और उन्होंने निर्णय दिया था। ब्रह्माजी ने कहा कि, कमल पत्र, बेलपत्र शतपत्र तथा शँख पुष्प से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। बीस कमल एक प्रस्थ और एक सहस्र वेलपत्रों का आधा प्रस्थ होता है सोलह पल का एक प्रस्थ और दश टंक का एक पल होता है। इस तौल के अनुसार इतना तराजू पर चढ़ाकर सकाम पूजे तो सब कामनाओं की प्राप्ति होती है और यदि निष्काम पूजे तो वह शिव रूप हो जावे। यदि कोई दश करोड़ पार्थिव लिंग की पूजा करे वह राज्य का इच्छुक राज्य पा सकता है मुनिश्वरो ! शिवको सन्तुष्ट करने के लिए शिवलिङ्ग पर फूल, चावल और चन्दनादि सहित अखण्ड जल की धारा चढ़ाकर उनकी पूजा करे। प्रत्येक रूप में प्रति मन्त्र से एक वेल पत्र अथवा शत-पत्र या कमल चढ़ावे। प्राचीन लोगों ने शंख पुष्पों से विशेष रीतिसे पूजा करने को कहा है फिर धूप, दीप नैवेद्य तथा आरती, प्रदक्षणा और नमष्कार कर क्षमा-विसर्जन करे अपनी प्रधानता के लिये इसकी आधी पूजा, और इससे आधी पूजा मुक्ति के लिये अर्थात् कारागार से मुक्त होने के लिये करता रहे। रोग से मुक्त होने के लिये पचास कमल पुष्प कन्या की इच्छा वाला पच्चीस हजार कमल पुष्प से विद्या के लिए घृत से, उच्चाटन के लिए उतने ही परिमाण से, मारण एक लक्ष से मोहन में उससे आधा से, राजा से बशीकार के लिए दश लाख फूलोंसे पूजा करे और इतना ही जप करे। यश के लिये भी इतना ही ज्ञान के लिये एक करोड़ और शिव दर्शन के लिये इसके आधे से पूजन करे तथा कार्य फल की सिद्धि के लिये मृत्युञ्जय का जप करे जिसमें पांच लाख जप तो शिवजी प्रसन्क हो जावेंगे। एक लाख की संख्या तो सर्वत्र जाने। आयु का इच्छुन एक लाख धतूरे के फलों से जिसकी दण्डी मुलायम हो लाकर शिवजी को पूजे तो भक्ति-मुक्ति प्राप्त होवे। प्रताप के लिए आक के फूल चढ़ावे। जवा-पुष्प से पूजे तो शत्रु का नाश हो और कनेर पुष्प से पूजे तो रोग दूर हों वस्त्र सम्पत्तिकी कमी न रहे। हार सिङ्गार

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

के फूल से पूजे तो सुख सम्पत्ति बढ़े। राई के फूलों से पूजे तो शत्रु की मृत्यु होवे और यदि इसके एक लाख फूल चढ़ा देवे तो बड़ा फल प्राप्त होता है। चम्पा और केतकी छोड़कर सब फूल शिवजी पर चढ़ सकते हैं।

अब चावलों के चढ़ाने का प्रमाण और फल सुनो। चावलों को चढ़ाने से लक्ष्मी की वृद्धि होती है। किन्तु चावल अखंडित होवे और विधि पूर्वक भली भाँति से चढ़ावे। इसकी भी एक लाख संख्या हो या छः प्रस्थ या दो पल होवे। चावल द्वारा प्रधानतः रुद्र को पूजे और उस पर एक सुन्दर वस्त्र शिवजी के ऊपर चढ़ाने का यही सुन्दर विधान है। फिर उसके ऊपर एक श्रीफल, गन्ध और पुष्पादि सहित चढ़ावे। फिर धूप दीपादि दो रुपया माशे की संख्या से दक्षिणा देवे इस प्रकार सब अङ्ग सहित मन्त्र पूर्वक शिवजी की एक लक्ष पूजा हो जावे तो बारह ब्राह्मणों को भोजन करावे। एक लाख पल तिल चढ़ावे तो महानाश होवे ग्यारह पल तिल के बराबर होता है। हितकामना के लिए पूर्ववत् पूजन करे और ब्राह्मणों को भोजन करावे। ऐसा करने से बड़े से बड़े पातक से उत्पन्न दुखोंका शीघ्र ही नाश हो जाता है। एक एक लाख या आठ प्रस्थ जो चढ़ावे तो स्वर्ग और सुख की बृद्धि होवे। ज्वर-प्रलप की शान्ति के लिये केवल जल की धारा मङ्गल देती है इसमें शत रुद्रिय मन्त्र, एकादश रुद्र मन्त्र, रुद्र जप, रुद्रसूक्त, षडङ्ग महामृत्युञ्जय और गायत्री अन्त में नमः लगाकर नमों से अथवा प्रवण से अर्थात् ॐ मन्त्र तथा दूसरे शास्त्रोक्त मन्त्र से जल की धारा करे। धारापूजन सुभ सन्तान वर्द्धक है। यदि अपने घर में नित्य कलह होता होवे तो शिवजी पर जल की धारा करे। यदि शत्रु को तपाना हो तो शिवजी पर तेल की धार चढ़ावे। मधु से शिवजी को पूजे तो यज्ञ राजा हो जावे। ईख के रस से पूजे तो आनन्द मङ्गल हो। यदि गङ्गाजी के जल की धार देवे तो भुक्ति-मुक्ति प्राप्त होवे। इसकी दश हजार संख्या का विधान है। ग्यारह ब्राह्मणों को भोजन करावे। स्कन्ध और उमा सहित शिवजी की

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

सविधि पूजन करता है वह पुत्र पौत्रादिकों के साथ सम्पूर्ण सुखों को भोगकर अन्त में शिव लोक का भागी होता है।

* पन्द्रहवाँ अध्याय *

(कैलाश और वैकुण्ठादि की उत्पत्ति)

नारदजी बोले–ब्रह्माजी ! अनन्तर और भी जो चरित्र और सृष्टि का प्रकार सुनाने की कृपा कीजिये। ब्रह्माजी बोले–जब सनातन शिव जी अन्तर्ध्यान हो गये तब मैं और विष्णुजी अत्यन्त सुख को प्राप्त हुये। मैंने हंसका और विष्णुजी ने बारह का रूप धारण कर सृष्टि के लिये लोगों के रचने का विचार किया। नारदजीने पूछाकि आप दोनों ने रूपों को छोड़ वाराह का रूप क्यों धारण किया ? ब्रह्माजी बोले-हंसकी ऊपर जाने की गति निश्चल होती है और तत्व अतत्व के विभागमें उसे क्षीर-नीर जैसी ज्ञान करने को बुद्धि होती है। हंस ज्ञान और अज्ञान ज्ञान के तत्व का निर्णय करने में समर्थ है। इसी कारण मैंने हंस का रूप धारण किया और बाराह का रूप धारण किया। इस रूप द्वारा इसी कारण विष्णुजी ने बाराह का रूप धारण किया। इस रूप द्वारा विष्णुजी ने भव-कल्प रचना चाहा, उसी दिन से यह बाराह कल्प कहलाया। अब सृष्टि की रचना विधि को सुनो। जब शिवजी अन्तर्धान हो गये, तब मुझे और विष्णुजी के ज्ञान को प्राप्त हुआ। मेरा मन सृष्टि करने में लग गया। विष्णुजी अन्तर्धान हो गये। तब जो मैंने सृष्टि की कामना से शिव और बिष्णु का स्मरण कर पहले जल का निर्माण किया था उस जाल में एक अञ्जलि जल डालकर चौवीस तत्वों वाला एक अंड प्रकट किया जो विराट हो गया। उसके विराट होने से मुझे बड़ा संशय हुआ और उसके लिये मैंने बारह वर्ष का एक कठिन तप किया। इस तप में मैंने केवल विष्णु का ध्यान किया। तब विष्णुजी प्रकट होकर मेरे अंशों को स्पर्श करते हुए बोले कि, हे ब्रह्मा ! मैं तुम पर प्रसन्न हूं। जो चाहो मुझ से वर मागो। मैंने कहा, शिवजी ने मुझे आपके ही आश्रित किया है यह जो चौबीस

CC-0. ASI Srinagar. Digitized by eGangotri

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

महादेव जी हँसने लगे और बोले कि नहीं। मैं ऐसी अशोभन सृष्टी करूंगा कि जो कर्म वश दुःखके सागर में पड़े। मैं तो दुःखियों का उद्धारक हूँ और उनको अच्छी तरह गुरु मूर्तिके द्वारा ज्ञान प्राप्त करता हूं। अतः दुःखरूप वाली प्रजा का निर्माण आपही कीजिये। मेरी आज्ञासे तुम्हें माया की बाधा न होगी। ऐसा कहते हुये नीललोहित भगवान, शङ्कर अन्तर्ध्यान हो गये।

* सोलहवाँ अध्याय *

(सृष्टि की उत्पत्ती)

ब्रह्माजी बोले—शब्दादि पञ्चभूतों द्वारा पञ्चकरण करके उनके स्थूल आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी, पर्वत समुद्र, वृक्षादिक और कलादिक से युग पर्यन्त कालोंकी भी मैंने रचना की तथा और भी सृष्टि के बहुत से पदार्थों को मैंने रचा। परन्तु जब इससे भी मुझे संतोष नहीं हुआ तो मैंने अम्बा सहित्त शिवजी का ध्यानकर सृष्टिके अन्य पदार्थों की रचना की और अपने नेत्रों से मरीच को, हृदयसे भृगु को, शिर से अंगिरा को और कान से मुनि श्रेष्ट कुलह को उदान से पुलसत्य को, समान से वशिष्ट को, अपान से क्रतु को कानों से अत्रि को, प्राण से दक्षको और गोदीसे तुम नारद को और अपनी छायासे कर्दम मुकि को उत्पन्न किया। साथही सब साधनाओं काभी साधन धर्म कोभी मैंने अपने संकल्प से उत्पन्न किया। तब मैं कृतार्थ हुआ। फिर मैंनेअपना दो रूप किया। मैं आधे से नारी और आधेसेपुरुष हुआ जिसमें परम साधक पुरुष स्वायम्भुव मनु और शतरूपा थाम वाली योगिनएवंतपस्वनी वह नारी हुई कि जिस परम सुन्दरीको ग्रहणकर मनुने विवाह की विधि से मैथुन द्वारा सृष्टि को उत्पन्न किया। तब उसने मनुजी प्रियव्रत और उत्तानपाद नामक दो पुत्र तथा अकूति, देवहूति और प्रसूति नामक तीन कन्यायें उत्पन्न की और आकुतिको रुचि नामक मुनिको और देवहूतिको कर्दम मुनिको दिया तथा उत्तानपाद की छोटी बहन प्रसूति को दक्ष प्रजापति को दिया जिसकी संतानोंसे चराचर जगत भर गया। फिर

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

तत्वों वाला अण्ड विराट हो गया है और इसमें चेतना नहीं दिखाई देती है इसको आप चैतन्य कर दीजिये। तब विष्णुजी अनन्त रूपों से उस अड में प्रवेश कर गये। फिर तो उस अंड से सहस्र चरण सहित अवयव निकल कर पृथ्वी को चारों ओर से घेर लिया। विष्णु जी सातों लोकों के अधपति हो गये। शिवजी ने उन्हें अपने कैलाश के ऊपर स्थान दिया। कैलाश वह स्थान है जिसका कभी भी नाश नहीं होता। सुतरां मैं सृष्टि रखने लगा। तब पहले पाप की सृष्टि उत्पन्न हुई जिसमें अविद्या और तमकी प्रधानता थी। उससे मैंने स्थावरों की रचना की। फिर मैं मुख्य सृष्टि की रचना के लिए शिव जी का ध्यान करने लगा। तब तिरछे चलने वाले जीव प्रकट हुए। इनसे भी मुझे सन्तोष न हुआ। तब मैंने सात्विकी सृष्टि की। परन्तु इससे भी कार्य साधन नहीं हुआ, अतः मैंने शिवजी की आज्ञा से रजोगुण वाली मनुष्यों की सृष्टि की। इस प्रकार की सृष्टि हो गई तब मैंने सर्गों की रचना का विचार किया महत्सर्ग सूक्ष्म भौतिक सर्ग और तीसरा वैकारिक सर्ग उत्पन्न हुआ। फिर वैकारिक सर्ग से प्राकृतिक सृष्टि आठ प्रकार की हुई और जब ऐसी प्रकृति हुई तब नवाँ कुमार सर्ग हुआ जिसका वर्णन कठिन है। फिर उपयोगी द्विजत्मक सर्ग हुआ जिसमें सनकादिकों का महान कौमार सर्ग हुआ। ये वे सनकादिक मेरे ऐसे मानस पुत्र हुये कि जिनमें महान वैराग्य सम्पन्न था। जब मैंने उनसे सृष्टि रचने को कहा तो मेरे नेत्रों से आंसू की बूंदें टपकने लगी। तब विष्णुजी ने आकर मुझे समझाया कि शिवजी का तप करो शिवजी का तप करो। मैंने बड़ा तप किया। तब मेरे भौंह और नासिका मध्य से त्रिमूर्ति अर्द्ध नारीश्वर महेश्वर, अपने पूर्ण अंशसे सबके ईश्वर अजन्मा, तेजकी राशि, साक्षात, उनाके पति, सर्वज्ञ सबके कर्त्ता, नील लोहित नाम वाले शिवजी प्रकट हुये। उन्हें देखकर मैं प्रसन्न हुआ और कहा कि, हे देव। अब आप जन्म मरण वाली प्रजाओं की रचना कीजिये। इस पर करुणानिधि महादेवजी आकृति में रुचि

CC-0. ASI Srinagar Circle. Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

द्वारा दक्षिणा युक्त यज्ञ और यज्ञके वक्षिणामें बारह पुत्र उत्पन्न हुए। फिर देवहूति में कर्दम मुनिसे बहुत पुत्र उत्पन्न हुये और इधर दक्ष के चौबिस कन्यायें उत्पन्न हुई जिसमें से दक्षने श्रद्धा-आदिक तेरह कन्याओंको धर्मको दिया जिसके नाम ये हैं—श्रद्धा, लक्ष्मी, धृति, तुष्टि, पुष्टि मेधा, क्रिया बुद्धि लज्जा, वसु, शान्ति, सिद्ध और कीर्ति। फिर इनसे छोटी ग्यारह कन्याओं ख्याति, सत्पूथ, संमूति, स्मृति, प्रीति, क्षमा, सन्नति, अनुरूपा, उर्जा, स्वाहा और स्वाधा को क्रमशः भृगु भव, मरीचि, अङ्गिरा मुनि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, अत्रि, वशिष्ठ वहिन और पितर इनको दिया जिनकी संतानों से त्रिलोकी भर गई। फिर तो शिव जीकी आज्ञा से प्राणियों के कर्मानुसार असंख्य जातियों की उत्पत्ति हुई और जिसमें ब्राह्मण श्रेष्ठ हुए। कल्प भेद से दक्ष के साठ कन्याओं की भी उत्पत्ति कही गई है और जिनकी संतानों से पाताल से लेकर सत्य-लोक तक यह चराचर जगत व्याप्त होगया तथा कुछ भी शून्य न रहा। इस प्रकार शिवजी की आज्ञासे ब्रह्माजी ने सृष्टि की रचना की। सदा शिव ने त्रिसूल के अग्रभाग से सती की रक्षा की, जिन्हें सर्वव्यापी विष्णुजी ने अपने प्रभाव से पहले ही निर्माण किया था और फिर जो दक्षजी से लोक कल्याण के लिये ही प्रकट हुई थी इस प्रकार शिवजी ने भक्तों के उद्धार के लिये बहुत सी लीलायें की जिनका वाम अङ्ग बैकुन्ठ और दक्षिणा अङ्ग मैं हूँ। इस प्रकार मैं, विष्णु और रुद्र यही तीन गुण इधर प्रधान हुये और उधर इसी प्रकार सत, रज और तम तीन गुणों से जिनका मैं स्वयं प्रधान हूं उसमें से रजोगुण वाली सुरा देवी तथा सतोगुण वाली सती और तमोगुण वाली लक्ष्मी प्रकट हुई। सती के परा और शिवा (उमा) ये तीन रूप हैं, जिनमें यही शिवा सती के रूप में शङ्कर के साथ व्याही गई और पिता के यज्ञ में शरीर त्याग कर नारद से अपने पद को प्राप्त हुई। फिर पार्वती होकर तप करके शिवजी को मिली जिनके कालिका, चण्डिका भद्रा, चामुण्डा, विजया, जया जयन्ती, भद्रकाली, दुर्गा भगवती, कामाख्य, कामदा,

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

अम्बा, मृड़ानी और सर्व मङ्गलादिक भुक्ति-मुक्ति दायक नाम हुए। फिर तो यह तीनों गुणमयी देवियों और गुणमय तीनों देवताओं ने मिलकर अनेकों प्रकार की उत्तम सृष्टि की।

* सत्रहवाँ अध्याय *

(पापी गण निधि)

सूतजी बोले-नारदजी ने विनय पूर्वक पूछा कि, ब्रह्माजी ! शिवजी कैलाश पर कब गये और महात्मा कुबेर के साथ उनकी मित्रता कहाँ हुई और वहाँ रहकर शिवजी ने क्या किया, ब्रह्माजी बोले नारद ! काम्पिल्य नगर में एक यज्ञदत्त ब्राह्मण था जो यज्ञविद्या में पारङ्गत था। उसके गुणानिधि नामक एक पुत्र था जिसकी आयु उस समय आठ वर्ष की थी और उसका यज्ञोपवीत हो चुका था तथा उसने भी बहुत-सी विद्यायें सीखी थी। परन्तु पिता से जीत कर वह जुआरी खेलकूद में संलग्न और गाने-बजाने वालों का साथी हो गया। माता के कहने पर भी वह पिता के समीप नहीं जाता और पिता तो घर के कार्यों और दीक्षादि में संलग्न रहा करता और जब घर आकर अपनी स्त्री से पूछता कि इस समय गुणनिधि कहां गया है तो वह कह देती कि कहीं स्नान या देवताओं के पूजन के लिये गया होगा। एक ही पुत्र-वाली होने के कारण वह माता दीक्षित को ठग लेती। निदान गृह सूत्र के अनुसार दीक्षित ने उस पुत्र का विवाह भी करा दिया। माता नित्य पुत्र को समझाती कि तुम्हारे पिता बड़े ही महात्मा और क्रोधी भी हैं, तुम अपनी बुरी आदतों को छोड़ दो। अन्यथा जब तुम्हारे इस चरित्र को जान लेंगे तो तुझको और मुझको दोनों को मारेंगे। परन्तु कहां की बात, माता के समझाने का उस पर कुछ भी प्रभाव न पड़ता। एक दिन उसने पिता के हाथ की अँगूठी को चुरा कर किसी ज्वारी के हाथ में दे दी। दवयोग से दीक्षित ने उस अंगूठी को ज्वारी के हाथ में देखा और उससे पूछा तो उसने कहा कि मैंने कोई तुम्हारी चोरी तो की नहीं है किंतु तुम्हारे पुत्र ने लाकर दिया। वह अँगूठी

CC-0. ASI Shimla. Digitized by eGangotri

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyan Kosha

ही नहीं किन्तु उसने और ज्वारियों का भी बहुत सा धन दिया है। परन्तु आश्चर्य है कि तुम जैसे पण्डित अपने पुत्र को क्यों नहीं जान सके। लज्जा के मारे दीक्षित का शिर झुक गया। वह शिर झुकाये और वस्त्र से अपना मुख ढके हुए अपने घर गया और मैं जाकर पत्नी से बोला-कि धूर्त पत्नी! भला यह तो कहो कि वह तेरा गुणानिधि पुत्र कहाँ है? वह कहीं भी हो किंतु मेरी अगूठी कहां है जिसे उबटना करते समय तूने मेरे हाथ से ले ली थी। उसने कहा मैंने कहीं रखदी है स्मरण नहीं आरहा है। दीक्षित ने कहा-सत्य है तू बड़ी सत्यवादिनी है इसी से तो जब-जब मैं पूछता था कि पुत्र कहाँ गया है तब तू मुझे अपनी बातों में बहलादिया करती थी। पत्नी से ऐसा कहते हुए यज्ञ-दत्त घरकी और चीजें ढूंढ़ने लगा। परन्तु जब एक भी चीजें न मिली क्योंकि पुत्र ने उन्हें जुये में दे डाला था तब सारा दोष अपनी पत्नी का जानकर उस ब्राह्मण ने जल लेकर पुत्र और पत्नी को तिलाँजलि दे दी और दूसरा विवाह कर लिया।

* अठारहवाँ अध्याय *

(गुणनिधि की मोक्ष)

ब्रह्माजी बोले-नारद! जब यह समाचार दीक्षित के पुत्र को मिला तो वह गृह त्याग कहीं दूर जाकर अपने भविष्य की चिन्ता करने लगा निदान भूख प्यास से पीड़ित सन्ध्या समय एक शिव मन्दिर के पास जाकर बैठ गया जहां शिवजी का पूजन सविपरिवार समस्त सामग्रियों युक्त शङ्कर की पूजा करने आया जब वह सब प्रकार की शिवजी पूजा कर चुके और घर से लाये पकवान आदि उन पर चढ़ा चुके तब भूख से पीड़ित यज्ञदत्त का पुत्र उसे कैसे ग्रहण करे इसके लिये वह मन्दिर की आड़ में छिपकर सब देखता रहा और जब वे लोग पकवानादि चढ़ाकर किंचित बिश्राम करने लगे तो उनकी आँखों में झपकी आते यज्ञदत्त-पुत्र ने धीरे से उठकर मन्दिर में प्रवेश किया और जितना कुछ भोग चढ़ा था सब लेकर चम्पत हो गया। किन्तु उसी क्षण

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

उसके पैर की धमधमाहट सुनकर वे सोये हुए लोग जाग उठे और चिल्लाते तथा दौड़ते हुए उनका पीछा किया। नगर के लोगों ने भी उसे खदेड़ा और नगर के रक्षकों ने तो उसे भागते हुए को ऐसा मारा कि क्षण भर में ही मर गया। अभी तक उसने उस नैवैद्य को खाया भी नहीं था कि इतने में यम के दूतों ने आकर उसे बाँध लिया परन्तु ज्योंहीं वे उसे ले जाना चाहते थे कि दिव्य विमान पर बैठे हुए शूलधारी शिवजी के पार्षद भी उसे लेने वहाँ आ गये और बोले कि गणो ! अब इस परम धर्मात्मा को छोड़ दो क्योंकि इसमें कोई पाप शेष नहीं रहा। यज्ञ के दूतों ने शिवजी के गणों को नमस्कार कर कहा आप नहीं जानते यह बड़ा पापी और अपने धर्म कर्म से नष्ट कुलके आचरन से हीन और अपने पिता का बड़ा शशु है। देखो इसने शिवजी का निर्माहुय भी चुराया है। तब शिवजी के किन्नर उन पार्षदों से बोले यमदूतों ! इस यज्ञदत्त के पुत्र ने जहाँ बहुत से पाप किये हैं वहां इसने पाप रहित भी कर्म किये हैं। जिनसे लिंग के शिर पर गिरती हुई दीपक की छाया का इसने निवारण किया ओर रात्रि में इसने अपना वस्त्र फाड़कर दीपक में बत्ती डाली। प्रसंग वश इसने शिवगुणों का श्रवण किया तथा ऐसे ही और धर्म कार्य किये हैं। व्रत रहकर इसने शिवजी की पूजा का दर्शन किया ! इस कारण यह हमारे साथ शिवलोक को जायेगा और कुछ दिनों तक वहाँ रहेगा। फिर पाप रहित होकर यह कलिंग देश का राजा होगा। तुम लोग प्रसन्न हो अपने लोक को जाओ। यह सुनकर जहां से आये थे अपने लोक को चले गये। सब समाचार यमदेव से कहा। यमराज ने हर्ष से उनकी वात स्वीकार की। फिर तो यमदूतों से छुड़ाया गया वह ब्राह्मण शिवगणों द्वारा शिवलोक को गया और वहाँ शिव पार्वती की सेवा से लौट कर कलिंग देश का राजा हुआ। वहाँ उसका नाम अरिन्दम पड़ा शिवजी की थोड़ी भी सेवा बहुत फल दायक हुई। यज्ञ दत्त के पुत्र गुणनिधि का चरित्र जो सुनेगा उसकी कामनायें पूर्ण होगीं

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

और उसे बड़ा सन्तोष प्राप्त होगा।

* उन्नीसवां अध्याय *

(गुणनिधि को कुबेर पद प्राप्ति)

ब्रह्माजी बोले—जब मेरा पहला कल्प हुआ था तब उसमें मेरे मानस का पुत्र पुलस्त्य से तिश्रवा का जन्म हुआ जिसके एक वैश्रवण नामक पुत्र हुआ जिसने अकालपुरी को भोगा और उग्र तप द्वारा और शङ्करजी की आराधना की। उस समय मेघवाहन कल्प आरम्भ हुआ था। तब अकालपुरी अधीश्वर के उग्रतप को देखकर शङ्करजी प्रगट होकर उसे साक्षात् दर्शन देने आये तो उसने कहा—हे शिवजी आपके तेज से मेरे नेत्र बन्द हो गये हैं, अतः अपने चरण-कमलों के दर्शन की सामर्थ्य मेरे नेत्रों को दीजिये। आपको नमस्कार है। यह यज्ञदत्त का वही पुत्र था कि जो शिवजी के साथ पार्वतीजी को देखा तो उनके प्रति उसने क्रूर दृष्टि की इससे इसका बाँया नेत्र फूट गया। शिवजी ने पार्वती से कहा, यह तुम्हारा पुत्र है, तुम्हें क्रूर दृष्टि से नहीं देखता है, किंतु तुम्हारी तपस्या की प्रसंसा करता है, अतः मैं इसे निधियों का स्वामी बनाता हूं। ऐसा कह कर शिवजी ने उसे धनपति बना दिया और पुनः उमा से मिलाकर कहा कि, यह तुम्हारी माता है। इसके चरणों में प्रसन्न चित्त से प्रणाम करो। फिर उमा से कहा कि देवेश! तपस्विनी! इस अपने अंगज पुत्र पर प्रसन्न होओ। तब जगदम्बा पार्वती प्रसन्न हो यज्ञदत्त के उस पुत्र से बोली-कि वत्स! तुम्हारी शिवजी में सर्वदा निर्मल भक्ति होवे। परन्तु तुमने जो अपने बाँये नेत्र से तिरछे होकर मुझे देखा है इससे तुम्हारा बाँया नेत्र तो नहीं रहेगा। महादेवजी ने उसे वैश्वेश्वर नामक स्थान में कुबेर बनाकर प्रवेश करा दिया और स्वयं उसकी अलकापुरी नामक महानगरी के समीप ही में अपना कैलाश नाम स्थान नियत किया।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* बीसवां अध्याय *

(सदाशिव का कैलाश गमन)

ब्रह्माजी बोले—नारद! जिस प्रकार कुबेर कैलाश पर्वत पर तप करने आया और उसके तपो-बल से शिवजी वहाँ पहुँचे। कुबेर को कठिन तप करते देखकर ब्रह्मा के अंश से उत्पन्न रुद्र शिवजी की इच्छा से वहां जाने के लिये उत्सुक हुये और जोर-जोर से अपना डमरू बजाने लगे जिसकी ध्वनि त्रिलोक में व्याप्त हो गई। विष्णु और ब्रह्मादिक सब देवता तथा मुनि और वेद-शास्त्र और सिद्ध लोग भी मूर्ति होकर वहाँ पहुंचे। साथ ही असंख्यगणों सहित अपनी लाखों-करोड़ों की सेना के साथ शिवजी ब्रह्मा विष्णु सहित बड़े प्रेम से रुद्ररूप शिवजी के दर्शनार्थ वहाँ पहुंचे। शिवजी को देखकर महात्मा कुबेर ने आदर से उठकर अनेक प्रकार की भेटों से परिवार सहित उनकी पूजा की और आलिंगन कर अलकापुरी के समीप ही लेजाकर निवास कराया। फिर शिवजी ने विश्वकर्मा को बुलाकर उस कैलाश पर्वत पर अपने भक्तों और अनुचरों के लिए स्थान बनाने की आज्ञा दी। बिश्वकर्मा ने अनेकों प्रकार के स्थान बना दिये। इस अवसर पर हरि की प्रार्थना से शिवजी बहुत प्रसन्न हुए। फिर कुबेर पर कृपा कर शिवजी कैलास पर्वत पर गये और एक शुभ मुहूर्त देखकर उसमें प्रवेश किया। विष्णु आदिक देवता आनन्दित हुए तथा मुनि और सिद्धगण ने भी आनन्द से शिवजी का अभिषेक किया। जब शिवजी सिंहासन पर बैठे तो विष्णु आदि देवताओं ने अलग-अलग स्तुति की। और सब देवता अपने २ स्थान को गये।

इति श्री रुद्र संहिता द्वितीय खण्ड समाप्त ॥

——(❀)——

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

❋ श्रीशिव महापुराण भाषा ❋

[रुद्र संहिता—सती खंड]

❋ प्रथम अध्याय ❋

(सती चरित्र)

नारदजी बोले—हे ब्रह्माजी ! सदाशिव एक परम स्त्री के साथ विवाह कर गृहस्थ कैसे होगये ? जो पहले दक्ष की पुत्री थी फिर हिमालय की कन्या हुई, वह सती पार्वती किस प्रकार शङ्कर को प्राप्त हुई ? सूतजी कहते हैं कि नारदजी के ऐसे वचनों को सुनकर ब्रह्मा जी बोले—हे मुनिवर्य ! पहले मेरे एक कन्या हुई कि जिसे देखते ही मैं काम से पीड़ित हो गया और मुझे रुद्र ने धर्म का स्मरण कराते हुऐ मुझे मेरे और पुत्रों के साथ ही बड़ा धिक्कारा और फिर वे अपने स्थान कैलाश को चले गये। तब मैंने अपने पुत्रों सहित उन्हें ही मोहित करना चाहा परन्तु मेरे सारे प्रयत्न निष्फल हुऐ। तब मैंने निराश होकर फिर शिव की भक्ति की तो उन्होंने बहुत कुछ मुझे समझाया। मैंने तो ईर्ष्या छोड़ दी, परन्तु हठ नहीं छोड़ा और पुनः रुद्र को मोहित करने के लिये शक्ति का सेवक किया और अपने पुत्र दक्ष से आसिकी वीरनी नामक कन्या से सती को उत्पन्न कराया। वह दक्ष सुता उमा होकर कठिन तप कर रुद्र की स्त्री हुई। तब वे रुद्र स्वतन्त्र होकर भी सन्तान उत्पन्न करने की इच्छा से रूप धारण कर मोहित हुये। रुद्र ने ग्रहस्ताश्रम में आकर सुख से कितने ही समय व्यतीत कर हो चले। उधर शिवजी की माया से दक्ष को गर्व उत्पन्न होगया और वह परम सान्त निर्विकारी महादेवजी की निन्द्रा करने लगा उसने बड़े गर्व से एक विशाल यज्ञ किया जिसमें उसने मुझ को विष्णुजी को तथा और भी सब देवताओं और

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

ऋषि मुनियों को तो बुलाया परन्तु महादेवजी और पुत्री सती को नहीं बुलाया। इस पर भी एक कौतुक करने के लिये सती अपने पिता के घर गई वहाँ यज्ञ में रुद्र का भाग न देखकर और अपने पिता से रुद्र की निन्दा सुन उन सबकी निन्दा करती हुई उन्होंने वहीं पर अपनाशरीर त्याग दिया। यह सुन देव देवेश ने परम कुपित हो अपनी जटा का एक बाल उखाड़ कर वीर भद्र को पैदा कर दिया कि जिसने जाकर दक्ष का यज्ञ विध्वन्स कर उसका शिर काट डाला तथा उपद्रव किया रुद्र की प्रार्थना करने लगे। परमात्मा महेश ने कृपा कर दक्ष को जिला फिर सबका सत्कार करा यज्ञ करवाया। सती की देह से उत्पन्न ज्वाला पर्वत पर गिरी। वह ज्वाला मुखी होकर पूजित हुई। आज भी जिनके दर्शन से सब कामनायें सिद्ध होती हैं। फिर वही हिमालय की पुत्री हुई जिसका नाम पार्वती नाम पड़ा। उसने कठिन तपस्या द्वारा शम्भु को प्राप्त किया।

* दूसरा अध्याय *

(शिव पार्वती-चरित्र)

सूतजी बोले-ब्रह्माजी की ऐसी वाणी को सुनकर पूछने लगे। नारदजी बोले–हे ब्रह्माजी ! दिव्य सती और शिवजी चरित्र को फिर सुनाना चाहता हूं। सती की उत्पत्ति कैसे हुई ! महादेवजी का मन स्त्री वरने में कैसे हो गया। दक्ष कोप सती ने कैसे शरीर त्यागा और फिर हिमालय की पुत्री पार्वती कैसे हो गई। उनका तप, विवाद काम-नाश आदि कथायें मुझे सुनाइये। ब्रह्माजी बोले मुनिराज पहले शिवजी निर्गुण निर्विकल्प रूप रहित शक्ति रहित चिन्मात्र सत-असत से परे शिव स्वरूप निर्मिकारी और परात्पर दिव्य रूप एक ही थे। उमा के साथ सगुण और शक्तिमान प्रभु हो गये। जिसके बायें अङ्ग से ब्रह्मा उत्पन्न हुआ। तब से सृष्टि कर्त्ता पालनकर्ता विष्णु और प्रय कर्ता रुद्र हुये और तभी से सदासिव के तीन रूप हो गये इनकी आराधना से मैं सुरासुर सहित मनुष्यादि की सृष्टि करने लगा। मैंने ही

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

सब प्रजापतियों को बनाया। फिर मैंने मरीचि, अत्रि पुलह, पुलस्त्य, अङ्गिरा, क्रतु, वशिष्ठ, नारद, दक्ष और भृगु को बनाया और जब मैं इन्हें उत्पन्न कर चुका तब मुझे कुछ माया का मोह आ गया और तत्क्षण मेरी भौंहों के बीच से संध्या नामक एक कन्या उत्पन्न हो गई जिसको देखते ही मैं उठ पड़ा और मेरे पुत्र दक्ष मरीचि ने भी हृदय में शोच किया। तब मुझ ब्रह्मा के चिन्तित होते ही तत्क्षण एक सुन्दर और अद्भुत रूप वाला, पुरुष काले बालों से युक्त, श्यामगज के समान, स्थूलकाय वाला और नाला सुन्दर वस्त्र पहिने, कान्त की तरह दोनों कटाक्षों को घुमाता हुआ आविर्भूत हो गया। उसकी श्वास से सुगन्धि निकल रही थी और वह परम शृगारित था। तब ऐसे पुत्र को प्रकट हुआ देखकर मेरे अन्य पुत्रों में बड़ी उत्सुकता आई और उनमें विकारी भाव का सचार हो गया। उसी समय तत्क्षण पुत्र ने मुझसे शिर झुकाते हुए कहा कि, हे ब्रह्मन्! मुझे क्या आज्ञा है। ब्रह्माजी ने कहा—तुम सनातनी सृष्टि उत्पन्न करो। मैं, वासुदेव और सभी तुम्हारे वश में हैं। आज से तुम्हारा नाम पुष्प-बाण होगा तुम से लोगों में आश्चर्य, सदैव सुख का लक्ष्य और नित्य ही प्राणियों में मद उत्पन्न हुआ करेगा और तुम इसी प्रकार सृष्टि के प्रवर्तक बनो। मेरे ये पुत्र भी तत्वरूप से तुम्हारे नाम का स्मरण करेंगे।

* तीसरा अध्याय *

(ब्रह्मा–काम–संवाद)

ब्रह्माजी ने कहा कि, इसके पश्चात् सब मरीचि आदि मुनियों ने उनका अभिप्राय जानकर इसका यथोचित नाम रख दिया। उन्होंने कहा कि तुमने उत्पन्न होते ही ब्रह्मा का चित्त मंथन कर दिया था इससे तुम्हारा पहला नाम संसार में मन्मथ होगा। तुम्हारे जैसा संसार में कोई नहीं है। इससे तुम्हारा दूसरा नाम काम होगा। तीसरा मोहन से तुम्हारा नाम मेदन चौथा कन्दर्प होगा। तुम्हारे लिये प्रजापति दक्ष एक सुन्दर कामिनी स्त्री देंगे जिसे ब्रह्माजी उत्पन्न कर चुके हैं

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

और जिसका नाम संध्या है। यह सुनकर उस काम ने पाँच वाणों का नामकरण कर तुरन्त उनका परीक्षण करना चाहा। हर्षण, रोचन मोहन, शोषण और मारण ये पाँच नाम हुये जो मुनियों के भी मोहक थे। संध्या भी थी। उसने कहा-अच्छा, इसे तो मैं ही मोहित करूँगी इतने में काम ने पाँचों वाणों का प्रयोग किया। मोहन ने ब्रह्मादिकों के मन को मोह लिया। सबके मन का विकार हुआ। उनमें काम की बृद्धि हो गई। मुझमें उनचासों भाव खड़े होगये। संध्या में भी विकार आया। वह भी ऋषियों को कटाक्ष करने लगी। एक प्रजापति ने भी उसकी इच्छा की। मरीच अत्रि और दक्ष आदि सब मुनि इन्द्रियों के विकार को प्राप्त हो गये तब मुझे और सब मुनियों तथा सध्या को देखकर काम को अपने कर्म में विश्वास हुआ। तब पिता और भाइयों की पापगति देख धर्म को बड़ा दुख हुआ और उसने धर्म रक्षक प्रभु, शिवजी का स्मरण किया। तब मुझे देखकर आकाश स्थित शिवजी हंसके और मुझे लज्जित करते हुए बोले कि, हे ब्रह्मन्! तुम्हें पुत्री को देखकर काम कैसे प्रगट हो गया। सर्वदा सूर्य दर्शन करने वाले दक्ष मरीचि आदि एकांत योगियों का चित्त स्त्री को देखकर कैसे मलिन हो गया? जिसके चित्त को स्त्रियां हरण कर लेती हों उनके साथ शास्त्र संगति कैसे की जा सकती है? ब्रह्माजी कहते हैं कि,जब लोक पितामह शिवजीने कहा तो इसप्रकार लज्जाकेमारे क्षण भर में पसीने से भीगा रहा। मेरा विकार हट गया। परन्तु मेरे शरीर से जो पसीना गिरा उससे पितृगणों की उत्पत्ति हो गई चौंसठ हजार आग्नेष्वाता पितृगण उत्पन्न हुए। छियासी हजार बर्हिषद पितर हुये। और जो दक्ष के शरीरसे पसीना गिरा था उससे सर्वगुण संपन्न एक कन्या उत्पन्न हुई जो मुनियों के भी मन को मोहने वाली थी और जिसका लोक विख्यात रति नाम हुआ। उसे देख ऋतु आदि भी रस्खलित हो गये और उनका वीर्य भूमि पर गिरा उससे अन्य पितरों की उत्पत्ति हुई इस प्रकार संध्या बहुत से पितरों को उत्पन्न करने वाली हुई।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

उसी समय शिवजी अन्तर्ध्यान होगये और उनके बाक्यों से लज्जित मैं काम से क्रुद्ध हुआ। मेरे क्रुद्ध होते ही काम ने शीघ्र ही अपना बाण खींच लिया और मैं जलती हुई अग्नि के समान जलने लगा। उससे पीड़ित होकर मैंने तथा अन्य ऋषियों और प्रजापति ने काम को शाप दे दिया कि, जा तू शिवजी के बाणों से भस्म हो जायगा। यह सुन रति का पति उसी क्षण अपना धनुष फेंककर मेरे चरणों पर आ गिरा और पूछा कि आपने मुझे ऐसा कठिन शाप दे दिया। आप ही ने तो कहा था कि मैं ब्रह्मा विष्णु और शम्भु ये सभी तुम्हारे वश में हैं। जो आपने कहा था उसी की परीक्षा की है। मैं निरपराध हूं। मुझे ऐसा कठिन शाप क्यों देते हैं? ब्रह्माजी ने कामको डाँटते हुए कहा कि, यह संध्या मेरी कन्या है। इसको तुमने काम से लक्षित किया है इसी कारण मैंने तुझे शाप दिया है। हे काम! अब तुम शांत होकर सुनो कि जब तुम महादेवजीके नेत्ररूप अग्नि से भस्म हो जाओगे तब फिर शीघ्र ही समान शरीर को प्राप्त करोगे और जब महादेवजी अपना विवाह करेंगे तब तुमको शरीर प्राप्त होगा।

चौथा अध्याय

(काम रति-विवाह)

नारदजी बोले-ब्रह्मन्! इसके पश्चात् फिर क्या हुआ वह भी आप कहिये, क्योंकि शम्भु की कथा सुनने को मेरी बड़ी इच्छा है! ब्रह्माजी ने कहा-कि नारद! जब शिवजी अपने स्थान को चले गये। और मैं [ब्रह्मा] भी अन्तर्ध्यान हो गया तब दक्षजी ने कन्दर्प से कहा-कि-हे कन्दर्प! तुम्हारे ही समान गुणवाली मेरी पुत्री को पत्नी के रूप में ग्रहण करो। ऐसा कहकर दक्षने अपनी देह के पसीने से स्त्रीका रति नाम रखकर उसे कन्दर्प के आगे कर दिया दक्ष की परम सुन्दरी पुत्री से विवाह कर काम बड़ा प्रसन्न हुआ। उस समय काम आनन्द के मारे ब्रह्माजी के दिये हुए शाप को भूल गया और मोहित होने के कारण

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

दक्ष जी से कुछ कह न सका। उस समय सुखवर्द्धक महान उत्सव हुआ अपनी कन्या को प्रसन्न देख दक्ष भी बड़े प्रसन्न हुए।

॥ पांचवां अध्याय ॥

(सन्ध्या की तपस्या)

सूतजी बोले—जब ब्रह्माजी ने इतना कहा, तब नारदजी ने ब्रह्माजी से कहा कि महामति ! जब आप सभी महान् देवता और प्रजापति दक्ष भी अपनी पुत्री सन्ध्या को काम के अपर्ति कर चले गए तब सन्ध्या ने क्या किया ? तत्ववेत्ता ब्रह्माजी बोले कि हे मुनि ! अब तुम सन्ध्या के उस चरित्र को सुनो। पहले वह सन्ध्या मेरे ही मन से उत्पन्न हुई। फिर तप करके अपना शरीर त्याग अरुन्धती हुई। उसे मेधातिथि ने उत्पन्न किया था और वशिष्ठजी ने पत्नी के रूप में ग्रहण किया। नारदजी ने पूछा कि, उसे मेधातिथि ने कैसे उत्पन्न किया और वशिष्ठजी ने उसे कैसे ग्रहण किया, यह सब अरुन्धती के चरित्र मुझे सुनाईये। ब्रह्माजी ने कहा—जब मैं काम को शाप दे अन्तर्ध्यान हो गया तथा शिवजी भी चले गये। तब आमर्ष को प्राप्त होकर मेरी पुत्री ने सोचा कि भला मुझसे बढ़ कर पापिन कौन है कि जिसे देखकर पिता और भ्राता भी काम की इच्छा करते हों। अतः मैं स्वयं ही इस पाप का प्रायश्चित् करूँगी ! वेद मार्ग से मैं अपने को अग्नि में जला दूँगी और ऐसी मर्यादा स्थापित करूँगी कि जिससे संसार में उत्पन्न होते ही मनुष्य इस प्रकार से कामी न हों। में तप की कठिन मर्यादा की स्थापना कर शरीर त्यागूँगी ऐसा विचार कर संध्या चन्द्रभागा नदी के तट पर स्थित चन्द्रभागा पर्वत पर चली गई। तब मैं अपनी पुत्री को श्रेष्ठ पर्वत पर तपस्या के लिए गई हुई जानकर अपने संयतात्मक पुत्र वशिष्ठ से बोला कि हे पुत्र वशिष्ठ ! तपके लिए जाती हुई मनस्विनी सन्या को तुम जाकर अच्छी तरह दीक्षा दो। संध्या चन्द्रभाग पर्वत के लाल-सरोबर के पास बैठी हुई थी। उसके पास पहुँच वशिष्ठजी ने आदर से पूछा कि, भद्रे ! तुम किसकी कन्या

CC-0. ASI Srinagar. Digitized by eGangotri

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

हो, और इस सरोवर पर क्या करने आई हो। यदि वह छिपाने योग्य न हो तो मैं सुनना चाहता हूं। वशिष्ठजी को देखकर संध्याने प्रणाम किया और कहा कि, मैं इस निर्जन पर्वत पर तप करने आई हूं। यदि आप योग्य समझें तो मुझे उपदेश करें वशिष्ठजी ने फिर कुछ नहीं पूछा क्योंकि वे सब कुछ जानते थे। तब सन्ध्या से वशिष्ठजी ने भक्तवत्सल शिवजी का स्मरण कर कहा—अच्छा तो तुम अब परम आराध्य शिवजी को धारण कर उन्हीं का भजन करो। इससे तुम्हारे सभी मनोरथों की पूर्ति होगी। 'ॐनमः शङ्कराय' ॐ अन्त में लगाकर मौन होकर तप करो और मैं जैसा कहता हूँ उसके अनुसार मौन होकर ही स्नान तथा शिवजी का पूजन करो। केवल जल का आहार करना और कुछ नहीं इससे निःसंदेह तुम्हारी तपस्या पूर्ण फलदायक होगी। शिवजी तुम्हारे मनोरथों को शीघ्र ही पूर्ण करेंगे। वशिष्ठजी ने वहाँ बैठकर संध्या को तप की सब क्रियायें बतलाईं और पुनः वहीं अन्तर्ध्यान हो गये।

* छटवां अध्याय *

(शिवजी का बरदान)

ब्रह्माजी बोले—वशिष्ठजी के चले जाने पर सन्ध्या ने आसन लगा कर कठिन तप करना आरम्भ किया। वशिष्ठजी ने जैसा कहा था उसी के अनुसार उसने मन्त्र से भक्ति पूर्वक शिवजी का पूजन किया। शिवजी ने चित्त लगाये उसको एक चतुर्युगी व्यतीत हो गया। तब शिवजी ने आकाश में स्थिर होकर उसे अपना प्रत्यक्ष दर्शन दिया। संध्या ने मुग्ध हो आश्चर्य से नेत्र बन्द कर लिये। शिवजी ने उसके हृदय में प्रवेश कर उसे ज्ञान और दिव्यवाणी और दिव्य नेत्र दिये। वह प्रसन्न हो शिवजी की स्तुति करने लगी। उसकी स्तुति सुनकर भक्तवत्सल शिवजी प्रसन्न हो बोले कि, हे भद्रे! तुम्हारे उस तप और स्तुति से मैं प्रसन्न हूँ जो चाहो वर माँगो। तब महेश को बार-बार प्रणाम कर प्रसन्न हो संध्या बोली-यदि आप मुझे वरके योग्य समझते हैं और यदि मैं अपने पूर्व पापों से शुद्ध होगई हूँ तो महेश्वर! देवेश!

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

आप मेरे माँगने से यही वर दीजिये कि इस संसार में प्राणी उत्पन्न होते ही तुरन्त कामी न हो जांय। तथा दूसरा वर दीजिये कि यदि मैं तीनों लोकों में विख्यात और व्रतवाली हूँ तो मेरे समान दूसरी न होवे। यदि मेरी फिर सृष्टि होवे तो वह कहीं कामी होकर न गिरे और हे नाथ जो मेरा पति होवे अति कामी न होकर मित्र के समान हो, तथा जो मुझे काम भाव से देखे वह नष्ट और नपुंसक हो जावे शिवजी प एवमस्तु कहकर सन्ध्या से कहा कि भद्रे ? अब से मैं मनुष्यों की चार आयु कर देता हूँ। शैशव, कुमान यौवन और वृद्ध। जब प्राणी तीसरी अवस्था को प्राप्त हो तब कामी हो और कोई दूसरी अवस्था के अन्त में सकाम हों तेरे तप से ही मैंने यह मर्यादा जगत में स्थापित की। अब कोई भी प्राणी उत्पन्न होते ही कामी न होगा। साथ ही तू इस त्रिलोकी में ऐसी सती भाव को प्राप्त होगी जैसी कोई न होगी। तेरे पति को छोड़ जो कोई अन्य तुझे सकाम भाव से देखेगा वह नपुंसक हो जायगा। तेरा पति बड़ा भाग्यशाली और सात कल्प तक जानने वाला होगा। जो वर तूने माँगा मैंने दिया अब तेरे पूर्व जन्म की बात कहता हूँ ? तेरा अग्नि में जलकर शरीर त्यागना निश्चित् है। देख, मेधातिथि बारह बर्ष से एक यज्ञ कर रहे है जिसकी अग्नि बड़े जोर से जल रही है, तू उसी जलती हुई अग्नि में शीघ्र ही प्रवेश कर जा। इसी पर्वत के नीचे चन्द्रभागा नदी के तट पर तपस्यिों का आश्रम है जिसमें मेधातिथि यज्ञ कर रहे है। उस यज्ञ में प्रवेश कर तू उसकी पुत्री होगी। तुझे जैसा स्वामी चाहिये उसका मन में सङ्कल्प कर तू अपने इस शरीर को अग्नि में गिरा दे। जब तू चार युग के पश्चात् सतयुग व्यतीत होने पर पुनः पर्वत पर घोर तप करेगी तो त्रेता के प्रथम भाग में दक्ष की कन्या होकर यथा योग्य व्याही जायगी। तेरे और भी बहुत सी बहनें होंगी जिसमें से तेरे पिता दक्ष सताइस कन्यायें तो चंद्रमा को देंगे, किंतु चंद्रमा उन सबको छोड़ केवल रोहिणी से बहुत प्रसन्न रहा करेंगे।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

इससे कुपति हो तेरे पिता दक्ष चन्द्रमा को शाप दे देंगे और सब देवता तेरी शरण आवेंगे। ऐसा कह शङ्कर अन्तर्ध्यान हो गये।

* सातवाँ अध्याय *

(सन्ध्या चरित्र)

ब्रह्माजी बोले—नारदजी ? अब सन्ध्या वहाँ से उठ कर मेधातिथि यज्ञ में पहुँची जहाँ उसे किसी ने नहीं देखा। तब वह अपने उपदेष्टा ब्रह्मचारी वसिष्ठजी का स्मरण कर उन्हें ही अपना पति स्वीकार कर यज्ञ की बढ़ी हुई अग्नि में कूद पड़ी। शिवजी की कृपा से उसे कूदते हुए किसी ने नहीं देखा अग्नि नेउसके शरीर को जलाकर सूर्य-मण्डल में प्रवेश कर दिया। सूर्य ने उसके शरीर के विभाग कर अपने रथ में स्थापति कर लिया और जिसके ऊपर का भाग रात्रि और दिन के बीच में होने वाली प्रातःकाल सन्ध्या होगया और उसका शेष भाग पितरों की प्रसन्नता के लिए दिन का अवसान वाली सन्ध्या हो गया। अरुणोदयके सायकीप्रातःसंध्या और सूर्यास्त होते समयकी लाल कमलके समान सायंसन्ध्या होतीहै। उसके प्राणको दयालु शिवजीने अपने दिव्य शरीर में स्थापित कर लिया। उधर जब यज्ञ की समाप्ति हुई तो ऋषियों ने तप्त सुवर्ण के समान कान्तिवाली उस कन्या को अग्नि में पाया। उसे मेधातिथि ने प्रसन्नता से यज्ञ के लिए विधिवत स्नानकर अच्छी तरह गोद में लिया और उसका नाम अरुन्धती रक्खा। शिष्य सहित उसका अपने आश्रम में पालन करने लगे। जब वह पाँच वर्ष की हुई तो ब्रह्मा विष्णु महेश ने आकर ब्रह्म-पुत्र वशिष्ठ के साथ उसका विवाह कर दिया। पतिव्रताओं में श्रेष्ठ महा पतिव्रता अरुन्धती वशिष्ठ को पाकर उनसे रमण करने लगी जिसके शतपादिक श्रेष्ठ पुत्र उत्पन्न हुए।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

।। आठवां अध्याय ।।

(ब्रह्माजी का कामदेव को वर देना)

सूतजी बोले—हे ऋषियो ! जब इस प्रकार प्रजापति ब्रह्मा ने कहा तब उनके बचन को सुनकर आनन्द मग्न हो नारदजी ने कहाकि ब्रह्मन् ! आपको धन्यवाद है कि आपने इस दिव्य कथा को मुझे सुनाया है। धर्मज्ञ अब आप मुझे बतलाइये कि इसके आगे संध्या ने और क्या तप किया ! सूतजी बोले, जब इस प्रकार जब नारदजी ने श्री ब्रह्माजी से पूछा तो उन्होंने कहा कि हे विपेन्द्र ! जब संध्या को देखने मात्र से शिवजीने मुझ सृष्टिकर्त्ता को बहुत फटकारा था तभीसे मैं शिव की माया से मोहित हो उनसे ईर्ष्या करने लग गया और इस चिन्तन में लगा कि इसी प्रकार के विकार में इन्हें आवद्ध करूँ। तब रति और मदन को देखकर मैं थोड़ा मदयुक्त हुआ दक्षादि अपने पुत्रों के पास गया और उनसे बोला कि, दक्ष और परीच्यादि पुत्रो तुमको ज्ञात है कि स्त्री को देखने मात्र से शिवजी ने मुझे बहुत धिक्कारा था, जिसके दुःख से में आज भी दुःखी हूं, अतः जैसे भी हो महादेव स्त्री ग्रहण करलें तभी मुझे शाँति आवेगी। नारद ! मैं अपने पुत्रों के से ऐसा कह ही रहा था कि उसी समय रति सहित कामदेव वहाँ आ पहुँचा। तब मैंने उसकी बहुत ही प्रशंसा कर कहा कि वत्स ! अब तुम जगत् के हित के लिए शिवजी को मोहित करो। तुम्हारे सिवा दूसरा उन्हें मोहित नहीं कर सकता। महादेवजी पर अनुराग करने से तुम्हारे शाप की भी शांति होगी और जगत का कल्याण भी क्योंकि जब शिवजी को स्त्री का अनुराग होगा तब वे महादेवजी तुम्हें तार देंगे। नारद ! तब मदन ने मुझसे कहा कि मैं आपका बचन पालन कर शिव जी को मोहित तो अवश्य कर दूँगा किंतु स्त्री का निर्माण तो आप ही करें। तब कंदर्प के ऐसा कहने पर मैं अपने प्रजापति दक्ष इस चिंता में पड़ गए कि किसके द्वारा उन्हें मोहित करें। फिर तो चिंताग्रस्त मेरी और उनकी श्वाँसो से जो सुरभित वायु निकली उसने पुष्प समूहों

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

से भूषित वसन्त उत्पन्न कर दिया जिसकी पुष्पित कमल-कांति, पुष्पित ताम्ररस से नेत्र, संध्या के उदित चन्द्रखण्डसा मुख और सुन्दर नासिका थी। तब ऐसे श्रेष्ठ को आविर्भूत हुआ देखकर मैंने हिरण्य गर्भ मदन से कोमल बचनों में कहा कि हे मन्मथ! तुम सर्वदा काम के सहचर हो। सब देवता तुम्हारी अनुकूलता करेंगे। यह रमण का हेतु होने से इसका नाम बसन्त है और यह लोकों को रंजित करेगा। काम! तुम अपने इन वसन्त आदि सहचरों सहित रति को साथ लेकर शिव जी को मोहित करने का उद्योग करो। फिर सपत्नीक काम ने प्रसन्न हो मेरे चरणों में प्रणाम किया और शिव के स्थान को चला गया।

* नवाँ अध्याय *

(ब्रह्मा का सम्बाद)

ब्रह्माजी बोले—काम ने प्राणियों को मोहित करने बाला अपना प्रभाव फैलाया। बसन्त ने भी उसका साथ दिया। रति के साथ कामदेव ने शिवजी को मोहित करने के लिये अनेकों प्रकार के यत्न किये जिससे सब जीव मोहित हो गये परन्तु गणेशजी सहित शिव जी वश में न आये। उसके सारे प्रयत्न कर्म व्यर्थ हो गये। तब उसने उदास भाव से मेरे पास आ प्रणाम कर मुझसे कहा कि—ब्रह्मन्! मैं शम्भु को मोहने योग्य नहीं हूँ और किसी की शक्ति नहीं है कि जो उन्हें मोहित कर सके। उसकी बात सुनकर मैं चिंतामग्न हो गया और बड़े दुःख की श्वांस लेने लगा। उससे बहुत से भयङ्कर बली गण प्रकट हो गये। उन्होंने कोलाहल कर असंख्यों की संख्या में पटह अनेकों वाद्यो का वजाना और मारो-काटो का शब्द करना आरम्भ किया और मुझे भी मारने-काटने दौड़े। तब वहाँ मेरे सम्मुख स्थित काम ने उनको हटाया और कहा कि प्रजानाथ! इन भयंकर बीरो को आपने कहां से उत्पन्न कर दिया। इनका क्या काम है और ये कहाँ

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

रहेंगे। न हो तो इनको मेरे हवाले कीजिये। यह सुनकर मुझ ब्रह्मा ने उन्हें कर्म में नियुक्त कर दिया और काम से कहा कि ये उत्पन्न होते ही 'मारय मारय' करने लगे इससे इनका नाम 'मार' हुआ। काम? ये सर्वदा तुम्हारे वशवर्ती रहेंगे। मेरा वचन सुनकर रति और काम कुछ प्रसन्न हुए। तब मैंने उनसे कहा कि अब तुम फिर शिवजीको मोहित करने के लिये जाओ। काम ने कहा, मैं आपकी आज्ञा को अपना गौरव समझकर जाऊँगा तो अवश्य किन्तु यह निश्चत् है कि उनको मोह नहीं होगा और मुझे भय है कि कहीं वे मेरे शरीरको भस्म न करदें। यह कहकर काम अपने बसन्त, रति और मार गणों को साथ लेकर शिवजी के स्थानों में गया और उन्हें मोहित करने के लिए बहुत से उपाय किये, किन्तु वे परमात्मा शिव मोहित न हुए। फिर वह काम लौटकर मेरे पास आया और मुझे प्रणाम कर बोला—हे ब्रह्माजी? आप शिवजी को मोहित करने का कोई दूसरा उपाय कीजिये शिवजी को मोहित करना मेरे लिए संभव नहीं है।

* दसवाँ अध्याय *

(ब्रह्मा-विष्णु सम्वाद)

ब्रह्माजी बोले—नारद? काम के चले जाने पर श्रीमहादेवजी को जो मोहित करा देने का मेरा अहङ्कार था वह भी चूर्ण हो गया। परन्तु मैं यह विचार करता ही रहा कि क्या युक्ति करूँ कि जिससे महात्मा शिवजी स्त्री ग्रहण कर ही लें। मैंने विष्णु का स्मरण किया। पीताँबर धारी श्री हरि शीघ्र ही मेरे पास प्रकट हो गये मैंने गद्गद् वाणी से स्तुति की। उससे प्रसन्न हो भगवान् मुझसे बोले कि, विधे? कहो किस लिए मेरा स्मरण किया है। तब एक दीर्घ विश्वास लेकर हाथ जोड़ प्रणाम कर मैंने देवाधिदेव विष्णुजी से कहा कि, मैंने रुद्र के सम्मोहनार्थ सपरिवार मार गण और वसन्त के साथ काम को भेजा था, परन्तु सब निष्फल हुआ। तब श्री हरिजी मुझसे बोले कि, पितामह? ऐसा तुम क्यों करना चाहते हो? पहले अपना सब विचार सत्य-सत्य

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

कहो। ब्रह्माजी कहते हैं—तब मैंने कहा कि, सृष्टि के आरम्भ में जब मेरे दक्षादिक दश पुत्र और वाणी द्वारा एक सुन्दर कन्या उत्पन्न हुई और छाती से धर्म, मन से काम और देह से प्राणी उत्पन्न हुए तब उस कन्या को देख कर मुझे मोह उत्पन्न हो गया और आपकी माया से मोहित होकर मैंने उस कन्या को कुदृष्टि से देखा तब उसी महादेव जी ने आकर मुझे और मेरे पुत्रों को धिक्कारा। मेरे पुत्रों के समक्ष मेरी निन्दा की। इसका मुझे बड़ा दुख है। केशव! अब वह भी स्त्री ग्रहण करें तब मेरा दुःख दूर होगा और तब मैं सुखी होऊँगा। नारद! मेरी ऐसी बात सुनकर मधुसूदन हँसे और मुझे प्रसन्न करते हुए बोले कि बिधे आप सब लोकों के कर्त्ता और वेद वक्ता होकर ऐसे महामूढ़ मतिवाले क्यों हो गये? तुम शिवजी से ईर्ष्या त्याग दो। यदि तुम्हारे विचार से शिवजी को स्त्री ग्रहण करना ही है तो पार्वती के उद्देश्य से शिवजी का स्मरण कर तप करो। अपने उद्देश्य से हृदय में पार्वती का ध्यान करो। यदि वह भगवेति प्रसन्न हो जायेंगी तो तुम्हारे सब काम पूर्ण हो जायेंगे! वह सर्व गुण सम्पन्न पार्वती अवतार ले लोक में किसी की कन्या हो जायेंगी और वह शीघ्र ही शिवजी की पत्नी होंगी। इसके लिए तुम दक्ष को आज्ञा दो कि वह तप करे जिसकी भक्ति से पार्वती उसके यहाँ उत्पन्न हो जायंगी। तब कहीं दक्ष के यहाँ सती नाम से पार्वती का अवतार होगा। विष्णु यह कह वहीं अन्तर्ध्यान हो गये।

॥ ग्यारहवाँ अध्याय ॥

(काली आख्यान)

नारदजी बोले—विष्णुजी के चले जाने पर क्या हुआ ब्रह्माजी कहने लगे कि तब मैं शुभपिया देवी दुर्गा का स्मरण करने लगा। मैं उन्हें प्रणाम कर यह कहता रहा कि देवेश्वरी! मेरा कार्य करो। मेरी इस प्रकार की स्तुतियों से योगनिद्रा चामुण्डा मेरे समक्ष प्रकट हो गई उनकी कज्जल सी काँति रूप सुन्दर और दिव्य वह चार भुजाओं

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

वाली सिंह पर बैठी हुई भक्तों को वर देने के लिये वर कलश हाथ में लिये चली आई जब शिवजी रुद्र नाम से योगी हो कैलाश पर रहने लगे। निर्विकारी निर्विकल्प और समाधि लगाकर तपस्या में लीन हैं और पत्नी हीन होकर भी विवाह नहीं करना चाहते अतः जैसे भी हो आप इन्हें मोहित कीजिये। आपही दक्ष की कन्या बन कर उन्हें मोहित कर उनकी पत्नी बने स्त्री के कारण ही तो शिव ने मेरी निन्दा की। अब मैं देखना चाहता हूं कि वे स्वयं ही कैसे स्त्री ग्रहण करेंगे। तुमको छोड़ क्या हमारे विष्णु किसीमें भी उनको मोहने की शक्ति नहीं है। अतएव आप दिव्यरूप धारण कर दक्षकी कन्या बने और योगी शङ्कर की पत्नी बन जाइये।। क्षीर सागर के उत्तरी तट पर आपकी प्राप्ति के लिये दक्ष तपस्या कर रहे हैं। ब्रह्माजी कहते-हैं शिव मोहने का भाव आगया और इसके लिये तुम मुझसे वर चाहते हो? भला निर्विकल्प शंकर को मोहने से तुमको क्या लाभ होगा? मैं तो सदैव उनकी दासी हूँ उन्होंने ही तो भक्तों का उद्धार करने के लिये रुद्ररूप धारण किया है। ब्रह्माजी कहते हैं–हे नारद! ऐसा विचार कर देवी ने मन में शिव का स्मरण किया। फिर शिवजी की आज्ञा पाकर कहा–दुर्गा! बोली–ब्रह्मन्! तुम्हारा कथन सत्य है कि शिवजी को मोहने वाली कोई नहीं है। मैं भी इसकी शक्ति नहीं रखती। मैं इसका प्रयत्न अवश्य करूँगी कि जिसमें शिवजी मोहित हो स्वयं भी विवाह कर लेवें मैं सती का रूप धारणकर शिवजी की आज्ञानुवर्तिनी होऊँगी ऐसा कहकर जगदम्बिका शिवा अन्तर्ध्यान हो गई।

* बारहवां अध्याय *

(दक्ष द्वारा देवि अराधन)

नारदजी ने पूछा–देवी दक्ष कन्या कैसे हुई? ब्रह्माजी बोले-नारद ब्रती ने दृढ़ता से तीन हजार दिव्य वर्षों तक नियमः तप किया। तब दक्ष को जगदम्बिा का प्रत्यक्ष दर्शन हुआ। वे कृतार्थ हो गये उन्हें शिवा का दर्शन हुआ शिवा दक्ष के मनोरथों को पहले ही से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

जानती थी। उन्होंने दक्ष से वर माँगने को कहा। दक्ष ने देवीसे कहा कि मेरे पूर्णावती स्वामी शङ्कर रुद्र नाम से ब्रह्मा के पुत्र रूपमें अवतार लिए हैं और तुम्हारा अवतार नहीं हुआ है। तब शिवजी की पत्नी कौन हो ? तुम्हीं उनको मोहित कर उनकी पत्नी बनो। स्वार्थी ब्रह्माजी ने मुझे भेजा है। तब जगदम्बा ने [दक्ष को] यह वर दे दिया कि मैं तुम्हारी पुत्री के रूपमें उत्पन्न होऊँगी और कठिन तप कर शिव की पत्नी बनूँगी। दक्ष को ऐसा वर देकर अन्तर्ध्यान होगई। दक्ष अपने घर गये।

* तेरहवाँ अध्याय *

(ब्रह्मा-नारद सम्वाद)

ब्रह्माजी बोले-नारद ! दक्ष ने घर जाकर बहुत-सी मानसी सृष्टि की। परन्तु जब उनमें विकास न हुआ तब उन्होंने मुझसे पूछा तो मैंने उपाय बतला दिया। दक्षने पंचजन के अङ्ग से उत्पन्न कन्याको अपनी पत्नी बनाया। मेरे पुत्र ने मैथुन धर्म स्वीकार किया। फिर वीरनी की कन्या से विवाह किया। जिस वीरनी से उन्होंने हर्षस्व नाम वाले दश हजार पुत्र उत्पन्न किये। उन पुत्रों से उन्होंने [दक्ष ने] सृष्टि बढ़ाने को कहा। वे पुत्र सृष्टि की चिंता में पूर्व की दिशा की ओर समुद्र सङ्गम पर तप करने चले गये। परन्तु नारद ! तुमने प्रकट होकर बहका दिया। वे प्रभुक्ति त्याग निभृत्ति के उपासक बन गये। तब दक्ष ने पञ्चजन्या से सवलाश्व नामक फिर हजारों पुत्र उत्पन्न किये और वे भी अपने पूर्व भाइयों के ही अनुवत्ती हुये। दक्ष फिर पुत्रों के घर न लौटने से दुःखी हुए। इस बार उन्हें ऐसा आघात पहूँचाकि उन्होंने तुम्हें दुष्ट कहा और जो उसी समय बहुत से देवता वहां आ गये थे उनके सामने ही दक्ष ने तुम्हारी बहुत निन्दा की और यह शाप भी दे दिया कि तूने पृथ्वी पर मेरे पुत्रों को बहकाकर मेरा अकाज किया है इसलिए तेरे चरण पृथ्वी पर कहीं स्थिर न रहेंगे। हे मुने ! तुमने निर्मल मनसे उस शाप को ग्रहण कर लिया।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

।। चौदहवां अध्याय ।।

(दक्ष की साठ कन्याओं सहित सती का लालन-पालन)

ब्रह्माजी बोले—मुनिराज ! मैं अपने पुत्र दक्ष के पास गया और उन्हें समझा बुझाकर उनका शोक और तुम्हारे प्रति क्रोध शान्त किया। पश्चात् दक्ष ने अपनी स्त्री के गर्भ से सुन्दर साठ कन्यायें उत्पन्न की। और धर्मादिकों से उनका विवाह कर दिया। दश कन्या धर्म को, तेरह कश्यप को दो-दो भूताङ्गिरस और कृशाश्व को और शेष गरुड़ को दे दीं जिनकी संतानों से तीनों लोक भर गए। कन्याओं की उत्पत्ति के समय दक्ष ने अपनी स्त्री के साथ जगदम्बिका शिवा का मन में जो ध्यानकर उसकी स्तुति की थी तो अनेकों क्रीड़ा करने वाली परमेश्वरी सबको मोहित कर अपने पिता से इस प्रकार बोली कि जिसमें उनकी माता भी न सुन सकें। देवी ने कहा-कि प्रजापते ! तुम ने कन्या के लिये पहले जो मेरी अराधना की है उसके अनुसार तुम्हारा अभीष्ट सिद्ध होगा, तुम तप करो। दक्ष से ऐसा कहकर देवी जी अपनी माया से बाल्यभाव धारण कर माता के पास जाकर बैठ गईं और रोने लगीं तो उनके रुदन को सुन संभ्रम हो वहाँ बहुत सी स्त्रियाँ आ गईं। दासियाँ भी बड़े प्रेम से आईं और उस असिन्की की कन्या शिवा का रूप देखकर सारी स्त्रियाँ हर्षित हो गईं तथा सारे नगर वासी जय-जय का शब्द करने लगे, दक्ष ने उसका नाम 'उमा' रक्खा। वीरणी की माता ने विधिवत उस कन्या का संस्कार कराकर स्तनपान विधान से उसे दूध पिलाया। माता वीरणी और महात्मा दक्ष ने बड़े प्रेम से उस कन्या का पालन किया।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* पन्द्रहवाँ अध्याय *

(सती तपस्या)

ब्रह्माजी बोले—जब सती कुमारावस्था को त्याग युवावस्था को प्राप्त हुई तब उनके पिता दक्ष उनके विवाह की चिन्ता करने लगे। तब पिता के मन की बात जानकर सती अपनी माता के पास जाकर शिवजी की प्राप्ति के लिए स्वयं इच्छा प्रकट करने लगी। शिवजी की प्राप्ति के लिए माता से तप करनेके लिए आज्ञा माँगने लगी। माता ने घर में ही शङ्कर की आराधना आरम्भ करा दी। आश्विनी मास की नंदा तिथिमें गुड़ चावल और नमक से सतीने शङ्करकी पूजा आरम्भ की। बारहों महिने की सविधि पूजा की और भोग लगाया। फिर उस नंदाव्रत को समाप्त कर सती ने अन्याय भाव से शिवजी की आराधना करने लगी। मैं विष्णु सहित सब देवताओं को साथ ले सती की तपस्या देखने गया। शिवजी के ध्यान में मग्न सती देवताओं को दूसरी सिद्धि के समान दिखाई पड़ी। फिर सब देवता सती को प्रणाम कर शिव प्रिय कैलाश को चले गये। लक्ष्मी सहित बिष्णु और सावित्री सहित मैं भी शिव के पास गया। वहाँ शिवजी को देख चकित हो हम सबने हाथ जोड़ स्तोत्रों द्वारा शिवजी की बड़ी स्तुति की।

।। सोलहवाँ अध्याय ।।

(शिवजी का ब्रह्मा से अनुरोध)

ब्रह्माजी बोले-तब उस स्तुति को सुनकर सृष्टिकर्ता शिवजीने प्रसन्न होकर हम सबके आगमनका कारण पूछा। मैं बोला कि करुणासागर ! हम सब आपकी सहायता चाहते हैं, परमेश्वर ! हम सब मिलकर ही तो सृष्टि रचना, पालन और संहार करेंगे। परन्तु जब आप इस प्रकार वैरागी होकर असुरों को मारेंगे ही नहीं तब संसारकी सृष्टि और स्थित कैसे रहेगी आप इस कार्य में सहयोग दीजिये। आपही से हमारा और विष्णु का अविर्भाव हुआ है हम दोनों सपत्नीक हो गये। अवतार आप भी तो देवताओं के हितार्थ भार्या रूप से कोई स्त्री करे आपने पहले

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

कहा भी था जब मैं गुणागार रुद्र रूप से प्रकट होऊँगा तब संहता का और स्त्री से विवाह कर संसार का कार्य करूँगा । अब अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण कीजिये । अतएव संसार का कार्य करने के लिये आप एक स्त्री ग्रहण कीजिये नारद ! जब मैंने ऐसा कहा तब विष्णु के समीप ही मुझसे शंकरजी बोले–विष्णु ! तुम दोनों मुझे बड़े प्रिय हो । परन्तु तुम दोनों ही सब देवोंमें श्रेष्ठ और तीनों लोकों के स्वामी हो। परन्तु देव श्रेष्ठो मुझे विवाह करना उचित नहीं प्रतीत होता क्योंकि मैं तपस्वी और विरक्त हूं । मुझ अवधूत को स्त्री से प्रयोजन ? विवाह लोक-बन्धन है । मेरी उसमें कुछ भी रुचि नहीं है । फिर भी लोक-कल्याण के लिए यदि हठ करोगे तो भक्तों के अधीन होने के नाते विवाह भी कर लूँगा । परन्तु पहले तो आप उस कामरूपिणी योगिन का तो उपदेश कीजिये कि जो विभाव पूर्वक मेरे तेज को श्रवण कर सके । जब मैं योगी होऊँ तब वह योगिनी हो जाय और जब मैं काम सक्त होऊँ तब कामिनी बन जाय । अन्यथा मेरा भविष्य चौपट हो जायगा । अस्तु पहले मेरी अनुसरण कर्ता स्त्री को आप ऐसा उपदेश तो करें कि वह मेरे वचनों की विश्वासिनी होगी या नहीं ? यदि उसे मेरे बचनों में विश्वास न होगा तो मैं उसे त्याग दूँगा । ब्रह्माजी कहते हैं कि जब शंकरजी ने मुझसे ऐसा कहा तब मैंने और विष्णु ने प्रसन्न हो हंसकर बड़ी नम्रता से उससे कहा कि नाथ आपके योग्य हम स्त्री बतलाते हैं । जिस लक्ष्मी ने पहले दो स्वरूप धारण किये थे वही अब तीसरे भिन्न रूप से उमा नाम से प्रकट हुई है । लक्ष्मी और रमा ने तो अपना पति बना लिया परन्तु उमा अभी किसी की भी स्त्री नहीं हुई है । अभी दक्ष की कन्या हुई है । सती उसका नाम है । वही महातेजस्वी सती तुम्हें अपना पति बनाने के लिए दृढ़-व्रती होकर तप कर रही है महेश्वर आप उस पर कृपा कर उसे वर देने जाइये । और इच्छित वर देकर उससे विवाह करें । ब्रह्माजी ने भी सती से विवाह करने के लिए शिवजी से अनुरोध किया । तब भक्तवसल सुवि-

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

ज्ञानी शंकर ने तथास्तु कह कर सबको विदा किया हम सब अपने २ लोक को चले आये।

॥ सत्रहवां अध्याय ॥

(उमा को वर प्राप्ति)

ब्रह्माजी बोले–सती ने फिर नन्दा का व्रत किया। तब शंकरजी प्रसन्न हो उसे दर्शन देने गये। शंकर को देख सती ने किंचित् लज्जा से शिर झुका उनके चरणों में प्रणाम किया। तब शिवजी बोले-सुव्रते! मैं तुम्हारे व्रत से प्रसन्न हूँ। तब तो सती और भी लाँज्जत हो गईं और उनके हृदय में जो था वह न कह सकीं। उनके अभीष्ट को लज्जा ने ढक दिया। वह शिव के बचन सुन प्रेम में मग्न हो गई। शिवजी यह जानकर प्रसन्न हो गये। सज्जनों के गम्य शिवजी ने फिर कहा वर माँगों, वर माँगों। तब सतीजी ने अपनी लज्जा त्यागकर कहा कि, हे वरद! आप वही वर दीजिये जो आपको अच्छा लगे। सती का वाक्य पूरा भी न हुआ था कि भक्तवत्सल शिवने 'तुम मेरी अर्द्धाङ्गिनी बनो' कह कर उन्हें यह वर दे दिया। मनोवाछिंत वर पाकर सती मौन हो गई। फिर कामनायुक्त शंकर के समक्ष खड़ी हो, मन्द-मन्द मुसकाती हुई सती कामवर्द्धक हाव-भाव करने लगीं। शिवजी में शृङ्गारिक भाव जाग्रत हो गया। फिर सती ने हाथ जोड़ भक्तवत्सल शिवजी से नम्रता पूर्वक कहा कि देवों के देव, महादेव! प्रभो! जगत्पते! मेरे पिता के समक्ष विवाह-विधि से आप मुझे स्वीकार करें। सती के बचन सुन भक्तवत्सल शंकरजी ने उन्हें प्रेमसे देखा और तथास्तु कहा। सतीजी मोह और हर्षसे युक्त हो शिवजी को समझा और उनसे आज्ञा ले माता के पास आईं। शिवजी हिमालय-शिखर पर अपने आश्रम में पहुँचे वहाँ पहुँच कर स्मरण किया। मैं उनके पास पहुँचा। भगवान शंकर ने मेरी ओर देख कर कहा कि–ब्रह्मा! तुम मेरी आज्ञा से दक्ष के पास जाकर कन्या देने का कोई शीघ्र उपाय करो। शिवाज्ञा पा मैं कृतार्थ हुआ शीघ्र ही दक्ष के घर पहुँचा। उधर सती अपने पिता के

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

पास शिवजी से प्राप्ति का समाचार कहला रही थीं और उसकी प्रसन्नता में उनके माता-पिता बड़ा उत्सव कर रहे थे तब तक सहसा मुझे वहाँ उपस्थित हुआ देख दक्ष ने शिर झुका प्रणाम किया और आसन देकर बैठाया तथा आगमन का कारण पूछा। तब मैंने दक्ष से शिवजी के लिए सती को देने का विचार कहा। उसे सुन मेरा पुत्र दक्ष बड़ा प्रसन्न हुआ कहा—ऐसा ही होगा मैं उत्कंठित शिव के पास लौटा।

॥ आठरहवां अध्याय ॥

(शिव-सती विवाह)

श्रीनारदजी बोले—तात फिर आपकी शिवजी से क्या बात हुई तथा शिवजी ने क्या किया? ब्रह्माजी बोले-मेरे पहुँचने पर वे प्राकृत मनुष्य के समान मुझसे सती की प्रेमपूर्ण बातें पूछने लगे और यह भी पूछाकि दक्ष ने क्या कहा है? तब मैंने उन्हें सान्त्वना देते हुए कहा कि, वृषभध्वज! आपका कार्य सिद्ध होगा। अतः हे वृषभध्वज! अब आप शुभ लग्न और शुभ मुहूर्त विचार कर उनके घर चल कर पाणिग्रहण कर लीजिये। इस पर शिवजी ने प्रसन्न होकर कहा—अच्छा, तुम्हारे और नारदजी के साथ मैं उनके घर चलूँगा इस अवसर पर आप अपने मरीचि आदि पुत्रों को भी बुला लीजिये और मेरे गणों को भी साथ ले चलिये, तब मैं दक्ष के घर चलूँ। मैंने अपने मरीचि आदि पुत्रों का स्मरण करते ही गरुण पर बैठे भगवान् विष्णु भी लक्ष्मी सहित चले आये। चैत्र शुक्ल त्रयोदश रविवार के दिन फाल्गुनी नक्षत्र में शिवजी ने वह यात्रा की। मैं ब्रह्मा और विष्णु आदिक सभी देवता और मुनि उनके साथ हुए। मार्ग में जाते हुए शिवजी की अत्यन्त शोभा हुई। देवताओं और शिवजी के गणों ने बड़ा उत्सव किया। फिर नन्दीश्वर पर आरूढ़ शिवजी देवताओं सहित शीघ्र ही दक्ष के घर पहुँचे। दक्ष ने बड़ी विधि से उनकी पूजा की दक्ष ने नवग्रहों के बल से शुभ लग्न में शिवजी के लिए सती का कन्यादान किया। समस्त देवता और मुनि स्तुति द्वारा शिवजी को प्रसन्न करने लगे। नृत्य-गान

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

नृत्य गान का बड़ा उत्सव हुआ।

।। उन्नीसवाँ अध्याय ।।

(ब्रह्माजी पर शिवजी का कोप)

ब्रह्माजी बोले—कन्या दान के बाद दक्ष ने शिव के लिये बहुत सा दहेज दिया। ब्राह्मणों को भी बहुत सा धन दिया। तब लक्ष्मी सहित विष्णु ने उठकर शिव के पास आ हाथ जोड़कर कहा कि-महादेवजी ! आप संपूर्ण ब्रह्मण्डों के पिता और सतीसबकी माता हैं। अतएव अब इस सती रूप शक्ति से देवताओं, मनुष्यों और सज्जनों का कल्याण कीजिये। तब शिवजी ने हँसकर कहा एवमस्तु। यह सुनकर विष्णुजी अपने स्थान को चले गये तदन्तर सती और शिवजी ने मेरी आज्ञा से यथाविधि अग्नि की प्रदक्षिणा की और गीत नृत्यादि अद्भु महोत्सव हुआ। शिवकी मायाने देवताओं, मनुष्यों और राक्षसों सहित सारे विश्व को मोहित कर दिया। मैं भी मोहित होगया। विवाह कराते समय दक्ष की पुत्री पतिव्रता सती को देखकर मैं कामवश हो गया और मुख देखने की इच्छा करने लगा। परन्तु पतिव्रता सती ने लज्जा से अपना मुख ऐसा ढँक रक्खा था कि मैं देख नहीं सकता था तब मुझ कामर्त ने उसका मुख देखने का उपाय विचारा और अग्नि कुण्ड में बहुत सा गीला समिधा डालकर थोड़ी सी घी आहुति दे दी जिससे गीले ईंधन से धुँवाँ उत्पन्न होने लगा और अन्धेरा हो गया। फिर सती के मुख ऐसा वस्त्र हटाकर मैंने उसका मुख देख लिया। मेरी इन्द्रियों में विकार हो गया। मेरे वीर्य की चार बूँदें पृथ्वी पर गिर पड़ी। शिवजी ने अपने दिव्य नेत्रों से मेरा पतन देख लिया तब उन्होंने क्रुद्ध होकर कहा--पापात्मा ! तूने यह क्या निन्दित कार्य किया ? विवाह के समय मेरी स्त्री का मुख अनुराग से देखा। ऐसा कह शिवजी ने मुझे मारने को त्रिशूल उठा लिया। मरीचि आदिक मेरे मानस पुत्र हाहाकार करने लगे। भयभीत हो देवता शंकरकी स्तुति करने लगे। दक्षने भी सामने जा हाथउठाकर शिवजी को शीघ्र ही

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

रोका। शिवजी ने कहा विष्णुजी के कहने के अनुसार मैं सत को कामदृष्टि से देखने वाले को मार डालूँगा। अतएव मैं इस अपराधी का वध करूँगा। शिवजी के ऐसा कहते ही सारे देवता काँप उठे। इसी क्षण विष्णुजी ने शिव की बड़ी स्तुति की। शंकरने कहा—बिष्णो! तुम मुझे प्राणों से भी प्रिय हो। मुझे हटाओ नहीं। इस दुष्ट को मारने दो। यह ब्रह्मा बड़ा दुष्ट है। अब सृष्टि को मैं ही रचूँगा अथवा अपने तेज से दूसरा ब्रह्मा बना लूँगा। इस पर विष्णुजी ने मुस्कराते हुए कहा कि, ईश! हम तीनों देवता आपही के स्वरूप हैं। न तो ब्रह्मा आपसे भिन्न हैं और न मैं तथा आप भी मुझसे भिन्न नहीं हैं। सर्वज्ञ! आप सब कुछ जानते हैं। आप शिव ही अनन्त और सर्व रूप हैं। बिष्णुजी के इस प्रकार बहुत कहने पर शिवजी ने मुझे नहीं मारा और वे महादेव फिर प्रसन्न हो गये।

* बीसवाँ अध्याय *

(ब्रह्माजी की विरूपता वर्णन)

ब्रह्माजी बोले—नारद! जब शिवजी ने मेरा बध नहीं किया तो सब देवता प्रसन्न हो जय-जय करते हुये शिव की स्तुति करने लगे। मैंने भी अनेकों स्तोत्रों से उनकी स्तुति की। तब भगवान शङ्कर ने प्रसन्न हो सबके सामने ही मुझसे कहा कि, तात ब्रह्मा! निर्भय हो जाओ और मेरी आज्ञा से अपना मस्तक स्पर्श करो। मैंने अपना मस्तक छूकर उन्हें प्रणाम किया। शिवजी मेरे मस्तक पर जा बैठे। इन्द्रादि देवताओं के देखते मैं लज्जित हो गया। फिर तो शिवजी की स्तुति मैंने उनसे क्षमा याचना की और इस पाप की शुद्धि का कोई उपाय पूछा शिवजी ने कहा—तुम मेरी आराधना का तप करो। रुद्र शिर से पृथ्वी में तुम्हारी ख्याति होगी और तुमसे तेजस्वी ब्राह्मणों ने कार्य सिद्ध होंगे। तुमने अपना वीर्यपात कर मनुष्यों जैसा कार्य किया है अतः तुम मनुष्य बनकर पृथ्वी पर विचरण करो। जो लोग तुम्हें इस रूप से देखें, वे यही कहेंगे कि शिवजी ब्रह्मा के शिर पर बैठे हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

और इससे लोग परस्त्री गमन भी नहीं करेंगे। इसी से तुम्हारे पापों की शुद्धि होगी और जो पृथ्वी पर तुम्हारे वीर्य की चार बूँदें गिरी हैं उनसे आकाश में प्रलय करने वाले चार बादल होंगे। १ सम्वर्त्त, २ आवर्त्तक, ३ पुष्कर, ४ द्रोण! ऋषियों के देखते ही ये मेघ बन गये। तब भगवान् शंकर और सती देवी शान्त हुए। फिर शंकर ने हाथ जोड़ दक्ष से सती सहित जाने की विदा माँगी। दक्ष ने बड़े उत्साह से अपनी पुत्री सती और शंकर को विदा किया।।

* इक्कीसवां अध्याय *

(शिवजी सती विहार)

नारदजी बोले–तात! शिवजी के विवाह से आगे शिवजी का चरित्र है, उसे भी सुनाइये। ब्रह्माजी ने कहा—कैलाश में पहुँचकर सती जी ने सब गणों को आश्रम से दूर जाकर रहने की आज्ञा दी। शंकर जी ने भी कहा कि–अच्छा जाओ, पर जब मैं स्मरण करूँ शीघ्र ही आ जाना। नन्दी आदिक गण अपने स्थान को चले गये। तब एकान्त पाकर शिवजी सतीके साथ रमण करने लगे। कभी पुष्पो की माला सती को पहनाते, सती देखती तो शिवजी उनके पीछे खड़े हो जाते और सती के मना करने पर भी वे उनके कुण्डलों को हाथ लगा देते, शंकरजी कभी दूर न जाते और छिपकर सतीजी के पीछे खड़े होते। अपनी प्रिया सती के साथ विचरते। सती के बिना शंकर को एक क्षण के लिये भी सुख नहीं मिलता। इसी प्रकार कुछ समय तक कैलाश कुंजों में बिहार कर शिवा सहित शिव ने हिमालय पर भी जाकर आनन्द–विहार किय। विहार में पच्चीस वर्ष व्यतीत हो गये।

* बाईसवां अध्याय *

(शिव—सती का हिमालय गवन)

ब्रह्माजी बोले–एक दिन जब वर्षा हो रही थी तब कैलाश शिखर

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

पर बैठे महादेवजी से सती ने पूछा कि, प्राण बल्लभ ! अब वर्षा काल आ गया है, इससे कैलाश में, हिमालय में अथवा पृथ्वी में जहाँ कहीं, रहने योग्य स्थान हो वहाँ चलकर रहिए। सती की यह प्रार्थना सुनकर कैलाशवासी दीनों के दुःखहरता भगवान् शङ्करने हास्य करते हुए सती से कहा कि प्रिये ! जहाँ मैं तुम्हारे साथ रहूँगा वहाँ मेघ कभी न जायेंगे। वर्षा काल में भी मेघ हिमालय के नितम्ब पर ही भ्रमण करते रहेंगे। यह जान कर आप चाहे जिस गिरीन्द्र पर चलने को कहिये। पर मेरे विचार से हिमालय सर्वोत्तम है। यहाँ आपके बिविध श्रङ्गार और विहार होंगे। योगी और मुनि ही वहाँ रहते हैं और अनेकों मृग भी विचरा करते हैं तथा और भी बहुत से स्थान हैं। क्या तुम मेरे कैलाश के ऊपर कुबेर की पुरी के ऊपरी भाग में स्थिर होना चाहती हो ? यहाँ की कंदराओं में देव कन्यायें गाती रहती हैं। सुमेरु भी सब गुणों से सुन्दर है। जहाँ कहो वहाँ पर तुम्हारा प्रबन्ध करदूँ। ब्रह्माजी कहते हैं कि जब भगवान शङ्कर ने ऐसा कहा तब सतीजीने कहाकि हे नाथ ! मैं आपके साथ हिमालय में ही निवास करना चाहती हूँ। उसी पर्वत पर आप शीघ्र चलिये। सती के कहने पर भगवान् शीघ्र चलिदिये। वहाँ रहकर भगवान् शङ्करजी सती के साथ बहुत दिन तक रमण करते रहे। उनके वहीं इस प्रकार दस हजार वर्ष व्यतीत होगये। अब वे यज्ञ तप और स्वरूपर-चिन्तन त्याग सती ही में अनुरक्त हो गये।

।। तेईसवां अध्याय ।।

(शास्त्रों के मोक्षादि वर्णन)

ब्रह्माजी बोले–विहारोपरांत शिव-सती बैठे वर्तालाप कर रहे थे कि शिवजी को प्रसन्न देख सती बड़ी नम्रता भक्ति के साथ बोलीं-हे करुण सागर महादेवजी ! बड़ी भक्ति से आप मुझे मिले हैं। आप से विहार कर मैं बड़ी सन्तुष्ट इससे अब मेरा मन तत्वों की खोज करता

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

है। हर ! यह जीव संसार कैसे पार पा सकता है। विषयी जीव भी जिसे पाकर परमपद की प्राप्ति कर लेता है वह तत्व क्या है मुझे सुनाइये। शिवजी प्रेम पूर्वक सती से बोले–कि महेश्वरी ! विज्ञान ही परम तत्व है। दूसरा स्मरण केवल ब्रह्म का स्मरण ब्रह्म साक्षात परे से परे है। भक्ति विज्ञान की माता है। भक्ति का विरोध कभी भी विज्ञान को नहीं पा सकता। मैं उसी भक्ति के आधीन हूँ। यह भक्ति भी दो प्रकार की है। सगुण और निर्गुण। इसमें पहली श्रेष्ठ है। इसके भी दो-दो भेद हैं। फिर इसके छः और उसके अनेकों भेद पण्डितों ने कहा है। इसमें से भक्ति के नौ अङ्गों को मैं कहता हूँ। श्रवण कीर्तन, स्मरण सेवन दास्यभाव अर्चना, बन्दना सख्यता और आत्मसमर्पण। सब में भक्ति की विशेषता है। परन्तु कलियुग में तो भक्ति विशेष फलदायक होती है। संसार में जो मेरी भक्ति करता है, मैं सदैव उसकी साहता करता हूं। इसलिए तो मैंने काल को तीसरे नेत्र से जला दिया था। भक्त के लिए ही तो मैंने रावण का त्याग कर दिया और कुछ भी पक्ष पात न किया भक्ति के कारण ही तो मैंने व्यास को नन्दीश्वर से दण्ड दिलवाकर काशी से बाहर करा दिया। अधिक क्या कहूं मैं भक्ति ही में हूँ। भक्ति की ऐसी-ऐसी महिमा सुनकर दक्ष पुत्री सती बहुत प्रसन्न हुई। उन्होंने मनमें ही प्रणाम किया। फिर भक्ति कारण लोक में सुखदायक और जीवों के उद्धार की बात पूछी। जन्म मन्त्र शास्त्र और विशेषताया उनका महात्म्य पूछा। सती के ऐसे प्रश्नो को सुनकर शिवजी बहुत प्रसन्न हुये और उन्होंने जीवों के उद्धारार्थ प्रेम पूर्वक कहना आरम्भ किया। उन्होंने इतिहास कथा भक्तों का महात्म्य और वर्णाश्रम धर्म सहित राज धर्म पुत्र और स्त्री धर्म आदि वेदों, शास्त्रों और ज्योतिष शास्त्र, सामुद्रिक शास्त्र तथा अन्यायन्य शास्त्रों को तत्वत कहा। इस प्रकार हिमालय पर क्रीड़ा करते हुए सती और शिव ने और दूसरे स्थानों में बिहार किया।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

* चौबीसवाँ अध्याय *

(सती-शङ्का)

नारदजी ने कहा—महा ब्रह्मन् ! अब आप मुझे सती शिव के अन्य चरित्र सुनाइये। ब्रह्माजी बोले—नारद जब एक समय लीलाधारी शंकर सती के साथ नन्दीश्वर पर बैठे हुए त्रिलोक भ्रमण कर रहे थे तो दंडक वन में पहुँचने पर उन्होंने सतीको वहाँ की वह भूमि दिखलाई कि जहाँ से रावण सीता को हर ले गया था और भगवान् राम सीता के वियोग में लताओं और वृक्षों से भी उनका परिचय पूछते हुए सीता का पता लगा रहे थे। तब सती को यह सब बतलाते हुए देवाधिदेव शङ्कर जो वहाँ से आगे बढ़े तो उन्हें भाई लक्ष्मण के साथ सीता को खोजते हुए भगवान् श्रीराम दिखाई पड़े और जो उसी प्रकार बिरही थे। शिवजी ने दूसरे मार्ग से आगे जाकर प्रणाम किया और श्री रामचन्द्र को अपना दर्शन किया। यह देख सती शिवजी की माया से मोहित होगई और उन्होंने मुस्कराते हुए शिवजी से कहा कि हे परमेश्वर ! आप तो सब देवताओ से प्रेणम्य और सर्वोच्च हैं। फिर विरही मनुष्य की तरह वनमें विचरते हुए इन दोनों मनुष्यों को आपने क्यों किया? वे दोनों कौन थे। हे स्वामिन ! इस शंका को निवारण कीजिये। सती को इस प्रकार माया से विमोहित हुआ देख भगवान् शिव मुस्कराते हुए बोले हे देवी ! सुनो मैंने जो इन्हें सादर प्रणाम किया है। सूर्य-वंश में उत्पन्न हुए ये दोनों भाई दशरथ के पुत्र हैं। राम और लक्ष्मण इनका नाम है। गोरे रङ्ग का छोटा भाई लक्ष्मण है। श्रीराम बड़े ही शान्त और विष्णु के साक्षात अवतार हैं। ये पृथ्वी पर साधुजनों की रक्षा और हमारे कल्याण के लिये ही अवतरित हुए हैं ! इतना कहकर भगवान् शंकर मौन होगये। परंतु सतीजी के मनमें विश्वास नहीं हुआ। तब सती के अविश्वास चित्त को देकर भगवान् शिव ने कहा कि देवि ! यदि तुमको मेरे बचनों में विश्वास नहीं है तो जाकर अपनी

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

बुद्धि से श्रीराम परीक्षा करो। हे प्रिये ! जैसे तुम्हारा यह मोह दूर हो वैसा उपाय करो। मैं तब तट वट की छाया में बैठकर तुम्हारी वाट जोहता रहूंगा फिर तो शिवजी की आज्ञा पाते ही सतीजी रामकी परीक्षा करने चलीं और वहां जाकर विचारने लगी कि, किस प्रकार परीक्षा लूँ। उन्होंने सोचा कि में सीताका रूप धारण कर रामके समीप जाऊँ। यदि श्री राम साक्षात् विष्णु के अवतार होंगे तो मुझे पहचान लेंगे अन्यथा नहीं। वह सीता का रूप धारण कर परीक्षा के लिये राम के पास गई। तब सती को सीता के रूप में देख शिव का नाम जपते हुए श्रीरामचन्द्रजी ने यह रहस्य जानते हुए उन्हें प्रणाम करके मुस्कराते हुये कहा कि, हे सती ! इस समय शिवजी कहाँ हैं जो तुम पति के बिना अकेली इस वन में फिर रही हो। हे सती ! आपने अपना रूप त्यागकर यह रूप क्यों धारण कर लिया है राम के इन बचनों को सुनते ही सती चकित होगई और उन्हें शिव के बचनों का स्मरण कर बड़ी लज्जा आई। अब वे रामको साक्षात् विष्णु समझ उनसे बोलीं कि राम ! मैंने तुम्हारी प्रभुता देख ली। परन्तु आप मुझे यह बतलाइये कि शिव जी ने आपको प्रणाम क्यों किया सती के बचन सुन श्रीराम के नेत्र हर्ष से प्रफुल्लि हो गये।

* पच्चीसवाँ अध्याय *

(शिवजी का सती से वियोग)

श्रीराम बोले—देवि ! एक समय बहुत पहले, शिवजी ने अपने लोक में विश्वकर्मा को बुलाकर उसमें एक मनोहर गोशाला बनवाई और उस में एक मनोहर विस्तृत भवम और उसमें एक दिव्य सिंहासन तथा सब से अद्भुत एक दिव्य श्रेष्ठ छत्र भी बन वाया। फिर इन्द्रादिक सब देवताओं शास्त्रों तुत्रों सहित ब्रह्मा मुनियो देवियो और अप्सराओ को बुलाया अनेक वस्तुओ का भी संग्रह करवाया। नागो की सोलह कन्याओं ने मङ्गलाचार किया और सगीतज्ञो ने बीणा मृदङ्ग आदि बाजे बजा

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

कर सङ्गीत गान कराया। इस प्रकार का बड़ा समारोह और उत्सव किया राज्याभिषेक की सारी सामग्रियाँ एकत्रित हुईं और तीर्थों के जल से भरे घड़े मँगाये तथा अन्याय दिव्य सामग्रियां भी अपने गणों से मँगवाई। फिर बड़े घोर शब्दवाला शंख बजाकर प्रसन्नता से बैकुण्ठवासी विष्णु को बुलवाया। फिर एक उत्तम मुहूर्त देखकर भक्ति से पूर्ण शङ्कर ने विष्णुजो को श्रेष्ठ सिंहासन पर बिठा बहुत से अलङ्कार पहनाये और उनके शिर पर मुकुट बांध उनका अभिषेक किया। भगवान् शङ्कर ने उनकी बड़ी स्तुति की और जगतकर्त्ता ब्रह्मा से कहा कि, मेरी आज्ञा से अब सब देवताओं के साथ तुम भी उन्हें प्रणाम करो और वेद ने जैसे-जैसे मेरा वर्णन किया है, वैसे ही अब इनका वर्णन करो। ब्रह्मा से ऐसा कह भगवान् शंकर ने भक्ति से प्रसन्न हो विष्णु को प्रणाम किया। उस समय ब्रह्मादिक भी देवताओं और मुनियों ने विष्णु की बन्दना की। शिवजी ने बिष्णुजी को अनेक वरदान दिये। सभी लोकों का कर्त्ता, भर्त्ता और संहर्त्ता बनाया। अपनी सारी माया दी। अनेकों अवतार लेकर संसार का पालक बनाया। अपने लोकों में गोलोक नामक स्थान दिया और कहा कि विष्णो! पृथ्वी पर आपके जितने भी अवतार होंगे मेरे भक्त आदर पूर्वक उनका दर्शन करेंगे। इस प्रकार विष्णु को अखण्ड ऐश्वर्य देकर अपने गणों सहित शंकर कैलाश को चले गये।

उसी समय से भगवान् विष्णु ने गोप वेष धारण किया। गोपों गोपियों और गौओं के स्वामी बने। इस समय शिवजी की आज्ञा से उन्होंने चार अवतार धारण किये हैं पहले में राम, तीन में भरत लक्ष्मण और शत्रुघ्न हैं। देवि! मैं पिता की आज्ञा से लक्ष्मण और सीता सहित बन में आया हूं। किसी राक्षस ने मेरी पत्नी सीता को चुरा लिया है भाई के साथ मैं वियोगी बना उन्हें इस वन में ढूँढ़ रहा हूँ। माता! आपका दर्शन पाकर मेरा कल्याण हुआ। यदि आपकी कृपा रही तो सर्वदा मङ्गल ही होगा। इस प्रकार

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

बहुत कुछ कहकर सतीजी को प्रणाम कर रामचन्द्रजी वन में विचरने लगे। सतीजी ने उन्हें शिवभक्त जान उनकी बड़ी प्रशंसा की। फिर अपने किये पर पश्चताप करती हुई शिवजी के पास लौट आईं। सतीजी को चिन्ता थी कि अब शिवजी के समीप जा उन्हें क्या उत्तर दूँगी। ऐसा बारम्बार बिचार कर सती जी पछताने लगीं। फिर शिवजी के पास जाकर उन्हें हृदय में प्रणाम किया। शोक से व्याकुल उनके मुख की शोभा क्षीण हो गई। तब उन्हें दुःखित देख शिवजी ने पूछा, कुशल तो है न? कहिये आपने किस प्रकार परीक्षा ली। सती ने शिर झुका लिया और कहा कुछ नहीं। वह शोक से सन्तप्त हो शिवजी के पास जा खड़ी हुईं। महायोगी शिव ने ध्यान से सती का चरित्र ज्ञात कर लिया। उन्होंने सोचा अब यदि मैं सती को पूर्ववत् स्नेह करूँ तो मेरी शुद्ध प्रतिज्ञा भङ्ग हो जायेगी। वेद धर्म के पालक शिवजीने यह विचार कर सती को मन से त्याग दिया। फिर सती से कुछ न कहके कैलाश की ओर बढ़े। मार्ग में सबको और विशेष कर सतीजी को सुनने के लिए यह आकाशवाणी हुई कि, महायोगिन! आपको धन्य है। आपके समान तीनों लोक में ऐसा प्रण-पालक कोई नहीं हैं। यह अकाशवाणी सुनते ही सती, कान्ति-हीन होगईं।

फिर उन्होंने शिवजी से पूछा—कि नाथ! आपने कौन सा प्रण किया है, मुझसे कहिये। परन्तु सतीजी के पूछने पर भी शिवजी ने ब्रह्म विष्णु के आगे की हुई अपनी पूर्व प्रतिज्ञा को न बतलाया। फिर तो सतीजी ने अपने प्राण प्रिय शङ्कर का मनमें ध्यान करके अपने त्याग की सारी बातें जानलीं। शिवजी द्वारा अपना त्याग समझ उनके मन में बड़ा दुःख हुआ। वह शीघ्र ही दीर्घ निःश्वाँस लेने लगीं। तब समझ शिवजी सब सती का मन बहलाने के लिए अनेकों कथायें कहने लगे। फिर कैलाश में पहुँच समाधि लगा अपने रूप का ध्यान करने लगे। सती भी उनके निकट ही खिन्न चित्त से बैठी रहीं। सती और शिव के इस चरित्र को किसी ने नहीं जाना बहुत

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

समय व्यतीत हो गया। जब शिवजी ने समाधि खोली तो निकट जाकर सती ने शिवजी को प्रणाम किया। उदार बुद्धि शङ्कर ने उन्हें अपने सन्मुख आसन दिया। बहुत सी कथायें कह कर सती को शोक मुक्त किया। परन्तु शिवजी ने सत्यता न छोड़ी।

* छब्बीसवाँ अध्याय *

(दक्ष का शिव से विरोध)

ब्रह्माजी बोले—पूर्वकाल में प्रयाग में एकत्र होकर मुनियों ने एक महान यज्ञ किया, जिसमें मैं भी सम्मिलित हुआ। अनेक शास्त्रों में ज्ञानकाण्ड पर विचार हुआ। अपने गणों को साथ लिये शिवजी भी सती सहित उसमें आये। सबने भक्ति पूर्वक उन्हें प्रणाम कर उनकी स्तुति की। इसी समय प्रजापतियों के स्वामी दक्ष भी वहाँ आ पहुँचे और उन्होंने केवल मुझे ही प्रणाम किया और मेरी आज्ञा से वे बैठ गये। फिर सबने दक्ष की बड़ी पूजा की। परन्तु महेश्वर अपने आसन पर बैठे रहे और उन्होंने दक्ष को प्रणाम नहीं किया। इससे दक्ष को बड़ा क्रोध आया। उन्होंने सभा के मध्य में सबको सुनाते हुए शिवजी को बहुत कुवाक्य कहा कि यह पाखण्डी दुर्जन, पापशील, ब्राह्मण-निन्दक, सर्वदा स्त्री में आसक्त है। सम्बन्ध से मेरा पुत्र होते हुए भी इसने मुझको प्रणाम नहीं किया, अतः मैं इसे शाप दूँगा। ब्राह्मणों और देवताओ! तुम भी सुनो मैं इसे बहिष्कृत करता हूँ। अब आज से यह देवताओं के साथ भाग नहीं पावेगा। यह सुनते ही नन्दीश्वर की आँखें लाल हो गईं। उसने दक्ष को बहुत डांटा और फटकारा दक्ष नन्दीश्वर को शाप देने लगे। शिवजी के समस्त गणों को भी उन्होंने शापति किया। नन्दीश्वर को और भी क्रोध आ गया। उनसे दक्ष से कहा—दुष्ट! तू शिवतत्व को नहीं जानता? मूर्ख! यह जो तूने भृगु आदि ऋषियों के मध्य में इस महाप्रभु भगवान् शंकर का उपवास किया इससे शिवजी के प्रभावसे मैं भी तुझे शापदेता हूं कि तुम सब ब्राह्मण वेद का वास्तविक अर्थ न समझकर केवल आशीर्वाद पर

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

ही विश्वास करोगे। जब क्रुद्ध नन्दीश्वर ने इस प्रकार ब्राह्मणों को शाप दिया। तब वहाँ बड़ा हाहाकार मच गया और दक्ष ने जो पहले ही शंकर को शाप दे दिया था। भगवान् शंकर नन्दीश्वर को समझाते हुए बोले कि, महाप्राज्ञ! तुम्हें क्रोध नहीं करना चाहिए था। मैं ब्राह्मण और वेद को शाप नहीं देता। तुम यह यथार्थ में जानलो कि दक्ष का शाप मुझे नहीं लगा है तुम जन्तु सम हो ओ। नन्दीश्वर शांत हुआ शिवजी अपने सब गणों को साथ ले निजधाम को चले गये। दक्ष भी अपने स्थान को चला गया। अब प्रजापति दक्ष शिव-निन्दक हो गया।

* सत्ताईसवाँ अध्याय *

(दक्ष यज्ञ)

ब्रह्माजी बोले—नारद! इसी बात को लेकर कनखल नामक तीर्थ में प्रजापति दक्ष ने एक बहुत बड़ा यज्ञ किया जिसमें भृगु आदि तपस्वियों को ऋत्विज बनाया गया। गन्धर्वों, विद्याधरों, सिद्धगणों यज्ञों, आदित्य समूहों और सभी नागों को दक्ष ने अपने इस महायज्ञ में वरण किया था। अगस्त्य, कष्यप, अत्रि, वामदेव, भृगु, दधीचि, भगवान् व्यास, भरद्वाज, गौतम, पैल, पराशर, गर्ग, भार्गव, ककुपसित, सुमंतु त्रिक, कंक और वैशम्पायन ये सभी ऋषि मुनि मेरे पुत्र के यज्ञ में आये। मैं भी सपरिवार और बैकुण्ठ से श्री विष्णुजी भी अपने पार्षदों और परिवार सहित आये उसी प्रकार अन्यान्य सभी देवता दक्ष के यज्ञ में पधारे। परन्तु दुरात्मा दक्ष ने उस यज्ञ में शिवजी को नहीं बुलाया और यह कह दिया कि वे कृपालधारी हैं। शिवजी से छिद्र देखने वाले दक्ष ने अपनी प्रिय पुत्री सती को नहीं बुलाया कि वह कपाली की भार्या है जब इस प्रकार यज्ञ आरम्भ हुआ तब उसमें भगवान् शंकर को न आया देख शिवभक्त दधीचि ने सब देवताओं और ऋषियों से पूछा कि, इस यज्ञ में भगवान् शिव क्यों नहीं

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

आये हैं। दधीचि के ये वाक्य सुनकर मूढ़ बुद्धि दक्ष ने मुस्करा कर कहा—देवताओं के मूल विष्णु जी तो आही गये हैं, फिर शिव की मुझे क्या आवश्यकता है? मैंने ब्रह्माजी के कहने से उसे अपनी कन्या देदी। नहीं तो उस अकुलीन माता-पिता से रहित, भूत-प्रेतों के स्वामी, आत्माभिमानी, मूर्ख, स्तब्ध, मौनी और ईर्ष्या करने वाले को कौन पूछता? वह इस यह कर्मके कदापि योग्य नहीं है और इसलिये मैंने उसे नहीं बुलाया है मेरे इस यज्ञ को तो आप सब लोग ही मिलकर सफल बनावें। दक्ष के ऐसा कहने पर दधीचि ने सब मुनियों की सुनाते हुए कहा कि, तुम चाहे जो कहो, पर भगवान् शङ्कर के बिना तो यह यज्ञ अपूर्ण ही रहेगा और इससे तुम नाश को भी प्राप्त होगे। ऐसा कह दधीचि ऋषि उस यज्ञ से अकेले ही निकल कर अपने आश्रम को चले गये और इस प्रकार वहाँ जितने भी शिव-भक्त थे वे सब भी दक्ष को शाप देते हुए अपने-अपने आश्रम को चले गये। दक्ष हँसने लगा। फिर उसने अन्य मुनियों से कहा कि शिव-भक्त दधीचि चला गया, यह अच्छा हुआ। मैं तो वहिष्कृतों को अपने यज्ञ में चाहता ही नहीं। विष्णु आदि आप सभी लोग वेद के वक्ता हैं मेरे यज्ञ को सफल बनाइये। दक्ष की इस बात को सुनकर सब देवता और मुनीश्वर शिवजी की माया से मोहित हो गये। उन्होंने देवताओं की पूजा आरम्भ करा दी।

* अट्ठाईसवां अध्याय *

(सती का दक्षके यज्ञ में आना)

ब्रह्माजी बोले—जिस समय देवता और ऋषिगण दक्ष के यज्ञ में उत्सव करते हुए जा रहे थे, उस समय दक्ष-पुत्री सती अपनी सखियों के साथ गन्धमादन पर्वत पर धारागृह में कौतुक पूर्वक अनेक क्रीड़ायें कर रही थी। उस समय सती ने देखा कि रौहिणी से आज्ञा लेकर चन्द्रमा भी दक्ष के यज्ञ में जा रहे हैं। तब सती ने अपनी बिजया नामक सखी से पूछा—कि रोहिणी से आज्ञा लेकर चन्द्रमा कहाँ जा रहे

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

हैं तो सती के बचन सुनकर विजया शीघ्र ही चन्द्रमा के पास गई और उससे पूछा। चन्द्रमा ने दक्ष महोत्सव में जाने का वृत्तांत कह सुनाया। उसे सुन विजया ने आकर सती से कह दिया। यह सुन सती बड़ी विस्मित हुईं और बार-बार शिवजी के लिए आमन्त्रण न आने का कारण विचार कर हृदय में चिन्ता करने लगीं वह शिव के पास आईं और बोली कि, मैंने सुना है कि मेरे पिता ने एक महायज्ञ रचा है, सभी देवता और ऋषिगण उसमें एकत्र हुए हैं। आपको मेरे पिता के यज्ञ में जाना क्यों नहीं सुहाता है आप इसका कारण मुझे शीघ्र बतलाइये। सब काम छोड़कर आप मेरी प्रार्थना से मेरे साथ पिता के यज्ञ में चलिये। सती के ये बचन शिवजी के हृदय में बाण से लगे। फिर भी वे इस प्रकार प्रिय बचनों में बोले कि, देवि! तुम्हारे पिता दक्ष मुझसे बिशेष वैमनष्य रखते हैं। इसी कारण उन्होंने मुझे निमन्त्रण नहीं दिया है और जो बिना बुलाये दूसरों के घर जाते हैं वे मरण से भी अधिक अपमान पाते हैं। इस कारण हमें और तुम्हें दक्ष के यज्ञ में नहीं जाना है यह सुन सतीजी क्रुद्ध हो गईं और शिवजी से बोलीं—शम्भो! आपही से यज्ञ सफल होता है। परन्तु इस पर भी मेरे दुष्ट पिता ने आपको नहीं बुलाया। अतएव मैं दुरात्मा अपने पिता और यज्ञ में आये दुरात्मा देवताओं और ऋषियों का यह अभिप्राय जानना चाहती हूँ कि उन्होंने ऐसा क्यों किया? नाथ! इसके लिए मैं अपने पिता के यज्ञ में जाती हूँ। परमेश्वर! आप मुझे इसकी आज्ञा दीजिये सतीजी का यह विचार देख सर्वज्ञ भगवान् शङ्कर बोले-देवि! यदि तुम्हारी वहाँ जाने की इच्छा ही है तो मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि अपने पिता के यज्ञ में जाओ नन्दीश्वर को सजाकर इस पर चढ़कर महाराजाओं के ठाट-बाट से, अपने सब आभूषण पहन कर जाओ। जब शिवजी ने इस प्रकार कहा तब सतीजी वस्त्राभूषण धारण कर पिता के घर चलीं। शिवजी ने साठ हजार रौद्र गणों को उनके साथ कर दिया।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* उन्तीसवां अध्याय *

(सती का अपमान)

ब्रह्माजी बोले–अब सतीजी वहाँ जा पहुँची, जहाँ बिशाल यज्ञ हो रहा था। सती को देखकर उनकी माता असक्नी तथा बहिनों ने यथोचित सत्कार किया परन्तु दक्ष तथा उनके अनुयायियों ने कुछ भी आदर नहीं किया। परन्तु सती ने समान रूप से माता-पिता को प्रणाम किया, यद्यपि वह हृदय से दुःखी थीं। क्योंकि उन्होंने यज्ञ में विष्णु आदि सब देवताओं का पृथक २ भाग देखा परन्तु शम्भु का भाग नहीं देखा। इससे सती को बड़ा क्रोध आया। फिर तो वह सभी को क्रूर दृष्टि से देखते हुए बोलीं कि, पिताजी ! आपने भगवान् शंकर को क्यों नहीं बुलाया। जो स्वयं यज्ञ स्वरूप, यज्ञांग और यज्ञों के दक्षिणा स्वरूप हैं ! बिना उनके आये आपने इस यज्ञ का संपाकन ही कैसे कर लिया ? नीच पिता ! आप आपकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई। अभी तो इस समय आपने उन शंकर को नहीं पहचाना। फिर ये ब्रह्मा, विष्णु आदि देवता और मुनीश्वर भी बिना शिवजी के तुम्हारे यज्ञ में सम्मिलित होने कैसे चले आये ? इस प्रकार कहकर शिवस्वरूप सती ने सब देवताओं को धमकाया। दक्ष अपनी पुत्री के ये वचन सुनकर क्रुद्ध हो उसे बक्र दृष्टि से देखते हुए बोले–भद्रे ! बहुत कहने से क्या लाभ। तू यहाँ चली क्यों आई ? चाहे यहाँ रह, चाहे चली जा। मुझसे तेरा कोई प्रयोजन नहीं है। तेरा पति तो भूत प्रेतों का राजा है जो वेद वहिष्कृत अकुलीन और अमाङ्गलिक है। इसी कारण तेरे कुवेषधारी पति शिव को मैंने यज्ञ में नहीं बुलाया। फिर तो जगत को उत्पन्न करने वाली देवी अत्यन्त क्रुद्ध हो अपने पितासे इस प्रकार बोलीं कि–पिताजी जो शिवकी निन्दा करता अथवा सुनता है वे दोनों ही नरकगामी होते हैं। अपने स्वामी का अपमान सुनकर मेरे जीने से ही क्या लाभ होगा ? अतएव मैं अग्नि में प्रवेष कर इस शरीर को त्याग कर दूँगी। यदि मनुष्य में कुछ भी शक्ति हो तो वह शिवजी की निन्दा सुनते ही उस

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

शिव-निन्दक की जिव्हा को काट ले। तभी उसका प्रायश्चित् दूर होता है। यदि असमर्थ हो तो कान मूँदकर कहीं चला जावे। इस प्रकार धर्म नीति कह कर परम- दुःखिता सती शिवजी के कहे हुए बचनों का स्मरण कर वहाँ आने का पश्चाताप करने लगीं।

* तीसवां अध्याय *

(सती का देह त्यागना)

श्री नारदजी बोले–ब्रह्मन्! जब सतीजी ऐसा कहकर मौन हो गईं तब क्या हुआ? ब्रह्माजी बोले—जब सती अपने पति शंकर का स्मरण कर मौन हो गईं तब शान्त चित्त हो वह सहसा पृथ्वी पर उत्तर की ओर मुख करके जा बैठीं और आचमन कर नेत्र बन्द कर लिए शरीर त्यागने की इच्छा से योगिन द्वारा शीघ्र ही अपने शरीर को भस्म कर डाला। फिर तो आकाश और भूमि पर देवताओं और मुनियों को भयभीत करने वाला अद्भुत् हाहाकार मच गया। उधर सतीको प्राण छोड़ते ही शिवजी के गण हाथ में शस्त्र लेकर उठ खड़े हुए और सब दिशाओं में प्रलय मचाने लगे कोई शोक से व्याकुल हो अपने ही अङ्गों को छेदने लगे। सती के साथ ही साठ हजार में से बीस हजार शिवके गण स्वयं ही दुःखसे कातर हो नष्ट हो गये। फिर जो मरने से बच गये थे वे क्रुद्ध हो शस्त्र उठा दक्षको मारने दौड़े। उनके इस आक्रमण को देख विघ्नों की शाँति के लिए महर्षि भृगु वेद मन्त्रों से अग्नि में आहुतियाँ देने लगे जिससे महाबल शाली ऋभु नामक बहुत से असुर उत्पन्न हो गये। उनसे शिवगणों का युद्ध होने लगा उन्होंने शिवजी के गणों की शक्ति क्षीण कर दी।

* इकतीसवाँ अध्याय *

(आकाशवाणी)

ब्रह्माजाने कहा–तब दक्षादि देवताओं को सुनाते हुए यह आकाशवाणी हुई कि–हे मुर्ख दक्ष! तूने यह बड़ा अनर्थ किया है। अपने घर में स्वतः आई, साक्षात् मङ्गल स्वरूपा अपनी पुत्री सती को तुने

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

अपमान किया। रे मूख ! तूने सती और शङ्कर का पूजन नहीं किया। तुझे तो शङ्कर की अर्द्धाङ्गिनी सती का आदर ही करना योग्य था। वह अनादि शक्ति जगत, की सृष्टा, राधिका और कल्पान्त में संहारिका है। इसी प्रकार भगवान् शंकर ही सबके स्वामी और सब देवों के कल्याणकर्ता हैं जिनके दर्शन मात्र से सब यज्ञों का फल प्राप्त हो जाता है। परन्तु तुझ दुष्ट ने उनका सत्कार नहीं किया। इस कारण तेरा यज्ञ नष्ट हो जावेगा क्योंकि जहाँ पूज्यों की पूजा नहीं होती वहाँ अमङ्गल ही अमङ्गल होता है। दक्ष ! जो तू यह समझता था कि शंकर की पूजा किये बिना मैं अपना कल्याण कर लूँगा अब तेरा वह सर्व चूर्ण-चूर्ण हो जायगा ! सर्वेश्वर शिव से विमुख होने पर कोईभी देवता तेरी सहायता करने योग्य नहीं है।

* बत्तीसवाँ अध्याय *

(वीरभद्र तथा महाकाली)

नारदजी बोले–ब्रह्माजी ! उस आकाश वाणीको सुनकर दक्ष तथा अन्यों ने क्या किया ब्रह्माजी ने कहा-उस वाणी को सुनकर सभी देवता और मुनि आश्चर्य करने लगे और शिवजी की माया से किसी के मुँह से एक शब्द भी न निकला। इधर भृगु के मन्त्रों से उत्पन्न भृगु गणों द्वारा भगाए गए शिवजी के गण शिवजी की शरण में गए और सती शरीर त्याग आदि का सारा वृत्तांत कह सुनाया उसे सुन पराक्रमी शङ्कर के क्रोध का अन्त न रहा लोक संहारकारी शङ्कर ने अपनी एक जटा उखाड़कर उसे एक पर्वत पर दे मारा जिससे उसके दो खण्ड होगये और प्रलयकाल के समान एक भयंकर शब्द के साथ महाबलशाली वीरभद्र उत्पन्न हो गये। फिर जटा के दूसरे भाग से अत्यन्त भयंकर और करोड़ों भूतों से घिरी हुई महाकाली उत्पन्न हुई। तदनन्तर महाबली वीरभद्रने शिवजी को प्रणाम कर हाथ जोड़ निवेदन किया कि प्रभो ! मैं क्या करूँ, मुझे शीघ्र आज्ञा दीजिये ? यह सुन मङ्गलोपति भगवान् शिव वीरभद्र को आशीर्वाद देकर बोले–तात,

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

वीरभद्र ! ब्रह्मा का पुत्र दुष्ट दक्ष यज्ञ कर रहा है जो बड़ा अहङ्कारी और मेरा विरोधी है। तुम जाकर उसके यज्ञ, गन्धर्व, कोई वहाँ हो तो आज उन सब को भस्म कर डालो तथा ब्रह्मा,विष्णु, इन्द्र, यम कोई भी बचने न पावे। तुम्हारे वहाँ पहुँचने पर विश्वदेवा आदि तुम्हारी स्तुति करेंगे। परन्तु तुम उन्हें भी भस्म करके शीघ्र ही मेरे पास चले आना। जो देवता दधीचि ऋषि कहने पर भी मेरे विरोधक बने वहाँ बैठे हैं उन्हें अकुला कर अग्नि में जला डालना और वीर ! दक्ष को तो उसकी पत्नी और बांधवों सहित जलाकर पुनः तिल-मिलाकर तिलाञ्जलि दे आना। वीरभद्र से ऐसा कहकर क्रोध से आँखें लाल किए हुए भगवान् शंकर मौन हो गये।

* तेतीसवां अध्याय *

(वीर-भद्र और महाकाली का सैन्य जुटाव)

ब्रह्माजी बोले–अब शिवजी को प्रणाम कर वीरभद्र दक्ष का यज्ञ विध्वंश करने चला। शिवजी ने प्रलयाग्नि के समान और भी करोड़ों गणों को उनके साथ किया। वे सब प्रबलगण अत्यन्त कुतूहल के साथ बीरभद्र के आगे-पीछे होकर चले। उसमें वीरभद्र के ही समान हजारों पार्षद तो साक्षात् रुद्र स्वरूप ही थे। वीरभद्र शिवजी का ही रूप धारण कर एक ऐसे रथ पर चढ़कर चला कि जो चार सौ हाथ लम्बा था और जिसे दश हजार सिंह वाहन कर रहे थे और बहुत से सिंह और हाथी आदि उसके सहस्रों पर्श्वरक्षक थे। काली, कात्यायनी, ईशानी, चामुण्डा मुण्डमर्दिनी भद्रकाली, भद्रा, बलि और वैष्णवी इन नौ दुर्गाओं ने भी दक्ष को लिए अपने भूत-गणों के साथ प्रस्थान किया। उनके [वीरभद्र और महाकाली के] सब गणों की संख्या करना यहाँ अशक्य है। केवल श्री शङ्कर के गणों को कहता हूँ जो भृङ्गा, कीट, अशनि और मालकगण चौंसठ हजार करोड़ सेना लेकर चले थे। उस समय मेरी, शृंखा, जटाहर, मुखों तथा शृङ्गों के अनेक प्रकार के शब्द हुए। इस प्रकार वीरभद्र की यात्रा में अनेकों

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

प्रकार के शुभ शकुन हुए।

* चौतीसवाँ अध्याय *

(आकाशवाणी)

ब्रह्माजी बोले– उधर दक्ष तथा देवताओं को अशकुन हुए। वीरभद्र के चलते ही दक्षादि को यज्ञ के विध्वंश सूचक उत्पात्त हुए। दक्ष की बाईं आँख, बाहु, तथा जङ्घा फड़कने लगी। पृथ्वी में भूकम्प हुआ दिशाएँ मलिन हो गईं और सूर्य में काले दाग दिखाई पड़ने लगे। बिजली और अग्नि के समान नक्षत्र गिरने लगे। हजारों गीध दक्ष के शिर पर मँडराने लगे जिनकी छाया से मण्डप ढंक गया। गीदड़ भयानक शब्द करने लगे। दिशाओं में अन्धकार व्याप्त हो गया, दिग्दाह होने लगा। और विष्णु आदि को भी अत्यन्त भय उत्पन्न हुआ। भिर उसी समय यह आकाशवाणी हुई कि, दक्ष! तुझे धिक्कार है। तू बड़ा पापी और मूर्ख है। अब तुझे शिवजी द्वारा अवश्य ही महादुःख की प्राप्ति होगी और खेद है कि तेरे कारण आज यहाँ उपस्थित सब देवताओं को भी महान् दुःख प्राप्त होगा। इस प्रकार आकाशवाणी सुन तथा अपशकुनों देख दक्ष बड़ा दुःखी हुआ और डरता, काँपता विष्णुजी की शरण में जाकर उनकी स्तुति करते हुए बोले।

* पैंतीसवां अध्याय *

(दक्ष को शिवोपदेश)

दक्ष बोले–विष्णुजी मैं वड़ा भयभीत हूँ, मेरी रक्षा कीजिये। आप तो यज्ञ स्वरूप ही हैं, अतः प्रभो! जैसे भी हो मेरे इस यज्ञ की रक्षा करें। जब इस प्रकार बहुत-सी प्रार्थना करके दक्ष विष्णुजी के चरणों में गिर पड़ा, तब शिवजी के चरणों में शिर नवाकर उसे उठाते हुए विष्णुजी समझाने लगे–दक्ष! तुमने शिवजी को क्यों भुला दिया। सर्वेश्वर शङ्कर की अवज्ञा का यही फल है कि जो तुम्हारा कार्य विफल हो रहा है। पूज्यों का अपमान होने से पद-पद पर विपत्ति-

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

याँ प्राप्त होती हैं। दरिद्रता, मरण और भय से तीनों प्राप्त होते हैं। अतएव तुम प्रयत्न पूर्वक शिवजी की पूजा करो। देखो, तुम्हारी ही दुर्नीति से आज हम सबका प्रभाव क्षीण हो गया है।" विष्णु भगवान् के यह बचन सुनकर दक्ष का मुख सूख गया। वह चुपचाप पृथ्वी पर बैठ गया। उसी समय अपनी महासेना लिये शिवजी का भेजा हुआ वीरभद्र उस यज्ञ में आ पहुँचा जिसके पराक्रमी असंख्या शूरवीरों से यज्ञस्थल को कौन कहे चारों दिशाओं सहित आकाश मण्डल व्याप्त हो गया। सातोंदीपों सहित पृथ्वी काँपउठी और समस्त समुद्र धर्रा उठे। उस सेना का उद्योग देख दक्ष अपने मुख से रुधिर वमन करने लगा और अपनी स्त्री सहित विष्णु से बोला-"विष्णुजी ! मुझे आप ही का भरोसा है। मैंने आप ही के बल पर यह श्रेष्ठकर्म आरम्भ किया था, क्योंकि मैं जानता हूँ कि आप ही यज्ञों के प्रतिपालक और वेद धर्मके अधिष्ठान हैं। स्वामी ! आप मेरे इस यज्ञकी रक्षा कीजिये।" ब्रह्माजी कहते हैं--तब विष्णुजी दक्ष को फिर शिव-तत्व समझाते हुए बोले-दक्ष ! यह वीरभद्र शंकर के गणों का ऐसा सेनापति है जो कि शिवजी के शत्रु का सर्वथा ही नाश कर देता है। निस्संदेह यह तुम्हारे सहित हम लोगों का नाश कर देगा। शिवजी की आज्ञा का उल्लंघन कर मैं जो तुम्हारे यज्ञ में आया हूं इससे मुझे भी घोर दुःख उठाना पड़ेगा, औरअब इसे रोकने की मुझ में भी शक्ति नहीं है। हम यदि यहाँ से भाग जाँय तो भी यह वीरभद्र अपने आकर्षणों से हमें खींच लेगा। क्योंकि स्वर्ग पाताल पृथ्वी में कहीं भी बीरभद्र के शस्त्रों की गति रुक नहीं सकती और शिवजी के जितने भी गण हैं सबकी ही उतनी शक्ति है। विष्णुजी ऐसा कह ही रहे थे कि वीर-भद्र अपनी अजेय सेना के साथ यज्ञ मण्डप में आ पहुँचा।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* छत्तीसवां अध्याय *

(दक्ष का सिर-छेदन)

ब्रह्माजी बोले–उस समय इन्द्र विष्णुजी का परिहास करके देवताओं सहित हाथ में वज्र लेकर वीरभद्र से युद्ध करने को आगे बढ़ा। उन का शिवगणों से घोर युद्ध हुआ। यज्ञिक भृगुजी ने दक्ष के सन्तोष के लिए शिवजी के गणों का उच्चाटन किया। भूत-प्रेत-पिशाच पराजित होने लगे। तब यह देख वीरभद्र को बड़ा क्रोध आया और उस महाबली ने महा त्रिशूल ले देवताओं को गिराना आरम्भ किया। देवता, यक्ष, साध्य, चारण सभी उनके त्रिशूल से घायल हुये। उसकी भयङ्कर मार से कितने ही देवता मारे गये। और कितने ही भाग चले। देवताओं की भयङ्कर पराजय हुई। इन्द्र जैसे लोकपाल ही कठिनता सेयुद्ध क्षेत्र में खड़े रहे। उसी समय अपने महावीर गणों सहित वीरभद्र ने मन में स्मरण कर इन्द्रादिक देवताओंसे कहा-मूर्खो ? तुम लोग इस यज्ञ में क्यों आये हो ? अब तुम सब मेरे पास आओ तो मैं तुम्हें इसका फल दूँ इन्द्र, अग्नि, सूर्य,चन्द्रमा कुबेर, वरुण, वायु, नेऋत्य, यम, शेष और सभी देवताओ ? आज मैं तुम्हें ऐसा फल दूँगा जिससे तुम सर्वदा के लिए तृप्त हो जाओगे। ऐसा कहकर गणों का सेनापति वीरभद्र अपने तीक्ष्ण बाणों से उन देवताओं को छेदने लगा कि जिसकी भयानक मार से सब देवता भाग गये। फिर अपने गणों सहित वीरभद्र यज्ञमण्डप में पहुँचा और युद्ध से भागे देवता उसका समाचार देने के लिए पहले ही ही विष्णु के पास पहुंचे और कहा कि–हे रमानाथ ! जैसे भी हो इस यज्ञ की रक्षा कीजिए। तब ऋषियों के ऐसा कहने पर विष्णुजी वीरभद्र से युद्ध करने को सन्नद्ध हुये।

* सैंतीसवाँ अध्याय *

(वीरभद्र का युद्ध)

ब्रह्माजी वोले—अब महाबली वीरभद्र और भगवान् विष्णु का भयानक युद्ध हुआ। इन्द्रादिक समस्त देवता विष्णुजी के साथ हो वीर-

CC-0. A. J. Gohagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

भद्र के गणों के साथ युद्ध करने लगे। भगवान् विष्णुने अनेक आयुधों से अत्यन्त भयङ्कर संग्राम किया। भैरवादिक गण उनके साथ युद्ध कर रहे थे। भगवान् विष्णु भी लौट-लौट कर उनसे लड़ रहेथे। वीरभद्र और विष्णु भगवान् का रोमहर्ष युद्ध हुआ। विष्णुके शरीर से उनके योग बल द्वारा शंख, चक्र, गदा धारण करने वाले असंख्यों वीर प्रकट हो, शस्त्रों को धारण किए वीरभद्र के साथ युद्ध कर रहे थे। परन्तु युद्ध के ही क्षणों में वीरभद्र ने शङ्कर का स्मरण कर सबको अपने त्रिशूलसे मार कर भस्मकर दिया। विष्णुके वक्षःस्थल में त्रिशूल मारा। इससे भगवान् मूर्छित हो पृथ्वी पर गिर पड़े। फिर उठ कर चक्र ले उसे मारने दौड़े। परन्तु वीरभद्र ने अपने अद्भुत तेज से चक्र को वहीं रोक दिया। वह विष्णु के हाथ में ही रह गया। विष्णु भी वहीं रुके रह गये। उनको स्तम्भ हो गया। यह देख याज्ञिकोंने यज्ञ मन्त्रों से उनका स्तम्भन छुड़ाया। फिर विष्णु ने अपना शार्ङ्ग उठा उसपर बाण चढ़या। तब तक वीरभद्र ने उन्हें तीन बाण मार उनके धनुष के तीन टुकड़े कर दिये। तब मुझ ब्रह्मा और सती ने विष्णुजी से शिवजी के उस महागण का परिचय दिया। जय समझ विष्णुजी अन्तर्धान हो अपने लोक को चले गये। मैं [ब्रह्मा] भी पुत्रशोक से पीड़ित सत्य लोक में चला आया और सोचने लगा कि अब क्या करूँ। तब मेरे और विष्णुजी के चले जाने पर वीरभद्र ने सबको जीतकर मृग रूप धारण कर भागते हुए दक्ष को पकड़ा और उनका शिर काट डाला तथा प्रजापति, धर्म, कश्यप और अरिष्टने मिन आदि मुनियों को पकड़ कर उन्हें लातों से मारा। फिर उस प्रतापी वीरभद्र ने देव माता सरस्वती की अपने नखों के अग्रभाग से उनकी नाक काट ली और अन्य देवताओं को भी पृथ्वी पर पटक-पटक कर मारा। मणिभद्र नामक प्रतापी गण ने भृगुजी की छाती पर पैर रखकर उनकी दाढ़ी उखाड़ ली। पूषा शिवजी के शापित होने पर हँसे थे उससे चण्ड ने बड़े वेग से उनका दाँत उखाड़ लिया। फिर क्रुद्ध शिवजीके गणोंने दक्षकी यज्ञमें मल-मूत्र की वर्षा कर उसे भ्रष्ट कर दिया और जो दक्ष वेदीके भीतर जा छिपा

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

था उसे वहाँ से पकड़ वीरभद्र ने उसकी छाती पर चढ़ कर हाथ से ही उसका शिर मरोड़ कर तोड़ डाला और अग्नि कुण्ड में छोड़ दिया। इस प्रकार सब कार्य कर विजयी वीरभद्र कैलाश पर शिवजी के पास पहुँचा। शिवजी ने प्रसन्न हो उसे अपने गणों का नायक बना दिया।

* अड़तीसवाँ अध्याय *

(शिवजी द्वारा दधीचि को अमरतादि की प्राप्ति)

सूतजी बोले–ब्रह्माजी के इतना कहने पर नारदजी ने फिर उनसे पूछा कि ब्रह्मन्! शिव विमुख हो विष्णुजी दक्ष के यज्ञमें क्यों गये कि जिससे उनका अपमान हुआ। ब्रह्माजी बोले– विप्रवर दधीचि के शाप से विष्णुजी का ज्ञान भ्रष्ट हो गया था जिसके कारण ही वे दक्षराज के यज्ञ में गये। इस पर नारदजी ने पूछा कि मुनि श्रेष्ठ दधीचि ने विष्णुजी को क्यों शाप दिया था, वे तो उनके परम सहायक ही थे ब्रह्माजी बोले–एक क्षुव नामका राजा था जिससे दधीचि मुनि की बड़ी मित्रता थी। कुछ दिनों के पश्चात् दधीचि से उनका एक बड़ा अनर्थ कारी विवाद होगया। दधीचि ने कहा तीनों वर्णों में ब्राह्मण ही श्रेष्ठ है। इस पर राजा क्षुव जो लक्ष्मी के मद से चूर्ण था उसने कहा नहीं सब वर्णों का श्रेष्ठ राजा है। राजा सर्वमय है, यह श्रुतिका भी वाक्य है। इस पर दधीचि को बड़ा क्रोध आया। ऊन्होंने राजा क्षुव के सिर में जोर का घूँसा मार दिया। क्षुव मूर्छित हो पृथ्वी पर गिर पड़ा। परन्तु ज्यों ही सचेत होकर उठा कि उसी क्षण उस दुष्ट क्षुवने दधीचि पर वज्र चला दिया। उससे घायल हो दधीचि मुनि पृथ्वी पर गिर पड़े। फिर सम्भल कर उठे तो उससे बदला लेने के लिए उन्होंने शुक्राचार्य का स्मरण किया। शुक्र आये। उन्होंने क्षुव के प्रहारसे उत्पन्न दधीचि के मर्म को ठीक कर दिया। फिर क्षुव से बदला चुकाने के लिए उन्हें महामृत्युञ्जय मन्त्र बतला दिया और कहा कि इस प्रकार इस मन्त्र का जप कर तुम सभी कार्य कर सकते हो। दधीचि को ऐसा उपदेश कर शुक्राचार्य शंकर भगवान्का स्मरण करते हुए अपने स्थान को चले

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

गये। दधीचि मुनि शंकर भगवान् का स्मरण करते हुए तप करने के लिए वन में चले गये। वहाँ जाकर उन्होंने महामृत्युञ्जय का विधिपूर्वक जप कर शिवजी के लिए बड़ा तप किया। उस तपसे प्रसन्नहो भगवान् शङ्कर मुनि के आगे आये और दधीचि से कहा—वर माँगो! भक्त-श्रेष्ठ दधीचि ने कहा कि, महादेवजी! आप मुझे तीन वर दीजिये। एक तो यह कि मेरे शरीर की अस्थियाँ वज्र के समान हो जावें, दूसरी यह कि मैं सबसे अबध्य होऊँ। और तीसरी यह कि मैं सर्वथा ही दीन न होऊँ। शिवजी ने तथास्तु कह उन्हें यह वर दिया। मुनि ने प्रसन्न हो शीघ्र ही राजा ध्रुव के पास आ उसके शिर पर अपने चरणों का प्रहार किया। ध्रुव विष्णुजी का परम भक्त था जिससे गर्वित हो उसने दधीचि की छाती में वज्र मार दिया परन्तु शिवजी के वरदान से मुनि-वर दधीचि को कुछ चोट न लगी। यह देख ब्रह्मा का पुत्र ध्रुव बड़ा विस्मित हुआ। मृत्युञ्जय के सेवक दधीचि ने उसे परास्त कर दिया। उस पराजय से लज्जित राजा ध्रुव वन में तपस्या करने चला गया। मुकुन्दने भगवान् की अराधना की उससे प्रसन्न हो गरुण पर बैठे भगवान् विष्णु उसे दर्शन देने आये। विष्णु-भक्त ध्रुवने उनसे दधीचि द्वारा अपने अपमान की बात कह मृत्युञ्जय प्रभाव कहा। विष्णुजी ने कहा—अवश्य, शङ्कर के भक्त को किसी का भय नहीं है। उन्हें दुख देने से मुझे और देवताओं को शाप पड़ता है। उसी ब्राह्मण के शाप से तो अब दक्ष के यज्ञ में मेरा भी विनाश और पुनरुस्थान होगा। राजेन्द्र! मैं सभी यत्न तो नहीं कर सकता, किन्तु ऐसा कुछ अवश्य करूँगा कि जिससे दधीचि पर विजय प्राप्त हो।

* उन्तालीसवां अध्याय *

[विष्णु दधीचि सम्वाद]

ब्रह्माजी बोले—अब एक दिन राजा ध्रुव का कार्य सिद्ध करने के लिए भगवान् विष्णु महर्षि दधीचि के आश्रम में पहुँचे और उनसे कहा कि महर्षे! आपसे वर माँगने आया हूँ। उन्होंने जो नेत्र बन्द कर

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by sGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

शिवजी का ध्यान किया तो उन्हें विष्णु का कपट ज्ञात हो गया। उन्होंने कहा—मैं सब समझ गया परन्तु आप भगवान् हैं। मैं आपसे क्या कहूं? फिर ब्राह्मण का वेश धर कर आये हैं। सुव्रत! आप इस वेश को त्याग दीजिये। राजा ध्रुव के कल्याणार्थ आप मुझसे छल करने आये हैं। लज्जित होकर विष्णु भगवान् दधीचि को प्रणाम कर बोले कि महामुनि! अवश्य, आपका कहना सत्य है और मैं जानता हूँ कि शिवभक्त को किसी का भय नहीं। परन्तु आप मेरे कहने से राजा ध्रुव के पास जाकर उससे यह कह दीजिये कि मैं तुमसे डरता हूँ। विष्णुजी की ऐसी बात सुनकर शैव-श्रेष्ठ दधीचि ने हँसते हुए कहा कि मैं शिवजी के प्रभाव से कहीं किसी से डरता नहीं हूँ फिर उससे क्या कहने जाऊँ? इस पर विष्णुजी को क्रोध आ गया और उन्होंने अपना चक्र उठा महर्षि को मारना चाहा। परन्तु ब्राह्मण पर वह नहीं चला। तब कुण्ठित दधीचि ने हँसते हुए भगवान् विष्णु से कहा कि भगवान्! यह शिवजी को दिया हुआ चक्र आप मुझ पर छोड़ना चाहते थे परन्तु नहीं चला। चलता भी तो कैसे? शिवजी का अस्त्र मुझ जैसे ब्राह्मणों के लिए नहीं है। यदि आप क्रुद्ध ही हैं तो क्रम से ब्रह्मास्त्र आदि अस्त्रों तथा बाणों का प्रयोग कीजिये।' फिर तो दधीचि को निरा ब्राह्मण और पराक्रमहीन समझ विष्णुजी ने क्रोधकर उन पर अपने अस्त्र चलाये। इन्द्रादि देवोंने बड़े वेगसे मुनि दधीचि पर अपने अस्त्रों को चलाया। परन्तु शिव-भक्त दधीजि ने मुट्ठी भर कुशा उठाकर जो उन पर छोड़ा तो शंकर के प्रभाव से वे कुशा कालाग्नि के समान त्रिशूल बन प्रलयाग्नि के समान अपनी ज्वालाओं से अयुध धारी देवताओं के छोड़े अस्त्र उन त्रिशूलों को प्रणाम कर कुण्ठित हो गये। देवता पराक्रमहीन हो वहाँ से भाग चले। केवल विष्णुजी युद्ध से परामुख न हुए और परम शैव दधीचि भी शिवजी की कृपा से निर्भय हो उनसे युद्ध करते ही रहे। भीषण युद्ध हुआ। तब नारद! मैं विष्णु-भक्त ब्रह्मा राजा ध्रुव को साथ ले उनका युद्ध देखने गया। मैंने

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

निश्चेष्ट विष्णु भगवान् तथा देवताओं को युद्ध करने से रोका और कहा—आप लोगों का प्रयास व्यर्थ है। इस ब्राह्मण को आप लोग नहीं जीत सकते। यह सुन विष्णुजी शान्त हो दधीचि मुनि की स्तुति करने लगे। राजा ध्रुव ने भी दीनता से मुनि के निकट जाकर उन्हें प्रणाम कर बड़ी प्रार्थना की। प्रसन्न हो मुनि दधीचि ने उन पर तो कृपा कर दी पर विष्णु आदि पर उनका कोप कम न हुआ। उन्होंने अपने हृदय में भगवान् शंकर का स्मरण कर विष्णु सहित सब देवताओं को शाप दे दिया कि समय आने पर तुम लोग रुद्र की कोपाग्नि से भस्म हो जाओगे। दधीचि को प्रणाम कर ध्रुव अपने घर चला गया और विष्णु आदि देवता भी अपने लोक को गये। तब से उस स्थान का नाम थानेश्वर हुआ जहाँ भगवान् शङ्कर के दर्शन से सायुज्य मुक्ति प्राप्त होती है।

* चालीसवाँ अध्याय *

(ब्रह्माजी का उद्योग)

नारदजी बोले-महाभाग्य! जब महावीर वीरभद्र दक्ष का यज्ञ विध्वंश कर कैलाश को गये तब क्या हुआ ब्रह्माजी बोले—जब रुद्र की सेनासे घायल देवताओं ने मुझसे जाकर दक्ष यज्ञ विध्वंश का समाचार कहकर दक्ष के मारे जाने का समाचार दिया तो मुझे बड़ा क्रोध हुआ और मैं सोचने लगा कि अब देवताओं को सुखी बनाने के लिये मैं क्या करूँ और दक्ष भी जीवित हो जाय तथा उसका यज्ञ भी पूर्ण होवे। तब विष्णु का स्मरण करते ही जो मुझे ज्ञान हुआ तो मैं उनके पास बैकुण्ठ लोक पहुँचा और विष्णुजी की स्तुति की तो उन्होंने मुझसे कहा कि दक्षने अपराध किया जो अपने यज्ञ में शिवजी को भाग नहीं दिया जिसके लिये हम सभी देवता शिवजी के अपराधी हैं। अतएव अब आप सभी देवता शिवजी की शरण में जाकर उनको प्रसन्न करो तभी शान्ति हो जायगी। इसके लिये मैं भी आप लोगों के साथ चलने को तैयार हूं। ऐसा कह विष्णुजी मेरे साथ

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

कैलाश चलने को उद्यत हुए। हम लोग अलकापुरी से आगे उस बिशाल बट-वृक्ष के पास पहुँचे कि जहाँ दिव्य योगियों से सेवित श्रेष्ठ शिवजी विराजमान थे। उनके चारों ओर उनके गण और यक्षों के स्वामी कुवेर विराजते थे। तब उनके निकट पहुँचकर विष्णु आदि समस्त देवताओं ने बार बार नमस्कार कर उनकी स्तुतिकी और कहा कि दया-सागर परमेश्वर आपकी कृपा के विना हम सब नष्ट-भ्रष्ट हो गये हैं। अतएव अब आप प्रसन्न होकर हमारी रक्षा कीजिये। नाथ! आप प्रसन्न होकर दक्ष के यज्ञ को पूर्ण करें। भग देवता की पहली जैसी आँख हो जांय यजमान जीवित हो पूषा के दाँत हो जावे। तथा भृगुकी दाढ़ी फिर पहलेके समानहोवे आपकी कृपा से इन देवताओं को आरोग्यता लाभ होवे। हम इस अवशिष्ट-यज्ञ कर्म में आपका भाग देंगे तथा इसलिये इस यज्ञ को फिर से रचना चाहते हैं। ऐसा कहकर मुझ ब्रह्मा सहित विष्णुजी हाथ जोड़े शिवजी के चरणों में गिर पड़े।

* इकतालीसवाँ अध्याय *

(शिव की कृपा से दक्ष का जीवित होना)

ब्रह्माजी बोले—देवताओं सहित स्तुति से प्रसन्न हो भगवान् शङ्कर प्रसन्न हो देवताओं को धैर्य बँधाते हुए बोले कि देवो! सुनो मैं तुम पर क्रुद्ध हूँ फिर भी तुमको क्षमा करता हूँ। दक्ष को मैंने विध्वंश नहीं किया है किन्तु जो दूसरों का बुरा चाहता है उसी का बुरा होता है। दक्ष का शिर है, अतएव उसका बकरे जैसा शिर होगा। भग देवता सूर्य के नेत्र से यज्ञ भाग को देखेंगे तथा पूषा के टूटे हुए दाँत हो जायेंगे। और यजमान के दिये हुए यज्ञ के भाग का उपयोग कर सकेंगे मैं यह सत्य कहता हूँ! मेरा विरोधक भृगु और बकरे सी दाढ़ी पायेगा और मेरे गणों द्वारा मारे गये देवताओं के टूटे हुए अङ्ग भी ठीक हो जावेंगे और सभी अध्वर्यु प्रसन्न होंगे यह कह वेदों का अनुकरण कर्त्ता, परम दयालु चराचरपति शङ्कर मौन हो गये। तब उनका यह कहना सुन देवताओं को बड़ी प्रसन्नता हुई तथा सब

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

ने शिवजी को धन्यवाद दिया। फिर देवर्षियों सहित शिवजी को उस यज्ञ में आने के लिये आमन्त्रित कर हम लोग यज्ञ के उसी स्थान में आये जहाँ कि कनखल नामक स्थान में दक्ष ने यज्ञ आरम्भ किया! उसी समय भगवान शङ्कर ने वहाँ पहुँच कर वीरभद्र द्वारा भङ्ग यज्ञ का निरीक्षण किया और देखा कि स्वाहा स्वधा पूषा तृष्टि सरस्वती और सभी ऋषि, पितर, अग्नि टूटे-फूटे और कोई मरे हुए है। यज्ञ की दशा देखकर वीरभद्र को बुला भगवान् शंकर ने हँसकर उससे यह कहा कि महाबली वीरभद्र! यह तुमने क्या किया? तुमने ऋषियों को इतना कठिन दण्ड इतनी शीघ्र दे डाला अच्छा तो अब तुम शीघ्र ही दक्ष का मृत्तक शरीर लाओ कि जिसने इस यज्ञ को आरम्भ किया था। शिवजी के इतना कहते ही वीरभद्र ने दक्ष का शिर-रहित शरीर लाकर शीघ्र ही उनके सामने रख दिया। तब उसे शिर-रहित देख शिवजी ने वीरभद्र से कहा कि इसका शिर कहाँ है। वीरभद्र ने कहा, इसे तो मैंने अग्नि में हवन कर दिया है। शिवजीने देवताओं से कहा—देखो, मैंने जो पहिले कहा था वही हुआ। फिर भगवान् शंकर ने यथोचित पशु अर्थात् बकरे का शिर लेकर दक्ष के शिर पर जोड़ दिया और ज्योंही कृपा दृष्टिसे देखा वह जीवित होकर उठ बैठा। उसने उठते ही प्रसन्न चित्त हो शंकर का दर्शन किया। उसका कलुषित हृदय निर्मल हो गया। फिर ज्योंही कल्याण कारक भगवान् शिवकी विनम्र भाव से स्तुति करने लगा। उसकी स्तुति सुन भगवान् शंकर प्रसन्न हो गये और मुझ ब्रह्मा ने भी इन्द्रादि देवताओं और लोकपालों सहित शंकर जी की स्तुति की।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* बीयालीसवां अध्याय *

(सती खण्ड का श्रतिफल आदि)

ब्रह्माजी बोले—इन स्तुतियों को सुनकर शंकरजी प्रसन्न हो गये और उन्होंने सबकी ओर कृपा दृष्टिसे देखकर दक्ष से कहा कि प्रजापति दक्ष ! सुनो--यद्यपि मैं स्वतन्त्र ईश्वर हूं तथापि भक्तों के वश हूँ। चारों भक्तों में ज्ञानी सबसे श्रेष्ठ हैं। ज्ञानी मेरा ही स्वरूप है और उससे अधिक प्रिय मुझे कोई नहीं है। इसी प्रकार तू केवल कर्म के द्वारा ही संसार-सागर से तरना चाहता था। तेरा यह कर्म मुझे अच्छा न लगा और मैने तेरे यज्ञ का विध्वंश कर दिया। दक्ष ! अब तू मुझे परमेश्वर जानकर बुद्धि पूर्वक ज्ञान परायण हो सावधानी से कर्म कर तू यह जानकि मैं शङ्कर ही जगत का उत्पत्ति, स्थिति और संहार करता हूं। और क्रिया के अनुसार विभिन्न नामों का धारण करता हूँ। विष्णु-भक्त का अर्थ यह नहीं है कि वह मेरी निन्दा करे। मेरा भक्त भी विष्णु की निन्दा नहीं कर सकता। यदि ऐसा करेगा तो हम दोनों के शाप से उसे तत्व की प्राप्ति नहीं हो सकती। इस प्रकार शंकर जी के सुखकारक बचनों से वहाँ स्थित देवता मुनि सभी प्रसन्न होगये। समस्त देवता कुटुम्ब सहित शङ्कर भगवान् को परमेश्वर मानने लगे। जिसने जैसी स्तुति की श्री शङ्कर भगवान् ने उन्हें वैसा ही वर दिया। दक्ष प्रसन्न हो शीघ्र ही शिवजी का नाम जपने लगा। शिवजी की कृपा से उसने अपना यज्ञ पूर्ण किया। सब देवताओं को यथा योग उनका भाग मिला। शिवजी को भी उनका भाग दिया गया। ब्राह्मणों को भी बहुत सा दान दिया। दक्ष ने विधि पूर्वक ऋषियों द्वारा यज्ञ के बड़े कार्य को समाप्त कराया। परब्रह्म की कृपा से यज्ञ पूर्ण हुआ। सब देवता और ऋषि आदि भगवान् शङ्कर का यश गाते हुए अपने धाम को गये। मैं और विष्णु भी मङ्गलदायक

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

उनके सब नामों का उच्चारण करते हुए शिव गणोंको साथ ले कैलाश पर्वत पर चले गये। इस चरित्र को पढ़ने व सुनने वाला ज्ञानी हो उत्तम सुख और दिव्य गति को प्राप्त होता है। इस प्रकार दक्ष-पुत्री सती देवी अपना शरीर त्याग कर हिमालय की पत्नी के गर्भ से उत्पन्न हुई और महा तप कर फिर शिव को प्राप्त किया।

(इति श्री शिवमहापुराणन्तर्गत रुद्र संहिता दूसरा सती खण्ड समाप्त)

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

❋ श्रीशिवमहापुराण भाषा ❋

[रुद्र संहिता--पार्वती खण्ड]

❋ पहला अध्याय ❋

(हिमालय विवाह)

नारदजी बोले–ब्रह्मन्! सती ने पर्वत की कन्या होकर कैसे तप कर शिवजी को प्राप्त किया ब्रह्माजी बोले–मुनि ! जब सती ने दक्ष के यज्ञ में अपना शरीर त्याग दिया, तब उन्होंने हिमालय के घर जन्म लेने का विचार किया। क्योंकि शिवलोक में स्थित मेनका ने सती देवी के लिये आराधन किया था। समय आने पर वही देवी अपना शरीर त्याग मेनका की पुत्री बन गई । तब इस जन्म में उस सती देवी का नाम पार्वती हुआ और उन्होंने नारदजी का उपदेश ग्रहण कर अत्यन्त कठिन तप कर शिवजी को प्राप्त किया । नारदजी बोले-हे ब्रह्मन् ! अब मेनका की उत्पत्ति, विवाह और चरित्र मुझे सुनाइये। ब्रह्माजी बोले–नारद ! उत्तर दिशा में हिमाचल नाम का एक महान् राजा था कि जो अपने श्रेष्ठ पर्वत की सब समृद्धियों से युक्त और बड़ा ही तेजस्वी था। उस पर्वत का बड़ा ही दिव्य रूप है और जो सर्वाङ्ग सुन्दर, विष्णु का रूप, सन्तों का प्रिय और शैलराज के नाम से प्रसिद्ध है। वह हिमालय भी कहा जाता हैं और उस पर्वत के जंगम और स्थिर दो भेद हैं। उसी शैलराज ने अपने कुल की स्थित और धर्मवर्द्धन के लिए अपना विवाह करने की इच्छा की। तब उसकी इच्छा होतेही समस्त देवतागण पितरों के पास गये और बोले कि यदि आप सभीलोग अपना कर्तव्य पालनकरना चाहते हैं और यह चाहते हैं कि देवताओं का कार्य होवे तो आप मङ्गलरूपिणी कन्या मेनका का

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

विवाह हिमालय पर्वत के साथ कर दीजिये। इससे सभी का भला होगा और देवताओं के पद-पद पर होने वाले दुःख और हानि का नाश होगा। ब्रह्माजी कहते हैं--देवताओं का यह कथन पितृगणों को अच्छा लगा और उन्होंने अपनी पुत्रियों के शाप की बात याद कर अपनी पुत्री मेनका का विवाह हिमालयके साथ कर दिया। उस विवाह में बड़ा उत्सब हुआ और हरि आदि सभी देवता विवाह में सम्मिलित हुए। फिर विवाह का उत्सव समाप्त होने पर सभी देवता और मुनीश्वर शिव-पार्वती का ध्यान कर अपने लोक को चले गये।

* दूसरा अध्याय *

(पूर्व-कथा)

नारदजी बोले-ब्रह्मन्! अब आप मेनका की उत्पत्ति और पितरों के शाप की भी कथा कहिये। ब्रह्माजी कहने लगे-हे नारद! मेरे पुत्र दक्ष के साठ पुत्रियाँ हुईं। जिनका विवाह उसने कश्यपादि महर्षि के साथ कर दिया। उनमें स्वधा नाम वाली कन्या को उसने पितरों को दिया था कि जिससे धर्म मूर्ति तीन कन्यायें उत्पन्न हुईं। उनमें बड़ी पुत्री का नाम मेनका, बिचली का धन्या और तीसरी का नाम कलावती था। मुनीश्वर! एक समय ये तीनों बहिनें श्वेतद्वीप में विष्णुजी के दर्शन करने गईं तो वहाँ बड़ा भारी समाज एकत्रित हो गया जिसमें ब्रह्मपुत्र सनकादिक भी आये और सबने विष्णुजी की स्तुति की और सनकादिकों को देखकर सभी लोग उनके स्वागतार्थ उठ खड़े हुए। परन्तु ये तीनों वहनें उनके समादर के लिए न उठीं। क्योंकि शंकर की माया ने उन्हें मोहित कर दिया था। उनके इस दुर्व्यहार से क्रुद्ध होकर सनकादिकों ने उन्हें शाप दे दिया कि तुम तीनों श्रुति की जानने वाली थी, तुमने अभिमान वश हमें खड़े होकर अभिवादित नहीं किया और नमस्कार भी नहीं किया। अतएव तुम स्वर्ग से दूर जाकर मनुष्य बन जाओ अब तुम तीनों मनुष्य की स्त्रियाँ बनो।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

ब्रह्माजी कहते हैं कि उन तीनों साध्वी बहनों ने चकित होकर ऋषि का वचन सुना और सिर झुकाकर उनके चरणों पर गिरती हुई बोलीं–मुनिवर्य ! प्रसन्न हो जाइये । हम लोग मूर्ख हैं। इसीसे हमने आपको प्रणाम नहीं किया। महामुने ! इसमें आपका कोइ दोष नहीं है अतएव ऐसी कृपा कीजिये कि जिसमें हम स्वर्ग को पुनः प्राप्त कर लें। उन्होंने कहा–पितरों की कन्याओ ! अब तुम प्रसन्न होकर मेरे बचनों को सुनो कि जिस प्रकार तुम्हें सर्वथा सुख प्राप्त होगा। हिमालय पर्वत हिम का आधार है। यह ज्येष्ठा उसकी कामिनी होगी और इसको पार्वती नाम की एक कन्या प्राप्त होगी और यह दूसरी कन्या जनक की पत्नी होगी और जिससे महालक्ष्मी सीता होकर उत्पन्न होगी। कलावती बृषभान की पत्नी होगी और द्वापर में यही उसकी प्रिय पुत्री प्रिया राधा के नाम से प्रकट होगी। मेनका को पार्वती जी का वर प्राप्त होगा और वह कैलाश तक जायेगी। धन्या जनकवंश में सीता को उत्पन्न कर शीरध्वज के मिलने पर बैकुण्ठ तक जायगी। कलाबती बृषभान को प्राप्त हो उसके साथ कौतुक-क्रीड़ा द्वारा राधा के साथ जीवन-मुक्त हो गौ–लोक तक जायगी भला तुम पितरों की कन्या हो, इसलिये तुम्हें स्वर्ग का विलास ही चाहिये। इसलिये जब तुम विष्णुजीके दर्शन करोगी,तो तुम्हारा कल्याण होगा। मेनासे पार्वती देवी उत्पन्न हो अपने कठिन तप के द्वारा शिवकी प्रिया और धन्या की पुत्री सीता रामचन्द्र की पत्नी होगी। तथा कलावती भी पुत्री राधा श्रीकृष्ण के गुप्त स्नेह में बँधकर पत्नी होगी ऐसा कह मुनिराज अन्तर्ध्यान हो गये और वे तीनों बहिनें भी सुखी हो अपने धाम को चली गईं।

—❀—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* तीसरा अध्याय *

(उमा की स्तुति)

नारदजी बोले--ब्रह्माजी ! पार्वतीजी मेनका से कैसे उत्पन्न हुईं और उन्होंने दुःसह तप कर शिवजी को वर रूप में कैसे प्राप्त किया ? ब्रह्माजी बोले--मुनि ! जब मेंना का विवाह कर हिमालय पर्वत अपने घर आगया और प्रसन्न हो मेनका के साथ विभिन्न सुखदायक स्थानों में जाकर बिहार करने लगा। उसी समय सब देवताओं को साथ लिये विष्णुजी हिमालय के पास गये। हिमालय ने अपने को सब प्रकार बड़ा भाग्यशाली जाना और उनका बड़ा सत्कार किया। उसने कहा, आज मेरा जन्म लेना सफल हो गया। आज मेरा बड़ा तप, ज्ञान और सभी कार्य सफल होगये। कहिये मेरे योग्य क्या सेवा है ? यह सुन हरि आदि देवताओं को विश्वास होगया कि अब मेरा कार्य सिद्ध होगा। तब उन्होंने हिमालय से कहा--महाप्राज्ञ ! जो पहले जगदम्बा उमा दक्ष की कन्या शिवजी की पत्नी हुई थी और जिन्होंने अपने पिता के अनादर से अपने प्राण का स्मरण कर अपना शरीर त्याग दिया था, वह सारी कथा आपको भी ज्ञात है। अब वही आपके घरमें प्रकट हों, आप इसके लिये उपाय करें इसीलिए हम लोग यहाँ आये हैं। ब्रह्माजी कहते हैं कि हरि आदि के ऐसा कहते ही हिमालय ने ऐसाही हो कह दिया। तब सब देवता शङ्कर की पत्नी उमा की शरण में गये और एक अच्छे स्थान में बैठकर जगदम्बिका का स्मरण करने लगे। उन्होंने दण्डवत् कर उन देवी को प्रसन्न करने के लिए उमा ! देवि ! माता ! आप सर्वदा शिवलोक निवाशिनी और सर्वदा ही शिव की प्रिया हैं। दुर्गे ! महेश्वरी ! हम सब आपको प्रणाम करते है इत्यादि उनकी बड़ी स्तुति की।

* चौथा अध्याय *

(देवताओं को सान्त्वना)

ब्रह्माजी बोले--देवताओं ने इस प्रकार स्तुति की तो कष्टनिवारणी

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

दुर्गा देवताओं क समक्ष प्रगट होगई । सभी देवता उनकी स्तुति करने लगे कि माता क्षमा कीजियेगा शिवे अब सनत्कुमार के बचन को पूर्ण कीजिये । देवि अब तुम फिर पृथ्वी पर अवतार लो शिवजी की पत्नी बनो अपनी अद्भुत लीला से देवताओं को सुखी करो देवताओं की इस प्रकार की प्रेम एवं भक्ति पूर्ण विचार धारा को सुनकर शिवा प्रसन्न हो गई और उसने सब कारण विचार कर अपने प्रभु शिव को स्मरण करती हुई देवी उमा ने हँसकर देवताओं से कहा ब्रह्मा, विष्णु, मुनियो और देवताओ तुम्हारे दुख दूर हों मैं अवश्य ही पृथ्वी पर अवतार लूगीं । इसके और भी कारण हैं पहले हिमाचल और उसकी पत्नि ने मेरी सेवा की है । अब भी भक्ति-पूर्वक मेरी सेवा करते हैं इसलिये मैं हिमाचल के घर प्रकट होऊँगी जिससे तुम्हारे सब दुख दूर हो जायेंगे । शिव की लीला बड़ी अद्भुत है इसलिये मैं उन्हीं की पत्नी होऊँगी । वे रुद्र मेरा पाणिग्रहण करना चाहते हैं अतः मैं हिमाचलके घर जाकर अवतार लूँगी । अब तुम सब देवता अपने स्थानको जाओ यह कह कर वह विश्वमाता अपने लोक को चली गई । देवता भी अपने धाम को चले गये ।

* पांचवां अध्याय *

(हिमाचल का तप)

ब्रह्माजी बोले-देवता हिमाचल तथा मैंना को उपदेश करके चले गये थे । तभी से वे दोनों स्त्री पुरुष भगवान् रुद्र तथा जगदम्बा के ध्यान में निग्मन रहने लगे और उनका श्रद्धा से पूजन करने लगे । वे उमा देवी को सन्तान रूप में पाना चाहते थे । ब्राह्मणों को दान देकर उमा देवी का चैत्र मास से व्रत तथा पूजन आरम्भ करदिया । निराहार रहकर व्रत पूर्ण किया गया । व्रत के पूर्ण होने पर उमा देवी दोनों पति पत्नी पर प्रसन्न होकर शीघ्र ही उनके सामने प्रकट हो गई और हँसकर मैंना से बोली हिमाचल प्रिये ! तुमने केवल मेरी प्राप्ति के लिये व्रत तप आदि साधन किये हैं । मैं प्रसन्न हूँ । इसलिये अपनी इच्छा

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

से वर माँग लो। मैंना बारम्बार नमस्कार करके बोली जगत की मातेश्वरी! आपकी जय हो। मैं तो आपकी ही शरण में हूँ। यदि आप मुझपर प्रसन्न हैं तो पहला वर मुझे यह दें कि मुझे बड़ी आयु वाले बलवान पराक्रमी ऋद्धि-सिद्धियोंसे युक्त सौ पुत्र प्राप्त हों। दूसरा वर आप ही सुन्दर वर आप ही सुन्दर गणों से युक्त रूपवती दोनों कुल तारने वाली आनन्द देने वाली त्रिलोकी में पूजनीय देव ताओं के कार्य सिद्ध करने वाली मेरी कन्या के रूप में आकर अवतार लें और मैं आपका भगवान् रुद्र के साथ विवाह करूँ। ब्रह्माजी बोले-नारदजी! इस प्रकार मैंना के मांगे हुए वरों को सुनकर उमादेवी मन्द मन्द हँसती हुई बोली मैंनाजी तुझे सौ पुत्र प्राप्तिका वर दे दिया। उनमें सबसे बड़ा पुत्र अधिक बलवान होगा। और दूसरे वरमें देवताओं की कार्य सिद्धि के लिये मैं भी तुम्हारे यहाँ पुत्री रूप अवतार लूँगी। इस प्रकार दोनों वरदान देकर उमा देवी मैंना के देखते-देखते ही वह अन्तर्ध्यान हो गईं और मैंनाने अपने मनोरथों की सिद्धि प्राप्त की फिर प्रसन्न होकर अपने घर में चली आईं। घर में आकर हिमाचल के प्रति मैंना ने श्री उमा देवी को दिये वरों का समाचार कह सुनाया। तब तो दोनों ही अपने भाग्योंकी सराहना करने लगे। ब्रह्माजी बोले-कुछ समयके बाद मैंना को गर्भ हो गया। पूर्ण समय हो जाने पर ज्येष्ठ पुत्र मैंनाक ने जन्म लिया। तब तो हिमाचल के नगर में बड़े भारी उत्सव होनेलगे। ब्राह्मणोंको बहुतसे दान प्राप्तहुए। पति पत्नी दोनों प्रसन्न होगये। सौ पुत्रों में मैंनाक बड़ा था वह नाग कन्याओंका पति बना। जब इन्द्र पर्वतों के ऊपर क्रोध करके पर्वतों को काटने लगा तब यही मैंनाक भय करके समुद्र की शरण में चला गया। वहाँ समुद्र के साथ उसकी मित्रता हो गई।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* छठा अध्याय *

(श्री पार्वती-जन्म)

ब्रह्माजी बोले—नारदजी ! मैंना तथा हिमाचल दोनों पति पत्नी देवी उमा एवं भगवान् रुद्र के ध्यान में निरन्तर रहने लगे। उसके बाद जगत की माता उमा देवी अपना वर सत्य करने के लिये पूर्ण अंशों के द्वारा हिमाचल पर्वतराज के हृदय में आकर विराजमान हुईं। तब उत्तम समय जानकर हिमाचल ने अपनी परमप्रिया मैंनावती ने गर्भ स्थापित किया मैंनारानी गर्भवती हो गईं। उसकी शोभा एवं कान्ति निखर आई फिर दश मास पूर्ण हो जाने पर सती शिवा कल्याणी मैंनादेवी के गर्भ से प्रकट होगईं।

* सातवाँ अध्याय *

(नारदजी का उमा को तप करने का आदेश)

ब्रह्माजी बोले—नारदजी ! तब तो वह देवी कन्या रूप होकर संसारिक कन्याओं की भाँति रुदन करने लगीं। उस कन्या के रुदन को सुनकर नगर की स्त्रियाँ तुरन्त ही वहाँ दौड़ी आईं। हिमाचल भी यहाँ पुत्री का जन्म सुनते ही अत्यन्त आनन्दित हो गये। नगर की नर-नारियाँ उत्सव करने लगीं। नाच-गान एवं बाजे बजाने लगे। हिमाचल ने बिधि पूर्वक जात कर्म किया ब्राह्मणों को दान दिये। याचकों को मुँह माँगी वस्तुएँ देखकर सबको प्रसन्न किया फिर शुभ मुहूर्त में कन्या का नाम संस्कार हुआ। मुनिजनो ने जगदम्बा तारा, महाविद्या, काली आदि अनेकों नाम बताये। चन्द्रमा की कला की तरह हिमाचल पुत्री अब धीरे-धीरे बड़ी होने लगी। उसके अङ्ग प्रत्यङ्ग चन्द्रमाकी कला एवं विंबके समान अत्यन्त शोभायमान होने लगे। गिरजा अपनी सहेलियों के साथ खेलने भी लग गईं। उन्होंने अपना प्रभाव छिपा रखा। गङ्गाजी की रेती से घर बना-बना कर तथा गेंद से खेलने लगीं एवं और भी अनेकों वेश बदल-बदल कर क्रीड़ायें करने लगीं। फिर पढ़ने के समय गुरु गृह में जाकर परम प्रसन्नता से ध्यान लगाकर

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

पढ़ने लगीं। ब्रह्माजी बोले—नारद! तुम शिवलीलाको भली-भाँति जानते थे और शिव प्रेरणा से ही वहाँ गये थे। हिमालय ने सत्कार किया और अपनी कन्या को तुम्हारे पास लाकर प्रणाम कराया और स्वयं भी बार-बार प्रणाम करने लगे। फिर बोले कि नारद मुनिजी! आप भूत,भविष्य, वर्तमान जानते हो। परोपकारी एवं परम दयालु हो। कृपया मेरी कन्याकी भाग्य रेखा देखकर इसके भाग्य बताएँ। जब हिमाचल ने ऐसा कहा तुमने श्री पार्वती जी की हाथ देखकर कहा कि पर्वतराज! तुम्हारी कन्या की भाग्य रेखामें सब उत्तम लक्षण हैं। इसका पति योगी, नग्न रहने वाला, निर्गुण कामवासना रहित, माता-पिता हीन, अभिमान रहित अपवित्र एवं साधु वेषधारी होगा इतना सुनतेही दोनों पति पत्नी अत्यन्त दुःखित होगये और उमाने मनमें विचारकिया कि नारदकी बात सदा सत्य होती है। इन लक्षणों वाले तो रुद्र हो सकते हैं यह विचार आते ही स्वयं उमा अतीव आनन्दित हुई तब अत्यन्त व्याकुल हुये हिमाचल नारदजी से बोले नारदजी! अब इसके लिये क्या उपाय किया जाय? नारदजीने उत्तर दिया कि हिमाचलजी! इस रेखा का फल तो अवश्य मिलेगा किन्तु ऐसा होने पर भी यह सुख पूर्वक रहे इसके लिये उपाय कहता हूं-जितने भी मैंने इसके पतिके लक्षण कहे हैं वे सब रुद्रमें भी दिखाई देते हैं किन्तु भगवान् रुद्र में यह अशुभ लक्षण भी शुभ समझे जाते हैं। आप अपनी पुत्री का उन्हीं के साथ विवाह करदो। किन्तु एक कठिनाई है कि रुद्र भगवान् श्रीपार्वती पर किसी प्रकार प्रसन्न हो जाँय। यह तभी होगा जब कि स्वयं श्रीपार्वती जी तप द्वारा उन्हें प्रसन्न करने की कोशिश करें। तभी यह रुद्र पत्नी होगी इस प्रकार दोनों पति पत्नी को कह कर तुम वहाँ से चले गये।

* आठवां अध्याय *

(पार्वती का स्वप्न)

ब्रह्माजी बोले—नारदजी! कुछ समय के बाद एक बार मैना ने हिमाचल के पास जाकर प्रणाम किया फिर नम्रता से बोली हे देव!

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

पार्वती अब विवाह योग्य होगई है। अब किसी सुन्दर वर के साथ इसका विवाह होना चाहिये। इस गुणवती सुन्दर कन्या को इसके समान ही वर मिले तभी ये प्रसन्न रह सकेगी। हिमाचल बोले देवी! तुम इस प्रकार संशय ही मत करो। नारद बचन कभी असत्य नहीं होते। यदि अपनी पुत्री से प्रेम रखती हो तो पुत्री को भगवान् रुद्र की प्रसन्नना के लिये तप करने के लिये कहो जब भगवान् रुद्र ही प्रसन्न होकर उसे अपनी पत्नी बनाना स्वीकार कर लें तो उनके बुरे लक्षण भी उत्तम एवं शुभ होंगे इतना सुनकर मैंना प्रसन्न होगई। किन्तु उमा की सुन्दरता देखकर मन व्याकुल सा होगया और आँखों से अश्रुधारा वह चली। मुखसे वाणी न निकल सकी। तब सबके मनका भाव जानने वाली श्री उमा जी ने माता के भाव समझ कर उन्हें धैर्य देकर कहा–माता जी! मैंने आज रात ब्रह्म मुहूर्त में एक विचित्र स्वप्न देखा है जिसमें मुझे एक तपस्वी ब्राह्मण ने मुझसे कहा कि तू भगवान् रुद्र की प्राप्ति के अर्थ तप कर श्री पार्वती जी से सुनकर मैंना ने अपने पति से श्री पार्वती के स्वप्न का वृत्तांत कहा।

* नवम अध्याय *

(भौम–जन्म)

ब्रह्माजी बोले—नारद! इधर भगवान् शंकर अपनी प्राणेश्वरी श्री सतीजी के विरह में व्याकुल होकर अपने गणों से श्रीसती के अनेकों गुण एवं उनकी सुशीलता आदि सुनकर कुछ दिन कैलाश पर विराजमान् रहे। फिर गृहस्थ धर्म को त्याग कर नग्न होकर कुछ समय तक सब लोकों में घूमते रहे थे। उसके बाद कैलाश पर वापिस पधारे। फिर वहाँ आकर समाधि धारण कर ली कुछ समय के बाद सदाशिव समाधि से जग गये। समाधि के परिश्रम के कारण उनके मस्तक से पसीने के बूँद पृथ्वी पर गिर पड़ी। तबतो उससे एक बालक प्रगट हो गया जिसका लाल वर्ण था चार भुजायें थी और बहुत सुन्दर था वह प्रकट होते ही रोने लग गया। उसे देखकर

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

संसारी मनुष्यों की भाँति सदाशिव उसके पालन-पोषण का विचार करने लगे। उस समय डरी हुई एक सुन्दर स्त्री वहाँ आई। और उस बालक को अपनी गोद में लेकर उसे दूध पिलाकर उसका मुख चुम्बन तथा उसे लाड़ लड़ाने लगी। वह स्त्री और कोई नहींथी स्वयं पृथ्वी आईथी। अन्तर्यामी श्रीमहादेवजी ने समझ लिया तब उससे बोले पृथ्वी! इसका पालन-पोषण करो। यही बालक तुम्हारे नाम से प्रसिद्ध होगा। सदाशिव के इन बचनों को सुनकर धरती माता उस बालकको गोद में उठा कर अपने स्थान पर चली गई। वहाँ बह सुख पूर्वक उसका लालन-पालन करने लगी पृथ्वी के नाम से उसका नाम भौम प्रसिद्ध हुआ। तब वही भौम अपनी युवावस्था में काशी पुरी आया बहुत समय तक भगवान् शङ्कर का पूजन करता रहा। उसके बाद उसने शुक्रलोक से भी ऊपर का लोक प्राप्त किया।

* दसवाँ अध्याय *

(शिव हिमाचल सम्वाद)

ब्रह्माजी बोले—नारदजी! कुछ समय के बाद नन्दीश्वर आदि मुख्य मुख्य गणों को साथ लेकर तप करने की इच्छा से भगवान् हिमाचल प्रदेश में आये जहाँ पतित पावनी गङ्गा ब्रह्मलोक से गिर रही है उसी स्थान को आपने तप के योग्य एवं सुन्दर समझ वहीं एकाग्र चित्त होकर सदाशिव आत्मचिन्तन करने लगे। उनके शुभआगमन का वृत्तान्त उस समय हिमालय को मालूम होगया। हिमालय भगवान् रुद्र के दर्शन के लिये वहाँ आया और आकर प्रणाम तथा पूजन किया। भगवान् शङ्कर हिमाचल से हँसते हुए कहने लगे हिमाचल मैं यहाँ तप करने को आया हूं। आप इस प्रकार का प्रबन्ध करदो कि कोई मेरे पास न आये ब्रह्माजी बोले-नारदजी! इतना कहकर हिमाचलने कहा कि आप स्वतन्त्र होकर यहाँ तपस्या करें मैं सब प्रकार से आपकी सेवा करूँगा निश्चत रहें। यह कहकर हिमाचल अपने घरको चले आये।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

ब्रह्माजी बोले नारदजी ! कुछ दिनों के बाद पुष्प फल आदि लाकर हिमाचल भगवान रुद्र के पास पहुँचे। वहाँ जगत के स्वामी भगवान शंकर को प्रणाम करके श्री पार्वती को भगवान के सम्मुख ले जाकर हिमाचल कहने लगे-हे भगवन् ? ये मेरी कन्या पार्वती है यह आपकी सेवा करना चाहती है और आपका पूजन भी नित्य किया करती है । अब मैं इसे आपकी सेवा में लाया हूँ। कृपा करके इसे अपनी दासी जानकर सेवा में अङ्गीकार करें। यह सुनकर सदाशिव ने अपने नेत्र खोले और सामने सम्पूर्ण गुणों से युक्त सुन्दर अङ्गों वाली उमा को देखा तब हिमाचल से बोले कि हिमाचल ! यह कन्या चन्द्रमा के समान सुन्दर रूपवती है इसी कारण मैं इसका यहाँ आना पसन्द नहीं करता क्योंकि इस प्रकार की मायामयी स्त्रियों के आने से तपस्वियों की समस्या में विघ्न पड़ जाते हैं। तब हिमाचल ने इस प्रकार के सदाशिव के वचन सुने तब उसका मन अत्यन्त व्याकुल एवं चिन्तातुर हो गया।

* ग्यारहवां अध्याय *

(शिव पार्वती सम्वाद)

भगवान् शंकर के बचन सुनकर पार्वती जी बोलीं--योगिराज आपने जो कुछ पिताजी से कहा है उसका उत्तर मैं देती हूं। अन्तर्यामी ! आपने एक महान तप करने का निश्चय किया है। ऐसा तप क्या शक्ति युक्त नहीं ? यही शक्ति सब कर्मों की प्रकृति मानी गई है। इसी से चराचर जगत की रचनापालन संसार हुआ करता है। आप थोड़ा विचार करें वह प्रकृति क्या है ? और आप कौन हैं ? यदि प्रकृति न हो तो शरीर तथा स्वरूप किस प्रकार हों। इस प्रकार प्राणधारी सदा शक्ति का पूजन ध्यान वन्दन आदि करों तो जगत का क्रम सदा चलता रहे। यह सुनकर सदाशिव बोले-पार्वती ! मैं तप द्वारा प्रकृति का नाश कर चुका हूँ अब तत्व रूप में स्थित हूँ। साधू पुरुषों को प्रकृति

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

का संग्रह करना उचित नहीं। तब इस प्रकार के वचन सुनकर लौकिक व्यवहार के अनुसार हँसकर श्री पार्वतीजी कहने लगीं-योगिराज आप किस प्रकार की बात कर रहे हैं, थोड़ा विचार कर रहे हैं। यदि आपने प्रकृति का नाश कर डाला है तो आप किस प्रकार विद्यमान हैं। संसार तो प्रकृति से बँधा हुआ है क्या आप प्रकृति का तत्व नहीं जान रहे मैं ही प्रकृति हूँ आप पुरुष हो। आप भी मेरी कृपा द्वारा सगुण होकर चेष्टावान हो। नहीं तो किसी भी कार्य करने में आपसमर्थ न हो सकेंगे। तब इस प्रकार साँख्य शास्त्रके अनुसार श्री पार्वतीजी के वचन सुनकर शिवजी बोले-हिमाचल कन्या! यदि मैं माया रहित परमेश्वर हूँ तो आप श्रद्धा पूर्वक मेरी सेवा करने में तत्पर हो जाओ। इतना कहकर तब सदाशिव हिमाचल से बोले-अब हमें तप करने की इच्छा है और तुम्हारी कन्या के लिये आज्ञा है कि वह नित्य आकर मेरे दर्शन किया करे। यह सुनकर हिमाचल प्रसन्न हुए और श्री पार्वती जी को साथ लेकर अपने घरचले आये। उसी दिन से श्री पार्वतीजी नित्य ही भगवान् दर्शन करने आने लगीं। वहाँ आकर उनका षोडशोपचार [सोलह प्रकार] से पूजन करतीं उनके चरणों के धोवन का नित्य ही चरणामृत लेतीं, इस प्रकार पूजन करके घर लौट आतीं। इसी प्रकार के पूजन आदि में श्री पार्वती को बहुत सा समय बीतने लगा कभी-कभी तो श्री पार्वतीजी अपनी सखियों के साथ मिलकर काम-उत्पादक गायन भी करने लग जाती। एक दिन सदाशिव ने इस प्रकार श्रीपार्वती जी को अपनी सेवामें तत्पर देखकर विचार किया यह काली उमा,महेश्वरी तभी तप करेगी जब उसके द्वारा अभिमान का बीज अंकुर नाश हो जायगा और इसका ग्रहण भी मैं तभी करूँगा? ब्रह्माजी बोले-नारदजी! ऐसा विचार कर भगवान् शिव अपने ध्यान में तत्पर होगये। किन्तु उनके मनमें श्री पार्वतीजी के लिये एक प्रकार की चिन्ता ने आकर निवास कर लिया,उसी कारण वे गिरजा को नित्य ही देखते और पार्वतीजी भी बड़ी श्रद्धा एवं प्रेम से शिवचिन्तन,

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

पूजन एवं दर्शन नित्य करने लगी। इतना देखकर तारकासुर से पीड़ित हुये मुनि तथा इन्द्रादिक देवताओं ने ब्रह्माजी से कहा और ब्रह्माजी ने कामदेव को आज्ञा दी। आज्ञा पाकर कामदेव वहाँ पहुँचा और अनेकों प्रकार की माया वहाँ फैलाने लगा किन्तु भगवान् रुद्र उससे कभी चलायमान न हुए प्रत्युत काम को जलाकर भस्म करडाला।

* बारहवाँ अध्याय *

(वज्राङ्ग जन्म एवं पुत्र-प्राप्ति का वर मांगना)

नारदजी कहने लगे-ब्रह्माजी ! वह तारकासुर कौन था जिसने आकर देवाताओं को भी पीड़ित कर दिया। काम को सदाशिव ने भस्म कर दिया। ब्रह्माजी बोले-नारद ! मरीचि के पुत्र कश्यपजी हुए हैं, जिनकी दक्ष की दित आदि तेरह कन्या स्त्रियाँ थीं, उन सब में दित बड़ी थी। उससे हिरण्यश्यप तथा हिरण्याक्ष दो पुत्र हुए। इन दोनों को भगवान् विष्णु ने वाराह तथा नृसिंह रूप धारकर मार डाला। तब पुत्रों के मरजाने से दुखित होकर दित ने फिर कश्यप जी से प्रार्थना की। उनकी सेवा के द्वारा उसे गर्भ रह गया। इन्द्र ने यह जानकर और उसके गर्भ में प्रवेश करके बालक के खण्ड-खण्ड कर दिये किन्तु दित के व्रत के प्रभाव से गर्भ के बालक की मृत्यु न हुई। समय पूरा होने पर उसके गर्भ से उन्चास बालक उत्पन्न हुए। ये सब रुद्रगण हुए और शीघ्र ही स्वर्ग में चले गये। उसके बाद दित फिर कश्यपजी के पास पहूँची और उन्हें प्रसन्न करने लगी तब कश्यपजी बोले-दित ! तुम शुद्ध होकर तप करो दस हजार वर्ष पर्यन्त तब तुम अपनी इच्छानुसार पुत्र प्राप्त कर सकोगी। यह सुनकर दित ने श्रद्धा पूर्वक तप किया जब उसका तप पूर्ण होगया तो पति के द्वारा फिर गर्भवती हुई और अबके उसका अत्यन्त पराक्रमी वज्राङ्ग नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ। उसे माता ने आज्ञा दी कि देवतीओं से युद्ध करो। तब माता की आज्ञा से युद्ध में सब देवताओं को जीत कर उनका राजा बनगया। दित ने देखा कि यही पुत्र राजा बन गया है और सभी देवता उसके

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

आधीन हैं। ऐसी, देखकर वह अपने मनमें अतीव प्रसन्न हुई। उसके बाद एक बार कश्यपजी को साथ लेकर ब्रह्माजी वज्राङ्ग के पास गये। उनके कहने से वज्राङ्ग ने बन्धन खोल दिये और कहने लगा—ब्रह्माजी! मुझे राज्य से तो कोई प्रयोजन भी नहीं था किन्तु यही इन्द्र अपने स्वार्थ में आकर मेरी माता के बालकों को मारता रहा है। तभी तो मैंने इसे जीतकर राज्य प्राप्त किया है। मुझे तो भोग विलास की इच्छा ही नहीं और ये देवता लोग भी अपने किये कर्मों का फल पा चुके हैं। अब यह अपना राज्य फिर मुझसे ले सकते हैं। यह सब कुछ मैंने अपनी माता की आज्ञा से किया है। ब्रह्माजी! आप मुझे सबका सार रूप तत्व का उपदेश करें, जिससे मुझे सुख प्राप्त हो। नारदजी! यह सुनकर मैंने उसे सात्विक तत्व समझाया और एक रूपवती स्त्री उत्पन्न करके वज्राङ्ग को दी। उसके बाद हम दोनों वहाँ से चले आये। तभी से वज्राङ्ग ने राक्षस स्वभाव त्याग दिया। पर उसकी स्त्री के हृदय में सात्विक भाव न था। उसने काम-भावना से बड़े प्रेम से पति की सेवा की। तब उसकी सेवा से प्रसन्न होकर वज्राङ्ग बोला—प्राणप्रिये! कहो तुम क्या चाहती हो। यह सुनकर वह स्त्री कहने लगी—पतिदेव! यदि आप मुझपर प्रसन्न हैं तो त्रिलोकी को जीतने वाला महापराक्रमी विष्णु को भी पीड़ित करने वाला मुझे पुत्र दीजिये। ब्रह्माजी बोले—नारदजी! इस प्रकार के वचन सुनकर द्वेष भाव से दूर रहने वाला वज्राङ्ग व्याकुल होकर मनमें विचार करने लगा। देवताओं के साथ बैर-भाव करना ठीक नहीं; इधर यह देवताओं के साथ बैर-भाव करना चाहती है। यदि केवल स्त्री की अभिलाषा पूर्ण करदी तो सारे संसार के देवता एवं मुनि-जनों को दुःख उठाना पड़ेगा और यदि स्त्री की अभिलाषा पूर्ण न हुई तो मैं नरक का गामी होऊँगा। इस प्रकार धर्म सङ्कट में पड़कर उसने अपनी स्त्री की अभिलाषा पूर्ण कर देना उत्तम समझा। स्त्री के वचन में आकर उसे वैसा पुत्र देने का वर दे दिया फिर स्वयं उसको

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGaan Kosha

पूरा करने के लिये अपनी इन्द्रियों को वश में रखकर वज्राङ्ग ने बहुत वर्षों तक कठोर तपस्या की ? ब्रह्माजी बोले—तब मैं ही प्रसन्न होकर उसके पास पहुँचा और उससे वर माँगनेको कहा। तब उसने आकाशमें मेरा दर्शन करके प्रणाम किया और अनेक प्रकार से स्तुति करने लगा फिर बोला—प्रभो ! आप कृपा करके मुझे ऐसा पुत्र दें जो मेरा तथा अपनी माताजी का हित करने वाला तप स्वरूप एवं सामर्थ्यवान् रूपवान् हो। मैंने तथास्तु कह दिया और अपने लोक में चला आया।

* तेरहवां अध्याय *

(तारकासुर जन्म तथा उसका तप)

ब्रह्माजी बोले—नारदजी ! कुछ समय के बाद वज्राङ्ग की पत्नी गर्भवती होगई। समय पूर्ण होने पर बड़े लम्बे चौड़े शरीर वाला अति पराक्रमी बालक उत्पन्न हुआ। उसके जन्म समय में सारे संसार में बड़े उपद्रव हुए। भयङ्कर गर्जना के साथ बिजलियाँ गिरने लगीं, भूकम्प आने लगे। पहाड़ काँपने लगे। नदी, सरोवर आदि का जल उछलने लगा। बड़े जोर की आँधी हुँकार शब्द करती हुई चल पड़ी। सूर्य को राहु का ग्रास हुआ इत्यादि अनेकों उपद्रव होने लग गये। कश्यप ऋषि ने उसका तारक नाम रखा। वह तारकसुर अत्यन्त शीघ्रता के साथ वज्राङ्ग के घर पलने लगा। थोड़े ही काल में वह पर्वत जैसे आकार वाला होकर माता से तप करने की आज्ञा माँगने लगा। तब प्रसन्न होकर माता ने उसे आशीर्वाद देकर आज्ञा देदी तब मन में देवताओं को जीतने की अभिलाषा रखकर गुरुजी के कहने के अनुसार मधुवन में चला गया। वहाँ ब्रह्माजी को प्रसन्न करने के लिये कठोर तप करने लगा। उसने हाथों को ऊँचा कर लिया और दृष्टि ऊपर की ओर कर ली। एक पाँव पर ही खड़े होकर एकाग्र मनसे सौ वर्ष तक तप करता रहा सौ वर्ष तक केवल अँगूठे के आधार पर खड़े होकर तप किया, इसी प्रकार सौ वर्ष जलाहार से एवं सौ

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

वर्ष वायु के आहार से उसने तप किया और सौ वर्ष जल में, सौ वर्ष थल में, सौ वर्ष अग्नि में ठहर कर तप किया । फिर सौ वर्ष पृथ्वी पर हथेली धारण करके, सौ वर्ष वृक्ष की शाखा पकड़ कर । इसी प्रकार और भी अनेकों दुख सह सह कर तप करता रहा । तब तो उसके शरीर से बड़ा तेज निकलने लगा । उससे तो देव लोक भी जलने लग गये यह देखकर देवता घबड़ा गये । फिर मैं स्वयं तारकासुर के पास गया । और उससे वर माँगने के लिये कहा । तारकासुर ने सुनकर प्रणाम किया और बोला हे भगवान् ! मुझे वर-दान देते हैं तो पहिला वर यह दें कि आपके रचे हुए संसार में मेरे समान तेजवान व बलवान् कोई न हो । दूसरा यह कि भगवान् शङ्कर के वीर्य से जो बालक उत्पन्न हो उसी के ही चलाये हुए शस्त्र से मेरी मृत्यु हो और किसी प्रकार भी मेरी मृत्यु न हो । ब्रह्माजी ने "तथास्तु कह दिया फिर अपने लोक में चले आये । तब तो वह तारक अत्यन्त प्रसन्न हुआ फिर अपने घर में लौट आया । उसके बाद ब्रह्मा-जी की आज्ञा लेकर शुक्राचार्य ने दैत्यों का उसे राजा बना दिया तब तो तारकासुर की उन्नति होने लगी । तीनों लोकों का राजा बनने की चाहना से सबको दण्ड देता हुआ देवताओं को भी पीड़ित करने लगा । इन्द्र डरकर ऐरावत हाथी, अपना खजाना, सफेद रङ्ग के नौ घोड़े दे दिये । ऋषियों ने डरके मारे कामधेनु एवं सूर्यने उच्चैःश्रवा तथा अन्य देवता लोगों ने भी अपनी अपनी प्रिय अनेकों वस्तुऐं देदी । फिर उस दैत्यराज ने त्रिलोकी में से ढूँढ २ कर उत्तम २ वस्तुएं निकाल लीं । समुद्रों ने तो डर के मारे अमूल्य रत्न देदिये । पृथ्वी इसकी प्रजा के हित परिश्रम के बिना ही अनेकों अन्न आदि उत्पन्न करने लग लई । सूर्य भी इसके भय से उतना तपने लगा जिससे किसी को कष्ट न हो । इसी प्रकार चन्द्रमा वायु, अग्नि सबके सब इसके अनुकूल हो गये । देवता एवं पितरों के भाग भी ले-ले कर यह तारकासुर इन्द्र के सिंहासन पर चढ़ बैठा । देवताओं को निकाल कर उनके स्थान

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

दैत्यों को दे दिये।

* चौदहवां अध्याय *

(तारका का स्वर्ग त्यागना)

ब्रह्माजी बोले--नारदजी ! सारे देवता तारकासुर के डर के मारे मेरे (ब्रह्माजी के) पास पहुँच कर प्रणाम तथा स्तुति करके आप भी अपना दुःख सुनाने लगे । देवता बोले-ब्रह्माजी ! आपने ही, उस तारकासुर को वर देदिया है तभी वह त्रिलोकी को जीतकर हम सबको स्वर्ग से निकाल कर स्वयं इन्द्र के सिंहासन पर बैठ गया है। अब आपकी शरण में आये हैं। हमारे दुखों का नाश करो। नारदजी ! मैंने उनसे कहा-देवताओ ! मैं तो इसे मार नहीं सकता क्योंकि मैं इसे स्वयं वर दे चुका हूँ। किन्तु यह विष वृक्ष की भाँति समय आनेपर स्वयमेव मर जायगा। इस तारकको तो विष्णु या स्वयं शिव भी नहींमार सकते। हाँ यदि भगवान् रुद्र के वीर्य से पुत्र जन्म हो वही इसे मारने में समर्थ होगा। इसके लिए मैं एक उपाय कहता हूं। दक्ष पुत्री सती जब हिमाचल के घर मैंना के गर्भ से उत्पन्न हो चुकी है उसका विवाह भगवान् रुद्र से होगा और उसके द्वारा ही पुत्रोत्पत्ति होगी। वही इसे मारेगा। अब तुम भगवान् रुद्र के साथ पार्वती का विवाह कराने की चेष्टा करो और अब तो मैं स्वयं तारकासुरके पास जाकर उसे समझाता हूँ जिससे वह तुम्हें अपने-अपने स्थान दे दे। ब्रह्माजी बोले-इतना समझाकर मैंने उन सबको विदा कर दिया। स्वयं मैं उस तारकासुर के पास पहुँचा और उसे समझाने लगा। मैंने कहा-पुत्र ! मैंने तुमको इसलिये वर नहीं दिये थे कि तुम अपनी सीमा से भी पार हो जाओ। यह स्वर्ग तो देवताओं का है। इसपर तुम्हारा राज्य करने का अधिकार नहीं। तुम तो इसे शीघ्र ही छोड़कर पृथ्वी पर राज्य करो नहीं तो दुःख पाओगे। नारदजी इस प्रकार मैं उसे समझाकर अपने लोक में चला आया । तारकासुर ने भी स्वर्ग छोड़ दिया। पृथ्वी पर आकर शोणित नगर में राज्य करने लगा। देवता मेरी आज्ञा से इन्द्र के साथ

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

स्वर्ग में चले गये।

* पन्द्रहवां अध्याय *

(कामदेव का शिव के समीप गमन)

ब्रह्माजी बोले—नारदजी ! स्वर्ग में सब देवता मिलकर सलाह करने लगे कि किस प्रकार से भगवान् रुद्र कामसे युक्त होकर सतीदेवी से विवाह करें शिव में काम उत्पत्ति के लिये कामदेव को वहाँ भेजना चाहिये। सबने कहा-ऐसा होना चाहिए। तब इन्द्र ने कामदेव को स्मरण किया। कामदेव उस काल अपने दल बल के साथ वहाँ आकर इन्द्र को प्रणाम करके बोला सुरनाथ आपने मुझे किसलिए स्मरण किया है ? सुनो तारक नाम एक दैत्य है। ब्रह्माजी से वर पाकर वह निर्भय होरहा है उसे कोई मार नहीं सकता। वह इतना दुष्ट है कि युद्ध में देवता लोग भी उससे डरकर भाग गये इसकी मृत्यु भगवान् रुद्र के पुत्र द्वारा हानी है अब उनका पुत्र तभी होगा जब वे उमा के साथ विवाह करेंगे। श्रीमहादेवजी को मोहित करना तुम्हारा काम है। तभी वे उमा से प्रेम करेंगे और सुनिये श्रीउमादेवीजी भी नित्य ही उनके पूजन के लिये उसके चरणों में पहुंचती हैं। उन दोनों का विवाह होजाने से देवताओं का कार्य हो सकता है इन्द्र के वचन सुन कामदेव बोला—हे स्वामिन् ! मैं अवश्य इस कार्य को करूँगा। यह यहकर शिव माया से मोहित हुआ कामदेव बसन्त आदि तथा अपनी रति स्त्री को लेकर उस स्थान पर गया जहाँ भगवान् रुद्र तप कर रहे थे।

* सोलहवां अध्याय *

(काम द्वारा शिव को मोहित करने का प्रयत्न)

ब्रह्माजी बोले—नारदजी ! वहाँ जाकर कामदेव अपनी माया फैलाने लगा। अतीव सुन्दर बन उपवन लगा। बसन्त की बहार खिल पड़ी कोयलें मधुर शब्द करने लगीं। शीतल मन्द सुगन्ध पवन चल पड़ी नदी सरोवर में कमल खिल गये भौंरे मधुर गुञ्जार

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

करने लगे। काम साधनों को देख भगवान् शङ्कर आश्चर्य में पड़ गये और उससे भी कठिन तपस्या करने में तत्पर हो गये। कामदेव के बसन्त बहार के साधन से तो कुछ न बन न सका तब उसने रति स्त्रीके साथ पाँच पुष्प वाण लेकर भगवान शिव के बाई ओर चला दिये। तबसम्पूर्ण विश्वको मुग्ध कर देने वाले उन बाणोंने वहाँ पर भी अपना प्रभाव न दिखाया। उसके बाद हावभाव से मिले हुये शृङ्गार रसने भी शिव शरीर पर आक्रमण कर दिया किन्तु वे सबके सब शिव हृदय तक पहुँचने के लिये कहीं से भी मार्ग नहीं पा सके। प्रचण्ड अग्नि के समान तीसरे नेत्र को धारे हुए ध्यान मग्न भगवान् रुद्र को कौन मोहित कर सकता है।

नारदजी ! ठीक उसी समय जगत जननी उमा भी धूप दीप आदि लेकर वहाँ पूजन करने के लिये आईं। परम सुगन्धित पुष्पोंको लेकर सखियाँ भी साथ थीं उस समय शिवजी के ध्यान से मुक्त हुये थे तब कामदेव को अवसर मिल गया। सदाशिव पर बाण चला चला कर उन्हें मोहित करने लगा। उस समय जगत जननी भी शृङ्गार करने आई थीं वह भी मानों कामदेव की सहायक हो रही थीं। तब कामदेव ने धनुष पर पुष्प वाण सन्धान करके महादेव पर छोड़ दिया। तब सदाशिव सकाम होगये। तब भगवान् शिव सकाम को प्राप्त होकर विचरने लगे कि श्री पार्वतीजी के सुन्दर शरीर को देखकर मैं आनंदित हो रहा हूँ यदि उन्हें मैं आलिंगन ही करलूँ तो न मालूम कितना आनन्द प्राप्त होगा इस प्रकार कुछ समय तक आप विचरते रहे फिर उनको ज्ञान हुआ। तब कहने लगे अरे ! यह क्या ? मैं निर्विकार होकर भी काम से विकार पाकर मोहित हो गया। यदि में ईश्वर होते हुए भी स्त्रियों के अङ्गों का स्पर्श कर बैठा तो साधारण मनुष्यों की क्या गति होगी ? तप करते-करते यह नया बिघ्न आकर खड़ा होगया। कामदेव महाकुकर्मी निकला जिसने मेरे मनमें भी विकार पैदा कर दिया।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* सत्तरहवां अध्याय *

(कामदेव का भस्म होना)

ब्रह्माजी बोले—नारदजी ! अपनी अद्भुत दशा देख-देखकर सदाशिव काम-पीड़ित होकर इधर-उधर देखने लगे तब दिशाएं भी काँप गईं तब अपने बाईं तरफ पुष्प धनुष ताने काम को बैठा हुआ देखा। जो शिव पर दुवारा बाण छोड़ने के लिये प्रयत्न कर रहा था, उसे देखते ही रुद्रदेव क्रोध में आगये और शिव के तेज को देखकर काम काँपने लगा और साथ में मृत्युञ्जय भगवान् शङ्कर को हाथ जोड़कर ध्यान करने लगा। शिव क्रोध में तप्त हुये कि उनके मस्तक का तीसरा नेत्र खुल गया, उससे बड़ी तेज अग्नि निकली। उस अग्नि से बृक्ष पर बैठा हुआ कामदेव जलने लगा वृक्ष से गिर कर भस्म हो जाने पर देवगण दुःखी होकर रोने लगे। श्री पार्वतीजी सखियों के साथ घर में चली गईं। कामदेव की स्त्री रति तो दुःखके मारे बेहोश होकर पृथ्वी पर पड़ी फिर थोड़ी देर बाद विचारने लगी। अब मैं क्या करूँ कहाँ जाऊ ? देवताओं ने मेरे साथ बहुत बुरा किया, जो मेरे पति को यहाँ भेजकर भस्मकरा दिया। उसके करुण विलास को सुनकर चराचर जीव भी दुःखी होने लगे। उसके बाद इन्द्र आदि देवता वहाँ पहुँचकर रति को धैर्य देते हुए समझाने लगे। बोले-देवी ! यह संसार दुखों की खान है। कोई भी किसी को दुःख सुख नहीं दे सकता, सब कोई अपने कर्मों का फल भोग रहे हैं। रति देवि ! धैर्य धारण करो। शोक करने से क्या होगा ? अब तुम धैर्य धारण करके अपने पति की थोड़ी भस्म लेकर अपने पास यत्नपूर्वक रख लो। शिव कृपा से तुम्हारा पतिदेव फिर जीवित हो जायगा। ब्रह्माजी बोले—नारद जी ! इस प्रकार रति को धैर्य देकर देवता लोग भगवान् शङ्कर के निकट पहुँचे। उन्हें प्रणाम तथा स्तुति द्वारा प्रसन्न करके बोले—हे प्रभो ! यह काम; कोई अपने स्वार्थ के लिये कार्य नहीं कर

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

कर रहा था, वह सम्पूर्ण देवताओं का कार्य था। दैत्य तारकासुर, सम्पूर्ण देवताओं को अतीव पीड़ित कर रहा है, उसी के विनाश के लिये यह उसका कार्य था। अब आप कृपा करके क्रोध शाँत करो और दुःखित होती हुई एवम् रोती हुई उसकी पत्नी रति को समझाने की कृपा करें। तब सदाशिव बोले—ऋषियों तथा देवताओं! अब तो मेरे क्रोध के कारण जो कुछ होगया, सो हो गया—उसका कुछ नहीं हो सकता। हाँ, जब श्रीकृष्ण भगवान् रुक्मिणी के साथ विवाह करके द्वारिका में पुत्र उत्पन्न करेंगे तब उन्हीं में कामदेव का भी जन्म होगा, जिसका नाम प्रद्युम्न होगा। शम्बर नामक एक दानव आकर उसे चुरा ले जायगा। और उसे समुद्र में जाकर फेंक देगा और यह रति उसी शंबर के नगर में निवास कर रही होगी। वही समुद्र में फेंका हुआ इसका पति वहीं आकर इसे मिल जायगा। यह सुनकर देवगण कहने लगे—प्रभो! जब तक इस रति का कहीं देहान्त न हो जाय? इसलिये कृपा करके इसके शरीर की तब तक आपही रक्षा करते रहें और इसके पति को शीघ्र ही जीवित करके इसका दुःख दूर करने की कृपा करें। सदाशिव बोले—देवताओ! कामदेव शीघ्र ही जीवित हो जायगा। मेरा ही गण होकर आनन्द करेगा। यह वृत्तांत किसी से मत कहना मैं शीघ्र तुम्हारे दुःख हर लूँगा। अब तुम अपने २ लोकों में जाओ, यह कहकर भगवान् शंकर अन्तर्ध्यान हो गये और देवगण भी अपने-अपने लोक चले गये।

* अठारहवां अध्याय *

(शिव क्रोधाग्नि की शान्ति)

ब्रह्माजी बोले—नारदजी! भगवान् शंकर तीसरे नेत्र की अग्नि द्वारा काम के भस्म हो जाने पर त्रिलोकी के चराचर जीव डर कर मेरे पास आये उन्होंने अपना कष्ट मुझे आकर सुनाया। उसके बाद उसका कारण समझकर मैं भगवान् शंकर के पास पहुँचा। वहाँ मैंने देखा कि भगवान् शंकर की क्रोध की अग्नि बड़ी भड़क रही थी। उस महान्

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

भयङ्कर अग्नि को मैंने शिव कृपा से रोक कर हाथसे पकड़ लिया और समुद्र के पास पहुँचा। मुझे आया देखकर समुद्र पुरुष का रूप धारण कर, मेरे पास आया और बोला-ब्रह्माजो ! मैं आपकी क्या सेवा करूँ ? ब्रह्माजी बोले-सागर ! भगवान् शङ्कर ने अपने तीसरे नेत्र की अग्नि द्वारा कामदेव को भस्म कर दिया है। वह शिव क्रोधाग्नि है। उससे त्रिलोकी जल जायगी। इस कारण मैं उसे रोक कर आपके पास ले आया हूँ। तुम ही सृष्टि के प्रलय काल तक इसे धारण किये रहो। जिस समय मैं आकर निवास करूँ तभी इसे तुम त्याग देना। इसे भोजन और जल तुम्हें नित्य देना होगा। इस प्रकार ब्रह्माजी के कहने पर समुद्र ने उसे धारण करने के लिए स्वीकार कर लिया। उसके बाद पवन के साथ बड़े २ शोले निकलती हुई वह शिव क्रोधाग्नि समुद्र में प्रविष्ट होगई। मैं अपने लोक में चला आया।

* उन्नीसवाँ अध्याय *

(पार्वती को नारद का उपदेश)

ब्रह्माजी बोले-नारदजी ! श्री पार्वतीजी जब कामदेव के भस्म होने पर घर पहुँची तो उसे भगवान् शङ्करका विरह व्याकुल करने लगा श्री पार्वतीजी तो खाते पीते बैठते सोते सब समय में शिव विरह में व्याकुल रहने लगीं। ब्रह्माजी बोले--नारदजी ! तुम ही उस समय लोकों में घूमते-घूमते वहाँ पहुँच गये। हिमालय ने तुम्हें आया देख कर आदर सत्कार के साथ उत्तम आसन पर बिठाया। इसके बाद अपनी पुत्री के शिव पूजन से लेकर कामदेव के भस्म होने तक का सारा वृत्तान्त कह सुनाया। यह सुनकर तुमने तो हिमालय को केवल इतना ही कहा कि शिव भजन करो। इतना कहकर वहाँ से उठ कर तुम श्री पार्वतीजी के पास पहुँचे और उन्हें अकेला पाकर उनसे बोले-पार्वती जी ! बिना तपस्या किये हुये भगवान् शङ्कर की तुमने सेवा की इससे तुमको अभिमान हो गया था। तुम्हारे उसी अभिमान को तोड़ने के लिये ही सदाशिव ने ऐसा ही किया है। अब तुम उनकी प्राप्ति के

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

लिये बहुत समय तक तप करो, जिससे प्रसन्न होकर सदाशिव तुम्हें स्वीकार करें। इतना सुनकर श्री पार्वतीजी बोलीं—मुनिराज! आप परोपकार परायण हो कृपा कर शिव आराधना के लिये मुझे मन्त्र प्रदान करें। क्यों कि गुरु की दक्षिणा के बिना कोई कार्य सिद्ध नहीं होता तब नारदजी तुमने कहा कि, देवी! मैं तुम्हें पंचाक्षर मन्त्र कहता हूँ उसका जप करो। 'ॐनमः शिवायः' यह मन्त्र सब मन्त्रों का राजा है और सर्व कामनाओं को पूर्ण करने वाला है। इसे विधि पूर्वक जपने से तुमको साक्षात् शिव के दर्शन होंगे।

* बीसवां अध्याय *

(पार्वतीजी की तपस्या)

ब्रह्माजी बोले—नारदजी! शिवजी तपस्या द्वारा प्रसन्न होते हैं। इस प्रकार का निश्चय करके श्री पार्वती अपने माता--पिता से बोलीं पिताजी मैं तप करना चाहती हूं। तप के द्वारा ही मेरे शरीर, स्वरूप, जन्म-एवं वंश आदि की सफलता होगी। इसलिये आप मुझे तप करने की आज्ञा देदें। सुनकर हिमाचल बोले—हे पुत्रि! मुझे तो तुम्हारा विचार बहुत अच्छा प्रतीत होता है। तुम अपनी माता से भी जाकर पूछ लो। यदि यह आज्ञा दे दें तो बहुत उत्तम होगा। यह सुनकर पार्वती, मैंना माता से पूछने लगीं—माताजी! आप मुझे तप करने की आज्ञा दे दें। में कल प्रातःकाल होते ही बन में तप करनेके लिये चली जाऊँ। यह सुनकर मैंना अतीब दुखित होकर बोली—पुत्रि! तुम घर में ही तपस्या करो। बन जाने की क्या आवश्यकता हैं? तप करने से बन में अनेकों दुख होते हैं इस प्रकार की अनेकों बातें कहकर मैंना ने उमा देवी को वन जाने से रोका। तब तो उमा देवी अत्यन्त दुखित होगई। उसे इस प्रकार दुखित एवं क्लेश में देख कर अन्त में मैंना ने उमा देवी जी को तप करने की आज्ञा देदी। तब

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

अत्यन्त आनन्द को पाकर अपनी माता-पिता तथा सखी सहेली सबको यथोचित प्रणाम आदि करके उनसे आशीर्वाद पाकर तपके लिए चल पड़ीं। कुछ दूर पर जाकर उन्होंने वस्त्राभूषण आदि उतार दिए। वल्कल मृग चर्म आदि धारण कर उसी स्थान पर पहुँची जहां सदाशिव ने तप किया था। वहाँ की पृथ्वी को शुद्ध करके वेदी बनाकर अपनी इन्द्रियों को वश में करके मन को एकाग्र कर कठिन तप करना आरम्भ कर दिया। गरमी के दिनों में अपने चारों ओर अग्नि जला कर बीच में बैठकर मन्त्र जपतीं, वर्षा का कष्ट सह २ कर शीतकाल में शीतल जल में बैठकर मन्त्र जपतीं। खाना, पीना वायु आदि का सब विचार छोड़ दिया। सब मनोरथ के पूर्ण करने वाले भगवान शङ्कर के ध्यान में मग्न होकर मन्त्र जपने लगीं। ब्रह्माजी ने कहा—नारदजी! इस प्रकार कठोर तप करते २ श्री उमाजी को तीन हजार वर्ष व्यतीत हो गये। उन्होंने शीत वर्षादि अनेकों कष्ट सहे। इस प्रकार से उमा देवी के कठोर तप को देखकर आश्चर्य में पड़े हुए सभी देवराज उनके दर्शन के लिए आने लगे, कि इस प्रकार का कठोर तप आज तक तो किसी ने किया ही नहीं।

* इक्कीसवां अध्याय *

(उमा के कठिन तप को देखकर देवताओं का शिवजी के पास जाना)

ब्रह्माजी बोले—नारदजी! श्री पार्वतीजी के तप द्वारा त्रिलोकी तप उठी। देवता, दानव, ऋषि, मुनि, यक्ष, गन्धर्व सिद्ध, साध्य विद्याधर आदि सभी व्याकुल होकर इन्द्र आदि लोकपालों को साथ लेकर ब्रह्माजी की शरण में पहुँचे और कहने लगे-ब्रह्माजी! आपका बनाया यह चराचर ब्रह्माण्ड कितना संतप्त हो रहा है। उससे दुखित होकर हम सब आपकी शरण में आये हैं। तब ब्रह्माजी बोले—नारदजी! इस प्रकार उनके कहने पर मैं ध्यान द्वारा श्री उमा देवी जी की तपस्या को जान गया, फिर विष्णुजी को सुनाने के लिये हम सब मिलकर क्षीर समुद्र पर पहुँचे। वहां सुन्दर आसन पर विराजमान विष्णु भगवान से कहा—इस समय श्रीपार्वतीजी, भगवान शंकरकी प्राप्ति के लिये कठोर तप

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

कर रही हैं उसी तप द्वारा त्रिलोकी तप्त हो रही है। हम भी अतीव दुःखित होकर आपकी शरण में आये हैं आप ही हमारी रक्षा करें। विष्णुजी बोले-देवताओं! आप लोगों का कष्ट मैंने जान लिया! अब हम सबको मिलकर भगवान् शङ्कर की शरण में जाना चाहिए वहाँ चलकर उनसे प्रार्थना करें। कि वे जगत माता पार्वती जी के तप द्वारा प्रसन्न होकर उसे इच्छित वर दें और उसके साथ विवाह करके हम लोगों का कष्ट निवारण करें। भगवान् विष्णु के कथन को सुनकर डरते हुए देवता बोले-भगवान्! हम तो भूलकर भी भगवान् शङ्कर के पास नहीं जायेंगे, क्योंकि उनका क्रोध हमसे नहीं सहा जा सकता! कामदेव को उन्होंने भस्म कर डाला कहा हम लोगों को भस्म न कर डालें! नारदजी! इस प्रकार देवताओं के वचन सुनकर भगवान विष्णु उनको समझाते हुए बोले—देवताओं! भय मत करो! भगवान् शङ्कर परम दयालु हैं, हमारी अवश्य ही रक्षा करेंगे। ब्रह्माजी बोले-विष्णु के वचन सुनकर सभी देवता भगवान शङ्कर के दर्शन के निमित्त चल पड़े। उनसे प्रथम तप में मग्न श्रीपार्वताजी के दर्शन एवं उनकी प्रशसा करते हुए फिर भगवान शङ्कर के निवास स्थल पर पहुँचे। दूर से ही भगवान शङ्कर के दर्शन करके भयभीत देवताओं ने पहले नारदजी को उनके पास भेजा। नारदजी तो निर्भय होकर शङ्कर के पास चले गये और वहाँ उन्हें परम आनन्द में विराजमान देखकर देवताओं को बुलाने के लिये लौट आए। फिर सब देवताओं को साथ लेकर भगवान् महादेव जी के पास पहुंचे! जाकर शिवजी को प्रसन्न किया फिर उन्हें आनन्द के साथ अपने आसन पर विराजमान देखकर बिष्णु आदि देवता उनके चरणों में बार-बार प्रणाम करने लगे।

* बाइसवाँ अध्याय *

(श्री शङ्करजी की स्तुति)

भगवान् शङ्कर का दर्शन पाकर देवता बोले—भगवान रुद्र!

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

हम आपकी शरण में आये हैं। आप हमारी रक्षा करें। विष्णुजी ! ब्रह्माजी ! एवं सब देवताओ ! आप सब का यहां आने का क्या कारण है ? तब सारे देवता श्रीविष्णुजी की तरफ देखने लग गये। तब विष्णुजी कहने लगे—भगवान् शङ्कर ! तारकासुर दानव ने हम सबको अतीव दुःखित कर दिया है। उसने तो हमें अपने २ स्थानों से भी निकाल दिया है । स्वामिन ! उसकी मृत्यु आपके पुत्र के द्वारा ही होगी। अतः आप गिरिजा के साथ शीघ्र ही विवाह करें। भगवान् शङ्कर कहने लगे—हे देवताओ ! यदि मैं गिरिजा के साथ विवाह कर लूँ तो सबके सब देवता मुनि आदि कामी हो जायेंगे वह सुन्दरी स्वयंमेव ही कामदेव को जीवित कर देगी, मैंने पहले कामदेव को सब कार्यों की सिद्धि के लिये भस्म कर दिया है अब मुझे विवाह करने के लिये वाध्य मत करो। इतना कहकर भगवान् शंकर ध्यान में स्थिर होकर अपने ही ब्रह्म—स्वरूप आत्मचिन्तन में लग गये। तब शिवजी को ध्यानावस्था में देखकर फिर नन्दीश्वर से विष्णु आदि सब देवता कहने लगे—नन्दीश्वर जी ! हम अब क्या करें ? अब इनके प्रसन्न हो जाने के लिये कोई उपाय बताइये ? नन्दीश्वर जी ने कहा-हे विष्णु आदि सब देवताओ ! आप भगवान् शंकर जी की प्रार्थना करते रहो भगवान् महादेव तो अपने भक्तों के ही वश में हैं। नन्दीश्वरजी से इतना सुनकर सभी देवता भगवान् शिव की स्तुतियां करने लगे। अत्यन्य दीनता के साथ प्रार्थना स्तुति करते २ देवता लोग रुदन भी करने लगे। ब्रह्माजी ने कहा—तब मैं एवं विष्णु दोनों मिलकर भक्ति के साथ शिवकी ध्यान द्वारा प्रार्थना करने लगे तब भगवान् शंकर की समाधि खुली और हमारी ओर प्रेम के साथ देखकर बोले-देवतागण ! तुम लोग मिल कर यहाँ क्यों आये हो मुझसे कह दो तब विष्णुजी बोले-देवाधि-देव ! अन्तर्यामी हैं, हम तो आपकी शरण में ही हैं। स्वामिन ! श्री पार्वतीजी के साथ विवाह करें। पुत्र उत्पन्न करके तारक दानव से हम लोगों की रक्षा करें। श्री पार्वतीजी तो नारद

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

उपदेश से आपके ही अर्थ कठोर तप कर रही हैं। भगवान शङ्कर हँसकर कहने लगे-हे देवताओं ! मनुष्यों के लिए विवाह एक जेलखाना है। इस लोक में कुसङ्ग तो कई प्रकार के हैं। उनमें मुख्य स्त्री सङ्ग है। उसी से ही विषय वासना बढ़कर बन्धन में डाल देती है मैं स्वयं तो चाहता हूँ इस वन्धन में न पड़ू किन्तु मैं भक्तों के आधीन हूँ इन लोगों के हित अनुचित कार्य कर बैठता हूं। इसी कारण मैं आप लोगों की प्रार्थना पूर्ण करूँगा। देवता लोगों तारकासुर द्वारा तुम्हें जो दुःख प्राप्त हैं उन्हें निवारण करने के लिये इच्छा न होने पर भी मैं श्री पार्वतीजी के साथ विवाह कर लूँगा। अब तुम निर्भयता पूर्वक अपने २ स्थान पर चले जाओ। नारदजी ! देवताओं के प्रति ऐसा कहकर भगवान् मौन हो गये।

* तेईसवां अध्याय *

(श्री पार्वतीजी की परीक्षा)

ब्रह्माजी बोले—नारदजी ! विष्णु आदि दैवगण चले गये तब भगवान् शङ्कर श्री पार्वतीजी की परीक्षा के लिए उन्होंने वसिष्ठ आदि सात ऋषियों का स्मरण किया। स्मरण करते ही सातों ऋषि सदाशिव के पास आ गये प्रणाम एवं स्तुति करके विनय से बोले--हे अन्तर्यामी महादेव ! हम आपके दास हैं आज्ञा करें। तब ऋषियों के बचन सुनकर सदाशिव हँसकर बोले-सप्त ऋषियों ! तुम गौरी शिखर नाम के पर्वत पर चले जाओ वहाँ मेरी प्राप्ति से लिए पार्वती जी ऐकाग्र मन होकर तप कर रही हैं। वहाँ अनेकों छल कपट करके उसके प्रेम की परीक्षा करो। सातों ऋषि भगवान् शङ्कर की आज्ञा से वहाँ पहुंचे और श्री गिरिजा को प्रणाम किया फिर कहने लगे-श्री पार्वतीजी ! आप तो बड़ा कठोर तप कर रही हो। इस तप का क्या कारण है ? इतना सुनकर श्री पार्वतीजी बोलीं--ऋषि श्रेष्ठों ! मैं तो श्री नारदजी की आज्ञा से भगवान् शङ्कर को ही वर पाने के निमित्त तप कर रही हूँ। वही मेरे देवता हैं वही मेरी कामना पूर्ण

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

करेंगे ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है। इतना सुनकर सातों ऋषि हँस पड़े। शिव ने गिरिजा का असाधारण प्रेम समझ कर छल के साथ बोले-गिरिजे! आप को कपटी नारद मिल गया भला उसके चरित्र को तुम जैसी निष्कपट कुमारियाँ क्या जान सकती हैं? नारद ने तो अनेकों को मरवा दिया। बहुतों के घर बरबाद कर दिये। दक्ष के दस हजार पुत्र पश्चिम की ओर नारायण सरोवर पर पिता की आज्ञा से तप करने गये। वहाँ पर यही महात्मा पहुंच गये उन्हें ऐसा उपदेश दिया जिससे वे सबके सब घर ही न लौटे। दक्ष ने फिर दस हजार पुत्र उत्पन्न करके तप करने को भेजे उनको भी बहका दिया। विद्याधर चित्रकेतु को इस प्रकार का उपदेश दिया जिससे उसका घर फिर बसा ही नहीं। इस प्रकार से बहुतों को वैराग्य ज्ञान समझा २ कर चौपट कर डाला। उसी नारद की बातोंमें अब तुम भी आगई हो। गिरजे! थोड़ा विचार कर देखो-उनके बहकाने से तुम पति किस प्रकार का चाहती हो? जो महा निर्लज्ज, अमङ्गल रूप, काम का सत्रु, निर्विकारी, उदासीन, कुलहीन, भूत प्रेतों के मध्य में रहने वाला नग्न। भला इस प्रकार का पति पाकर तुम्हें कौन सा सुख मिलेगा? इसी शिव ने परम गुणवती सुन्दरी दक्ष पुत्री सती के साथ विवाह किया उस विचारी को इसने कौन सा सुख दिया। आखिर पिता के घर जाकर इसी दुःख के कारण उसने अपना शरीर जला दिया। गिरजे! इन्हीं बातों का विचार करके तुम इस हठ को छोड़ो तप छोड़कर घर चली जाओ। हम तुम्हारा बैकुण्ठ के स्वामी लक्ष्मी के पति सर्व सुन्दर विष्णु भगवान् के साथ विवाह करा देंगे जिससे तुम सुखी हो जाओगी। ब्रह्माजी बोले-नारदजी! जब इस प्रकार से मुनियों ने कहा तब हँसकर पार्वतीजी करने कहने लगीं-मुनीश्वरगण! आप जो कुछकह रहेहैं सत्यहै और मैं अपने दृढ़ विश्वास को नहीं त्यागसकती-पर्वत पुत्री होने के कारण मैं तप से घबराती नहीं हूँ। देवऋषि नारदजी ने तो मेरा परम हित किया है वे मेरे परम गुरुदेव हैं मैं इनको किस प्रकार त्याग सकती

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

हूँ। मुनीश्वरो ! अपने गुण के स्थान विष्णु को श्रेष्ठ तथा शिवजी को गुण रहित कही है। किन्तु सदाशिव तो भक्तों के लिये अवतार धारण किया करते हैं दुनियां की प्रभुता दिखाते ही नहीं। इसी कारण तो हर एक आदमी अपने धर्म जाति एवं कुलीन आदि से उन्हें पा नहीं सकता। मुझे तो मेरे गुरु ने अति कृपा करके उत्तम मार्ग दिखा दिया है जिससे मैं शिव के परम तत्व कोजान गई हूँ। ऋषिवृन्त ! यदि भगवान् शिव के साथ विवाह न हुआ तो क्या चिन्ता है मैं अविवाहित रहकर ही उन्हीं का भजन ध्यान किया करूँगी। सूर्य इधर का उधर से भी उदय हो जाय किन्तु मेरी प्रतिज्ञा अटल रहेगी। इतनी कहकर, नारदजी ! श्री पार्वतीजी चुप हो गईं। सप्त ऋषि उस का दृढ़ संकल्प देख कर आशीर्वाद देने लगे। फिर प्रणाम करके भगवान् शिव के पास लौट आये।

* चौबीसवां अध्याय *

(शिव द्वारा पार्वतीजी की परीक्षा)

ब्रह्माजी बोले—नारदजी ! सप्त ऋषियों ने आकर श्री पार्वतीजी का सम्पूर्ण वृत्तान्त सुना दिया फिर वे अपने लोक में चले गये। इसके बाद स्वयं महादेवजी दण्डी ब्राह्मण का रूप धारण कर श्री पीर्वतीजी के पास आये तब श्री पार्वतीजी को ब्रह्मचारिणी रूप में देख कर अत्यन्त प्रसन्न हुए और इधर श्री पार्वतीजी भी ब्राह्मण वेषधारी श्रीशिव को देखकर प्रसन्न हुईं तब ब्राह्मण भक्ति में आकर उनका फल-फूलों की भेंट से पूजन सत्कार करने लगीं। और बोलीं-विप्रवर ! आप कहाँ से पधार रहे हैं ? आप कौन हैं ? यह सुनकर ब्राह्मण बोला तपस्विनी ! मैं एक तपस्वी हूँ। जहाँ कहीं अपनी इच्छानुसार घूमा करता हूँ। देवी ! आप कौन हैं ? किसकी कन्या एवं तप किस लिये कर रही हैं ? इतना सुनकर श्री पार्वतीजी बोलीं-ब्राह्मण देवता ! मैं हिमालय की कन्या हूँ। अपने कामदेव को भस्म करके शिव मुझे त्याग कर कहीं चले गये। तब उनके बिरह में स्वर्ण

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

नदी पर आई और वहाँ बहुत समय तक तप करती रही किन्तु फिर भी मैं अपने प्राणनाथ को न पा सकी। अब मैंने अपना प्रयत्न असफल होता देख अग्नि में जलकर मरना ही श्रेष्ठ समझा था आपको आया देख कर मैं क्षण भर रुक गई हूं। अब आप पधारें मैं अग्नि में प्रवेश करूँगी। ब्रह्माजी बोले—नारदजी! इस प्रकार कह कर उनके देखते देखते ही श्री पार्वतीजी अग्नि में प्रवेश कर गईं किन्तु श्री पार्वतीजी के अग्नि में प्रवेश करते ही अग्नि चन्दन के समान ठण्डी हो गई। यह देखकर ब्राह्मण बोले—देवीजी! तुम्हें तो अग्नि भी जला नहीं सकती। हे भगवती! अब आप अपना मनोरथ मुझ से कहें।

* पच्चीसवां अध्याय *

(शिव-पार्वती-सम्वाद)

इस प्रकार सुनकर श्री पार्वती बोलीं—ब्राह्मण देवता! मैं मन कर्म और वाणी द्वारा ही भगवान् शङ्कर को पति बनाने का निश्चय कर चुकी हूं। मैं जानती हूं यह कठिन है। फिर भी मेरा उत्साह भङ्ग नहीं हुआ अभी तक तप करने में मेरा मन जुड़ रहा है इतना सुनकर ब्राह्मण बोले—देवीजी! तुम श्री महादेवजी को चाहती हो उन्हें गुरु कृपा द्वारा मैं भली प्रकार जानता हूँ। वे बैल पर चढ़ने वाले वृषभध्वज हैं। भस्म जटाधारी हैं भूत पिशाचों के मध्य में रहते हैं। इस प्रकार से महादेवजी को न मालूम क्यों तुम अपना पति बनाना चाहती हो? कुछ विचार भी किया है, कि नहीं। न मालूम तुम्हारी समझ कहाँ चली गई इससे प्रथम दक्ष कन्या ने भी प्रारब्ध वश शिव को ही पति बनाया था। उसके पिता दक्ष इससे चिढ़ गये थे, अपने यज्ञ में इसी कारण न अपनी कन्या को और न कन्या के पति को बुलाया। तब तो सती क्रोध में आगई, उधर पति ने भी त्याग दिया था तब तो सती ने योगाग्नि द्वारा अपने शरीर को जला दिया। भला उसे कौन सा सुख मिला? पार्वती! तुम भूल रही हो। तुम तो सुन्दरी हो,

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

तुम्हें तो चाहिए कि इन्द्र, विष्णु आदि किसी भी रूप तथा गुणवान को चुन लो। यदि आप, सोना, चाँदी आदि रत्न चाहें तो उनके पास कहाँ ? वस्त्र तक उसके पास नहीं। इसलिए वे स्वयं दिगम्बर रहते हैं। चढ़ने के लिए उनके पास केवल एक बूढ़ा बैल है, और है क्या ? वर के योग्य कोई भी उनमें गुण नहीं।

* छब्बीसवां अध्याय *

[पार्वती को शिव-दर्शन]

श्री पार्वतीजी बोलीं—विप्रवर ! इस प्रकार के शिव के दोष कहकर तो पहिले सप्तऋषि भी यहाँ से थक कर के चले गये हैं। अब तुम भी सुना रहे हो। जिस शङ्कर ने विष्णु को अपनी श्वांसों के द्वारा ही वेद पढ़ा दिये, उनके समान विद्वान ही कौन हो सकता है ? जो चराचर जगत के पिता हैं, उनके भक्तजन मृत्यु को जीत लेते हैं। ब्रह्माविष्णु, इन्द्र आदि सभी देवता इन्हीं की रक्षा द्वारा अपने लोकों में सुख पा रहे हैं। आठों सिद्धियाँ हर समय इनके चरणों में सिर झुकाकर खड़ी रहती हैं। शिव महिमा कही भी नहीं जा सकती। सर्व समर्थ शिव की निन्दा करने वालों को तो कहीं स्थान नहीं मिलता। उनके सब पुण्य नष्ट हो जाते हैं। अतएव आपको शिव निन्दा नहीं करनी चाहिए। अब तो मैं आपकी पूजा कर चुकी हूँ, अतः इस अपराध को क्षमा करे देती हूँ आगे भूलकर भी निन्दा न करना। मुझे पूर्ण विश्वास है वह मेरे इस मनोरथ को अवश्य पूर्ण करेंगे। ब्रह्माजी बोले--नारदजी ! श्री पार्वतीजी ऐसा कहकर चुप हो गईं और श्री महादेवजी के ध्यान में लग गईं तब विप्र वेषधारी भगवान् शङ्कर ने कुछ कहना चाहा तब तो क्रोधावेश में आकर श्री पार्वतीजी ने अपनी सखी विजयासे कहा–इस नीच ब्राह्मण को यहाँसे शीघ्र निकाल दो। यह शिव निन्दा फिर से करने लग जायगा। शिव निन्दा सुनने वाले भी पाप के भागी होते हैं। शिव निन्दक तो मार देने योग्य हैं। यदि शिव-निन्दक ब्राह्मण हो तो उसे त्याग देना चाहिए। यदि

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

ऐसा न हो सके तो उस स्थान को शिव-भक्त स्वयं त्याग दे । अतः हम ही इस स्थान को छोड़कर के ही दूसरे स्थान को चली जाती हैं। ब्रह्माजी बोले-नारदजी ! इतना कहकर श्री पार्वतीजी वहाँ से चलने लगीं तब तो परम कृपालु सदाशिव अपने हो रूप में आ गये और बोले-पार्वतीजी ! तुम कहाँ चली ? मैंने तो तुम्हें त्यागा नहीं है, अब तुम ही मुझे त्याग रही हो । मैं तो तुम पर अतीव प्रसन्न हूँ । वर माँगो । प्राणेश्वरी ! तुम तो अनादिकाल से ही मेरी पत्नी हो । अब लज्जा किस बात की ? मैंने तुम्हारी अनेकों प्रकार से परीक्षाएं की हैं तुम्हारे समान तो त्रिलोकी भर में भी कोई तपस्या करने वाला नहीं, मैं तुम्हारे ही वश में हूँ ।

* सत्ताईसवां अध्याय *

(शिव-पार्वती-सम्वाद)

प्रसन्न होकर गिरजा बोली—प्राणनाथ ! क्या आपने मुझे भुला दिया ? अब यदि आप प्रसन्न हैं तो मेरे पति बनने की कृपा करें । अब मैं पिता के पास जाकर यह सब प्रसन्नता का वृत्तान्त सुनाये देती हूं और आप भी भिक्षुक बन कर मेरे पिता से मेरी याचना करो, जिससे वे आपके साथ मेरा विवाह करदें । यह सुनकर सदाशिव बोले—देवी ! जैसा आप उचित समझो, मैं वैसा ही कार्य करने को तैयार हूँ । श्री पार्वतीजी बोलीं कि—आप श्री हिमाचल को जाकर कहें, मुझको अपनी कन्या का सौभाग्य दो और कन्यादान करके पुण्य के भागी बनो । ब्रह्माजी बोले—नारदजी ! श्री पार्वतीजी इस तरह उनसे प्रार्थना और नमस्कार करके चुप होगईं । फिर भगवान् शङ्कर ने "तथास्तु" कहकर वहाँ से प्रस्थान किया । कैलाश पर पधारे । वहाँ नन्दीश्वर आदि मुख्य-मुख्य गणों को यह सम्पूर्ण बृत्तान्त सुनाया । वे भी सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुये ।

—:*:—

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

* अट्ठाईसवाँ अध्याय *

(शिवजी द्वारा पार्वती याचना)

ब्रह्माजी बोले-नारदजी ! उसके बाद सफलता पाकर श्रीपार्वतीजी अपने माता-पिता के घर को चल पड़ी अब तो हिमाचल और मैंना श्री पार्वतीजी का आगमन सुनकर अपने पुरोहित सम्बधी, मित्र आदिकों को साथ लेकर विमान पर चढ़कर नगर के बाहर श्री पार्वती जी के दर्शन करने के लिये आये। और जय-जयकार करने लगे। राज मार्ग में स्त्रियाँ मङ्गल कलश लेकर नाचने लगीं। सौभाग्यवती नारियाँ हाथों में दीपक सजाकर मङ्गल गीत गाने लगीं। ब्राह्मण स्वयाति वाचन कहते हुये वेद ध्वनि करने लगे शंख आदि अनेकों बाजे बजने लगे। श्रीपार्वतीजी पधारीं, अपने माता-पिता को प्रणाम किया। उन लोगों ने कण्ठ से लगाकर आशीर्वाद दिये। नगर में पहुंच कर अत्यन्त प्रसन्न होकर श्री पार्वतीजी की प्रशंसा करने लगे। इसके बाद सबकी प्रसन्नता के लिये हिमाचल श्री गङ्गाजी पर स्नान करने को चले। उसी समय भगवान् शङ्करजी नट रूप धारण करके डमरू आदि बजाते तथा नाचते हुये मैंना के समीप आकर नाचने लगे तथा शिव डमरू की सुन्दर ध्वनि करने लगे। जिसे सुनकर एवं देखकर नगर निवासी और मैंना तो मोहित हो गईं। श्री पार्वती जी भी उनका त्रिशूल आदि चिह्न देखकर अपनी सुध-बुध भूल गईं। तब मैंना स्वर्ण पात्र में रत्न आदि भरकर उन्हें भिक्षा देने लगीं। भिक्षुक रूप रुद्रदेव यह देखकर बोले—यदि आप प्रसन्न हो गई हो तो अपनी कन्या का दान मुझे कर दो। ऐसा कह कर फिर नृत्य करने लगे। इतना सुनकर मैंना क्रोध में आगई और उन्हें बाहर निकालने के लिये तत्पर हो गई। तब तक हिमाचल भी गङ्गा स्नान करके लौटे। अपने आँगन में भिक्षुक को देखकर मैंना से सारा वृत्तान्त भी सुना। तब तो हिमाचल भी क्रोध करके नौकरों से बोले-इस नट को शीघ्र ही बाहर निकाल दो। नौकरों ने उन्हे अग्नि के समान

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

तेजस्वी देखा। वे सदाशिव को छू भी न सके। तब सदाशिव ने अपने तेज से विष्णु आदि स्वरूप दिखाये उन्हें देख कर हिमाचल भी अत्यन्त आश्चर्य में आ गये। फिर भगवान रुद्र ने श्री पार्वतीजी के साथ हिमाचल को अपना अद्भुत रूप दिखलाया फिर पार्वती जी की याचना करने लगे। किन्तु शिव माया से मोहित हो हिमाचल ने उनके बचन नहीं माने तब तो भगवान् शङ्कर अन्तर्ध्यान हो गये। उसके बाद ही मैंना तथा हिमाचल को समझ आई। अरे यह स्वयं भगवान् शिव ही थे जो स्वयं पधार कर कन्या की भिक्षा माँगने आये थे। हमने क्या किया? सदाशिव को विमुख लौटा दिया।

* उन्नीसवां अध्याय *

(शिव माया वर्णन)

ब्रह्माजी बोले—नारदजी! श्री पार्वती जी की सदाशिव में काम रहित भक्ति देखकर इन्द्रादि देवता विचार करने लगे। हिमालय अपनी कन्या का दान करके तो दुर्लभ मोक्ष पद प्राप्त कर लेगा और पृथ्वी का त्याग कर देगा तब तो पृथ्वी रत्नों से खाली हो जायगी। हिमाचल तो दिव्य रूप होकर शिवलोक गामी होगा। इस प्रकार आपस में विचार करते-करते सब देवता गुरु वृहस्पतिजी के पास गये। उन्हें जाकर सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनाया और कि आप अति शीघ्र हिमाचल के पास पहुँचकर शिव निन्दा करो जिससे वह अपनी कन्या शङ्कर को न देकर और किसी को देवे इस प्रकार सुनकर वृहस्पति जी ने शिव का स्मरण करके कहा—देवताओ तुम लोग महा स्वार्थी हो। अपने स्वार्थ में आकर मुझसे शिव निन्दा कराते हो। तुम स्वयं ही वहाँ क्यों नहीं पहुँच जाते जिससे तुम्हारे मनोरथ सिद्ध हो जांय। सप्त ऋषि अथवा ब्रह्माजी के ही पास जाकर अपना दुःख सुनाओ वे ही तुम्हारे सङ्कट काटेंगे। ब्रह्माजी बोले—नारद! जब सारे देवता मेरे पास आ गये और मुझे सारा वृत्तान्त सुनाया। तब मैंने कहा—हे देवताओ! मैं भगवान् शङ्कर की निन्दा नहीं करूँगा

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

तुम स्वयं भगवान् शिव के पास पहुँच कर उन्हें प्रसन्न करो वे स्वयं ही अपनी निन्दा जाकर आप करें। तब ब्रह्माजी बोले—इस प्रकार मेरे कथन को सुनकर देवता कैलाश पर पहुँचे। वहाँ शिवके दर्शन कर उन्हें नमस्कार किया और स्तुति करने लगे। स्तुति करके देवता बोले-शम्भो! हम आपकी शरण में आये हैं आपको बार-बार नमस्कार है। प्रार्थना करके देवताओं ने सदाशिव को अपना कष्ट सुनाया देवताओं के कथन को सुनकर सदाशिव ने उनकी बात मान ली। देवता भी अपने-अपने लोकों में भगवान् शङ्कर को प्रसन्न कर चले गये। उसके बाद शङ्कर हाथमें त्रिशूल लेकर सुन्दर सुन्दर वस्त्र धारण करके हाथ में स्फटिक माला एवं कण्ठमें शालिग्राम धारण किये साधूओं जैसा रूप बनाकर हरि-हरि बोलते हिमाचलराज की सभा में पधारे। उस समय हिमाचल बन्ध वर्गों के साथ तथा श्री पार्वतीजी के साथ सभा में बैठे हुये थे साथ रूपधारी रुद्र को देखकर हिमाचल सिंहासन से उठ खड़े हुए सिंहासन पर विराजमान होकर भगवान् शङ्कर बोले-हिमाचल राज! मैं वैष्णव ब्राह्मण हूं। भिक्षा माँगकर अपना पालन कर लेता हूं। मुझ पर गुरुदेव की परम कृपा है मैं सब जगह विना परिश्रम अपनी इच्छा से भ्रमण करता हूं। मैंने सुना है कि तुमने कमलोंके समान नेत्रों वाली अपनी सुन्दरी कन्या का निराश्रित एवं विचारहीन तथा भिक्षावृत्ति वाले शिवको देने का विचारकर रक्खा है। हे शैलराज! इसमें आपने अपनी हानि लाभ का कुछ भी विचार नहीं किया। पार्वती को क्या मालूम वह तो उसी के साथ विवाह करना चाहेगी। अनुभव न होनेके कारण उसको अपने दुःख का ज्ञान नहीं है। शैलेन्द्र! तुम उसकी बात पर न जाओ शिव के साथ उसका विवाह न करो। ब्रह्माजी बोले-नारद! इस प्रकार कहकर शङ्कर चले गये।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* तीसवां अध्याय *

(हिमाचल के समीप सप्तऋषियों का आगमन)

ब्रह्माजी बोले—नारदजी ! उस ब्राह्मण की बात सुनकर मैंना तो घबरा गई और बोली–शैलराज ! इस वैष्णव ब्राह्मणने किस प्रकार शिव निन्दा की है? आप थोड़ा शिव-भक्तों से मिलकर इसका निर्णय कर लो यदि ऐसा ही हो तो पार्वती को कुरूप शिव के हाथ न सौंपा जाय,नहीं तो मैं विष खालूँगी। इस प्रकार कहते-कहते मैंना रोने लगी; इधर श्रीमहादेवजीने कैलाश पर पहुँचकर सप्तऋषियों का स्मरण किया। सप्तऋषि कल्पवृक्ष की भाँति शीघ्र ही वहाँ पहुँच गये। तब उन्होंने कहा-प्रभो ! आज्ञा करो। उस समय सिद्धमूर्ति अरुन्धती भी साथ में थी। सदाशिव उनकी प्रार्थना सुनकर बोले--ऋषियो ! पापी तारकासुर देवताओं को अत्यन्त पीड़ा पहुँचा रहा है। ब्रह्माजी उसे वर दे चुके हैं और पार्वतीजीने भी मुझे पाने के लिए घोर तपस्याकी है। उसको इच्छानुसार वर देना कर्तव्य है। इन बातों से मैं पार्वतीजी के साथ विवाह करना चाहता हूँ। इससे पूर्व मैं भिक्षुक का रूप धारण कर हिमाचल के पास गया। उन्होंने मुझे परब्रह्म जाना और अपनी कन्या देने के लिये वे तैयार हो गये। उसके बाद देवताओं की प्रार्थना करने पर फिर मैं ब्राह्मण का रूप धारण कर हिमाचल के पास गया मैंने अपनी निन्दा आप ही करडाली जिससे वे मुझसे घृणा करने लगे गये। अब तो मेरे साथ पार्वती का विवाह भी नहीं करना चाहते। इसी कारण तुम लोग शीघ्रता पूर्वक उनके पास जाओ। हिमाचल एवं मैंना को समझा कर आओ जिससे वे मेरे साथ पार्वती का विवाह करदें। यह सुनकर मुनिगण अत्यन्त प्रसन्नता के साथ हाथ जोड़ कर चल दिये। हिमाचल सूर्य के समान तेजस्वी मुनियों का दर्शन करके आनन्द में उठ खड़े हुये। उनका आदर सत्कार करके उन्हें यथोचित आसन पर बिठाया और कहने लगे–मैं धन्य हूँ। आपके दर्शनों से मैं कृतार्थ हुआ। आप तो पूर्ण काम हैं। किन्तु मुझे भी अपना सेवक जानकर कुछ

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

सेवा के लिए आज्ञा करें।

* इकत्तीसवां अध्याय *

(वशिष्ठ मुनि का उपदेश)

मुनि बोले–शैलराज ! भगवान् शङ्कर जगत् के पिता हैं और श्री पार्वतीजी जगत् की जननी हैं और तुम श्री पार्वतीजी का विवाह भगवान् शङ्कर के साथ करके अपने जन्म को सफल करो। ऋषियों के वचन सुनकर हिमाचल बोला–ऋषिगण ! आप लोग सत्य कह रहे हो किन्तु अभी-अभी वैष्णव ब्राह्मण ने आकर मुझे शिव के दोष बता कर शिव के साथ पार्वती के विवाह की नाही कर दी है जिससे पार्वती जी की माता कोप भवन में चली गई हैं, वह कहती हैं कि मैं अपनी पार्वती का विवाह शिव के साथ कदापि नहीं करूँगी और मेरा भी ज्ञान भ्रष्ट हो चुका है। ब्रह्माजी बोले—नारदजी ! इतना सुनकर सप्त-ऋषियों ने अरुन्धती को मेनका के पास भेजा। वहाँ पहुँचकर अरुन्धती ने देखा–मैंना शोक में मूर्छित होकर पड़ी हुई है, तब अरुन्धती उससे बचन कहने लगी–मैंनका ! उठ बैठो। तुम्हारा कल्याण करने के लिये अरुन्धती के साथ सप्तऋषि पधारे हैं। तब तो मैंनका खड़ी हो गई। अपने सामने श्री अरुन्धती को देखकर नमस्कार किया, फिर बोली–यह मेरे भाग्य हैं। न मालूम किस जन्म के पुण्य उदय हुये हैं जिससे मेरे घर श्री वशिष्ठजी की पत्नी अरुन्धती जी पधारी हैं? आज्ञा करें मैं आपकी क्या सेवा करूँ ? ब्रह्माजी बोले–नारदजी ! तब तो श्री अरुन्धतीजी ने मैंनका को भाँति-भाँति भगवान् शंकर के विषय में अनेक प्रकार से समझाया। इस प्रकार समझाकर वह ऋषियों के पास आई। इधर ऋषिगण भी हिमाचल को समझाय रहे थे वे कह रहे थे कि शेलराज ! अपनी पुत्री पार्वतीजी को श्रीमहा-देवजी को अर्पण करके भगवान् के श्वसुर होने का सोभाग्य प्राप्त करो। भगवान् महादेव परम योगी हैं वे तो विवाह करना ही नहीं चाहते किन्तु तारकासुर के नाश के लिए उन्हें देवता गण प्रार्थना करके

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGangotri Gyaan

विवाह को वाध्य कर रहे हैं। इसी कारण तुम्हारी कन्या ने भी घोर तपस्या द्वारा उनसे यही वर माँगा है कि आप ही मेरे पति बनो। हिमाचल बोले–हे ऋषियो ! मैं चाहता हूँ कि मेरी पुत्री तो राजपुत्री है, राजाओं जैसा सुख भोगती है किन्तु शिवजी के घर तो सुवर्ण, धन, वैभव आदि कुछ भी नहीं। वहाँ तो भोजन पदार्थ भी नहीं दिखाई देते। यह कन्या वहाँ जाकर क्या खायगी ? क्या सुख भोगेगी? अब आप ही इन बातों पर विचार करें, वशिष्ठजी बोले–शैलराज ! तुम शिव स्वरूप को जानते ही नहीं। उनका धनपति कुबेर सेवक है। उसके यहाँ धन की कौन-सी कमी है? जो सारे संसार की उत्पत्ति, पालन तथा संहार करते हैं उन्हें भोजन का क्या दुःख है? ब्रह्मा, विष्णु तो उनके अङ्ग हैं। उन्होंने ही मुखसे सरस्वती, वक्षस्थलसे लक्ष्मी एवं अपने तेज से शिवा प्रकट की हैं। भला उन्हें दुःख कैसे हो सकता है ? तुम्हारी कन्या तो कल्प-कल्प में उनकी पत्नी होती रही हैं एवं होती रहेंगी। अपनी कन्या सदाशिव को अर्पण कर दो। तुम्हारी कन्याके तप करते समय देवताओं की प्रार्थना करने से सदाशिव तुम्हारी कन्या समीप पहुँचे और उसे वर दिया। तुम्हारी कन्या के ही कथन से शिवजी तुमसे कन्या माँगने के लिये तुम्हारे घर पधारे और सदाशिव को प्रसन्न होकर उस समय तुमने कन्या देने के लिये वचन दे दिया। अब उन वचनों से हट रहे हो, यह उचित नहीं है। अब यदि प्रेम से तुमने उनको कन्यादान न किया तो भगवान् शङ्कर बल पूर्वक ही तुम्हारी कन्या के साथ विवाह कर लेंगे। शैलेन्द्र ! यह समझलो इसमें तुम्हारा एक भी शिखिर न रहेगा। इससे पहले इन्द्र द्वारा पंख काट लिये गए हैं अब अपने शिखरों को भी नष्ट करना चाहते हो? शैलेन्द्र ! केवल कन्या के कारण अपना कुल क्यों नष्ट कर रहे हो ? कुल की रक्षा के लिए एक का त्याग कर देना अच्छा होता है, ऐसा नीति शास्त्र कहते हैं। देखो अनरण्य राजा ने भयभीत होकर अपनी पुत्री ब्राह्मणको देदी और अपनी सम्पत्ति तथा परिवार की रक्षा करली।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

* बत्तीसवाँ अध्याय *

[अनरण्य राजा की कथा]

ब्रह्माजी बोले–नारद ! अनरण्य राजा की बात सुनकर हिमाचल पूछने लगे–महर्षि ! अनरण्य राजाकी पूरी कथा सुनाइये। वशिष्ठ कहने लगे–पर्वतराज ! इन्द्रासावर्णि नाम का जब चौदहवाँ मनु हुआ है उसी के वंश में राजा अनरण्य हुए हैं। वह भगवान् शङ्कर के प्रिय भक्त थे। सातों द्वीप पर इनका राज्य था। इन्होंने ही अपने कुल के भृगुजी को आचार्य बनाकर सौ यज्ञ किये थे। इनकी पाँच रानियाँ थीं। सौ पुत्र तथा लक्ष्मी के समान परम सुन्दरी पद्मा नाम की एक कन्या थी। यह कन्या राजा तथा रानियों को वहुत प्यारी थी। राजा बड़े उदारात्मा थे। एक बार सव देवताओं ने कहा, आप इन्द्र के सिंहासन पर बैठकर स्वर्ग का राज्य करो। किन्तु इन्होंने स्वीकार न किया। जब इनकी परम प्रिय कन्या विवाह के योग्य हुई तो इन्होंने उसके बर की खोज के लिये चारों ओर पत्र भेजे, चारों ओर वर की तलाश होने लगी। इतने में तप करके लौटते हुए पिप्पलाद ऋषिने वन में एक मनुष्य को अपनी स्त्री के साथ विहार करते देख लिया। ऋषि के मन में भी कामवासना जग गई। स्त्री किस प्रकार प्राप्त हो, यही विचार करते-करते ऋषि अपने स्थान पर पहुँचे कुछ समय के बाद एक दिन पिप्पलाद पुष्पा भद्रा नामक नदी पर स्नान करने गये। वहाँ अनरण्य की परम सुन्दरी कन्या भी आई हुई थी। उसकी सुन्दरता देखकर मोहित हो गये। ऋषि ने कन्या के आस-पास खड़े हुए मनुष्यों से उसका परिचय पूछा। उन लोगों ने कहा अनरण्य राजा की पद्मा नाम की कन्या है। आपका मन इस पर मुग्ध हो गया है क्या ? जाकर राजा से माँग क्यों नहीं लेते। इस प्रकार के हास्य युक्त वचन सुनकर मुनि लज्जित हो गये और अपने दिल में उसे पाने की भी इच्छा कर ली। उसके बाद स्नान, नित्यकर्म, शिवपूजन आदि करके पिप्पलाद राजा अनरण्य की सभा में चले गये। राजा ने मुनि को

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

देखकर प्रणाम किया और विधिवत् पूजन करके उनको आसन पर बिठाया, ऋषि से सेवा पूछी ? ऋषि ने तो राजा से उसकी कन्या की याचना की। इतना सुनकर वह राजा चुप हो गये। कुछ क्षण के बाद ऋषि फिर बोले—राजन् ! अपनी कन्या शीघ्र ही मुझे दे दो, नहीं तो कुल के साथ तुमको क्षण भर में ही भस्म कर दूँगा। इस प्रकार मुनि के कहने पर राजा रोने लग गये। रानियाँ, नौकर-चाकर सब के सब रोने लगे। इस बूढ़े ऋषि को कन्या किस प्रकार दे दी जाय ? लोग क्या कहेंगे ? राजा इसी चिन्ता में घुल रहे थे, उसी समय राज पुरोहित तथा राजगुरु वहाँ आ गये। राजा ने रोते-रोते उस ऋषि का वृत्तान्त कह सुनाया। पुरोहित तथा गुरु विचार कर राजा से बोले—हे राजन् ! आपको कन्या को किसी न किसी के साथ विवाह तो करना ही है, फिर इसके साथ ही विवाह क्यों न कर दो। जिससे आपके कुल की रक्षा हो जाय। इस ब्राह्मण द्वारा कुल का बिनाश हो जाना अच्छा नहीं। इस प्रकार पुरोहित एवं गुरु के बचन सुनकर बुद्धिमान राजा ने अपने कुल की रक्षा के लिये अपनी कन्या को वस्त्र, आभूषणों से अलंकृत करके मुनि को अर्पण कर दी। मुनि ने भी विधि पूर्वक पद्मा के साथ विवाह करके अत्यन्त प्रसन्न होकर राजा से बिदा होकर अपने स्थान को गये। इसी शोक में राजा राज पाट छोड़ कर बन में चले गये और रानी भी बन में चली गईं। पति तथा कन्या का स्मरण करके रानी की मृत्यु हो गई। इधर घर में भी सारा परिवार नौकर-चाकर राजा के बिना दुःखित हुए। राजा अनरण्य ने बन में जाकर तप करके भगवान् शङ्कर को प्रसन्न किया और शिवलोक को प्राप्त हो गये। अनरण्य राजा के बड़े पुत्र कीर्तिमान् राज्य करने लगे वशिष्ठजी ने कहा-हिमाचल राज ! इस प्रकार अनरण्य राजा ने अपनी कन्या देकर अपना कुल धन आदि सब की रक्षा कर ली। इसलिए अब तुम भी अपनी कन्या शिव को अर्पण करके सब देवताओं को आधीन

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

कर लो।

* तेतीसवाँ अध्याय *

(पद्मा पिप्पलाद की कथा)

ब्रह्माजी बोले—नारदजी ! हिमाचल अनरण्य की कथा सुनकर कहने लगे–मुनिवर ! आपने बहुत सुन्दर कथा सुनाई है। अब कृपा करके पिप्पलाद की कथा सुनावें। पद्मा के साथ विवाह कर ऋषि ने कहाँ निवास किया ? और क्या किया ? वशिष्ठ जी बोले–पर्वत राज ! वह पिप्पलाद अत्यन्त वृद्ध थे, कमर झुक गई थी। कांप-काँप कर चलते थे। इस प्रकार बूढ़े मुनि पद्मा के साथ विवाह करके अपनी कुटिया पर निवास करने लगे। वह पद्मा साक्षात् लक्ष्मी थी। अपने पति को साक्षात् विष्णु समझ कर उसकी सेवा पूजा करने लगी। एक दिन पद्मा स्वर्णदा नामक नदी पर स्नान करने गई। उसकी परीक्षा लेने के लिए स्वयं धर्मराज वहाँ आये। उन्होंने राजाओं जैसा सुन्दर रूप धारण किया हुआ था। वस्त्र आभूषणों से सोभायमान नवयुवक कामदेव के समान लग रहे थे। रथ पर बैठे हुये थे। उस पद्मा के भाव जानने के लिये मार्ग में ही उससे कहने लगे–सुन्दरी ! तुम तो राजरानी बनने के योग्य हो। बूढ़े पिप्पलाद के योग्य तो नहीं हो। यह बूढ़ा कब तक जियेगा जो कि मौत के घाट पर बैठा है। इसी कारण इस बूढ़े को त्याग कर मेरे साथ चली चलो। मैं तुम्हें हृदय की रानी बनाऊँगा। इस प्रकार कह कर राजकुमार बने हुए धर्मराज रथ से उतरे और पद्मा को पकड़ने के लिए तैयार हो गये तब तो पद्मा थोड़ा हटकर क्रोध में आकर कहने लगी—अरे ओ पापी ! दूर हट, मेरे शरीर का स्पर्श मत करना, नहीं तो शीघ्र ही नष्ट हो जायगा। तुम कामदेव से अन्धे होकर मेरा पतिव्रत धर्म नष्ट करना चाहते हो। अपने परम पूज्य महा तपस्वी महर्षि पिप्पलाद को त्याग कर मैं स्त्री लम्पट, महाकामी, दुराचारी तुम्हारे साथ क्यों चलूँ ? याद रख मूर्ख ! यदि तू मुझे

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

बुरे भाव से देखेगा तो शीघ्र ही नष्ट हो जायगा। ब्रह्माजी बोले-नारदजी! इस प्रकार पद्मा ने जब उसे शाप दे दिया तो उसने अपना राजाओं जैसा रूप त्याग दिया और अपने धर्म के रूप में आकर काँपते-काँपते बोला—माता मैं धर्म हूं। जो कि ज्ञानियों के गुरु का भी गुरु है मैं वही हूँ सदा परस्त्रियों को अपनी माता मानता हूँ। मैंने तो केवल आपकी परीक्षा के लिये यह सब कुछ किया है। व मैंने आपके पतिव्रत धर्म की भली-भाँति परीक्षा करली है। मैंने यह कोई अनुचित नहीं किया था मुझे ईश्वर ने इस लिये प्रकट किया है कि धर्मात्म पुरुष की धर्म सम्बन्धी परीक्षा लेकर उन्हें धर्म में दृढ़ करता रहूँ। अब आपने मुझे शाप दे डाला है उसका क्या होगा? नारद जी! धर्मराज इतना कह पद्मा के पतिव्रत धर्म से प्रसन्न होकर चुप चाप खड़े होगये तब पद्मा अनरण्य की पुत्री आश्चर्य में आकर कहने लगी-धर्मराज! तुम तो समस्त जीवों के कर्मों के साक्षी हो। मेरी परीक्षा के लिये ढ़ोंग क्यों रचा अब इसमें मेरा क्या वश है? मैं आपको शाप तो दे चुकी। मेरा शाप अन्यथा तो हो ही नहीं सकता। अस्तु धर्म तुम चार पाद वाले हो। सतयुग में तुम्हारे चारों पाद रहेंगे। त्रेता में तीन पाद होंगे, द्वापर में दो होंगे। कलियुग में एक भी पाद न होगा फिर सतयुग लगने पर चारों पाद पहिले की तरह हो जायेंगे। नारद! पतिव्रता के बचन सुनकर धर्म प्रसन्न होकर बोला-पतिव्रता पद्मा! तुम धन्य हो! तुम अपने पति के चरणमें सदा प्रेम करोगी। तुम्हारा पति जवानी को प्राप्त हो जायगा; उसकी जवानी स्थिर रहेगी, मार्कंडेय के समान बड़ी आयु वाला, कुबेर के समान धनी, इन्द्र जैसा वैभ-बवान, सुन्दर स्वरूप वाला, धर्मात्मा, रतिशूर होगा। अपने पति द्वारा दस पुत्र होंगे वे भी गुणवान तथा दीर्घायु होंगे। वशिष्ठजी बोले-इस प्रकार धर्म से वर पाकर पद्मा प्रसन्न होती हुई अपने घर आई और धर्म भी पद्मा की प्रशंसा करते-करते अपने धाम को चले

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

गये। घर में पहुंच कर धर्म के दिये वर के अनुसार अपने पति को पद्मा जवान हुआ देखकर प्रसन्न हुई और उसके साथ सुख विलास में मग्न हो गई कुछ समय के बीत जाने पर पति द्वारा उसे अधिक गुण सम्पन्न दश पुत्र प्राप्त हुए। पर्वतराज! इस प्रकार वे दोनों स्त्री पुरुष अत्यन्त सुखी होगये। इस को सुनकर हिमाचल अपनी पत्नी से बोले-हे देवी! अब तुम देर न करो पुत्री पार्वती शिवजी को अर्पण करदो।

* चौतीसवाँ अध्याय *

(सप्तऋषियों का शिव के पास आगमन)

ब्रह्माजी बोले-नारदजी! इस प्रकार हिमाचल को कथा सुना कर वशिष्ठ जी चुप हो गये। तब हिमाचल बोले—ऋषिगणो! अब मेरा संशय मिट गया है। मेरी धन संपत्ति, स्त्री, कुत्र, कलत्र, कन्या एवं मेरा शरीर भी भगवान् शङ्कर के अर्पण है। मैं अपनी पुत्री पार्वती को वस्त्राभूषण से अलंकृत करके भगवान् शङ्कर को देने के लिये तैयार हूं मेरा संकल्प दृढ़ हो गया है। यह सुनकर सप्तऋषि कहने लगे-पर्वतराज! धन्य हो। हम तो यही कहेंगे कि भगवान शङ्कर भिखारी हैं और आप दाता हो उन्हें अपनी पार्वती रूपी भिक्षा अवश्य दें। यह कह कर श्री पार्वती जी के मस्तक पर हाथ फेरते हुये बोले-पुत्री! तुम्हारा मङ्गल हो यह कह कर पुष्प फल आदि देकर आशीर्वाद करने लगे। इधर अरुन्धती जी ने भगवान् शङ्कर के गुणों से मैंना को मोहित करके लोक रीति के अनुसार हल्दी रोरी आदि से पत्थर पूजन मार्जन आदि कराकर चार दिनके बाद लग्न भी धरा दी उसके बाद अत्यन्त आनन्द के साथ सातों ऋषि अरुन्धती के साथ भगवान् शङ्कर के पास चले गये उसके पास पहुँचकर शुभ वृत्तांत सुनाया और कहा कि हमने हिमाचल को धर्म शास्त्रों के वचन सुनाकर समझा दिया है वह अपनी पुत्री को आपको समर्पण कर रहा है आप विवाह की तैयारी करें।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* पैंतीसवाँ अध्याय *

(हिमाचल का लग्न पत्रिका भेजना)

ब्रह्माजी बोले-नारदजी ! उसके बाद हिमाचलने अपने सगे संबन्धियों को बुलाकर प्रसन्नता पूर्वक अपने पुरोहित श्री गर्गजी से लग्न पत्र लिखाया उसका पूजन करके अनेकों सामग्री के साथ भगवान् शङ्कर के पास भिजवा दिया भगवान् शंकर के पास पहुँचते ही उन्होंने लाने वाले पुरोहित का भली भाँति आदर सत्कार किया उसके अनन्तर पर्वतराज ने दूर २ में रहने वाले अपने भाई-बन्धुओं को निमन्त्रित किया।

फिर वस्त्र आभूषण विवध प्रकार के रत्न आदि वस्तुओं का संग्रह करने लगे अनेकों प्रकार की मिठाईयाँ पकवान आदि बनाने के लिये अनेकों हलवाई लगा दिये गये। सौभाग्यवती पर्वत नारियाँ मङ्गल गीत गाने लगीं श्री पार्वतीजी का शृङ्गार करने लगीं। अनेकों प्रकार के साज शृङ्गार वेश से सुशोभित होकर स्त्री समाज इकट्ठा हो गया। लोकोचार रीतियां होने लगीं हिमाचल से निमन्त्रित होकर परिवार के साथ सभी पर्वत वहाँ पहुँच गये। मन्दराचल, अस्ताचल, उदयाचल, मलयाचल, गिरिराज, दुर्न्दर, गन्धमादन, करवीर, महेंन्द्र पारियाज, क्रोञ्च, पुरुषोत्तम, नील, सनील, त्रिकूट, चित्रकूट, वेंकट, श्रीगिरि, गोकामुखी, विन्ध्याचल, कालिञ्जर, बहुभ कैलाश आदि २ और भी अनेकों पर्वत सज-धज कर परिवार के साथ मिलकर वहाँ आए। इसी प्रकार शोण भद्रा, नर्मदा, गोदावरी, यमुना, ब्रह्मपुत्र, सिंधु, समुद्र पिपासा चन्द्रभागा, भागीरथी गङ्गा, आदि नदियें भी दिव्य रूप धारण कर वस्त्र अलंकारों से विभूषित होकर सदाशिव के विवाह देखने के लिए हिमाचल के यहाँ आईं। हिमाचल ने उनका सत्कार किया तथा सुन्दर सुन्दर स्थानों पर उनके ठहरने का प्रबन्ध किया।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGangotri Foundation

* छत्तीसवाँ अध्याय *

(मण्डप रचना)

ब्रह्माजी बोले–नारदजी ! पर्वतराज हिमालय प्रसन्न होकर नगर को सजाने लगे। इसके बाद विशकर्मा को बुलाकर मण्डप दस हजार योजन लम्बा-चौड़ा रच दिया। जो कि चालीस हजार कोस में था। उस मण्डप में उसने अपनी निपुणता दिखा दी। अनेकों प्रकार के स्थावर, जङ्गम, पुष्प, स्त्री-पुरुष आदि की मूर्तियां बनायी गई थी। जल में थल, थल, में जल दिखाई देता था। देखने वालों का मन मोहित हो जाता था। वहाँ द्वारपालों की मूर्तियां भी थीं। जिनके हाथों में धनुष था। मुख्य द्वार पर लक्ष्मीजी की मूर्ति थी। सबसे प्रधान द्वार पर नन्दीश्वर की विशाल मूर्ति बनाई गई। उसके ऊपर रत्न जटित पुष्प गुच्छ रच दिया गया। इसी प्रकार विश्वकर्मा ने विद्याधर गन्धर्व लोकपाल देवता भृगु आदि ऋषि महर्षि मनोहर प्रकार से रच दिये। अपने पार्यदों के साथ गरुण पर चढ़े हुए भगवान् विष्णु की अद्भुत मूर्ति एवं ऐरावत हाथी पर सवार इन्द्र की मूर्ति भी बना दी। विश्वकर्मा ने देवताओं के लिए उचित अनुकूल स्थान भी रच दिये।

* सैंतीसवाँ अध्याय *

(शिवजी का देवताओं को निमन्त्रण)

ब्रह्माजी बोले—नारदजी ! इधर भगवान् शङ्कर ने जब लग्न पत्रिका ली थी उसमें लिखी हुई सभी लोकचार रीतियों को अपनाया सभी उपस्थित मुनि गणों को भगवान् शङ्कर ने अपने विवाह में सम्मिलित होने को कहा। उसके बाद भगवान् शङ्कर ने तुमको भी याद किया। फिर तुम भी वहाँ पहुँच गये और अपने भाग्यों की प्रशंसा करते हुए प्रणाम किया फिर स्तुति करने लगे तब प्रसन्न होकर शिव बोले-ऋषि श्रेष्ठ ! तुम्हारे कहने से ही पार्वतीजी ने उग्र तपस्या

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

की थी जिसके फल स्वरूप प्रसन्न होकर मैं उसे पति होने का वर दे चुका हूँ। अब विवाह के लिए वहाँ से लग्न पत्रिका भी आ चुकी है आज से सातवें दिन श्री पार्वतीजी के साथ लोकरीति के अनुसार मेरा शुभ विवाह होगा। अब तुम इस शुभ-विवाह के लिये विष्णु आदि देवता, मुनि, सिद्ध, ऋषि सभी को मेरी ओर से निमन्त्रण दे आओ और उन्हें कहना कि अपने परिवार के साथ अपने-अपने बाहनों पर चढ़कर विभूषित हो मेरे महोत्सव में शीघ्र पधारें। इसप्रकार भगवान् की आज्ञा सुनकर तुम अतीव आनन्दित हुए और कहने लगे-भगवान्! मैं आपका सेवक हूं। आपकी आज्ञा शिरोधार्य है। यह कहकर देवताओं को निमन्त्रित करने के लिए तुम वहाँ से चल पड़े। सभी देवताओं,को जाकर निमन्त्रण देकर प्रसन्नता पूर्वक लौट आये। आकर सभी समाचार सुनाया।। ब्रह्माजी बोले–हे नारदजी! निमन्त्रण पाकर अतीव प्रसन्नता से सज धज कर भगवान् विष्णु श्री लक्ष्मीजी के साथ भगवान् शङ्कर के पास पहुँच गये वहाँ शङ्कर को प्रणाम करके उनकी आज्ञा से अपने स्थान पर बैठ गये। इसी प्रकार सब देवता लोकपाल इन्द्र आदि अपने गण तथा परिवार के साथ वस्त्र आभूषणों से शोभायमान होकर वहाँ पहुँच गये सिद्ध, चारण, गन्धर्व, ऋषि, मुनि सब निमन्त्रित होकर कैलाश पहुँच गये। अप्सरायें नाचने लगीं देव-नारियाँ गाने लगीं। लोकाचार रीतियाँ करके भगवान् शङ्कर की आज्ञा से विष्णु आदि सभी देवता वरयात्रा बरात ले जाने की तैयारी करने लगे। सात माताओं ने शिव का शृङ्गार किया। मस्तक पर तीसरा नेत्र मुकुट बन गया। चन्द्रकला का तिलक लग गया। कण्ठ के सर्पों ने अपने फण दोनों ओर ऊँचे कर लिए वे सुन्दर कुण्डल हो गये। इसी प्रकार सभी अङ्गों में साँप लिपट गये वे आभूषण बन गये सादे अङ्गों पर चिता की भस्म रमादी गई वह चमक उठी वस्त्र के स्थान पर सिंह तथा गज चर्म शोभायमान हो गया। इस प्रकार के शृङ्गार से सुशोभित होकर भगवान् शङ्कर दूल्हा बने। विष्णुजी कहने लगे–हे शङ्कर

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

जी ! आप अपना विवाह गृह्य-सूत्र की विधि के अनुसार करें। मण्डप स्थापन नन्दीमुख श्राद्धादि कुलरीति से करते चलें इसमें आपका यश होगा और लोक भी इसी प्रकार करने लग जायेंगे। ब्रह्माजी बोले नारदजी यह सुन कर महादेवजी ने स्वीकार करके कश्यप, अत्रि, वशिष्ठ, गौतम, माण्डरिक, गुरु, कण्व, बृहस्पति, शक्ति, जमकाग्नि, पाराशर, मार्कण्डेय, अगस्त्य, च्यवन गर्ग, शिलापाक, अरुणपाल, अकृत, श्रम, दधीचि, उपमन्यु, भारद्वार, अकृतब्रह्म, पिप्पलाद, कुशिक, कौत्स इत्यादि ऋषि मुनियों को शिष्यों के साथ बुलाकर सभी लोकरीतियाँ कराने की आज्ञा दे दी। तब तो सबने मिलकर भगवान् शङ्करकी रक्षा-विधान करके ऋग्वेद यजुर्वेद द्वारा स्वस्तिवाचन किया। फिर विघ्न निवाराणर्थ ग्रह पूजन मण्डप में आये हुये देवताओं के पूजन कराये। इसी प्रकार और भी अलौकिक वैदिक विधि के अनुसार सभी मङ्गल कार्य करा दिये। इन सबके हो जाने पर श्रीमहादेवजी ने ब्राह्मणों को नमस्कार की उनकी आज्ञा पाकर अपनी बरात सजाकर प्रस्थान किया।

* अड़तीसवां अध्याय *

(वर यात्रा)

ब्रह्माजी बोले—नारदजी ! उस समय श्री महादेवजी ने नन्दीश्वर आदि गणों को चलने के लिये आज्ञा दी और कई एक गण रक्षा के लिये वहाँ ठहरा दिये। उस समय गणों का स्वामी शङ्ख कर्ण करोड़ों गण साथ लिये चला। केकरास्त ने दस करोड़ गण विष्टंभ तथा विकृत के साथ आठ-आठ करोड़ गण विसाख ने चार करोड़ पारिजात, नौ करोड़ सवर्तिक तथा विकृतानन ने साठ-साठ करोड़ गण दुन्दुभ ने आठ करोड़ कपालरुय ने पाँच करोड़ सन्दारक छः करोड़ कन्दक कुण्डल एक-एक करोड़ पिप्पल तथा महाकेश एक-एक हजार करोड़ सनादक एक अरब चन्द्रतायन तथा आवेशन आठ-आठ करोड़ कुण्ड और पर्वत तक बारह-बारह करोड़ काल महाकाल सन्नाह ये चार

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

सौ करोड़ अग्निमुख एक करोड़ आदित्य मूर्धा धनावह कुमुद अमोघ कोकिल सुमत्र ये सब करोड़-करोड़ काक यादोदर सन्नानक महाबल मधुपिङ्गल नील पूर्ण भद्र ये सब नौ-नौ करोड़ चतुर्दक करण बीस २ करोड़ अहिरोमक, यज्ञाङ्ग, शतमन्यु करोड़-करोड़ काष्ठागुष्ठ चौसठ करोड़ गण साथ लेकर चले। विरूपाक्ष, सुकेश, वृषभ, तालकेतु, षडास्य, चंचास्य, सनातन, सवंतर्क, चैत्र, लकुलीश, लोकान्तक, दीपात्मा दैत्याकष्ट, देव भृङ्गी, रिषि, श्रीमान्, देवप्रिय, अशनि, भानु आदि गणों ने चौसठ-चौसठ हजार गण साथ लिये। भूत एक अरब प्रमथ तीन करोड़ प्रमथ रोमज बीस २ करोड़ और वीरभद्र चौसठ हजार गण लेकर चले नन्दी, क्षेत्रपाल, भैरवादि गणों ने भी असंख्यों गण साथ ले लिये तो हजारों वाले मुकुट माला जटा चन्द्र रेखा वाले नील कण्ठ त्रिनेत्रधारी रुद्राक्ष पहने भस्म रमाये कुण्डल कड़ों से सुशोभित ब्रह्मा विष्णु इन्द्र के अणिमा आदि सिद्धियों से युक्त करोड़ों सूर्यों के समान तेजस्वी आकाश पृथ्वी पाताल आदि सभी जगह विचरने वाले ये सम्पूर्ण गण भगवान् शङ्कर के विवाह उत्सव में चले ब्रह्माजी बोले-नारद इस प्रकार बारात के तैयार हो जाने पर भगवान् शङ्कर सर्पों के आभूषणो से भूषित होकर बैल पर सवार होकर हिमाचल के नगर की ओर चल पड़े। उसके बाद चण्डी सदाशिव की बहिन बन कर सिर पर सोने का कलसा रखकर परिवार के साथ वहां पहुँच गई। वह भी अनेकों विलक्षण चरित्र करती हुई सब गणों के आगे २ होकर चली? उस समय डमरू शंख सींग अनेकों नगाड़े आदि बाजे बजने लगे। सब देवताओं के मध्य में विष्णु चल रहे थे सिर पर छत्र था चमर झुलाये जा रहे थे। ब्रह्माजी बोले-मैं भी वेद शास्त्र पुराण आगम आदि के साथ सनकादि सिद्ध तथा प्रजा पतियों के साथ २ चल रहा था।

—:*:—

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* उनतालीसवां अध्याय *

(मण्डप वर्णन)

ब्रह्माजी बोले—नारद ! तुमभी उस बरातमें जा रहे थे तब भगवान् शङ्कर ने श्री विष्णुजी से सलाह करके सब से पहिले तुमको हिमाचल के पास भेजा। वहाँ पहुँच कर तुमने विश्वकर्मा के बनाये हुये मण्डप को देखा तो आश्चर्य करने लगे। वहाँ रत्न-जटित सोने के लाखों कलश थे बड़े २ केलों के खम्भों से सज रहा था। भगवान् शङ्कर के चित्र को देखकर उन्हें साक्षात समझ कर तुम हिमाचल से बोले-पर्वतराज ! क्या देवता तथा महर्षियों के साथ विवाह के लिए भगवान् शंकर आगए ? हिमाचल ने कहा-नारद ! वे तो अभी नहीं आये तुमको भ्रम हो गया है मेरी ओर से मैंनाका आदि मेरे पुत्रों को साथ लेकर आप वहाँ जाएं उन्हें बरात के साथ आदर पूर्वक यहाँ ले आयें। ब्रह्माजी बोले-तब तुम मैंनाकि आदि हिमाचल के पुत्रों को साथ लेकर सदाशिव के पास आगये। तब मैं एवं विष्णु आदि देवता तुम्हें घेर कर पूछने लगे-नारदजी ! वहाँ का क्या समाचार है। अपनी पुत्री श्री पार्वतीजी का विवाह भगवान् शंकर के साथ हिमाचल करना चाहता है कि नहीं यह प्रश्न सुनकर मुझे तथा विष्णु एवं इन्द्र को एकान्त में ले जाकर तुमने कहा कि, हे देवताओ! हिमाचल ने एक ऐसा मण्डप बनवाया है जिसमें तुम सब देवताओं के जीते जागते चित्र लगे हुए हैं। मैं तो उन्हें देखकर अपनी सुध-बुध भी खोबैठा था। इससे मालूम होता हैं कि वह आप लोगों को मोहित करने के विचार में है। इतना सुनते ही इन्द्र तो बहुत ही डर गया बोला—हे लक्ष्मी के स्वामी ! त्वष्टा के पुत्र को मार दिया था उसी का बदला लेने के लिये मेरे सिर पर विपत्ति न आजाय। मैं न मारा जाऊँ। मैं तो सन्देहमें पड़ गयाहूँ तब विष्णु ने इन्द्र से कहा-हे इन्द्र ! मालूम होता है कि अवश्य ही वह हिमाचल मूढ़ हमसे बदला लेना चाहता है क्योंकि तुमने पहले मेरी आज्ञा से पर्वतों के पङ्ख काट डाले थे यही बात उनको स्मरण है इसी

CC-0. JK Sanskrit Sansthan, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyan Kosha

लिए वह हमें जीतना चाहता है परन्तु हमें डरना नहीं चाहिये। हमारे तो भगवान् शंकर हैं ही कि किस बात का डर। ब्रह्माजी बोले-नारद! इस प्रकार की गुप्त बातें करते हुए उन देवताओं से लौकिक गति दिखाते हुए भगवान् शंकर बोले—देवताओ! क्या बात है स्पष्ट २ कह दो हिमाचल अपनी पुत्री का विवाह मेरे साथ करेगा या नहीं। नारदजी ने कहा–भगवान्! विवाह तो आपका निश्चित है उसमें कोई विघ्न नहीं इसलिए तो हिमाचल ने अपने पुत्रों को मेरे साथ भेजा है देवताओं को मोहित करने के लिए हिमाचलने मण्डपमें विचित्र से चित्र बनवाए हैं उसकी माया फैल रही है। इतना सुनकर भगवान् शंकर बोले–देवताओ! भय मत करो जब हिमाचल अपनी पुत्री हमें समर्पित कर रहा है तो उसकी माया हमारा क्या बिगाड़ेगी। देवताओ डरो मत शीघ्र चलो। भगवान् शंकर की इस प्रकार आज्ञा पाकर हिमाचल के पुत्रों को आगे करके सभी देवता भगवान शंकर के साथ हिमाचलपुर पहुँचे।

* चालीसवां अध्याय *

(देवताओं और पर्वतों का मिलाप)

ब्रह्माजी बोले–नारदजी! भगवान् शंकर विष्णु आदि देवताओं के साथ हिमाचलपुर में आ पहुँचे। उनका आगमन सुनकर आनन्दित होकर हिमाचल पर्वतों को साथ लेकर उनकी अगवानी करने पहुँचे। भगवान शकर की बरात देखकर हिमाचल चकित हो गये। उसके बाद पूर्व और पश्चिम के समुद्रों के मिलनेकी भाँति देवता और पर्वत परस्पर मिलने लगे। इसके बाद हिमाचल भगवान् शंकर के पास पहुँचे। इन्हें प्रणाम किया,इसी प्रकार सब पर्वतों ने प्रणाम किमा। उस समय भगवान् शंकर की शोभा निराली थी। हिमाचल ने बारम्बार प्रणाम किया फिर उनकी आज्ञा लेकर संपूर्ण देवताओं को ठहराने के लिये प्रबन्ध किया। फिर वेदी के निकट आकर स्नान किया। इसके बाद दान-पुण्य करके अपने पुत्रों को बुलाकर कहा कि तुम लोग भगवान् शंकर की

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

जाकर प्रार्थना करो कि हमारे पिता हिमाचल अपने बन्धुओं के साथ [बराचार] मिलनी करने के लिए अपना रास्ता देख रहे हैं। इस प्रकार पिता की आज्ञा पाकर हिमाचल पुत्रों ने जाकर भगवान् शङ्कर को प्रणाम किया और पिता की कही हुई बात जाकर सुना दी। तब भगवान् शंकरजी ने कहा कि तुम जाकर कहो कि वे आ रहे हैं। यह सुनकर हिमाचल के पुत्र चले गये। देवताओं ने सुन्दर शृङ्गार करके हिमाचल के घर को गमन किया। उसी समय—हे नारदजो ! मैंना ने तुमको बुलावा लिया और भगवान् शंकर के दर्शन की इच्छा से मैंना तुमसे इस प्रकार कहने लगी—

* इकतालीसवां अध्याय *

(शिवजी की अनुपम लीला)

मैंना बोली—नारदजी ! मैं शिवको इसी समय देखना चाहती हूँ। जिन्हें पाने की इच्छा से पार्वतीजी ने कठोर तप किया था। यह कह कर तुमको साथ लेकर चन्द्रशाला की ओर चल पड़ी। इधर भगवान् शङ्करजी मैंना के इस प्रकार के अभिमन को जान गये और ब्रह्मा एवं विष्णु से बोले-मेरी इच्छा है कि तुम लोग सब देबताओं को साथ लेकर अलग २ होकर हिमाचल के घर पहुँच जाओ। हम भी अपने गणोंके साथ पीछे आ रहे हैं देवताओं ने यह आज्ञा मानली। तब देवताओं की सजी सजाई सेना देखकर मैंना अत्यन्त प्रसन्न हुई। उस बरातमें सबसे आगे सुन्दर वस्त्र आभूषणों से सजे हुए, गन्धर्व गण अपने बाहनों पर सवार होकर बाजे बजाते आ रहे थे उन्हीं के साथ ध्वजा पताकायें फहराते हुए उनके गण थे। अप्सराएं नाचती हुई आरही थी। उनके पीछे वसु आरहे थे। उन्हें देखकर मैंना बोली-हे नारदजी ! क्या इन्हीं में ही शिव हैं ? यह सुनकर नारदजी ने कहा नहीं ये तो उनके गण हैं। तब मैंना ने विचार किया कि जब शिव के गण इतने सुन्दर हैं तो न जाने शिव कितने सुन्दर होंगे ? इसके बाद अपनी सेना लेकर मणिग्रीव

CC-0. ASI Srinagar Circle. Mumukshu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

आये। इसी प्रकार अग्नि, यम, निर्ऋतु, वरुण वायु कुबेर, ईशान, इन्द्र आदि क्रम-क्रम से आने लगे। उतावली होकर मैंना ने पूछा-इन्हीं में शिव हैं? तब नारद जी ने कहा कि ये तो शिव सेवक दिक-पाल हैं। चन्द्र और सूर्य भी आये उन्हें देखकर भी यह प्रश्न किया। नारद जी ने उन्हें सूर्य चन्द्रमा बताया। इसके बाद कमल नयन पीताम्बर लहराते शान्त स्वरूप गरुड़ पर सवार होकर विष्णु आये तब तो मैंना चकित होकर बोल उठीं—नारद जी! क्या यही पार्वती जी के पति हैं? तब नारदजी ने कहा—यह पार्वती के पति नहीं, यह तो लक्ष्मी के पति विष्णु हैं। ब्रह्माजी बोले-नारदजी! तब तो मैंना अपने भाग्य सराहने लगी। ये लोग तो सब शिव सेवक हैं जिन्हें मैं अपनी आँखों से देख रही हूँ। इन्हीं के स्वामी मेरी पार्वतीजी के पति हों तो फिर मेरे भाग्य सराहने योग्य हैं। नारदजी! इस प्रकार मैंना अभिमान में आकर कह रही थी उसी समय उसका अभिमान दूर करने के लिये अपने अद्भुत रूप वाले गणों को साथ लेकर शिव भी आने लगे। भूत, प्रेत, पिशाचादि अत्यन्त कुरूप गणों की सेना आने लगी। उनमें कोई वायु रूप था, किसी की टेढ़ी सूँड़ थी, किसी के होठ लम्बे थे। किसी की दाढ़ी लम्बी थी, किसी का सिर ही गञ्जा था, किसी के आँखें नहीं तो कोई नासिका हीन था कोई दण्ड पोश लिये है तो कोई औंधा होकर चल रहा है, कोई वाहन की पूँछ की ओर मुँह करके बैठा है। तो कोई वाहन की गर्दन पर सवार है, कोई, सींग डमरू, कोई, गोमुख बजाता हुआ आ रहा है। किसी का मुण्ड नहीं, किसी का रुण्ड नहीं, किसीके अनेकों मुख हैं, किसी के अनेकों आँखें हैं, किसी के अनेकों पाँच हैं, किसी के हाथ नहीं, कोई टूटे हाथ वाला है किसी के कान नहीं कोई अनेकों कान वाला है। किसी के शिर नहीं कोई अनेकों सिरों वाला है।

इस प्रकार के बड़े कुरूप और भयानक गण आ रहे हैं।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

नारद ! तुमने शिव की ओर संकेत करके मैंना को कहा । यह सुनते ही मैंना भय के मारे काँपने लगी । इतने में इन्हीं के बीच में पाँच मुख वाले, त्रिनेत्रधारी, दस भुजा वाले, अङ्गों से भस्म रमाये, मुण्ड माला पहिने बाघम्बर ओढ़े, पिनाक धनुष उठाये, त्रिशूल कन्धे पर रखे,बड़े कुरूप एवम् बूढ़े बैल पर चढ़ेहुए भनवान् शंकर उसे दिखाई दिये । नारद जी का इशारा पाकर मैंना तो अत्यन्त डर गई । तब तुमने उसे समझाकर कहा–हे मैंना देवी ! यह शिव ही तुम्हारी कन्या के पति हैं । ब्रह्माजी बोले–हे नारदजी ! तुम्हारा बचन सुनते ही तेज वायु के झकोरे लगने से टूटी लता के समान मैंना दुःख से काँप कर पृथ्वी पर धड़ाम से गिर पड़ी और मूर्छित हो गई ।।

* व्यालीसवां अध्याय *

(मैंना को समझाना)

ब्रह्माजी बोले—नारदजी ! यह देखकर दासियाँ भाग कर वहाँ आईं और अनेक प्रकार के उपचार करके मैंना की मूर्छा दूर की । मूर्छा से जाग कर मैंना रोने लगी फिर तो अपने पुत्र, पुत्री, नारद, सप्तऋषि आदि की निन्दा करते हुए बोली–नारद ! तूने ही मेरा सत्यानाश किया । मेरी पार्वती को शिवको पति बनाने के लिये उकसाया जिसके कारण इस समय हमें अत्यन्त दुःख मय फल प्राप्त हुआ । हे विधाता ! मैं क्या करूँ ? कौन मुझे इस अपार दुःख से छुड़ायेगा ? अब मैं किसी को मुँह दिखाने की भी नहीं रही । लोग ही मुझे क्या कहेंगे किसको कन्या दे डाली । भला वे ऋषि कहाँ हैं ? यदि मुझे दिखाई दें तो मैं उनकी दाढ़ी नोंच डालूँ । ब्रह्माजी बोले—नारद जी ! इस प्रकार हाय-हाय करती मैंना सीधी पार्वती के पास पहुँच कर उसको भी खोटी-खोरी सुनाने लगी । मैंना बोली–पार्वती ! तूने बड़ी मूर्खता कर डाली । सूर्य, चन्द्रमा, विष्णु, इन्द्र आदि सुन्दर देवताओं को छोड़कर नारद की बातों में आकर एक महा–कुरूप शिव के पीछे कठोर तप करके तू मरती रही । तुझे सम-

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

झाया गया फिर भी हठ पर अड़ी रही। मैं तो तुझे अभी मार डालती हूँ तुझे जीवित रखने का कोई प्रयोजन भी नहीं मैं भी तुझे मारकर आत्महत्या कर लूँगी। भले ही मुझे नरक भोगना पड़े। इस प्रकार मैंना क्रोध में बड़-बड़ाती हुई हिमाचल के पास पहुँची। उस समय चारों ओर हाहाकार होने लगा। सबके सब देवता वहाँ आ पहुँचे। [ब्रह्मा] भी पहुँच गया। और तुम भी वहां आ गये। तब तुम मैंना से कहने लगे-मैंना देवी! तुमने शिव स्वरूप देखा ही कहां हैं। अभी जो कुछ तुमने देखा है वह तो उनकी लीला मात्र है मैंना जी। आप क्रोध को त्याग कर स्वस्थ हो जाओ। कार्य आरम्भ करो इतना सुनते ही मैंना भड़क कर तुमसे बोली—नीच नारदजी! मेरे सामने मत आ। अभी-अभी यहाँ से निकल जा। मैं तुझे देखना नहीं चाहती। तब इन्द्र आदि लोकपाल मैंना को समझाने लगे, बोले—हे मैंना! मालूम है यह शिव कौन हैं? यह तो जगत के स्वामी हैं।

तुम्हारी कन्या के तप द्वारा प्रसन्न होकर ही तो उन्होंने पति होने का वर दिया है। देवताओं की बात सुनकर मैंना देवताओं को भी फटकारती हुई शिव को कन्या न देने के लिये कहने लगी। तब वशिष्ठ आदि सातों ऋषि वहाँ आगये और बोले हे पितृश्वरों की पुत्री! इतनी सयानी होकर तू क्या कर रही है। अपने भाग्य नहीं सराहती जो साक्षात् जगत के स्वामी भगवान् शङ्कर ही तेरे दामाद हो रहे हैं और वही तेरे घर पर भिखारी होकर पधारे हैं। उठो उनका दर्शन करो। तब तो मैंना का और भी क्रोध भड़क उठा और बोली-तुम सब यहाँ से चले क्यों नहीं जाते? मेरे सामने मत आओ। मैं तो शिव के साथ पार्वती का विवाह कभी नहीं करूँगी। तब तो हिमाचल भी वहाँ पहुँच गये और बोले--प्रिये! इस समय तू क्यों अग्यानी हो रही है। देखो! तुम्हारे घर देवता एवं ऋषि पधारे हुए हैं उनके साथ इस प्रकार का वर्ताव मत करो तुम भगवान् शङ्कर

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

के भयानक रूप को देखकर भयभीत होगई हो। भय करना छोड़ उनके मङ्गलमय रूप का दर्शन करो। विवाह का काम शीघ्र आरम्भ करो। यह सुनकर मैंना कहने लगी कि—हे स्वामिन्! शिव के साथ तो पार्वती का विवाह नहीं होगा। मैंने विचार कर लिया है कि पार्वती के गले में रस्सी डालकर उसे किसी ऊँचे स्थान से नीचे की ओर गिरा दूँ जिससे पार्वती ही न रहे। यदि आपने हट पूर्वक इसके विवाह करने की ठान ली हो और मुझे ऐसा करने से रोकने का प्रयत्न करोगे तो मैं अपने ही प्राण त्याग दूँगी। ब्रह्माजी बोले-यह कहकर मैंना बहुत ही जोर से रोने लग गई तबतो हे नारदजी! मैं स्वयं वहाँ पहुँचकर समझाने लगा। मैंना कहा—हे मैंना! तुम तो व्यर्थ में ही इतना बखेड़ा कर रही हो। भगवान् शिव तो अनेकों रूप धारण करते हैं, अनेकों नाम वाले है। सृष्टि का पालन तथा संहार उन्हीं के हाथों में है। वह सर्वथा स्वतन्त्र ईश्वर हैं। सर्व काम विगाड़ने वाली अपनी हठ छोड़कर पार्वती का उनके साथ विवाह करदो। यह सुनकर रोते-रोते मैंना कहने लगी—बस करो पितामह, व्यर्थ झूँठी प्रशंसा न करो। मैं अपनी आँखों से शिव का रूपदेख चुकी हूँ। ब्रह्माजी बोले—मैंना अपने हठ पर अड़ गई, तब वहाँ विष्णु पहुँचकर मैंना को समझाने लगे। विष्णुजी ने कहा-मैंना देवी! तुम तो पितृश्वरों की पुत्री हो, धर्म का आधार लेकर चलने वाली सयानी हो। इस प्रकार हठ करना तुम्हें उचित नहीं। शिवका अभी तुमने देखा ही क्या है? वे तो निर्गुण भी है सगुण भी हैं। सुन्दुर भी हैं, कुरूप भी हैं। सभी उनका पूजन करते हैं वे ही सज्जनों की गति है। मूल प्रकृति ईश्वर एवम् पुरुषोत्तम को प्रथम इन्होंने ही रचा है। उन्ही दोनों से ही मैं तथा ब्रह्म उत्पन्न हुए हैं। उसके बाद सारे लोकों के हित के लिये अपनी इच्छा से भगवान् रुद्र अवतार धारण किया है। उन्हें तो विवाह से क्या प्रयोजन? केवल पावती के तप से प्रसन्न होकर तेरे द्वार पर

CC-0. A.S. Nagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyan Kosha

पधारे हैं। अतएव अब अज्ञानमय दुःखको त्याग कर शिव भजन करो, जिससे परम आनन्द प्राप्त हो। ब्रह्माजी बोले—हे नारदजी! भगवान् विष्णु के इस प्रकार समझाने पर मैंना कुछ स्वस्थ हुई और कहने लगी-हे विष्णुजी! मैं शिव के साथ अपनी कन्या का तभी विवाह जरूँगी जब वह अपना असली रूप धारण कर आयेंगे अन्यथा नहीं।

* तेतालीसवाँ अध्याय *

(शिव का सुन्दर स्वरूप दर्शन)

ब्रह्माजी बोले-नारदजी! उस समय मैंने ही तुमको तथा विष्णु को शङ्कर के पास भेजा, तुम वहाँ जाकर उनकी स्तुति करने लगे। अन्तर्यामी भगवान् शङ्कर ने प्रसन्न होकर अपना सुन्दर एवम् अद्भुत स्वरूप बनाकर आपको दर्शन दिये। तब तो आप प्रसन्न होकर मैंना के पास आये। आकर मैंना से बोले—मैंनाजी! अब चलकर भगवान् शङ्कर के दर्शन करो, कितना सुन्दर एवम् उत्तम स्वरूप है अभी वह आपके घर ही आ रहे हैं। यह सुनकर हिमाचल की रानी आपको साथ लेकर वहाँ गई तब मैंना को परम आनन्ददायक शिव के दर्शन हुए। उनके विशाल मस्तक पर चन्द्रमा सुशोभित हैं, विष्णु आदि देवता सेवा करते आ रहे हैं, सूर्य ने उनके सिर पर छत्र धारण कर रखा है। चन्द्रमा आभूषणों को शोभित कर रहा हैं। गङ्गा-यमुना चँवर झुला रही हैं, अणिमादि आठों सिद्धियाँ सामने होकर नाच रही हैं। इस प्रकार आते हुए भगवान् शङ्कर के पीछे सुन्दर एवम् अनेकों रूपों वाले गण, सिद्ध, मुनि, देवता जय-जयकार करते आ रहे हैं विश्वावसु अप्सराओं के साथ शिव के आगे गाते हुए चल रहे हैं। ब्रह्माजी बोले-तब तो मैंना चित्रलिखित सी होकर क्षण भर अवाक हो गई। फिर बोली—पार्वती! धन्य हो, ! तुम्हारे तप से परम कल्याणकारी सदाशिव मेरे घर पधारे हैं। भगवान् शङ्कर! मैं बहुत ही अपराध कर बैठी हूँ। आपकी अतिशय निन्दा की है। आप मुझ पर प्रसन्न होकर मुझे क्षमा करें। नारदजी! उस समय पुर-

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

नवासिनी स्त्रियाँ सभी की सभी घर के कामोंको छोड़कर बाहर निकल आ ई। चक्की पीसने वाली ने चक्की छोड़दी पति की सेवा में लगी हुई पति की सेवा छोड़कर भाग आई। कोई-कोई तो दूध पीते हुए बच्चे को छोड़कर भाग आई। बछड़ा बाँधते हुए किसी ने बछड़ा भी न बांधा। इसी प्रकार के आवश्यक कार्यों को छोड़कर भगवान् शिव के दर्शन के लिए दौड़ आईं। भगवान् शङ्कर का दर्शन करते ही सब की सब मोहित हो गईं। तब शिव की सुन्दर मूर्ति हृदय में धारण करके आपस में बोली-सखियो! आज हिमाचलपुर में रहने वाले नर-नारियों के नेत्र और जन्म भी आज सफल है। पार्वतीजी! तुम्हारे भाग्य धन्य हैं। तुम्हारा तप करना भी धन्य है। साक्षात् भगवान् शङ्कर की पत्नी बन रही हो। ब्रह्माजी बोले-नारद! इस प्रकार पुर की निवासिनी सभी स्त्रियों ने चन्दन एवम् चावलों से भगवान् का पूजन किया और फूलों की भगवान् पर वर्षा करने लगीं।

* चौवालीसवां अध्याय *

(वर आगमन वर्णन)

ब्रह्माजी बोले—नारद! इसके बाद भगवान् शङ्कर सबको आनन्दित करते हुए गण, देवता, सिद्धि, मुनियों के साथ हिमाचल के घर के निकट महुँच गये। इधर मैंना भी सभी स्त्रियों के साथ मिलकर झट पट घर आ गई। तब भगवान् शङ्कर के लिये आरती सजाने लगी आरती सज गई-स्त्रियों के साथ मिलकर द्वार पर आई। भगवान् शंकर पहुँच गये, इस समय उनकी शोभा करोड़ों कामदेवों के समान थी।

शिव ने प्रथम पार्वतीके बताये हुये स्वरूपका मैंना को दिखाया। प्रेम से मैंना ने आरती की। आरती की रीति करके आनन्दपूर्वक मैंना भीतर चली गई, लड़किया महेशजी की शोभा देखकर बोलीं-सखियो! इस प्रकार का सुन्दर वर तो हमने किसी के भी विवाह में नहीं देखा। पार्वती जी धन्य हैं, जिनको सुन्दर पति प्राप्त हो रहा

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

है। ब्रह्माजी बोले—नारदजी! उस समय हिमाचल के घर आनन्द ही आनन्द था। उसके बाद श्री महादेवजी के साथ आये हुए सभी बरातियों को उपयुक्त स्थान रहने के लिये दिये गये। फिर हिमाचल अपने घर पहुँचे। उसके बाद जगत की माता श्री पार्वतीजी सभी देवताओं को पूजने के लिये, घर से बाहर चलीं। श्री पार्वतीजी के दर्शन कर समस्त देवताओं ने सिर झुका-झुका कर नमस्कार की। भगवान शंकर ने भी पार्वतीजी को देख लिया। उन्हीं को श्रीपार्वतीजी साक्षात् सती केरूप में दिखाई दी। इधर श्रीपार्वतीजी कुल देवों का पूजन कर ब्राह्मणों की स्त्रियों के साथ लौटकर घर आ गईं।

* पेंतालीसवाँ अध्याय *

(शिव का हिमाचल के घर में प्रवेश)

ब्रह्माजी बोले-नारद! इधर हिमाचल ने भगवान् शंकर का वेद विधिपूर्वक उपवीत संस्कार कराया गया, फिर भगवान् शिव से दिये गये वस्त्र आभूषण धारण कराये गये। जिन्हें धारण कर पार्वती की शोभा निरख उठी। तब श्री गर्ग जी हिमाचल से बोले, पर्वतराज! लग्न का समय निकट है, आप भगवान् शंकर को बुलवाइये। हिमाचल ने ब्राह्मणों को सदाशिव के बुलवाने के लिये भेज दिया। ब्राह्मण लोगों ने जाकर भगवान् शंकर तथा बिष्णु, ब्रह्मा आदि देवताओं को कहा कि अब कन्यादान का समय निकट है, आप कृपा करके शीघ्र पधारें। ऐसा हिमाचल ने कहा है। शिवजी ने झटपट लोक-रीति के अनुसार उबटन आदि लगाकर स्नान किया, फिर सुन्दर वस्त्र आभूषण आदि धारण करके वृषभ पर सवार होकर हिमाचल के घर पधारे मैंना ने ब्राह्मण-स्त्रियों के साथ तथा अन्य सौभाग्यवती स्त्रियों के साथ मिलकर भगवान् की आरती की। फिर आचार्य बने हुई ब्राह्मण ने मधुपर्क हिमाचल से दिलाया तब आभूषणों से भूषित अपनी पुत्री को हिमाचल ले आये। वेदी पर भगवान् के पास बिठा दिया। फिर

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

वृहस्पति आदि शुभ लग्न का अवसर देखकर कन्यादान के पूर्व कार्य कराने लगे। शिव-पार्वतीजी आपस में एक दूसरे का मुख देखकर प्रसन्न हुए।

* छयालीसवां अध्याय *

(शिव को हिमालय का कन्यादान करना)

ब्रह्माजी बोले-नारद ! उसके बाद कन्या दान का समय हुआ। गर्गजी ने हिमाचल एवं मैंना से कहा। पर्वतराज की पत्नी अलंकृत होकर स्वर्ण कलश लिए, हिमाचल की बाँई ओर आकर बैठ गईं, तव हिमाचल ने शिवको वस्त्राभूषण देकर पूजन करके ब्राह्मणों से कहा-ब्राह्मणो समय हो गया अब संकल्प आदि कराइये। इतना सुनकर ब्राह्मणो लोग संकल्प पढ़ने लगे। हिमाचलजी ने सदाशिव से कहा-हे शम्भो ! आप अपना गोत्र प्रवर कुल नाम वेद शाखा आदि सब कुछ ब्राह्मणों को कहदें जिससे यह संकल्प में पढ़े। यह सुनकर महादेवजी तो विचार में पड़ गए श्री महादेवजी को चुप हुआ देखकर ऋषि हँसने लग गये। तब नारदजी ! तुम भगवान् शङ्कर की प्रेरणा से बीन बजाने लगे--इसमें हिमाचल ने रोका भी नहीं। तब हे नारद तुमने हिमाचल से कहा-हिमाचल ! आप क्या मूढ़ता कर रहे हो। भगवान् शङ्कर से गोत्र आदि पूछते हो ? उनका गोत्र कुल आदि ब्रह्मा, विष्णु आदि भी नहीं जान सकते। दूसरा कोई क्या जानेगा। यह तो अपनी इच्छा से अनेकों लीलाएं करने के लिये अवतार धारण किया करते हैं। हिमाचल अब तो जो कुछ भी हैं कुलीन हैं, कुल-हीन हैं, तो तुम्हारी कन्या पार्वती के पति ही बन गये हैं। अतएव इनका गोत्र, कुल तो नाद ही है। शिव स्वयं नादमय हैं और नादमय स्वयं शव है। इन दोनों में कोई भेद नहीं। नारदजी ! आप से इतना सुनते ही हिमाचल आश्चर्य में पड़ गये। इधर देवता एवं ऋषि आश्चर्य में पड़कर भी जय-जयकार करने लगे तब मेरु आदि

CC-0. NSI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

पर्वतों ने कहा—हे हिमाचल जी! क्यों देर कर रहे हो, कन्यादान क्यों नहीं करते? तब पर्वतों की बात सुनकर हिमाचल विधि पूर्वक कन्यादान करने लगे। प्रतिज्ञा संकल्प करते हुए हिमाचल ने कहा—सदाशिव आपको में अपनी कन्या दान करता हूँ आप इसे धर्म पत्नी के रूप में स्वीकार करें। इस प्रकार कहकर जल तथा कन्या का हाथ सदाशिव के साथ में अर्पण करदिया, तब सदाशिव भी वेद बचनानुसार मन्त्र बोलते हुये, श्री पार्वतीजी का हाथ लेकर, पृथ्वी का स्पर्श करते हुये, लौकिक रीति दिखाकर "इस मन्त्र को पढ़ने लगे।" तब चारों ओर जय-जयकार की ध्वनि गूँज उठी। गन्धर्व गाने लगे। अप्सरा नृत्य करने लगीं। ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र आदि अतीव प्रसन्न हुये। उसके बाद हिमाचल ने भगवान् शिव को अनेकों वस्तुएं प्रदान की। रत्नजटित स्वर्ण के आभूषण तथा पात्र एवं दूध देने वाली, बहुत सुन्दर सजी हुई, सवा लाख गोएं, सजे सजाये सुन्दर सौ घोड़े। रूपवती सजी-सजाई युवती, एक लाख दासियाँ, एक करोड़ हाथी, सोने तथा जवाहरातों से जड़ी हुई एक करोड़ रथ, यह सब दहेज में दिये। उसके बाद माध्यन्दिनी के कहे हुये स्तोत्र द्वारा हाथ जोड़कर शिव की स्तुति की। तब मुनिजन भगवान् शङ्कर तथा पार्वतीजी के सिर अभिषेक करने लगे।

* सैंतालीसवां अध्याय *

(ब्रह्मा को मोह होना)

ब्रह्माजी बोले-नारद! उसके बाद मेरी आज्ञा पाकर ब्राह्मणों ने अग्नि स्थापन कराया फिर ऋग, यजु, सामवेद के मन्त्रों द्वारा सदाशिव से हवन कराने लगे। उस समय पार्वती जी के भ्राता मैनाक ने आकर श्री पार्वतजी को खीलें दी फिर लोक मर्यादा के अनुसार अग्नि की परिक्रमा करने लगे। नारदजी! उस समय मैं भी शिव माया से मोहित होकर श्री पार्वतजी के चरणों को देखते ही काम

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

पीड़ित हुआ, तब तो मेरा वीर्यपात होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा मैं अत्यन्त लज्जित होकर उसे अपने पांवों से ढकने लग गया। मेरे इस कर्म को शङ्कर ने देख लिया, तब तो कुपित होकर मुझे मारने की इच्छा की। मैं भय से काँपने लगा उपस्थित देवता भी भयभीत होगये। देवता बोले—सदाशिव! क्षमा करें, आप सत्‌चित आनन्द स्वरूप हो, प्रसन्न हो मुक्ति पाने की इच्छा से मुनिजन आपके चरण कमलों का आश्रय ग्रहण करते हैं। मन वाणी से अतीत हो। परमेश्वर! आपके तत्व को कौन जान सकता है? ब्रह्माजी बोले—तब इस प्रकार देवताओं की स्तुति सुनकर क्षमा कर दिया, और ब्रह्माजी को निर्भय कर दिया। नारद! मैंने अपने वीर्य को पाँव से मसल दिया। उसके अनेकों कण होगये। जिनसे हजारों बालखिल्य ऋषि हो गये। वे बड़े तेजस्वी थे। उठ कर मेरे पास पहुँच कर हे पिताजी! हे पिताजी! पुकारने लगे। नारदजी उस समय तुम भगवान् की इच्छा से क्रोध में आकर उनसे कहने लगे। ऋषियो! अब तुम्हारा यहाँ रहने का कोई काम नहीं शीघ्र ही गन्धमादन पर्वत पर जाकर सूर्य के शिष्य होकर तप करो। तब भगवान् शङ्कर को प्रणाम करके गन्धमादन पर चले गये।

* अड़तालीसवाँ अध्याय *

(शिव से हँसी)

ब्रह्माजी बोले—नारद! उसके बाद मुनि जन शिव की आज्ञा से विवाह का शेष कार्य कराने लगे। शिव पार्वतीजी के सिर पर अभिषेक, ध्रुव, दिखाना, हृदय छूना, स्वस्ति पाठ, शिव द्वारा श्रीपार्वती जी की मांग में सिंदूर भरना, शिव पार्वती को एक स्थान पर बिठाकर संस्रव प्राशन, पूर्ण पात्र तथा गोदान, आचार्य कर्त्तव्यमा, सौ ब्राह्मणों को सुवर्ण दान आदि सब कराये। उस समय अनेकों प्रकार के वाजे एवं मङ्गल ध्वनियाँ होने लगीं। तब दोनों को पुरनारियाँ कुहवर स्थान

CC-0. ASI Sirsa. Siddhanta eGangotri Gyaan

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

में ले जाकर लोकोचार रीतियां करा कर बासालय में ले गईं। वहाँ लोक मर्यादा के अनुसार ग्रन्थ विमोचन आदि लौकिक रीतियाँ कराईं। उस समय शिव पार्वती की शोभा देखने योग्य थी, सरस्वती, लक्ष्मी, सावित्री, जाह्नवी, अदिति, शचि, लोपामुद्रा, अरुन्धती, अहिल्या, तुलसी स्वाहा, रोहिणी, वसुन्धरा, शतरूपा, संज्ञा, आदि सोलह दिव्य स्त्रियाँ आकर बारी-बारी से हास्य कहने लगीं। सरस्वती बोली–भगवान् शङ्कर! अब तो आपने चन्द्र मुखी पार्वतीजी प्राप्त कर ली हैं। इन के चन्द्रमुख को देख-देखकर संतप्त हृदय को शीतल करो। लक्ष्मी ने कहा–देवों के देव! अब तो लज्जा काहे की सुन्दर श्री पार्वतीजी को हृदय से लगाओ। इसी के विरह में आप कष्ट पाते रहे उस प्रियतमा के मिल जाने पर लज्जा कैसी? सावित्री बोली–अब तो श्रीपार्वतीजी को भोजन कराकर ही भोजन करना होगा श्री पार्वतीजी को कपूर बरास युक्त ताम्बूल भी अर्पित करना होगा। जाह्नवी बोली–हे महा-देवजी! स्वर्ण जैसी सुन्दर श्री पार्वतीजी के केश धोना एवं शृङ्गारित करना भी आपका कर्तव्य है। शची बोली-हे सदाशिव! जिनको पाने के लिए आप विलाश करते २ रात दिन गुजारते थे। अब उसको पा लेने पर अपना छाती से क्यों नहीं लगाते। अरुन्धती ने कहा—इस सती सुन्दरी को मैंने आपको दिया अब इसे आनन्दित सुन्दर रति दें।

अहिल्या बोली—शङ्कर जी आप वृद्धावस्था को त्याग कर जवानी में आ जाओ जिससे मैंना को भी मालूम हो कि आप पार्वती के आधीन हो। तुलसी ने कहा–आपने तो काम को भस्म कर पार्वती को त्याग दिया था फिर क्यों पार्वती के पति बने। स्वाहा ने कहा–सदाशिव! इस प्रकार स्त्रियों के कथन से आप क्रोधित मत हो जाना विवाह काल में स्त्रियाँ हँसी तो किया ही करती हैं वसुन्धरा ने कहा–आप भावों के ज्ञाता हो। काम पड़ित स्त्रियों के भाव को जानने वाले हो। शतरूपा बोली-काम पीड़ित स्त्रियाँ भोग बिना प्रसन्न नहीं

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

होती, आप श्री पार्वतीजी को रति प्रदान कर प्रसन्न करो। ब्रह्माजी बोले-नारदजी! भगवान् शङ्कर इस प्रकार स्त्रियों के हास्य वचन सुनकर कहने लगे—देवियो! आप लोग जगत् माता होते हुये पुत्र के सामने इस प्रकार के चञ्चल तथा निर्लज्ज वचन क्यों कह रही हो। तब तो समस्त स्त्रियाँ भगवान् शंकर के वचन सुनकर शरमा गईं।

* उन्नचासवाँ अध्याय *

(शिव द्वारा कामदेव को जीवन दान)

ब्रह्माजी बोले—नारद जी! उस समय रति शङ्कर के समीप आकर बोली—शङ्कर जी आप तो पार्वती के पति बन गये किन्तु मेरा पति तो आपने भस्म कर दिया। अब तो मुझे भी मेरा पति देकर मेरा ताप हरण करो। ब्रह्माजी बोले। हे-नारद जी! इस प्रकार कह कर रति कामदेव की भस्म की पोटली श्री महादेव जी के आगे रखकर प्रार्थना करने लगी। नाथ स्वामिन्! मेरा कल्याण करो और साथ में विलाप भी करने लगी तब तो रति का रुदन सुनकर सरस्वती आदि सभी देवनारियाँ रुदन करती हुई शिव से प्रार्थना करने लगीं। दीनानाथ! अवश्य काम को जीवित करें। तभी तो आपको रति विहार का सुख मिलेगा। इतना सुनकर भगवान् शङ्कर ने कृपा दृष्टि के द्वारा ज्योंही उस भस्म पोटली की ओर देखा तो उसी समय कामदेव जीवित होकर बाहर निकल आया। यह देखकर रति का परम आनन्दकी प्राप्ति हुई। कामदेव ने सदाशिव को प्रणाम किया। प्रसन्न होकर भगवान् शङ्कर बोले—मैं तुम दोनों पर प्रसन्न हूँ। मन चाहा वर माँगलो। इतना सुनकर कामदेव बोला--भगवान्! यदि आप प्रसन्न हैं तो पहिले मेरे अपराध को क्षमा करें। फिर आपके भक्तों रामे में प्रेम हो और आपके चरणों में मेरी भक्ति, बस यही वरदान दें। कामदेव के वचन सुनकर सदाशिव कहने लगे--कामदेव! मैं तुम

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

पर प्रसन्न हूँ तुम निर्भय बिचरण करो। ब्रह्माजी बोले--नारद जी! यह सुनकर कामदेव जब बाहिर आये देवताओं ने उसे देखकर प्रसन्नता पूर्वक कहा-कामदेव तुम धन्य हो। सदाशिव ने प्रसन्न होकर तुन्हें जीवित कर दिया। इस प्रकार काम का सम्मान करके विष्णु आदि अपने-अपने स्थानों पर बैठ गये। उसके बाद भगवान् शंकर ने श्री पार्वतीजी के साथ बैठकर भोजन किया। तब मैंना एवं हिमाचल से आज्ञा पाकर सदाशिव वहाँ से जनवासे को गये। वहाँ ब्रह्मा, विष्णु एवं ऋषि मुनियों को प्रणाम किया।

* पचासवाँ अध्याय *

(बढ़हार तथा शिव सयन)

ब्रह्माजी बोले-नारद! हिमाचल ने अपना आँगन साफ कराया लिपबाया। उसके बाद अपने पुत्र एवं अन्य पर्वतों को भगवान् शंकर के पास भेजा। वे जाकर कहने लगे हे परमेश्वर! आप कृपा करके विष्णु, ब्रह्मा आदि सभी देवता एवं ऋषि मुनियों को साथ लेकर भोजन के लिये पधारें। तब इस प्रकार की प्रार्थना सुनकर सभी देवताओं को साथ लेकर सदाशिव भोजन करने पधारे। तब हिमाचल ने आये हुये सभी देवताओं एवं भगवान् शंकर का आदर सत्कार किया, भोजन के लिये बिठाया। नाना प्रकार के भोजन परोस कर सबसे भोजन करने के लिये प्रार्थना की। तब तो भगवान् शंकर के साथ हँसी करते हुये भोजन करने लगे। उस समय इन्द्र आदि लोकपालों की अलग पंक्ति थी। भृगु आदि ऋषिगणों ने भी अलग पक्ति बनाली। ब्रह्मा विष्णु शंकर के पास बैठे हुये थे। हे नारद जी! सभी बरातियों ने तृप्ति के साथ भोजन किया फिर आचमन आदि करके अपने विश्राम स्थल पर चले गये। तब मैंना की आज्ञा लेकर नगर स्त्रियां ने वासाख्य महोत्सव करने के लिये भगवान् शंकर को न जाने दिया तब सदाशिव रत्नजटित सिंहासन पर बैठे और निवास भवन की ओर देखने लगे। वहाँ

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

सैकड़ों रत्नों के दीपक जगमगा रहे थे एवं रत्नजटित कुम्भ तथा पात्रादि स्थापित थे इस प्रकार के सुन्दर भवन को देखकर शङ्कर वहाँ रत्नजटित पलङ्ग पर सो गये। हे नारदजी ! वह रात्री इसी प्रकार बीत गई। जब प्रातःकाल हुआ तब अनेकों प्रकार के बाजे बजने लगे। सारे देवता उठे, वे आनन्दित होकर अपनी-अपनी सवारियाँ सजाकर कैलाश चलने की तैयारी में लग गये तब भगवान् शंकर के पास श्री विष्णुजी ने धर्म को भेजा धर्म जाकर सदाशिव से प्रार्थना करने लगे। महेश्वर ! कृपा करके आप जनवासे में पधारें। देवतागण आपकी बाट देख रहे हैं। इतना सुनकर सदाशिव धर्म से कहने लगे-धर्मदेव ! तुम जाओ मैं अभी आ रहा हूँ यह कह कर उसे भेजा और अपने मन में जाने की इच्छा करने लगे। नगर की स्त्रियों को जब पता लगा तो वे सब वहाँ आ गईं और मङ्गल गीत गाने लगीं। भगवान् शंकर ने अपना प्रातःकाल का नित्य-कर्म करके मैंना से आज्ञा माँगकर जनवासे में गमन किया वहाँ ऋषि मुनियों को एवं मुझे प्रणाम कर बैठ गये।

* इक्यावनवां अध्याय *

(शिव यात्रा)

ब्रह्माजी बोले-नारद जी ! उसके बाद विष्णु आदि देवता एवं ऋषियों ने अपना-अपना आवश्यक कर्म करके हिमाचल से विदा करने के लिये कहने लगे। तब नगर की स्त्रियों के साथ हिमाचल जनवासे में जाकर सदाशिव से बोले—ईश्वर ! प्रार्थना यह है कि इन सब बरातियों के साथ आप यहाँ कुछ दिन निवास करें। आपके दर्शन कर हम आनन्दित होंगे। ब्रह्मा बोले—इस प्रकार हिमाचल ने शिव को कुछ दिन और ठहरने का आग्रह किया

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

तब सदाशिव अपने देवताओं के साथ मिलकर कहने लगे—शैलेन्द्र ! आप धन्य हो, आपकी कीर्ति महान है। तुम धर्म मूर्ति हो, त्रिलोकी भर में तुम्हारे समान कोई नहीं। देवताओं ने कहा—तुम्हारे द्वार पर परब्रह्म भगवान् शंकर अपने दासों के साथ पधारे। उन्हें सब प्रकार से पूजकर प्रसन्न किया। ब्रह्माजी बोले—तब बाजे बजने लग गये। मङ्गल गान होने लगा, अप्सरायें नाचने लगीं। मागध आदि गुण गान करने लगे तब भगवान् शंकर ने हिमाचल के प्रति जाने के लिये प्रार्थना सहित कहा, तब हिमाचल ने विष्णु आदि समस्त देवताओं के साथ शिवजी को अपने गृह में ले जाकर उन सबके चरण धोकर, भोजन के लिये प्रार्थना की। उन सबको आसनों पर बिठाया। इधर नगर की स्त्रियाँ मङ्गल गीत गाने लगीं।

बरातीगण उन स्त्रियों के देखते, हँसते, भोजन करके लगे। मङ्गल गीतों में मधुर-मधुर गारी भी दे रही थीं। सब बरातियों ने तृप्त पूर्वक भोजन किया। तब हिमाचल ने बड़े आग्रह एवं प्रार्थना करके उन सबको दो दिन के लिये और रोक लिया। तब सब देवता भोजन करके निवास स्थान को गये। इस प्रकार हिमाचल ने दो-दो दिन करते-करते अत्यन्त प्रेमपूर्ण बचनों के द्वारा सभी को बहुत दिनों तक न जाने दिया। उसके बाद सारे देवताओं सप्त-ऋषियों को हिमाचल के पास भेजा उन्होंने जाकर कहा—हिमाचलजी ! भगवान् शंकर आजही कैलास जाने का निश्चय कर चुके हैं। यह सुनकर मैंना तो अत्यन्त व्याकुल हो गई। बड़े उच्च स्वर से रुदन करती हुई सदाशिव से बोली—प्रभो, कृपानिधे ! मेरी प्रार्थना है कि यह पुत्री पार्वती ! आपकी जन्म जन्मान्तरों से दासी है। आपकी सेवा करेगी, इसका पालन करते रहना। ब्रह्माजी बोले-इतना कह कर श्री पार्वतीजी का हाथ श्री शंकर जी के हाथ में सौंपते हुये मैंना रोने लग गई, तब भगवान् शंकर ने मैंना को इस विषय

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

में बहुत कुछ समझाया और फिर मैंना तथा हिमाचल से आज्ञा लेकर जाने को तैयार हुए।

* बावनवां अध्याय *

(शिव को हिमालय का कन्यादान करना)

ब्रह्माजी बोले—नारद ! तब सप्तऋषियों ने कहा कि-हे हिमाचल जी ! पुत्री पार्वतीजी को शीघ्र ही तैयार करके भगवान् शङ्कर के साथ भेजने की कृपा करें। इतना सुनकर पर्वतराज अत्यन्त व्याकुल हो गये। फिर मैंना से श्री पार्वतीजी को भेजने के लिए कहा। मैंना को भी हर्ष हुआ और एवं उदासीनता भी, श्री पार्वतीजी का सुन्दर शृङ्गार किया गया, तभी मैंना के कहने से एक ब्राह्मण की पत्नी आकर श्री पार्वतीजी को पतिव्रत धर्म की शिक्षा देने लगी उसने कहा—हे पार्वतीजी ! जो स्त्रियां पतिव्रत धर्म वाली होती हैं, वे धन्य हैं। समस्त पापों को नाश करके अपने दोनों कुलों को तार देती हैं। जो भी स्त्री अपने पति को साक्षात् ईश्वर समझकर उसकी सेवा करती हैं, उन्हें इस लोक में आनन्द की प्राप्ती होती है। अन्त में सद्गति प्राप्त होती है। पार्वतीजी ! पतिव्रता स्त्री पति के भोजन कर चुकने के बाद भोजन करे। पति के सो जाने के बाद सोवे। क्रोध से एवं प्रसन्नता से पति का नाम मुख से न बोले। कभी पति क्रोध में आकर कुछ मार भी बैठे तो सहन करे, उत्तर में मरो या मारो, ऐसा शब्द न कहे। इतना कहे स्वामिन् मेरा अपराध क्षमा करो। इसी प्रकार कहती रहे। पति के बुलाने पर सभी कामों को छोड़कर पति के पास चली जाय, उसकी आज्ञा का बड़े प्रेम से पालन करे। पतिव्रत कभी द्वार पर न खड़ी हो किसी दूसरे के घर जाकर बिना कारण न बैठे। अपनी घर की वस्तुएं, धन आदि किसी को न दे। पति के सेवन की चीजें ठीक समय पर यथा स्थान सम्हाल कर रखे फिर अपने काम-काज में भी चतुर रहे। पति की आज्ञा का पालन करना,

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

पतिव्रता का मुख्य धर्म है आज्ञा के बिना तीर्थ यात्रा, खेल तमासे किसी स्थान पर न जाये। तीर्थ स्नान की इच्छा से पति के चरण धोकर उसके पान करने से उसका तीर्थ स्नान हो जाता है। अपने पति की आज्ञा पाकर पति के झूठे अन्न को परम प्रसाद समझ कर ग्रहण करे।

श्राद्ध आदि पर्वों में भी बाँटकर न खावें किन्तु पति की झूठन खाना ही सर्वोत्तम है। किसी चीज के लिये भी पति से झगड़े नहीं और न बहुत खर्च करावे ऐसी स्त्री उत्तम होती है। पार्वतीजी! पति की आज्ञा के बिना पतिव्रता कोई भी उपवास व्रत आदि न करे। अपने हठ से व्रत आदि करने वाली स्त्रियों को कोई भी फल नहीं मिलता। फिर अन्त होने पर नरक में जाती हैं। सुख से बैठे, सोते पति को कभी न उठावे। दुःखी, नपुंसक, धनहीन दीन रोगी, वृद्ध किसी अवस्था में पति क्यों न हो पतिव्रता उसका त्याग न करे। मासिक धर्म में आकर स्त्री अपने पति को तीन दिन मुख न दिखाये। जब तक वह शुद्ध स्नान नहीं कर लेती तब तक उसका पति उसका वचन भी न सुन सके। तीसरे दिन के बाद शुद्ध होकर पहिले पति का दर्शन करे। पति यदि कहीं चला गया हो तो उसके रूप का ध्यान करके सूर्यनारायण का दर्शन करे। सिंदूर आदि सुहाग की वस्तुएं धारण कर अपने पति की दीर्घ आयु के लिये कामना करती रहे। धोबिन, शूद्रा, व्यभिचारिणी आदि नीच स्त्रियों को अपनी सहेली न बनावे। पति से लड़ने वाली एवं शत्रुता करने वाली स्त्री से बोले तक नहीं। एकान्त में कभी अकेली न रहे। कभी नङ्गी न होने पावे। स्नान भी वस्त्रहीन हो कभी न करे। पति की इच्छा होने पर ही पति से रमण करे। रमण समय में ही पति से ढीठता कर सकती है और समय में नहीं। सदा पति के अनुकूल चले। उसके उदास होने पर उदास और सुखी रहने पर सुखी रहे। सुख-दुःख दोनों में ही पति से विमुख न हो। यदि ब्रह्मा, विष्णु, महेश से भी

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

अपने पति को विशेष समझे। जो भी स्त्री पति की आज्ञा के बिन व्रत उपवास अथवा विषय करती हैं वह अपने पति की आयु का हरण करती हैं और अन्त में नरक में जाती हैं। जो स्त्री पति के कुछ कहने पर क्रुद्ध होकर तीखा कटु उत्तर देती हैं ऐसी स्त्रियाँ निर्जन वन में गीदड़ों का जन्म पाती हैं। पति से ऊँची होकर न बैठे। व्यभिचारी दुष्टों से दूर रहे। पति से कभी कुटिलता से न बोले। सास, ससुर, जेठ, जिठानी आदि बड़ों के सामने कभी ऊँचा न बोले न हँसे। बाहर से आये हुए अपने पति के आदर पूर्वक उसके चरण धोये। पार्वती जी ! इस प्रकार की पतिव्रता नारियाँ लोकों को पवित्र कर देती हैं। तीनों देवों की प्रार्थना से अत्रि की पत्नी ने शाप द्वारा बाराह से मरे हुये एक ब्राह्मण को जीवित कर दिया था। देवी ! आप तो सर्व-श्रेष्ठ हो सबका कल्याण करने वाली हो। आपके सामने तो केवल लोकोपकार के लिये इतना कहना पड़ा।

* तिरेपनवाँ अध्याय *

(शिव कैलाश गमन)

नारद जी ! इसके बाद उस ब्राह्मण पत्नी ने मैंना से श्री पार्वतीजी को भेज देने के लिये कहा। यह सुनकर प्रेम विवाह होकर मैंना ने उसके बचनों के अनुसार श्री पार्वतजी को हृदय से लगा धैर्य के साथ विदा करने लगी किन्तु धैर्य का बाँध टूट गया और ऊँचे स्वर से रुदन करने लगी उसी प्रकार अन्य स्त्रियाँ अचेतन होगईं। स्वयं योगीश्वर श्री महादेव जी चलते समय रुदन करने लगे। पशु पक्षी आदि का तो कहना ही क्या। उस समय पर्वतराज हिमाचल कपने पुत्रों, मन्त्रियों, ब्राह्मणों के साथ वहाँ आ गये। मोह के कारण अपनी पुत्री को हृदय से लगाकर रोने लगे। उसके बाद तत्वज्ञानी पुरोहितों ने सबके अध्यात्म ज्ञान द्वारा

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

समझाया जिससे कुछ समय के लिये शान्त हुए जब कि पार्वती जी ने भक्ति के साथ माता-पिता एवं गुरुजनों को प्रणाम किया फिर लोक नीति के अनुसार अचानक हा रोने लग गईं। श्री पार्वती जी का ऊँचे स्वर से रुदन सुनकर अन्य स्त्रियाँ भी रोने लग गईं। तब ब्राह्मण लोगों ने उनको धैर्य दिया और यात्रा का शुभ लग्न बताते हुए बोले--इस समय रोना अच्छा नहीं। तब हिमाचल जी ने मैंना को धैर्य बंधाया, श्री पार्वतीजी के लिये पालकी मँगाकर उस पर उन्हें बैठा दिया। सबने श्री पार्वती को शुभ आशीर्वाद दिये। हिमाचल तथा मैंना ने शुभ आशीर्वाद देते हुए श्री पार्वतीजी को अमूल्य आभूषण वस्त्र एव असंख्य धन दिया। पार्वतीजी ने ब्राह्मण, पुरोहित एवं अन्य पूज्य स्त्रियों को प्रणाम किया फिर उनकी पालकी चली। श्री पार्वती के चलते समय हिमाचल ने श्री महादेव जी को जाकर प्रणाम किया और विष्णु आदि देवताओं से गले लगाकर मिले। उस प्रकार श्री पार्वती जी की आज्ञा से घर लौटे। ब्रह्माजी बोले—तब भगवान् शङ्कर सभी देवताओं के साथ कैलाश पर्वत पर पधारे। लोक रीति के अनुसार, सदाशिव ने विष्णु आदि सभी बरातियों को भोजन कराया। तब बरातीगण सदाशिव की आज्ञा लेकर अपने-अपने लोकों में चले गये। ब्रह्माजी बोले-नारद जी! यह भगवान् शङ्कर के शुभ विवाह का वर्णन है। यह शोक को नाश करता है, हर्ष को बढ़ाता है।

—:*:—

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* ॐ नम, शिवाय *

* श्रीशिव महापुराण भाषा *

* रुद्र संहिता-कुमार खण्ड *

* पहला अध्याय *

(शिव पार्वती विहार)

श्री नारद जी ने पूछा--ब्रह्मन् शङ्कर जी व पार्वतीजी के पुत्र कैसे हुआ ? सूतजी कहते हैं कि जब नारद जी ने ऐसा पूछा तब ब्रह्माजी प्रसन्न हो शिवजी का स्मरण करते हुये बोले—नारद जी ! जब पार्वती के साथ विवाह कर शिवजी कैलाश पर आये। भगवान् शङ्कर के गणों ने प्रसन्न होकर अनेकों उत्सव मनाये और देवता प्रसन्न हो अपने लोक को चले गये। पश्चात् महादेव शंकर कल्याण स्वरूप श्री पार्वती को लेकर अत्यन्त मनोहर दिव्य निर्जन स्थान में चले गये और वहाँ रति वर्द्धक शय्या बनाकर देवताओं के सहस्त्रों वर्षों तक पार्वती के साथ विहार करते रहे। लोक धर्म के प्रवर्त्तक भगवान् शंकर ने एक क्षण के समान ही इस बहुत समय को व्यतीत कर दिया । यह देख समस्त इन्द्रादि देवताओं ने सुमेरु पर्वत पर एक गोष्ठी की और यह विचार किया कि योगीश्वर शंकर ने अभी तक कोई पुत्र उत्पन्न नहीं किया । अब वे किस लिये बिलम्ब कर रहे हैं । तब मुझे ब्रह्मा को अग्रही बना सब देवता विष्णु जी के पास गये । अपना अभीष्ट कहा और यह भी निवेदन किया कि हजारों वर्षों से भगवान् रति क्रीड़ा में रत हैं और उस से विरत

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

नहीं होते हैं। तब विष्णु जी ने मुझसे कहा कि इसकी कुछ चिन्ता न कीजिये। वे स्वयं अपनी इच्छा से ही विरत हो जायेंगे। जो मनुष्य किसी स्त्री-पुरुष का वियोग कराता है उसे जन्म-जन्म में स्त्री पुरुषों का वियोग सहना पड़ता है। अतएव इसका यह उपाय है कि हजार वर्ष बीतने पर तुम लोग शिव जी के पास जाकर वहाँ ऐसा कोई उपाय करो जिस से उनका वीर्य पृथ्वी पर आ पड़े। उसी वीर्य से उनके स्कन्द नामक पुत्र का जन्म होगा। परन्तु इस समय तुम सभी देवता अपने स्थान पर चले जाओ और शिवजी को पार्वतीजी के साथ विहार करने दो। विष्णु सब देवताओं से ऐसा कह कर अपने अन्तःपुर को चले गये। देवता भी अपने धाम को गये। फिर तो उन शक्ति और शक्तिमान के बिहार से पृथ्वी काँप उठी। तीनों लोकों में भय व्याप्त होगया। तब मुझे साथ ले सब देवता विष्णु जी के पास फिर पहुँचे। स्थावर-जङ्गम की व्याकुलता देख विष्णु जी ने कहा—आओ सब देवता मेरे साथ शिवजी के पास चलो। हम लोग कैलाश पर्वत पर पहुँचे। परन्तु शिवजी तो वहाँ थे नहीं, केवल उनके गण वहाँ विद्यमान थे। विष्णु जी ने नम्रता पूर्वक उन गणों से शिवजी का पता पूछा। गणों ने बताया कि लीला धाम भगवान् शंकर हमें यहाँ नियुक्त कर पार्वतीजी के मन्दिर में गये हैं। परन्तु, ज्ञात नहीं कि वे वहाँ क्या कर रहे हैं? तब हमलोग शिवजी के द्वार पर गये। विष्णुजी ने लोक-प्रभु शंकर की वहाँ स्तुति की? तारकासुर से दुःखी सभी देवता भगवान् शंकर की स्तुति करने लगे।

* दूसरा अध्याय *

(स्वामी कार्तिकेय का जन्म)

ब्रह्माजी बोले—यद्यपि शिवजी सर्व प्रकारेण योग-ज्ञान में प्रवीण और व्यक्त काम हैं, तथापि पार्वती जी के भयसे उन्हें सम्भोग त्यागते

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

न बना, वे द्वार पर आ मुझ सहित विष्णु जी को देखकर बहुत ही हर्षित हुए देवताओं ने उनकी स्तुति आरम्भ की। तादाकादि महा-दैत्यों का विनाश का निवेदन किया तब उन देवताओं का बचन सुनकर भगवान् शंकर दुःखित हो कुछ विचार करते हुये बोले–हे देवताओ! होनी को मिटा नहीं सकता। शिर से रस्खलित हुए मेरे वीर्य को कौन धारण कर सकता है? ऐसा कहकर उन्होंने पृथ्वी पर गिरा दिया। उसे देख देवताओं ने अग्नि को प्रेरणा दी कि तुम इसे कपोत बनकर ग्रहण करो। कपोतरूपिणी अग्नि ने समस्त वीर्य भक्षण कर लिया उसी समय वहाँ पार्वतीजी आ गईं। क्योंकि शिवजी को द्वार से उनके पास जानेमें बिलम्ब हो गया था वहाँ पहुँचकर उन्होंने सब वृत्तान्त देखा तो उन्हें क्रोध आगया। उन्होंने हरि आदि देवताओं से कहा—तुम बड़े स्वार्थी और दुष्ट हो। अपने स्वार्थ के लिये तुमने मेरे विहार को भङ्ग किया, जिससे मैं वन्ध्या हो गई। मुझसे विरोध कर कोई देवता सुख नहीं पा सकता। ऐसा कहकर पार्वतीजी ने विष्णु आदि सब देवताओं को शाप दे दिया। सती ने कहा—'सब देवाङ्गनायें बन्ध्या हो जायेंगी। मेरे विरोधी सब देवता दुःख पावेंगे।" पार्वतीजी ने अग्नि से कहा—क्यों रे? तूने शिवजी का वीर्य भक्षण कर लिया? अतएव आज से तू सर्वभक्षी हो जा और इसके लिये सर्वदा ही पीड़ित रहे। अग्नि को शाप दे पार्वती जी महारुष्ट होकर अपने स्थान को चली गईं। जब शिवजी गये तब उनसे सारा वृत्तान्त कहा। पश्चात पार्वतीजी ने गणेशजी को उत्पन्न किया।

इधर जो समस्त देवता अग्नि में होम द्वारा अन्नादि भक्षण करते रहे इससे उनके पेट में गर्भ रह गया, जिससे विष्णु आदि सभी देवताओं को बड़ी पीड़ा हुई। शिवजी की इच्छा से उन सब की बुद्धि भी नष्ट होने लगी। गर्भ की गर्मी से सभी सन्तप्त हो गये। सब ने शिवजी की शरण ली। शिवजी के मन्दिर पर जाकर हाथ

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

जोड़ स्तुति की गर्भादान से युक्त अपना कष्ट कहा। उसके निवारण की प्रार्थना की। तब देवताओं की स्तुति को सुनकर भगवान् शिव शीघ्र ही द्वार पर आये, जहाँ देवता खड़े थे। शिवजी को देख देवताओं ने कहा—"शम्भो ! शिव ! महेश्वर ! हम इस वीर्य से जलते हैं ? हमारी रक्षा कीजिये।" तब उनके दीन बचनों को सुनकर भक्त वत्सल शङ्करजी ने हँसकर कहा—विष्णो ! ब्रह्मा ! देवताओ ! मैं जो कहता हूँ उसे सुनो। अब तुम लोग शीघ्र ही वमन द्वारा मेरे वीर्य को बाहर निकाल दो इससे तुम्हें सुख प्राप्त होगा।" फिर तो शिव जी की आज्ञा से सबने उस वीर्य को वमन द्वारा बाहर निकाल दिया। विष्णु आदि देवताओं का दुःख दूर हो गया। सबने भक्त वत्सल भगवान् शङ्कर की स्तुति की। परन्तु अग्नि फिर भी सुखी नहीं हुआ उसका हृदय जलता ही रहा। तब उसने भी देवाधिदेव शङ्कर की बड़ी स्तुति की और कहाकि मैं बड़ा मूर्ख हूँ मेरा अपराध क्षमा कर मेरे ताप को हरण कीजिये। आप दीनवत्सल कल्याणकारी और परमेश्वर हैं।

शिवजी ने अग्न से कहा—तुमने मेरा वीर्य भक्षण कर अच्छा नहीं किया। परन्तु अब मैं प्रसन्न हूं। तुम्हारा सब दुःख छूट जायेगा। तुम मेरे वीर्य को किसी स्त्री की योनि में स्थिर करदो। इससे तुम्हारा शरीर नहीं जलेगा। अग्नि ने कहा—महाराज ! आपका तेज बड़ा कठिन है। तीनों लोक में उसे धारण करने की शक्ति किसी में नहीं है। उसी समय नारद ! तुम भी वहाँ आ गये। तब तुमने अग्नि के उपकारर्थ यह कहा कि अग्नि ! शिव जी जैसा कहते हैं वैसा करके तुम सुखी हो जाओ शिवजी की इच्छा से मैं तुम्हें इसका एक सहज उपाय बतलाता हूं माघ के महिने में जो स्त्री प्रयाग में स्नान करने आवे उसके देह में तुम इस महत् वीर्य को स्थापित कर देना। ब्रह्माजी कहने लगे कि, इसी समय वहाँ सप्तऋषियों की भी स्त्रियाँ आगईं। माघका महीना था, वे बड़े तड़केहा स्नानके लिए

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

आई थीं। उनमें से छः स्त्रियाँ शीत से अधिक आर्त्त होकर अग्नि की ज्वालाके समीप गईं। और अग्नि तापने लगीं। फिर तो उसीक्षण उनके रोमों द्वारा शिवजी के वीर्य कण उनके शरीर में प्रवेश कर गये। अग्नि दाहरहित होगया। वह अन्तर्धान हो शिवजी का स्मरण करते हुए अपने स्थान पर आया। छओं, स्त्रियाँ गर्भवती होगईं। उनके पतियों ने उन्हें त्याग दिया उन छओं को अपने व्यभिचार पर दुःख हुआ। वे हिमालय पर जाकर तप करने लगीं। वहाँ उन्होंने उस गर्भ को त्यागकर शान्ति प्राप्त की। परन्तु जब वह पर्वतराज भी उस गर्भ को सहन न कर सका तो गङ्गाजी में गिरा दिया। गङ्गा जी भी सहन न कर सकीं और उन्होंने अपनी तरङ्गों से उस वीर्य को सरकण्डे के बन में त्याग दिया। वहाँ पर एक तेजस्वी बालक हो गया मार्ग शुक्ल षष्ठी के दिन शिवके उस पुत्रका पृथ्वी पर प्रादुर्भाव हुआ उसके आविर्भूत होते ही हिमालय पर स्थित शिव-पार्वती को भी बड़े आनन्द की अनुभूति हुई। आकाश में दुन्दुभियाँ बजने लगीं और सरकण्डे के बन में उस बालक पर फूलों की वर्षा हुई।

* तीसरा अध्याय *

(स्वामी कार्तिक चरित्र)

नारदजी बोले—ब्रह्माजी इसके पश्चात् वहाँ क्या हुआ, ब्रह्माजी बोले—तात फिर तो उसी समय विधि-प्रेरक विश्वामित्र का आगमन हुआ कि जहाँ वह बालक उत्पन्न हुआ था। उसे देखकर ऋषि प्रसन्न होकर नमस्कार करने लगे तथा उसके प्रताप को जान कर उन्होंने उस की बड़ी स्तुति की। तब उस अत्यन्त उत्सव दायक बालक ने विश्वामित्रजी से कहा कि हे महाज्ञानानिन्! तुम शिव की इच्छा से ही सहसा यहाँ आगये हो अतः तुम सविध मेरा संस्कार करो? अब आज से आप मेरे पिरोहित हो गये और इसमें सन्देह नहीं कि अब आप सभी के पूज्य हो जायेंगे। तब बिस्मित होकर विश्वामित्रजी

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized By eGangotri Siddhanta eGyan Kosha

ने उस बालक से कहा कि हे तात! मैं ब्राह्मण नहीं किन्तु गाधि क्षत्रिय का पुत्र हूं मैं ब्राह्मणों का सेवक हूँ और लोग मुझे विश्वामित्र कहते हैं परन्तु तुम कौन हो, यह तो कहो इस पर वह उत्सवकारी बालक बोला—हे विश्वामित्र! अब तुम मेरे वरदान से ब्रह्मर्षि हो गये। निःसंदेह अब वशिष्ठादि ब्रह्मर्षि तुम्हारे प्रशंसक होंगे। मैं आज्ञा देता हूँ कि तुम मेरा संस्कार करो और यह गुप्त रहस्य किसी पर प्रकट न करना फिर तो विश्वामित्रजी ने उस बालक का जात-संस्कार किया और उस बालक ने भी प्रसन्न होकर उन्हें सच्चाज्ञान प्रदान किया तात यह तो मैंने उस बालक की एक लीला कही। अब उसकी कथा सुनो। उसी बालक को आकर देखा तो उसका आलिङ्गन और चुम्बन कर उन्होंने उसे शक्ति और शस्त्र अर्पण किया। उस शक्ति को लेकर वह क्रोध पर्वत पर चढ़ गया और उसके शिखर ढहाने लगा। यह देख दस वीर राक्षस उसको मारने आये। परन्तु कुमारने सबको अपने प्रहार से नष्ट कर दिया। त्रैलोक्य काँप उठा। यह देख देवताओं सहित शङ्करजी वहाँ आये और इन्द्र ने उसके दक्षिण पार्श्व में वज्र का प्रहार कर दिया जिससे विशाख नामक एक महाबली दूसरा मनुष्य उत्पन्न हो गया। इन्द्र ने फिर उसके [स्वामी कार्तिकेय के] बाम पार्श्व में प्रहार किया। इससे विशाख नाम दूसरा पुरुष पैदा हो गया। फिर इन्द्र ने उसके हृदय में मारा तो नेगम नामक एक महाबली पुरुष प्रकट हो गया। ये चारों स्कन्ध हुए जो बड़े ही वीर थे। अब ये चारों महाबली इन्द्र को मारने दोड़े। इन्द्र भयभीत हो उनकी शरण आये। वह बालक स्वर्ग पहुँचा। वहाँ एक सरोवर में स्नान करती हुई कृत्तिका नामक छः स्त्रियाँ उसे पकड़ने दौड़ीं उनमें भारी विवाद हुआ। कुमारने छः मुख कर-एक मुख से सबका स्तनपान किया। वे प्रसन्न हो कुमार को अपने लोक में ले गईं। और दूध पिलाकर पालन किया। त्रैलोक्य में सुन्दर वस्त्रों और उत्तमोत्तम आभूषणों को पहनाया।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* चौथा अध्याय *

(कार्तिकेय खोज नन्दी सम्वाद)

ब्रह्माजी बोले—इस प्रकार जब बहुत समय व्यतीत होगया और पार्वतीजी को उस बालक का कुछ पता न चला तब उन्होंने एकदिन अपने स्वामी शम्भु से पूछा कि देव आप मेरे पूर्व पुण्य से ही मुझे प्राप्त हुए हैं । कृपाकर यह बतलाइये कि आपका वह वीर्य कहां गया जो पृथ्वी पर गिरा पार्वती के यह बचन सुनकर जगदीश्वर ने देवताओं और मुनियों को बुलाकर पूछा कि हे देवताओ ! मेरा अमोघ वीर्य कहाँ है ? उसको किसने छिपाया है ? शीघ्र ही बतलाओ नहीं तो दण्डित हो जाओगे । ईश्वर के यह वचन सुनकर सब सभा के लोग कम्पित हो गये और क्रम से एक दूसरे को देखकर प्रभुके आगे उसकी खोज सम्बधी एक-एक बात कहने लगे । तब जैसे-जैसे वह वीर्य जहाँ-जहाँ गया और जैसे वह कृतिकाओं द्वारा पालित हुआ उसका पता पाकर शिवजी बहुत प्रसन्न हुये और उन्होंने ब्राह्मणों को बहुत सी दक्षिणा दी । पार्वतीजी भी पुत्र का समाचार सुनकर बहुत प्रसन्न हुई । फिर प्रभु ने अपने गणों को आज्ञा दी कि कृतिकाओं के यहाँ जाकर मेरे पुत्र को ले आओ । शिवजी के एक से एक बली गण, लाखों क्षेत्रपाल और लाख भूत रुद्र और भैरव ने स्वर्ग में उड़कर कृतिकाओं का घर घेर लिया । कृतिकायें भय से व्याकुल हो गईं तब उन्होंने ब्रह्म तेज प्रकाशमान कार्तिकेय से कहा कि वत्स ! क्या तुम नहीं देखते हो असंख्य सेनाओं ने तुम्हारे घर को घेर लिया है ।अब क्या करें कहाँ जाँय ? इस पर कार्तिकेय ने कहा—कल्याणियों ! मेरे रहते आप लोग कुछ भी न करो । मैं बालक होकर भी दुर्निवार हूं । ऐसा कौन है इसी समय शिवजी के सेनापति नन्दीश्वर कार्तिकेय के समक्ष जाकर खड़ा हो यह कहने लगा—कि भाई हे माताओं मुझे जगत सँहर्त्ता शिवजी ने यहाँ भेजा है । इस

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

समय कैलाश में ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र आदि सम्पूर्ण देवता विद्यामान हैं। तात! शिवजी ने तुम्हें खोजने के लिए मुझे भेजा है। अब तुम मेरे साथ पृथ्वी पर चलो। देवताओं सहित शिवजी तुम्हारा अभिषेक करेंगे। तारक असुर को मारने के लिये तुमको सभी प्रकार के अस्त्र प्रदान करेंगे। जब नन्दीश्वर ने ऐसे कहा तब कार्तिकेय जी ने कहा कि भाई। यह कृतिका ज्ञान- योगिनी प्रकृति की कला है। मैं उसके ही दूध से पला हूँ अतः उनके उपकार को भूल नहीं सकता। मैं इनका पोष्य पुत्र हूँ! पार्वती धर्म की माता हैं जैसे यह सब कृतकायें हैं। यदि शिवजी ने अपना पुत्र मानकर तुमको भेजा है तो तुम्हारे साथ चल कर देव समूह का दर्शन करूँगा। यह कह कर कृत्तिकाओं को बुला उनसे आज्ञा ले कार्तिकेयजी शीघ्र ही शिवजी के पार्षदों के साथ चले।

* पांचवाँ अध्याय *

(कुमार अभिषेक)

ब्रह्माजी बोले—उसी समय एक बड़ा ही सुन्दर रथ दिखाई दिया जो विश्वकर्मा का बनाया हुआ था तथा जो बड़ाही मनोहर और वेगवान था। पार्वती जी ने उसे भेजा था और पार्षद उसे चारों तरफसे घेरे हुये थे। वह रथ वहीं आकर उतर पड़ा और दुखी हृदय कार्तिकेयजी उस रथ पर जा चढ़े। छःहों कृत्तिकायें व्याकुल हो बाल खोले वहाँ आ खड़ी हुईं। उन्होंने कहा तुम हमारे पुत्र हो। हमने तुमसे बड़ाप्रेमकिया है अब हम क्या करें और कहाँ जाय? इस प्रकार कहती हुई कार्तिकेय को हृदय से लगा पुत्र-वियोग से शीघ्र ही वहाँ मूर्ति होगईं कुमार उन्हें अध्यात्म ज्ञान दे सुखदायक एवं माङ्गलिक समय देखकर पार्षदों के साथ चले। विमान पर बैठ कृत्तिकाओं और नन्दीश्वर के साथ कैलाश में अक्षय मूल्यन्यग्रोध वृक्ष के पास आये-देवताओं ने उनके आगमन का समाचार शिवजी को दिया। विष्णु आदि देवताओं और

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

महर्षियों को साथ ले शिवजी गङ्गा से उत्पन्न कुमार को देखने आये। उस समय शङ्ख और भेरी आदि बज रहे थे। वीरभद्र आदि गण अनेक ताल और लय से शिवजी की स्तुति कर रहे थे। सभी प्रसन्न हो जय और नमः शब्द कर रहे थे। शरकण्डों में उत्पन्न हुये शिवजी के उस पुत्र को देखने चले। पार्वतीजी ने तो और ही बड़ा उत्सव किया शिवजी की आज्ञा से देवताओं ने महोत्सव मनाया। देवता और श्रेष्ठ ऋषि उनकी स्तुति करने लगे। कुमार प्रेम पूर्वक शिवजी की गोद में बैठकर खेलने लगे। फिर शङ्कर ने कुमार कार्तिकेय को एक रत्न-जटित रमणीय सिंहासन पर बिठाकर सब तीर्थों से आये हुये जलों को वेद मन्त्रों से पवित्र करके सौ रत्न के कलशों से उन्हें स्नान कराया। फिर विष्णुजी ने रत्न-सार-निर्मित किरीट, मुकुट, बाजूबन्द, बैजन्तीमाला और अपना चक्र प्रदान किया। शिवजी ने भी कुमार को शूल, पिनाक, फरसा, शक्ति पाशुपास्त्र, बाण, संहारास्त्र, और परम-विद्या इतनी वस्तुएं दीं फिर मुझ ब्रह्मा ने यज्ञोपवीत, वेद माता गायत्री ने कमण्डलु, ब्रह्मास्त्र तथा शत्रु को मर्दन करने वाली विद्या दी। इन्द्र ने अपना ऐरावत और वज्र तथा वरुण ने श्वेतछत्र और रत्न माला प्रदान किया। सूर्य ने मन के समान गमन करने वाला शीघ्रगामी रथ और कवच तथा यमराज ने दण्ड और समुद्र ने अमृत-कलश लाकर दिया। कुबेरने अपनी गदा दी और शङ्करजीने अपना शूल दिया इसी प्रकार सब देवताओं ने उन्हें नाना प्रकार के शस्त्र और उपाय दिये। पार्वतीज ने चिरञ्जीवि रहने का आशीर्वाद दिया। लक्ष्मी ने दिव्य सम्पदा और एक मनोहर हार दिया। सावित्री ने सभी सिद्धियाँ तथा और भी जो देवियाँ वहाँ आई थीं; उन सभीने बालक की पालना के लिये यथाशक्य दिया। इसी प्रकार अन्य सभी देवताओं ने उनका वहाँ आदर अभिवादन किया। कुमार ने सब के स्वामित्व को ग्रहण किया।

—※—

CC-0. ASI Principal Collection. Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

* अड़तालीसवाँ अध्याय *

(कुमार अद्भुत चरित्र)

ब्रह्माजी कहते हैं—नारद ! तब वहाँ स्थिति हो कार्तिकेयजी ने भक्ति दायिनी कई कथायें कहीं फिर एक नारद नामक ब्रह्माण उनकी शरण में आया। उसने कार्तिकेयजी के निकट जाकर स्त्रोतों में यह नम्र स्तुति की कि—स्वामिन् ! मेरा कष्ट दूर कीजिये। मैं आपकी शरण हूं। मैं एक अज-मेघ-यज्ञ कर रहा था, जो आज अपना बन्धन तोड़ न जाने कहाँ चला गया है। मेरा यज्ञ भङ्ग हो रहा है। परन्तु मुझे आशा है कि आप जैसे स्वामी के रहते मेरा यज्ञ भङ्ग नहीं तो सकता। आप अखिल ब्रह्माण्ड के स्वामी हैं और सेवा योग्य समझा कर सब देवता आपकी सेवा करते है। आप देवताओं के सम्राट और शिवजीके पुत्र हैं। तब उनकी ऐसी स्तुति सुनकर स्वामि कार्तिकेयजी ने अपने वीरबाहु नामक प्रधान गण को उस ब्राह्मण के यज्ञ को पूर्ण करने के लिए आज्ञादी। वह महावीर गण उस अज को ढूँढ़ने चला। उसने सब ब्रह्माण्डों में उसे खोजा। किन्तु इसका उपद्रव तो उसने सुना कि वहां-वहाँ उसने उपद्रव किया था, परन्तु उसे पाया नहीं। तब कुमार का वह गण विष्णु लोक में गया। वहां उसने देखा कि वह महाबली आज बहुत उपद्रव मचाए हुये है फिर तो कुमार का वह वीर गण उसको पकड़कर अपने स्वामी के पास लाया। भगवान् सारे संसार का भार लिये उसके ऊपर चढ़ बैठे। वह उन्हें लेकर त्रैलोक्य की परिक्रमा करने लगा। एक ही मुहूर्त में वह त्रिलोकी का पर्यटन कर आया। फिर आकर वहीं खड़ा होगया, जहाँ से वह भगवान् को लेगया था। स्वामी उसके पीठ से उतर कर अपने आसन पर जा विराजे। अज वहीं खड़ा रहा। तब नारद ने कार्तिकेयजी से कहा कि, हे देव ! अब इस अज को मुझे दे दीजिये। मैं आनन्द से आपका यज्ञ करूँ। कार्तिकेयजी ने कहा कि हे विद्र ! यह अज वध के योग्य नहीं हैं।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

आप अपने घर जाइये। मैं प्रसन्नता से यह वर देता हूँ कि आपका यज्ञ पूर्ण होगा।

*सातवां अध्याय *

(युद्ध आरम्भ वर्णन)

ब्रह्माजी बोले--हरि आदि देवताओं पर इसका और भी प्रभाव पड़ा और वे ताल ठोक कर सिंहनाद करने लगे। अब वे ताल ठोक कुमार को आगे कर तारकासुर को मारने चले। इधर तारक ने भी देवताओं से युद्ध करने की तैयारी कर यात्रा की। फिर सब देवता कुमार को अग्रसर कर पृथ्वी और सागर के सङ्गम पर आये। तब तक तारक भी दैत्यों को बड़ी भारी सेना ले वहाँ आ पहुंचा। बादलों के समान रण दुन्दुभी तथा और भी कर्क बाजे बजने लगे। पृथ्वी को कपिम्त करने वाला देवताओं और तारक के दैत्यों का युद्ध आरम्भ हुआ। चरणों और जङ्घाओं में प्रहार होने लगे। देवताओं की ओर से इन्द्र कार्तिके कुमार को हाथी पर चढ़ा आगे हुए उनके पीछे लोकपालों सहित देवताओं की बड़ी भारी सेना थी। तब-तक कुमार इन्द्र का हाथी छोड़ एक दूसरे रत्न-जटित यान पर जा चढ़े। प्रचेता ने उन पर एक कान्तिमान छत्र रक्खा। इसी समय दोनों पक्षों ने भयानक युद्ध आरम्भ किया। क्षणमात्र में पृथ्वी रुण्ड-मुण्डों से व्याप्त हो गई। सैकड़ों तथा हजारों वीर कट-कटकर पृथ्वी पर गिरने लगे। कबन्ध नाचने लगे। रक्त की नदियाँ वहने लगी। सैकड़ों भूत-प्रेत आ गये। गीदड़ और गीदड़ी अनेक प्रकार से माँस भक्षण करने लगी। महावली तारक ने एक बड़ी सेना लेकर देवताओं परप्रचण्ड आक्रमण किया। युद्ध में उल्लसित इन्द्रादिक देवता उसे रोकने लगे। परन्तु वह न रुका। फलत- देवताओं ने अद्भुत पराक्रम कर दैत्यों का नाशकारा बड़ा युद्ध किया। इतने में दिति पुत्र तारक अकेले इन्द्र से युद्ध कर लगा।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* आठवां अध्याय *

(देवासुर युद्ध)

ब्रह्माजी बोले—नारदजी ! जब इस प्रकार देवताओं और दैत्यों ने विनाशकारी युद्ध आरम्भ किया तो तारक ने अपनी परम शक्ति को उठाकर इन्द्र पर चला दिया, जिससे इन्द्र घायल हो तत्काल ऐरावत से गिर पड़ा। इसी प्रकार अपनी रण-कुशलता से असुरों ने सभी लोकपालों को परास्त कर दिया और अन्यदेवताओं को मार-मार कर भगा दिया। असुर बिजयी हो सिंहनाद करने लगे। यह देख वीरभद्र को बड़ा क्रोध आया। वह वीर गणों से वेष्टित हो तारका के निकट जा उसे भीषण मार मारने लगे। दैत्य मिलकर उससे भीषण युद्ध करने लगे त्रिशूल, पाश, खड्, फरसा और पट्टिश आदि आयुद्धों का प्रयोग हुआ। इसी समय वीरभद्र ने त्रिशूल मारकर तारक को अत्यन्त घायल कर दिया वह क्षणभर के लिये मूर्छित हो पृथ्वी पर गिर पड़ा। जब चेतना आई तब वीरभद्र पर अपनी शक्ति का प्रहार करने लगा। बीरभद्र और तारक बड़े वेग से युद्ध करने लगे। नारद ! महा कौतुकी तारक ने भीषण संग्राम कर उसी क्षण वीरभद्रको मारकर युद्ध भूमिसे भगा दिया। फिर क्रुद्धहो उस महा-कुपित असुर ने देवताओं पर अपने बाणों की झड़ी लगा दी। देवता युद्ध भूमि छोड़ भागने लगे। अब उन्हें भागते हुये देख स्वयं विष्णुजी अपने आयुधों सहित उससे युद्ध के लिये आगे बढ़े। विष्णु और तारक का महायुद्ध हुआ। उस रौमहर्षण युद्ध को सभी बड़े वेग से देखने लगे हरि ने बड़े वेग से दैत्य पर अपनी गदा का प्रहार किया। परन्तु उसी क्षण उस दैत्य ने त्रिशिख बाण मारकर उसके दो टुकड़े कर दिये। तब भगवान् ने क्रुद्ध हो अपना शार्गधनुष उठा उस पर बाण चढ़ाकर उस असुर नायक पर प्रहार किया। असुर उनके बाण को काटने लगा। फिर शक्ति उठा विष्णुजी को जो मारा तो वह मूर्छित हो

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

पृथ्वी पर गिर पड़े । परन्तु क्षणमात्र में ही उठकर उन्होंने अपना सुदर्शन चक्र चला दिया । चक्र से पीड़ित असुर पृथ्वी पर गिर पड़ा । फिर उठकर वह चक्र को छेदते हुए विष्णुजी को ताड़न करने लगा । विष्णुजी उस पर गदा का प्रहार करने लगे ।

* नवां अध्याय *

(तारकासुर की वीरता)

ब्रह्माजी बोले-नारदजी ! जब मैंने इस प्रकार तारका से युद्ध करते देखा तो कुमारजी के पास जाकर बोला कि हे देव ! मैंने तारक को वर दिया है, जिससे यह विष्णु आदि किसी के मारने से नहीं मरेगा और आप इससे युद्ध कीजिये । पार्वतीसुत ! यह आपके सिवा और किसी के मारे नहीं मर सकता । नारदजी ! मेरी इस वाणी को सुनकर शङ्कर तनय कुमार रथ से उतर पैदल होगये और एक परम कान्तिमान उल्का के समान अपनी शक्ति को उठा लिया तब देवताओं को मारने वाले तारक ने उन्हें देखकर कहा, क्या शत्रुओं पर प्रहार करने वाला वह कुमार यही है ? परन्तु मैं एक ही वीर इस कुमार को तथा सब वीरों सहित तुम्हारे सब लोकपालों और गणों को युद्ध में मार सकता हूँ । ऐसा कह वह महाबली-कुमार की ओर बक्रदृष्टि से देखता हुआ, अपनी एक परम अद्भुत शक्ति को धारण कर युद्ध करने चला । फिर देवताओं से कहा--अरे मूर्खो ! तुमने इस वक्त बालक को मेरे सामने क्यों कर दिया । क्या तुम सबों को और विशेषकर इस विष्णु को ऐसा करते लज्जा नहीं आती ? अब मैं जो इस बालक को मारूँगा तो इसका पाप तुम्हें लगेगा । किन्तु, बालक ! तुझे तो अपने प्राण बचाने चाहिये । जा, तू भाग जा, मैं तुझे नहीं मारूँगा । इन्द्र और विष्णु की इस निन्दा से तारक का पुण्य क्षीण हो गया । इसी समय इन्द्र ने अपना वज्र चला कर इस पर प्रहार कर दिया । वह पृथ्वी पर गिर पड़ा । परन्तु तत्क्षण रोष से उठ खड़ा हुआ और ऐरावत पर चढ़े इन्द्र को अपनी शक्ति के प्रहार से धराशायी बना दिया । इन्द्र के

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

गिर जाने से देवताओं में हाहाकार मच गया। तारक ने उस गिरे हुए इन्द्र को अपने पैर से भी प्रमाणित किया। इससे भी उसका धर्म क्षीण हुआ यह देख विष्णुजी ने उस पर अपना चक्र चला दिया विष्णु के चक्र ने उसे पीड़ित कर धराशायी बना दिया। परन्तु वह शीघ्र ही उठ पड़ा और जो अपनी प्रचण्ड शक्ति से विष्णुजी को मारा तो वे भी तत्काल ही मूर्छित हो पृथ्वी पर गिर पड़े और देवताओं में हाहाकार मच गया। विष्णुजी जब तक उठे कि बीरभद्र ने अपना प्रचण्ड शूल लेकर उसी प्रतापशाली दैत्य पर आक्रमण करदिया। उसके लगने से तारकासुर भूमि पर गिर पड़ा, किन्तु तत्क्षण उठकर उसने अपनी शक्ति चला वीरभद्र को भी धराशायी बना दिया। क्षण भर के लिए वीरभद्र को मूर्छा आ गई, देवता हाहाकार करने लगे। तारकासुर महाकाल के समान चमकने लगा।

* दसवां अध्याय *

(तारकासुर वध)

ब्रह्माजी बोले—अब शिवजीके चरणों का ध्यान कर कुमार अपने असंख्य गणों को साथ लिये हुये उस दुर्जन असुर को मारने के लिये उससे युद्ध करने लगे। देवताओं के जय जयकार की और ऋषियों ने अपनी श्रेष्ठ वाणी से उनकी स्तुति की। तारकासुर और कुमार का भयानक युद्ध हुआ। दोनों वीर हाथ में शक्ति लेकर परस्पर युद्ध करने लगे। दोनों महाबली एक दूसरे पर भीषण प्रहार करने लगे। मन्त्रों से दोनों परस्पर युद्ध करने लगे। एक दूसरे के साधक हुये एक ने दूसरे की बध की इच्छा से युद्ध किया। दोनों अङ्ग-प्रत्यङ्ग घायल हूये। सब देवता और गन्धर्व बैठकर संग्राम देखने और यह कहने लगे कि देखें किसकी जय होती है कार्तिकेय ने शीघ्र ही तारक की छाती पर अपनी शक्ति चला दी। इसके उत्तर में तारक ने भी कुमार पर अपनी शक्ति छोड़ी। उसके आघात से शङ्कर-पुत्र मूर्छित हो गये। परन्तु महर्षियों से प्रार्थित होते ही क्षणमात्र में ही

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

उठ बैठे और सिंह के समान गर्जन कर फिर उस पर अपनी शक्ति छोड़ी । दोनों ने शक्ति से एक दूसरे को आघात पहुँचाया । फिर श्री पार्वती जी और शङ्कर जी को मन ही मन प्रणाम करते हुये, तारक को मारने के लिये कुमार ने अपनी एक दूसरी प्रबल शक्ति उठा ली और शीघ्र ही चलाकर जो उस असुर की छाती में मारा तो वह शीघ्र ही विदीर्ण होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा । वह महाबली असुर सबके देखते २ नष्ट हो गया । कुमार ने फिर उस पर प्रहार न किया । फिर तो निर्भय हो सब देवताओं ने सब असुरों को मार भगाया बचे हुए असुर कुमार की शरण आये । दैत्यों की सेनाएं नष्ट हो गईं । देवता विजयी हुये । त्रिलोकी में महा आनन्द छागया । विजयी कुमार अपने गणों को साथ ले माता पार्वती के पास आये । पार्वतीजा स्नेह पूर्वक कुमार को अपनी गोद में बैठा प्यार करने लगीं देवताओं ने फूल बरसाकर उनका अभिबादन किया । गाने बजाने का अपूर्व उत्सव हुआ । देवताओं और गणों ने हाथ जोड़-कर उनकी स्तुति की । शङ्करजी प्रसन्न हो जगदम्बा पार्वतीजी को साथ ले अपने गणों सहित कैलाश पर चल दिये ।

* ग्यारहवां अध्याय *

(कुमार की प्रलंब विजय)

ब्रह्माजी बोले—नारदजी ! इसी समय बाणासुर नामक दत्य से पीड़ित क्रौंच नामक पर्वत ने कुमार के पास आकर उनकी बड़ी स्तुति की और कहा कि हे प्रभो ! मुझे बाणासुर बड़ा कष्ट दे रहा है आप मेरी रक्षा कीजिए । तब क्रौंच की स्तुति से प्रसन्न हो स्कन्धजी ने उसे सान्त्वना दी और शिवजी का ध्यान कर वहीं से बैठे-बैठे बाण के लिये जो एक शक्ति छोड़ी तो इसे भस्म करती हुई शीघ्र ही कुमार के पास लौट-आई । कुमार ने क्रौंच से कहा कि अब तुम निर्भय हो अपने घर जाओ, राजा क्रौंच कुमार का यह बचन सुन उनकी स्तुति कर अपने घर लौट गया । वहाँ जाकर उसने

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शङ्कर जी के प्रसन्नतार्थ उनके तीन लिंगों की स्थापना की प्रतिज्ञेश्वर, कपाश्वर और कुमारेश्वर। ये तीनों ही लिंग सिद्धिदायक हैं। फिर देवगुरु बृहस्पति को आगे कर सब देवताओं ने कैलाश में जाने की इच्छा की तो वहाँ प्रलम्बसुर नामक दैत्य उपद्रव करने लगा। उससे पीड़ित शेषजी का पुत्र कुमुद कुमार की शरण आया। गिरजा पुत्र की बड़ी स्तुति की। कुमारने प्रसन्न हो शक्ति चला प्रलम्ब का संहार कर दिया। वह असुर अपने अनुचरों सहित मारा गया। शेष-पुत्र कुमुद, शिव पुत्र कुमार को स्तुतिकर अपने घर पाताल आया।

* बारहवां अध्याय *

(स्वामी कार्तिक चरित्र)

ब्रह्माजी कहते हैं—अब विष्णु आदि सब देवता परमात्सव कर कुमार को कैलाश चलने की प्रेरणा देने लगे। कुमार एक परम दिव्य विमान पर बैठे अपने साथ देवताओं को बैठा शिवजी की जय बोलते हुये उनके पास आये। आनन्द ध्वनि करते हुये सब शिवजीके पर्वतपर पहुँचे। विष्णु आदि ने शिवजी को प्रणाम कर उनकी बड़ी स्तुति की। कुमार भी बड़ी नम्रता से विमान से उतर शिव—पार्वतीजी को प्रणाम किया। शिवजी ने आनन्द में आकर पुत्र का मुख चुम्बन किया। तारक—शत्रु महाप्रभु कुमार पर बड़ा स्नेह किया। पार्वती ने भी कुमार उठाकर गोद में बिठा लिया और शिर पर हाथ रखकर चुम्बन किया। शिव-पार्वती का उन पर बड़ा प्रेम हुआ शिवमन्दिर में बड़ा उत्सव मनाया गया। विष्णु आदि देवताओं ने शिवजी की बड़ी स्तुति की।

* तेरहवाँ अध्याय *

(गणेश चरित्र)

सूतजी कहते हैं—स्कन्द का यह चरित्र सुनकर नारदजी बहुत प्रसन्न हुये। उन्होंने ब्रह्माजी से पूछा—प्रजा नाथ! स्वामी कार्तिक

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

का यह अमृत मय चरित्र तो मैंने सुना अब कृपाकर श्री गणेशजी का चरित्र मुझे सुनाइये। तब नारदजी के इस प्रकार के बचनों को सुनकर ब्रह्माजी प्रसन्न शिवजी को स्मरण करते हुये बोले—नारदजी! कल्प भेद से गणेशजी के कई प्रकार के चरित्र हैं। उनमें से जब एक वार शनि की दृष्टि से उनका शिर छेदना हुआ और हाथी का शिर जुड़ा श्वेत कल्प में होने वाले गणेशजी की उत्पत्ति कहता हूं। जिसमें कृपालु शङ्कर ने ही उनका शिरोच्छेद किया था। जब विवाह कर शिवजी कैलाश पर चले गये तब कुछ समय व्यतीत होने पर गणपति का जन्म हुआ। एक समय की बात है। जया और विजया नामक पार्वती की दो सखियों ने परस्पर विचार कर पार्वतीजी से जाकर कहा कि शङ्कर जीके द्वारपर जो हमारे असंख्यों गण एवं द्वारपाल विराजमान रहते थे उन पर हमारा अधिकार होते हुए भी कुछ भी अधिकार नहीं। क्यों-कि हमारा मन उनसे नहीं मिलता। अतएव हे भगवती एक हमारा भी कोई गण होना चाहिये। आप उसकी रचना करिये। देवी पार्वती को सखियोंकी यह बात प्रिय लगी और उन्होंने उसकी रचनाकी इच्छाकी जब एक समय पार्वती स्नान कर रही थीं और नन्दी द्वार पर बैठा हुआ था तब उसके मना करने पर भी शिवजी हठात् मन्दिर में प्रवेश कर गये जिससे लज्जित हो जगदम्बिका तुन्रत उठ बैठीं। उन्हें अपनी सखी का वचन याद आया और परमेश्वरी ने अपने कोई एक अत्यन्त श्रेष्ठ सेवक की आवश्यकता प्रतीत की। उन्होंने सोचा, मेरा कोई एक ऐसा सेवक हो जो मेरी आज्ञा से कदापि विचलित न होवे। ऐसा विचार कर पार्वतीजी ने अपने शरीर के मैलसे सर्व लक्षण सम्पन्न एक पुरुष का निर्माण किया। वह शरीर के सब अवयवों से निर्दोष तो था ही किन्तु सुन्दर विशाल और सर्व शोभा सम्पन्न तथा महाबली एवं पराक्रमी था। पार्वतीजी ने उसे अनेक प्रकार के वस्त्रों से सजा अनेक प्रकार के अलंकारों से युक्त कर बड़ा आशीर्वाद दिया और कहा कि तुम्हीं एक मात्र मेरे पुत्र हो, तब पुत्र ने पार्वती से कहा

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

कि माता ! मेरे लिये क्या आज्ञा है ? पार्वतीजी ने कहा कि तुम मेरे द्वार के रक्षक रहो। मेरी आज्ञा के बिना कोई कैसा भी क्यों न हो, मेरे घर के भीतर न आने पावे। कितना भी कोई हठ क्यों न करे ऐसा कह कर पार्वतीजी ने गणेशजी के हाथ में एक लकड़ी देदी और प्रेम से मुख चूमकर द्वारपर बिठा दिया। वह लकड़ी ले गणेशजी माता के हितार्थ द्वार पर जा बैठे। तब पार्वतीजी फिर जाकर स्नानकरने लगीं इसी समय शिवजी फिर द्वार पर आगये और जब अन्दर जाने लगे तब शिवजी को न जानकर गणेश्वर ने कहा मेरी माता की आज्ञा के बिना आप अन्दर नहीं जा सकते। माता इस समय स्नान कर रही हैं। तुम कहाँ जाते हो ? यहाँ से चले जाओ। यह कह कर गणेशजी ने लकड़ी ले उन्हें रोक दिया। शिवजी ने कहा, मूर्ख तू किसको रोकता है ? तू नहीं जानता कि मैं शिव हूँ। यह सुनते ही गणेश ने महेश्वर पर लकड़ी से प्रहार कर दिया। इस पर महेश्वर ने क्रुद्ध होकर कहा—बालक ! तू मूर्ख है। क्या नहीं जानता कि मैं गिरजा-पति हूँ ? मैं अपने ही घर में जाता हूँ। ऐसा कह जब गणेश जी की परवाह न कर शिवजी फिर भीतर जाने लगे तो गणेशजी ने फिर लकड़ी का प्रहार कर दिया। इस पर शिवजी ने क्रुद्ध हो अपने गणों को आज्ञा देदी कि इसको रोको। ऐसा कह बाहर ही स्थिर रहे।

* चौदहवाँ अध्याय *

(शिवजी के गणों से गणेश जी का विवाद)

ब्रह्माजी कहते हैं कि, वे सब गण शिवजी की आज्ञा से वहाँ जाकर उस द्वारपाल से उसका परिचय पूछने और कहने लगे कि यदि तू जीना चाहता है तो यहाँ से दूर हो जा। इस पर गणेशजी क्रुद्ध हो हाथ में दण्ड लिये उन गणों से निर्भय होकर बोले कि तुम सब यहां से दूर चले जाओ। मेरा बिरोध करना अच्छा नहीं है

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

गणेशजी के यह बचन सुनकर शिवजी के गण हँसे और पुनः क्रुद्ध होकर बोले—हम शिवजी के गण हैं तुमको हटाने के लिये ही आये हैं। अब तक तुमको एक गण मानकर ही छोड़ दिया है, नहीं तो मार दिये होते। अतः क्यों मरना चाहते हो, भाग जाओ। यह सुनकर निर्भीक पार्वती-पुत्र ने उन्हें घुड़क दिया और वह द्वार से न हटे। इस पर शिवजी के गण लौट गये। और जाकर सब बातें कह सुनाईं उसे सुन शिवजी अपने गणों को डाँटने लगे और कहा कि, मैं कुछ नहीं जानता जैसे भी हो—जाकर उस गण को हटाओ। अब वे गण फिर पार्वती-मन्दिर पर उस द्वारपाल गणेश के पास आये। हटने को कहा। गणेश जी ने कहा मैं पार्वती का पुत्र हूँ, कदापि नहीं हट सकता। इतने में द्वारपर हो—हल्ला सुनकर पार्वती ने अपनी एक सखी को भेजा कि देख वहाँ क्या हो रहा है? सखी देखकर हर्षित हो सब वृत्तान्त पार्वती से कहा। साथ ही यह भी कहा कि, अच्छा हुआ जो नहीं आने दिया अन्यथा शिवजी तो सर्वदा बिना कहे-सुने अन्दर घुस आया करते हैं। देवि! तुमको अपना मान नहीं छोड़ना चाहिये। पार्वती ने कहा-ठीक है। परन्तु यह तो देखो, कि अभी क्षण भर के लिये भी मेरा पुत्र द्वार पर स्थित न हुआ कि उनके गण आकर उसे छेड़ने लगे फिर में विनय और नम्रता को क्यों अपनाऊँ? जो होगा देखा जायगा। गणेश जी निर्भय हो उन गणों से बोले—मैं तो पार्वती पुत्र हूं और तुम सब शिव के गण हो। समता प्राप्त दोनों अपना कर्त्तव्य पालन करें। क्या एक तुम्हीं द्वारपाल हो, मैं नहीं? यदि तुम सब यहाँ स्थिर हो तो मैं भी यहाँ स्थित रहूँगा। इस समय मैं पार्वती जी की आज्ञा से स्थित हो उनकी आज्ञा का पालन करूँगा। तुम भी शिवजी की आज्ञा का पालन करो यह सुन शिवजी के गण हठपूर्वक फिर मन्दिर में नहीं गये और शिवजी के पास लौटकर सब वृत्तान्तका निवेदन किया। वह सुन शिवजी लौकिकी

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

गति का आश्रय ले अपने गणों से बोले--वह अकेला गण तुम सब के आगे क्या पराक्रम दिखलायेगा ? फिर पति के आगे स्त्री क्या हठ करती है । निदान मेरी आज्ञा से तुम लोग युद्ध करो जो होगा सो देखा जायगा ।

* पन्द्रहवाँ अध्याय *

(शिवगणों से गणेश का युद्ध वर्णन)

ब्रह्माजी बोले-अब आज्ञा पा वे सब गण निर्भय हो शिवजी के मन्दिर पर आये । इधर गणेश जी भी सजे हुये तैयार थे । शिवगणों को देखकर गणेशजी ने उनसे कहा कि, मैं अकेला शिवा की आज्ञा का पालन करूँगा । आज तुम सब मुझ अकेले पार्वती पुत्र का बल देखो यह सुन शिवजी के गण अनेक प्रकार के आयुध ले उन पर टूट पड़े । अकेले गणेशजी शिवजीके असंख्य गणोंसे युद्ध करने लगे । परन्तु शिवजी का कोई भी गण उन्हें युद्ध में परास्त न कर सका और उन अकेले ने ही उन सबों को मारकर भगा दिया । गणेशजी लौटकर फिर द्वार पर आ खड़े हुये । नारदजी की प्रेरणा से विष्णु आदि सभी देवता शिवजी के पास गये । स्तुति कर युद्ध का वृत्तान्त पूछा । शिव जी ने कहा-मेरे मन्दिर के द्वार पर एक बलवान् बालक हाथ में लकड़ी लिये उपस्थित है, जो घर में जाता है उसे जाने नहीं देता है । यदि ब्रह्मा चाहें तो वहाँ जाकर इस क्लेश को दूर करें । वह सुन शिवजी की माया से मोहित मैं ब्रह्मा कुछ ऋषियों को साथ ले उस बालक के पास गया । मुझे आते देख बालक गणेश क्रोधवश दौड़कर मेरी दाढ़ी मूँछ नोंचने लगे । तब मैंने कहा—देव ! क्षमा करो, क्षमा करो । मैं युद्ध के लिए नहीं आया हूं । मैं ब्रह्मा हूं ! मेरे ऊपर कृपा करो । मैं ऐसा कह ही रहा था कि बालक गणेश ने परिघ उठा लिया मैं वहाँ से भाग चला । उसने मेरे सब साथियों को परिघ से ताड़ित किया । फिर तो मैंने शिवजी के पास आकर सब समाचार कह सुनाया । उसे सुन लीला विशारद शङ्कर को बड़ा क्रोध हुआ । उन्होंने इन्द्रादिक देव-

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

ताओं और अपने भूत बैताल आदि गणों को गणेशजी से युद्ध करने की आज्ञा देदी परन्तु कार्तिकेय आदि वीरों सहित शिवजी के सब गणों का प्रयास व्यर्थ हो गया। अकेले गणेश ने मार-मार कर सबके छक्के छुड़ा दिये एक ही बालक ने शिवजी की समस्त सेना को विचलित कर दिया। सभी शिवजी के पास गये। तब उनसे सब वृत्तान्त सुन परम कुपित रुद्र स्वयं ही वहाँ गये और चक्रधारी विष्णुकी सारी सेना भी उनके पीछे चली। मार्ग में नारदजी ने मिलकर शिवजी से यह कह दिया कि जैसे भी हो शिव गणों की मर्यादा रखिये। ऐसा कह वे वहीं से अन्तर्ध्यान हो गये।

* सोलहवां अध्याय *

(गणेशजी का शिरोच्छेदन)

ब्रह्माजी बोले—नारद! अब तुम्हारे वचनों का ध्यानकर शिवजी उस बालक से युद्ध करने आये। एक एक पराक्रमी देवता और विष्णुजी तक उससे युद्ध करने लगे एक से एक भयानकर अस्त्र चलाने लगे। शिवजी भी अपनी सेना के साथ चिरकाल तक उस बालक से युद्ध करते रहे। बालक ने विकराल रूप धारण करा शिव आश्चर्य करने लगे। विष्णुजी ने कहा- इसे मोहित कर परास्त करूँगा। क्योंकि यह तमोगुण बाला बालक बड़ाही दुर्गम है गणेशजी ने उन पर परिघ का प्रहार कर दिया यह देखकर शिवजी को और भी क्रोध आया। वह हाथ में त्रिशूल उठा उस बालक को मारने चले। तब शिवजी को इस रूप में अपनी ओर आते देख गणेशजी ने मन ही मन अपनी माता का ध्यान किया और अपनी शक्ति उठा महादेवजी के हाथों में प्रहार कर किया। उस समय महावीर गणेश की शक्ति महादेवजी से बढ़ती हुई थी। उस शक्ति के लगने से परमात्मा शिव हाथ से उनका धनुष गिर पड़ा। तब धनुष को गिरते देख शिवने पिनाक उठा लिया परन्तु गणेश्वर ने एक परिघ मारकर उनका पिनाक भी पृथ्वीपर गिरा दिया। फिर हाथमें त्रिशूल उठा गणेशजी ने शिवजी

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

के पाँचों हाथों में मारकर उन्हें व्यर्थ कर दिया। शिवजी ने कहा-वाह जब मेरी यह दशा है तो मेरे गणों की तो क्या दशा न होगी? फिर तो इसी समय शक्ति के दिये बल से युक्त वीर गणेशजी ने परिघ उठा शिवजी के सब गणों और सब देतवाओं को ताड़ित कर दिया। परिघ से व्याकुल हुए वे देवता और गण दूर भाग गये। यह देख शिवजी को बड़ा क्रोध आया और उन्होंने त्रिशूल से बालक का शिर काट दिया। देवताओं और गणों की सेना निश्चन्ति हो गई। हे नारदजी! उसी समय तुमने जाकर यह बात देवी से कहदी और यह भी कह दिया कि, तुम अपना मान किसी प्रकार भी न त्यागना ऐसा कह कर तुम अन्तर्ध्यान हो गये।

* सत्रहवां अध्याय *

(गणेश—जीवन)

नारदजी बोले—जग पालक उस वृत्तान्त को सुनकर महादेवी ने क्या किया? ब्रह्माजी बोले-मुनिवर! गणेश जी के मरजाने पर शिवजी के गण पटह बजाकर महोत्सव करने लगे। पार्वती को बड़ा क्रोध आया। वह कहती-हा मैं क्या करूँ, कहाँ जाऊँ? हा, मुझे बड़ा दुःख प्राप्त हुआ। सब देवताओं और गणों ने मेरे पुत्र का संहार कर दिया मैं भी सबका नाश तथा प्रलय करूँगी इस प्रकार दुखी होकर पार्वती ने सौ हजार शक्तियों की रचना कर डाली। तब वे निर्मित शक्तियाँ जगदम्बा शिवा को प्रणाम कर कहने लगीं कि, हे माता! क्या आज्ञा होती है? देवी ने कहा—तुम लोग देव सेना में जाकर प्रलय कर डालो। पार्वती की आज्ञा से वह सब शक्तियाँ क्रोध में तत्पर हो सब देवताओं का भक्षण करने लगी। जहाँ देखो वहाँ शक्तियाँ ही शक्तियाँ दिखाई देती थीं। वे जहाँ देवताओं को अपने हाथों से पकड़-पकड़ कर मुख में डाल लेती थीं। उनके इस कर्म को देख ब्रह्मा, महेश, और इन्द्रादि सभी देवताओं को अपने जीवन की

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

आशा न रही और वे कहने लगे कि क्या देवी अकाल ही में प्रलय कर डालेगी ? तब वर्तमान स्थित में क्या किया जाय, इस पर सबने एक स्वर से बिचार कर निश्चय किया कि यदि गिरजा देवी प्रसन्न हो जांय तो सब कार्य बन जायगा। लौकिकी गति दिखाते हुये शङ्करजी भी बड़े दुःख को प्राप्त हो सबको मोहने लगे। परन्तु शक्तियों के आतङ्क से देवता निष्प्राण हो रहे थे, क्रोधमयी शिवा के मन्दिर में जानेको उनका साहस ही न होता था। पार्वती का महा प्रकाशित तेज सभी को सन्तप्त कर रहा था। सारे देवता भय-भीत हो दूर ही दूर स्थित थे। उसी समय नारदजी वहाँ आये और ब्रह्मा, बिष्णु और शङ्कर को प्रणाम कर शान्ति स्थापना का विचार करने लगे। सब देवताओं ने कहा—नारद ! तुम्हें अग्रणी बना शिव के पास चलने का प्रस्ताव स्वीकार किया। सबने शिवा के पास पहुँच कर अनेकों स्तोत्रों से उनकी स्तुति की उसे सुन वह पर देवी कुछ न बोलीं और क्रोध दृष्टि से उनकी ओर देखती रही। तब ऋषियों ने कहा कि, देवि ! क्षमा करो। परमेश्वरी ! अब सबका अपराध क्षमा कीजिये। जब इस प्रकार कहते हुये सब देवता बड़ी दीनता और ब्याकुलता से हाथ जोड़े हुए उन चण्डिका के समक्ष खड़े हो गये तब वह भगवती करुणाकर उन देवताओं से इस प्रकार बोली—"यदि मेरा पुत्र जी जाय और तुम सबके मध्य में पूज्यनीय हो जाय तो यह संहार नहीं होगा; भगवती के ऐसा कहने पर सब देवताओं ने शिवजी से इसके लिये प्रार्थना की। शिवजी ने कहा, ठीक है। हम लोगों को वही करना चाहिए जिसमें सब लोगों का मङ्गल होवे। अच्छा तो अब तुम सब लोग यहाँ से उत्तर दिशा में चले जाओ और जो पहले मिले उसका शिर काटकर गणेश जी के शरीरमें जोड़ दो तो यह जी जावेंगे यह सुन सब देवता गणेशजी को लेकर उत्तर दिशाकी ओर गये तो प्रथम उनको एक दाँतवाला हाथी मिला। उन्होंने उसका शिर काटकर गणेशजीके शरीर से जोड़ दिया।

CC-0. A.S. Sinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

फिर उन्हें अच्छी तरह धोकर उनकी पूजा की तथा विष्णुजी से कहाकि अब जैसा उचित हो, वह सब कृत्य आप कीजिये। विष्णुजी ने वेदमंत्रों के योग से अभिमन्त्रितकर शिरको स्मरण कर गणेशजी पर जल छिड़का, जल के छिड़कते ही वह बालक शिवजी की इच्छा से जाग उठा। उस गजमुख, रक्तवर्ण सुन्दर कान्तिमान बालक की प्रसन्न वदन एवं सुन्दर आकृतिकी शोभा बड़ी ही देदीप्यमान थी। शिव-पुत्रको जीवित हुआ देख सबका दुःख दूर होगया। पार्वती देवी अपने पुत्र को जीवित हुआ देख प्रसन्न हो गईं।

* अठारहवां अध्याय *

(गणेश-गौरव)

नारद जी बोले–प्रजेश्वर! गिरजा पुत्र के जीवित होने पर क्या हुआ, ब्रह्माजी बोले–मुनीश्वर! जब देवी ने देखा कि मेरा पुत्र जीवित हो गया तो वह बहुत प्रसन्न हुईं और दोनों भुजाओं से पकड़ कर उसका आलिंगन करने लगीं। अनेकों प्रकार के भूषण और वस्त्र पहनाये। वर दिया कहा कि—हे पुत्र! तुम्हारे मस्तक पर जो यह सिन्दूरी रङ्ग की आभी है इस कारण मनुष्य पुष्प चन्दनादि सहित तुम्हारी सिन्दूर से पूजा करेंगे। तुमको सब सिद्धियाँ प्राप्त होंगी और तुम्हारी पूजा में निस्सन्देह सारे विघ्न दूर हो जायेंगे। शिवजीने अपने कर-कमलों को उसके शिर पर फेर कर कहा यह मेरा दूसरा पुत्र है। गणेशजी ने उठकर शिवजी को प्रणाम किया तथा सब देवताओं को प्रणाम करते हुए उनसे अपने अपराध की क्षमा माँगी। त्रिदेवों ने वर दिया। सबको पूज्य और गणनाथ कहा। तबसे गणेशजी विघ्नहर्त्ता और सब काम फलदायक हुए। साथ ही त्रिदेवों ने कहा कि, पहले मनुष्य इनकी पूजा करेंगे, फिर हमारी तदन्तर पहले शिवजी ने सभी माङ्गलिक वस्तुएं मङ्गाकर गणेशजी की पूजा की, फिर विष्णुजी ने, फिर ब्रह्मा ने, फिर पार्वती ने उसके पीछे अन्य

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

सभी देवताओं ने बड़े आदर से इनकी पूजा की। फिर सब देवताओंने एक स्वरसे गणेशजीको सर्वाध्यक्ष यह कह अनेकों वर दिये। मुनीश्वर! उस समय पार्वती को जो प्रसन्नता हुई वह मेरे चारों मुखों से भी नहीं कही जाती है। सब देवता शिव-पार्वती और गणेशजी की बार-म्बार प्रशंसा करते हुये अपने स्थान को गये। पार्वती कोप हीन हो गईं और शिवजी पूर्ववत् उनके समीप जा बैठे। मैं और विष्णु जी भी शङ्कर से आज्ञा ले, शिवा-शिव की भक्ति सेवन करते हुए अपने लोक को गये।

* उन्नीसवां अध्याय *

(गणेश विवाह)

नारदजी बोले--तात! यह हमने परम दिव्य गणेशजी का जन्म-चरित्र सुना। हे सुरेश्वर! इसके पश्चात् फिर क्याहुआ! ब्रह्माजी बोले--मुनि श्रेष्ठ! गणेशजी माता-पिता के पालन करने से दिन-दिन बढ़ने और बड़ी प्रीति से सर्वदा खेल-कूद करने लगे। कुमार भी साथ ही थे, दोनों पुत्र भक्ति पूर्वक माता-पिता की सेवा करते हुए परस्पर प्रेम वृद्धि को प्राप्त किया। एक समय जब शिव-पार्वती प्रेम पूर्वक एकान्त में बैठे हुये यह विचार कर रहे थे कि अब दोनों पुत्रों का शुभ-विवाह कर दिया जावे तब माता-पिता की इस इच्छा को जानकर दोनों कुमारों ने एक साथ ही विवाह की इच्छा प्रकट करते हुये यह कहा कि पहले मैं विवाह करूँगा, मैं पहले विवाह करूँगा। ऐसा कहकर दोनों परस्पर विवाद करने लगे। जगतवंद्य शङ्कर पार्वती लोकाचार की दृष्टि से परम आश्चर्यित हुये उन्होंने सोचा, किस प्रकार दोनों का विवाह किया जावे? यह विचार दोनों ने एक अद्भुत युक्ति निकाली। एक समय शिवा-शिव ने उन्हें बुलाकर कहा कि देखो हमने तुम दोनोंके सुख के लिये एक नियम किया है। तुमदोनों ही पुत्र हमारे लिये एक समान हो। इस कारण तुम्हारे लिए हमने यह प्रतिज्ञा की है कि, जो पहिले समस्त पृथ्वी की परिक्रमा करके हमारे पास

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

आवेगा उसका ही बिवाह पहले किया जावेगा। तब माता-पिता के यह बचन सुनकर महाबली कार्तिकेयजी तत्काल पृथ्वी-प्रदक्षिणा के लिये चल पड़े और बुद्धिमान गणेशजी अब तब वहाँ स्थिर रहे और बार-बार बुद्धि से विचार करने लगे कि क्या करूँ कहा जाऊँ ? यह विचार कर गणेशजी अपने घरमें जा स्नान ध्यान कर माता-पिता से बोलेकि, आप दोनों सिंहासन पर बैठिये मैं पूजा करूँगा पार्वती-शङ्कर गणेश की पूजा ग्रहण करने बैठे। गणेशजी ने उन दोनों की पूजा कर परि-क्रमा की। फिर हाथ जोड़े प्रेम पूर्वक माता-पिता की स्तुति कर बोले आप मेरा विवाह कर दें। शिवा-शिव ने कहा—क्या तुम पृथ्वी की परि-क्रमा कर आये ? कुमार गये हैं। जाओ तुम भी शीघ्र ही परिक्रमा कर आओ। गणेशजी माता-पिता के बचन सुनकर किंचित क्रोध से बोले—माताजी पिताजी ! मेरी यह बात सुनिये कि जब मैंने आपकी सात बार परिक्रमा करली तब फिर आप यह कैसे कहते हैं कि पृथ्वीकी परिक्रमा कर आओ शिवा-शिव ने कहा—हे पुत्र ! तुमने इस महान पृथ्वी की कब प्रदक्षिणा की है ? गणेशजी ने कहा—जब मैंने आप दोनों की पूजा और परिक्रमार करली तो समस्त पृथ्वी की परिक्रमा हो गई। यदि यह वेद शास्त्र सम्मत हो तो आप भी मानिये, अन्यथा नहीं। वेद-शास्त्र जो कहते हैं वही आपको भी करना चाहिए अन्यथा शास्त्र असत्य हो जायगा। अतएव अब आपको शीघ्र ही मेरा विवाह कर देना चाहिये। ऐसा कह बुद्धिमानों में श्रेष्ठ महाज्ञानी पार्वती-पुत्र चुप होगये। तब विश्वके माता-पिता पार्वती-शङ्कर गणेशजी के ये बचन सुनकर बड़े ही आश्चर्यित हुये और पुत्र का विलक्षण बुद्धि की प्रशंसा कर बोले—हे पुत्र ! तुम्हारा कहना यथार्थ है। तुमने जो किया है उसको कोई भी नहीं कर सकता तुम्हारी बात हम दोनों ने मान ली इसको आश्वासन देकर शिव पार्वती ने गणेश विवाह की इच्छा की।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* बीसवां अध्याय *

(गणेश विवाह)

ब्रह्माजी बोले-इसी समय विश्व रूप प्रजापति ने शिवाशिवके पास आकर अपनी सिद्धि और बुद्धि नामक दोनों कन्यायों के विवाह की बात की शिबाशिव ने उनका प्रस्ताव स्वीकार किया और उनके साथ गणेश का विवाह निश्चत् कर लिया ? पार्वती और शंकर के विवाह की तरह ही सब देवता इस विवाह में आये । विश्वकर्मा ने गणेशजी का विवाह किया । सब देवता और ऋषियों ने बड़ी प्रसन्नता व्यक्त की गणेशजी भी बहुत प्रसन्न हुये । कितने ही समय के पश्चात् गणेशजी की दोनों स्त्रियों से दो सुन्दर पुत्र उत्पन्न हुये । सिद्धि से क्षेम और बुद्धि से लाभ नामक पुत्र उत्पन्न हुआ । इस प्रकार जब तक गणेशजी ने अचिन्त्य सुख भोग लिया तब तक पृथ्वी प्रदक्षिणा कर कार्तिकेयजी भी आ गये । परन्तु जब वह घर पहुँचने वाले ही थे कि उसके पहले ही उनकी नारदजी से भेंट हो गई । उन्होंने उनसे यह कह दिया कि अब घर क्य करने जाते हो ? तुम्हारे माता-पिता ने जैसा किया है वैसा कोई भी इस लोक में नहीं कर सकता । तुमको तो पृथ्वी प्रदक्षिणा के लिये भेज दिया और इधर गणेश जी का का परम शोभायमान विवाह करदिया । प्रजापति विश्व रूपकी दो सुन्दर कन्यायें उनकी दो स्त्री है । उनके पुत्र भी हो चुके हैं । इस प्रकार उन्होंने तुमको छला है मेरी समझ से तुन्हारे माता-पिता ने तुम्हारे साथ यह अच्छा नहीं किया । हे नारद ! तुमसे ऐसी बात सुनते ही कुमार के क्रोधकी सीमा न रही । किसी प्रकार वे घर तक तो पहुँचे । किन्तु माता पिता को प्रणाम कर फौरन उनके मना करने पर भी क्रौंच पर्वत पर तप करने चले गये । तब शिव पार्वती ने बहुत पूछा तो कह किया कि आप दोनों ने मेरे साथ कपट का व्यवहार किया है । कुमार के विरह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

Digitized by Gangotri Siddhanta Gyaan Kosha

में पार्वतीजी को बहुत दुःख हुआ । वे दीनता पूर्वक शङ्करजी से कह सुनकर उन्हें साथ ले क्रौंच पर्वत पर गयीं । तब पार्वती और शङ्कर को वहाँ आते देख कुमार विरक्त हो वहाँ से अन्यत्र चले गये। शङ्कर—पार्वती ने वहाँ जाकर कुमार से भेंट की तब से उन दोनों स्थानों में कार्तिकेय कुमार सहित शङ्कर-पार्वती का बड़ा महात्म्य अब तक माननीय है ।

* कुमार खण्ड समाप्त *

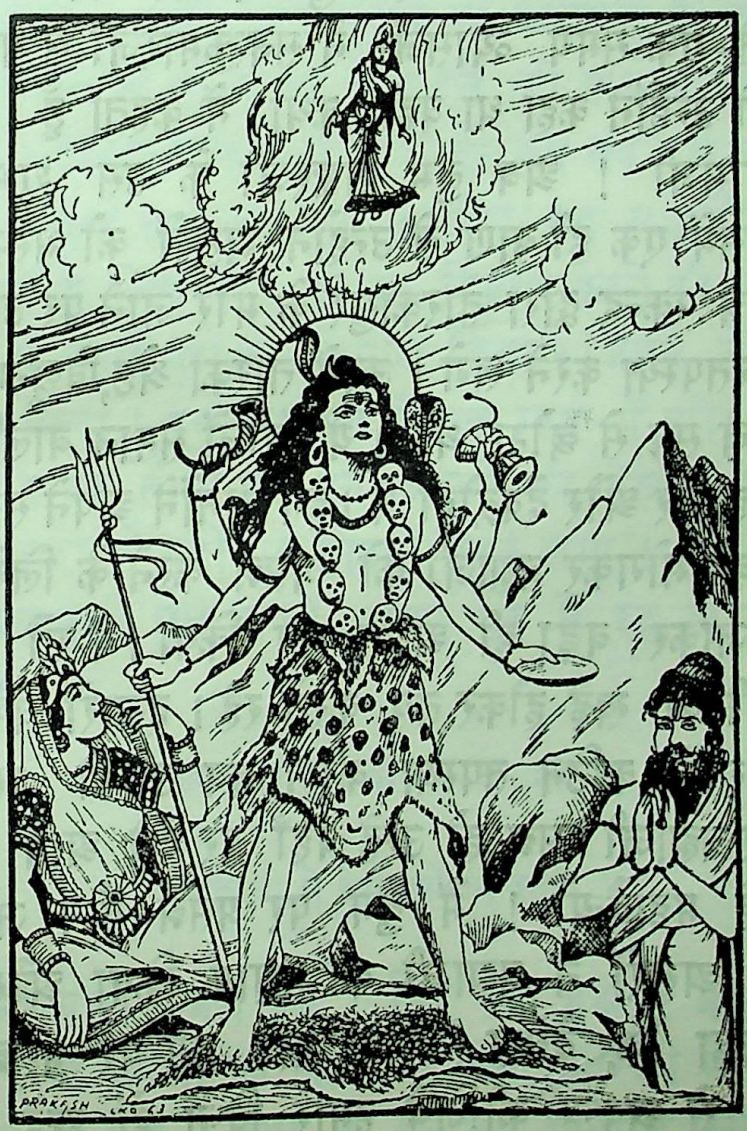

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* ॐ नम, शिवाय *

*श्रीशिव महापुराण भाषा

* रुद्र संहिता-युद्ध खण्ड *

* पहला अध्याय *

(त्रिपुरासुर बधवर्णन)

नारदजी बोले—प्रभो ! अब शिवजी का वह चरित्र सुनाने की कृपा कीजिये कि जिसमें उन्होंने दुष्ट दानवों का बध किया है। ब्रह्माजी बोले–एक समय व्यासजी ने सनत्कुमारजी से यही बात पूछी थी। तब जो उन्होंने कहा था वही कथा में कहता हूँ। सनत्कुमारजी बोले–हे व्यासजी ! अब तुम शङ्करजी के उस शुभ चरित्र को सुनो कि जिसमें एक ही बाण से उन्होंने असुरों को भस्म कर दिया। था। शिव-पुत्र स्कन्द द्वारा तारकासुर के मारे जाने पर उसके तीन दैत्य पुत्र पृथ्वी परतपस्या करने लगे। उनमें तारका श्रेष्ठ,विद्युन्माली माझिल और कमलाक्ष सब से छोटा था। ये तीनों समान बाली, जितेन्द्रिय, दृढ़ चित्त, महावीर और देवद्रोही थे। इन तीनोंने अपने समस्त मनोरथों और भोगों को भोगकर ब्रह्माजी को प्रसन्न करने के लिये सुमेरु पर्वत की गुफा में जाकर बड़ा ही अद्भुत तप किया। वे सौ वर्ष तक एक पाँव से पृथ्वी पर खड़े होकर तप करते रहे। हजारों वर्ष तक उन्होंने विविध प्रकार से कठिन तपस्या की। तब उनको इस प्रकार तप करते देखकर ब्रह्माजी प्रसन्न हो उन्हें वहाँ वर देने आये और ब्रह्माजी ने कहा—हे महादैत्यो ! मैं तुम पर प्रसन्न हूँ। जो इच्छा हो वर माँगों। असुरों ने ब्रह्माजी को प्रणाम किया और शनैः शनैः विचार कर कहा कि, देवेश ! यदि आप हम पर प्रसन्न हैं तो हमें सब प्राणियों से अवध्य कीजिये हमारे विघ्न हों इन्हें दूर कीजिए

CC-0. ASI Srinagar Circle. Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

हम सब अजर अमर रहें और यदि हम चाहें तो त्रिलोकी का भी बध कर सकें। सनत्कुमारजी कहते हैं कि जब उन तपस्वियों ने इस प्रकार कहा तब उनके बचनों को सुनकर ब्रह्माजी अपने प्रभु शङ्करजी का स्मरण कर बोले--हे असुरो ! अमरत्व त्याग और जो चाहो माँगो और इस कार्य से निवृत्त होओ। तब ध्यानावस्थित हो उन्होंने एक मुहूर्त तक विचार कर पितामह से कहा कि हमारे पास ऐसा कोई दृढ़ दुर्ग नहीं है जिसमें शत्रु न प्रवेश कर सके आप हमें ऐसा कोई सुरक्षित तीन पुर निर्माण करा दीजिये। इनमें धन सम्पत्ति के सुख दायक सभी साधनों के अतिरिक्त अस्त्र-शस्त्र की भी सभी सामग्रियाँ हों और जो अजेय हो, देव-दानव कोई भी उसे तोड़ न सकें। यह कहकर तारकाक्ष ने अपने लिये सुवर्ण का कमलाक्ष ने चाँदी का और विद्युन्मालीने लोहे का पुरनिर्माण करा देने की प्रार्थना की। ब्रह्माजी ने कहा, तथास्तु। परन्तु शिवजी के हाथों ही तुम सब मारे जाओगे और अन्य कोई भी तुम्हें न मार सकेगा। ऐसा कह ब्रह्माजी ने मय को बुला उन तीनों के लिए तीन पुर का निर्माण करने की आज्ञा दे दी। मैंने परिश्रम से तीनों पुरों का निर्माण किया। जिसने जैसा माँगा था; उसे वैसा पुर मिला। एक आकाश में एक स्वर्ग में और एक पृथ्वी में स्थित था। मय वह तीनों पुर उन असुरों को देखकर स्वयं भी उन के हित की इच्छा से वहीं पर निवास करने लगा। इस प्रकार तारक के वे तीनों महाबली पुत्र अपने अपने पुर में रह आनन्द के भोग भोगने लगे।

* दूसरा अध्याय *

(शंकरजी से देवताओं की स्तुति)

व्यासजी बोले--ब्रह्म पुत्र ! फिर क्या हुआ ? ब्रह्माजी बोले—शिवजी के चरण कमलों का ध्यान कर सनत्कुमारजी ने कहा-तब इस प्रकार त्रिपुरों के तेज से दग्ध हो इन्द्रादि देवता दुःखित हो ब्रह्माजी

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

के पास गये। अपना सब कष्ट कहा। उसके बधकी प्रार्थना की। ब्रह्माजी ने इन्हें संतोष देकर शिवजी के पास जाने की आज्ञा दी ? तब दुःखित देवता शङ्करजी के पास गये। नमस्कार कर बड़ी स्तुति की। देवताओं ने कहा–हिरण्यगर्भ ! आपको नमस्कार है। प्राणियों के संहारकर्त्ता आपकों नमस्कार है। सनत्कुमारजी कहते हैं जब अनेक प्रकार त्रिशूलधारी महादेवजी की इन्द्रादि देवताओं ने स्तुति की और कहा कि हे महादेवजी ! तारक के पुत्रों ने हम सब इन्द्रादि को पराजित कर दिया है। त्रिलोकको अपने वशमें करके हमको नष्ट कर सारे संसार को उजाड़ दिया है। हे शङ्करजी जब तक त्रिपुरों का नाश नहीं तब तक आप शीघ्र ही किसी नीति का विधान कीजिये। तब इन्द्रादि देवताओं के इन वचनों को सुनकर शिवजी ने कहा—

* तीसरा अध्याय *

(भूतों और त्रिपुरों का धर्म)

शिवजी बोले—देवताओ ! मैं तुम्हारे कष्टों को जान रहा हूं। परन्तु क्या करूँ ? त्रिपुरों के स्वामी अभी तक पुण्यात्मा हैं, इस कारण वे अवध्य हैं। जब तक वे मेरे भक्त हैं, मैं उन्हें मार नहीं सकता। तुम लोग विष्णुजी के पास जाओ और वे जैसा कहें वैसा करो। तब यह सुनकर इन्द्रादि देवताओं ने पहले ब्रह्माजी से कहा। ब्रह्माजी अग्रणी बन उन्हें विष्णुजी के पास ले गये। विष्णुजी के पास पहुँच देवताओं को बड़ी प्रसन्नता हुई। उन्होंने अपने दुःख का समस्त कारण शीघ्र ही विष्णु भगवान् को निवेदन किया। विष्णुजी ने सब बातें सुन कर कहा–यह सत्य है, जहाँ पर सनातन धर्म हो, वहाँ दुख नहीं होना चाहिये। देवताओं ने कहा–तब हम क्या करें ? हमारा दुःख कैसे दूर होगा ? जैसे भी हो शीघ्र इनके बध का उपाय कीजिये। अन्यथा सब देवता अकाल ही कालकवलित हो जायेंगे। तब देवताओं की इस प्रार्थना को सुनकर नारायण भगवान् ने अपने मन में यह विचार किया

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

कि, मैं देवताओं का कार्य कैसे करूं ? क्योंकि तारक के पुत्र तो शिव जी के भक्त हैं। समर्थ विष्णुजी ने यज्ञों का स्मरण किया। उनके स्मरण करते ही यज्ञगण वहाँ तत्क्षण आ उपस्थित हुए। उन्होंने उन पुराण पुरषोत्तम यज्ञपति विष्णु को नमस्कार कर प्रसन्नता प्राप्त की। तब उन्हें दिखाकर विष्णुजी ने इन्द्रादि से कहा कि, हे देवताओ ! तीनों जगत की विभूती के लिये यज्ञ करो। यज्ञों से ही त्रिपुरों का विनाश होगा। सनत्कुमारजी कहते हैं, अच्युत भगवान् के यह वचन सुनकर उन्हें प्रेम से प्रणाम कर देवगण उन यज्ञेश का स्तवन करने लगे। सविधि चयन कर यज्ञका विधान किया। फिर तो उस यज्ञ कुण्ड से एक महान् शरीर वाला, शूल शक्तिधारी हजारों भूतों का समुदाय निकल पड़ा। तब अनेक प्रहारों से युक्त, नाना वेश धारी, कालाग्नि रुद्र के समान तथा काल सूर्य के समान प्रकट हुए उन भूतोंसे विष्णुजी ने कहा—भूतगणो ! देवकार्य के लिये तुम लोग मेरी आज्ञा से शीघ्र ही त्रिपुर नगर को जाकर उन्हें नष्ट करो। विष्णुजी के इन वाक्यों को सुनकर वे भूतगण दैत्यों के त्रिपुरनगर को गये। परन्तु ज्यों ही उनके पुर में प्रविष्ट हुए कि त्योंही त्रिपुरों के तेज से भस्म हो गये। जो बचे विष्णुजी के पास भाग आये उनका संहार सुन विष्णुजी चिन्तित हो गये, उन्होंने देखा कि इन्द्रादि सभी देवता सन्तप्त हैं। वे (विष्णुजी) दैत्यों की जीत की चिंता से व्याप्त होगये। उन्होंने कहा—कुछ भी हो, धर्मात्माओं का नाश नहीं हो सकता। वेद-धर्म और शिव-पूजन ये दोनों नित्य-कर्म जब तकहैं तब तक त्रिपुरों का नाश नहीं हो सकता। यह विचार कर विष्णुजी ने उन तीनों असुरोंके वेद-धर्म और शिवार्चन का विनाश करना ही उचित समझा। फिर उन्होंने देवताओं से कहा कि अब आप लोग अपने घर जाइये, मैं यथासाध्य आपकी सहायता करूंगा। नहीं होगा तो उन तीनों दैत्यों को रुद्र से विमुख करा उन्हें भस्म कर दूँगा।

सनत्कुमार जी कहते हैं—उनकी आज्ञा मानकर देवता

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

अपने धाम आये। विष्णुजी देवताओं के हित का विधान करने लगे।

* चौथा अध्याय *

(नास्तिक-शास्त्र का प्रादुर्भाव)

सनत्कुमारजी वोले–कि भगवान् ने अपनी आत्मा से अत्यन्त तेजवान् मायावीय पुरुष को प्रकट किया, जिसका शिर मुँड़ा था और जो मलिन वस्त्र पहिने एक हाथ में काठ का पात्र और दूसरे हाथमें झाड़ू लिए चला आ रहा था। वह अपने एक हाथ में खुला वस्त्र लिये, मुख में वस्त्र लपेटे, व्याकुल वाणी में "धर्म" ऐसा कहता हुआ फिर बोला––अरिहन्! मेरे लिए क्या आज्ञा है? मेरे क्या-क्या नाम होंगे और कार्य क्या होगा? विष्णुजी बोले–मुझे तुम्हारी आवश्यकता है। तुम मेरे ही अङ्ग से उत्पन्न हुए मेरे ही स्वरूप हो। तुम मेरे कार्य करने योग्य हो? तुम्हारा मुख्यनाम नाम "अरिहन्" होगा। इसके पीछे तुम्हारा एक और भी सुन्दर नाम होगा जिसे में फिर कहूँगा। अभी तुम्हारे समक्ष जो कार्य है उसे करो। तुम बड़े मायावी हो। अतः तुम सोलह हजार श्लोकों वाले एक ऐसे शास्त्र का निर्माण करो जो वर्णाश्रम धर्म विवर्जित हो इसमें अपभ्रंश शब्द तो भर हों और कर्म-विवाह भी वर्णित हो। परमात्मा विष्णुजी के इन बचनों को सुन उस मुण्डी ने उन्हें प्रणाम किया और वह बोला–जनार्दन! मुझे क्या करना है, इसके लिए शीघ्र आज्ञा दीजिये। ऐसा, सुनकर विष्णुजी ने उस मायामय को वह शास्त्र पढ़ा दिया जिसमें स्वर्ग, नर्क यही है अन्य कहीं नहीं। फिर शिवजी के चरण कमलों का ध्यान कर विष्णुजी ने कहा–बस! इसी विधान से तुम सब दैत्यों का मतोहन करलो। तुम उनके पास जाकर यही शास्त्र पढ़ाओ। तुम्हारे इस प्रकार करने से त्रिपुरों में तमोगुण का प्रकाश होगा जिससे वे नष्ट हो जायेंगे। मेरी आज्ञा से तुम्हारे इस धर्म

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

का विस्तार होगा तथा तुम्हें मेरी गति प्राप्त होगी। वहाँ से फिर मरुस्थल में जाकर तुम कलियुग के आने तक अपने धर्म में नियत रह निवास करना और जब कलियुग आ जायगा। तब अपने धर्म प्रकाश कर अनेक प्रशिष्यों के साथ अपने धर्म का प्रचार करना। ऐसा कह विष्णुजी अन्तर्ध्यान हो गये तथा मुण्डी ने भगवान् की आज्ञा से अपने बहुत से शिष्य बनाये और उनको वहीं मायामय अपना शास्त्र पढ़ाया। अब उसके चार शिष्य होगये। शिवाज्ञासे अपने गुरु के समान ही मलिन वस्त्र धारण कर, अल्पभाषी बन, उसका लाभ रूप तत्व लेने लगे। उन चारों ने अपना पाखण्ड धर्म अपनाया। हाथ में पात्र ले नाक पर कपड़ा लपेटे इधर-उधर विचरने लगे उन्होंने अपने हाथ में छोटे वस्त्रों से बनी हुई दुहारीको ले लिया और जीव हिंसा के भय से धीरे-धीरे पैर रखकर चलना आरम्भ किया। भगवान् ने पकड़ कर उन्हें उनके गुरु के हवाले किया। फिर पहले वाले का आदि रूप नाम रक्खा तथा उन चारों का कृषि, पत्ति, कीर्य और उपाध्याय नाम करण कर दिया। फिर यह भी कह दिया कि अब से तुम सर्वदा मेरा अरिहन् नामक शुभ और शत्रुनाश के नाम ध्यान में रखना। सनत्कुमार जी बोले—इसके पश्चात् उस मायावी ने प्रणाम कर शिष्यों सहित शीघ्र ही त्रिपुर नगर को प्रस्थान किया। वहाँ जाकर उसने शीघ्र ही अपनी माया फैला दी और बालकों को मोहित कर लिया। परन्तु शिवजी के प्रभाव से त्रिपुर में उसकी माया सहज ही नहीं फैल सकी। इससे वे अति व्याकुल हो गये। उन्होंने विष्णुजी का स्मरण किया। विष्णु ने शिवजी का स्मरण किया। फिर उनकी आज्ञा पा उन्होंने नारदजी को स्मरण किया। नारद आ उपस्थित हुए। उनको विष्णुजी ने त्रिपुर के नगरों में जाने का यह आदेश किया कि तुम इन ऋषि-शिष्यों सहित वहाँ जाकर वहाँ के निवासियों को मोहित कर देव कार्य करो। नारदजी त्रिपुर के नगरों को गये। त्रिपुर पति से मिले। राजा से पतियों

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

की धर्म परायणता और वेद विद्या की सम्पन्नता कह कर उनकी प्रशंसा की और कहा कि धर्म सबसे उत्तम है, इसीसे मैं इनसे दीक्षित हुआ हूँ। यदि तुम्हारी इच्छा हो तो तुम भी इन से दीक्षित हो जाओ। यह सुन त्रिपुराधीश को बड़ा आश्चर्य हुआ। परन्तु मोहित हो वह भी उस मुण्ड से दीक्षित होने गया। उसे उसने अपना गुरू बनाया। यह देख भी त्रिपुर वासी उससे (मुड़िया) दीक्षित हुए। सारा त्रिपुर उस मायावी के शिष्यों से क्षणमात्र में पूर्ण हो गया।

* पांचवां अध्याय *

(नास्तिक मत से त्रिपुर मोहन)

व्यासजी ने पूछा—ऋषिवर! दैत्यराज्यों के दीक्षित एव मोहित होने पर उस मायावी पुरुष ने क्या कहा और दैत्यों ने क्या किया? सनत्कुमार जी बोले-राजा दीक्षित हो गया तब उससे अरिहन ने कहा—मेरा ज्ञान वेदान्त का सार है। यह अनादिकाल से चला आता है। इसमें कर्त्ता कर्म नहीं है। यह आप ही प्रकट होकर आप ही लीन हो जात है। आत्मा से लेकर स्तम्भ तक जितने भी देह के बन्धन हैं, सब में आत्मा ही एक ईश्वर है और इसमें अन्य कोई सामर्थ्यवान् नहीं हैं। ब्रह्मा, विष्णु और महेश सब अरिहन कहलाते हैं। समय आने पर सब लीन हो जाते हैं। आहार, मैथुन, निद्रा सब इस देह में समान हैं किसी में कुछ विशेषता नहीं है। आत्मा एक है। मृत्यु सभी के लिये होयी है। इस कारण कभी किसी की हिंसा मत करो। अहिंसा ही परम धर्महै और पीड़ा देना महा पाप है। अपराधीनता ही मोक्ष और अभिलाषित भोजन ही स्वर्ग है। हिंसा से नरक होता है। दान बहुत हैं, परन्तु अभयदान से बढ़कर कोई नहीं। भयभीत को अभयदान, रोगी को औषधि छत्रों को विद्या और भूखों को अन्नदान ये चार दान मुख्य हैं। मणि, मन्त्र और औषधि के प्रभाव को विना बिचारे ही नाम और

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosh

अर्थ के उपार्जन के लिये प्रयत्न पूर्वक अभ्यास करे। बहुत साधन की क्या आवश्यकता ? सभी ओर के केवल बाहर स्थानोंकी ही पूजा करे। यथा पाँच कर्मेन्द्रिय, पाँच ज्ञानेन्द्रिय, मन और बुद्धि। प्राणियों को स्वर्ग और नर्क यहीं है और कहा-कहीं सुख पूर्वक मरना ही मोक्ष है।

अग्नि में तिल, घी और पशु की आहुति कर स्वर्ग की इच्छा करना बड़ी विचित्र बात है। इस प्रकार उस असुर नायक के लिये यतिराज ने अपना सिद्धान्त कह कर फिर पुरवासियों को आदर से कहा कि, प्रत्यक्ष अर्थ में ही निवास करना चाहिए यही एक मात्र सुख का साधक है। यही देव से परे की बात है। आनन्द ही ब्रह्म है और नानात्व कल्पना मिथ्या है। शरीर के स्वस्थ रहते ही सुख का साधन कर लेना चाहिये। बुढ़ापा आ जायगा तो सुख का साधन क्या होगा ? यह देह शीघ्र ही नष्ट हो जाने वाली है। अतएव ज्ञानी को चाहिये कि वह सुख का साधन करे। वेद भी सुख का साधन करने को कहता है। लोकों में जाति कल्पना व्यर्थ है। सृष्टि से आदि में ब्रह्मा की उत्पत्ति हुई, जिनके दो पुत्र दक्ष और मरीचि हुए। मरीचि के पुत्र कश्यप ने दक्ष की तेरह कन्याओं का धर्म से विवाह किया। फिर प्रजापति के मुख, बाहु उरु, जङ्घा और चरण से वर्ण उत्पन्न हुए। पूर्व पुरुषों की कल्पना है। यह बातें विचार से सङ्गठित नहीं होती। यदि एक ही शरीरसे उत्पन्न हुए तो उसके चारों पुत्र भिन्न-भिन्न वाले कैसे हो गये ? इस प्रकार वर्ण अवर्ण का विभाग ठीक नहीं। सनत्कुमार जी ने कहा-इस प्रकार उस यति ने पुरवासी राजा से भाषण कर वेद मार्ग को नष्ट किया और पतिव्रताओं के व्रत का तथा पुरुषों के जितेन्द्रिय व्रत का भी खण्डन किया। फिर धर्म, यज्ञ, तीर्थ और श्रद्धादि देवताओंके धर्मशास्त्र का खण्डन करते हुए उसने विशेषकर शिवजी की पूजा का भी खण्डन किया तथा इसी प्रकार उसने विष्णु, सूर्य और गणेश

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

आदि की पूजा का भी निषेध किया। उसने अपने यहाँ के वेद धर्म दूर कर दिये तथा वहाँ सम्पूर्ण स्त्रियाँ मोहित हो यति क्रर्म के अभिमत होगईं। अन्तःपुर की स्त्रियाँ, राजकुमार, पुरवासी और पुर की सभी स्त्रियाँ इस प्रकार विमोहित हो गईं। त्रिपुरवासी सभी अपने धर्म से पराङ्मुख हो गये और अधर्म फैल गया। फिर भगवान् विष्णु की माया से लक्ष्मी ने त्रिपुरों के घर में अपना बस बनाया और लक्ष्मी उन्हें त्याग कर चली गई विष्णु जी द्वारा निर्मित उस बुद्धि को देखकर नारद जी कृतार्थ होगये।

* छटवां अध्याय *

(त्रिपुर बध की प्रार्थना)

व्यासज ने पूछा—जब दैत्यराज मोहित हो गया तब क्या हुआ सनत्कुमारजी बोले—जब दैत्यराज ने शिवार्चन त्याग दिया और सारा स्त्री-धर्म नष्ट हो गया लोग दुराचारी हो गये तब भगवान् विष्णु ने कैलाश जाकर परमात्मा महेश्वर को नमस्कार कर और उनकी स्तुति की। तब तक ब्रह्माजी और देवराज इन्द्र भी देवताओं को साथ लिए वहाँ जा पहुँचे और उन सबने भी आदि पुरुष शङ्कर की आराधना की तब उनके जप से प्रसन्न हुए भगवान् शङ्कर वृषक पर आरूढ़ हो उन के सामने आये और नन्दी को अपने हाथ से स्पर्श करते हुए देवताओं से बोले—मैं दैत्यों का अधर्म जान गया हूं, इससे अब त्रिपुरों का विनाश कर दूँगा। परन्तु अभी भी मनसे वे मेरे दृढ़ भक्त हैं। उन्होंने माया से मोहित होकर उत्तम धर्म का त्याग किया है, इस कारण उनमें जिन्होंने तो सम्पूर्णतः त्याग दिया है उसका बध मैं करूँगा और अन्यों को विष्णुजी मारेंगे। यह सुन विष्णुजी कुछ उदास हो गये। तब उन्हें उदास हुआ देख ब्रह्माजी शिवजी से हाथ जोड़कर बोले, कि भगवान्! आप जैसे श्रेष्ठ योगी को तो कोई पाप स्पर्श ही नहीं कर सकते। फिर आप सभी को क्यों नहीं मारते हैं?

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

त्रिपुरों ने अब सर्वथा ही आपकी पूजा त्याग दी है। हे सर्वेश्वर ! यह सारा जगत आपही का परिवार है। हरि आपके युवराज हैं। मैं आपका पुरोहित हूँ तथा इन्द्र आज्ञा पालक राज-काज करने वाला है अन्य देवता भी आपही के वशवर्ती हैं सनत्कुमार जी कहते हैं—तब ब्रह्माजी के ऐसे बचनों को सुनकर परमेश्वर शङ्कर प्रसन्न होगये। उन्होंने कहा—ब्रह्माजी ! तुम मुझे सम्राट कैसे कहते हो ? मेरे पास तो इसके योग्य कोई भी प्रकार नहीं है। न तो मेरे पास कोई दिव्य रथ है न वैसा सारथी कि जिसे साथ ले संग्राम में चलूँ और जय करने वाला मेरे पास कोई धनुष वाण भी नहीं है। फिर मैं दैत्यों का बध कैसे करूंगा ? यह सुन ब्रह्मादिक देवताओं को बड़ी प्रसन्नता हुई और उन्होंने महेश्वर को प्रणाम कर कहा—आप युद्ध के लिये तैयार तो हों। हम सभी आपके रथ दिरूप हो जायेंगे।

* सातवां अध्याय *

(देवताओं द्वारा शिव स्तवन)

सनत्कुमारजी बोले—शरणागत वत्सल भगवान् ने देवताओं की बात स्वीकार करली तब उसी समय पार्वती देवी अपने पुत्र की गोद में लिए वहाँ आ गई जहाँ देवताओं सहित शङ्कर भगवान् विद्यमान थे। तब पार्वतीजी को आते हुए देखकर विष्णु आदिक सभी देवता नम्र हो उन्हें प्रणाम करने लगे। और परम आश्चर्य में पड़ गये। तब अद्भुत कुतूहल करने वाली देवीने शङ्करजी से अपने दोनों पुत्रों की ओर देखकर उनका प्यार करने का संकेत किया और शङ्करजी ने प्रसन्न होकर उनका मुख चुम्बन किया। पश्चात् सबको साथले अपने भवन में चले। बुद्धि सम्पन्न देवता भी साथ जाकर द्वार पर स्थित रहे। अब शिवजी के चले जाने से उनकी चिन्ता का अन्त न रहा वे अपने को हतभागी मान दैत्यों के भाग्य की प्रशंसा करने लगे। इतने में कुम्मोदर नामक

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

शिवजी के गण ने आकर देवताओं पर अपनी लकड़ी का प्रहार कर दिया। देवता हाहाकार कर वहाँ से भाग चले। कोई मुनिगिरे और कोई देवता लुढ़क गये। इन्द्र तो और ही व्याकुल हो जङ्घों को टेक पृथ्वी पर गिर पड़े। फिर सब एकत्र हो विष्णुजी के पास चले गये। भयहारी हरि से सब बात कही। तब देवताओं को विष्णुजी ने बहुत-सा आश्वासन दिया और कहा सब ठीक होगा। शिवजी सब गणों के अध्यक्ष और परमेश्वर हैं। 'तुमॐनमः शिवाय' मन्त्रको एक करोड़ जपो तो शिवजी तुम्हारा कार्य करेंगे। जब विष्णुजी ने ऐसे कहा, तब फिर देवता शङ्कर की आराधना करने लगे स्वयं विष्णुजी भी देवताओं का हित करने के लिए उक्त शिव—मन्त्र का जाप करने लगे। जब बिधि पूर्वक सबने एक करोड़ मन्त्र जप लिया तब साक्षात शङ्कर ने फिर दर्शन दिया और कहा मैं प्रसन्न हूं, जो चाहो वर माँगो। देवताओं ने त्रिपुर संहार का वर माँगा। शिवजी ने कहा—मेरे लिये दिव्य रथ, सारथी और धनुष-बाण लाओ। यह सुन सब देवता प्रसन्न हो विश्वकर्मा के पास गये। विष्णुजी की आज्ञा से विश्वकर्मा ने संसार के हितार्थ शिवजी के लिये परम सुन्दर देवमय रथ आदि का निर्माण कर दिया।

* आठवां अध्याय *

(शिव-रथका निर्माण)

व्यासजी बोले—सनत्कुमारजी ! विश्वकर्मा ने शिवजी के लिये उस दिव्य-रथ का कैसे निर्माण किया ! सूतजी कहते हैं, जब मुनीश्वर व्यासजी ने ऐसे कहा, तब उनके चरण कमलों का स्मरण कर सनत्कुमारजी कहने लगे—व्यासजी ! विश्वकर्मा ने रुद्र के लिए बड़ा ही दिव्य रथ तैयार किया। उसके समान किसी भी लोक में कोई रथ न था। वह सर्व भूत मय सुवर्ण का सर्वसम्मत था। उसके दाहिने पहिए में सूर्य और बांये में चन्द्रमा लगे हुए थे। वर्ष के बारहों महीने के

Digitized by eGangotri Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बारह तारे तो उसके दाहिनी ओर के पहिये में लगे थे और षोड्श कलाओं के सोलह ओर उसकी वायीं ओर के पहिये में जड़े हुए थे। उन बारह आरों में बारहों आदित्य और चन्द्रमा की द्वादश कलाएं उसके बाएं ओर लगी हुई थी। ब्रह्माण्ड की जो कुछ भी वस्तु है, वह सभी उस रथ में विद्यमान थीं। ब्रह्मा और विष्णु की आज्ञा से विश्वकर्मा ने उसे बड़ा ही अद्भुत बानाया था।

* नवाँ अध्याय *

(शिव-यात्रा)

सनत्कुमार बोले-जब इस प्रकार रथ तैयार हो गया, तब ब्रह्माजी ने वेद रूपी घोड़े उसमें जोड़कर शिवजी को उस पर चढ़ाया वे वेद रूपी घोड़े शिवजी सहित रथ को लिए हुए आकाश में जाने लगे और वे शीघ्र ही तीनों पुरों के सन्मुख जा पहुँचे। रथ में बैठे महेश्वर वेदगामी दानवों की ओर चले। उसी समय उन्होंने देवताओं से कहकर पशुओं का अधपति नामक पद प्राप्त किया जिससे वे असुरों को नष्ट करने में सफल हो सके। परन्तु इससे देवताओं को बड़ी चिन्ता हुई। शिवजी ने कहा-चिन्ता न करो। जो मेरे इस दिव्य पशुपति व्रत को करेगा उसका मोक्ष हो जायगा। शिवजी पशुपति होकर कल्याणदायक हुए। देवता प्रसन्न हो उनकी जय-जयकार करने लगे। सबमें प्रसन्नता व्याप्त होगई। उसी समय शंकरजी पार्वतीजी को साथ ले त्रिपुरों को मारने चले। समस्त देवता, हाथी, घोड़े, सिंह, रथ और वृषभ पर चढ़ कर देवराज इन्द्र के साथ हुए। ब्रह्मादिक भी अपने बाहनों पर चढ़कर उनके साथ चले। विष्णु आदि सभी देवता परम प्रकाशमान महेश्वर के आगे हुए। आकाश सिद्ध चारण उन पर फूलों की वर्षा कर रहे थे उसी समय असंख्यों गण तीनों पुरों में प्रवेश करने लगे।

—*—

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

* दसवां अध्याय *

(त्रिपुरासुर वध)

सनत्कुमारजी बोले—जब इस प्रकार युद्ध की सामग्रियों से युक्त हो त्रिपुर-वध के लिए शिवजी रथारूढ़ हो धनुष चढ़ा कर वहाँ स्थित हुए परन्तु हजारों वर्ष तक वे वैसे ही आरूढ़ स्थिर आसन से खड़े रह गये और उनका वाण न चला। क्योंकि उधर गणेशजी एक अंगूठे के बल से खड़े होकर उसमें विघ्न करने लगे, जिससे शङ्कर का लक्ष्य त्रिपुर के पुरमें प्रविष्ट ही न हो पाता था पश्चात् उन्हें यह आकशवाणी सुनाई पड़ी कि जबतक आप गणेशजीका पूजन नकरेंगे तबतक त्रिपुर संहार न कर सकेंगे। यह सुनते ही शङ्करजीने गणेशका पूजन किया। गणेशजी प्रसन्न हो उसके मार्ग से हट गये। फिर शङ्कर ने धनुष सजा-कर उस पर बाँण चढ़ाकर पाशुपत अस्त्र में संयुक्त कर त्रिपुर संहार की इच्छा की। उन्होंने निरादर से उसकी ओर देखा। देवताओं ने भी शीघ्रता करने की प्रार्थना की। शिवजीने करोड़ों सूर्यके समान प्रकाश-मान अपने उन बाण को असुरों पर चला दिया। उन विष्णुमय अग्नि सम वाणों ने उड़कर त्रिपुरवासियों को दग्ध कर दिया देवताओं सहित शिवजी के देखते-देखते चारों ओर से समुद्र द्वारा घिरे हुए दैत्यों के तीनोंपुर भस्मसात हो एक साथ ही भूमि पर गिर पड़े। सैंकड़ों और हजारों की संख्या में दैत्य भस्म हो गये। शिवजी की पूजा न करने से हाहाकार मच गया। जब भ्राताओं सहित तारकाक्ष भस्म होने लगा तो उसने भक्तवत्सल शङ्कर जी को स्मरण किया फिर। परम भक्ति से मुक्त हो उसने शङ्करजी की ओर देखकर कहा—शिव! यह तो हम जानते ही हैं कि आप हमें भस्म किये बिना न छोड़ेंगे, तथापि हम आपकी कृपा चाहते हैं, अतएव आप हम पर प्रसन्न होइये। क्योंकि जो मृत्यु असुरों को दुर्लभ है वह हमें प्राप्त हुई है। अब हम आपसे यह प्रार्थना करते हैं कि हमारी बुद्धि जन्म-जन्मान्तर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

में आप में ही लगी रहे। ऐसा कहकर वे दानव शिवजी की उस वह्नि में भस्म हो गये। शिवजी की आज्ञा से उस पुर में रहने वाले बालक वृद्ध सभी दानव जलकर क्षार हो गये। एक अविनाशी विश्वकर्मा मय नामक दैत्य को छोड़कर स्थावर जङ्गम सभी भस्म हो गये। पश्चात् वे तीनों शिवजी की पूजा के प्रताप से फिर शिव जी के गण हुए।

* ग्यारहवां अध्याय *

(शङ्कर द्वारा देवगणों को वरदान)

व्यासजी बोले—महर्षि त्रिपुरों के नष्ट होने पर देवताओं ने क्या किया ? भय कहाँ चल गया और त्रिपुर-पति कहाँ-कहाँ चले गये ? सूतजी कहते हैं—व्यासजी से ऐसा सुनकर सनत्कुमारजी बोले-शिवजी द्वारा त्रिपुर वासियों का संहार होने पर देवताओं को बड़ा आश्चर्य हुआ। परन्तु प्रलयङ्कर शङ्कर के उस रौद्र तेज के समक्ष किसी को शिर उठाते न बनता था। इन्द्र उपेन्द्रादि सभी देवता भगवान् शंकर और हिमाचल की पुत्री पार्वती की ओर देखते ही नत-मुख किये खड़े ही रह गये। तब देव सेना की इस भयातुरता को देख ऋषियों से न रहा गया और वे कुछ न कहकर भयंकर शंकर को प्रणाम करने लगे। ब्रह्माजी भयभीत हो देवताओं सहित शंकर की स्तुति करने लगे। जब ब्रह्मादिक देवताओं ने इस प्रकार भगवान् शंकर की बहुत सी स्तुति की तो लोकों के कल्याणकर्त्ता शिवजी ने प्रसन्न होकर कहा—देवताओ ! वर माँगों। देवता प्रसन्न हो गये और उन्होंने कहा—'हे देवेश ! यदि आप हम पर प्रसन्न हैं और कोई वर देना चाहते हैं तो हमें यही वर दीजिये कि हम देवताओं पर जब-जब कोई संकट आवे आप हमारी सहायता के लिए प्रकट हों।' जब ब्रह्मा, विष्णु और देवताओं ने ऐसा कहा तो शिवजी ने प्रसन्न होकर कहा—तथास्तु, ऐसा ही होगा। मैं सदैव तुम्हारी अभिलाषाओं को

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

पूर्ण करता रहूँगा । कहकर शङ्कर जी ने देवताओं को अभीष्ट वर दिया।

* बारहवां अध्याय *

(देवताओं द्वारा वर प्राप्ति)

सनत्कुसारजी बोले—तब शिवजी को प्रसन्न देख उनकी कृपा से बचा हुआ मयदानव भी वहाँ आया और शङ्करजी को तथा अन्य देवताओं को भी उसने हाथ जोड़कर प्रणाम किया तथा गद्गद् स्वरसे हाथ जोड़ शिवजी की ओर देखते हुए उनकी स्तुति करने लगा । फिर उसने कहा—भव ! मैं आपकी शरण आया हूं, अतएव आप मेरी रक्षा कीजिए । शङ्करजी ने उससे भी वर माँगने को कहा । उसने भी उनकी भक्ति माँगी । शिवजी ने 'तथास्तु' कह कर उसे अपनी दृढ़ भक्ति दी। वह महात्मा शङ्कर को प्रणाम कर उनकी आज्ञा से वितल लोकमें बास करने चला गया । पश्चात् वे सब मुण्डी भी वहाँ आए और शिवजी तथा विष्णु आदि सब देवताओं को प्रणाम कर अपने लिए आज्ञा माँगने लगे, शिव-भक्ति नष्ट कर अपने दुष्कर्म पर पश्चाताप करने लगे । तब विष्णुजी ने उन मुण्डियों से कहा कि, तुम किसी प्रकार चिन्ता न करो । मैंने यह सारा चरित्र शिव जी की आज्ञा से किया है । इस से तुम भी शिवजी के दास और देवर्षियों के हितकारी हो । तुम्हारी कुगति नहीं होगी । प्रत्युत कलियुग में जो मनुष्य तुम्हारे इस चलाए मत को जो मानेंगे उन्हीं की कुगति होगी । अब हमारी आज्ञा से तुम सब मुण्डी मरु भूमि में जाकर निवास करो । मुण्डी मरु भूमि की ओर चले गये । पश्चात् सब देवताओं ने शंकर-पार्वती सहित उनके गणों की सप्रेम पूजा की और वे अपने युद्ध की सब सामग्रियों सहित वहीं अन्तर्ध्यान हो गये ।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* तेरहवाँ अध्याय *

(इन्द्र को जीव-दान तथा बृहस्पति को जीव संहार प्रदान)

व्यासजी बोले--ब्रह्मन् ! हमने यह बात पहले सुनी है कि भगवान् शंकर ने जलन्धर का बध किया था । यदि यह सत्य है तो कृपाकर मुझे शंकरजी का यह चरित्र भी सुनाइये सूतजी कहते हैं-जब व्यासजी ने महामुनि से इस प्रकार पूछा तो सनत्कुमार जी ने कहा-मुने ! एक समय जब देवगुरु बृहस्पति और देवराज इन्द्र कैलाश में शंकर जी के दर्शन करने गये तो शंकरजी ने अपने भक्त की परीक्षा ली । उन जटा-जूटधारी दिगम्बर ने उनको मार्ग में ही अवरोध कर लिया । यद्यपि वे तेजस्वी, शान्त, लम्बी भुजा और चौड़ी छाती वाले गौर वर्ण अपने विशाल नेत्रों युक्त यथा शिर पर जटाधारे वैसे ही बैठे थे । तथापि उन शंकर जी को न पहचान कर इन्द्र ने उनका नाम धामादिक परिचय पूछा और कहा कि शंकर जी अपने स्थान पर ही हैं या कहीं गये है ? इस पर उस तपस्वी ने कुछ न कहा । परन्तु त्रिलोकी के ऐश्वर्य से गर्वित हो इन्द्र कब चुप रहते । उन्होंने क्रोध कर तपस्वी से कहा-अरे ! मैं पूछता हूं, तू उत्तर क्यों नहीं देता है ? अभी ही तुझे इस बज्र से मारता हूँ । ऐसा क्रुद्ध हो इन्द्र ने ज्योंही उस दिगम्बर को मारने के लिए हाथ में बज्र लिया, त्योंही सदाशिव ने बज्र सहित इन्द्र का हाथ स्तम्भित कर दिया और विकराल नेत्र कर भगवान् शंकर ने ज्योंही उसे देखा त्योंही ऐसा विदित हुआ मानों वह दिगम्बर प्रज्वलित हो उठा है और तेज से जला देगा । भुजायें स्तम्भित होने से इन्द्र के क्रोध और दुःख का अन्त न रहा । परन्तु ज्योंही बृहस्पतिजी ने उस पुरुष को प्रज्वलित देखा त्योंही अपनी बुद्धि से शंकर जानकर प्रणाम किया । और दण्डवत कर बहुत सी स्तुति भी की । फिर इन्द्र को भी शंकरजी के चरणोंमें गिराया और

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

शिवजी से बृहस्पति ने कहा कि, दीनानाथ ! अपना क्रोध रोक कर इन्द्र के अपराध को क्षमा कीजिए । बृहस्पति के ये बचन सुनकर महेश्वर गम्भीर वाणी से बोले कि, बृहस्पति ! में अपने नेत्रों से निकलते हुए क्रोध को कैसे रोकूँ ? बृहस्पति ने कहा—भगवान् ! भक्तों पर सदैव दया ही करनी चाहिये । आप अपने इस तेज को कही अन्यत्र स्थापित कर इन्द्र का उद्धार कीजिये । तब भगवान् शंकर ने गुरु बृहस्पति से कहा—मैं तुम्हारी स्तुति से प्रसन्न हूँ । तुमने इन्द्र का जीवदान दिलवाया है । इससे मैं अपने वर द्वारा तुम्हें 'जीव' नाम विख्यात करता हूं । मेरे नेत्र की अग्नि अब इन्द्र को पीड़ित न करेगी । बृहस्पति से ऐसा कह कर भगवान् ने अग्निमय अपने माथे के नेत्र से निकले हुए तेज को अपने हाथों में लेकर समुद्र में डाल दिया । फिर लीलाधारी भगवान् अन्तर्ध्यान होगये । इन्द्र और बृहस्पति भय से मुक्त हो परम सुखी हुए । अपने स्थान को चले आये ।

* चौदहवाँ अध्याय *

(जलन्धर की उत्पति)

व्यासजी बोले—सनत्कुमार ! जिस समय शिवजी ने अपने माथे का वह तेज क्षीर समुद्र में डाल दिया उस समय क्या हुआ ? सनत्कुमार जी बोले—तात ! जब शिवजी ने वह अपना तेज क्षीर समुद्र में डाल दिया उस समय वह शीघ्र ही बालक हो गङ्गा सागर के सङ्गम पर बैठकर अत्यन्त उच्च स्वर से संसार को भय देने वाला रुदन करने लगा । उसके रुदन से संसार व्याकुल होगया । शंकर सुवन के रुदन से ब्रह्माण्ड व्याकुल हो गये । समस्त देवता और मुनि व्याकुल होकर लोक पितामह ब्रह्माजी की शरण में गए । सबने मिलकर ब्रह्माजी को प्रणाम किया और स्तुति की । फिर कहा—पितामह यह तो बड़ा भयंकर समय उपस्थिति हुआ है । महायोगिन्

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

इसका नाश ! कीजिये ।" तब देवताओं की ऐसी बात सुनकर ब्रह्माजी सत्य लोक से उतर कर समुद्र के तट पर उस बालक को देखने आये। समुद्र ने ब्रह्माजी को आते देख उस बालक को उठा उन्हें प्रणाम किया और पुनः उनकी गोद मे दे दिया। तब विस्मित हो ब्रह्मा ने पूछा—सागर ! तुम शीघ्र कहो कि, यह बालक किसका है। समुद्र ने विनम्र शब्दों में कहा—"भगवान् ! यह तो मैं नहीं जानता, किन्तु मुझे इतना अवश्य ज्ञात है कि यह गङ्गासागर के सङ्गम में प्रकट हुआ है। अतएव आप इस बालक के जात कर्मादिक संस्कार कीजिये। इसका जातक फल बतलाइये।" सनत्कुमारजी कहते हैं—इधर तो सागर ब्रह्माजी से ऐसा कह रहा था उधर सागर-पुत्र ब्रह्माजी के गले में हाथ डाल कर बार-बार उनका आकर्षण कर रहा था। फिर तो उसने इतने जोर से ब्रह्माजी का गला पकड़ा कि उससे पीड़ित हो उनके नेत्रों से आँसू टपकने लगे। किसी प्रकार ब्रह्माजी ने दोनों हाथों से बल लगा कर अपना गला छुड़ाया और सागर से कहा कि, सागर ! मैं तुम्हारे पुत्र का जातक फल कहता हूँ, सुनो ! मेरे नेत्रों से जल निकला है, इस कारण इसका नाम जलन्धर होगा। यह उत्पन्न होते ही तरुण हो गया है इससे यह सब शास्त्रों का पारगामी, महापराक्रमी, महा-धीरजवान, महायोद्धा और रण-दुर्मद होगा। यह युद्ध में कार्तिकेय के समान वीर, सर्व विजयी होगा। यह बालक सब दैत्यों का अधिपति और विष्णु को जीतने वाला होगा तथा यह कहीं भी न हारेगा। एक शंकरजी को छोड़ यह सबसे अवध्य होगा जहाँ से उत्पन्न हुआ है फिर वहीं जायगा। इसकी स्त्री बड़ी पतिव्रता, सौभाग्य शालिनी, और परम मनोहर, मिष्ठभाषिणी होगी। सनत्कुमारजी कहते हैं कि सागर से ऐसा कहकर ब्रह्माजी ने महर्षि शुक्र को बुलाकर उनके हाथों से उस बालक को दैत्यों का राज्याभिषेक कराया और स्वयं अन्तर्ध्यान हो गये।

फिर तो उस बालक को देख समुद्र बड़ा ही प्रसन्न हुआ

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

और अपने साथ लेकर अपने घर गया। फिर कालनेमि असुर की वृन्दा नामक कन्या से व्याह करा दिया। उसके विवाह में बड़ा उत्सव हुआ। स्त्री सहित जलन्धर असुरों का राज्य करने लगा।

* पन्द्रहवां अध्याय *

(देव-जलन्धर युद्ध)

सनत्कुमारजी बोले—एक समय जब समुद्र का पुत्र जलन्धर अपनी स्त्री वृन्दा सहित असुरों से सम्मानित हो सभा में बैठा था तो परम कान्तिमान भृगुजी वहाँ आ पहुँचे, जिनके तेज से सब दिशायें प्रकाशित हो रही थीं। तब गुरुजी को आया देख असुरों सहित सागर-पुत्र ने उठकर बड़े आदर से उन्हें प्रणाम किया और तेजस्वी भृगुजी ने उन सबको आशीर्वाद दिया। फिर उनको एक दिव्य आसन पर बिठाकर वे दैत्य भी यथा स्थान बैठे और सागर-पुत्र ने नम्रता से यह प्रश्न किया कि, गुरु जी! राहु का शिर किसने काटा, यह आप हमें बतलाइये। इस पर शुक्राचार्यजी ने विरोचन, पुत्र हिरण्यकशिपु और उसके धर्मात्मा पोत्र का परिचय देकर देवताओं और असुरों द्वारा समुद्र-मन्थन की संक्षेप में सब कथा कह कर यह बतलाया कि जब समुद्र से अमृत निकाला तो उसे देव रूप से राहु पीने चला। इस पर इन्द्र के पक्षपाती भगवान् विष्णु ने ही राहु का शिर काटा है। यह सुनते ही जलन्धर के नेत्र लाल हो गये, अपने घस्मर नामक दूत को बुलाकर गुरु का कहा हुआ सब वृतान्त सुनाया और यह आज्ञा दी कि, तुम शीघ्रही इन्द्रपुरी में जाकर उसे मेरी शरण लाओ। घस्मर जलन्धर का निपुण दूत था। वह शीघ्र ही इन्द्र की सुधर्मा नामक सभा में जा पहुँचा। और जलन्धर के शब्दों में कहा—देवधाम! तुमने समुद्र को क्यों मथा और मेरे पिता के सब रत्नों को क्यों ले लिया है? ऐसा कर तुमने अच्छा नहीं किया है। यदि तू अपना भला चाहे तो उन सब रत्नों सहित देवताओं के साथ मेरी शरण आ। अन्यथा

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

सुरोत्तम ! तेरे लिये यह बड़ा पाप होगा। इन्द्र बहुत विस्मित हुआ और कहने लगा—पहले मेरे भय से सागर ने सब पर्वतों को अपनी कुक्षि में क्यों स्थान दिया और उसने मेरे शत्रु दैत्यों की क्यों रक्षा की ? इसीकारण से मैंने उसके सब रत्न हरण किये हैं। इन्द्र की ऐसी बात सुनकर वह दूत शीघ्र ही जलन्धर के पास आया और सब बातें कह सुनायीं। उसे सुनते ही वह दैत्य मारे क्रोध के अपने ओष्ट फड़काने लगा और देवताओं को जीतने के लिये उसने उद्योग आरम्भ किया।

फिर तो सब दिशाओं पाताल से करोड़ों-करोड़ों दैत्य उसके पास आने लगे। शुम्भ निशुम्भ आदि करोड़ों सेनापतियों के साथ जलन्धर इन्द्र से युद्ध करने लगा। शीघ्र ही इन्द्र के नन्दन वन में उसने अपनी सेना उतार दी। बीरों की शंखध्वनि और घोर गर्जना से इन्द्रपुरी गूंज उठी। अमरावती छोड़ देवता उससे युद्ध करने चले। भयानक मार-काट हुई। असुरों के गुरु आचार्य शुक्र अपनी मृत-सञ्जीवनी विद्या से और देवगुरु बृहस्पति द्रोणगिर से औषिध लाकर जिलाते रहे। इस पर जलन्धर ने क्रुद्ध होकर कहा कि मेरे हाथ से मरे हुए देवता जी कैसे जाते हैं। जिलाने वाली विद्या तो एक आप के पास है। फिर यह क्या बात है। इस पर शुक्रजी ने देवगुरु द्वारा द्रोणगिरि से औषधि लाकर देवताओं को जिलाने की बात कह दी। यह सुन जलन्धर और भी क्रुद्ध हो गया। शुक्रजी ने कहा—क्रुद्ध क्यों होते हो ? यदि शक्ति हो तो द्रोणगिरि को उखाड़ कर समुद्र में फेंक दो। इस पर क्रुद्ध जलन्धर शीघ्र ही द्रोण पर्वत के पास जा पहुँचा और एक परम वेद द्वारा अपनी भुजाओं से पकड़ कर द्रोण को समुद्र में फेंक दिया। पश्चात् वह सागर पुत्र युद्धागणो में आ बड़े वेग से देवताओं का संहार करने लगा। जब द्रोणाचार्य जी औषधि लेने गये तो द्रोणाचल को उखड़ा हुआ शून्य पाया। वह भयभीत हो देवताओं के पास आये कहा युद्ध बन्द करदो। जलन्धर को अव

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

नहीं जीत सकोगे। पहले इन्द्र ने जो शिवजी का अपमान किया था, यह उसी का फल है। यह सुन देवता युद्ध में जय की आशा त्याग कर इधर-उधर भाग गये। सिंधु सुत निर्भय हो अमरावती में घुस गया।

* सोलहवां अध्याय *

(श्री विष्णु-जलन्धर युद्ध)

सनत्कुमारजी बोले-तब जलन्धर को अपनी खोज में आते देख इन्द्रादिक देवता वहाँ से भी भय कम्पित होकर भाग चले। भागते-भागते वे बैकुण्ठ में विष्णुजी के पास पहुँचे। फिर देवताओं ने अपनी रक्षा के लिये उनकी बड़ी स्तुति की। देवताओं की उस दीन वाणी को सुनकर करुणासागर ने उनसे कहा कि, देवताओ! तुम भय त्याग दो। मैं युद्ध में शीघ्र ही उस जलन्धर को देखूँगा। ऐसा कहते ही भगवान् गरुण पर जा बैठे। तब देवताओं सहित उन्हें युद्ध क्षेत्र की ओर प्रयाण करते देख समुद्र-तनय लक्ष्मी के नेत्रों में जल भर आया और उन्होंने कहा कि, नाथ! यदि मैं सर्वदा आपकी प्रिय और भक्ता हूं तो मेरा भाई आपके द्वारा युद्ध में कैसे मारा जाना चाहिये? इस पर विष्णुजी ने कहा-अच्छा, यदि तुम्हारी ऐसी ही प्रीति है तो में उसे अपने हाथों नहीं मारूँगा। परन्तु युद्ध में तो जाऊँगा ही। ऐसा कह शङ्ख, चक्र, गदा पद्मधारी भगवान् विष्णु गरुण पर चढ़े हुए शीघ्र ही युद्ध के उस स्थान में जा पहुँचे कि जहाँ जलन्धर विद्यमान था। विष्णु तेज से दर्पित देवता सिंहनाद करने लगे। फिर तो अरुण के अनुज गरुण के पंखों की प्रबल वायु से पीड़ित हो दैत्य इस प्रकार घूमने लगे जैसे आँधीसे बादल आकाशमें घूमते है। तब अपने वीर दैत्यों से पीड़ित होते देख जलन्धर ने क्रुद्ध हो विष्णुजी को उद्धत वचन कहकर उन पर कठोर आक्रमण कर दिया।

-*-

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* सत्रहवां अध्याय *

(विष्णु-जलन्धर युद्ध)

सनत्कुमारजी बोले—दैत्यों के तीक्ष्ण प्रहारों से व्याकुल देवता इधर-उधर भागने लगे तब इन्द्रादिकों को इस प्रकार भयभीत हुआ देख गरुड़ पर चढ़े भगवान् युद्ध में आगे बढ़े। उन्होंने अपना शार्ङ्ग नामक धनुष उठा कर बड़े जोर का टङ्कोर किया। पलमात्र भगवान् ने हजारों दैत्यों का शिर काट गिराया। यह देखकर जलन्धर के क्रोध की सीमा न रही। बाणोंसे फिर तो विष्णु और जलन्धर का महा संग्राम हुआ। विष्णुजी ने अपने वेग से उस दैत्य की ध्वजा, छत्र और बाण काट डाले तथा एक बाणसे उसकी छाती में प्रहार किया, इससे व्यथित हो उसने अपनी प्रचण्ड गदा उठा गरुड़ मस्तक पर दे मारा। गरुड़ पृथ्वी पर गिर पड़ा। साथ ही क्रोध से उस दैत्य ने अपने होठ फड़फड़ाते हुए विष्णुजी की छाती में भी एक तीक्ष्ण बाण मारा। इसके उत्तर में विष्णुजी ने उस की गदा काट दी और अपने शार्ङ्ग धनुष पर बाण चढ़ा-चढ़ाकर उस को बाँधना आरम्भ किया। जलन्धर भी इन पर अपने पैने बाण बरसाने लगा। इसी समय जलन्धर ने विष्णुजी को कई पैने बाण मारकर वैष्णव धनुष को काट दिया। धनुष के कट जाने से भगवान् ने गदा ग्रहण कर ली और शीघ्र ही जलन्धर को खींच कर मारा भी परन्तु उस अनिवत अमोघ गदा की मार से भी वह महा दैत्य कुछ भी चलायमान न हुआ और मदोन्मत्त हाथी के समान फूल की माला के ही समान जाना। साथ ही उस युद्ध दुर्मद ने अत्यन्त ही क्रुद्ध होकर एक अग्निमुख त्रिशूल उठाकर विष्णु पर छोड़ दिया। विष्णुजी ने शिव के चरणों का स्मरण कर नन्दक नामक त्रिशूल से उसके खड्ग को छेद दिया। जलन्धर ने झपट कर विष्णुजी की छाती पर जोर का मुष्टिक मारा। उसके उत्तर में भगवान् ने भी उसकी छाती पर अपनी मुष्टिक का प्रहार किया। फिर दोनों घुटने टेक बाहुओं और मुष्टिकों से बाहु-युद्ध करने लगे। कितने ही देर तक भगवान्

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

उसके साथ युद्ध करते रहे । इससे उसको बड़ा आश्चर्य हुआ। भगवान् उस दैत्यराज से मेघवाणी में बोले–रण दुर्मद-दैत्य-श्रेष्ठ ! तू धन्य है जो इस महा युद्ध में इतने बड़े-बड़े आयुधों से भी भयभीत न हुआ। तेरे इस महायुद्ध से बड़ा प्रसन्न हूं । तू जो चाहे वर माँग । मायावी विष्णु की ऐसी वाणी सुनकर जलन्धर ने कहा— भाबुक ! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो यह वर दीजिये कि आप मेरी बहिन के साथ तथा अपने सारे कुटुम्बियों सहित मेरे घर पर निवास करें । सनत्कुमार जी कहते हैं––उसके ऐसे वचन सुनकर विष्णुजी को खेद तो हुआ किन्तु उसी क्षण उन देवेश ने 'तथास्तु कह दिया । अब विष्णुजी सब देवताओं के साथ जलन्धरपुर में जाकर निवास करने लगे । जलन्धर अपनी बहिन लक्ष्मी और देवताओं सहित विष्णु को वहाँ पाकर बड़ा प्रसन्न हुआ । देवों के स्थानों पर दैत्यों को स्थापित कर जलन्धर पृथ्वी पर आया । निशुम्भ को पाताल में स्थापित कर दिया और देव, दानव, यक्ष, गन्धर्व, सिद्ध, सर्प, राक्षस, मनुष्य आदि सबको अपना वशवर्ती बना त्रिभुवन पर शासन करने लगा । उसके धर्म राज्य में सभी सुखी थे ।

* अठारहवां अध्याय *

(नारदजी का कपट जाल)

सनत्कुमार जी बोले––मुनीश्वर ! तब उसको इस प्रकार धर्म पूर्वक राज्य करते हुए तथा भ्रातृभाव को देख देवता क्षुब्ध होगये । उन्होंने देवाधिदेव शङ्कर का मन में स्मरण करना आरम्भ किया कितने ही प्रकार से स्तुति की । तब भक्तों की कामना पूर्ण करने वाले । शङ्कर ने नारदजी को बुलाकर देवकार्य करने की इच्छा से उनको वहाँ भेजा । शम्भु-भक्त नारद शिव की आज्ञा से देवपुरी में गये । इन्द्रादिक सभी देवता व्याकुल हो शीघ्रता से उठ नारदजी की स्तुति करने लगे ।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

उत्कन्ठा भरी दृष्टि से सबने नारदजी की ओर देखा। अपने समस्त दुःखों को कहकर उसे नाश करने की प्रार्थना की। नारदजी ने कहा—मैं सब जानता हूँ। इसके लिये मैं दैत्यराज जलन्धर के पास जाने की इच्छा करता हूँ। ऐसा कहते हुए नारदजी देवताओं को आश्वासित कर जलन्धर की सभा में आये जलन्धर ने नारदजी के चरणों की पूजा कर हंसते हुए कहा—ब्रह्मन्! कहिए, आप कहाँ से आ रहे हैं और कहाँ-कहाँ पर आपने क्या-क्या देखा है? यहाँ कैसे आये हैं मेरे योग्य जो हो, उसकी आज्ञा दीजिए। नारदजी बोले-दानवराज! तुम धन्य हो! क्योंकि इस समय सब लोकों के रत्नों के भोक्ता एक तुम्ही हो।

दैत्य श्रेष्ठ! अब आप मेरे आगमन का कारण सुनिये। कि जिस लिए मे यहाँ आया हूं। हे दैत्यराज! मैं स्वेच्छा से कैलाश पर्वत पर गया था, जहां दश हजार योजनों में कल्पवृक्ष का वन है। वहाँ मैंने सैकड़ों कामधेनुओं को विचरते हुए देखा तथा यह देखा कि वन चिन्तामणि से प्रकाशित परम दिव्य अद्भुत और सब कुछ सुवर्ण मय है। मैंने वहां पार्वती के साथ स्थित शङ्कर को भी देखा जो सर्वाङ्ग सुन्दर, गौरवर्ण, त्रिनेत्र और मस्तक पर चन्द्रा धारण किये हुये हैं। यह देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि इनके समान समृद्धिशाली त्रिलोकी में कोई है या नहीं दैत्येन्द्र! उसी समय मुझे तुम्हारी भी समृद्धि का स्मरण हो आया और उसे देखने की इच्छा से तुम्हारे पास चला आया हूँ यह सुनकर जलन्धर को बड़ा हर्ष हुआ। उसने नारद जी को अपनी सब समृद्धि दिखला दी। उसे देख देवताओं का कार्य साधन करने के इच्छुक शिव प्रेरित नारद ने जलन्धर की बड़ी प्रशंसा की और कहा निश्चय ही तुम त्रिलोकपति होने के योग्य थे। तुम्हारे लिए ऐसा होना कोई विचित्र बात नहीं है ऐरावत! तुम्हारे पास है, उच्चैःश्रवा घोड़ा तुम्हारे पास है। कल्प वृक्ष कुवेर की निधि तुम्हारे घर है। मणियों और रत्नों का ढेर भी तुम्हारे यहाँ लगे हुए हैं।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

ब्रह्माजी का हंस युक्त विमान तुम ले आये हो और द्युलोक, पाताल और पृथ्वी पर जितने भी रत्नादिक ऐश्वर्यों को देखकर बड़ा प्रसन्न हूँ। परन्तु तुम्हारे पास कोई स्त्री-रत्न नहीं है। तुम कोई स्त्री-रत्न ग्रहण करो। सनत्कुमार जी कहते हैं, नारदजी के वचन सुनकर दैत्यराज काम से व्याकुल हो गया। उसने नारदजी को प्रणाम कर पूछा कि ऐसी स्त्री कहाँ मिलेगी जो सब रत्नों में श्रेष्ठ हो। यदि ऐसा जाया रत्न कहीं मिले तो आपकी आज्ञा से मैं उसे अवश्य लाऊंगा। नारदजी ने कहा—ऐसा रत्न तो कैलाश पर्वत में योगी शङ्कर ही के पास है। उनकी सर्वाङ्ग सुन्दर पत्नी देवी पार्वती बहुत ही मनोहर हैं। उनके समान सुन्दरी मैं किसी को भी नहीं देखता। देवर्षि उस दैत्य से ऐसा कह कर देवकार्य करने की इच्छा से आकाश मार्ग को चले गये।

* उन्नीसवाँ अध्याय *

(दूत—सम्वाद)

व्यासजी बोले—हे सनत्कुमार जी ! दैत्यराज ने क्या किया, सनत्कुमारजी बोले—उनके जाने पर जलन्धर अपने राहू नामक दूत को बुलाकर कैलाश पर जाने की आज्ञा दी और कहा कि वहाँ एक जटाधारी शम्भु योगी रहता है उससे उसकी सर्वाङ्ग सुन्दरी भार्या को मेरे लिये माँग लाओ। तब उसके ऐसे बचनों को सुनकर वह दूत शिव के स्थान में पहुँचा। परन्तु नन्दी ने उसे भीतर सभा में जाने से रोक दिया। किन्तु वह अपनी उग्रता से शिव की सभा में चला ही गया और शिव के आगे बैठकर उनकी आज्ञा ले वह सब सन्देह कह सुनाया जो दैत्यराज ने कहा था। फिर तो उस राहु नामक दूत के ऐसा कहते ही भगवान् शूलपाणि के आगे पृथ्वी फोड़ कर एक भयङ्कर शब्द वाला पुरुष प्रकट हो गया जिसका सिंह

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

के समान मुख था और जो मानो दूसरा नृसिंह ही था। वह दौड़कर राहु को खाने चला। राहु बड़े जोर से भागा। परन्तु उस पुरुष ने उसे पकड़ लिया। उसने शिवजी की शरण ले अपनी रक्षा माँगी। शिवजी ने उस पुरुष से (राहुको) छोड़ देने को कहा। परन्तु उसने कहा मुझे बड़ी जोर की भूख लगी है, मैं क्या खाऊँगा? महेश्वर ने कहा--यदि तुझे भूख विशेष बाधा देती है तो शीघ्र अपने हाथ और पैरों का माँस भक्षण करले। शिवजी की आज्ञा से वह पुरुष शीघ्र ही अपने हाथों और पैरों का माँस भक्षण कर गया। अब केवल उसका शिर शेष मात्र रह गया। तब उसका ऐसा कृत्य देख शिवजी ने प्रसन्न हो उसे अपना आज्ञापालक जान अपना परम प्रिय गण बना लिया और कहा कि मेरी पूजा के समय अब तेरी भी सदैव पूजा होती रहेगी और जो तेरी पूजा न करेंगे वे मेरे प्रिय न होंगे। उस दिन से वह शिवजी द्वार पर 'स्वकीर्तिमुख' नामक गण होकर रहने लगा।

* बीसवां अध्याय *

(शिवजी के गणों का असुरों से युद्ध करना)

व्यासजी बोले—सनत्कुमारजी! उस समय राहु उस पुरुष से छूटकर कहाँ गया? सूतजी कहते हैं--जब अमित तेजस्वी व्यासजी ने उन महामुनि से ऐसा पूछा तो सनत्कुमारजी ने कहा कि उसने छूटने पर वह बर्बर नाम से विख्यात हो गया। और मानो अपना नया जन्म पाकर उससे अपने को धन्य माना तथा वह धीरे-धीरे जलन्धर के पास गया। वहाँ जाकर उसने शङ्कर जी की सब चेष्टा सुनादी। उसे सुन दैत्यराज को बड़ा क्रोध आया और इसने सब दैत्यों को सेना सजाने की आज्ञा दी कायनेमि और शम्भु-निशुम्भ आदि सभी महाबली दैत्य तैयार होने लगे। एक से एक महाबली दैत्य करोड़ों-करोड़ों की संख्या में निकल युद्ध के लिए सन्नद्ध हुये। महा

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

प्रतापी धिन्धु-पुत्र शिवजी से युद्ध करने के लिये निकला। उसके आगे महर्षि शुक्र और छिन्न राहु हुआ। फिर तो उसी समय जलन्धर का मुकुट खिसक कर पृथ्वी पर गिर पड़ा। आकाश में मेघ छा गये। और बड़े अपसगुन हुये। इधर इन्द्रादिक सब देवताओं ने एक हो कैलाश पर शिवजी के पास पहुँच सब वृत्तान्त कहा और यह भी कहा कि आपने जलन्धर से युद्ध करने के लिये जो विष्णुको भेजा था सो वह उसके वशवर्ती हो तथा अब वे लक्ष्मी सहित जलन्धर के आधीन हो उसके घर में निवास करते हैं। इस कारण अब देवताओं को भी वहाँ रहना पड़ता है। अब वह महाबली सागर-पुत्र आपसे युद्ध करने आ रहा है। अतएव आप उसे मार कर हम सब की रक्षा कीजिये। देवताओं से यह सुन शङ्कर जी ने विष्णु जी को बुलाया। विष्णु जी शीघ्र आ उपस्थित हुए। तब शिवजी ने विष्णु जी से पूछा—हृषीकेश ! युद्ध में आपने जलन्धर का संहार क्यों नहीं किया ? और बैंकुण्ठ छोड़ आप उसके घर में कैसे चले गये ? यह सुन विष्णुजी ने हाथ जोड़ नम्रता पूर्वक भगवान् शङ्कर से कहा, उसे आपका अन्शी तथा लक्ष्मी का भ्राता होने के कारण ही मैंने नहीं मारा है। वह बड़ा ही बीर और देवताओं से अजय है। इसी पर मुग्ध होकर मैंने उसे उसके घर में स्वयं निवास करने का वर दे दिया है तथा इसी कारण मैं वहाँ रहता हूँ। विष्णु जी के इन बचनों को सुनकर भक्त-वत्सल शंकर जी हँस पड़े। उन्होंने कहा—विष्णो ! आप यह कहते हैं। मैं उस दैत्य जलन्धर को अवश्य मारूंगा। अब आप सब देवता जलन्धर को मेरे द्वारा मरा हुआ ही जानकर अपने स्थान को जाइये।

जब भगवान् शंकर ने ऐसा कहा तो सब देवता सन्देह रहित हो अपने स्थान को गये। इसी समय जलन्धर अपनी विशाल सेना के साथ पर्वत के समीप आ कैलाश को घेर सिंह नाद करने

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

लगा। दैत्यों के नाद और कोलाहल से शिवजी क्रुद्ध हो गये। उन्होंने अपने नन्दी आदि गणों को उससे युद्ध करने की आज्ञा देदी। कैलाश के समीप भीषण युद्ध होने लगा। दैत्यों के आचार्य शुक्रजी अपनी मृत सञ्जीवनी विद्या से सब दैत्यों को जिलाने लगे। यह देख शिवजी के गण व्याकुल हो गये और जाकर शुक्राचार्य की यह बात कह सुनाई। उसे सुनकर भगवान् रुद्र के क्रोध की सीमा न रही। वे अपने भयंकर रूप से दिशाओं को प्रज्वलित करने लगे। फिर तो उसी समय उनके मुख से एक बड़ी भयंकर कृत्या उत्पन्न हुई जिसकी दोनों जङ्घा ताल वृक्ष के समान थीं। वह युद्ध—भूमि में जा सब असुरों का चर्वण करने लग गई। तब युद्ध-भूमि में इस प्रकार विचरते हुए वह भृगुजी के समीप पहुँची और उन्हें शीघ्र ही अपनी योनि में गुप्त कर लिया। फिर स्वयं भी अन्तर्ध्यान हो गई। शुक्र के गुप्त हो जाने से दत्यों का मुख मलिन पड़ गया और वे युद्ध भूमि छोड़ भागे। इस पर उनके शुम्भ-निशुम्भ और कालनेमि पर बड़ा कठिन प्रहार करना आरम्भ किया और ऐसा ही शिवजी के नन्दी आदिक वीर गणों ने भी जिसमें गणेश और स्वामी कार्तिकेय जी थे अपने गणों को रोक-रोककर दैत्यों से भीषण युद्ध करना आरम्भ किया।

* इक्कीसवां अध्याय *

(द्वन्द-युद्ध)

सनत्कुमारजी बोले--शिवजी के गण प्रबल बलवान थे और उन्होंने जलन्धर के शुम्भ-निशुम्भ और महासुर कालनेमि आदि को पराजित कर दिया। यह देख सागर पुत्र जलन्धर एक विशाल रथ पर जिस पर लम्बी पताका लगी हुई थी चढ़कर युद्ध भूमि में आकर घोर गर्जना करने लगा। इधर जयशील शंकर के गण भी युद्ध में

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

तत्पर हो गर्जने लगे। इस प्रकार दोनों सेनाओं के हाथी, घोड़े, रथ, शङ्ख भेरी तथा दोनों ओर के बीरों के सिंहनाद से पृथ्वी व्याप्त होगई। पश्चात् जलन्धर ने कुहरे के समान बाणों को फेंककर पृथ्वी से लेकर आकाश तक व्याप्त कर दिया और नन्दी को पाँच, गणेश को पाँच बीरभद्र को एक साथ बीस बाँण मार कर उनके शरीर को छेद दिया और मेघ के समान गर्जन करने लगा। यह देख रुद्र पुत्र कार्तिकेय ने भी दैत्य जलन्धर को अपनी शक्ति उठाकर मारा और घोर गर्जन किया जिसके आघात से पृथ्वी पर गिर पड़ा। परन्तु वह इतना बली था कि शीघ्र ही उठ पड़ा और क्रोधाविष्ट हो कार्तिकेय पर अपनी गदा का प्रहार कर दिया। ब्रह्म-वरदान की सफलता के लिए शङ्कर पुत्र कार्तिकेय पृथ्वी पर सो गये। गणेशजी और नन्दी भी व्याकुल हो गदा प्रहार से पृथ्वी पर गिर गए। वीरभद्र पर परिघ का प्रहार किया। उसके लगने से वीरभद्र का शिर फट गया और बहुत सा रक्त बहने लगा। वीरभद्र व्याकुल हो धराशायी हुए। तब वीरभद्र को पृथ्वीपर गिरा देख शङ्कर के गण चिल्लाते हुए संग्राम भूमि छोड़ भाग चले।

* बाईसवां अध्याय *

(शिव जलन्धर युद्ध)

सनत्कुमार जी बोले—अब रौद्ररूप महाप्रभु शङ्कर उन वीर गणों के साथ नन्दी पर चढ़कर हँसते हुये युद्ध भूमि में आए। तब उनको आया देख उनके पराजित गण फिर लौटे। और सिंहनाद करते हुए अपने आयुधों से दैत्यों पर प्रहार करने लगे। भीषण रूप धारी रुद्र को देख दैत्य भागने लगे। तब युद्ध में अपने दैत्यों को पराँगमुख होते देख जलन्धर हजारों बाण छोड़ता हुआ शङ्करकी ओर दोड़ा। उसके शुम्भ-निशुम्भ आदि वीर अपने होठों को काटते

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

हुए शङ्कर की ओर दौड़े । इतने मे शङ्करजी ने जलन्धर के सब बाण जालों को काट अपने अन्य बाणों की आँधी से दैत्यों को पीड़ित कर दिया । खड्ग नामक दैत्य को अपने फरसे से मार डाला। बलाहक का भी शिर काट दिया। घस्मर भी मारा गया और किसी को शिवजी के बैल ने मारा और बहुत से उनके बाणों से मार डाले गये । यह देख जलन्धर अपने शुम्भादिक दैत्यों को धिक्कारने और भयभीतों को धैर्य देने लगा । पर किसी प्रकार भी उसके भय-ग्रहस्त दैत्य युद्ध को न आते थे । दैत्य-सेना ने पलायन किया । तब महाक्रुद्ध जलन्धर शिवजी को अपनी ओर ललकार ने लगा। साथही उसने सत्तर बाण मार कर शिवजी को विद्ध कर दिया तथा और भी बहुत से बाणों का प्रहार किया । शिवजी उसके बाणों को काटते रहे यहाँ तक कि इन्होंने जलन्धर की ध्वजा, छत्र और धनुष को काट दिया । फिर सात बाण से उसके शरीर में भी तीव्र आघात पहुँचाया । धनुष के कट जाने से जलन्धर ने गदा उठाई । शिवजी ने एक प्रचन्ड बाण मार कर उसके गदा के टुकड़े कर दिये। तब उसने समझा कि शंकर मुझ-से अधिक बलवान हैं । अतएव उसने गन्धर्वी माया उत्पन्नकर दी। अनेकों गन्धर्व और अप्सराओं के गण प्रकट हो गये । वेणु और मृदङ्गादि बाजों के साथ नृत्य और गान होने लगा । इससे अपने गणों सहित रुद्र भी मोहित हो एकाग्र हो गये। उन्होंने युद्ध बन्द कर दिया ।

फिर तो काम मोहित जलन्धर ने बड़ी शीघ्रता से त्रिनेत्र शङ्कर का रूप धारण कर वृषभ पर बैठ पार्वती के पास जा पहुँचा । उधर जब पार्वती अपने पति शङ्कर को आते देखा तो सखियों का साथ त्याग वे आगे आईं उन्हें देख कामातुर जलन्धर का वीर्यपात हो गया। और उस पतन से वह जड़ भी हो गया। गौरी ने उसे दानव समझा । वह अन्तर्ध्यान हो उत्तर की

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

ओर मानस पर चली गईं। तब पार्वतीजी ने विष्णुजी को बुलाकर दैत्यधन जलन्धर का वह कृत्य कहा और यह प्रश्न किया कि, क्या आप इससे अवगत हैं? भगवान् ने हाथ जोड़ शिर नवा उत्तर दिया—आपकी कृपा से मुझे सब ज्ञात है। हे माता! अब जो आज्ञा हो पालन करूं। जगन्माताने विष्णुजी से कहा—उस दैत्य ने जो मार्ग खोला है उसका अनुसरण उचित है। पार्वती जी की यह आज्ञा पाते ही विष्णुजी उसको शिरोधार्य कर छल करने के लिये जलन्धर के नगर की ओर गये।

* तेईसवां अध्याय *

(बृन्दा का पतिव्रत भङ्ग)

व्यासजी बोले—सनत्कुमार जी! अब आप यह कहिये। कि भगवान्ने वहाँ जाकर क्या किया। सनत्कुमारजी बोले-जलन्धरके नगर में जाकर विष्णुजी ने उसकी पतिव्रता स्त्री वृन्दा का पतित्य भङ्ग करने का विचार किया। वे उसके नगर में एक उद्यान में जाकर ठहर गये और रात में उसको स्वप्न दिया। जलन्धर-पत्नि पतिव्रता वृन्दा ने रात में यह स्वप्न देखा कि उसका पति नग्न होकर शिर पर तेल लगाये महिष पर चढ़ा है। वह काले रङ्ग के फूलों की माला पहिने है तथा उसके चारों ओर हिंसक जीव हैं। वह शिर मुड़ाये हुए अन्धकार में दक्षिण दिशा की ओर जा रहा है। तत्काल ही वह बाला जाग पड़ी और स्वप्न का विचार करने लगी। इतने में ही जो उसने सूर्य को उदय होते हुए देखा तो उसमें एक छिद्र दिखाई पड़ा तथा सूर्य कान्तिहीन था। इससे उसने अनिष्ट जाना। वह भयभीत हो रोती हुई छज्जे, अटारी तथा भूमि पर कहीं भी शान्ति को न प्राप्ति हुई। फिर अपनी दो सखियों के साथ उपवन में गई। परन्तु वहाँ भी किसी प्रकार का सुख न पाया। तब वह स्त्री वन में गई तो वहाँ भी उसे उद्विग्नता ही रही और वहाँ उसने सिंहके समान दो भयङ्कर राक्षसों

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

को देखा जिससे उसकी बिहुलता का अन्त न रहा और वह भागने लगी। परन्तु उसी क्षण उसके समक्ष अपने शिष्यों सहित एक शाँत मौनी तपस्वी वहाँ आगया। भयभीत वृन्दा उसके गले में अपना हाथ डाल उससे रक्षा की याचना करने लगी। मुनि ने अपनी एक ही हुँकार से उन राक्षसों को भगा दिया। वृन्दा को आश्चर्य हुआ। वह भय से मुक्त हो मुनि नाथ को हाथ जोड़ प्रणाम करने लगी और कृतज्ञता ज्ञापन किया। फिर उस मुनि से अपने युद्ध-रत पति के सम्बन्ध में उसकी कुशल-क्षेम का प्रश्न किया। मुनि ने मौन हो नीचे-ऊपर देख कर मानो कुछ कहना ही चाहा कि उसी समय दो बानर मुनि के समक्ष आकर हाथ जोड़ खड़े हो गये और ज्योंही मुनि ने भृकुटि-संकेत किया त्योंही वे उड़कर आकाश में चले गये। फिर जलन्धर का शिर और कबन्ध लिये मुनि के आगे आगये। तब अपने पति को मृतक हुआ जान वृन्दा मूर्छित हो पृथ्वी पर गिर पड़ी और अनेक प्रकार के बचन कहकर दारुण विलाप किया। पश्चात् उस मुनि से कहा--हे कृपानिधे! आप मेरे पति को जीवित कर दीजिये।

तब मुनीश्वर ने कहा--वह शिवजी द्वारा युद्ध में मारा गया है, जीवित हो नहीं सकता। परन्तु शरणागत की रक्षा सनातन धर्म है, इस कारण कृपा कर मैं इसे जिलाये देता हूं। सनत्कुमार जी कहते हैं। वह मुनि साक्षात् विष्णु ही थे जिन्होंने यह सब माया फैला रक्खी थी। वह बहाँ वृन्दाके पति को जीवितकर अन्तर्ध्यान हो गये। सागरात्मज ने उठकर बृन्दा का आलिङ्गन किया। और मुख चूमा। बृन्दा भी पति को जीवित हुआ देख अत्यन्त हर्षित हुई और अब तक की हुई सब बातों को स्वप्न समझा। पश्चात् वृन्दा सकाम हो बहुत दिनों तक उसी बन में रमण करती रही। पश्चात् एक वार के सुरत एवं सम्भोग काल के अन्त में उन्हीं विष्णु को देखकर उन्हें ताड़ित कहती हुई बोली—'हे पराई स्त्री से गमन करने वाले विष्णु!

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

तुम्हारे शील को धिक्कार है। मैंने जान लिया कि वह मायावी तपस्वी तुम्हीं थे। व्यासजी ऐसा कहकर परम क्रुद्ध हो पतिव्रता वृन्दा ने अपने तेज को प्रकट करते हुये यह शाप दिया कि, जो तुमने माया से दो राक्षस मुझे दिखाये वे, वही दोनों राक्षस तुम्हारी भी स्त्री को हरण करेंगे और उसके विरह में दुःखी होकर तुम बानरों की सहायता से वन में भ्रमण करोगे और यह सर्वेत्तर जो तुम्हारा शिष्य बना है, यह वहाँ भी तुम्हारा साथी रहेगा। ऐसा कहती हुई पतिव्रता वृन्दा विष्णुजी के मना करने पर भी अग्नि में प्रवेश कर गई। ब्रह्मादिक देवता आकाश से उसकी सद्गति देखते रहे। वृन्दाके शरीर का तेज पार्वतीजी के शरीर में चला गया और आकाश से जय-जय शब्द होने लगा।

* चौबीसवां अध्याय *

(जलन्धर बध)

व्यासजी बोले—तात ! इसके पश्चात् युद्ध में क्या हुआ। सनत्कुमारजी बोले—जब गिरिजा वहाँ से अदृश्य हो गईं और गदधर्वी माया भी विलीन हो गई, तब भगवान् वृषभध्वज चेतन्य हो गये। उन्होंने लौकिकता व्यक्त करते हुए बड़ा क्रोध आया। फिर विस्मितमना शङ्कर जलन्धर से युद्ध करने लगे। जलन्धर शङ्कर के वाणोंको काटने लगा परन्तु जब काट न सका तब उसने उन्हें मोहित करने के लिए माया की पार्वती बना अपने रथ पर बाँध लिया जो शुम्भ-निशुम्भ द्वारा वध्यमान थीं और विलाप कर रही थी। तब अपनी प्रिया पार्वती को इस प्रकार कष्ट में पड़ा देख लौकिक-लीला दिखाते हुये शंकर प्राकृत जनों की तरह व्याकुल हो गये और उन्होंने भयंकर रौद्र-रूप धारण कर लिया। अब उसके रौद्र रूप को देख कोई भी दैत्य उनके सामने खड़ा होने में समर्थ न हो सका और सब भागने-छिपने लगे। यहाँ तक कि शुम्भ-निशुम्भ भी युद्ध में स्थित होने को

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

समर्थ न हो सके। जलन्धर की सारी माया क्षण भर में नष्ट हो गई। संग्राम में हाहाकार होने लगा। शिवजीने उन भागते हुए शुम्भ-निशुम्भ को शाप देकर बड़ी धिक्कार दी और कहा–तुम दोनों बड़े दुष्ट हो। तुम पार्वती को मारते थे और अब युद्ध से भागते हो। भागते को मारना पाप है। परन्तु गौरी तुमको अवश्य मारेगी। शिवजी के ऐसा कहने पर समुद्र-पुत्र जलन्धर अग्नि के समान प्रज्वलित हो उठा। उसने शिवजी पर घोर बाण बरसा कर पृथ्वी पर अन्धकार कर दिया। तब उस दैत्य की ऐसी चेष्टा देखकर शङ्करजी बड़े ही क्रोधित हुए तथा उन्होंने अपने चरणांगुष्ट से बनाये हुए सुदर्शन चक्र को चलाकर उसका शिर काट लिया। एक प्रचण्ड शब्द के साथ उसका शिर पृथ्वी पर गिर पड़ा। अञ्जन पर्वत के समान उसके शरीर के दो खण्ड हो गये। उसके रुधिर से संग्राम भूमि व्याप्त हो गई। शिवाज्ञा से उस का रक्त और माँस महारौरव में जाकर रक्त का कुण्ड हो गया। तथा उसके शरीर का तेज शङ्करजी के शरीर में प्रवेश कर गया। जलन्धर को देख देवता, गन्धर्व और सर्प प्रसन्न हो गये।

* पच्चीसवां अध्याय *

(देवताओं द्वारा शिवजी की स्तुति)

सनत्कुमारजी बोले—ब्रह्मादिक देवताओं ने शिर झुका-भगवान् शङ्कर की स्तुति की और कहा–प्रभो ! आप प्राकृति से परे परब्रह्म और परमेश्वर हैं शङ्करजी ! हम ब्रह्मादिक आपके दास हैं। हे देवेश ! हे शिव ! आप प्रसन्न हो, हमारी रक्षा कीजिये। सनत्कुमारजी कहते हैं-जब इस प्रकार ब्रह्मादिक सब देवताओं और मुनियों ने शिवजी की अनेक स्तुति कर उनके चरण कमलों का ध्यान करते हुए मौन ग्रहण कर लिया, तब उसे सुनकर देवताओं को वर दे, वे वहीं अन्तर्धान हो गये। पश्चात शिवजी का यश गाते हुए सब देवता भी प्रसन्नता पूर्वक अपने-अपने स्थान को गये।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* छब्बीसवां अध्याय *

(विष्णु, मोहननाथ, तथा धात्री; मालती और तुलसी का आविर्भाव)

व्यासजी बोले–ब्रह्माजी के पुत्र ! वृन्दा को मोहित कर विष्णुजी ने क्या किया और फिर वे कहाँ गये ? सनत्कुमारजी बोले—जब देवता स्तुति कर मौन हो गए तब शङ्करजी ने सब देवताओं से कहा-ब्रह्मादिक देवताओ ! जलन्धर तो मेरा अंश था। मैंने उसे तुम्हारे लिये नहीं मारा। किन्तु यह मेरी सांसारिक लीला थी। फिर भी आप लोग यह सत्य कहिये कि इससे आप सुखी हुए या नहीं तब तो ब्रह्मादिक देवताओं के तेत्र हर्ष से खिल गये और उन्होंने शिवजी को प्रणाम कर विष्णुजीका वह सब वृत्तान्त कह सुनाया जो उन्होंने बड़े प्रयत्न से वृन्दा को मोहित किया था तथा वह अग्नि में प्रवेश कर परम गति को प्राप्त हुई थी। देवताओं ने यह भी कहा कि, तभी से वृन्दा की सुन्दरता पर मोहित हुए विष्णु उनकी चिता की राख लपेटे इधर-उधर घूमते हैं। अतएव आप उन्हें समझाइये। क्योंकि यह प्राकृतिक सारा चराचर आपके आधीन है। देवताओं से यह वृत्तान्त सुन शङ्कर जी ने उन्हें अपनी दुक्तर माया समझाई और कहाकि यह सारा जगत उसी के आधीन है। उसी से मोहित विष्णु भी काम के वश होगये हैं। परन्तु महादेवी उमा त्रिवेदी की जननी सबसे परे है। वह मूल-प्रकृति, परम मनोहर और वही गिरजा भी कहलाती हैं। अतएव विष्णु का मोह दूर करने के लिये आप सब उनकी शरण में जाइये। यदि वह प्रसन्न हो जायेंगी तो आप सबका कार्य हो जायगा। शङ्कर जी की आज्ञा से सब देवता मूल-प्रकृति को प्रसन्न करने चले। उसके स्थान पर पहुँच कर उनकी बड़ी स्तुति की। तब यह आकाशवाणी हुई कि हे देवताओ ? मैं ही तीन प्रकार से तीनों गुणों से पृथक होकर स्थित सत्य गुणसे गौरा, रजोगुण से लक्ष्मी और तमोगुण से ज्योति रूप हूँ। अतएव अब आप लोग मेरी रक्षा के लिये उन देवियों के पास

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

जाओ तो वे तुम्हारे मनोरथों को पूर्ण कर देंगी वह वाणी सुन देवताओं के नेत्र खुल गये। वे भगवती के वाक्यों का आदर करते हुए गौरी लक्ष्मी और सरस्वती को प्रणाम करने लगे। सब देवताओं ने भक्ति पूर्वक उन सब देवियों की प्रार्थना की उस स्तुति से तीनों देवियाँ प्रकट हो गईं। सब देवताओं ने प्रसन्न हो भक्ति पूर्वक अपना निवेदन किया। देवियों ने कुछ बीज देकर कहा, इसे लेजाकर बो दो तो तुम्हारे सब कार्य सिद्ध हो जायेंगे। ब्रह्मादिक देवता उन बीजों को ले विष्णुजी के पास गये। वृन्दाकी चिता-भूमि में डाल दिया। उससे धात्री, मालती और तुलसी प्रकट हुई विधात्री के बीज से धात्री, लक्ष्मीके बीज से मालती और गोरी के बीज से तुलसी प्रकट हुई। विष्णुजी ने ज्योंही उन स्त्री रूप वाली वनस्पतितों को देखा कि वे उठ बैठे। कामासक्त चित्त से मोहित हो उनसे याचना करने लगे। धात्री और तुलसी ने उनसे प्रीति की। विष्णुजी सारा दुःख भूल देवताओं से नमष्कृत हो अपने लोक बैंकुण्ठ में चले।

* सत्ताईसवां अध्याय *

(शंखचूर्ण उत्पत्ति)

सनत्कुमारजी बोले--मुने! शंखचूर्ण नामक एक और दानव था, जिसे शिवजी ने रणभूमि में अपने त्रिशूल से मारा था। अब तुम पाप-नाशक शिवजी के उसी दिव्य चरित्र को सुनो। विधाता के पुत्र मरीचि और उनके पुत्र कश्यप थे। कश्यप बड़े धर्मात्मा, सृष्टिकारक और ब्रह्माजी की आज्ञा को मानने वाले थे। दक्षजी ने प्रसन्न होकर उनको अपनी तेरह कन्यायें व्याह दीं, जिनकी सन्तानों से संसार भर गया। कश्यप की उन स्त्रियों में एक का नाम दनु था जो परम साध्वी, रूपवती और सौभाग्य-वर्धिता थी। उस दनु के बहुत पुत्र हुए। उनमें विप्रचित नामक एक पुत्र बड़ा बड़ा बली और पराक्रमी था। उसके एक और पुत्र हुआ जिसका नाम "दम्भ" पड़ा और यह भी बड़ा धार्मिक,

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by Gangotri Siddhanta Gyaan Kosha

विष्णु-भक्त और जितेन्द्रिय था। परन्तु जब उसके कोई पुत्र नहीं हुआ तो उसने शुक्राचार्य को गुरु बनाकर कृष्ण मन्त्र ग्रहण कर पुष्कर तीर्थ में जाकर एक लाख वर्ष पर्यन्त तप किया। उसके तप से तप्त हो देवता ब्रह्माजी को साथ ले विष्णुजी के पास गये। सब समाचार कहा। विष्णुजी ने कहा—घबराओ नहीं, अभी प्रलय का समय नहीं है। मेरा भक्त दम्भ नामक दानव पुत्र-प्राप्ति के लिये तपस्या कर रहा है। मैं उसे वरदान से निवृत्त करूँगा। देवता सन्तुष्ट हो अपने लोकों को आये भगवान् बिष्णु भी उसे बरदान देने के लिये पुष्कर गये। दम्भ से वर माँगने को कहा दम्भ ने विष्णुजी से उनके समान हो एक ऐसा महाबली और पराक्रमी पुत्र माँगा, विष्णुजी ने तथास्तु कह फिर अपने लोक को चले आए। दानव भी अपने घर गया। थोड़े ही समय में उसकी स्त्री गर्भवती हुई। उसके अत्यन्त तेज से उसका घर प्रकाशित होगया। सुदामा नामक गोप उसके गर्भ में आया जो कृष्ण का मित्र था और जिसे राधा ने शाप दिया था। समय पर उस साध्वी ने श्रेष्ठ पुत्र उत्पन्न किया। मुनियों को बुला जातकर्म कराया। उसका नाम शङ्खचूर्ण पड़ा।

* अट्ठाईसवां अध्याय *

(शंखचूर्ण बिवाह)

सनत्कुमार जी बोले—अब जैगषिव्य के उपदेश से शंखचूर्ण पुष्कर में जाकर कठिन तप करने लगा। एकाग्र मन हो गुरु के दिए हुए उपदेश के अनुसार इन्द्रियों को वश में कर प्राप्त मन्त्रों का जप किया, तब लोक-पितामह ब्रह्माजी उसे वर देने आये दानवेन्द्रने स्तुति कर ब्रह्माजी को प्रसन्न किया। ब्रह्माजी ने कहा—वर माँगो। उसने कहा, मुझे देबता न जीत सकें। ब्रह्माजी ने कहा, ऐसा ही होगा। यह वर दे ब्रह्माजी ने उसे श्रीकृष्णजी का अक्षय कवच दे दिया और कहा कि तू बद्रिकाश्रम में चला जा जहाँ सकामा तुलसी तप कर रही

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

है। तू उससे विवाह कर। वह धर्मराज की कन्या है। ऐसा कहकर ब्रह्माजी अन्तर्ध्यान हो गए। शंखचूर्ण बद्रिकाश्रम में तुलसी के पास चला गया। तुलसी ने कहा—मैं धर्मध्वज की कन्या हूं, तुम कौन हो? यहाँ से चले जाओ। नारि जाति बड़ी मोहिनी होती है। इस पर उस ने अपने को कामी होने से निर्दोष प्रमाणित किया तथा यह भी कहा कि मैं यहाँ ब्रह्माजी की आज्ञा से आया हूं। मैं दम्भ-पुत्र दानव दनुके वंश में राधिका के शाप मैं दानव हुआ हूँ। ऐसा कहकर शंखचूर्ण मौन हो गया तुलसी ने कहा, यह बात सत्य है। वह फिर हँसने लगी। तुलसी ने कहा—वही पुरुष संसार में धन्य है जो स्त्रियों से पराजित न हो। तुमने मुझे अपने विचार में पराजित किया। तुलसी के ऐसा कहते ही वहाँ उसी समय ब्रह्माजी आ गये उन्होंने शंखचूर्ण से कहा-तुम इसके साथ विवाह क्यों नहीं करते हो? गन्धर्व रीति से विवाह कर इसका पाणिग्रहण करो। तुम पुरुषों में रत्न हो और यह स्त्रियों में रत्न है। ऐसा उपदेश दे ब्रह्माजी अपने लोक को चले गये। दानव ने गन्धर्व रीति से उससे बिवाह कर अपने स्थान को प्रस्थान किया। स्थानों में जाकर तुलसी से रमण करने लगा।

* उन्तीसवाँ अध्याय *

(शंखचूड़-राज्य-प्रशंसा)

सनत्कुमारजी बोले—जब इस प्रकार विवाह कर शंखचूड़ घर आया और तपस्या कर बर पाया तो सब दानवों को बड़ी प्रसन्नता हुई। कुलगुरु शुक्राचार्य ने भी आकर शिष्य को आशीर्वाद दिया। फिर देवताओं और असुरों का स्वाभाविक वर वर्णन कर उनका एक संक्षिप्त इतिहास कहा और शुक्राचार्य ने शंखचूड़ को असुराधिपत्य पद पर अभिषेक किया। फिर वह दैत्यों और दानवों की बृहत् सेना ले इन्द्रपुरी को विजय करने गया। तब शंख को युद्ध में आया हुआ सुनकर देवताओं की सेना ले राजा इन्द्र उससे युद्ध करने

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

आये। देवताओं और असुरों का भयङ्कर संग्रास हुआ। बली देवताओं से असुर पराजित हो भाग चले। दैत्यों के पलायन से दैत्यराज ने क्रुद्ध हो देवताओं से विकट संग्राम किया। उसके बढ़े वेग से देव-सेना भाग चली। उन्होंने गुफाओं और कन्दराओं की शरण ली। महा प्रतापी दम्भ ने सब लोकों को जीत देवताओं का अधिकार हरण कर लिया। सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि कुबेर, यम और वायु सब देवता उसके वशवर्ती हो गये। इस प्रकार राजा-राजेश्वर शंखचूड़ ने कितने ही वर्षों तक सम्पूर्ण भुवनों का राज्य किया। उधर राज्य-हरण से पराजित देवता ऋषियों को साथ ले ब्रह्माजी की सभा में गये। अपना सब वृत्तान्त कहा। ब्रह्माजी उन्हें साथ ले विष्णु जी के पास वैकुण्ठ में गये वहाँ सबने मिलकर शंख, चक्र, गदा, पद्मधारी, लक्ष्मीपति भगवान् विष्णु को प्रणाम कर उनकी स्तुति की तथा रोते हुए अपना दुःख कहा। उसे सुनकर भगवान् विष्णु बोले—मैं शंखचूड़ के सब वृत्तान्तों को जानता हूं। पूर्वकाल से ही मेरा बड़ा भक्त और परम तेजस्वी है। इस सम्बन्ध में शिवजी से परामर्श करूँगा। देवताओं सहित ब्रह्मा से ऐसा कहकर विष्णु जी उन्हें साथ ले शिवलोक की ओर चले गये।

* तीसवाँ अध्याय *

(देवगणों का शिवजी के पास प्रत्यागमन)

सनत्कुमारजी बोले—व्यासजी ! इस प्रकार ब्रह्मादिकों को साथ ले जब विष्णुजी शिवलोक में पहुँचे तो उन्होंने क्या देखा कि शिव जी की सभा लगी हुई है और समस्त गण उनको चारों ओर से घेरे हुए बैठे हैं। उसके विचित्र ठाट-बाट हैं उनके दिव्य सभा की अद्भुत रत्नमय छटा है। उसके मध्य में पञ्चमुख, त्रिनेत्र शङ्कर बैठे हैं जिनका गौरवर्ण शरीर बड़ा द्युतिमान है और जो त्रिशूलादि

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

धारण किये, भस्म और रुद्राक्ष से शोभित हैं। तब पार्वती सहित शङ्कर को इस प्रकार उस सभा में रत्न सिंहासन पर विराजमान देख विष्णुजी को बड़ी प्रसन्नता हुई। वे शिवजी की सभा में जा वहाँ होने वाले सुन्दर नृत्य और गीत को जैसे सब सुन रहे थे, सुनने लगे। फिर अवसर पाते ही उन्होंने देवाधिदेव शङ्कर की स्तुति कर कहा कि—'हे प्रभो! हम सभी देवता आपकी शरण हैं। हम दुखियों की रक्षा कीजिए। हम शखचूड़ से त्रस्त बहुत व्याकुल हैं। हे गौरीश! आप प्रसन्न हो हमारा उद्धार कीजिये।

* इकत्तीसवां अध्याय *

(शिवजी द्वारा आश्वासन)

सनत्कुमारजी बोले—ब्रह्मादिक देवताओं की बात सुनकर शिव जी ने गम्भीर वाणी में उनसे कहा—हरि! ब्रह्मादिक देवताओ! शंखचूड़ इतिहास मुझे अच्छी तरह ज्ञात है। उसका वध अवश्य होगा वह देवद्रोही तो है परन्तु धर्म में बड़ा विलक्षण है। मेरे शासन में तुम्हें किसी बात की चिन्ता न करनी चाहिए। भगवान् शंकर ऐसा कह ही रहे थे कि इसी समय शिवजी की अनुकूलता के लिए राधिका और पार्षदों के साथ श्री कृष्णजी भी वहाँ आ उपस्थित हुए। शिवजी की की आज्ञा से सभी समीप बैठे। फिर श्रीकृष्णने शिवजी की अनुकूलता के लिए उनकी एक मनोहारिणी स्तुति की और कहा—गौरीश! हम सब आपही से सनाथ हैं। आज मैं अपनी स्त्री सहित शापित हूँ। मेरा श्रेष्ठ पार्षद सुदामा नामक गोप भी राधा के शाप से दानवीय यौनि को प्राप्त हुआ है। परमेश्वर! हम पर प्रसन्न हों। हमारा शापोद्धार कीजिये। शिव ने कहा—गोपिका नाथ! भयको त्याग सुखी होओ। आगे चलकर तुम्हारा कल्याण होगा। बाराह कल्प में तरुणी राधा के साथ शाप भोग कर फिर तुम अपने धाम को प्राप्त होओगे। सुदामा गोप दानव योनि को प्राप्त उस समय सारे

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

जगत को दुःख दे रहा है। इस समय उसका नाम शंखचूड़ है। श्री कृष्ण से ऐसा कहकर शिवजी ने ब्रह्मा और विष्णु से कहा--कि अब तुन दोनों शीघ्र ही यहाँ से जाकर देवताओं को समझाओ। मेरा पूर्णरूप कैलाश पर विराजमान है और मुझमें तथा उसमें कुछ अन्तर नहीं है। जो हम दोनों में भेद करेगा वह कष्ट पावेगा। फिर तो राधा सहित श्रीकृष्ण तथा विष्णु और ब्रह्मा भी भय रहित तथा आनन्द युक्त हो शीघ्र ही अपने-अपने स्थान को लौट गये। सब देवता स्तुति करने लगे। शिवजी ने हंसकर कहा-तुम सब देवता अपने स्थान को जाओ मैं शंखचूड़ को अवश्य मारूंगा।

* बत्तीसवाँ अध्याय *

(पुष्पदन्त-शंखचूण वार्ता)

सनत्कुमारजी वोले-महेश ने गन्धर्वराज बित्ररथ को अपना दूत बनाकर शंखचूड़के पास भेजा जिसका नगर महेन्द्र और कुबेरके भवन समीप था वहाँ पहुँच शङ्कर के दूत ने कहा-तुम देवताओं का अधिकार दे दो अन्यथा मेरे साथ युद्ध करो। मैं महा रुद्र तुम्हारा वध करूंगा मेरा पुष्पदन्त है। शङ्कर ने जो मुझसे कहा है, वही मैंने तुम से कहा है। अब जैसा कहो मैं बैसा जाकर उनसे कह दूं। सनत्कुमारजी कहते हैं-तब पुष्पदन्त से ऐसा सुनकर राजा ने हंसकर इससे कहाकि में देवताओंको राज्य न दूंगा यह पृथ्वी वीर भोग्य है। मैं देवताओं के पक्ष पाती रुद्र को युद्ध दूंगा मैं पहले ही रुद्र पर आक्रमण करूंगा सुबह में रण मैं प्रस्थान करूंगा तुम जाकर ऐसा ही रुद्र से कहो। पुष्पदन्त अपने स्वामी शिवजी के पास लौट आया और जैसा उसने कहा था सब कह सुनाया।

-*-

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* तेतीसवां अध्याय *

(शङ्करजी की युद्ध यात्रा)

ऋषि सनत्कुमार बोले--तब दूत के इन बचनों को सुनकर शङ्कर क्रोधित होगये और उन्होंने अपने वीर भद्रादिक गणोंको बुलाकर दोनों कुमारों और भद्रकाली सहित शङ्खचूड़ से युद्धकर उसका वध करने के लिए शीघ्र गमन की आज्ञा दी। स्वयं भी अपने वीर गणों एवं सैनिकों सहित प्रस्थान किया। सभी वीर शास्त्रादिक से युक्त शङ्कर के साथ चले। कार्तिकेय और गणेशजी सब सेनाके अधिपति थे। आठों भैरव, आठों बसु, एकादश रुद्र और द्वादस सूर्य ये सभी वड़ी शीघ्रता से वहाँ शिवजी के साथ आये। अग्नि, चन्द्रमा, विश्वकर्मा, अश्विनी कुमार, कुबेर, यम, नैर्ऋति, नलकूवर, वायु, वरुण, बुध, और सभी माङ्गलि के ग्रह तथा महाबली काम शंकर जी के साथ आये तथा अपने वीर पार्षदों सहित सौ भुजा वाली देवी भद्रकाली स्वयं उपस्थित हुई जिव्हा एक योजन तक चलायमान होरही थी और शंख, चक्र, गदापद्म और खड्ग चर्म धनुष वाण धारण किये थी। उनके हाथ में एक योजन का गोल खप्पर था और वह आकाश स्पर्शी त्रिशूल तथा एक योजन की लम्बी शक्ति धारण किये थी तीन करोड़ योगिनी और तीन करोड़ डाकिनियाँ उनके आथ अपनी सेनाले शिवजी शंखचूड़ से युद्ध करने चले उन्होंने चन्द्रभागा नदी के तट पर एक बट-वृक्षके नीचे शिवजी ने अपना आसन लगाया।

* चौंतीसवाँ अध्याय *

(शंखचूर्ण की युद्ध यात्रा)

सनत्कुमारजी बोले-मुनिराज ! शिवजी के दूत के चले जाने पर दानव शंखचूड़ ने अपने अन्तःपुर में जाकर तुलसी से कहा कि आज के बड़े प्रातः ही मैं युद्ध के लिए जाऊँगा मुझे आज्ञा दो। रात में उसने पत्नी से बहुत-सी बातें की दोनों स्त्री-पुरुष क्रीड़ा करते हुए सुख के सागर में मग्न रहे। प्रातः उठकर यथोचित शंखचूड़ ने अपने

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

पुत्र को राजभार सौंपा और उसे भार्या तुलसीके आधीन किया। पश्चात् रोती हुई प्रिया को बहुत समझाकर जो युद्ध के लिये बार-बार निषेध करता थी समझाकर अनेक प्रकार से धैर्य दिया और सेनापति को बुलाकर सैन्य-तैयार कराई। क्षणमात्र में ही उसके दुर्मद वीर युद्ध के लिए तैयार हुए। मौर्य, कालिक और कालिकेय आदि सभी उसके साथ चले। तीन लाख अक्षौहिणी सेना युक्त वह मण्डलीक छावनी से बाहर हुआ। गुरुजनों को आगे कर वह श्रेष्ठ रथ पर सवार हो युद्ध करने चला। चलते-चलते पुष्पभद्रा नदी के तट पर अक्षय बट के नीचे अपना डेरा लगाया। वहाँ से उसने शिवजी की सेना को देखा।

* पैंतीसवां अध्याय *

(शंखचूर्ण की युद्ध-यात्रा)

सनत्कुमारजी बोले—दानवेन्द्र ने अपने दूत को शिवजी के पास भेजकर कहलाया कि, मैं शंखचूड़ आ गया हूँ, क्या इच्छा है। तब शंख के दूतके ये वाक्य सुनकर महादेवजी प्रसन्न होकर बोले-दूत ! तुम जाकर अपने स्वामी से यह कह दो कि देवताओं से बैर त्यागकर उनसे सन्धि करलो और उनका राज्य उन्हें देकर सुखसे अपना राज्य करो तुम शुद्धकर्मी कश्यप की सन्तान होकर ऐसा क्यों करते हो ? जब शिव जी ने इस प्रकार श्रुति-स्मृतिके सिद्धान्तकी बहुतसी बातें कहकर दूत को समझायातो नम्रतापूर्वक शिवजीसे बोला-हे देवाधि देव ! यह आपने जो कुछ कहा है वह सत्य है। परन्तु मेरा भी निवेदन सुनिये। सारे दोष असुरों में ही नहीं हैं। देवताओं में भी हैं ? मधुकैटभ दैत्य के शिर को किसने काटा ? त्रिपुराके साथ युद्ध कर उसको क्यों भस्म किया गया आप देवताओं का ही पक्ष कर उनका ही कल्याण क्यों करते हैं ? आपको हमसे विरोध नहीं करना चाहिये क्योंकि आप सुर-असुर सबके ईश्वर हैं। उसके इस प्रकारके बचनों को सुनकर शिवजी ने कहा मैं तो भक्तों के आधीन हूं देव कार्य के लिये मुझे युद्ध करने में कोई

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

लज्जा नहीं है। तुम ऐसा ही जाकर शंखचूड़ से कह दो। यह कहकर शङ्करजी मौन होगये। दूत अपने स्वामी शंखचूर्ण के पास चला गया।

* छत्तीसवाँ अध्याय *

(देव-दानव युद्ध)

सनत्कुमारजी बोले—अब उस दूत ने जाकर अपने राजासे शिवजा की कही हुई सब बातें कह सुनाई। शंखचूड़ ने युद्ध की आज्ञा दे दी। इधर शिवजी ने भी अपनी सब सेना और देवताओं को युद्धके लिए प्रेरणा दी। स्वयं भी तैयार हुये अनेक प्रकार के रण वद्य वज उठे। दोनों पक्षों के वीर भयानक मार काट करने लगे। दम्भ के साथ विष्णु कालसुर के साथ कालका गोकर्ण से हुताशन कालकेय से कुबेर मल से विश्वकर्मा भयङ्कर से मृत्यु संहार से यम और कालम्बिक के साथ वरुण का युद्ध होने लगा उन सबके जोड़ों का पृथक २ वर्णन नहीं हो सकता; अभी तक काली और पुत्रों सहित शिवजी वटमूल में बैठे ही रहे। उधर सारी सेना निरन्तर युद्ध कर रही थी शंखचूड़ भी रत्न सिंहासन में बैठा अभी तक दूर हो था। देवताओं और असुरोंने प्राणसहर्त्ता युद्ध किया। अनेक आयुधों का प्रहार हुआ। वीरगण महा पराक्रम से अपने शत्रुओं का शिर छेदने लगे। क्षणमात्र में ही पृथ्वी कटे हुए वीरों से पट गई।

* सैंतीसवां अध्याय *

(शंखचूर्ण युद्ध)

सनत्कुमारजी बोले—अब सब देवता दानवों से पराजित हो इधर-उधर भागने लगे। बहुत से शङ्करजी की शरण में गये और युद्ध का सब वृत्तान्त कहा। यह सुन भगवान् शङ्कर कुपित हो स्वयं युद्ध करने चले। उन्होंने पहुँचते ही सैकड़ों अक्षोहिणी सेना का नाश कर दिया दिया उधर काली अलग ही दैत्यों का नाश कर उनका रक्तपान कर

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

रही थी। अब देवता बड़ा वीरता से दानवों के साथ भयंकर युद्ध करने लगे सैकड़ों लक्ष हाथियों सैकड़ों लक्ष दानवोंको काली अपने हाथ से पकड़-पकड़ अपने मुख में डालने लगी। स्कन्द के बाणों से करोड़ों दानवों का संहार हुआ। जो बचे वे भाग गये। भगवती आदि स्कन्द की बिजय हुई। तब अपनी सेना का इस प्रकार संहार होते देख दानवराज शंखचूड़ स्वयं युद्ध को तैयार हुआ। उसने कान तक खींच कर जो धनुषसे बाण छोड़ना आरम्भ किया तो रणभूमि में वधस्थान सा दृश्य होगया अब उसकी भयंकर मार से शिव-पुत्र स्कन्द जीपीड़ित होने लगे दानवेश्वर ने मय दानव की अनेक माया उपस्थित की। अब उसकी माया को शिव के गण और देवता कोई न जान सके। उसी समय उस महाबली शंखचूड़ ने स्कन्द का धनुष काट दिया। साथ ही अपनी घातक शक्ति उठाकर उनकी छाती पर मारी। उसके प्रहार से स्कन्द जी को क्षण भर के लिये मूर्छा आ गई। पश्चात मूर्छा से उस स्कन्दजी ने अपने माता-पिता का ध्यान कर भयानक युद्ध किया। अब उनके बाणों से शंखचूड़ के रथ में छेद हो गया। उसके कवच, किरीट, कुण्डल और बाहन सभी को स्कन्दजी ने छेद डाला और एक ऐसी विष बुझी शक्ति उठाकर जो उसे मारी तो उस के प्रहार से शंखचूड़ पृथ्वी पर गिर पड़ा और बहुत काल तक मूर्छित रहा। पश्चात् उठकर उसने भी कार्तिकेय पर अपनी शक्ति का प्रहार किया, जिसके लगने से वे भी मूर्छित हो पृथ्वी पर पड़े रहे। इस प्रकार उन्होंने ब्रह्म वाक्य को प्रमाणित किया। काली उन्हें अपनी गोद में उठा शिवजी के पास लाई। शिवजी ने उन्हें जीवित कर दिया। वे उठकर फिर युद्ध की ओर चले। उधर वीरभद्र शंखचूड़ से लड़ रहे थे। दोनों ने, एक दूसरे के बाणों को काटा और परस्पर आघात किया परन्तु शंखचूड़ ने एक शक्ति चलाकर वीरभद्र को पृथ्वी पर गिरा दिया। वे फौरन ही उठ पड़े और दूसरा धनुष ले युद्ध करने लगे। उसी समय काली फिर युद्ध में आई और कार्तिकेश्वर की रक्षा

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

करती हुई दानवों का चर्वण करने लगी।

* अड़तीसवां अध्याय *

(भद्रकाली-शंखचूड़-युद्ध)

सनत्कुमार जी बोले—देवी ने युद्ध-भूमि में भयानक सिंहनाद किया। कितने ही दानव मूर्छित हो गिर पड़े। विकराल दाँतों वाली चण्डियाँ वीरों का रक्त पानकर नाचने लगीं। देवताओं के दल में महा कोलाहल होने लगा। तब कालीको इस प्रकार समरारूढ़ देख दानवेन्द्र शंखचूड़ स्वयं उससे युद्ध करने आया काली ने प्रलयाग्नि के समान घोर बाण वर्षाकी। परन्तु राजा शंखचूड़ने वैष्णव अस्त्रचलाकर उसेशाँत कर दिया। तब देवीने नारायण अस्त्र चलाया। दानवेन्द्र रथसे उतर उसे प्रणाम करने लगा। इससे वह अस्त्र स्वयं ही शान्त हो गया। तब देवी ने ब्रह्मास्त्र छोड़ा। दानवेन्द्र रथ से उतर इससे भी बच गया। ब्रह्मास्त्र से बचकर उसने देवी पर घोर बाण वर्षा की देवी उन सब बाँणों का चर्वण करने लगी। इस प्रकार एक ओर से काली और दूसरी ओर से दैत्येन्द्र भीषण संग्राम करने लगे। पश्चात् जब महा काली ने पाशुपत का प्रयोग किया तो उसकी अमोघता की रक्षा के लिये आकाशवाणी ने रोक दिया। क्योंकि उससे उसकी मृत्यु नहीं लिखी थी। भद्रकाली पाशुपत को रोक सौ लाख दानवों को चट कर गई। फिर शंखचूड़ को भी खाने को दौड़ी। तब दानवेन्द्र ने रौद्रास्त्र से उसका वेग रोका तथा और भी कई दिव्य अस्त्रों का प्रयोग किया। परन्तु परम क्रुद्धा भगवती ने सब खण्ड-खण्ड कर दिये। उसके चलाये हुए चक्रादि को वह लील गई। फिर पड़े वेग से उछलकर जो देवी ने उसे एक मुष्टि प्रहार किया तो दानवराज चक्कर खाकर पृथ्वी पर गिर पड़ा और क्षण भर के लिये उसे मूर्छा आ गई। पश्चात् उठकर देवी से बाहु-युद्ध करना चाहा। परन्तु माता की बुद्धि से बाहु-युद्ध नहीं किया। देवी ने उसे पकड़ कर और बार-बार घुमाकर बड़े क्रोध से ऊपर को फेंक दिया। प्रतापी शंख-

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

चूड़ बड़े वेग से ऊपर कूद गया। फिर नीचे आ भद्रकाली को प्रणाम कर उनके आगे खड़ा हुआ पश्चात् वह अपने रथ पर जा बैठा। और भद्रकाली दानवों का रक्तपान करने लगी। उसी समय आकाश से यह वाणी हुई कि, हे देवि! अभी समर में तुम्हें एक लाख दानवों का रक्तपान करना है। तुम उन्हें शीघ्र भक्षण करो और संग्राम में दानवराज के वध की इच्छा न करो। भद्रकाली दानवों का रक्त पीने लगी।

* उन्तालीसवाँ अध्याय *

(शंखचूर्ण की सेना का अद्भुत संहार)

सनत्कुमारजी बोले—काली से ऐसा युद्ध सुन शिवजी अपने गणों को साथ ले स्वयं युद्ध करने चले। जब बृषभ पर चढ़े महेश्वर युद्ध-भूमि में जाकर खड़े हुए तो उन्हें देखकर शंखचूड़ ने रथ से उतर कर शिर झुका उन्हें प्रणाम किया। फिर विमान पर चढ़, कवच पहन, धनुष उठा युद्ध करने लगा सौ वर्ष तक उसने शिवजी से युद्ध किया। महावीर शंखचूर्ण ने बड़े ही दारुण वाण चलाये। परन्तु शिवजी ने उन सबको काट गिराया। पश्चात् उन महारुद्र ने परम कुपित हो उसके अङ्गों में प्रहार किया। शंखचूर्ण ने शिवजी के वर-वाहन के शिर पर तलवार चलाई। परन्तु इसके पहले शिवजी ने अपने पैने वाण मारकर उसकी ढाल तलवार दोनों को ही काट गिराया। तब दानव ने बड़े कोप से शिवजी पर चक्र का प्रहार किया। शिवजी ने अपना मुष्टिक मार उसे चूर्ण कर दिया तब उसने गदा चलाई। शिवजी ने उसकी गदा तोड़ दी। इतने ही में महाकाली वहां फिर आ पहुँची और अपना मुख फैलाकर बहुत से राक्षसों का भक्षण करने लगी। बीरभद्र और नन्दीश्वर ने भी बहुत से दैत्यों का नाश किया। अब इस प्रकार से दैत्यसेना का संहार होगया। बचे बचाये वीर भाग गये।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* चालीसवां अध्याय *

(शिवजी द्वारा शंखचूर्ण वध)

सनत्कुमारजी बोले-तब अपनी सेना के इस भीषण संहार को देखकर उस दानव ने बड़ा क्रोध किया और उसने महादेव पर अनेक अस्त्रों का प्रहार किया। फिर अदृश्य हो माया से भय दिखाने लगा जिसे देवताओं में से कोई भी न समझ सका। परन्तु उसकी कुछ भी पर्वाह न कर शङ्करजी उस पर अपने दिव्य प्रहार करने लगे। इससे तत्क्षण ही उसकी सारी माया नष्ट हो गई। तब महाबली महेश्वर ने उसके बध के लिये अपना वह त्रिशूल उठा लिया जिसका सहन करना तेजस्वियों के लिये कठिन था। फिर तो उसी समय आकाशवाणी हुईकि हे महेश्वर! अभी उस शूल को इस पर मत चलाओ। आप जैसे समर्थ के लिये शंखचूड़ को मारना क्या कठिन है? आप वेद मर्यादा का नाश न करें जब तक इससे पास विष्णु का उत्तम कवच और इस की पतिव्रता स्त्री है, तब तक इसको न तो जरा है और न मृत्यु। इस प्रकार उस आकाशवाणी को सुनकर शिवजी ने वैसा ही किया और उस शूल को रोक रक्खा। फिर तो शिवजी की इच्छा से श्री विष्णुजी वहां आ गये और उन्होंने वृद्ध ब्राह्मण का भेष धारण कर शखचूड़ से भेंट कर भिक्षा माँगी। शंखचूड़ ने पूछा क्या चाहिये? इस पर उस वृद्ध ने कहा-मैं इस प्रकार नहीं मागूँगा। पहले आप प्रतिज्ञा कीजिए। शंखचूड़ ने प्रतिज्ञा की। ब्राह्मण ने कहा-मैं आपका कवच चाहता हूं। दानवराज ने प्राणों से भी प्यारा कवच उस ब्राह्मण को दे दिया। फिर उसी रूप से वे उसकी स्त्री तुलसी के समीप पहुँचे। माया विशारद विष्णु ने देवताओं के कार्य के लिये उसके साथ भक्ति से विहार किया। फिर तो शिवजी को अवसर मिला उन्होंने विजय नाम का एक प्रज्वलित शूल उठा शंखचूड़ पर चला दिया। उस शूल ने उसका संहार कर दिया। आकाश में दुन्दुभी वजने लगी। शिवजी के

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by Arangotri Siddhanta Gyaan Kosha

ऊपर फूलों की वर्षा हुई और मुनिगण शिवजी की प्रशंसा करने लगे। शंखचूर्ण राजा भी शाप से मुक्त हो अपने पूर्वरूप को प्राप्त हुआ। उसकी हड्डियों से एक प्रकार की शंख जाति पैदा हुई जिसका जल शिवजी को छोड़ सभी पर चढ़ाना ग्राह्य है। विशेषतः विष्णु और लक्ष्मी को तो शंख का जल बहुत ही प्रिय है। उमा सहित नन्दीश्वर पर चढ़कर स्कन्द और शिवजी अपने लोक को गये। और अन्त में देवता भी स्वस्थता को प्राप्त हुए।

* इकतालीसवां अध्याय *

(तुलसी शाप वर्णन)

व्यासजी बोले—मुने ! विष्णुजी ने तुलसीजी में अपनी शक्ति का आधान कैसे किया? सनत्कुमारजी बोले—देवताओं के कार्य करने वाले नारायण ने शंखचूड़ का रूप धारण कर के रमण किया था। इस कार्य में शङ्कर और पार्वती की आज्ञा का पालन करना ध्येय था। और आकाशवाणी से प्रेरित होकर ही विष्णुजी ने उसके कवच को ग्रहण किया ब्राह्मण का रूप त्याग शंखचूर्ण का रूप धारण कर वे शीघ्र ही तुलसी के पास पहुँचे। अपने स्वामी को आया देख कर तुलसी बहुत प्रसन्न हुई और पति के चरणों को धोकर प्रणाम कर रोने लगी। फिर रत्न सिंहासन कर बिठाकर मङ्गलाचार कराया और ताम्बूल दिया। साथ ही कृतज्ञता ज्ञापन करती हुई कटाक्ष सहित युद्ध का समाचार पूछने लगी शंखचूड़ रूपी रमापति ने हँसकर अमृत सदृश वचनों में युद्ध का समाचार कह यह बतलाया कि ब्रह्माजीने हम-में और शङ्कर में सन्धि करादी है। इसलिए मैं अपने घर चला आया हूं और शिवजी शिवलोक को चले गये हैं। ऐसाकह जगत्पतिने शहन कर उसके साथ विहार भी किया। तब उनके इस रमण को भ्रम हुआ और वह तर्क करने लगी। उसने विष्णुजी से पूछा अरे ! तू कौन है, सत्य कह? सतीत्व धर्म क्यों दूर किया? मैं तुझे शाप देती हूँ। तुलसी

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

के शाप के भयसे विष्णुजीने अपनी सुन्दर मूर्ति बनाली। परन्तु तुलसी ने वह रूप देख चिह्नों से उसको विष्णु जाना और अपना पतिव्रत भङ्ग हुआ जान क्रोध किया। तुलसी ने कहा—विष्णु! तुममें दया नहीं तुम्हारा मन पाषाण के समान है। तुमने मेरे सतीत्व धर्म को भङ्गकर मेरे स्वामी का बध कराया है। अतएव मैं तुम्हें शाप देती हूँ कि तुम पत्थर हो जाओ। ऐसा कह कर शङ्खचूड़ की सती वृन्दा अत्यन्त बिलाप करने लगी। उसके विलाप को देख विष्णुजी ने भक्त वत्सल शङ्करजी का स्मरण किया। शङ्करजी शीघ्र ही वहाँ प्रकट हो गये। उन्होंने उस दुखिया को जगत की नश्वता समझाते हुए उसकी तपस्या का फल देकर कहा कि, इस शरीर को त्याग तुम यिव्य देह धारण कर हरि के साथ बिहार करो। साथ ही तुम्हारा यह शरीर छूटने पर भारत में गण्डकी नदी होगी और देव पूजन के साधन से कुछ काल में तुम मेरे वर से प्रधान रूपा तुलसी नाम से विख्यात् होओगी और स्वर्ग, पाताल तथा मृत्यु तीनों लोकोंमें तुम सर्वदा हरि की समीपता पाओगी और सब वृक्षों में तुम्हारा श्रेष्ठ स्थान होगा। तुम दिव्य रूप धारण कर सर्वदा बैकुण्ठ में हरि के साथ क्रीड़ा करती रहोगी और हरि के अंश से क्षीर सागर की भी पत्नी होओगी। तुमने जो हरि को शाप दिया है तो उसके प्रभाव से तुम गण्डकी के तट पर, ये हरि पाषाण रूप से स्थित रहेंगे वहाँ पैने दाँतों वाले करोड़ों कीड़े उस शिला को छेद कर उसमें चक्र बना देंगे और उसका नाम शालिग्राम होगा। इस प्रकार समझाकर शिवजी अन्तर्ध्यान हो गये। तुलसी उस देह को त्याग दिव्य देह को प्राप्त हुई। कमला पति उसके साथ बैकुण्ठ को गये और वह गण्डी नदी होकर बह चली। विष्णुजी उसके तट पर पत्थर हो गये।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

* ब्यालीसवां अध्याय *

(हिरण्याक्ष-बध)

नारदजी बोले—ब्रह्मन् ! अतएव उन महान आत्मा शङ्कर के चरित्र और भक्तों के आश्रित हुई उनकी सुखदायिनी लीला को आप मुझसे और कहिये। ब्रह्माजी बोले–जलन्धर का बध सुनकर सत्यवती के पुत्र व्यासजी भी ब्रह्म पुत्र मुनीश्वर से यही बात पूछने लगे। तब सत्यवती पुत्र व्यासजी से सनत्कुमारजी कहने लगे—व्यासजी ! अब मङ्गलदायक शङ्कर के उस चरित्र को सुनो–जिसमें अन्धकासुर दैत्य ने शङ्कर के गाणपत्य पद को प्राप्त किया। व्यासजी ने पूछा भगवान् यह अन्धक कौन था। किसके कुलमें उत्पन्न हुआ था और किसका पुत्रथा ? ब्रह्माजी बोले–व्यासजी के वह बचन सुनकर, ब्रह्म—पुत्र सनत्कुमारजी महेश्वर का वह सब चरित्र शुक्र के पिता को सुनाते हुये कहने लगे। सनत्कुमारजी बोले--एक समय देवताओं के चक्रवर्ती भक्तों पर कृपा करने वाले शङ्कर अपने गणों और पार्वती को साथ लेकर कैलाश से काशी में विहार करने आये और काशी को अपनी राजधानी वना भैरब नामक वीर को उसका रक्षक बनाकर पार्वती सहित मनुष्यों की सुखदायक लीला करने लगे। इसी प्रकार एक समय शङ्करजी मन्द-राचल पर्वत पर भी जाकर जब पार्वती के साथ बिहार करते रहे तब उनके अनेक विहारों में जब पार्वती ने अपने कनक कमल-से प्रभाव वाले हाथों से शङ्कर नेत्र बन्द कर लिए तो क्षण भर के लिए चारों ओर महान् अन्धकार छा गया और महेश्वर का शरीर स्पर्श करने से पार्वती के दोनों नेत्रों में मदका जल निकलने लगा। पुनः एक बड़ा कराल मुख भयङ्कर क्रोध परायण एक अन्धा विरूप, जटाधारी, कृष्ण वर्ण विकृत तथा बहुत से रोमों वाला मनुष्य उत्पन्न हो नाचने गाने हंसने रोने और घोर शब्द करने तथा जीभ से चाटने लग गया। उसके दर्शन से गौरी को बहुत आश्चर्य हुआ और महेश से पूछा कि

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

यह घोर पुरुष कौन है ? सनत्कुमारजी बोले—तब शङ्कर ने कुछ हंसते हुये कहा कि हे आर्ये ! यह तुम्हारा पुत्र है जो तुम्हारे द्वारा मेरे नेत्रों को बन्द करने पर मेरे माथे के पसीने से अभी कुछ क्षण पूर्व प्रकट हुआ है। यह सुन पार्वती जी ने करुणा पूर्वक अनेक उपायों से उसकी रक्षा विधान किया। उसी समय हिरण्यनेत्र नामक दैत्य अपने बड़े भाई की संतति बृद्धि देखकर पुत्र—कामना से शङ्कर जी को प्रसन्न करने के लिये वनमें तप करने गया। उसके तप से प्रसन्न होकर शङ्करजी उसे वर देने गये। उसने कहा—मुझे वीर्यवान् पुत्र दीजिये। शिवजी ने तथास्तु कह उसे पुत्र प्राप्ति का वर दिया और कहा—मेरा अन्धक नामक पुत्र मेरे ही समान बलवान है तू सारा दुःख भूल उसी पुत्र को मुझसे माँग ले। उस दैत्यने शिव-पार्वतीकी प्रदक्षिणा कर उस पुत्र को प्राप्त किया शिवजी अन्तर्ध्यान हो अपने स्थान आये हिरण्यनेत्र को साथ ले अपने घर चला गया। पश्चात् उसने देवता पृथ्वी तथा पाताल वासियों को जीतकर अपने देश में मिला लिया। फिर तो दैत्यों के राजा हिरण्याक्ष के आतंक से देबता व्याकुल होगये उन्होंने सर्वात्मक यज्ञमय कराल बाराह रूप प्रधान विष्णुजी की आराधना कर उन्हें पाताल भेजा। उन्होंने वहाँ जाकर अपनी घोर दाढ़ों के प्रहारसे निशाचरों की सेना को मथकर सुदर्शनचक्र से हिरण्याक्षका सिर काट उसके राज्य पर अन्धक का अभिषेक किया। फिर अपनी कराल दाढ़ों पर पृथ्वी को उठा जल पर स्थापित किया और सब देवताओं ने प्रसन्न होकर उनकी स्तुति की। बाराह रूप भगवान् अपने लोक चले गये मुनि तथा अन्य जीव सुखी हो गये।

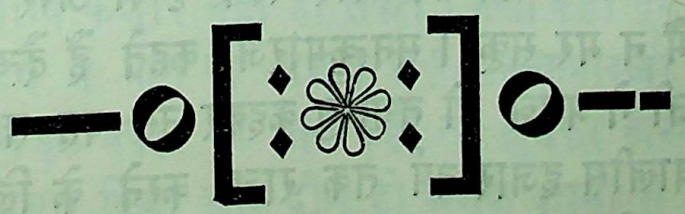

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* तेतालीसवाँ अध्याय *

(अन्धक जन्म की कथा)

व्यासजी बोले—सनत्कुमार जी ! जब देव द्रोही दैत्य मर गया तब उसके बड़े भाई ने क्या किया ? सनत्कुमारजी बोले-जब बाराह रूप-धारी बिष्णुजी ने उसके भाई को मार दिया तो वह हिरण्यकशिपु क्रोध और शोक से युक्त हो भगवान् से बैर करने लगा। उसने प्रजा को दुःख देने के लिये कदन प्रिय वीर असुरों को आज्ञा दे दी। वे असुर अपने स्वामी की आज्ञा शिरोधार्य कर देवताओं प्रजाओं का दमन करने लगे। उनके आतंक से लोकों का नाश होने लगा। देवता स्वर्ग छोड़ पृथ्वी पर भाग आये। हिरण्यकशिप अपने मरे हुए भाई को जल-दानादि दे उसकी सन्तानों आदि को सान्त्वना देते हुए अपने को अजर अमर अजेय और अप्रतिद्वन्द्वी जानकर एक छत्र राज्य करने लगा। पश्चात् उसने मन्दराचल की गुफा में जाकर एक अँगूठे के बल खड़े होकर भुजा उठा आकश में दृष्टि बाँध बड़ा ही घोर तप करना आरम्भ किया। इस काल में देवताओं ने असुरों को जीत कर अपने अधिकार में कर लिया। उधर जब हिरण्यकशिप के तप तेज से निकली अग्नि सब लोकों को बाँधने लगी तो उससे तप्त हो कर देवता दुःखी हो ब्रह्माजी के पास पहुँचे। ब्रह्माजी उसे वर देने गये हिरण्यकशिप ने कहा-मुझे कभी मृत्यु का भय न हो और न मैं किसी अस्त्र पाश वज्र सूखा वृक्ष और गिरीन्द्र से मर सकूँ तथा जल और अग्नि भी मुझे न मार सके। देवता दैत्य, मुनि सिद्ध आपकी सृष्टि का कोई भी जीव न मार सके और स्वर्ग पृथ्वी ऊपर नीचे दिन रात में कभी भी मैं न मर सकूं। सनत्कुमारजी कहते हैं दैत्य के ऐसे बचन सुनकर ब्रह्माजी ने प्रसन्न हो तथास्तु कहकर उसे वह सभी वर देकर तप से उठा चालीस हजार वर्ष तक राज्य करने के लिए असुराधिप बना दिया। उसने राज्य पाकर उन्मत्त हो त्रिलोकी को नष्ट कर देना

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

देवता क्षीरसागर कोगये वहाँ जाकर विष्णुजी से सारा दुख कहा । विष्णुजी नृसिंह रूप धारण कर उस दैत्य की नगरी में गये। प्रवल दैत्यों से युद्ध किया। उनको मारकर कितनों का संहार किया। फिर निर्द्वन्द्व इधर-उधर घूमने लगे। पुत्र प्रहलाद ने अपने पिता से उन जगन्मय की बड़ी प्रशंसा की और कहा कि आप इनकी शरण जाइये इस पर इस दैत्य ने पुत्र को दुरात्मा कहा और अपने वीर दैत्यों को नृसिंह जी को पकड़ लाने की आज्ञा दी । परन्तु वे दैत्य उनके समीप जाते ही ऐसे दुग्ध हो गये जैसे अग्नि के समीप जाने से पतङ्ग दुग्ध हो जाते हैं। उनके दुग्ध हो जाने से दैत्यराज स्वयं नृसिंह से युद्ध करने गया । बड़ा युद्ध किया । परन्तु नृसिंहजी के आगे उसकी एक न चली। और उन्होंने उसको पकड़ अपनी जङ्घाओं पर रख उसके मर्म स्थानों को अपने नखों से विदीर्ण कर उसके सब अङ्ग चूर्ण कर दिये । प्रहलाद को बुला उसके पिता के राज्य पर उसे अभिषिक्त कर दिया। सब देवता प्रसन्न हो गये विष्णुजी अपने लोक को चले गये।

* चौबालीसवां अध्याय *

(अन्धक की अन्धता)

सनत्कुमारजी बोले—एक समय विहार में तत्पर हिरण्याक्ष-पुत्र अन्धक से उसके भाइयों ने हंसी करते हुए कहा कि, अब तुम्हारा राज्य से क्या प्रयोजन है? तुम्हारा पिता हिरण्याक्ष तो मूर्ख था जिसने शिवजी की तपस्या से तुम्हारे जैसे नेत्रहीन और विकृतरूप पुत्र को प्राप्तकिया। तुम राज्य पाने योग्य कदापि नहीं हो सकते। भला कहीं दूसरे से उत्पन्न हुआ पुत्र भी राज्य में भाग पा सकता है? सनत्कुमारजी कहते हैं—जब उन भाइयों ने इस प्रकार की बातें कहीं तो सुनकर अन्धक ने स्वयं अपनी बुद्धि से विचार किया और दीन हो अनेक वचनों से उन सबको शान्तकर रात्रि में निर्जनवनमें तप करने चला गया। वहाँ जाकर उसने

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

दस हजार वर्ष तक मन्त्र जपते हुए घोर तप किया और जब इतने पर भी कुछ परिणाम न निकला तब अपने उस शरीर को अग्नि में जला देना चाहा। यह जानकर देवताओं को बड़ा भय और आश्चर्य हुआ। उन्होंने ब्रह्माजी के पास जाकर उनकी बड़ी स्तुति की तो ब्रह्माजी उसे वर देने गये और कहा—दानव! मैं तुझ पर प्रसन्न हूं, जो चाहे वर मांग। उसने कहा-मेरे निष्ठुर भाइयों ने मेरा राज्य छीन लिया है, अतः वे प्रह्लादादि सब मेरे भृत्य हो जावें। मुझ अन्धे के दिव्य नेत्र हो जावें, इन्द्रादि सब देवता मुझे कर देवें और कोई मुझे मार न सके, चाहे वह देवता गन्धर्व यक्ष जिन्न किन्नर और मनुष्य तथा नारायण और सर्वमय शङ्कर ही क्यों न हों। तब उसकी ऐसी दारुण वाणी सुनकर ब्रह्माजी को बड़ी शङ्का हो गई और उन्होंने कहा ऐसा नहीं हो सकता। तुम दूसरा वर मांगो। तब उसने कहा-उक्त कहे हुये सब वर तो मुझे प्राप्त होवें हा परंतु शङ्कर को छोड़ मुझे और कोई न मार सके। अब ब्रह्माजी ने तथास्तु कह दिया। ब्रह्माजी के ऐसा कहते ही वह स्वस्थ हो गया और तपासन से उठ अपने घर आया। प्रहलाद आदि सभी दैत्य उसके भृत्य हो गये। उसने ब्रह्म-वरदान से सब देवताओं को जीत बसमें कर लिया। वह मदान्ध हो दुष्टों का साथ करने लग गया। करोड़ों वर्ष तक उसने वेद, गुरु, ब्राह्मण और देव-विरोधी पर राज्य किया। धन की मदान्धता ने उसे कुमार्गी बना दिया। तब एक समय वह अपनी सेना ले मन्दराचल पर्वत पर गया तो वहाँ की स्वर्णमयी शोभासे आकृष्ट हो उसने अपना वहाँ एक अद्भुत गृह निर्माण करना चाहा तथा मन्दिर के शिखर पर उसने अपनी यह इच्छा पूर्ण भी कर ली। फिर वहां पर कुछ दिन उसके मन्त्रियों ने आकर उससे वहाँ स्थित एक सुन्दर स्त्री का परिचय सुनाया और कहा कि वह परम सुन्दरी और परम तपस्विनी भी है तथा उसके पास जटाजूट धारी, त्रिशूलधारी एक पुरुष भी बैठा है उसके समीप ही में एक वृक्ष से बँधा हुआ वहाँ एक सुन्दर वृषभ भी है। इस प्रकार उन-

CC-0. Kol Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

ने उससे महेश्वर और उनकी भार्या का परिचय दिया तथा यह भी कहा कि आप चलकर उन्हें देख लीजिये। उसने कहा—नहीं, मैं उन्हें देखने क्या जाऊं तुम सब मेरे मन्त्री ही हो, यह सुन उसके दुर्योधन वैधस और हस्ति नामक मन्त्रियों ने मन्दिरकी गुफामें बैठे हुए शिवजीके पास जा उनके रूप आदि अनेक प्रकार से हास्य करते हुये उनकी प्रिय भार्या जगन्माता को दैत्यके लिये मागना आरम्भ किया तब उसे सुनकर शिवजी हंसने लगे। फिर कहा, अरे दुष्टो! तुम सब मुझसे ऐसा क्या चाहते हो? मैं चराचर का स्वामी यहां गुप्त रह कर अपना एक पाशुपत व्रत समाप्त कर रहा हूं। यह सर्वव्यापिनी सिद्धिरूपा मेरी स्त्री है। इसमें सब कुछ सहन करने की योग्यता है। जो उचित हो इसी से माँग। ऐसा कह तपस्वी वेषधारी शिवजी चुप हो गये। पश्चात् वे दूत अन्धक के पास लौट आये और जो कुछ शिवजी ने कहा था वह सब कह सुनाया तथा और भी बहुत सी बातें बढ़ा-चढ़ा कर सब ने कहीं। उसे सुन वह मूढ़ बुद्धि दैत्य क्रोध से जल उठा और देवकी प्रतिकूलता से काम-विह्वल हो स्वयं ही वहाँ जाने को खड़ा हुआ।

* पैंतालीसवाँ अध्याय *

(युद्ध प्रारम्भ)

सनत्कुमार जी बोले—तब वह मदिरा पान कर प्रतापी अन्धक अपनी सेना को ले वहाँ चला जहाँ शिव के वीरों ने गुफा का मार्ग अवरुद्ध कर रक्खा था। परन्तु उनके गणों की मार खाता और शरीर से पीड़ित होता हुआ भी कामाग्नि से दग्ध अन्धक आगे बढ़ा। शिवजी के गणों ने उसे मारते पीटते उसे रोक कर उसका परिचय और आगमन का कारण पूछा। उसने अपना अभिप्राय भी बतलाया। परन्तु आगे बढ़ना ही चाहता था कि शिवजी के गणोंने उसे मार कर भगा दिया। उसके प्रबल वीर दैत्यों में विरोचन, बलि, बाणासुर, सहस्रबाहु और प्रहलाद आदि ने भी उसकी ओर से

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyan Kosha

युद्ध किया, किन्तु वे सभी तथा और भी शवर तथा बृषभादिकों को शिवजी के गणों ने मार कर भगा दिया उस समय भी भयानक युद्ध हुआ। इस काण्ड से शिवजी को किंचित खेद हुआ और उन्होंने पार्वती से कहा—देखो, यह संसार की क्या विलक्षणता है कि स्त्री के प्रसङ्ग से कभी कभी स्वजनों तथा अपनों से भी उस प्रकार युद्ध करना पड़ता है। कहाँ तो मैं यहाँ यह पाशुपत व्रत पूर्ण करने आया था और कहाँ दूसरा ही व्रत पूर्ण हो गया। इसलिये अब मैं एक दूसरा ही घोर व्रत करूँगा। आओ किसी दूसरे बन में चलें। पार्वती से ऐसा कहते हुए शङ्करजी वहाँ से उठकर दूसरे वनमें चले गये। वहां जाकर उन्होंने फिर पाशुपत व्रत को आरम्भ किया जिसको हजारों वर्ष तक में देवता दानव करने में समर्थ नहीं होते। इस बार पार्वती उनके साथ नहीं थीं और शङ्कर की प्रतीक्षा में बे मन्दराचल पर्वत पर ही स्थित रहीं। इस अवधि में शङ्करजी बिना अपने एकाकीपन से पार्वती को बड़ा कष्ट प्राप्त हुआ। वीरक पुत्र उनकी रक्षा करता रहा। उसी समय एक दिन काम—पीड़ित अन्धक पार्वती की गुफा में प्रविष्ट हो गया। वीरक उससे युद्ध करने लगा। पांच सौ पाँच रात-दिन उसने खाना-पीना और निद्रा त्याग ससैन्य वीरक के साथ युद्ध किया। शस्त्रों का भयानक प्रयोग हुआ। संपूर्ण दैत्यों ने वीरक को घेर लिया। उसका निकलना कठिन हो गया। तब उस पर संकट आया देख गुफा में बैठी हुई पार्वती ने अपनी सखियों के साथ एकाग्रचित्त से ब्रह्मा, विष्णु सहित इन्द्रादि सभी देवताओं और वीरों का जो स्मरण किया तो देवताओं की समस्त सेना स्त्री—वेश में शीघ्र ही उपस्थित हुई। वे सभी देवता उसके सहायक सैनिक स्त्री—वेश में गुफा के भीतर प्रवेश कर पार्वती के पास जा बैठे। कारण राजाओं के अन्तःपुर में कभी कोई पुरुष नहीं जा सकता। निदान उन स्त्रियों ने समर में विजय पाने वाले भेरी और शङ्ख के युद्धवाद्य बजाये। उन वाद्यों को सुन पार्वती का गण वीरक

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

जो उस समय युद्ध में मूर्छित हो रहा था सचेष्ट हो उठा और महारथियों के शस्त्रों को ग्रहणकर उन्हीं के शस्त्रों से उन्हें मारने लगा। जब तक हाथ में दण्ड लिए ब्राह्मी तथा क्रोध से व्याप्त चित्त गौरी, शङ्ख, चक्र, गदा और धनुष धारे बाहुदण्ड पूर्ण नारायणी, हाथ में वज्र लिए इन्द्राणी और इसी प्रकार देवताओं की देवी नाम वाली सभी देवियाँ अपने २ विभिन्न आयुधों से युक्त हो उस दैत्य की अपार सेना को देख हृयद में दुःखी हो गईं। उसी समय ब्रह्मा की मुख शक्ति ने समस्त देवताओं की स्त्रियों के मन को सावधान कर पार्वती की आज्ञा से अति पराक्रमी वीर को सेनापति बनाया बरदान से बली दैत्य अपनी सेना सहित उन स्त्रियों के मध्य में कूदकर अपूर्व युद्ध करने लगा। सेनापति वीर की संरक्षता में अपनी सखियों सहित पार्वती ने अद्भुत युद्ध किया। हिरण्याक्ष-पुत्र अन्धक महा व्यूह की रचना कर हजारों वर्ष तक वहाँ युद्ध करता रहा पार्वती की सहायिका स्त्री सेना निरन्तर युद्ध करती रही। एक हजार वर्ष के पश्चात् महेश्वर भी वहाँ आये। उन्होंने पार्वती को युद्ध करते हुए देखा। पार्वती की भी उन पर दृष्टि पड़ी। उन्होंने शिर झुका शङ्करजी को प्रणाम किया। शङ्करजी ने उन्हें हृदय से लगा गुफा में प्रवेश किया। दत्यों का वेग शान्त हो गया पश्चात् उस दैत्य ने शङ्कर के पास सन्देश भेज फिर उनकी स्त्री की माँग की और यह भी कहलाया कि तुम तपस्वी नहीं मेरे शत्रु हो। यह सुन शङ्कर के क्रोध का अन्त न रहा। उन्होंने उसके दूत को बहुत सी बातें समझाकर उसे युद्ध सन्देश भेज दिया।

* छयालीसवां अध्याय *

(अन्धक-युद्ध समाप्त)

सनत्कुमारजी बोले—तब महाबली गिल नामक दैत्य को आगे कर अन्धक शिवजी से युद्ध करने आया। वह शङ्करजी की गुफा पर पहुँच वज्र सा शब्द करते हुए उन पर तथा पार्वती पर भी वज्र सा प्रहार

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

करने लगा। इसकी सेना ने शङ्कर की उस गुफाके द्वार पर तथा उसके चारों ओर के वृक्षों और लताओं आदि को तोड़-फोड़ कर नाश कर दिया। फलों और मूलोंको उखाड़ मनोहर जलको नष्टकर बनमें मार्गोंको खण्डित कर दिया। तब त्रिशूलधारी शङ्कर ने क्रुद्ध हो अपने दारूण भूत गणों सहित विष्णु आदि देवताओं को बुला दैत्यों से युद्ध आरम्भ करवा दिया। ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र सूर्य और चन्द्रमा आदि समस्त देवता बिधस दैत्य के पेट में चले गये। केवल शङ्कर का एक गण बीरक शेष बचा। तब वह भाग कर शङ्कर जी के पास आया और सब समाचार कहा। उसे सुन शङ्कर जी सातवेद का गान करने लगे। फिर सूर्य के समान अपने प्रकाशित शरीर से हास्य करने लगे। उनके अट्टहास से समस्त अन्धकार दूर हो गया। बीरक ने उन दैत्यों से बड़ा युद्ध किया। उधर उस दैत्य ने नन्दी को निगल लिया तब नन्दी निगला देख कपर्दी भगवान् शङ्कर ने वृषभ पर चढ़ मन्त्र जपते हुए निगले हुओं को उगलने के लिये युद्धमें आये। उन्होंने अपने तीव्र बाणों से विधस को मार-मार कर उस दैत्यके मुख से विष्णु सहित ब्रह्मा, इन्द्र, सूर्य चन्द्रमा आदि को उगलवा लिया। देवताओं की सेना प्रसन्न हो फिर महायुद्ध करने लगी। शुक्राचार्य जो युद्ध में मरे हुए दैत्यों को अपनी सञ्जीवनी विद्या से जिलाने लगे। तब उन्हें ऐसा करते देख शिवजी के गणों ने उन्हें बाँध शङ्करजी के सामने उपस्थित किया। शङ्कर शुक्राचार्य को निगल गये। शुक्र के नष्ट होने से दैत्यों का बल क्षीण हो गया। फिर तो देवताओंने उन्हें मार-मार कर व्याकुल कर दिया। इस प्रकार बहुत समय तक हिरण्यकशिपु के वंश में उत्पन्न दैत्य महेन्द्र से युद्ध करके हार गया। देवताओं ने क्रोधकर दत्यों का नाश कर दिया। हरि ने अपनी प्रचण्ड गदाघात से दैत्यों का मद चूर्ण कर दिया। परन्तु अब तक भी दैत्यों का प्रधान अब भी युद्धमें डटा रहा। इन्द्र ललकार-ललकार कर उसे मारने लगे। वह भी अपने पैने बाँण मार-मार गिरजा और रुद्र को पीड़ा

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

देने लगा सैकड़ों मायाओं से कपट-कपट युद्ध करने लगा। देवताओं के अवध्य होने से अब उसने शङ्कर जी को अपनी माया से जीतना चाहा। समस्त अन्धक युद्धभूमि में व्याप्त हो घोर युद्ध करने लगे। परन्तु शिवजी ने अपने त्रिशूल से उस दैत्य को मारकर बहुत प्रकार से छेद डाला। उसके सारे शरीर से रुधिर का प्रवाह बहने लगा। उस प्रवाह से बहुत से दैत्य उत्पन्न होकर युद्ध करने लगे। इधर विष्णुजी ने भी कह कर शङ्करजी के कर्ण से बहुत कराल गण उत्पन्न कराये फिर भयानक युद्ध आरम्भ हुआ। देवताओं ने वन्दना कर भूख से व्याकुल चण्डिका देवी को प्रकट कर दिया। वह व्याकुल हृदय देवी दैत्यों के शरीर से निकले रक्त का पान करने लगी। तब अपने कुल का सनातन क्षात्र-धर्म स्मरण कर वह दैत्य शङ्कर पर पुनः घोर बाँण वर्षाने लगा। शिवजी ने त्रिशूल उठा उसका हृदय छेदते हुए उसे ऊपर उठा लिया। यह होते ही युद्ध शान्त हो गया सूर्य की प्रचण्ड किरणों ने उसकी काया जला दी। उसका शरीर जर्जर हो गया। ऊपर से मेघों ने जल वर्षाकर उसे और भी पीड़ित कर दिया। एक ओर से हिमखण्ड उसे अलग ही विदीर्ण करने लगा। फिर भी उस दैत्येन्द्र के प्राण नहीं निकले। तब वह करुणाकर परम दयालु शङ्कर की स्तुति करने लगा। शिवजी ने प्रसन्न हो उसे गणपति का पद दिया। युद्ध समाप्त हो गया। हरि आदि देवता अपने स्थान को चले गये।

* सैंतालीसवां अध्याय *

(शिवजी द्वारा शुक्राचर्य का निगल जाना)

व्यासजी बोले—मुनीश्वर ! अब आप मुझे यह बतलाइये कि शंकरजी के उदर में स्थित हो शुक्राचार्य ने क्या किया ? शंकरजी ने उन्हें भस्म क्यों नहीं कर दिया या वे अपने तेज से योंही बच

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

गये ? फिर वह शिवजी के उदर से कैसे निकले और उन्होंने मृत्यु को शान्त करने वाली विद्या को कैसे प्राप्त किया। शङ्कर के त्रिशूल से नष्ट होकर भी अन्धकर दैत्य ने गणपति की पदवी कैसे प्राप्त की ब्रह्माजी बोले—व्यासजी के ऐसा पूछने पर सनत्कुमार जी कहने लगे। व्यासजी ! यह तो शंकरजी का ही प्रभाव था जो अत्यन्त बल-शाली दैत्य के आगे देवताओं की विजय हुई, अन्यथा अन्धक कोई साधारण दैत्य नहीं था जब वह उस प्रकार शंकरजी से हारने लगा तब भागकर शुक्राचार्यजी की शरण में गया और अपनी गुरु-बन्दना द्वारा उन्हें प्रसन्न कर दैत्यों की हर्वतोभावेन रक्षा करने के लिए बुला लाया। शुक्राचार्य ने आकर बिद्येश का स्मरण कर मरे हुए दैत्यों पर विद्या का प्रयोग किया। उसकी आवृत्ति करते ही दैत्य दानव अस्त्र-शस्त्र ले सोते हुए की भाँति एक साथ ही उठ खड़े हुए। दैत्य सेना में जान आ गई। वे शिव के नन्दी आदि गणों से भीषण युद्ध करने लगे। यह देख शिव के गण थर्रा उठे। और नन्दी जाकर शुक्र के आगमन और उनकी विद्या के प्रयोग को शिवजी से कह कर अपनी व्याकुलता प्रगट की। उसे सुन शिवजी हंसने लगे और पुनः नन्दी से कहा, घबड़ाओ नहीं। मेरी आज्ञा है तुम अभी जाकर शुक्राचार्य को मेरे पास पकड़ लाओ। फिर तो नन्दीश्वर सिंह के समान शब्द करता हुआ शीघ्र ही दैत्य सेना पर टूट पड़ा और जहाँ दैत्यों से रक्षित शुक्रा-चार्य खड़े थे, उनके मध्य में उनको ऐसा ही पकड़ लाया जैसे सिंह का बालक हाथी को पकड़ता है। इसी प्रकार नन्दी ने शुक्राचार्य का हरण किया। गणेश्वर नन्दी अपने मुख की अग्नि से दैत्यों के सैकड़ों शस्त्रों को जला शत्रु पक्ष को व्याकुल करते हुए शिवजी के समीप लाये। शिवजी ने शुक्र को फल के समान अपने ही मुख में रख लिया।

—:*:ॐ:*:—

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* अड़तालीसवाँ अध्याय *

(शुक्र को मुक्त करना)

व्यासजी ने पूछा कि शिवजी द्वारा शुक्राचार्य के निगले जाने पर क्या हुआ ? सनत्कुमारजी बोले—शिवजी के उदर में स्थित शुक्राचार्य बाहर निकलने का बड़ा उद्योग करने लगे। उन्होंने बाहर निकलने के लिए शिवजी के शरीर में छिद्रों की बड़ी खोज की। परन्तु सैकड़ों वर्षों तक कोई छिद्र उन्हें न मिला जिस प्रकार खल पुण्यात्मा में दोष नहीं देख पाता। तब शुक्र शिवके दिये पूर्व मन्त्र को जपते २ शिव के वीर्य रूप से उनके उदर-पञ्जर से निकल लिङ्ग मार्ग के बाहर आये शिवजी को प्रणाम किया। पार्वती ने पुत्र मान विघ्न रहित किया। तब लिङ्ग के द्वारा वीर्य रूप से निकले हुए शुक्र को देखकर दयासागर शिवजी ने कहा—भृगु पुत्र! जिस कारण तुम मेरे लिङ्ग के वीर्य रूप में निकले हो इस कर्म से अब आज से तुम्हारा शुक्र नाम पड़ा। अब जाओ! शुक्र ने शिव को प्रणाम कर उनकी स्तुति की और आज्ञा ले पुनः दैत्यों की सेना में चले आये।

* उनचासवां अध्याय *

(अन्धक का गाणपत्य वृतान्त)

सनत्कुमारजी बोले—ॐनम ते देवेसाय सुरासुर नमस्कृताय भूत भव्य महादेवाय हरित पिङ्गल लोचनाय बुद्धि रूपेण इत्यादि मन्त्रों को जब शुक्र जी ने शम्भु के उदर में जपा तब वे उत्कट वीर्यके समान शिव लिङ्ग के बाहर आये। प्रथम जन्म के पश्चात् तीन हजार वर्ष पर फिर वह वेदपाठी शुक्र पृथ्वी पर शिवजी से उत्पन्न हुये। उधर अन्धक शिवजीके त्रिशूल पर सूखते हुये शिवजीकी एक सौ आठ परम मूर्तियों का ध्यान करता हुआ उनकी स्तुति कर रहा था। इससे शिवजी ने प्रसन्न हो उसे सब प्रकार के भय से मुक्त कर दिव्य अमृत की वर्षा से उसमें प्राण संचार कर त्रिशूल से उतार उसका अभिषेक किया और कहा मैं

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

तेरी भक्ति से प्रसन्न हूं, वर माँग अन्धक हाथ जोड़ काँपता हुआ शिवजी की अनेक स्तुति कर अपने पूर्व अपराधों के लिए उनसे क्षमा माँगते हुए माता-पिता रूप शिव पार्वती की कृपा भक्ति माँगने लगा। मौन हो शिव पार्वती के ध्यान में मग्न हो गया। शिवजी ने उस पर प्रसन्नता की दृष्टि डाली। उसे अपने अद्भुत जन्म का पूर्व वृतान्त स्मरण हो आया। उसके मनोरथ पूर्ण हो गये। वह अपनी माता को प्रणाम कर कृत्य-कृत्य हो गया। उसने उस प्रसन्न हुए शिवजी से इच्छित वर पाया।

* पचासवाँ अध्याय *

(शुक्र को मृत-संजीवनी विद्या की प्राप्ति)

सनत्कुमारजी बोले—हे व्यासजी! शुक्राचार्य वाराणसी नामक नगरी में जाकर प्रभु विश्वनाथ का ध्यान करते हुये बहुत समय तक तप करने लगे। उन्होंने शिव का ज्योति लिंग स्थापन कर उनके आगे सुन्दर एक रमणीक कूप खुदवाया और एक द्रोण (बत्तीस सेर) पञ्चामृत से शिवजी को लाख बार स्नान कराकर फिर सुगन्धित द्रव्यों से स्नान कराया। इस प्रकार अनेक मनोहर पत्रों तथा सुन्दर कमलों से उन्होंने सावधान चित्त हो शिवजी की पूजा की। फिर स्तुति पूर्वक शिव सहस्र नाम तथा और भी स्तोत्रों से शिवजी को सन्तुष्ट किया;इसी प्रकार शुक्राजी पाँच हजार वर्ष तक अनेकों प्रकारसे शिवजीकी पूजा करते रहे परन्तु जब इतने पर भी शिवजी ने उन्हें कुछ वर न दिया तो शुक्र ने अत्यन्त ही कठिन दूसरे नियमों को हरण कर लिया और भावनारूपी जलों से अत्यन्त चञ्चल चित्त को शुद्ध करने लगे। इस प्रकार चित्त को शुद्ध कर उन्होंने शिवार्पण किया और हजारों वर्ष तक कण और धूप पान करते रहे। तब शिवजी प्रसन्न हो वहाँ प्रकट हुए और शुक्र से बोले—हे तपोनिधि भृगु के पुत्र मैं तुम्हारे इस तप से बड़ा प्रसन्न हूं। तुम्हारी जो इच्छा हो वर माँगों। शुक्रजी ने शिवजी को प्रणाम

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

किया और शिर झुका अञ्जलि बाँध जय-जय उच्चारण करते हुये शिवजी की बड़ी स्तुति की। स्तुति कर पृथ्वी में गिरे शुक्र को उन्होंने हाथ से उठा आलिङ्गन किया फिर प्रेम पूर्वक कहा---ब्राह्मणश्रेष्ठ! तुमने जो मेरा यह ज्योतिर्लिंग स्थापित कर इनकी कठिन आराधना की है इससे मैं तुम पर प्रसन्न हुआ। इस समय जो वर मांगो वह वर देने को तैयार हूँ। वह भी समय आवेगा जब तुम इस शरीरसे उदर-गुहा में प्रवेश कर मेरी इन्द्रिय मार्ग से निकल पुत्र भाव को भी प्राप्त करोगे यह दुर्लभ वर मैं आज तुम्हें प्रदान करता हूँ। इसके अतिरिक्त जिस मृतसजीवनी विद्या द्वारा तुम मरे हुए प्राणियों को जीवित कर सकोगे और जिस किसी भी कार्य का उद्देश्य कर नियमसे इस विधान को जपोगे। इस सत्येश्वरी विद्या के प्रभाव से तुम्हारा वह कार्य पूर्ण होगा। तुम मेरे आशीर्वाद से सूर्य तथा अग्नि का भी अतिक्रमण कर आकाश में एक विमल तारा होकर एक प्रकाशमान ग्रह भी होओगे तथा तुम्हारे सामने स्त्री-पुरुष जो भी यात्रा करेंगे तुम्हारी दृष्टिपात से उनके सब कार्य नष्ट हो जायेंगे। परन्तु तुम्हारे उदय होने पर ही विवाहादिक शुभ कार्य होंगे तथा मनुष्यों के धर्म सम्बन्धी सभी कर्म सफल होंगे। तुमने जो शुक्रेद्ध नामक ज्योतिर्लिंग स्थापित किया है जो मनुष्य इसका पूजन करेंगे उनके कार्य सिद्ध होंगे। शुक्र को इस प्रकार के वर दे भगवान शिव उस पार्थिव लिंग में लय हो गये।

* इक्यावनवां अध्याय *

(वाणासुर-आख्यान)

व्यासजी बोले-सनत्कुमारजी! अब कृपाकर आप मुझे वह कथा सुनाइये जिसमें शिवजी ने वाणासुर को गणपति पद प्रदान किया था। सनत्कुमारजी बोले—इस चरित्र में महा प्रभु शङ्कर की वाणासुर पर कृपा भी और भगवान शिव का कृष्णजी के साथ युद्ध भी है। अब तुम अपने पवित्र मन और कानों से शिव-लीला युक्त उस सुन्दर

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

इतिहास का श्रवण करो ब्रह्माजी के ज्येष्ठ पुत्र मरीचि एक श्रेष्ठ प्रजापति हो चुके हैं जिनके पुत्र महामुनि कश्यपजी ब्रह्मा के बड़े भक्त और सृष्टि के बनाने बाले हुए। उन कश्यप मुनि के सुशील तेरह स्त्रियाँ थीं जो दक्ष की कन्या थीं। उसमें सबसे वड़ी दिति केदैत्य और शेष कन्याअ ने चराचर सहित सब देवताओं की उत्पत्ति हुई। तब बड़ी स्त्री दिति से वड़ा पुत्र हिरण्यकशिपु और छोटा हिरण्याक्ष नामक उसके दो महाबली पुत्र उत्पन्न हुए। उनमें हिरण्यकशिप को व्हाक अनुव्हाद,संव्हाद और प्रहलाद नामके येचार पुत्र क्रमशः उत्पन्नहुए जिनमें सबसे छोटा प्रहलाद जितेन्द्रिय और भगवान् विष्णु का भक्त हुआ जिसे नाश करने में कोई भी दैत्य सफल न हो सका। उस प्रसलाद का पुत्र बिरोचना उतना दानी था कि उसने ब्राह्मण रूप इन्द्र के माँगने पर उसने अपना शिर काटकर दे दिया। फिर उसका पुत्र बलि भी बड़ा दानी हुआ जिसने बामन अवतारी भगवान् विष्णु के माँगने पर उन्हें सारी पृथ्वी का दान कर दिया। उसी बलि का औरस पुत्र बड़ा ही माननीय और दाता बुद्धिमान सत्यवक्ता जिसने अपने बल से तीनों लोक के राजाओं को जीतकर शोणित नाम वाली नगरी बसा वहां रह राज्य करना आरम्भ किया। एक समय उस महा दैत्य ने अपनी हजार भुजाओं के वाद्य से ताण्डव नृत्य कर शङ्करजी को प्रसन्न किया शंकरजी ने उसपर दयादृष्टि की। वरदान देने आये। बलि-पुत्र बाणासुर ने परमेश्वर शंकरजी को भक्ति से प्रणाम कर उन्हें उनके गण सहित अपने पास निवास करने का वर माँगा। भक्तवत्सल शंकरजी उसे यह वर दे अपने गणों तथा पुत्रों सहित प्रेम-पूर्वक उसके पास निवास करने लगे। एक समय शिवजीने उसकी उस शोणितपुर नगरी के तट पर बहती हुई नदी के किनारे देवताओं तथा दैत्यों सहित क्रीड़ा आरम्भ की जिसमें गन्धर्वों और अप्सराओंने नृत्य-गान किया और मुनियों ने आकर शिवजी को प्रणामकर उनकी पूजा और स्तुतिसे उन्हें जब यह कह बड़ी प्रसन्नता प्राप्त की शिवजी ने पार्वती को बुलाने गण

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

को भेजा पार्वती आईं और चित्रलेखा का सब भाव जान लिया तब गिरजा ने चित्रलेखा से कहा—तुमने मेरा रूप क्यों धारण कर लिया है ? अच्छा तो तू इसी कार्तिक मास से ऋतुधर्म वाली हो जायगी और वैशाख शुक्ल द्वादसी को आधीरात बीतने पर तुम सोती हुई के साथ कोई मनुष्य भोग करेगा और तू उसकी स्त्री होगी। उससे ऐसा कह देवी पार्वती शिव के पास जा क्रीड़ा करने लगीं। पश्चात् शिवजी वहाँ से अन्तर्ध्यान होगये।

* बावनवाँ अध्याय *

(उषा चरित्र वर्णन)

सनत्कुमारजी बोले—एक समय प्रारब्ध-दोष से गर्वित वाणासुर ने जब ताण्डव नृत्य करके शिवजी को सन्तुष्ट किया तो वह पार्वती सहित शिवजी को प्रसन्न हुआ जानकर कन्धों को झुका हाथ जोड़ बोला कि, महादेवजी ! आपके आशीर्वाद से ही में इतना बली हुआ हूँ। आपने जो मुझे यह हजार भुजायें दीं हैं, इन्हें मैं लेकर क्या करूं। युद्ध के बिना इन पर्वत के समान भुजाओं से क्या लाभ है ? मैं जब इस पुष्ट भुजाओं की खुजली मिटाने दिग्गजों से युद्ध करने की इच्छा से गया, या पर्वतों को चूर्ण करने की इच्छासे गया,तो वे डरसे भाग गये। मैंने यम,कुवेर,इन्द्र,वरुण, नैऋति सबको जीत लिया है। अब आप ही एक ऐसे हैं जिनसे कोई जीत नहीं सकता। अतएव आप मुझे उस युद्धका समय बताइये जिससे मेरी ये भुजायें शत्रुओंके अस्त्रों से जर्जरीभूत हों और यह सहस्रबाहु शत्रुओं के हाथ से गिरे और शत्रुओं को गिरावे जिससे मेरे मनोरथ पूर्ण हों। सनत्कुमारजी कहते हैं—यह सुन शिवजी क्रुद्ध हो बोले—अहंकारी ! तुझे धिक्कार है। भक्त वलि के कुल में उत्पन्न होकर तुझे ऐसी बात करना उचित नहीं है। तू शीघ्र ही इस अहंकार की शान्ति पावेगा। फिर तेरी यह पर्वताकार भुजायें मंदार की लकड़ी के समान कटकर पृथ्वी में गिरेंगी। तब तेरी स्थापित शस्त्र-शाला

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

में वायु का उत्पात होगा तब जानना कि तेरा भयङ्कर समय आगया है। यह सुन वाणासुर ने दिव्य पुष्पों से शङ्करजी की पूजाकर उन्हें प्रणाम किया और पुनः अपने घर आया। फिर कुम्भाण्ड से सब वृत्तान्त कह उस समय की प्रतीक्षा करने लगा। तब एक समय दैवयोग वाणासुर अपनी ध्वजाको स्वयं मग्न हुआ देख प्रसन्नहो युद्ध करने चला। उसकी समस्त सेना उसके साथ हुई। वह देखने लगाकि मुझसे कौन रण पारङ्गत योद्धा कहाँसे युद्ध करने आवेगा। भला ऐसा कौनहै जो मेरी इन हजार भुजाओं को आग के काष्ठ के समान काटेगा। इसी समय शिव-प्रेरित काल वहाँ आ पहुँचा जहाँ वाणासुर की पुत्री सुन्दर वेश बनाये खड़ी थी। वैशाख का महीना था जब वह रात्रि में विष्णु की पूजाकर स्त्री भाव में प्राप्त गुप्त अन्तःपुर में सो रही थी। तब दिव्य माया के वशीभूत तथा अनाथ के समान सोती हुई कन्या के पास पार्वती जी के भेजे हुए कृष्ण के पुत्र ने जाकर उसके साथ बलात्कार से भोग किया और पुनः द्वारका में चला आया। तब अपने को दूषित हुआ जान वह अपनी सखियों को कुवाक्य कह कर शरीर त्यागने चली। इस पर कुम्भाण्ड-पुत्री चित्रलेखा ने जो उसे उसकी पूर्व-कथा सुनाई तो वह फिर अपने उसी लुप्त पति को प्राप्त करने का उपाय सोचने लग गया। चित्रलेखा ने एक वस्त्र पर सब देवताओं, गन्धर्वों, सिद्धों नागों और इन्द्रादिकों का चित्र खींचा। मनुष्यों में उत्तम आनक, दुन्दुभि, राम, कृष्ण और प्रद्युम्न का चित्र बनाया। तब अनिरुद्ध के चित्र को देखकर ऊषा लज्जित हो, नीचे मुखकर मनमें बहुत ही प्रसन्न होगई तथा चित्रलेखा ने बतला दिया कि इसी पुरुष ने रात्रि में मेरे मनको चुराया है। इस पर चित्रलेखा ने उसका नाम, वंश कह कर कुलादि का वृत्तान्त सुनाया जिसे सुनकर वाणासुर की पुत्री मुग्ध हो गई। वह अपनी सखी से उसके पाने की उत्कण्ठा प्रकट करने लगी और बोली, चाहे जैसे भी तुम उसको यहाँ लाकर मुझे सुखी करो। मन्त्री कन्या चित्रलेखा विस्मित हो उसे लाने का विचार करने लगी।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

उसमें मनके समान गमन करने की शक्ति थी। ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी को वह योगिनी द्वारका पहुँची। चित्रलेखा तामस योग से अन्धकार कर उसकी शैया उठा, शिर पर रख क्षणमात्र में ही शोणितपुर आ गई ऊषा आश्चर्यित हो उससे काम क्रीड़ा करने लगी। परन्तु ज्योंही उसने क्रीड़ा करना आरम्भ किया कि त्योंही इसकी जानकारी सबको हो गई। द्वार पर स्थित द्वारपालों ने इसकी सूचना वाणासुर को दी। कन्या का दूषण सुन वाणसुर को बड़ा आश्चर्य हुआ।

* तिरेपनवाँ अध्याय *

(बाणासुर युद्ध तथा-ऊषा विहार)

सनत्कुमारजी बोले—तब क्रुद्ध वाणासुर ने वहाँ जाकर अनिरुद्ध को देखाजो शरीर से सुन्दर एवं लीलायुक्त अपनी पूर्व अवस्था में स्थित था। तब क्रोध से व्याकुल और युद्ध में निपुण दैत्य ने अनिरुद्ध को दुष्ट और मूर्ख कहकर युद्ध के लिये ललकारा और कहा कि तूने मेरी पुत्री के साथ बलात्कार क्यों किया? उसने अपनी दस हजार सेना को आज्ञा दी कि इसे युद्ध में परास्त कर मेरे पास बाँध लाओ। तब इस प्रकार शत्रु की सेना को गर्जती हुई देखकर अनिरुद्ध ने अन्त पुर के द्वार पर स्थित विकट परिघ को हाथ में उठा लिया और काल के समान ऊषा के गृह से निकल वहाँ आये हुये बाणासुर के सेवकों को मार ऊषा के पास अन्तपुर में लौट गया। फिर वाणासुर ने अपने युद्ध प्रवीण कुम्भाण्ड को बुला अनिरुद्ध से युद्ध करने को भेजा। परन्तु अनिरुद्ध तो शिवजी से सर्वथा ही रक्षित था जिससे उसने फिर वाणासुर के हाथी घोड़े रथों और इस प्रकार सशस्त्र दस हजार सेना को मार उनका संहार कर दिया। इसी पर वाणासुर स्वयं घोड़े पर बैठ उससे युद्ध करने आया कपट युद्ध किया। बाणासुर तुम शिव-भक्त हो तुम्हें क्रोध न करना चाहिये। यह आकाशवाणी सुन वाणासुर अनिरुद्ध को नहीं मारा और अन्तःपुर में जाकर उत्तमोत्तम मद्यपान कर अनिरुद्ध को बन्द करा दिया। फिर प्रिया के बिना अतृप्त चित्त वाले

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

अनिरुद्ध ने देवी दुर्गा का स्मरण किया। अनिरुद्ध की स्तुति सुन चतुर्दशी की उस गाढ़ रात्रिमें श्री कालीजी ने प्रकट हो उसके पिंजड़ेको तोड़ दिया। अनिरुद्ध शिव-शक्ति से छूट बाणासुर की कन्या के पास गया। वहाँ पानीय पादर्थों को पान कर सुखी हुआ।

* चौवनवां अध्याय *

(कृष्णादि युद्ध वर्णन)

व्यासजी बोले—मुनि श्रेष्ठ ! जब कुम्भाण्डः की पुत्री ने श्रीकृष्ण के पोते अनिरुद्ध का हरण कर लिया तब श्रीकृष्णजी ने क्या किया? सनत्कुमारजी कहने लगे—मुनि उत्तम ! अनिरुद्ध के चले जाने पर जब श्रीकृष्ण ने स्त्रियों का रोना सुना तो उन्हें बड़ा दुःख हुआ और वर्षा के चार महीने वे उसी प्रकार दुःख से ही व्यतीत किये। पश्चात् नारदजी से अपने पौत्र के बँध जाने का समाचार सुनकर सब यादवों को साथ ले गरुण पर बैठ वे शोणितपुर पहुँचे। प्रद्युम्न, युयुधान, साम्ब, सारण, नन्द, उपनन्द, बलभद्र और कृष्ण के सभी अनुवर्ती उनके साथथे। इस प्रकार बारह अक्षौहिणी सेना सहित श्रीकृष्ण ने जाकर वाणासुर की उस नगरी को घेर लिया। तब उन्हें इस प्रकार घेरते देख उतनी ही सेना साथ ले वाणासुर उनसे युद्ध करने चला। साथ ही अपने भक्त की रक्षा के लिए भगवान् सदाशिव अपने पुत्रों तथा गणों सहित नन्दी बैल पर आरूढ़ हो युद्ध करने आये। रुद्र और कृष्ण आदि का अद्भुत रोमहर्षण युद्ध हुआ। कृष्ण का शिवजी से प्रद्युम्न का कुम्भाण्ड से, कूप का कर्ण से, वाण-पुत्र का साम्ब से, बाण का सात्यकि से और गरुड़ का कन्द से युद्ध हुआ। इस प्रकार सारे यदुवंशियों का वाणासुर के वीरों के साथ पृथक-पृथक और सम्मिलित भयानक संग्राम हुआ। स्वयं शिवजी क्रोधकर बड़ा गम्भीर शब्द करते हुए युद्धकर रहे थे। ब्रह्मास्त्र से ब्रह्मास्त्र तथा अन्य शस्त्रों से शस्त्र लड़ रहे थे। भयानक मार-काट मची। इसमें श्री कृष्ण की सेना

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

नष्ट हो रही थी। यह देख श्री कृष्णजी ने करुण सम्बन्धी अपने शीत-लाख्य ज्वर वाले अस्त्र को छोड़ शिवजी पर चलाया। तब उसे आता देख महादेव ने अपना ज्वर छोड़ा। दोनों परस्पर युद्ध करने लगे। शिवजी के ज्वर से विष्णु-ज्वर परास्त हो शिवजी की स्तुति करने लगा। शिवजी ने उसे छोड़ दिया। यह देख श्रीकृष्ण जी विस्मित हो बड़े भयभीत हुये। सब ने मिलकर शिवजी की स्तुति की। श्रीकृष्ण जी ने कहा—मैं आपकी आज्ञा से अभिमानी वाणासुर की भुजाओं को काटने आया हूँ। आप संग्राम से लौट जाइये। आप मुझे आज्ञा दीजिये कि मैं वाणासुर को मारूँ। श्रीकृष्णजी का यह वचन सुनकर शिवजी ने कहा-सत्य है, मैंने वाणासुर को शाप दिया है। आप इसे मारिये। परन्तु में भक्तों के आधीन हूँ। इसलिए पहले आप मुझे जृम्भण अस्त्र से जृम्भण कीजिए। फिर अपना कार्य कर सुखी होइये। श्रीकृष्णजी ने शिवजी पर अपने घोर बाण बरसाकर उन्हें जृम्भित किया। जब शिवजी मोहित हो युद्ध से रुक गये तब श्री कृष्णजी ने बाणासुर की भुजाओं को काटा।

* पचपनवाँ अध्याय *

(बाणासुर की भुजाओं का खण्डन)

व्यासजी ने सनत्कुमारजी से पूछा कि, हे मुनीश्वर! इसके पश्चात् क्या हुआ? सनत्कुमारजी कहने लगे—जब पुत्रों और गणों सहित शिवजी संग्राम-भूमि में सो गये तब दैत्यराज बाणासुर श्री कृष्णजी से युद्ध करने आया। वह घोड़े पर बैठ उनसे भयङ्कर युद्ध करने लगा। अब शिवजी का बल पाकर श्रीकृष्णजी वाणासुर को तृण के समान जानकर अपना शार्ङ्ग धनुष उठा पर घोर वाण बरसाने लगे। परन्तु वाणासुर भी उनके वाणों को अपने पास न आने देता और बीच ही में काट डालता। उसने अपने चारों ओर के शत्रुओं को मार-काट कर संहार कर दिया। सम्पूर्ण यादव कृष्ण का स्मरण

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

करते हुए मूर्छित हो गये। यह देख द्वारिकाधीश परम क्रुद्ध हो गर्जन करने लगे फिर शिवजी को स्मरण कर अपने प्रचण्ड बाण चला उसके रथ घोड़े और धनुषादिको मार-काटकर पृथ्वी पर गिरा दिया। फिर उसने अपनी गदा से श्री कृष्णजी को ऐसा ताड़ित किया कि वे महात्मा पृथ्वी पर गिर पड़े। परन्तु शीघ्र ही उठ कर शिव ने बली वाणासुर के साथ बहुत काल तक युद्ध किया और ज्योंही शिवजी की आज्ञा ने अवसर पाया कि त्योंही उसकी भुजाओं को काटना आरम्भ कर दिया। जब उसकी श्रेष्ठ चार भुजायें ही शेष रह गईं तब भगवान् श्री कृष्णजी शिवजी की कृपा से स्वतन्त्र हुये। अब उन्होंने अपना सुदर्शन चलाकर वाणासुर का शिर काटना चाहा। तब तक शिवजी ने उनके समक्ष आकर निषेध कर दिया। शिवजी की आज्ञा से श्री कृष्णजी रुक गये शिवजी ने उनकी वाणासुर से मित्रता करा दी। वाणासुर श्री कृष्णजी को अपने अन्तःपुर में लिवा ले गया। वहाँ अपनी कन्या को अनिरुद्ध के लिए देकर बहुत से रत्नादि सहित श्रीकृष्णजी का स्वागत किया। श्रीकृष्णजी अपनी पौत्र को साथ ले कुटुम्ब सहित द्वारका आये।

* छप्पनवां अध्याय *

(वाणासुर को गाणपत्य पदप्राप्ति)

नारदजी बोले—मुने! इसके पश्चात् वाणासुर ने क्या किया? सनत्कुमारजी बोले—इसके पश्चात् अपने अज्ञान को समझकर वाणासुर बड़ा ही दुःखी हुआ। वह शिवजी के स्थान में जाकर रोने लगा फिर अनेक स्तोत्रों द्वारा नमस्कार करता हुआ यथोचित हस्त पद-न्यास युक्त ताण्डव नृत्य करने लगा। धीरे-धीरे अनेकों नृत्य किया। अपने शरीर की रक्त धाराओं से वहाँ की भूमि को सींचा। उस प्रकार उस महा भक्त ने चन्द्रशेखर शिवजी को प्रसन्न किया शिवजी ने प्रगट हो उससे वर माँगने को कहा। उसने कह कुछ वर माँगे। शोणितपुर में अपनी पुत्री ऊषा का राज्य मांगा विष्णु से निर्वैरता

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

तथा दुष्ट दैत्यता का विनाश माँगा। फिर शिव भक्तों में स्नेह यथा सब प्राणियों में दया माँगते हुए उसने हाथ जोड़ शिवजी को प्रणाम किया और इनकी बड़ी स्तुति की। वाणासुर ने कहा देवों के देव महादेवजी ! आपकी ब्रह्म परमात्मा सर्वव्यापी अखलेश्वर सबमें व्याप्त और सबसे परे है। प्रभो ! आपने मुझ पर बड़ी कृपा की जो मेरा गर्व नष्ट किया। ऐसी स्तुति कर वाणासुर प्रेम से प्रफुल्लित हो अपने सारे अङ्गों को झुका प्रणाम कर मौन हो गया शिवजी ने प्रसन्न हो कहा, तुम्हें सभी वर प्राप्त होंगे। ऐसा कह शिवजी अन्तर्ध्यान हो गये। शिव जी के प्रशाद से वाणासुर ने महा काल तत्व प्राप्त कर बड़ी प्रसन्नता प्राप्त की।

* सत्तावनवाँ अध्याय *

(गजासुर-वध वर्णन)

सनत्कुमारजी बोले—व्यासजी ! अब शिवजी के उस चरित्र को सुनो जिसमें उन्होंने राजवेन्द्र गजासुर को त्रिशूल से मार दिया था। देवताओं के हितार्थ देवी ने महिषासुर को मारा था और जिसका बदला लेने के लिए ही उसके पुत्र गजासुर ने उग्र तपकर ब्रह्माजी से बर प्राप्त किया था जब इस प्रकार ब्रह्माजी से बर प्राप्त कर वह अपने स्थान को आया तो उसके सब दिशाओं तीनों लोकों सहित देवता असुरों मनुष्यों और इन्द्रादिकों सहित सब गन्धर्वों और सर्वों को जीत उनके तेज को हरण कर लिया। उसने देवताओ को अपने चरणों में गिराकर प्रणाम कराया और सबको प्रचण्ड आज्ञा देकर महेन्द्र पर्वत पर जाकर क्रीड़ा करना आरम्भ किया। वह विषय लोलुप्त हो गया। पृथ्वीपर जितने भी तपस्वी ब्राह्मण थे महिषासुर का पुत्र उन्हें क्लेश देने लगा। इस प्रकार जब वह काशी नगरी में आया तो उससे पराजित इन्द्रादि सब देवता भागकर शिवजी की शरण में गये और प्रणाम कर बड़ी स्तुति की। तब शिवजी

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

कुपित हो हाथ में त्रिशूल ले उस दैत्य को मारने चले। उसने शिवजी से बड़ा युद्ध किया तलवार ले शिवजी के ऊपर दौड़ा। शिवजी ने त्रिशूल उठा उसका शिर छेदन कर दिया। परन्तु शिवजी को अपना स्वामी मानकर उनकी अनेक प्रकार से स्तुति करने लगा। शिवजी शीघ्र ही प्रसन्न हो उसे वर देने लगे। उसने कहा—यदि आप प्रसन्न हैं तो मुझे मार कर मेरी उस देह को अपना ओढ़ना बनाइये तथा कृतिवासा नाम कीजिये शिवजी ने तथास्तु कह कर उसके शरीर को काशी क्षेत्र में मुक्ति दायक ज्योति लिङ्ग बनाया। उसके कृतिवाशेश्वर हुये। फिर शिवजी ने गजासुर के उस विस्तृत चर्म को ग्रहण कर अपना आच्छादन किया। गजासुर के बध में देवता शान्त हुये।

* अट्ठावनवाँ अध्याय *

(निह्वाद-बध)

सनत्कुमार जी बोले—व्यासजी! अब दुन्दुभि निन्हाद का चरित्र कहता हूं कि जिसे महादेवजी ने मारा था जब विष्णु द्वारा दिति का महाबली पुत्र हिरण्याक्ष दैत्य मारा गया तो उसके कारण दिति को बड़ा दुःख हुआ। तब दुन्दुभि निन्हाद ने आकर दिति को बड़ा आश्वासन दिया और देवता किस प्रकार जीते जायँगे इस पर विचार किया। उसने कहा इसमें ब्राह्मण आदि कारण हैं। दुन्दुभि निन्हाद ने ब्राह्मणों का ही संहार करना चाहा। क्योंकि देवता तो योग भोगी हैं और यज्ञ वेदों से उत्पन्न हुए हैं तथा ब्राह्मण इसके आधार पर हैं। इस प्रकार देवताओं को ब्राह्मणों का बल है। सम्पूर्ण वेद तथा इन्द्रादि देवता ब्राह्मणों के ही आधार पर बली हैं। यदि ब्राह्मण नष्ट हो जायेंगे तो वेद स्वयं ही नष्ट हो जायेंगे। यज्ञ के नाश होने से देवता भोजन रहित हो जायेंगे और तब इन्हें सुगमता से जीता जा सकेगा। ऐसा निश्चय कर वह

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

दुष्ट फिर बिचार करने लगा। तपशील ब्राह्मणों की खोज की। उसे ज्ञात हुआ कि अधिक ब्राह्मणों की भूमि काशी है। अतः पहले उसे जीतकर फिर दूसरे तीर्थों को जाऊँगा। दुन्दुभि निर्ह्हाद काशी में आ ब्राह्मणों को मारने लगा। जो ब्राह्मण कुशा और समिधा लेने बन जाते वह आ सबको वहीं खा जाता। वह कभी वनचर और कभी जलधर होकर विचरता रहता। वह मायावी अदृश्यरूप दैत्य कभी देवताओं की दृष्टि में नहीं आता। दिन में मुनियों की तरह ध्यान लगा कर मुनियों के मध्य में बैठ जाता और रात्रि में ब्राह्मणों की पर्णशाला में प्रवेश कर निर्जन देख व्याघ्ररूप धारण कर ब्राह्मणों को फाड़कर खा लेता। इस प्रकार उस दुष्ट ने बहुत से ब्राह्मण मार डाले। एक समय शिवरात्रि में एक शिवका भक्त शङ्कर की पूजा करके ध्यान करने लगा। तब वह दैत्य व्याघ्ररूप धारण किये था, जिससे वह परन्तु ब्राह्मण तो शिव मन्त्र रूपी कवच धारण किये था, जिससे वह उस शिवभक्त को न खा सका। इससे भगवान् शङ्कर कुपित हो उसे वध करने की इच्छा करने लगे। फिर भक्तों की रक्षा में चतुर बुद्धि वाले भगवान् शङ्कर ब्राह्मण के उसी पूजित लिङ्ग से प्रकट हो गये। तब शङ्करजी को प्रगट हुआ देख वह दैत्य उसी रूप में इतना बढ़ा कि पर्वत के समान हो गया। परन्तु शिवजी ने एक ही मुष्टिक मार कर उसके जीवन का अन्त कर दिया। उसकी भयानक चिंघाड़ से आकाश व्याप्त हो गया। मुनियों ने एकत्र हो जय-जय शब्दों से शिव जी की बड़ी स्तुति की।

* उनसठवां अध्याय *

(विदल उत्पल नाम के दैत्यों का विनाश)

श्री सनत्कुमारजी बोले—श्री वेद व्यासजी! अब मैं आपको विदल एवं उत्पल नामधारी दैत्यों के नाश की कथा सुनाता हूँ विदल

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

तथा उत्पल नाम के दो दैत्य हैं। उन्होंने तप करके यह वर मांग लिया था कि हम किसी भी पुरुष के हाथों न मरें। इस प्रकार वर पाकर उन्हें अभिमान छा गया। अपनी भुजाओं के बल से सारे ब्रह्माण्ड को जीतकर अपने वश में कर लिया, फिर संपूर्ण देवताओं को भी युद्ध में परास्त कर दिया। इस प्रकार हारकर देवताओं ने ब्रह्मा के पास जाकर उन्हें प्रणाम किया, फिर स्तुति करके अपना दुखड़ा सुनाया। यह सुनकर ब्रह्माजी बोले--देवताओ ! यह दोनों दैत्य जगत जननी पार्वती से मारे जायेंगे। इस समय लोग धैर्य धारण करके भगवान् शङ्कर का स्मरण करो ये भक्तभय हारी हैं, तुम्हारे सब प्रकार के दुःख हरण कर देंगे। श्री सनत्कुमारजी बोले-व्यासजी ! जब देवताओं ने ऐसा सुना तो शिव-शिव कहते हुए अपने-अपने लोकोंमें सभी देवता चले गए। उसके बाद एकदिन नारदजी उन दैत्यों के पास पहुँचे और श्रीपार्वती के रूप की आकर प्रशंशा की, भगवान् शंकर की प्रेरणा ही ऐसी थी। उस रूप की प्रशंसा सुनकर दोनों दैत्य कामदेव से पीड़ित हुये फिर श्रीपार्वतीजी को हरण करने की इच्छा करके प्रयत्न करने लगे। एक समयकी बात है जब भगवान् शिव विहार कर रहेथे एवं श्रीपार्वतीजी अपनी सखियों के साथ गेंद उछाल रही थीं। तब इस दृश्यको देखकर वेदोनों दैत्य अपनी माया द्वारा शिवगण के रूप धारण कर आकाश से नीचे उतरे और चञ्चलता के साथ कटाक्ष करते हुए श्री पार्वतीजी को देखने लगे। तब श्रीमहादेबजी जान गये कि दोनों दैत्य हैं और माया से ही अपना रूप मेरे गणों का धर रक्खा है। यही बात इशारे से भगवान् शङ्करने श्री पार्वतीजी को समझा दी तब तो श्री पार्वती ने खेलते-खेलते अपनी गेंद उन दैत्यों पर फेंकी गेंद के लगने की देर थी। कि वे दोनों दैत्य चक्कर काट कर पृथ्वी पर गिर पड़े और उनके प्राण निकल गये। तब तो वह गेंद लिंग रूप से दर्शन देने लगी। ज्येठेश्वर के पास कन्दुकेश्वर नाम से वह स्थान प्रसिद्ध हो गया। उस समय वहाँ शिव लिंग के प्रकट हो जाने के कारण विष्णु ब्रह्मादि

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

देवत वहाँ आये भगवान् शङ्कर को प्रणाम एवं स्तुति आदि करके प्रसन्न किया। शङ्कर द्वारा वरों को प्राप्त करके अपने-अपने लोकों को चले गये।

* इति पूर्वार्द्ध समाप्त शुभमस्तु *

आरती शिवजी की

जै शिव ओंकारा हरि शिव ओंकारा ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्धाङ्गी धारा ॥ टेक ॥ एकानन पञ्चानन राजे। हँसानन वृष वाहन। जैशिव ॥ १ ॥ दो भुज चार चतुरभुज दस भुज से सोहैं, त्रिगुणरूप निरखता त्रिभुवन जन मोहे। जैशिव ॥ २ ॥ अक्षिमाला वनमाला मुण्डमाला धारी, चन्दन मृगमद चन्द भाले शुभकारी। जै शिव ॥ ३ ॥ श्वेतांवर, पीतांवर, बाघम्बर अंगे। ब्रह्मादिक सनकादिक संगे। शैशिव ॥ ४ ॥ लक्ष्मी वर गायत्री पार्वती संगे अरधाङ्गी अरु त्रीभङ्गी सिर सोहत गंगे। जैशिव ॥ ५ ॥ कर के मध्य कमण्डल चक्र त्रिसूल धरता। जग करता जग हरता जग पालन करता। जैशिव ॥ ६ ॥ त्रिगुणात्मक की आरति जो कोई गावे। कहत शिवानन्द स्वामी सुख संपत्ति पावे। जैशिव ओंकारा ॥ ७ ॥

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* ॐ सत्यं शिवं सुन्दरम्

* श्रीशिवमहापुराण भाषा *

उत्तरार्द्ध

[शतरुद्र संहिता—प्रारम्भः]

* पहला अध्याय *

(शिवजी के पांच अवतार)

शौनकजी बोले–सूतजी ! अब आप मुझे शिवजी के अवतारों की वह कथा सुनाइये। सूतजी बोले—हे मुने ! यही बात पहले सनत्कुमारजी ने साक्षात् शिव-मूर्ति नन्दीश्वर से पूछी थी। तब नन्दीश्वर ने शिवजी का स्मरण कर कहा था, कि सर्व व्यापक शङ्कर जी के असंख्यों अवतार हैं। उनमें कुछ मैं यथापति कहता हूं। श्वेत-लोहित नामक उन्नीसवें कल्प में शिवजीका पहला सद्योजात नामक अवतार हुआ है। उस कल्प से परब्रह्म का ध्यान करते हुए ब्रह्माजी की शिखा से श्वेत लोहित कुमार उत्पन्न हुए। तब उन्हें सद्योजात नामक जानकर ब्रह्माजी प्रसन्न हो उनका वारम्बार चिन्तक करने लगे। तब उनके चिन्तन से परमब्रह्म स्वरूपी बहुत से कुमार उत्पन्न हुये। सुनन्दन नन्दन, विश्वनन्दन इस प्रकार उनके नाम थे। तब सद्योजात अशम्भु ने ब्रह्माजी को ज्ञान देकर सृष्टि उत्पन्न करने की शक्ति दी। इतने में रक्त नामक बीसवां कल्प आगया और ब्रह्माजी रक्त वर्ण के हो गये। फिर उनके वैसा ही लाल नेत्रों वाला रक्त बर्ण का एक पुत्र उत्पन्न

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

हुआ। तब उसको वामदेव शिव जानकर ब्रह्माजी अञ्जलि बाँधकर उनकी स्तुति की। फिर उन लाल वस्त्रधारी को बिरज, विवाह विशाख और विश्वभान नाम के चार पुत्र उत्पन्न हुए। पश्चात् उन वामदेव शम्भु ने ब्रह्माजी को सृष्टि करने की आया दी। पश्चात् इक्कीसवा पीतवास नामक कल्प आया और भाग्यवान् ब्रह्माजी ने पीला वस्त्र धारण किया। पुत्री की कामना की। कामना करते ही एक महान तेजस्वी दीर्घ भुजा वाला कुमार उत्पन्न होगया! उसे उन्होंने शिव का अवतार जाना और शिव गायत्री जपने लगे। फिर तो इसके भी समीप से बहुत से कुमार प्रकट हुए। तत्पुरुष अवतार हुआ। इसके पश्चात् शिव नामक कल्प हुआ और ब्रह्माजी हजारों वर्ष तक फिर पुत्र की चिन्ता करते रहे तब कृष्ण वर्ण के एक तेजस्वी कुमार ने जन्म लिया। तब इस अघोर और घोर पराक्रमी कृष्ण एवं अद्भुत देवेश को देखकर ब्रह्माजी प्रणाम करने लगे। फिर प्रिय वाणी से उन्होंने उस अवतार की बहुत-सी स्तुति की पश्चात् उनके समीप कृष्ण के चार महात्मा कुमार प्रकट हुए जिनका नाम क्रमशः कृष्ण कृष्णशिख कृष्णास्य और कृष्णकण्ठधारी हुआ। ये सभी अव्यक्त नाम वाले तेजस्वी और शिवस्वरूप ही थे। इन्होंने भी ब्रह्माजी की सृष्टि विस्तार के लिए अद्भुत "घोर" नामक योग को किया। इस प्रकार अघोर नामक अवतार हुआ। परम अद्भुत विश्वरूप नामक कल्प हुआ, जिसमें ब्रह्माजी के चिन्तन से सरस्वती का प्रादुर्भाव हुआ। साथ ही वेश धारण किये हुये परमेश्वर भगवान् ईश भी प्रगट हुए। तब उन अज विभु शिव को देख ब्रह्माजी ने उन्हें प्रणाम किया। ईश्वर ने ब्रह्माजी को सन्मार्ग का उपदेश दिया। फिर अपनी शक्ति से शुभ चार बालकों की कल्पना की। जटी, मुण्डी, शिखण्डी तथा अर्द्धमुण्डी। परन्तु इन सब बालकों ने भी योग का मार्ग अपना लिया। अवतार समाप्त हुआ। इस प्रकार ईसान, पुरुष अघोर, काम संज्ञक तथा ब्रह्मसज्ञक शिव की पाँच मूर्तियाँ विख्यात हुईं।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* दूसरा अध्याय *

(शिवजी की मूर्तियों का वर्णन)

नन्दीश्वर बोले—हे तात ! शिवजी की (१) शर्व (२) भव (३) रुद्र (४) उग्र (५) भीम (६) पाशुपति (७) ईशान और (८) महादेव ये आठ मूर्तियाँ सूत्र में मणियों के समान पिरोयी हुई हैं और भूमि, जल, अग्नि, पवन, आकाश, क्षेत्रज्ञ, सूर्य और चन्द्र क्रमशः उसमें अधिष्टित हैं। शास्त्रों का कहना है कि शङ्कर विश्वम्भर के रूप में इसी प्रकार चराचर जगत को धारण कर रहे हैं। इस प्रकार परमात्मा शिव का भवरूप जलत्मक है जो संसार को जिलाने वाला है तथा जो संसार को पालता और चलाता है, वह शिव का उग्र नामक रूप है फिर शिवजी का एक आकाशात्मक भीम स्वरूप है, जिससे राज समुदाय का भेदन होता है। यह सब आत्माओं का अधिष्ठाता है। फिर पशुपात नामक शिव का जो रूप है, वह समस्त पशु जीवों का पाश काटने वाला है। जो शिव जी का ईशान नामक रूप है वह सूर्योत्मक होकर संसार को प्रकाश देने वाला है और आकाश में प्रसरित है। फिर महादेव नामक जो शिवजी का रूप है। वह अमृत किरणों वाला संसार का तृप्तिकर्त्ता है। आठवाँ मूर्त्त अमूर्त्त सब में व्यापक शिवजी का वह "आत्मा" नामक रूप है जिससे यह सारा संसार शिव रूप ही है। शिवजी अपनी इन आठ मूर्तियों में संसार में अधिष्ट हैं।

* तीसरा अध्याय *

(अर्द्ध नारीश्वर शिव)

नन्दीश्वर बोले—जब ब्रह्माजी की रची हुई सृष्टि में विस्तार न आया तो उन्हें बड़ी चिन्ता हुई यह विश्वास था कि बिना शिवके प्रभाव से यह न उत्पन्न होगी अतएव उन्होंने तप करने का

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

विचार किया। पार्वती सहित शिवजी के ध्यान से वे शिव शीघ्र ही प्रकट हो गये। तब परमशक्ति युक्त शङ्कर को प्रकट हुआ देख ब्रह्माजी उन्हें दण्डवत प्रणाम कर हाथ जोड़ स्तुति करने लगे। तब देवाधिदेव महादेव प्रसन्न हो बोले कि, वत्स मैं तुम्हारे मनोरथ को जानता हूं। प्रजा-वृद्धि के लिए तुमने अब तक तप किया है। इससे प्रसन्न हो तुम्हें वर देने आया हूँ। ऐसा कह कर शिवजी ने अपने शरीर के भाग से शिवा देवी को पृथक कर दिया। तब उन परम शक्ति को शिव से पृथक हुआ देख विनीतात्मा ब्रह्माजी प्रणाम कर उनकी उस प्रकार स्तुति करने लगे–शिवे ! देवों के देव ! आपके इन्ही पति ने मेरी रक्षा की है जिन परमात्मा शिवजी से ही समस्त सृष्टि का सृजन हुआ है। शिवे ! मैं बारम्बार सब देवताओं को अपने मनमें बनाता हूँ परन्तु वे मेरी सृजित बुद्धि को धारण करते। इससे अब मैं एक वह मैथुनी सृष्टि रचना चाहता हूं इसमें नारियों की आवश्यकता है और जिस अत्यन्त श्रेष्ठ कुल के लिए मेरी शक्ति काम नहीं देती है। क्योंकि सारी शक्तियाँ तो तुम्हारी ही शक्ति से उत्पन्न हुई हैं इस कारण तुम्हीं ईश्वरी हो। अतएव मैं प्रार्थना करता हूँ। शिवे ! अब आप मुझे नारी कुल का सृष्टि करने की शक्ति दीजिये। आप एक ही सामर्थ्य से संसार की बुद्धि के लिए दत्र की पुत्री होइये। तब ब्रह्मा की इस याचना को सुनकर देवी ने कहा––"ऐसा ही हो।" आनन्द मग्न ब्रह्मा ने मैथुनी सृष्टि आरम्भ की।

* चौथा अध्याय *

(ऋषभदेव-चरित्र)

नन्दीश्वर बोले––सर्वज्ञ ! सनत्कुमारजी द्वारा रुद्र से कहा हुआ शिव चरित्र निरन्तर ब्रह्मा को सुखदायक है। शिवजी बोले—हे ब्रह्मा सातवें मन्वन्तर बाराह कल्प होगा जिसमें कल्पेश्वर भगवान् प्रकट होकर सब लोकों के प्रकाश करने वाले होंगे और तुम वैवश्वत मनु के परपोते होओगे। उस मन्वन्तर में चार युग होंगे और द्वापर

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyan Kosha

के अन्त में ब्राह्मणों के हितार्थ मैं उत्पन्न होऊंगा। तब युग की प्रवृत्ति के अनुसार जब द्वापर का प्रथमारम्भ होगा तब उसमें व्यासजी स्वयं प्रभु होंगे और कलियुग के अन्त में मैं शिवायुक्त श्वेत नामक महामुनि होऊँगा। हिमालयके शिखरमें ब्रह्माजी मेरे शिखा शिष्य होंगे तथा मुझ अव्यय को तत्व जानकर और भी मेरे बहुत से भक्त होंगे। फिर द्वापर में सत्य नामक प्रजापति होंगे और कलियुग में मैं 'सुतारि' नाम से प्रसिद्ध होऊँगा तथा उस युग में भी बहुत से वेदज्ञ ब्राह्मण मेरे शिष्य होंगे। जैसे दुन्दुभि शतरूप तृषीक और केतु। फिर ये चारों भी ध्यान योग से मेरे पुर को प्राप्त हो जायेंगे। इसी प्रकार जब द्वापर का तीसरा चरण होगा तब भार्गव व्यास होंगे और मेरे पुर के समीप ही वे दमन नामसे प्रसिद्ध होंगे तथा वहाँ मेरे विशोकादि चार पुत्र उत्पन्न होंगे। ये व्यासजी के शिष्य होंगे और उस कलियुग में उन्हें दृढ़ निवृत्ति का उपदेश करूँगा। फिर चौथे द्वापर में अँगिरा जी व्यास होंगे। उस समय मैं सुहोत्र नाम से प्रकट होऊंगा। वहाँ भी मेरे चार पुत्र होकर वे चारों भी महात्मा हो जायेंगे जिनका नाम सुमुख, दुर्मुख, दुर्दभ और दुरतिक्रम होगा। उस समय भी मैं व्यास जी के शिष्यों की सहायता करूंगा। इसके पश्चात् पाँचवे द्वापर में सविता नामक व्यास और मैं कङ्क नामक योगी एवं तपस्वी होऊंगा तथा सनक, सनन्दन, सनातन और सनत्कुमार ये चार पुत्र होंगे। फिर छटवें द्वापर में लोकों के कर्त्ता वेद-विभाग कर्त्ता मृत्यु नामक व्यास होंगे और मैं लोकाक्षि नाम से व्यासजी की सहायता के अर्थ मुक्ति मार्ग को आश्रय दूंगा। इसी प्रकार जब नवाँ द्वापर आवेगा। तब सारस्वत नाम वाले व्यासजी होंगे और उनके ध्यानसे मैं ऋषभ नाम से प्रकट होऊंगा तथा मेरे पाराशर, गर्ग, भार्गव तथा गिरीश यह चार श्रेष्ठ योगी मेरे शिष्य होंगे जिनके साथ मैं योग मार्ग को ही दृढ़ करूंगा। कुरे इस ऋषभ नामक अवतार से संसार का बहुत कल्याण होगा।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by Sarayu Trust. Siddhanta eGangotri Gyaan Kosh

* पाँचवाँ अध्याय *

(शिव अवतार वर्णन)

शिवजी बोले—द्वापर के दसवें भाग में एक त्रिधामा नामक व्यास मुनि होंगे जो हिमालय के उच्च शिखर पर भृंगु नामक स्थानों में रहेंगे तथा वहाँ भी मेरे भृगु वलवन्धु,नरामित्र और केतु शृङ्ग नामक चार तपोधन पुत्र होंगे। फिर ग्यारहवाँ द्वापर आवेगा। जिस में त्रिबृत नामक व्यास होंगे और मैं कलिङ्ग में गङ्गा के द्वापर में तप नाम से प्रकट होऊँगा तथा वहाँ भी मेरे चार दृढ़ व्रतधारी पुत्र उत्पन्न होंगे। फिर वारहवाँ द्वापर आवेगा जिसमें शततेजा मुनि व्यास होंगे और इस प्रकार द्वापर में व्यासजीके अट्ठाईस अवतार होंगे और प्रत्येक कलि के प्रारम्भ में योगेश्वरों का अवतार होता रहेगा तथा उनके चार पुत्र सर्वदा प्रत्येक अवतारों में होते रहेंगे। वे सब योग मार्ग के प्रवर्त्तक और शैव अविनाशी होंगे। ये सभी सर्वदा शिव जी के भक्त, शिष्य, पाशुपत व्रत करने वाले शरीर में भस्म लगाये रुद्राक्ष मालाधारी और ललाट पर त्रिपुण्ड लगाने वाले होंगे। ये सभी शिष्य धर्म में तत्पर, वेद-वेदाङ्ग के परगामी, नित्य वाह्याभ्यन्तर लिंगार्चन करने वाले होंगे। इनकी सर्वदा मुझमें भक्ति रहेगी और ये योग द्वारा सदैव ध्यानावस्थित रह जितेन्द्रिय रहेंगे जिनकी इन अट्ठाईसों द्वापरों में कुल संख्या एक सौ बारह होगी। यह मैंने मनु आदि से लेकर कृष्ण पर्यत अट्ठाईस युगों के क्रम से सब अवतारों का वर्णन किया। इन सबके अन्त में जब कृष्णद्वैपायन व्यास होंगे तब ये श्रुतियों सहित ब्रह्मलक्षणों से युक्त वेदान्त शास्त्र का वर्णन करेंगे। ब्रह्माजी से ऐसा कह कर उनके देखते-देखते शिव अन्तर्ध्यान हो गए।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyan Kosha

* छटवां अध्याय *

(नन्दिकेश्वर अवतार)

सनत्कुमार बोले—नन्दीश्वरजी ! शिवजी के अंश से आप कैसे उत्पन्न हुये तथा परम गुह्य शिव तत्व को आपने कैसे जाना नन्दीश्वर बोले—सनत्कुमारजी ! अब आप सावधान होकर वह सुनिए कि जिस प्रकार मैं शिवजी का अंशज हुआ । एक समय जब पुत्र की कामना से शिलाद ऋषि शिवजी का तप और ध्यान करते हुए शिवलोक को प्राप्त हुए तब देवताओं के प्रभु इन्द्र उनके तप से प्रसन्न हो बर देने के लिए उनके समीप गये और कहा—वर माँगो । इस पर इन्द्र को प्रणाम कर अनेक स्तुतियों से उनका आदर करते हुए मुनि शार्दूल शिलाद हाथ जोड़कर बोले कि यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो मुझे अयोनिज तथा मृत्युहीन पुत्र दीजिये । इन्द्र ने कहा—मृत्युहीन तो कोई नहीं होता । हरि ब्रह्मा आदिक भी तो मृत्यु वाले ही हैं । हाँ, यदि देवेश्वर रुद्र प्रसन्न हो जाये तो वे अयोनिज मृत्यु रहित तुझे दे सकते हैं । इन्द्र उस ब्राह्मण से ऐसा कर देवताओं सहित अपने लोक को चले गये । पश्चात् शिलादने महादेव जी की आराधना की एक हजार वर्ष तक घोर तपस्या की । उसके शरीर पर दीमकों ने मिट्टी चढ़ादी । तब शिवजी ने उसे अपना रूप दिखाया देवताओं के अधिपति ने उसे वर देने को कहा । परन्तु समाधि में लीन शिलाद को उनको बाँणी सुनाई ही न पड़ी । जब शिवजी ने अपने शुभ करों से स्पर्श किया । तब उसकी समाधि टूटी । नेत्र खोल कर देखा तो उमा सहित शिवजी समक्ष ही खड़े थे । वह उनके चरणों पर गिर पड़ा और स्तुति करने लगा । भगवान् शङ्कर ने कहा, मैं वर देने आया हूं । मैं तुम्हें सर्वज्ञ और सर्व शास्त्रों में पारङ्गत पुत्र देता हूँ । शिलाद ने गद्गद् कण्ठ और सजल नेत्रों से हाथ जोड़कर कहा—महादेवजी ! आप मुझपर प्रसन्न

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

हैं और वर देना चाहते हैं तो अपने समान ही मृत्यु रहित तथा योनिज पुत्र दीजिये। त्रयम्बक शङ्करजी ने कहा—"एवमस्तु" कह शङ्करजी अन्तर्ध्यान होगये। शिलाद ने अपने स्थान में आकर सब वृतान्त ऋषियों से कहा। फिर यज्ञ के लिए आँगन खोदने लगा। फिर तो उसी समय उनका आज्ञा से मैं उसका पुत्र रूप होकर प्रलयाग्नि के समान देदीप्यमान होकर प्रगट हुआ। देवताओं ने फूल वर्षाये।

ऋषियों और गन्धर्वादिकों ने गुण गान किया। सम्पूर्ण ब्रह्मादिक देवता अपनी स्त्रियों सहित विष्णु, शिव और अम्बिका आदि उस स्थान पर आये। अप्सरायें नाचने लगीं और सब प्रसन्न हो मेरी लिङ्ग-मूर्ति स्थापित कर पूजा करने लगे। फिर शङ्कर-पार्वती भी पधारे मेरे पिता शिलाद ने मुझे तीन नेत्र वाला चतुर्भुज और जटा मुकुटधारी बालकदेख बड़ी प्रसन्नता प्रकटकी। सभी ने प्रणाम किया तब शिलाद ने यह कह कर कि सुरेश्वर! तुमने मुझे आनन्द दिया है, इस कारण तुम्हारा नाम नन्दी हुआ। इस प्रकार मेरे सहित शङ्करजी को प्रणाम कर मेरे पिता अपनी पर्णकुटी में गये और उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई। फिर जब मैं शिलाद मुनि की कुटी में गया तो वहां मैंने अपना सब स्वरूप त्याग साधारण रूप धारण कर लिया। तब मुझे साधारण कर मनुष्यों के रूप में देख मेरे पिता रोने लगे और इन्हें यह देख मेरी ओर से बड़ा भारी दुख उत्पन्न हुआ। परन्तु पुत्र का प्रेम ही तो था। शालंकायन के पुत्र मेरे पिता ने मेरा सब जात कर्मादि संस्कार किया। और मुझे मात्र वर्ण की अवस्त्रों का साङ्गोपाङ्ग पढ़ा दिया जब मैं सात वर्ष का हुआ तो मित्रावरुण मुझे देखने आये। जब मेरे पिता ने उसका सत्कार कर बैठाया तो वे महात्मा मुझे बारम्बार देखने लगे और मेरे पिता से बोले-तात! यह तुम्हारा बालक तो बहुत थोड़ी अवस्था वाला है। इसने इतने ही समय में समस्त शास्त्रों को कैसे पढ़ लिया। परन्तु अब तो इसकी एक ही

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

वर्ष की आयु और है। तब उस ब्राह्मण के ऐसा कहने पर मेरे पिता शिलाद मारे दुःख से उच्च स्वरसे रुदन करने लगे। तब मृतक के समान हुये पिता को देखकर वह प्रसन्नात्मा बालक शिवजी के चरण-कमलों का ध्यान करते हुए अपने पिता से बोला—तात! आप इतने दुःखी क्यों होते हैं आपको यह कौन-सा दुःख प्राप्त हो गया है, मुझसे कहिये? पिता ने कहा–मैं तुम्हारी अल्प मृत्यु से दुःखी हूँ। मैं किसकी शरण में जाऊँ। पुत्र बोला—मुझे देव, दानव, यक्षराज, काल तथा मनुष्य कोई भी नहीं मार सकता। पिताजी! मैं आपकी शपथ खाकर कहता हूं। यह मेरा कहना सत्य है। पिता बोला—पुत्र! तुम्हारा कौन प्रभु है कि जिसकी तपस्या से तुम मेरे इस कठिन दुःखको दूर कर सकोगे। पुत्र ने कहा–पिताजी! मैं तप से या विद्या से ही मृत्यु को दूर भगा दूँगा। केवल शङ्कर के ही भजन से मैं मृत्यु को जीतूँगा, इसमें संदेह नहीं है। ऐसा कह अपने पिता को प्रणाम और प्रदक्षिणा कर मैं नन्दी एक महावन की ओर चला गया।

* सातवां अध्याय *

(नन्दीश्वर अवतार वर्णन)

नन्दिकेश्वर बोले--वहाँ जाकर मैं धीरता पूर्वक एकान्त में कठिन तप करने लगा। तब ऐसे तप में स्थित होते ही पार्वती सहित शिवजी ने वहाँ प्रगट होकर मुझसे कहा—हे शिलाद के पुत्र! में तुम्हारे तप से सन्तुष्ट हूँ। तुम्हारे मन में जो हो, वर माँगो। यह सुन मैं जरा और शोक नाशक शिवजी की स्तुति करने लगा। तब शङ्कर ने दोनों हाथों से मुझे पकड़कर स्पर्श किया और बोले--वत्स नन्दनि! तुम्हारे लिए मृत्यु से भय कैसा? उन दोनों ब्राह्मणोंको तो मैंने ही भेजा था। परन्तु तुम तो मेरे समान हो। इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है तुम सुहृदजनों के सहित अजर-अमर दुःख रहित अविनाशी, अक्षय और मेरे प्रिय हो। तुमको जरा और

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

मृत्यु नहीं प्राप्त होगी। ऐसा कहकर शिवजी ने अपने शिर की एक माला खोलकर मेरे कण्ठ में बाँध दी। उस माला को पहनते ही मानों मैं तीन नेत्र और दस भुजाओं वाला दूसरा शिव ही हो गया। फिर परमेश्वर ने मुझे अपने हाथों पकड़कर कहा, कहो अब तुमको और क्या श्रेष्ठ वर दूं ऐसा कह वृषभध्वज ने अपनी जटाओं से हार की समान निर्जल जल ग्रहणकर "नन्दी हो" ऐसा कहकर मेरे ऊपर छिड़क दिया उससे जटोरक, त्रिस्रोता, वृषभध्वनि, स्पणीदका और जम्बु नदी यह पाँच नदियाँ वह चलीं। इस स्थान का पञ्चनद नाम पड़ा जो अब तक जप्तेश्वर के समीप वर्तमान है। जो वहाँ पञ्चनद पर जाकर जप्तेश्वर शिवकी पूजा करता है वह निस्सदेह शिवकी मुक्ति पाता है। फिर शिवजी ने पार्वती से कहा कि अब मैं नन्दी को गणेश्वर पद पर अभिषिक्त करता हूं, तुम्हारी क्या सम्मति है। इस पर पार्वतीजी ने कहा—परमेश्वर! इस नन्दी को आप मुझे दे दीजिए। नाथ! यह शिलाद-पुत्र आज से मेरा परम पुत्र हुआ। पश्चात् परम स्वतन्त्र भक्तवत्सल शिवजी ने अपने समस्त गणों को बुलाकर कहा—यह नन्दीश्वर मेरा पुत्र है। इसे मैंने सब गणों का अधिपति बनाया है। ऐसा ही तुम सब मेरे बचन का पालन करना। आजसे यह तुम सबका स्वामी हुआ। पश्चात् सब बान्धवों और कुटुम्बियों सहित मुझे साथ ले शिवजी देवी सहित बैल पर चढ़कर अपने घर को चले।

* आठवाँ अध्याय *

(भैरव अवतार)

नन्दीश्वर बोले—सनत्कुमार! भैरवजी परमात्मा शङ्कर के पूर्ण रूप हैं। एक समय सुमेरु पर्वत पर बैठे हुए ब्रह्माजी के पास सब देवताओं ने जाकर उन्हें नमस्कार कर हाथ जोड़ कर यह पूछा कि देवों के देव! अविनाशी तत्व क्या है? इसे आप यथार्थ बताइये तब शङ्करजी की माया से मोहित ब्रह्मा उस तत्व को न जानते हुए भी उस भाव को

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

कहने लगे कि ऋषियो ! मैं उस अविनासी भाव को यथार्थ रूप से कहता हूँ आप लोग सावधान होकर सुनिये। मुझसे बढ़कर कोई देवता नहीं है मैं ही एक मात्र संसार को उत्पन्न करने वाला स्वयंभू अज ईश्वर अनादि भोक्ता ब्रह्मा और निरञ्जन आत्मा हूँ मैं ही संसार को प्रवृत और निर्वत करने वाला हूं और मुझसे बढ़कर कोई देवता नहीं है। जिस समय यह वार्ता हो रही थी वहाँ मुनि मण्डली के साथ विष्णुजी भी विद्यवान थे तब जैसे ही ब्रह्माजी यह कहकर चुप हुये कि वैसे ही विष्णुजी ने उनको समझाते हुये कहा-ब्रह्मा ! यह तुम क्या कर रहे ! मेरी आज्ञा से ही तो तुम इस सृष्टि के रचयिता हो। इस प्रकार ब्रह्मा ओर विष्णु परस्पर अपने प्रभुत्व की प्रधानता के लिये विवाद करने लगे। और उसके प्रमाण वेद शास्त्रों के वाक्य कहने तथा चारों वेदों से पूछने लगे। चारों वेद मूर्ति धारण किये वहाँ उपस्थित हुए। तब परेश प्रभु शिवका स्मरण करते हुये ऋक्यर्ज आदि चारों वेदों में पहले ऋक् ने कहा—जिसके भीतर समस्त भूत निहित हैं तथा जिससे सब कुछ प्रवृत्त होता है और जिसको परम तत्व कहा जाता है वह एक रुद्र ही है। फिर यजुर्वेद ने कहा—जिनके द्वारा हमभी प्रमाणित होते हैं तथा जो ईश्वर सम्पूर्ण यज्ञों तथा योग से भजन किया जाता है वह सबका द्रष्टा एक शिवजी हैं। फिर सामने कहा—जो समस्त संसारीजनों को भ्रमाता है तथा जिसे योगी जन ढूंढ़ते हैं और जिसकी कान्ति से सारा संसार प्रकाशित होता है। वह एक त्र्यम्बक शिवजी हैं। फिर अथर्व ने कहा–जिसका भक्ति से साक्षात्कार होता है वह एक कैवल्य शङ्करजी हैं जिनमें कोई दुःख नहीं है। तब वेदों के इस कथन को सुनकर ब्रह्मा विष्णु ने कहा—वेदो ! तुम्हारा यह अज्ञान है। भला नित्य शिवा से रमण करने वाले, नंगे रहने वाले, पीतवर्ण धूलि धूसरति प्रथम नाथ शिवको परम तत्व कैसे कहा जा सकता है ? शिवजी परब्रह्म कैसे हो सकते हैं। तब उन दोनों के ऐसे बचन सुन सब स्थानों में अमूर्त और मूर्तिमान स्थित रहने वाले

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan

ओंकार ने कहा—भगवान् शिव शक्ति धारी हैं। वे अपनी शक्ति के बिना रमण नहीं कर सकते। क्योंकि वे लीलधारी हैं। परन्तु वही परमेश्वर हैं। तब ओंकार के इस प्रकार कहने पर भी शिव माया से मोहित ब्रह्माविष्णु की बुद्धि नहीं बदली और वे विवाद करते ही रहे तब उन दोनों के मध्य में एक ऐसी विशाल ज्योति प्रकट हो गई कि जिसका आदि अन्त कुछ नहीं था। उससे ब्रह्मा का पञ्चम शिर जलने लगा। इतने में त्रिशूलधारी नील लोहित तत्क्षण वहाँ प्रकट हो गये और ब्रह्मा उनसे बोले-नील लोहित! चन्द्रशेखर भय मत करो मैं तुमको जानता हूं कि तुम पहले मेरे शिर से प्रकट हुए थे और रुदन न करने के कारण ही मैंने तुम्हारा नाम रुद्र रक्खा था। हे पुत्र! मेरी शरण आओ, मैं तुम्हारी रक्षा करूंगा। तब ब्रह्मा की इस अहंकार पूर्ण वाणी को सुनकर शिवजी को बड़ा क्रोध आ गया। उन्होंने प्रलय कर देना चाहा। फिर तो उन्होंने उसी क्षण अपने क्रोध से भैरव नाम एक पुरुष को उत्पन्न कर कहा—काल भैरव! तुम ब्रह्मा पर शासन करो। फिर संसार का पालन करो। क्योंकि तुम साक्षात् काल के समान हो। इस कारण तुम काल भैरव हो। कालराज! मेरी मुक्ति पुरी काशी सब पुरियों से बड़ी है मैं तुम को सर्वदा के लिए उसका आधिपत्य प्रदान करता हूं। उस पुरी में जितने पापी होंगे तुम उन्हें सर्वदा दण्ड देना और वहाँ के शुभाशुभ कर्मों को चित्र गुप्त सर्वदा लिखा करेंगे। शिवजी से ऐसा वर ग्रहण कर काल भैरव ने तत्काल ही अपनी बाँयी उँगलियों के नखग्र से ब्रह्मा का शिर काट लिया। ब्रह्माका पांचवाँ शिर कट गया। भयभीत ब्रह्मा शतरुद्रिय का पाठ करने लगे। ब्रह्मा विष्णु को ज्ञान हो गया।

अब दोनों ने शिवजी को परब्रह्म परमात्मा समझा। अहंकार दूर होकर ज्ञान हुआ। तब ब्रह्मा और विष्णु को अहंकार रहित जानकर महेश्वर ने दोनों को अभयदान दिया। फिर भक्त-वत्सल

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

महादेवजी प्रसन्न हो उन दोनों को धर्य दे अपनी कमदिंनी भैरव मूर्ति से बोले--नील लोहित ! तुम इन ब्रह्मा विष्णु को मानते हुए ब्रह्मा के कपाल को धारण कर उसी के आश्रित हो भिक्षावृत्ति करते संसार में ब्रह्म-हत्या के भय को दूर किया करो ऐसा कह महादेवजी ने तुरन्त ही ब्रह्म-हत्या नामक एक कन्या उत्पन्न करदी और कपर्दी से कहा जब तक यह कन्या काशी में जावे तब तक इसके पहले ही तुम अपने भयङ्कर रूप से वहाँ चले जाओ और जब यह वहाँ पहुँचे तब उससे कहना कि तुम उस वाराणसी को छोड़ और चाहे जहाँ जाकर विचरण करो। पश्चात् यह सब जगहों से घूमकर काशी आवेगी तब मुक्त हो जायगी।

* नवाँ अध्याय *

(भैरवजी का अभिवादन)

नन्दीश्वर बोले--सनत्कुमार जी ! शङ्कर जी के समीष्यसे भैरव जी काल के भी काल हुए। उन्होंने महादेवजी की आज्ञा से कापालिक व्रत धारण किया। वे विश्वात्मा हाथ में कपाल लेकर काशी आये। परन्तु तीनों लोकों में विचरने वाली उस कठिन ब्रह्म-हत्याने उनका पीछा न छोड़ा। एक समय भैरवजी कापालिक का भेष धारण किये नारायण के स्थान को गये। जब महाकाल त्रिनेत्र शङ्कर जी के रूप में भैरव को आता हुआ भगवान्ने देखातो देवताओं और मुनियों सहित उठकर उन्हें दण्डवत किया और उच्चासन दे उनके मस्तक पर अञ्जलि बांधकर उनकी अनेक स्तुति की। पश्चात् उन्होंने कमलालया लक्ष्मी से कहा कि देवि ! आज हम तुम दोनों बड़े धन्य हैं जो जगत्पति शिवका दर्शन किया। यही वह प्रभु और ईश्वर हैं जो कि जिन विधाता ने लोकों को धारण कर रक्खा है। यही वह अनादि, शरण शान्त कौर छब्बीस तत्वों से युक्त हैं कि जो योगि में ईश्वर, भूतों के स्वामी, सब प्राणियों के अन्तर्यामी और सर्वदा

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

सब कुछ के देने वाले हैं। इनका दर्शन कर मनुष्य आवागमन से छूट जाता है। ऐसा कह कर विष्णुजी प्रसन्न हो शिवजी से बोले—प्रभो ! देव !! आप किसलिए भ्रमण कर रहे हैं ? यह आपकी क्रीड़ा कैसे हुई है? हे भगवन् ! यह आप भिक्षा माँगने लग गये ? मुझे यह संशय है क्योंकि आप तो त्रैलोक्यों को राज्य देने वाले हैं। विष्णु ने इस प्रकार कहा तब भगवान भैरव ने हँसकर विष्णुजी से अपनी कथा सुनाई। उन्होंने कहा, मैंने अपनी अंगुलियों के नखाग्र से ब्रह्मा का शिर काट लिया है। उसी पाप के शमनार्थ इस शुभ व्रतका अनुष्ठान किया है। यह सुन विष्णु जी बोले-भैरवजी ! आप तो समस्त विघ्नहर्त्ता हैं। फिर भी जो चाहें क्रीड़ा करें। श्रीविष्णुजी के ऐसा कहने पर निर्मल लक्ष्मी ने अपनी 'मनोरथी' नामक विद्याको उनके पात्रमें छोड़ दिया। भैरवरूपधारी महादेवजी प्रसन्न हो भिक्षाटन के लिए दूसरी ओर चले गये। तब उनके पीछे ब्रह्महत्या को जाती हुई देखकर विष्णूजी ने बुलाकर उससे प्रार्थना की कि तू शिवजी का पीछा छोड़ दे ब्रह्महत्या ने कहा, इसी बहाने मैं शिवजी की सेवा करती हूं इस प्रकार विष्णूजी के कहने पर भी ब्रह्महत्या ने उनका पीछा नहीं छोड़ा तब भैरवजी अविमुक्त क्षेत्र काशी आते ही ब्रह्महत्या हाहाकार कर पाताल में समा गई। उसी समय ब्रह्माजी का शिर भैरवजी के हाथ से छूटकर पृथ्वी पर गिर पड़ा और वहाँ कपालमोचन तीर्थ हो गया। भैरवजी ने वहाँ बड़े आनन्द का नृत्य किया। भैरवजी के हाथ में ब्रह्मा का कपाल तब तक चिपटा ही रहा जब तक वे काशी नहीं पहुँचे थे इस कारण काशी सदा सेवनीय है। जो मनुष्य कपालमोचन का स्मरण करता है उसके इस जन्म और दूसरे जन्मों के पाप नाश हो जाते हैं। इस तीर्थ में जाकर सविधि पिंडदान और देव पित्र तर्पण करने से मनुष्य ब्रह्महत्या के पाप से छूट जाता है तथा जो नित्य भैरवजी का दर्शन करता है वह अपने हजारों जन्मों के पाप को नष्ट करता है। जो मनुष्य काशी में रहकर कृष्णाष्टमी के दिन या मङ्गलवार के दिन कालराज के दर्शन नहीं करता उसके पुण्य क्षीण होते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* दसवाँ अध्याय *

(नृसिंह लीला वर्णन)

नन्दीश्वर बोले–प्रभो ! शार्दूल नामक शिव का अवतार सुनो। सदाशिव ने देवताओं के निमित्त जलती हुई अग्निके समान शरभरूप भी धारण किया था तथा भक्तों के हितार्थ शिवजी के अनेक अवतार हुए हैं। जिनकी संख्या करने को कोई सामर्थ नहीं है जब जय-विजय द्वारपालों को शाप दिया था तब वे दोनों दिति-पुत्र कश्यप से उत्पन्न हुए। उन में पहला पुत्र हिरण्यकशिपु और दूसरा हिरण्याक्ष हुआ। जब इन्होंने बड़ा उपद्रव किया तो ब्रह्माजी के आग्रह से विष्णुजी ने बाराह रूप धारण कर हिरण्याक्ष को मारा जिससे उसके भाई कशिपु ने विष्णुजी के ऊपर बड़ा क्रोध किया। उसने दस हजार वर्ष तक घोर तप कर ब्रह्माजी को प्रसन्न किया और ब्रह्माजी के वर से वह अबध्य हुआ। फिर अपने शोणित नामक नगर में जाकर तीनों लोकों को वश में कर राज्य करने लगा। वह देवताओं तथा ऋषियों को कष्ट देता हुआ धर्मों को लोपक तथा ब्राह्मणों को पीड़क बड़ा पापी हुआ। उसने विष्णु-भक्त अपने पुत्र प्रहलाद से द्रोह किया। तब एक दिन संध्या समय सभास्तंभ से क्रोधमें भरकर नृसिंहजी शरीर धारणकर प्रकट हुए और तत्क्षण सम्पूर्ण दैत्यों को मार डाला। यद्यपि हिरण्य-कशिपु ने उनसे कठिन युद्ध किया तथपि देवताओं के देखते-देखते परमेश्वर नृसिंह ने उसे देहली पर से खींच अपनी गोद में डालकर अपने नखोंसे उसका शरीर शीघ्र ही फाड़ डाला। उसके मरने से संसार सुखी हो गया परन्तु देवता अब भी सुखी न हुए प्रहलाद जी को और लक्ष्मी जी को भी बड़ा आश्चर्य हुआ। नृसिंहजी को क्रोध किसी प्रकार शान्त ही न होता था। संसार व्याकुल हो गया देवताओं को दुःख हुआ कि अब क्या होने वाला है ? तब उनकी शान्ति के लिए

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

देवताओं ने प्रहलादजी को उनके पास भेजा। प्रहलादजी ने जाकर नृसिंहजी की स्तुति आरम्भ की स्तुति से प्रसन्न हो कृपानिधि नृसिंहजी ने प्रहलाद को हृदयसे लगाया। उनका क्रोध कुछ शान्त हुआ। परन्तु अब भी उनमें पूर्णतया शान्ति न आई। तब दुःखी हो देवगणों ने शङ्करजी की शरण में जाकर उनकी बड़ी स्तुति की और कहा कि अब भी नृसिंहजी की ज्वाला शान्त नहीं हो रही है। हे देवेश! आप उन्हें शान्त कीजिए। भक्तवत्सल शङ्करजी ने देवताओं को अभय कर कहा तुम लोग निज स्थान को जाओ, मैं उन्हें शान्त करूंगा। वह सब देवता आनन्द पूर्वक शिवजी का स्मरण करते हुए चले गये।

* ग्यारहवां अध्याय *

(शरभ-अवतार)

नन्दीश्वर बोले—अब देवताओं से पार्थिव परमेश्वर ने नृसिंह जी के हरण का विचार किया। उन्होंने प्रलयकर भैरवरूप महाबली वीरभद्र को बुलाकर कहा कि भैरव! विना समय में ही देवताओं को नृसिंहजी से इस प्रकार भय उत्पन्न हो गया है, अतः इस नृसिंहाग्नि को अपने भैरवरूप से यथा शीघ्र शान्ति से शान्त करो। परन्तु जब न मानें तब मेरे परम भाव भैरव रूप को दिखाकर उन्हें शान्त करना। इस प्रकार शिवजी की आज्ञा ले गणाध्यक्ष शान्त शरीर धारण कर शीघ्र ही वहाँ जा पहुँचे जहाँ नृसिंहजी थे। तब जैसे पिता पुत्र से बल युक्त बोलता है उसी प्रकार नृसिंहजी को समझाते हुये वीरभद्र बोले-माधव! आपने संसार के सुख और स्थिति के लिये अवतार लिया है। पहले मत्स्यरूप से अपनी पूंछ में नौका बाँधकर प्रलय के समुद्र में मनुजी को घुमाया था। फिर बाराह रूप से पृथ्वी का उद्धार कर अब नृसिंह रूप से हिरण्यकशिपु को मारा है। आपही ने बामन रूप

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

धारण कर बलि को बाँधा और आपही सब प्राणियों के उत्पन्नकर्त्ता तथा स्वामी और अविनाशी हैं आप ही संसार के दुःख हरणकर्त्ता हैं और आपके समान कोई नहीं है। आपने जिस लिए नृसिंह अवतार लिया था वह कार्य होगया। अब अपने इस भीषण नृसिंह रूप को शान्त कीजिये। तब वीरभद्र की इस बात को सुनकर नृसिंह जी ने उस से भी अधिक क्रोध किया और पराक्रमी वीरभद्र से दाँत किटकिटाते हुए महाघोर कठिन बचनों में इस प्रकार बोले—तुम यहाँ से चले जाओ। मैं इस चराचर जगत का इसी समय संहार कर दूँगा।

मेरे ही अंश तथा शक्ति से ब्रह्मा और इन्द्रादि सब हुए है। सबका स्वामी मैं हूं। तब विष्णुजी के इन अहंकार पूर्ण वचनों को सुनकर वीरभद्र को बड़ा क्रोध आया। उन्होंने अपने होठ कँपाते हुए विष्णुजी से कहा—क्या आप संसार के सहर्त्ता शिवजी को नहीं जानते? परन्तु तुम्हें वह ज्ञात होना चाहिये कि मैं तुम्हारे संहारके निमित्ति ही उन रुद्र की प्रेरणा से यहाँ आया हूँ। उन्हीं की शक्ति से युक्त हो एक राक्षस को मारा है। किन्तु तुम उनका तत्व न जानकर अहंकार से गर्जते हो। परन्तु न तुम सृजनकर्त्ता न पोषनकर्त्ता और न संसारकर्त्ता हो। हरि! तुम उन्हीं के आधीन हो उनके अवतार लेते हो। अव तक भी तुम कूर्मरूपधारी का जला हुआ कपाल शङ्करजी की अस्थिमाला में विद्यमान है, जिसे कोई धारण नहीं कर सका। दक्ष के यज्ञ में मैंने ही तुम्हारा शिर काटा था। अब भी तुम्हारे पुत्र का पांचवां शिर काटा गया और जो अब तक नहीं जन्मा है। आदि से स्तम्ब पर्यन्त सारी शक्ति शिवजी की फैली है। उसी से तुम शक्तिमान होकर चारो ओर तेज से मोहित हो रहे हो। नृसिंह! यदि तुम अपनी आत्मा को अन्तर्षित न कर लोगे तो इसी समय मुझ भैरवरूपी क्रोध वाले शङ्कर का बड़ावज्र मृत्यु के समान तुम पर पड़ेगा।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyan Kosha

* बारहवाँ अध्याय *

(शरभावतार वर्णन)

सनत्कुमारजी बोले—नन्दीश्वर जी ! इसके पश्चात् क्या हुआ ! नन्दीश्वर बोले—जब वीरभद्र ने ऐसा कहा तब नृसिंह जी अत्यन्त क्रुद्ध हो उन पर झपटे। फिर तो आकाश में व्याप्त शिवजी का तेज प्रकट हो गया और वीरभद्र जी ने नृसिंह को अपनी भुजाओं में बाँध इस प्रकार पकड़ लिया कि वे अत्यन्त ही व्याकुल हो गये। फिर विष्णुजी को लेकर ऐसे उड़े कि भगवान् शिव के वृषभ के नीचे लाकर डाल दिया। विष्णु व्याकुल हो गये। सब देवताओं और मुनीश्वरों ने शिवजी की स्तुति की। शिवजी से गृहीत तथा पवरश विष्णु का शरीर दीन हो गया। वे अञ्जलि बाँध अपने मनोहर बचनों द्वारा शिवजी की स्तुति करने लगे। नृसिंह शिवजी से पराजित हो अशक्त हो गये। वीरभद्रने उनके सम्पूर्ण अवयवों को अपनेमें लय कर लिया। सब देवता उन कल्याणकारी परमेश्वर की स्तुति करने लगे। तब देवताओं के इन वचनों को सुनकर परमेश्वर उन पुरातन देवताओं और महर्षियों से बोले—आप लोग घबड़ायें नहीं। इससे विष्णु की महत्ता कुछ न्यून न होगी। वह अब भी मेरे भक्तों के वरदाता और मेरे भक्तों से नमस्कृत हुआ करेंगे। ऐसा कहकर वे पक्षिराज नृसिंह जी के शरीर को लेकर पर्वत पर चले गये। तभी से भगवान् शङ्कर नृसिंहजी के चर्मधारी हुए और अपनी मुण्डमाला में उनके मुख को मिला लिया है।

* तेरहवाँ अध्याय *

(विश्वानर को वरदान)

नन्दीश्वर बोले–ब्रह्म-पुत्र ! अब शशिशेखर के उस चरित्र को सुनिये कि जो उन्होंने विश्वानर के घर अवतार लिया था। पूर्व समय में नर्मदा नदी के तट पर नर्मपुर नामक एक नगर था, जिसमें

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

शिव—भक्त विश्वानर नामक एक मुनि रहता था। वह संपूर्ण शास्त्रों का वेत्ता और शिवजी के चरणों में निपुण तथा लोकाचार में चतुरथा। शुचिष्मती नामक ब्राह्मण की कन्या से उसका विवाह हुआ। उसकी पतिव्रता स्त्री ने उसकी बड़ी सेवा की तो उसनें प्रसन्न हो उसे वर देना चाहा। पत्नी ने कहा—यदि आप प्रसन्न हैं तो मुझे महादेवजी के समान पुत्र दो। तब उसके ऐसे वचन सुन वह व्रती ब्राह्मण समाधि में स्थित हो इस पर विचार करने लगे कि स्त्री ने कितना दुर्लभ वर माँगा है। परन्तु जो कुछ हो भगवान शम्भु की इच्छा बिना कुछ नहीं होता। ऐसा विचारकर उस एक पत्नी व्रत में स्थिति ब्राह्मण ने अपनी पत्नी से कहा—विश्व के ईश्वर भगवान शिव हैं मैं वहाँ तप करने जाता हूँ। ऐसा कह वह काशी में जा मणिकर्णिका घाट पर उसके दर्शन कर अपने सैकड़ों जन्मों के पाप दूर किये तथा वहाँ के विश्वेशरादि शिव-लिंगों का दर्शन करे अब कुआँ बावड़ी और तालाबों में स्नान कर सम्पूर्ण तीर्थों स्थानों में पिंडदान किया फिर सहस्रों प्रकार के भोजनादि से वहां के ब्राह्मणों एवं मुनियों को तृप्त कर सब लिंगों की पूजा योग्य यथोचित उपचार पूजन किया। और बार-बार यह बिचारता रहा कि क्या इन लिंगों द्वारा पुत्र की कामना निश्चयता को प्राप्त होगी? उसे ज्ञात हुआ कि अवश्य ही वीरेश लिंग इसके लिये प्रशंसनीय है। उसने वर्षों उस लिंग की पूजा द्वारा अपनी स्त्री के मनोरथ सिद्ध करना चाहा। इस प्रकार उस धीर-कृत ब्राह्मण ने उस वीरेश लिंग की यथाविधि पूजा की। एक वर्ष तक निराहार और केवल जल पीकर अद्भुत तप किया। तब तेरहवें महीने में जब एक दिन वह प्रातःकाल त्रिपथगा गङ्गा के जल में स्नान कर लिंग का पूजन करने गया तो उसी समय उस तपोधन लिंग के मध्य भाग में स्थित हुए आठ वर्ष के एक सुन्दर बालक को देखा तो बड़ा ही सुन्दर पीली जटा और मुकुट लगाये नग्न तथा हँसता हुआ उसकी ओर देख रहा था। तब उस बालक को प्राप्त कर मुनि के हर्ष का अन्त न रहा। उन्होंने रोमाँचित हो हृदय

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

से उसे बार-बार नमस्कार किया। आठों पद्यों से युक्त उस परमानन्द शम्भु की स्तुति कर उन्हें संतुष्ट किया। तब इस प्रकार जब उस ब्राह्मण ने अपने हाथ बाँध पृथ्वी पर गिर कर उन्हें दंड-प्रणाम किया तो उस बालक ने अत्यन्त प्रसन्न हो विश्वानर से कहा कि ब्राह्मण! मैं तुमसे प्रसन्न हूं वरमाँगो। इस पर विश्वानरने कहा-प्रभो! आपसे कुछभी अज्ञात नहीं है। मुझे माँगने को ऐसा दीन वचन क्या कहते हैं? महेशान! आपकी जैसी इच्छा हो वैसा कीजिये। तब विश्वानर के ऐसे वचन सुनकर बालक रूप उस पवित्र देवता ने कहा—विश्वानर! तुमने जो शुचिष्मती में पुत्र होने का विचार किया वह शीघ्र ही पूरा होगा। मैं स्वयं ही तुम्हारी स्त्री में पुत्र रूप से प्रगट होऊँगा और वहां मेरा नाम गृहपति होगा। अभिलाषाष्टक स्तोत्र जो शिवजी के समीप में पाठ करेगा उसे एक वर्ष में सिद्ध दायक होंगे। यह वन्ध्या के भी पुत्र करने वाला अभिलाष्टक स्तोत्र है। शिव अन्तर्ध्यान हो गये और विश्वानर अपने घर चला गया।

* चौदहवाँ अध्याय *

(गृहपति अवतार)

नन्दीश्वर बोले—उस ब्राह्मण ने घर में आ अपनी स्त्री से सब समाचार कह सुनाया। समय पर उसकी स्त्री गर्भवती हुई। शुभ लग्न में सुन्दर योग होने पर चन्द्रमा के समान मुख वाला पुत्र उस ब्राह्मण की स्त्री शुचिष्मती से सूतिका गृह से उत्पन्न हुआ। देवताओं ने दुन्दुभी बजाई। मरीचि, अत्रि, पुलह, पुलस्त्य, क्रतु, अङ्गिरा, वशिष्ठ, कश्यप, अगस्त्य, विभाण्ड, मुग्दल, लोमश, लोमचरण, भरद्वाज, गोतम, भृगु, गालब, गर्ग, जातकर्ण्य, पराशर आपस्तम्ब, याज्ञवल्क्य, यत्न बाल्मीकि, शतातप, लिखित, शिलाद, शंख, जमदग्नि, संवर्त, मतङ्ग, भरत, अंशुमान व्यास, कात्यायन, कुत्स, शौनक, ऋष्यश्रङ्ग, दुर्वासा, शुचि, नारद, तुम्बरु, उत्तङ्क, वामदेव. देवल, हारीत, विश्वामित्र, भार्गव, पुत्रों सहित

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

मृकण्डु पर्वत, दारुक, धौम्य, उपमन्यु, वत्य आदिक मुनि और बहुत सी मुनि कन्यायें उस पुत्र की शान्ति के लिये, विश्वानर के आश्रम पर आये। बृहस्पति सहित ब्रह्मा तथा विष्णु नन्दी और भृङ्गीगणों सहित पार्वती सहित शिवजी महेन्द्र आदि देवता तथा पातालवासी नाग अनेक प्रकार के रत्नादि लिये नदियों सहित समुद्र और अनेक स्थावर पर्वतादि जङ्गमरूप धारण कर उस महोत्सव में ब्रह्मा जी ने बालक का जात कर्म संस्कार किया और श्रुतियों को बिचार कर उसने अनुरूप उसका गृहपति नाम रक्खा। उसकी रक्षा का उपाय किया बहुत सा आशीर्वाद दिया। फिर शिवादिक देवता अपने-अपने बाहन पर चढ़कर अपने धाम को गये। सबने शुचिष्मति के भाग्य की प्रशंसा की और कहा कि शिव भक्त धन्य हैं जिनके अर्चन से आज स्वयं शिव एवं रुद्र ही इनके घर प्रकट हुये। पश्चात् पिता ने उस बालक के समय—समय पर होने वाले सभी यथोचित संस्कार किये। पाँचवें वर्ष में यज्ञोपवीत किया। फिर उपा कर्म करके एक ही वर्ष में साङ्गपाङ्ग कर्म से सब वेदों को पढ़ा दिया और जब वह बालक नौ वर्ष का हुआ तो माता-पिता की सेवा में रत उस बालक को देखने के लिये नारदजी वहाँ आये और उसके भाग्य वैभव को कहा और यह कहा कि इसके और सब भाग्य तो अच्छे हैं परन्तु बारहवें वर्ष में इसको बिजली और अग्नि से भय है ऐसा कहकर नारदजी चले गये।

* पन्द्रहवां अध्याय *

(गृहपति का वर्णन)

नन्दीश्वर बोले—नारदजी के वचनों से स्त्री सहित बिश्वानर को बज्रपात जैसा कठिन दुःख हो गया। उन्होंने कहा- हा! मैं मारा गया। ऐसा कह व्याकुल हो वे मूर्छित होगये। शुचिष्मती भी दुःख से व्याकुल हो हाहाकार करने लगी। विश्वानर ने उठाकर उसे संभाला और अपने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

पुत्र गृहपतिकी खोज की। गृहपति कहीं बारह गया था। पिता का शब्द सुनते ही दौड़ा हुआ वहाँ आया और दोनों के रोने के कारण पूछने लगा। फिर कहा, आपके चरणों की रज के प्रताप से और कोई विघ्न तो क्या काल भी मुझे नहीं मार सकता। पिताजी! आप इसकी चिन्ता न करें। यदि मैं आपका पुत्र हूं तो मृत्यु-विजयी शिव-मंत्र को जपकर मृत्यु से अपनी रक्षा कर लूँगा। यह सुन उसके माता-पिता ने संतोष की साँसली और कहा--वत्स! अवश्य ही मृत्युञ्जय शिव की आराधना से समस्त विघ्नों का नाश हो जाता है। इसी प्रकार जब श्वेतकेतु कालपाश में बाँधा गया था तो शिवजीने उसकी रक्षाकी थी। शिलाद के आठ वर्ष के पुत्रों को मृत्यु-ग्रस्त देख शिवजी ने उसे अपना जन किया था। फिर प्रलताग्नि के समान घोर हलाहल विष को पान कर शिवजी ने ही तीनों लोकों की रक्षा की थी। अतएव पुत्र! तुम भी उन्हीं शिवजी की शरण जाओ कि जो ब्रह्मादिकों के भी एक मात्र कर्ता, अविनाशी और विश्व की रक्षारूप मणि के समान हैं। फिर तो बालक गृहपति ने अपने माता पिता के चरणों की बन्दना की और उन्हें बहुत आश्वासन देकर विश्वेश-पालित काशी में आकर सविधि स्नान कर शिवजी का पूजन और दर्शन किया। शिवजी के लिङ्ग को देखकर बड़ा संतुष्ट हुआ। उसने मनमें कहा,आज मैं कितना भाग्यशाली हूँ जो मुझे विश्वेश्वर का दर्शन मिला। महर्षि नारद के कथन ने मेरा भाग्योदय कर दिया। फिर तो उसने भक्ति पूर्वक वहाँ एक और ही शिव लिङ्ग की स्थापना कर घोर नियमों को ग्रहण कर गङ्गाजल के एक सौ आठ घड़ों से प्रतिदिन पवित्रता पूर्वक शिवजी को स्नान कराया और नीले कमलों की माला समर्पित की तथा और भी उस प्रकार के सभी शिव नियमों का पालन किया। फिर तो उसके जन्म से बारहवे वर्ष में नारद के बचनों को सत्य करने के लिए वज्र-धारी इन्द्र उसके सामने आये और बोले-तुमको जो इच्छा हो वर माँगो; इन्द्र के ऐसे वचनों को सुन मुनि का वह पुत्र मधुर अक्षरों से उनका

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

कीर्तन करने लगा और कहा—मैं आपसे वर नहीं चाहता। मुझे तो शिवजी वर देंगे। इन्द्र ने कहा—मुझेसे बढ़कर शङ्कर नहीं हैं। गृहपति ने कहा—इन्द्र! आप जाइये। मैं शिव जी को छोड़ अन्य किसी देवता से प्रार्थना नहीं करता। यह सुन इन्द्र क्रुद्ध हो गये। उन्होंने अपना वज्र निकाल बालक को डराया। बालक को बिजली से व्याप्त वज्र को देख भय से व्याकुल हो मूर्छित होते देख पार्वती पति साक्षात शिवजी तत्काल वहाँ प्रकट हो गये और उन्होंने अपने हाथों से उस बालक को स्पर्शकर सजीव किया और कहा—पुत्र! उठो, उठो। गृहपति मानो सोने से उठकर सैकड़ों सूर्यकी समान प्रकाशमान शङ्कर को देखने लगा। उनके अद्भुत रूप ने उसे मुग्ध कर दिया। वह हर्षाश्रु अवरुद्ध कण्ठ द्वारा गद्गद् वाणी तथा रोमाँचित शरीर से महादेवजी की स्तुति करने लगा। शिवजी हँसने लगे। फिर बोले—यह तुम्हारी परीक्षा थी। मैंने ही इन्द्र को भेजा था। अब मत डरो मेरे भक्त को इन्द्र तथा कालवज्र कोई भी नहीं मार सकता। तुमने यह जो मेरा लिंग स्थापित किया है इसके तेज के आगे कोई नहीं ठहर सकता, इससे उसका नाम अग्नीश्वर हुआ। यह अग्नीश्वर महादेव भक्तों को बिजली तथा अग्नि से बचाते रहेंगे। ऐसा कहकर शिवजी ने उसके भाई बन्धुओं तथा-पिता को बुलाकर उनके देखते ही उसे अग्नीश्वर के दिशाओं का राज्य दिया तथा स्वयं उसके स्थापित लिङ्ग में प्रवेश कर गये।

* सोलहवाँ अध्याय *

(यज्ञेश्वर अवतार)

नन्दीश्वर बोले—मुनिश्वर! अब आप शिवजी के यज्ञेश्वर अवतार को सुनिये। जब अमृत के लिये देवताओं और असुरों ने क्षीर सागर का मन्थन किया तो पहले उसमें से हलाहल विष निकल संसार को भस्म करने लगा। उसे देख दानव भयभीत हो विष्णुजी को साथ ले शिवजी के पास गये। अपना सारा दुःख कहा। शिवजी

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

ने दयार्द्र होकर सारा विष पान कर लिया जिससे उनके कण्ठमें श्यामता आ गई और वे नीलकण्ठ होगये। पश्चात् देवताओं और दानवों ने फिर समुद्र को मथा तो उसमें से रत्न निकले और अमृत का भी प्रादुर्भाव हुआ। तब अमृत को केवल देवताओं ने पान किया और दैत्यों ने नहीं पाया। इससे देवता दैत्यों का बड़ा द्वन्द्व हुआ और राहूके भय से पीड़ित चन्द्रमा भाग गये। शिवजी ने चन्द्रमा को अपने शिर पर धारण कर उसकी रक्षा की। तदन्तर दैत्यों से पराजित देवता जब अमृत पान कर विजयी हुये तो उन्हें अभिमान छा गया और शिवजी माया से मोहित हो अपने बल की बड़ी प्रशंसा करने लगे। तब उन्हें गर्वी हुआ देख शिवजी यक्ष का रूप धारण कर उनके पास आये और पूछा कि,तुम लोग यहाँ किस कारण स्थिर हो, मुझे ठीक-ठीक बतलाओ। देवताओं ने कहा—यहां पर बड़ा भयङ्कर युद्ध हुआ था। जिसमें सारे दैत्यों का नाश हो गया और जो बचे भाग गये।

यज्ञेश्वर ने कहा—देबताओ ! यह तुम्हारा गर्व मिथ्या है। तुम्हारा निर्माण करने वाला स्वामी कोई दूसरा ही है। क्या तुम उस महादेव को भूल गये जो व्यर्थ ही अपना बल बखानते हो। यदि तुम्हें अपने बल का ऐसा ही अभिमान है तो उसकी परीक्षा करो मैं यहाँ एक तिनका स्थापित करता हूं तुम लोग इस तिनके को अपने अस्त्रों से काट दो। ऐसा कहकर सत्पुरुषों के गतिदाता उन यज्ञरूपी रुद्र ने देवताओं के आगे एक तिनका फेंककर सबका मद दूर कर दिया। तब सभी वीर अभिमानी विष्णु आदि देवता अपना पुरुषार्थ कर उस पर अपने अपने अस्त्र चलाने लगे। अनेकों प्रहार किये। परन्तु उस पर तो गर्व हारी शिवजी का प्रभाव था। देवाताओं के सब अस्त्र व्यर्थ होगये। वे उस तृण को न काट सके। देवताओं को आश्चर्य हुआ। तब उनके उस आश्चर्य को दूर करने के लिये वहां तत्क्षण यह आकाश वाणी हुई कि, यह यक्ष सब गर्वों के विनाशक शङ्कर महादेव हैं। यह परमेश्वर,कर्त्ता

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

पालन कर्त्ता, तथा विनाशकर्त्ता हैं। इस आकाशवाणी को सुन देवता आश्चर्य चकित हो उन यक्षेश्वर ईश्वर को प्रणाम कर उन्हें सन्तुष्ट करने लगे। देवताओंने शिवजी की बड़ी स्तुति की। तब यक्षनाथ सब देवताओं को समझकर वही अन्तर्ध्यान हो गये। यक्षेश्वर के रूपमें शिवजी ने सबका मद हरण किया।

* सत्रहवाँ अध्याय *

(शिव दशावतार)

नन्दीश्वर बोले-हे मुने ! अब शिवजी के दश अवतारों को सुनो। उनमें पहला महाकाल नामक सज्जनों को भक्ति तथा मुक्ति देने वाला है और उसकी महाकाली शक्ति भक्तोंको सर्वदा इच्छित फल देने वाली है। दूसरा तारा नामक अवतार अपने सेवकों को सुख तथा भुक्ति-मुक्ति दाता है। तीसरा बाल नामक भुवनेश अवतार और उसकी बाला-भुवनेश नामक शक्ति हुई। चौथा षोडश नामक विद्येश की षाडशी शक्ति हुई जो भक्तों को सुख और मुक्ति देने वाली है। पाँचवाँ भैरव की गिरजा नामक भैरवी शक्ति श्रेष्ठ उपासकों की कामनायें पूर्ण करने वाली है। छटवाँ छिन्न मस्तका गिरिजा नामक शक्ति भक्तों के मनोरथों को पूर्ण करती है। सातवाँ धूम्रवान् नामक शम्भुका अवतार हुआ जिसकी धूमवती नामकी शक्ति सज्जन उपासकों को फलदाता हुई। आठवाँ बगला मुख नामक सुखदायक शिवका अवतार हुआ। जिसकी महा आनन्द दायनी बगलामुखी शक्ति हुई। नवाँ मातङ्ग नामक शिव का अवतार हुआ और उसकी मातङ्ग शक्ति हुई। दशबाँ कमल नामक शिवका अवतार हुआ और जिसकी कमला नामक शक्ति भक्त पालक हुई। यह शिवजी के दशों अवतार सज्जन भक्तोंको सर्वदा सुखदायक तथा भक्ति-मुक्ति दायक हैं। भगवान शंकर के ये दसों अवतार तन्त्र शास्त्र से सम्बधित हैं और इनकी शक्तियों की अद्भुत महिमा हैं। यह शक्तियाँ शत्रु के मारण आदि कार्यों में अधिक प्रयुक्त होती हैं तथा यह दुष्टों

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

को नित्य दण्ड देने वाली ब्रह्मतेज को बढ़ाने वाली।

* अठारहवां अध्याय *

(एकादश रुद्रों की उत्पत्ति)

नन्दीश्वर बोले—हे मुने ! अब शिवजी के ग्यारह अवतारों को सुनो जिसके सुनने से असत्यादि दोषों से उत्पन्न बाधा दुःख नहीं देती। पूर्व समय में जब इन्द्र अमरावती छोड़कर भाग गये थे तब उनके शिव-भक्त पिता कश्यप को बड़ा दुःख हुआ और उन्होंने इन्द्र को बड़ा धैर्य बंधाकर स्वयं विश्वेश्वर की पुरी काशी को प्रस्थान किया । वहाँ पहुँच उन्होंने गङ्गाजी में स्नान कर विश्वेश्वर महादेव का पूजन किया और एक शिवलिंग की स्थापना कर देवताओं के हितार्थ प्रीतिपूर्वक शिवजी का तप किया तप करते करते उनको बहुत दिन व्यतीत हो गये तब ऋषि को वर देने के लिए दीनबन्धु शिवजी प्रकट हुए और कश्यपजी से कहा कि हे मुनि श्रेष्ठ ! वर ग्रहण करो। तब उन शिवजी को देख कश्यपजी अंजलि बाँध उनकी स्तुति की महेश्वर स्वामिन् ! मैं सब प्रकार आपकी शरण हूँ। मेरी कामना पूर्ण कीजिये। मैं विशेषकर पुत्रों के दुख से दुःखी हूं। मुझे सुखी कीजिये । मेरे पुत्र हो आप मुझे वर दीजिये कश्यपजी के ऐसे कहने पर शिवजी तथास्तु कह अन्तर्ध्यान होगये। कश्यपजी प्रसन्न हो अपने स्थान आये। प्रसन्न हो देवताओं से सब वृतान्त कहा। तब शङ्करजी अपना वचन सत्य करने के लिए कश्यप से सुरभि में प्रकट हुए। उस समय बड़ा उत्सव हुआ। सब देवता कश्यपजी से बड़े प्रसन्न हुए। फिर तो कपाली, पिंगल, भीम विरुपाक्ष, विलोहित, शास्ता, अजपाद, आपिर्बुध्य, शम्भु, चन्ड तथा भव इन ग्यारह रुद्रों ने सुरभि से जन्म लिया। ये सभी शिव के रूप तथा साक्षात् सुख के स्थान हैं। इन ग्यारह रुद्रों ने देवताओं के हितार्थ संग्राम में बहुत से दैत्यों को मारा और देवताओं ने निर्भय हो दैत्यों को विजय कर इन्द्रादि सहित स्वस्थ चित्त हो राज्य किया।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

करोड़ों रुद्र अनुचर हैं जो तीनों लोकों में सर्वत्र चारों ओर स्थित हैं।

* उन्नीसवां अध्याय *

(दुर्वासा-चरित्र)

नन्दीश्वर बोले—मुने ! परम तपस्वी महर्षि अत्रि जो अनुसूइया जी के पति थे उन्होंने ब्रह्माजी की आज्ञा से पुत्री की इच्छा वश स्त्री सहित जब ऋक्ष नामक पर्वत पर जाकर विन्ध्याचल के समीप नदी के तट पर स्थित होकर ईश्वर की प्रसन्नता के लिए घोर तप किया तो उनके शिर से बड़ी तीक्ष्ण अग्नि की ज्वाला प्रकट हुई। उस ज्वाला से सम्पूर्ण लोक भस्म होने लगे। ऋषि, मुनि और इन्द्रादि देवता तप्त होगये। तब इन्द्र को साथ ले सब देवता ब्रह्माजी के पास गये। अपना दुःख निवेदन किया। ब्रह्माजी विष्णुजी को साथ ले देवताओं सहित शिवजी के स्थान को गये। सबने मिलकर एक स्वर से शिवजी की बड़ी स्तुति की। फिर अत्रि के परम तप से उत्पन्न अग्नि का दुःख कहा। शिवजी ब्रह्मा, विष्णु के साथ बैठ सम्मति करने लगे। फिर अत्रि ऋषि को वर देने के लिये वे तीनों देवता उनके आश्रम पर पहुँचे। अत्रिजीने सबके चिह्नों से पहचान कर सबकी अलग-अलग स्तुति की। फिर कहा—ब्रह्मा ! विष्णु ! शिव ! आप संसार भर के पूज्यनीय माने गये हैं तथा प्रभु, ईश्वर, सृजन, रक्षा और विनाश करने वाले हैं। परन्तु मैंने तो केवल एक शिवजी के ही पुत्र के कारण स्त्री सहित उनका ध्यान किया था। फिर आप तीनों देवता क्यों चले आये ? मेरे इस भ्रम को दूर कर मुझे इच्छित वर दीजिये। तीनों देवता बोले—मुनिराज ! जैसा आपने संकल्प किया होगा वैसा ही होगा। हम तीनों देवता ब्रह्मा, ईशा तथा विष्णु समान हैं। अतएव हमारे अंश से तुम्हारे तीन पुत्र प्राप्त होंगे। ऐसा कह वे तीनों देवता अपने-अपने स्थान को चले गये। अत्रि मुनि भी वर पाकर सानन्द अपने स्थान को गये और अनुसूइया सहित बड़े प्रसन्न हुए। फिर तो

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

उस अनुसूइया से ब्रह्मा, विष्णु और शिव रूप से तीनों देवता उत्पन्न हुए ब्रह्मा से अंश के चन्द्रमा, विष्णु के अंश से दत्त तथा शिवजी के अंश से मुनि श्रेष्ठ दुर्वासाजी उत्पन्न हुए। दुर्वासाजी ने दयालुता वश बहुतों के धर्म की परीक्षा की। सूर्य वंश में उत्पन्न राजा अम्बरीष की भी इन्हीं दुर्वासाजी ने परीक्षा ली थी। महाराज अम्बरीष सप्तद्वीप के स्वामी थे जिन्होंने एकादशी का दृढ़ व्रत किया था तब दुर्वासाजी उनके नियम को जानकर अपने अनेक शिष्यों के साथ उनके यहाँ गये। राजा ने थोड़ी सी द्वादसी पाकर पारण का विचार किया था और ज्योंही वे पारण पर बैठने वाले कि दुर्वासाजी वहाँ जाकर रुष्ट हो गये। धर्म की परीक्षा की, मुनि उनसे कठोर बचन कहने लगे। उन्होंने कहा मुझे निमन्त्रण देकर बिना भोजन कराये जल क्यों पी लिया? उसका फल दिखाऊँगा। ऐसा कह ऋषि ने क्रोध कर राजा को अपने शाप द्वारा भस्म कर देना चाहा। उसी समय राजा की रक्षाको सुदर्शन चक्र आया। शिवकी माया से मोहित मुनि को शिवरूप नहीं जाना और मुनि को जलाने चला। तब आकाशवाणी ने कहकर सुदर्शन को शाँत कराया और कहा कि ये दुर्वासा शिवरूप है। सुदर्शन चक्र को शिवजी ने ही विष्णु के लिये दिया। सुदर्शन शाँत होगया। राजा अम्बरीष ने दुर्वासा जी को शिवजी का अवतार समझ उन्हें प्रणाम किया। उनके घर इच्छित भोजन करने गये। इसी प्रकार एक बार इन दुर्वासाजी ने रामचन्द्र की भी परीक्षा ली। काल रूप दुर्वासाजी से रामचन्द्र जी ने नियम किया था कि हमारे तुम्हारे सम्बाद में कोई न आने पावे। तब एक समय जब वे दोनों महानुभाव एकान्त में बैठे वार्तालाप कर रहे थे कि लक्ष्मण वहाँ चले गये। इससे रामचन्द्र ने अपने प्रण के अनुसार शीघ्र ही उनने भाई लक्ष्मणको त्याग दिया। रामचन्द्रके इस दृढ़नियम से दुर्वासाजी प्रसन्न हो गये और उन्होंने वरदान दिया। इसी प्रकार उन मुनि श्रेष्ठ ने श्री कृष्ण जी की परीक्षा ली और जब विष्णु

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

भगवान् भूमि का भार उतारने के लिए बसुदेवजी के पुत्र हुए तो ब्राह्मणों की भक्ति कर वे नित्य ही बहुत से ब्राह्मणों को भोजन जिमाते रहे। श्रीकृष्णजी ब्राह्मणों के बड़े भक्त हैं ऐसी प्रसिद्धि सुनकर वे उनकी परीक्षा लेने गये। जब श्रीकृष्णजी रथ जोत उसमें रुक्मिणी को बैठाकर चले तो दुर्वासाजी ने पहुँचकर कृष्णजी से प्रसन्न होकर उन्हें यह वर दिया कि तुम्हारे अङ्ग वज्र के समान हो जावें ऐसे ही जब एक समय दुर्वासाजी नग्न हो जल में स्नान कर रहे थे तो उन्हें नङ्गा देख द्रौपदी ने अपनी साड़ी का वस्त्र फाड़कर उन्हें शरीर ढकने को दे दिया। वह वस्त्र जल में बहता हुआ उनके पास गया। दुर्वासाजी ने उसे उठाकर उससे अपना गुप्ताङ्ग ढक लिया और द्रौपदी को उस वस्त्रके एक के स्थान उनको वस्त्र के बढ़ने का बर दिया, जिस वरदान से द्रौपदी ने पाण्डवों को सुखी किया।

* बीसवाँ अध्याय *

(हनुमान अवतार)

नन्दीश्वर बोले—मुने! एक समय जब शिवजी ने विष्णुजी का परम मोहिनी रूप देखा तो लीलावश वे काम से बड़े व्याकुल हुये और रामचन्द्रजी के कार्यके लिये अपना वीर्यपाँत कर दिया। सप्तर्षियों ने उस वीर्य को पत्ते पर स्थापित कर गौतम की पुत्री में वर्ण के द्वारा रामचन्द्रजी के कार्यार्थ उसे अञ्जनी में प्रवेश कराया। फिर तो उस वीर्य से महाबली और पराक्रमयुक्त बानर शरीर वाले हनुमानजी अपने बाल्यकाल ही में सूर्य को कोई लघु फल जानकर उसे खाने दौड़े। परन्तु जब देवताओं ने बिनती की तो सूर्य को छोड़ दिया। देवताओ। और ऋषियों ने उन्हें महाबली शिव का अवतार समझा। बहुत से वरदान दिये। हनुमानजी प्रसन्न हो अपनी माता के पास गये। सब वृत्ताँत कहा फिर बिना यज्ञ ही उन्होंने सूर्य से सब विद्याय पढ़ी। माता की आज्ञा से सूर्य के अंश से उत्पन्न सुग्रीव से मिले। सुग्रीव

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

अपने बड़े भाई द्वारा अपनी स्त्री के हरण से महान् दुःखित हो ऋष्यमूक पर्वत पर रहता था। हनुमानजी सुग्रीवके पास रहने लगे। उसके मन्त्री होगये। इधर भार्या जानकी के हरण से दुःखी श्रीरामचन्द्र अपने भाई लक्ष्मण के साथ वहाँ पहुँचे। उनकी इनके साथ मित्रता हुई। रामचन्द्र ने भाई की स्त्री भोगने वाले पापी वीर बालि बानराज को मार डाला। फिर उन वानरेश्वर हनुमान ने बहुत से बानरों को साथ ले सीताजी की खोज की और जब यह जाना कि जानकीजी लङ्का में गई हैं तब समुद्र को लाँघकर वहाँ से लङ्कापुरी को गमन किया। वहाँ जाकर उन्होंने पराक्रम पूर्ण बड़ा ही अद्भुत चरित्र किया। जानकीजी को उनके स्वामी श्री रामचन्द्रजी का समाचार सुनाया। सीताजी का शोक दूर किया। फिर रावण की बाटिका को उजाड़ बहुत से राक्षसों को मार जब रामचन्द्र के पास लौटने लगे तो रावण के दूतों ने ब्रह्म-फाँस द्वारा बाँधकर उनकी पूँछमें वस्त्र लपेट तेल गिरा उसमें आग लगा बहुत सा कष्ट देना चाहा। इससे कुपित हो उन्होंने सम्पूर्ण लङ्का को जला दिया। केवल राम-भक्त विभीषण के घर को छोड़ दिया। फिर समुद्र में कूद अपनी पूँछ बुझा रामचन्द्रजी के पास आये और सीताजीने जो अपने शिर की मणि उन्हें दी थी उसे देकर रामचन्द्रजी की आज्ञा से बानरों सहित बहुत से पर्वतों को लाकर समुद्र में पुल बाँध रामचन्द्रजी की विजयेच्छा से शिवलिंग की प्रतिष्ठा कराकर-पूजन किया तथा शिवजी से बिजय वर से रामचन्द्र ने लङ्का को घेर लिया। वहाँ वीर हनुमान ने बहुत से दैत्यों को मार कर रामचन्द्र की सेना की रक्षा की तथा शक्ति से घायल लक्ष्मण को सञ्जीवनी बूँटी लाकर जिलाया। यह सब उनमें महादेवजी का अंश था जिससे प्रभु हनुमान ने लक्ष्मण सहित रामचन्द्र को सुखी किया। उनकी रक्षा की। महा बली हनुमान ने कुटुम्ब सहित रावण को नष्ट किया और परिश्रम रहित हो सब देवताओं को सुख दिया। फिर अहिरावण को मार लक्ष्मण सहित राम को लाये तथा रामचन्द्र का सब कार्य शीघ्रता से

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

करते और दैत्यों को मारते हुए अनेक लीलायें की। उन्होंने रामचन्द्र को सुखी किया।

* इक्कीसवां अध्याय *

(महेश अवतार वर्णन)

नन्दीश्वर बोले–मुनिशार्दूल ! एक समय शिव पार्वती अपनी इच्छा से बिहार करने लगे तो भैरव को द्वारपाल नियत कर ज्योंही भीतर गये कि त्योंही अनेक सुशील सखियाँ उनकी सेवा करने लगी। पश्चात् परम स्वतन्त्र शिवजी कुछ ही देर अनेक लीला कर प्रसन्न हो गये और उन्मत्त पार्वतीजी द्वार से बाहर जाने लगी। द्वारपर भैरव द्वारपाल थे। तब ज्योंही भैरव की दृष्टि पार्वतीजी पर पड़ी कि उनके मन में बिकार आ गया और वे पार्वती जी को स्त्री के भाव में देखते हुए उन्हें बाहर जाने से रोकने लगे। पार्वतीजी उनके भाव को समझ गईं। उन्हें भैरव के प्रति बड़ा क्रोध आया। फिर तो उन पार्वती ने उस भरव को शाप दे दिया कि, तूने मुझको स्त्री की दृष्टि से देखा है, इस प्रकार तू पृथ्वी पर जाकर मनुष्यपन प्राप्त करेगा। पार्वती जी द्वारा भैरव के शापति होने से भैरव को बड़ा दुःख हुआ। तब शिवजी वहाँ आकर भैरव को आश्वासन देने लगे। परन्तु देवी का शाप ? भैरव शीघ्र ही पृथ्वी पर आकर मनुष्य योनि में बैताल हो गये। पश्चात् उनके स्नेह से पार्वती सहित शिवजी भी लौकिकी गति का आश्रय ले लीलवत पृथ्वी पर अवतार लिये। अब यहाँ शिवजी का नाम महेश और पार्वती का नाम शारदा हुआ।

* बाईसवाँ अध्याय *

(वृषभावतार वर्णन)

नन्दीश्वर बोले—ब्रह्मसेत, ! जरा और मृत्यु से व्याकुल हो देवता और दैत्य परस्पर रत्नों के लेने की इच्छा से क्षीरसागर का मन्थन करने चले तो समुद्र किसके द्वारा मथा जाय इस पर विचार

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

हुआ। तब यह आकाशवाणी हुई कि तुम देवता दैत्य अपनी बुद्धि से क्षीरसागर का मन्थन करो। तुम्हारा यह कार्य हो जायगा, इसमें कुछ संदेह नहीं है। इसके लिये तुम मन्दराचल को मथानी और बासुकी की रस्सी बनाओ। तब देवता और दानव दोनों मिलकर मन्दराचल पर्वत को समुद्र में ले जाने के लिये उखाड़ने लगे और अपनी भुजाओं से उखाड़ कर उसे क्षीरसागर में ले जाने लगे। परंतु समुद्र में प्रवेश करने में असमर्थ हुये और उनका बल क्षीण हो गया। मन्दराचल देवताओं और दैत्यों के ऊपर गिर पड़ा। कितने ही देवता और दैत्य उसमें दब गये। पश्चात सचेत होने पर शिवजी की स्तुति करने लगे। शिवजी ने उन्हें बल दिया। अब वे उस पर्वत को उठाकर क्षीरसागर के उत्तर तट पर ले जाकर जल में डाल दिये। फिर बासुकी को रस्सी बनाकर रत्नों के लिए क्षीरसागर का मन्थन किया। देवलोक की महेश्वरी भृगु की पुत्री लक्ष्मी निकली। धन्वतरि वैद्य, चन्द्रमा, पारिजात, कल्पवृक्ष, उच्चैःश्रवा घोड़ा, ऐरावत हाथी, मदिरा, हरि का धनुष, शंख, कामधेन, कौस्तुभमणि, तथा अमृत निकला। साथ ही कालकूट विष भी निकला और जब अमृत निकला तब उनमें से लक्ष्मी शङ्ख, कौस्तुभ तथा खड्ग को विष्णुजी ने ग्रहण किया और उच्चैःश्रवा नामक सुन्दर घोड़े को सूर्य ने लिया। इन्द्र ने पारिजात, कल्पवृक्ष तथा ऐरावत हाथी को लिया और भक्तवत्सल शिवजी ने कालकूट विष को अपने गले उतार देव-रक्षा के लिये भयभीत चन्द्रमा को अपने शिर पर धारण किया। दैत्यों ने रमण कराने वाली मदिरा ली और मनुष्यों ने धन्वतरि वैद्य को लिया। मुनीश्वरों ने कामधेनु गौ को ग्रहण किया तथा वे जो सामान्य स्त्रियाँ थी वे सब मोहनी रूप हों गईं। पश्चात् अमृत के लिये मलिन चित्त हुये तथा विजय चाहने वाले देवता और राक्षसों में परस्पर घोर संग्राम हुआ और सूर्य के समान तेजस्वी बलि आदि दैत्यों ने बल पूर्वक देवताओं को जीत अमृत घट को छीन लिया। तब दैत्यों से पराजित देवता शिवजी

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

की शरण से गये और शिवजी की आज्ञासे विष्णु ने माया पूर्वक स्त्री का वेश धारण कर दैत्यों से अमृत छीन देवताओं को पिला दिया। दैत्यों ने उस मोहनी के निकट जाकर कहा कि हमको भी इस अमृत को पिलाओ पंक्ति में भेद न होने पावे। शिवजी की माया से मोहित दैत्यों ने अमृत बाँटने के लिये उस कपट रूपधारी विष्णु को दिया। इसी समय उन दैत्यों ने अमृत से उत्पन्न हुई उन सुन्दर स्त्रियों को देखा तो वे उधर मुड़ गये और उन्हें अपने स्थान में ले जाकर रक्खा शिव की माया से उनके बड़े से बड़े सुन्दर गुप्त स्थान बन गये। पश्चात् उनकी रक्षा कर सब दैत्य एक हो अमृत के लिये देवताओं से युद्ध करने चले। देवताओं का दैत्यों के साथ भयङ्कर युद्ध हुआ। देवासुर संग्राम तीनों लोकों में प्रसिद्ध हुआ। विष्णु जी से रक्षित देवताओं ने विजय पाई। महात्मा विष्णु ने सब दैत्यों को मोहित कर दिया। वे पाताल के विवरों में समा गये विष्णुजी उन भयभीत दैत्यों को हाथ में चक्र ले पाताल में मारने गये। वहाँ उन्हें दैत्यों द्वारा स्थापित बहुत सी चन्द्रमुखी स्त्रियाँ दिखाई पड़ीं। विष्णुजी ने उन सबसे रमण कर अनेक युद्ध दुर्मद पुत्रों को उत्पन्न किया जिन्होंने पाताल से लेकर पृथ्वी तक में बड़ा उपद्रव किया। उनसे मुनियों और देवताओं को बड़ा कष्ट हुआ। ब्रह्माजी मुनियों को साथ ले कैलाश स्थित शिवजी के पास गये। सबने मिलकर शिवजी की स्तुति की। उस स्तुति से प्रसन्न हो शिवजी ने वृषभ का रूप धारण कर विष्णु को पाताल से लाने की इच्छा की तथा देवताओं को आश्वासित किया।

-:["ॐ"]:-

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

* तेईसवाँ अध्याय *

(अवतार लीला वर्णन)

नन्दीश्वर बोले-अब शिवजी ने वृषभरूप धारणकर गर्जते हुए पाताल में प्रवेश किया। उनकी प्रचण्ड गर्जन से नगर गिर पड़ा कर विध्वंस होने लगा। पुरवासी व्याकुल हो गये। वृषभ रूपधारी शङ्कर ने उपद्रवी विष्णु—पुत्रों का सामना किया जो धनुष-बाण लिये सर्वदा संग्राम ही किया चाहते थे। उन वीर विष्णु—पुत्रों ने क्रुद्ध हो शिवजी पर आक्रमण किया। बैल रूप रुद्र ने अपनी सींगों और खुरों से उन्हें मारा, कुपित रुद्र की उस मार से विष्णु के कितने ही पुत्र प्राण रहित और मूर्छित हो गये। यह जानकर भगवान् विष्णु उस विवर से बाहर निकले। उन्होंने अपने सुतो को मारने वाले वृषभ रूप धारी रुद्र को देखकर उन पर अपने वाणों और दिव्य अस्त्रों का प्रयोग किया परन्तु पर्वत निवासी रुद्र ने उन विष्णु के सब अस्त्रों को काट डाला। तब उन वृषभ रूपधारी शिव को पहचान कर विष्णुजी ने कहा-देव देव महादेव मैं मूर्ख हूं जो आपकी माया से मोहित हो आपके साथ युद्ध किया। भला कोई अपने स्वामी से युद्ध करता है मुझपर कृपाकर मेरे अपराध को क्षमा कीजिये। नन्दीश्वर बोले—मुने! तब विष्णुजी के इन बचनों को सुनकर भगवान् शङ्कर ने कहा तुम बड़े बुद्धिमान हो फिर सब ज्ञान को भूल मुझसे युद्ध क्यों करने लगे अब तुम यहाँ रमण मत करो और इस कुचार से निवृत हो जाओ। विष्णुजी लज्जित हो वहां से चलने लगे। शिवजी ने कहा ठहरो। अब तुम अपने इस चक्र को यहाँ छोड़ दो। मैं तुम्हें दूसरा चक्र दूंगा। ऐसा कह शिवजी ने अपने तेजसूर्य के समान दूसरा सुदर्शन चक्र निकाल विष्णु को दिया। तब विष्णुजी स्वर्ग चले गये। वृषेश्वर भगवान् शंकर भी देवताओं का कार्य कर कैलाश पर्वत पर चले गये। विष्णु का मोह दूर हो गया।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

* चौवीसवाँ अध्याय *

(पिप्पलाद-चरित्र)

नन्दीश्वर बोले—मुने ! एक समय जब देवताओं को बृत्रसुर ने परास्त कर दिया तो उन्होंने अपने सब आयुधों को दधीचि ऋषि के आश्रम में डालकर ब्रह्मलोक की यात्रा की। यहाँ पहुँच लोक पितामह से उन्होंने अपनी सब बेदनायें कहीं। ब्रह्माजी ने क्षणभर मौन हो विचार कर कहा कि इसके लिए आप लोग महर्षि दधीचि के पास जाकर उनके अस्थिओं की याचना करो। क्योंकि उन्होंने शिवजी की आराधना कर अपनी हड्डियों के वज्र से भी कठोर होने का वर प्राप्त किया है। जब उनकी हड्डियां मिलजायंगी तब उनसे वज्र का निर्माण कर वृत्र को मारा जायगा। नन्दीश्वर ने कहा—ब्रह्माजी के इन बचनों को सुनकर देवगुरु वृहस्पति को आगे कर इन्द्रादि देवता दधीचि ऋषि के आश्रम पर पहुँचे और सब ने हाथ जोड़ उन्हें प्रणाम किया। तब देवताओं के इस आगमन का अभिप्राय जानकर ऋषि ने अपनी पत्नी सुवर्चा को आश्रम के भीतर भेज दिया और इन्द्र से आगमन का कारण पूछा। इस पर स्वार्थसाधक इन्द्र ने अपना अभिप्राय कहा। महर्षि दधीचि ने सोचा परोपकार से बढ़कर दूसरा धर्म नहीं। उन्होंने शिवजी का ध्यान कर अपना शरीर त्याग दिया। पुष्पों की वर्षा हुई। देवता विस्मित हो गये। इन्द्र ने कामधेनु द्वारा शीघ्र ही ऋषि की सब अस्थियाँ निकलवाली और त्वष्टा से उनका अस्त्र बनाने को कहा। त्वष्टा की आज्ञा से बिश्वकर्मा सुदृढ़ वज्रमय अस्त्र बनाया। उनके तेज से वृद्धि को प्राप्त कर इन्द्र ने वज्र लेकर क्रुद्ध हो वृत्रासुर पर इस प्रकार प्रहार किया कि जिस प्रकार रुद्र ने काल पर किया था। फिर तो इन्द्र ने पूर्णतया सन्नद्ध हो इस वज्र से वृत्रासुर को पर्वत के शिखर की तरह काट डाला। देवताओं ने बड़ा उत्सव किया। तात ! प्रसङ्गवश यह

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

चरित्र तो मैंने तुम्हें सुनाया । अब शङ्कर के पिप्पलाद अवतार को सुनो जब दधीचि पत्नी सुवर्चा अपने पति की आज्ञा से आश्रम के भीतर चली गई तो वहाँ उन्होंने सम्पूर्ण गृह कर्म किये और जब लौटी तो अपने पति को तथा सब देवताओं को वहाँ न देख उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ साथ ही उन्हें और भी बहुत से अशगुन दिखाई पड़े ।

ऋषि पत्नी सुबर्चा देवताओं के हृदय को जानकर परम क्रुद्ध हो शाप देने लगी । उन्होंने सब देवताओं को पशु होने का शाप दे दिया । पश्चात् चिता लगा उसमें जलने चलीं । तब शिवजी से प्रेरित आकाशबाणी ने आश्वासन देते हुए सुवर्चा से कहा कि प्राज्ञे ! तुम ऐसा न करो । मुनीश्वर का तेज तुम्हारे हृदय में विराजमान है । उसको यत्न पूर्वक उत्पन्न करो । क्योंकि "सगार्भा स्त्री अपने शरीर को न जलावे" यह वेद की आज्ञा है । यह सुन सुवर्चा को बड़ा आश्चर्य हुआ । उन्होंने एक पत्थर उठा अपना गर्भ विदीर्ण कर दिया । उन में से एक महादिव्य शरीर वाला परम क्रान्तिमान मुनिवर का तेज रूप बालक निकला । वह साक्षात् शिवजी थे । मुनि-पत्नी ने उस बालक के अद्भुत तेज को देखकर उसे रुद्र का अवतार समझा, उनके प्रसन्नता की सीमा न रही । उन्होंने शीघ्र ही प्रणाम कर उस बालक के स्वरूप को अपने हृदय में स्थापित कर लिया । पश्चात् पतिलोक की इच्छुक सुवर्चा ने पुत्र से कहा—तात ! तुम दीर्घ काल तक इस पिप्पल की मूल में निवास कर सबके सुखदायक बनो और अब मुझे प्रेम पूर्वक पतिलोक में जाने की आज्ञा दो जहाँ जाकर मैं अपने पति के साथ रुद्र स्वरूपी आपका ध्यान करूँ । सुवर्चा पुत्र से ऐसा कह परम समाधि लगा पतिलोक को चली गई । वहां जा अपने पतिको पा शिवलोक में आनन्द से शिवजी की सेवा करने लगी । उधर मुनि पुत्र के रूप में शङ्कर जी का अवतार लिया समझ विष्णु और ब्रह्मा अपने गणों के साथ

CC-0. Asli Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

प्रीति पूर्वक वहाँ आये और बड़ा उत्सव किया। फिर उन पिप्पल नामक शिव के अवतार का विष्णु आदिक सब देवता सविधि संस्कार कर सन्तुष्ट हो गये। ब्रह्माजी ने उनका नाम-संस्कार कर पिप्पलाद नाम रक्खा। पश्चात् इन्द्रादिक सब देवताओं ने कहा कि—हे देवेश! प्रसन्न हो ऐसा कह परमोत्सव कर ब्रह्मा, विष्णु आदिक सब देवता उनकी आज्ञा लेकर अपने लोक को चले गये। फिर तो महाप्रभु पिप्पलाद लोक हितार्थ कितने ही काल तक उस अश्वस्थ वृक्ष की मूल में तप करते रहे।

* पच्चीसवां अध्याय *

(पिप्पलाद महादेव लीला)

नन्दीश्वर बोले—एक दिन वे पिप्पलाद मुनि पुष्पभद्र नामक नदी में स्नान कर रहे थे तो उन्होंने एक मनोहर युवती को देखा कि जो शिवजी के अंश से पैदा हुई थी। उसे देख तत्व प्रवीण मुनि पिप्पलाद उसके रूप पर मोहित हो गये और उसे प्राप्त करना चाहा वह राजा अनरण्य की कन्या थी। महर्षि पिप्पलाद राजा अनरण्य के पास पहुँचे। राजा ने मुनि की यथोचित अभ्यर्थना की। ऋषि ने राजा से कन्या की याचना की। यह सुन राजा मौन हो गया और तत्क्षण उससे कुछ कहते न बना। पिप्पलाद ने कहा या तो भक्ति-पूर्वक कन्या मुझे दो अन्यथा मैं तुम्हारे सहित सब को भस्म कर दूंगा। राजा ने भयभीत हो मुनीश्वर को अपनी कन्या प्रदान की। मुनि उस शिव के अंश से उत्पन्न कन्या से विवाह कर उसको साथ ले अपने आश्रम पहुँचे। वृद्ध तपस्वी अत्यन्त ही सौम्या स्त्री के साथ आनन्द से वास करने लगे। उसका नाम पद्मा था। तब जैसे लक्ष्मीजी विष्णुकी सेवा में रत रहती हैं वैसे ही पद्मा भी मन वचन और कर्म से पति की सेवा करने लगी। युवती से अपने ही समान दश पुत्र उत्पन्न किये। संसार में किसी से निवारण न होने वाली उन्होंने शनिश्चर की पीड़ा निवृत

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

की। उन्होंने वर दिया कि जन्म से लेकर सोलह वर्ष तक मनुष्यों को और शिव भक्तों को वह बाधा न हो। यदि इसके बिपरीत शनि कहीं परमनुष्यों को पीड़ित करेगा तो भस्म हो जायगा।

* छब्बीसवां अध्याय *

(वैश्यनाथ अवतार वर्णन)

नन्दीश्वर बोले—मुनीश्वर पूर्व समय में नन्दि ग्राम में महानन्दा नामक एक बड़ी रूपवती वेश्या रहती थी जो शिवजी की भक्ता थी यह बड़ी धनवान ऐश्वर्ययुक्त और अनेक उज्जबल आभूषणों से युक्त तथा सर्वदा शृङ्गारित रहा करती थी। यह सर्वदा शिवजी के नाम जप में लगी रहती पार्वती सहित शङ्कर की पूजा करती और सर्वदा रुद्राक्ष तथा विभूति धारण किया करती थी। वह सर्वदा शिवजी की पूजा कर उनका सुन्दर यशोगान कर भक्ति पूर्वक आगे उनके गाया करती तथा एक बन्दर और एक मुर्गे को रुद्राक्षों से भूषित कर हाथ की तालियों से शिवजी के आगे नचाती और शिवजी की भक्ति में रत सखियों सहित प्रेम पूर्वक हँसती रहती। शिला में रुद्राक्ष बाँधे मुर्गा भी बन्दर के साथ चतुर नाच नाचता और दर्शकों का मन प्रसन्न किया करता। इस प्रकार शिवजी की भक्ति में रत महानन्दा ने कितना ही समय व्यतीत किया। तब एक दिन शङ्करजी वैश्य का रूप धारण कर उसके भाव की परीक्षा लेने आये। उनके हाथ में रत्न जटित एक बड़ा ही सुन्दर कङ्कण था। उसे देख महानन्दा मुग्ध होगई। वैश्य रूप शिवजी उसके मन के लालचको समझ गये। उन्होंने कहा यदि तुम्हारा मन इस कङ्कण के लिये क्षुब्ध हो रहा है तो तुम्हीं उसको प्रसन्नता से धारण करो। परन्तु यह कहो कि इसका मूल्य क्या दोगी। वैश्या ने कहा मैं एक व्यभिचारिणी वैश्या हूं व्यभिचार ही हमारे कुल का परम धर्म है यदि आप यह कङ्कण मुझे दे देंगे तो मैं तीन दिन और तीन रात आपकी स्त्री रहूंगा। वैश्या ने कहा—पतिवल्लभे!

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

तथास्तु। लो यह रत्न कङ्कण और तीन रात मेरी स्त्री रहो। इस व्यावहार में सूर्य और चन्द्रमा प्रमाण हैं। परन्तु तीन बार सत्य हैं ऐसा कहकर मेरे हृदय का स्पर्श करो। वैश्या ने कहा प्रभो! मैं तीन दिन और तीन रात आपकी पत्नी रहकर सह धर्म का पालन करूँगी यह सत्य है सत्य है सत्य है। ऐसा कह सूर्य और चन्द्रमा को साक्षी बना नन्दा ने प्रीति सहित तीन बार उसके हृदय का स्पर्श किया। वैश्य ने उसे कङ्कण देकर रत्न मय लिंग उसके हाथ में दिया और कहा कि हे कान्ते! यह रत्न जटित शिवजी का लिंग मुझे प्राणोंसे भी अधिक प्रिय है। तुम सदैव इसकी रक्षा करना और यत्न पूर्वक गुप्त रखना। तब ऐसा ही होगा यह कहती हुई महानन्दा ने उस रत्न मय लिंग को लेकर नाटक के मण्डपमें रखकर घर में चली गई। फिर रात्रि समय उस वैश्य को कोमल गद्दे और तकियो से शोभित पलङ्ग पर ले जाकर आनन्द से सो गई अर्ध रात्रि के समय नृत्य मण्डप में सहसा यह एक वाणी उत्पन्न हुई कि तात! इस नृत्य-भवन में वायु की सहायता से अग्नि प्रज्वलित हो गई है। पश्चात् नृत्य मण्डप जलने लगा। महानन्दा ने दौड़कर बंधे हुए बन्दर और मुर्गे को दूर भगाया। लिङ्ग खम्भ के साथ जलकर टुकड़े टुकड़े होगया। उसे जला देख वह वैश्य और वैश्या बड़े दुःखी हुए। उन्होंने कहा मेरा प्राणों से भी प्यारा शिव लिङ्ग जल गया। भद्रे! तुम अपने भृत्योंसे मेरी चिता बनवा दो मैं अग्नि में प्रवेश कर जाऊं। यदि ब्रह्मा, विष्णु और महेश भी आकर मना करें तो मैं नहीं मान सकता। वैश्या ने अपने भृत्यों को आज्ञा दे चिता बनवा दी परम कौतुकी अग्नि की परिक्रमा कर सब मनुष्यों के देखते अग्नि में प्रवेश कर गये। वैश्या विस्मित होगई उसे बड़ा खेद हुआ। उसने कहा मैं तो तीन दिन उस वैश्य के पास रहने वाली थी। परन्तु मेरी थोड़ी सी असावधानी से यह शिव व्रती वैश्य मर गया। अतएव में भी उसके साथ ही अग्नि में प्रवेश कर जाऊं तभी अच्छा है। सत्य से ही परम गति होती है यह सुन लोगों ने

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

उसे प्राण त्यागने के लिये मना किया परन्तु उसने अपना सारा धन ब्राह्मणों को दान कर दिया तथा स्वयं प्रज्वलित अग्नि में कूदने चली। तब उसी समय अपने चरणों में उसका मन लगा हुआ देख विश्वात्मा शिव ने प्रकट होकर उसको मना किया। उस समय त्रिलोचन शिवजी चन्द्रकला भूषणधारी, करोड़ों सूर्य और चन्द्रमा के समान प्रकाश युक्त महानन्दा के समक्ष अपने दिव्य रूप से प्रकट हुये थे। कान्तिमान शङ्कर को देख नन्दा स्तब्ध खड़ी रह गई। अत्यन्त भयभीत विव्हलमना, कम्पित तथा मूर्ख सी हुई नन्दा के नेत्रों से अबिरल अश्रुप्रवाह होने लगा। तब उसे धैर्य दे उस पर हाथ रख शिवजी ने कहा—मैं तेरी सत्यता, धर्म-धैर्य और निश्चल भक्ति से प्रसन्न हूँ। तेरी परीक्षा लेने के लिये ही वैश्य रूप धारण कर तेरे पास आया था। मैं तुझ पर प्रसन्न हूँ। वर मांग वैश्या ने शङ्कर से कहा—मुझे न तो भोगों की इच्छा है और न स्वर्ग की। मैं तो केवल आपके चरण कमलों का स्पर्श चाहती हूँ। मेरे जितने साथी और भृत्यादि हैं इन्हें भी आपका दर्शन ही चाहिये। अतएव मेरे साथ ही इन सबको भी आप अपने परम पद को ले चलिये। शिव जी ने एवमस्तु कह उन सब को अपने परम पद को भेज दिया।

* सत्ताईसवाँ अध्याय *

(द्विजेश्वर-अवतार)

नन्दीश्वर बोले—तात ! पहले जिस भद्रायु नामक राजा का वर्णन किया है और जिस पर ऋषभ रूप से भगवान् शंकर ने कृपा की थी उसी के धर्म की परीक्षा लेने के लिये शंकरजीने द्विजेश्वरावतार धारण किया था। वही कथा मैं कहता हूँ। ऋषभ के प्रभाव से प्रभु ने शत्रुओं को युद्ध में जीता और सिंहासन को प्राप्त कर भद्रायु को

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

उत्पन्न किया। समय आने पर उसने चन्द्राङ्गद की पुत्री सीमन्तिनी को अपनी पत्नी बनाया। तब एक समय जब यह बसन्त ऋतु को पाकर सघन वन में बिहार करने गया तो पार्वती सहित भगवान् शङ्कर उसके धर्म की दृढ़ता की परीक्षा के लिए वहाँ जाकर विहार करने लगे। पार्वती और शङ्कर उस वन में जाकर द्विजदम्पति हो गये तथा एक मायामय सिंह प्रकट कर उसके भय से स्वयं भयभीत हो भद्रायु के पास भाग कर गये और कहा कि इससे हमारी रक्षा कीजिये। यह सुनते ही उस नृपतीश्वर ने ज्योंही धनुष उठा उस व्याघ्र को मारना चाहा कि त्योंही उस मायामय सिंह ने झपट कर उस ब्राह्मण की स्त्री को खा लिया। वह स्त्री हे नाथ! हे कान्ते! कहती ही रही। तब तक राजा ने उस सिंह पर अपने तीक्ष्ण बाणों का प्रहार किया परन्तु उससे उसे कुछ भी व्यथा न हुई और वह स्वच्छन्दता से उस स्त्री को ले भागा। तब व्याघ्र द्वारा स्त्री के अपहरण किए जाने से ब्राह्मण बार-बार रोने लगा। फिर राजा भद्रापुर से बोला-राजन्! तुम्हारे बड़े-बड़े आयुध कहाँ हैं? तुम्हारे पराक्रम का क्या फल है? क्या जङ्गली जानवरों घातों का भी निवारण करने में भी समर्थ नहीं हो? दुःख से रक्षा करना क्षत्रीयों का धर्म है। जब कुलोचित धर्म ही नष्ट हो गया तो जीवित रहने से क्या प्रयोजन है? जो दुखित की रक्षा नहीं करता उसके जीवित रहने से उसका मरना ही श्रेष्ठ है। कृपण, अनाथ और दीन की रक्षा न करने से बुद्धिमान को विष खा लेना अथवा अग्नि प्रवेष कर लेना उत्तम है। नन्दीश्वर बोले—तब इस प्रकार उस ब्राह्मण द्वारा अपने सत्वकी निन्दा सुनकर राजा शोकाकुल हो अपने दुर्भाग्यों के प्रति बड़ा पश्चाताप करने लगा। उसने कहा, आज प्रारब्धवश मेरा पौरुष नष्ट हो गया। आज मुझे घोर पाप लगा। अब मैं इस मृत स्त्री वाले शोकाकुल ब्राह्मण के लिए अपने प्रिय प्राणों का त्याग कर इन्हें शोक रहित करूंगा। राजा भद्रायु मन में ऐसा निश्चय कर ब्राह्मण के चरणों

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

पर गिर कर उन्हें सन्तोष देने लगा। उसने कहा में अपनी रानी सहित अपना सब राज-पाट आपके चरणों में निछावर करता हूँ। ब्राह्मण ने कई बातें कह कर उस राजा से यह कहा कि, मेरी स्त्री नहीं है, तुम अपनी प्रधान स्त्री दे दो इस पर राजाने कहा, मैं और तो सब कुछ दे सकता हूँ परन्तु स्त्री नहीं। फिर स्त्री सेवन तो घोर पाप है। अन्य पाप तो प्रायश्चित से नष्ट हो जाते हैं किन्तु पर स्त्री उपभोग से अर्जित पाप कदापि नहीं धुल सकता। ब्राह्मण ने कहा—में अपने तप से ब्रह्म-हत्या तथा मदिरा का सेवन रूप घोर पाप भी शान्त कर सकता हूँ। फिर पर स्त्री उपभोग तो क्या है ? अतएव तुम अपनी स्त्री मुझे दे दो। नन्दीश्वर बोले—ब्राह्मण की बात से राजा चिन्तित हो गया। उसने विचारते विचारते निश्चय किया कि दीनों की रक्षा करना कर्त्तव्य है इससे तो यही अच्छा है कि स्त्री दान करदें पश्चात् मैं शीघ्र ही अग्नि में प्रवेश कर जाऊँगा और संसार में मेरी कीर्ति होगी। ऐसा मन में निश्चय कर उस राजा ने अग्नि प्रज्वलित की और हाथ में जल ले उस ब्राह्मण को बुला पत्नी—दान कर दिया। पश्चात् अग्नि की तीन प्रदक्षिणा कर एकाग्र हो शिव का ध्यान करने लगा।

तब अपने चरणों का ध्यान लगाये अग्नि में प्रवेश करने वाले राजा की ऐसी वृश्धि देख द्विजेश्वर रूपधारी शिवजी से न रहा गया और वे अपने पाँच मुख तीन नेत्र, पिनाक और चन्द्रकला धारण किए मध्यान्ह काल के करोड़ों सूर्य के समान तेजस्वी स्वरूप में राजा के समक्ष हो गए। आकाश से फूलों की वर्षा होने लगी। देवताओं के बाजे बजने लगे। ब्रह्मा, विष्णु आदिक देवता, इन्द्र नारदादिक मुनीश्वर वहाँ आकर स्तुति करने लगे। शिवजी के दर्शन से भद्रायु गद्गद् वाणी में हाथ जोड़ उनकी स्तुति करने लगा। उसकी स्तुति सुन पार्वती सहित शङ्करजीने प्रसन्न होकर कहामैं तुम्हारी भक्ति से प्रसन्न हूँ तुम अपनी स्त्री सहित मुझसे वर माँगों। मैं तुम्हें इच्छित बर दूंगा।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

मैं परीक्षा के लिये ही यहाँ आया था और जिसे वह व्याघ्र उठा ले गया साक्षात् पार्वती देवी थीं तथा वह माया का व्याघ्र था जो तुम्हारे बाणों से घायल नहीं हुआ। तुम्हारे धैर्य की परीक्षा के लिये ही मैंने तुम्हारी पत्नी माँगी थी यह सुन भद्रायु ने फिर शिवजी को प्रणाम किया और बोला–मैं सकुटुम्ब आपके चरणों की भक्ति चाहता हूं मेरे पिता वज्रवाहु भी सपत्नीक आपके भक्त हों। पद्माकर नामक वैश्य और उसके पुत्र ये सभी आपके निकट बासी हों। नन्दीश्वर कहते हैं कि फिर उसकी रानी ने अपने पिता चन्द्राङ्गद तथा माता सीमन्तिनी के लिये भी ईश्वर की निकटता माँगी भक्त-वत्सल ने उनको एवमस्तु कहकर यथेष्टवर दिया और तत्क्षण वही अन्तर्ध्यान हो गये।

* अट्ठाईसवाँ अध्याय *

(यतिनाथ हंसरूप अवतार)

नन्दीश्वर बोले–हे मुनिश्वर ! अर्बुदाचल पर्वत के समीप भील-वंशोत्पन्न आहुक नामका एक भील था जिसकी स्त्री का नाम आहुका और जो बड़ी ही पतिव्रता थी तथा दोनों ही बड़े शिव भक्त थे। एक समय शिव भक्ति में रत वह भील अपनी स्त्री के आहार के लिये बहुत दूर निकल गया। उस समय यति के रूप में भगवान् शङ्कर सायंकाल में उसके घर पहुँचे। तब तक यह भील भी अपने घर लौट आया था। और उसने यतीश का सविधि पूजन किया। यतिनाथ ने कहा–"आज की रात्रि भर मुझे रहने का स्थान दो। प्रातःकाल ही मैं चला जाऊँगा। तेरा कल्याण हो।" भील ने कहा, मेरे पास बहुत थोड़ा स्थान है, इसमें आप कैसे रहेंगे ? इस पर वह सन्यासी जाने लगा। तब भीलनी ने मनमें विचार कर अपने स्वामी से कहा कि,ये अतिथि हैं, इन्हें विमुख न करो। आप सन्यासी सहित घर में रहियेगा और मैं बाणों सहित घर के बाहर रह जाऊंगी। तब अपनी स्त्री की इस धर्ममय वाणी को सुनकर भील ने मन में विचार किया और

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

कहा—नहीं मैं ही घर के बाहर रहूँगा और अतिथि सहित तू ही घर के भीतर रह रात्रि व्यतीत करना। निदान वह भील अपने अस्त्रों सहित घर के बाहर स्थित हुआ और सन्यासी अतिथि तथा भील की स्त्री घर के भीतर रहे। इधर रात्रि में घर के बाहर स्थित भील को हिंसक तथा क्रूर पशुओं ने पीड़ा दी और भक्षण कर लिया। प्रातः काल सन्यासी ने घर के बारह आकर देखा तो वनचारी भील को सिंहा दि भक्षण करगये हैं। इससे उसे बहुत दुःख हुआ भिलनी भी दुःखित हुई परन्तु स्वयं दुःख से कातर रहते हुए भी उसने सन्यासी को समझाया कि आप किंचित् दुःख न करें। अतिथि सेवा में प्राण भी विसर्जन करना धर्म है। मेरा क्या है, मैं तो अग्नि-प्रवेश कर उसके साथ सती हो जाऊंगी। निदान चिता बनाकर वह उस में जा बैठी। उसी समय शङ्करजीने प्रकट होकर उसे धन्य-धन्य कहा और वर देकर दूसरे जन्म में अपने ही रूप वाला सन्यासी और स्वयं हंस रूप का संयोग दिया। फिर तो शङ्करजी के वरदान से वह भील निषध नगर में राजा बीरसेन के यहाँ नल नाम से पैदा हुआ और उसकी स्त्री बिदर्भ नगर में राजा भीम की पुत्री दमयन्ती हुई तथा पश्चात्में मुक्ति को प्राप्त हुई। नन्दीश्वर लिङ्गरूप से वहाँ अचलेश्वर नाम से प्रसिद्ध हुए। शिवजी ने वहां हंस रूप धारण कर नल दमयन्ती का विवाह कराया।

* उन्तीसवां अध्याय *

(श्रीकृष्ण दर्शन अवतार)

नन्दीश्वर बोले—सनत्कुमार इक्ष्वाकु वन्श में श्राद्धदेव की नवमी पीढ़ी में राजा नभग का जन्म हुआ था जिसके पुत्र नाभाग और उसके विष्णु भक्त अम्बरीष हुए थे। अब उन्ही अम्बरीष के पितामह नभग का चरित्र सुनो जिसे स्वयं शङ्करजी ने ज्ञान दिया था। जब नभग बहुत दिनों के लिये गुरुकुल में विद्या पढ़ने चले गये तो उनके इक्ष्वाकु आदि भाइयों ने राज्य का विभाजन करवा अपना भाग

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

तो ले ही लिया किन्तु उन्होंने नभग का भी भाग हड़प कर लिया। जब ब्रह्मचारी नभग सब वेद-वेदाङ्ग पढ़कर गुरुकुल से लौटे तो अपना भाग माँगने लगे। भाइयों ने कहा विभाग करते समय तो हमें तुम्हारा ध्यान ही नहीं रहा और अब जो कुछ है पिता के पास ही है उसी में से तुम अपना भाग लो। नभग पिता के पास गए और सब समाचार कहा। पिता श्राद्धदेव को बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने नभग को धैर्य देकर कहा तुम्हारे भाइयों ने तुम्हारे साथ छल किया है उसका कहना असत्य है तुम उनकी बात पर विश्वास न करो परन्तु अब मैं तुम्हें एक उपाय बतलाता हूँ जिसके करने से तुम्हारा दुःख दूर हो जावेगा आज बुद्धिमान अङ्गिरस ब्राह्मण यज्ञ करते हैं जिसमें प्रत्येक छटे दिन उन्हें मोहप्राप्त होजाता और इस प्रकार उनका यज्ञ पूर्ण नहीं हो पाता है। तुम विद्वान् हो वहाँ जाकर तुम उन्हें उपदेश दो वैश्यदेव सूत्रों को पढ़ उनका यज्ञ के पूर्ण होने पर वे ब्राह्मण स्वर्ग चले जायेंगे और वे सन्तुष्ट होकर तुम्हें अपना बचा हुआ सब धन दे देंगे जिससे तुम सर्वदा के लिये धन से सन्तुष्ट हो जाओगे। पिता का यह बचन सुनकर नभग प्रेम पूर्वक वहाँ गया जहाँ पर उत्तम यज्ञ हो रहा था। उसमें पहुँचकर बुद्धिमान मनु पुत्र-ने दो वैश्यदेव सूक्त स्पष्ट उच्चारण किया। यज्ञ-कर्म समाप्त होने पर वे आङ्गिरस ब्राह्मण अपने यज्ञ का अवशिष्ट धन नभग को देकर स्वर्ग को प्राप्त हुए। परन्तु उसी समय शिवजी कृष्ण दर्शन रूप में प्रकट होकर बोले—हे नभग! यज्ञ का अवशिष्ट धन तो मेरा है। इसे तू कैसे ग्रहण करता है। नभग ने उत्तर दिया। इस धन को ऋषियों ने मुझे दिया है। यह मेरा धन है। आप कौन हैं जो मुझे रोकते हैं? तब नभग का कहा हुआ यह सत्य बचन सुनकर कृष्ण दर्शन ने कहा—हम दोनों के वाद-विवाद में आपके पिता ही प्रमाण हैं।

जाओ उनसे पूछो, वे जैसा कहें हम वैसा मान लेंगे। यह सुन कवि नभग अपने पिता के पास पहुँचे। मनु श्राद्धदेव ने कहा-वह

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

पुरुष देवता शङ्करजी हैं। यज्ञ में अवशिष्ट वस्तु उन्हीं की है यदि वे कृपा करें तो तुम पा सकते हो। वहाँ तुम जाकर उनकी स्तुति करो। अपने अपराध को प्रणाम तथा स्तुति करके क्षमा कराओ। वह सबके अखिलेश्वर प्रभु शङ्करजी यज्ञ के अधिष्ठाता हैं ब्रह्मा विष्णु आदि सब देवता सिद्ध और ऋषि उनके अनुग्रह से ही कृतकार्य होते हैं। ऐसा कहकर मनु श्राद्धदेव ने अपने पुत्र को शङ्करजी के पास लौटा दिया। नभग शङ्करजी के पास पहुँच हाथ जोड़ कर उनकी विविध प्रकार से स्तुति करने लगे। अपने अपराधों के लिये बार-बार क्षमा माँगी। उसी समय ब्रह्मा विष्णु इन्द्रादिक सब देवता तथा सिद्ध और मुनिजन भी वहाँ आए और वे सब हाथ जोड़ पृथक-पृथक उनकी स्तुति करने लगे। तब शिवरूप कृष्णदर्शन ने प्रसन्न हो नभग से कहा—तुम्हारे पिता ने जो कुछ कहा है वह सब सत्य है। तुम भी साधु हो इसमें सन्देह नहीं। मैं तुम्हारे बृत से प्रसन्न हूँ। मैं तुम पर कृपा कर यह सनातन ब्रह्मज्ञान देता हूँ कि तुम शीघ्र ही महाज्ञानी हो कर सब वस्तुओं को ग्रहण करो। ऐसा कह सत्यव्रतज्ञों पर दया करने वाले भगवान शङ्कर उन देवताओं के देखते-देखते अन्तर्धान हो गये। ब्रह्मा विष्णु तथा इन्द्रादिक सब देवता उनको नमस्कार कर आनन्द पूर्वक अपने धाम को चले गये। श्राद्धदेव भी अपने स्थान को गये। फिर अनेक सुखों को भोगते हुए अन्त में शिव लोक को चले गये।

* तीसवाँ अध्याय *

(अवधूतेश्वर अवतार वर्णन)

नन्दीश्वर बोले—ब्रह्म पुत्र! एक समय बृहस्पति और सब देवतओं को साथ ले इन्द्र शङ्करजी के दर्शन करने के लिये कैलाश पर्वत पर गये तो इन्द्र को आया जान शिवजी उनकी परीक्षा करने लगे। लीला धारी प्रभु शङ्कर ने भयङ्कर अवधूत रूप धारण कर लिया उन्होंने आगे से जाकर मार्ग रोक लिया और प्रज्वलित अग्नि के समान देदीप्यमान लम्बे होकर वहाँ स्थित हो गये। बृहस्पतिजी के साथ इन्द्र

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

ने मार्ग के मध्य में अद्भुत आकार वाले भयङ्कर पुरुष को देखा। तब अहङ्कारी इन्द्र ने शङ्करजी को न पहचान कर मार्ग में स्थित उस पुरुष से पूछा—तुम कौन हो और दिगम्बर तथा अवधूत आकार वाले तुम कहाँ से आये हो और तुम्हारा क्या नाम है? मुझसे शीघ्र सत्य—सत्य कहो। शङ्करजी अपने स्थान पर स्थित हैं अथवा कहीं गये हैं। देवता और बृहस्पति सहित मैं उनके दर्शन को जाता हूँ। यह सुनकर मदनाशक शङ्करजी कुछ न बोले। इन्द्र ने फिर पूछा। परन्तु शङ्करजी फिर कुछ न बोले। त्रिलोकेश्वर इन्द्र ने फिर पूछा। परन्तु दिगम्बर फिर मौन ही रहा। इन्द्र बारम्बार पूछते परन्तु उनके अभिमान का नाश करने की इच्छा से भगवान दिगम्बर कुछ नहीं बोलते। तब इन्द्र ने ललकार कर कहा क्योंरे मूर्ख! तू पूछने पर उत्तर क्यों नहीं देता? इस कारण मैं तुझको अपने वज्र से मारता हूँ। देखूं तुझे कौन बचाता है ऐसा कह उन्होंने दिगम्बर को मारने के लिए वज्र उठाया। तब इन्द्र को हाथ में वज्र लिए देख शिवजी ने उस वज्रपात को स्तम्भित कर दिया। इन्द्र का वज्र उन पर न चल सका। तब भुजा के रुक जाने से इन्द्र को बड़ा क्रोध आया। वह भीतर ही भीतर जलने लगा। इतने में बृहस्पतिजी ने समझ लिया कि यह परम तेजस्वी पुरुष शिव ही हैं। उन्होंने शिवजी को प्रणाम किया। अनेक शब्दों में शिवजीकी स्तुति की। शिवजी प्रसन्न हो बृहस्पति को इन्द्र का जीवदान प्राप्त कराने के कारण जीव नाम से विख्यात हुए। शिवजी ने मस्तक के क्रोध को उठाकर लवण समुद्र में फैंक दिया। वह तुरन्त एक बालक हो गया। उसका नाम जलन्धर पड़ा। वह सिंधु का पुत्र कहलाया। फिर देवताओं की प्रार्थना से उसे शिवजी ने ही मारा। सब देवता सुखी हुए। शिवजी अन्तर्धान हो गये। इस प्रकार बृहस्पति सहित इन्द्र शिव का दर्शन कर अपने स्थान को लौटे।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* इकत्तीसवाँ अध्याय *

(भिक्षुवर्य शिव अवतार वर्णन)

नन्दीश्वर बोले—मुनि श्रेष्ठ ! विदर्भ नगर में एक सत्यरथ नामक राजा था जिसने शिव-धर्म सेवन करते हुए अपना बहुत सा समय व्यतीत किया। एक समय उसके नगर पर बहुत से शत्रुओं ने मिलकर आक्रमण किया, जिसमें सत्यरथ ने उन सबसे बड़ा युद्ध किया। परन्तु विजयी न हुआ और शत्रुओं ने उसे मार डाला। उसकी पटरानी गर्भवती थी। जब उसने देखा कि शत्रुओं ने उसे घेर लिया है तो वह लुक-छुप कर नगर से बाहर चली गई और शिवजी का स्मरण करते हुए बहुत दूर पूर्व दिशा में जाकर एक सरोवर के निकट एक सघन वट वृक्ष के नीचे अपना आश्रम किया। वहाँ उससे सर्व लक्षण सम्पन्न एक दिव्य बालक उत्पन्न हुआ। पश्चात् जब उस बालक की माता रानी सरोवर में जल पीने गई तो उसे घड़ियाल ने पकड़ लिया। सद्यजात बालक भूख प्यास से पीड़ित और माता-पिता से हीन दशा में बहुत रोने लगा। यह देख शिवजी को दया आई। उन्होंने एक भिखारिन ब्राह्मणी को उधर प्रेरित कर दिया वह बिधवा ब्राह्मणी उसके पास जा पहुँची। देखा तो अभी तक उस शिशु का नाल भी नहीं कटा था और वहाँ अकेले ही पड़ा रो रहा था। भिक्षणी को बड़ी दया आई। उसने उसे उठाकर पालन करना चहा। नन्दीश्वर कहते हैं कि इस प्रकार चिन्ता करती हुई उस ब्राह्मणी पर शिवजी ने बड़ी दया की और महान् लीलाधारी शिवजी स्वयं भिक्षुक का रूप धारण कर सहसा वहाँ जा पहुँचे और उस ब्राह्मणी से बोले—वि भाँमिनी ! अपने चित्त में सन्देह और खेद न करो। और इस पवित्र बालक को अपने पुत्र के ही समान जानकर इसका पालन करो। ब्राह्मणी ने प्रसन्न होकर कहा—धन्य है आप जो इस समय आकर मुझसे ऐसा कह रहे हैं। मैं तो इसका पालन करना

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

ही चाहती थी परन्तु शंकावश आगा पीछा कर रही थी। मैं आपसे यह जानना चाहती हूँ। कि यह बालक किसका है और आप कौन हैं, कहां से आये हैं? भिक्षुवर क्या आप दयासागर शिवजी हैं और यह आपका प्रथम भक्त है जो अपने किसी कर्म दोष वश इस दशा को प्राप्त हुआ है, परन्तु अब आपके अनुग्रह से इसका कल्याण ही होगा। अब मैं अवश्य ही रक्षा करूंगी।

तब इस प्रकार शिव दर्शन से विज्ञान प्राप्त करने वाली भिक्षुणी से भिक्षुवर्य शङ्करजी बोले–अनघे! यह शिव भक्त विदर्भ नरेश सत्यरथ का पुत्र है। इसका पिता शाल्व शत्रुओं द्वारा मार डाला गया है। उसकी स्त्री घर से निकल यहां भाग आई थी और इस बन में आकर उसने इस पुत्र को उत्पन्न किया है। और ज्यों ही यह उत्पन्न हुआ कि इसकी माता प्यास से व्याकुल हो उस सरोवर में जल पीने गई तो बहां उसे कर्क ने पकड़ लिया है। उसने पूछा, इस बालक का पिता शत्रुओं से क्यों मारा गया तथा इसकी माता को कर्क ने क्यों पकड़ा? तब भिक्षुक ने कहा–इसका पिता विदर्भ राज पहले जन्म में राजा पाण्डु हुआ जिसने सदैव शिव धर्म का पालन किया। एक समय जब वह राजा शिवार्चन में तल्लीन था कि सहसा कुछ शत्रुओं के आक्रमण का समाचार पाकर उसके मन्त्रि-गण अपने सामन्तों सहित राजाको सूचना देने पहुँचे तो राजा ने समझा कि ये सब शत्रु ही यहां पर आ गये हैं, अतः उसने शिव पूजा को त्याग तत्क्षण वहाँ से उठ उस मन्त्री आदि सबका शिर कटबा लिया, उसकी बुद्धि का भ्रम जो अपने शिव–पूजन समाप्त किये बिना ही यह सब कार्य किया। उस पर पाप चढ़ बैठा। जिसके फल स्वरूप जब वह शिव ब्रती फिर विदर्भ नगर में जन्मा तो शिव पूजा के समाप्त न करने से सुखों के मध्य में ही शत्रुओं द्वारा मारा गया। तब जो पूर्व जन्म में इसका सत्यरथ पिता था वही इस जन्म में शिवकी पूजा से यति की क्रम से ऐश्वर्य

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

रहित पुत्र रूप से हुआ है तथा इसकी माता ने अपने पूर्व जन्म में अपनी सौत को छल से मार दिया था उसी पाप से इस जन्म में उसे कर्क ने खा लिया है। शिव की भक्ति और शिव की पूजा न पूर्ण करने के कारण ही यह दरिद्रता को प्राप्त हुआ है। यह सब कह कर शिवजी ने उस ब्राह्मणी को अपना सत्य रूप दिखा दिया। ब्राह्मणी प्रसन्न हो परम प्रभु शङ्कर को प्रणाम कर गद्गद् वाणी से सप्रेम स्तुति करने लगी। भिक्षुक रूपधारी शिवजी अन्तर्धान हो गये। ब्राह्मणी उस पुत्र को उठा कर अपने स्थान पर ले आई। इस प्रकार एक चक्रा नामक नगर में लाकर वह अपने पुत्र के साथ राजा के उस पुत्र का पालन करने लगी। बड़ा होने पर वह राज पुत्र शाण्डिल्य मुनी की आज्ञा में स्थित हो शिव का पूजन करने लगा। एक वर्ष का समय व्यतीत हुआ। पश्चात् एक दिन वह राजपुत्र बन में जाकर एक गन्धर्व कन्या से विवाह कर अकण्टक राज्य करने लगा। इस प्रकार उस राज्यपुत्र को शिवजी की कृपा से सब सुख प्राप्त हुआ।

* बत्तीसवाँ अध्याय *

(सुरेश्वर अवतार)

नन्दीश्वर बोले—तात! व्याघ्रपाद का पुत्र उपमन्यु जो कई जन्मों से सिद्ध होकर इस जन्म में फिर कुमारपन को प्राप्त हुआ। अपनी माता सहित अपने मामा के घर रहा करता था दैववश बड़ा ही दरिद्र हो गया था। उसे अपने मामा के यहाँ बहुत थोड़ा सा दूध पीने को मिलता था जिससे उसकी दूध की इच्छा बनी रहा। वह बारम्बार अपनी माता से दूध माँगता। परन्तु माता के पास दूध कहाँ! उस तपस्विनी ने माता के घर के भीतर प्रवेश कर एक उपाय विचारा कणों के बीनने से जो बीज मिले थे उन इकट्ठे किये बीजों को पीस उनको जल में मिलाकर कृत्रिम दूध बालक को पिलाती और पालन करती। एक दिन उस बालक से कहा—कि यह दूध नहीं है और रोने लगा। तब अपने पुत्र के उस रोने से कमल के समान मुख वाली उसकी माता अपने

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

हाथों से उसके नेत्रों को पोंछने और यह कहने लगी-कि हम वनवासियों के पास दूध कहाँ है ? शङ्कर जी की कृपा के बिना दूध नहीं मिलता। तब अपनी माता के ऐसे वचनों को सुनकर मातृवत्सल तथा शोकाकुल व्याघ्रपाद का पुत्र बोला—माँ ! शक न कर यदि भगवान् शङ्कर कल्याण करने वाले हैं तो कल्याण ही होगा। यदि महादेवजी कहीं हैं तो शीघ्र ही या देर से दूध देंगे ही। मैं उनकी कृपा के लिए साधन करूंगा। ऐसा कह कर वह बालक अपनी माता को प्रणाम कर विदा हो तप करने चल दिया। उसने हिमालय पर जाकर 'ॐ नमः शिवाय' इस पंचाक्षरी मन्त्रों को जपते हुए शिवजी का पूजन रूप परम तप करना आरम्भ किया। फिर तो उस महात्मा बालक उपमन्यु के तप से चराचर भुवन प्रदीप्त हो गया। भगवान् शङ्कर इन्द्र का और पार्वती जो इन्द्राणी का रूप धारण कर नादिये के स्थान में एरावत हाथी का रूप धारण करा उस पर बैठ उस बालक के पास आये और बोले-कि मैं तुम्हारे तप से प्रसन्न हूं, जो इच्छा हो वह माँगो। बालक ने कहा मैं शङ्करजी की भक्ति माँगता। इन्द्र ने कहा, क्या तुम देवताओं के स्वामी इन्द्र को नहीं जानते ? में वही इन्द्र हूँ। रुद्र को त्यागकर मेरी पूजा करो। यह सुनकर मुनि-पुत्र ने अपने धर्म में विघ्न समझा। वह फिर पंचाक्षरी का जप करने लगा। उसने इन्द्र से कहा-शङ्करजी पिशाच कैसे ? उन्हीं से तो ब्रह्मा और विष्णु उत्पन्न हुए हैं। प्रकृति से परे उन देवेश्वर रुद्र को तुम जानते नहीं ? हे इन्द्रदेव ! तुम जाओ। मैं शङ्करजी से ही वरदान लूंगा। चाहे दूध के बिना भले ही में मर जाऊँ पर शङ्करजी की निन्दा नहीं सुनूंगा और यदि तुम फिर मेरे सामने शङ्करजी की निंदा करोगे तो मैं तुमको शिव के अस्त्रसे मारकर अपना शरीर त्याग दूंगा। ऐसा कह उपमन्यु ने दूध की इच्छा त्याग स्वयं मरने की इच्छा करली और इन्द्रको मारनेके लिए तैयार हुआ। उसने भस्म उठा उसे अघोर मन्त्र से अभिमंत्रितकर अपने इष्टदेव के युगल चरणों में ध्यान कर उसमें अग्नि स्थापित की और इन्द्रपर छोड़ दिया। परन्तु वह इन्द्र

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

तो थे नहीं, वह तो साक्षात् शङ्करजी थे तत्काल प्रत्यक्ष हो उस ब्राह्मण को दर्शन दिया और हजारों दूध के समुद्र दही के समुद्र तथा अन्य भक्ष्य और भोज्य पदार्थों के समूह उसे दिखाये और पार्वती सहित बैल पर बैठ गणों सहित त्रिशूलादि सुन्दर अस्त्रों से शोभित अपना रूप दिखाया। आकाश में दुन्दुभी बजने लगी और फूलों की वर्षा हुई। यह देख उपमन्यु शिवजी को दण्डवत् करता हुआ पृथ्वी पर लेट गया। फिर तो भगवान शङ्कर ने 'आओ, आओ, ऐसा कहते हुए उसे बुलाया और मस्तक सूंघ वर देने को कहा उपमन्यु ने शङ्करजी की स्तुति की। शङ्करजी ने हृदय से लगा पार्वती को दिया। पार्वतीजी ने प्यार कर कुमार के समान ही अपना अक्षयकुमार नामक पुत्र बनाया। शिवजी ने क्षीरसागर के समान स्वादयुक्त उसे एक अनश्वर सागर दिया। महादेव और पार्वती ने उसे और भी बहुत से दिव्य वर दिये। इसने शिवजी की परम भक्ति माँगी। शिवजी ने उसके माँगने के अनुसार अजर, अमर और सर्वदा दुःख से रहित अपनी भक्ति दी। उसे अक्षय गोत्र किया। साथ ही यह भी कहा-कि मैं तुम्हारे आश्रम के निकट सर्वदा स्थित रहा करूंगा। ऐसा कह पार्वती सहित शङ्करजी वहीं अन्तर्धान होगये। उपमन्यु शङ्करजी द्वारा श्रेष्ठ वरों को प्राप्तकर अपनी माता के पास गया और सब समाचार कह सुनाया। यह समाचार सुन उसकी माता बड़ी हर्षित हुई। अब वही उपमन्यु सबका पूज्य बन गया। अब वह सारे सुखों का भागी होगया। इसी प्रकार परमात्मा शिव सर्वदा सज्जनों को सुखदायी हैं।

-:["ॐ"]:-

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* तैंतीसवां अध्याय *

(ब्रह्मचारी-अवतार)

नन्दीश्वर बोले—सनत्कुमारजी ! दक्षपुत्री सती अपने पिता से अपमानित हो उन्हीं के यज्ञमें शरीर त्याग कर हिमाचल के घर मैंना से उत्पन्न हुई, तब सखियों के साथ बनमें जाकर विहार करने लगीं और शङ्करजी को पति के रूप में पाने के लिए, पवित्र तप करने लगीं। फिर तो नाना लीला विशारद शङ्करजी ने उनके तप की परीक्षा के लिए जहाँ पार्वती तप कर रहींथी वहाँ सप्तऋषियों को भेजा। वे उन सप्तऋषियोंने वहाँ जाकर अच्छी तरह यत्नपूर्वक पार्वती की परीक्षा की। शिवजी के पास लोट उन्हें नमस्कार कर सारा हाल कहा और उनकी आज्ञा ले स्वर्ग गये। सप्तऋषियों के चले जाने पर उत्पत्ति कर्त्ता शङ्कर ने स्वयं ही पार्वती के भाव की परीक्षा करने की इच्छा की। उन्हें प्रसन्नता हुई। उन्होंने इच्छा का शमन किया। जब इच्छा शान्त हो गई तो उन्होंने अद्भुत से भी अद्भुत एक ब्रह्मचारी का वेश बनाया। एक अत्यन्त बृद्ध ब्राह्मण का शरीर धारण किये। भगवान् शङ्कर उत्कंठित हो देवों को देखने के लिए उनके समीप पहुंचे। तब दण्ड और चर्म से युक्त, शान्त स्वरूप उन अद्भुत तेजवाले ब्राह्मणों को, जो ब्रह्मचारी वेश धारण किये बृद्ध जटिल और कमण्डलधारी थे। अपनी ओर आते देख पार्वती ने पूजा की सब सामग्री उठा उनकी यथोचित पूजा की, फिर सादर प्रेमपूर्वक कुशल पूछी कि, आप कौन हैं और कहाँ से आये हैं ? तब पार्वती के भावों की परीक्षा के विचार से बोला—मैं स्वच्छन्द विचरण करने वाला एक ब्रह्मचारी ब्राह्मण तथा तपस्वी हूँ जो दूसरों को सुख देता रहता हूं, उसमें कोई संशय नहीं है। ऐसा कहते हुये अपने रूप को छिपाये हुए ब्रह्मचारी वेश में भगवान् शङ्कर पार्वती के पास जा बैठे और बोले-महादेवि ! क्या कहूं ? कुछ कहा नहींजाता है। बड़ा अनर्थकारी महा विकृत वृतान्त दिखाई पड़ता है। तुम इस नवीन

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

अवस्था में, जब कि तुम सब सुन्दर भोगों के साधनों के योग्य और अनेक उपचारों द्वारा सुख के कारण हो व्यर्थ ही तप क्यों कर रही हो ? तुम कौन हो, किसकी पुत्री हो और किस कारण इस निर्जन वनमें कठिन तप कर रही हो ? उनके इस प्रकार वचनों को सुनकर परमेश्वरी पार्वती ने हंसकर प्रेम पूर्वक उस ब्रह्मचारी से कहा कि, विप्र ! ब्रह्मचारी ! अब मेरा सब वृतान्त सुनो। मेरा जन्म इसी भारत वर्ष में हिमाचल के गृह में हुआ है, इससे पूर्व में दक्ष प्रजापति के घर जन्मी थी और शङ्कर की पत्नी थी। परन्तु जब मेरे पिता ने मेरे पति की निंदा की तो मैंने योग द्वारा अपना शरीर छोड़ दिया। अब इस जन्म में बड़े भाग्य से मुझे शिवजी मिले तो अवश्य, परन्तु दुर्भाग्य यह कि वे काम को भस्म कर मुझे भी त्याग कर चले गये हैं। इस कारण मैं गुरु के वचनोंसे बद्ध हो बड़ी लज्जित हुई और पिता के घर से चलकर यहाँ तप करने चली आई हूँ। मैंने अपने मन, वचन और कर्म से शङ्कर को ही पति भाव से वरण किया है, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। यद्यपि मैं जानती हूँ कि वस्तु दुर्लभ है, उसका मिलना कठिन है, तथापि उत्सुकता वश में अपने तप में लीन हूँ। तब पार्वती के इस प्रकार सुनिश्चित वचनों को सुनकर जटिल ब्रह्मचारी रुद्रने हँसते हुए कहा-हिमालय की पुत्री ! तुमने यह कैसी बुद्धि स्वीकार की है। क्या यह उचित है कि देवताओं को त्याग कर तुम शिवके लिए इतना कठोर तप करो। मैं उस रुद्र को जानता हूँ। सुनो, मैं तुम से कहता हूँ कि उस रुद्र के तो एक बृषभवाहन है और वह सर्वथा ही विकृतात्मा तथा जटाधारी है वह सर्वदा अकेलाही रहने वाला औरअत्यन्तही विरागीहै। अतः तुम्हें उस शिवसे मन लगानाकदापि उचित नहीं है। कहाँ तुम और कहाँ सब रूपादिगुणोंसे विरुद्ध वह हर ? मुझे तो तुम्हारा यह कर्म अच्छा नहीं जंचता। आगे जैसी तुम्हारीइच्छाहो वैसा करो। ऐसा कह ब्रह्मचारी ने फिर पार्वती की परीक्षाली और उनके आगे अनेक प्रकार से शिव निन्दा की। विप्र के उस असह्य बाक्यों को सुनकर देवी पार्वती अत्यन्त ही क्रुद्ध होगई और शिव-निन्दक उस ब्रह्म-

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

चारी से कहने लगीं—मैंने तो यह जाना था कि तुम कोई धन्य पुरुष होगे। किन्तु अब मैंने सब जान लिया। परन्तु तुम इस समय वध के योग्य नहीं हो। क्योंकि ब्रह्मचारी के वेश में हो। अन्यथा तुम धूर्त की और शिवनिन्दक की तो और ही गति करनी चाहिए वहिर्मुख! तू शिवजी को नहीं जानता। मुझे पश्चाताप है कि जो मैंने तेरी पूजा की,जो मनुष्य तत्वको न जानकर शिवजी की निन्दा करता है उसका जन्म संचित पुण्य नष्ट होजाता है दुष्ट! तूने जो यह कहा कि मैं शङ्कर को जानता हूं तो तू परम प्रभु शिवजी को निश्चय ही नहीं जानता। माया से अनेक रूपधारी शङ्कर जैसे कैसे भी हों किन्तु वे मनोरथोंको देने वाले विकार रहित और सज्जनों के प्रिय हैं। यह कहकर देवी पार्वतीने शिव तत्व का वर्णन अविनाशी शिवजी की प्रशंसा की। तब देवी की उस बाणी को सुनकर ब्रह्मचारी ब्राह्मण ज्योंही उसका उत्तर देने को तैयार हुआ कि त्योंही श्रीपार्वती ने अपनी सखी विजय से कहा-कि सखि! यह ब्राह्मणधाम फिर कुछ कहना चाहता है अतः इसको मना करो, अन्यथा यह अवश्यही शिवजीकी निन्दा करेगा। शिव-निन्दकको ही पाप नहीं लगता, किन्तु उसके सुनने वाले को भी पाप का भागी होना पड़ता है। शिव के किंकरों को चाहिये कि जो शिवजी की निन्दा करे उसे मार डालें। यदि ब्राह्मण हो तो छोड़ दे अथवा स्वयं ही उस स्थान से चला जावे। यह दुष्ट फिर शिवजी की निन्दा करेगा और ब्राह्मण है, इसलिए मारने के योग्य नहीं है, अतः यह सर्वथा ही त्यागनीय तथा न देखने के योग्य है मैं इस स्थान को छोड़कर शीघ्र ही अन्यत्र चली जाती हूँ जिससे कि फिर इस मूर्ख के साथ संभाषण न हो। हे मुनीश्वर पार्वती ने यह कह कर ज्योंही चलने को अपना चरण उठाया त्योंहीसाक्षात् शिवजी ने उनका हाथ पकड़ लिया। फिर पार्वती जिस रूप में उनका ध्यान करती थीं जैसा ही दिव्य स्वरूप धारण कर शिवजी ने पार्वतीको दर्शन दिया और नतमुख वाली पार्वती से कहा—हे शिवे! अनघे! तुम कहाँ जाती हो। मैं तुमको नहीं त्याग सकता हूँ यह तो मैंने तुम्हारी

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

दृढ़ भक्ति की परीक्षा ली है और इसी लिये ब्रह्मचारी वेष बनाकर तुम्हारे पास आया हूँ। जो इच्छा हो वर माँगो मैं तेरे से प्रसन्न हूँ प्रिये ? अब तुम लज्जा त्याग दो। क्योंकि तुम मेरी सनातन पत्नी हो। आओ मैं तुम्हारे साथ शीघ्र ही कैलाश पर चलता हूँ। जब देवेशने इस प्रकार कहा तो पार्वतीजी अति मुदित हुई और कठिन तप का सारा दुःख भूल गई। फिर शिवजी के इस दिव्य रूप को देख कर लज्जा से नीचा मुख करके प्रेम पूर्वक प्रभु से बोली-देवेश ! यदि आप प्रसन्न हैं और मुझ पर कृपालु हैं तो मेरे पति होइये। फिरतो शिवजी ने सविधि पार्वती का पाणिग्रहण किया और कैलाश की यात्रा की।

* चौंतीसवाँ अध्याय *

(सुनट-नर्तक अवतार)

नन्दीश्वर बोले—सनत्कुमारजी हिमाचल की पुत्री देवी पार्वती बन में जाकर शिवजी को पाने के लिये पवित्र तप करने लगी तो उनके सुन्दर तप से प्रसन्न हो शिवजी उनके भाव की परीक्षा करने और वर देने के लिए इनके पास उस बन में गये। वहाँ उन्होंने पार्वती को अपना स्वरूप दिखकर वर माँगने के लिये कहा। तब उनके ऐसे कहने और उनके उत्तम रूपको देखकर वे हर्षित हो प्रणाम कर बोलीं देवेश ! आप प्रसन्न हैं और मुझे वर देना चाहते हो तो हे ईशान ! आप मुझ पर कृपा कर मेरे पति होइये प्रभो ! आपकी आज्ञा से अब मैं अपने पिता के घर जाती हूँ। आप भी मेरे पिता के पास जाइये और अपने शुभ यश को कहकर उनसे मुझे माँगिये जिससे मेरे पिता का गृहस्थ धर्म सुफल होवे और जब वह स्वीकार कर लेवें तो देवों का कार्य सिद्धी के लिये यथा विधि मेरे साथ विवाह कर लीजियेगा इस प्रकार आप मेरा मनोरथ पूर्ण कीजिये तब शङ्करजी ने तथास्तु कहकर कैलाशकी यात्रा की। पार्वती भी अपने पिता के घर गई तब पार्वती का आगमन सुन मैंना और परिवार सहित हिमाचल अपनी पुत्री को पहले ही देखने गया स्वागत पूर्वक घर लाये। महोत्सव किया मैंना और

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

हिमालय ने ब्राह्मण आदिकों को बहुत सा धन दिया। वेदध्वनि पूर्वक मङ्गलाचार कराया। जब एक दिन मैंना और हिमाचल गङ्गा-स्नान को गये थे कि इसी अवसर में सुन्दर नट-नर्तक का वेश धारण कर शिवजी मैंना के पास गये जिनके बायें हाथ में लिंग और दाहिने हाथ में डमरू विराजमान था तथा जो लाल वस्त्र पहने और पीठ पर गुदड़ी डालेथे। तब ऐसे नट का रूप धारण कर शिवजी बड़े आनन्दके साथ मैंनाका के आंगन में जाकर अनेकों प्रकार के नृत्य और सुमनोहर गान करने लगे। वे अपनी सींग और ठमरू को बड़ा ध्वनिके साथ बजाते और अनेक प्रकार की मनोहर लीलाओं को करतेथे जिन्हें देखने के लिए सारे नगर के आवलावृद्ध नर नारी सहसा वहां आगये। सबको शिवजी ने अपने मनोहर नृत्य और गान से वश में कर लिया। मैंना प्रसन्नहो शीघ्र ही स्वर्ण के पात्र में रत्नों को भर कर स्वयं ही देने चली। परन्तु शिवजी ने उन रत्नों को कदापि स्वीकार न किया और भिक्षा में पार्वती को माँगा तथा फिर नाचने और गाने लगे। तब उसके इन वचनों को सुन मैंना क्रोधित हो उसे अपने वचनों से ताड़ितकर घरसे निकाने लगी। इसी समय हिमाचल भी गङ्गा से लौट आये और आँगन में उस भिक्षुक को देखा तथा मैंना से सब वृतान्त सुन वे भी कुपित होगये अनुचरों को आज्ञा दी कि इस भिक्षुक को बाहर निकाल दो। परन्तु कई प्रयत्न करके भी कोई उसे बाहर न निकाल सका, क्योंकि वह भिक्षुक अपनी अनेक लीलाओं में चतुर और अनन्त प्रभाव वाला था। वह तत्क्षण ही गिरराज को पहले विष्णु रूप में फिर सूर्य रूप में पार्वती के साथ हँसते हुए अपने सुन्दरतेज में दिखाई पड़ा और उन दोनों से भिक्षा रूप में पार्वती को मांगा तथा और कुछ ग्रहण न किया। पश्चात गुप्त हो पार्वती की आज्ञा से अपने धाम को चले गये। यह आश्चर्य देख मैंना सहितगिरिराज को सुन्दर ज्ञान पैदाहुआ और वे पश्चाताप करने लगे। उन्होंने कहा-हमें अपनी सुन्दर कन्या तप-स्विनी पार्वती को उन्हें दे देना चाहिये था। इस प्रकार बिचार करते हुए उन दोनों की शिव में पराभक्ति हो गई प्रेम पूर्वक पार्वतीका विवाह किया।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* पैंतीसवां अध्याय *

(साधु वेषधारी शिवजी का द्विज अवतार वर्णन)

नन्दीश्वर बोले-सनत्कुमारजी जब मैंना और हिमाचल की शिवजी में परम भक्ति स्थापित हो गई तो उसे जान कर देवताओं को बड़ी चिन्ता हुई। वे परस्पर यह परामर्श करने लगे कि यदि गिरिराज अपनी एकाङ्ग भक्ति से शिवजी को अपनी पुत्री दे देगा तो निश्चय ही शिव के निर्वाण पदको शीघ्र ही प्राप्त हो जायगा और यदि कहीं यह अनन्त रत्नों का आधार शैल मुक्त हो गया फिर पृथ्वी रत्न गर्भा कैसे कहलायेगी तब तो इसका यह नाम ही व्यर्थ हो जायगा। फिर यह पर्वत अपने स्थावर रूप को त्याग दिव्यरूप धारण कर लेगा और शिवजी को कन्या देकर शिवलोक को प्राप्त कर लेगा। इस प्रकार की मन्त्रणा कर देवता गुरु बृहस्पति के घर गये और उनसे कहा कि आप महादेवजी की निंदा करने के लिये हिमालय के घर जाइये जिसमें में हिमालय शिव—भक्ति से विरत हो जाये और वह श्रद्धा से पार्वती को शिवजी के लिये न देकर यहीं पृथ्वी पर रहे। तब देवताओं के उस वचन को सुनकर बृहस्पतिजी विचार कर उनसे बोले—कि चाहे तुम सभी लोग या तुममें से कोई एक देवता इस कार्य के लिये शैल के पास जावे और अपना मनोरथ पूर्ण करे, परन्तु मैं यह कार्य करने में असमर्थ हूँ। अथवा ब्रह्माजी से कहकर अपना कार्य कराओ तब सब बृतान्त ब्रह्माजी से जाकर कहा। ब्रह्माजी ने कहा मैं दुःख देने वाली और कलहकारिणी शिव की निन्दा नहीं करूंगा। तुम सब स्वयं ही कैलाश पर जाकर शङ्कर को प्रसन्न कर उन्हीं को हिमालय के घर भेजो। भगवान शङ्कर ही हिमालय पर जाकर वहाँ अपनी निन्दा करें। क्योंकि परनिन्दा विनाश है और यदि कोई स्वयं ही अपनी निन्दा करता है तो उससे उसे यश होता है। यह सुन सब देवता कैलाश पर शिवजी के पास गये और प्रणाम कर उनसे सब बृतान्त कहा। शिवजी ने हंसकर स्वीकार किया और देवताओं को आश्वासन दे विदा किया। पश्चात् भक्तवत्सल

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

मायेश भगवान् शङ्कर ने हिमालय के पास जाने का विचार किया। दण्ड तथा छत्र धारण कर दिव्य वस्त्र पहन उज्वल तिलक लगाया और हाथ में स्फटिक की माला और गले में शालिग्राम धारण किया। फिर भक्तिपूर्वक विष्णु-नाम जपते हुए साधु का वेष धारण कर ब्राह्मणरूप में हिमालय के घर गये। उन्हें देख हिमालय सिंहासन छोड़ उठ खड़ा हुआ सविधि भूमि में पड़कर साष्टाङ्ग दण्डवत् किया फिर शैल ने उस ब्राह्मण का परिचय पूछा तो उस साधु ने कहा-में एक सर्वज्ञ परोपकारी ब्राह्मण हूं, जो गुरु के बल से सब कुछ जानता हुआ साधु वेष में सर्वत्र द्विचरण करता हूँ। मैंने अपने योग बल से यह ज्ञात किया है कि तुम अपनी लक्ष्मी स्वरूप कन्या को शिवजी के लिये दिया चाहते हो सत्य है? परन्तु तुमको शिवजी का कुल और शील नहीं ज्ञात है। हे नारायण कुलोत्पन्न शैल! तुम्हारी यह बुद्धि कदापि मङ्गलदायक नहीं है। पहले तो यह देखो कि उसके एक भी वान्धव नहीं हैं। फिर तुम अपने भाई और मैंना से पूछो। पार्वती से नहीं रोगी को औषधि अच्छी नहीं लगती। उसे तो सर्वदा कुपथ्य ही भाता है। पार्वती के दानरूप कर्म में यह उपयुक्त पात्र नहीं है। इसका तो नाम सुनते ही लोग तुम्हारी हंसी उड़ावेंगे। क्योंकि यह शिव तो सर्व आश्रय हीन, एकाकी, विरूप निर्गुण अव्यय, श्मशानवासी, विकट सर्पधारी और दिगम्बर है। वह तो सर्वदा शरीर में धूलि लपेटे सब आश्रमों से भ्रष्ट हुआ, अविज्ञात गति और शिर पर बड़े-बड़े सर्प लपेटे रहता है। ऐसा कहकर लीलाविशारद शिवजी चले गये। मैंना सहित हिमालय की बुद्धि विपरीति हो गई। अब वे विचारने लगे कि हम क्या करें। पश्चात् भगवान् शङ्कर ने भक्तों को हर्ष दायक महान लीला करके देवताओं का कार्य सिद्धि किया।

* छत्तीसवां अध्याय *

(अश्वत्थामा का शिव अवतार वर्णन)

नन्दीश्वर बोले—हे सर्वज्ञ सनत्कुमार! देवर्षि बृहस्पति के पुत्र भरद्वाजजी और भरद्वाजजी से अयोनिज द्रोण नामक पुत्र उत्पन्न हुआजो

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

धनुष धारियों में श्रेष्ठ महाशूरवीर, महातेजस्वी और सर्व अस्त्रविशारद था, जिसे लोग धनुर्वेद और वेद में भी निष्णात कहते हैं। ये बलवान् द्रोण अपने बल से कौरवों के आचार्य हुए। फिर उनके मध्य में छः महारथियों में भी विख्यात हुए। इन द्रोणाचार्य ने कौरवों की सहायता के लिए शिवजी का उद्देशकर पुत्रार्थ बड़ा तप किया। भगवान् शङ्कर प्रसन्न हो द्रोणाचार्य के आगे आये उन्हें देख द्रोणाचार्य बड़ा प्रसन्न हुआ। फिर हाथ जोड़ नमस्कार कर प्रार्थना करने लगा। उनकी स्तुति की। इस पर अत्यन्त नम्रता से द्रोणाचार्य ने कहा—नाथ! अपने अंश से पैदा होने वाला सबसे अजेय और महाबली मुझको पुत्र दीजिये। शिवजी 'तथास्तु' कह अन्तर्धान होगये। द्रोणाचार्य ने घर आ प्रेमपूर्वक सब वृतान्त अपनी पत्नीसे कह सुनाया। फिर तो समय पाकर सबको संहार करने वाला शिवके अङ्ग द्रोण को एक बलवान पुत्र प्राप्त हुआ। उस पुत्र का नाम अश्वत्थामा विख्यात हुआ। वही महाबली अश्वत्थामा महाभारत के रण में पिता की आज्ञा से कौरवों का सहायक हुआ। फिर तो उसी महाबीर विद्वान् अश्वत्थामा का बल पाकर कौरव इतने अजेय हो गये कि सम्पूर्ण पाण्डव उन्हें (कौरवों को) जीतने में समर्थ न हुए और नष्ट प्रग्य हो गये। तब कृष्ण का उपदेश पाकर अर्जुन ने दारुण तप कर सब अस्त्रों को प्राप्त किया और उन्हें समर में जीता। शिवजी के अंश से उत्पन्न होने के कारण ही अश्वत्थामा इतना वीर हुआ कि उसने यत्नपूर्वक शिक्षित पाण्डवों के पुत्रों को मार डाला और कृष्णादि भी इसके बल को रोक न सके। परंतु जब पुत्र-शोक से व्याकुल अर्जुन रथ पर चढ़कर कृष्णजीके साथ चला तो उसे आता देख अश्वत्थामा भाग चला और अर्जुन पर अपना ब्रह्म शिर नामक अस्त्र छोड़ उसे मारा जिसके प्रचंड तेज से दिशायें व्याप्त हो गईं। तब प्राणों पर आपत्ति देख उसने श्रीकृष्ण से उसके बाणका उपाय पूछा तो श्रीकृष्णजी ने कहा, अश्वत्थामाका वह महादारुण अस्त्र है कि जिसके समान घातक कुछ नहीं है। अथ इसका एक ही उपाय है कि तुम अपने प्रभु शङ्कर का शीघ्र ही स्मरण करो जिन्होंने सब कार्य

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri-Siddhanta eGyaan Kosha

करने वाला तुम्हें भी अपना बड़ा अस्त्र दिया है। उसी शिव अस्त्रसे इस तीव्र अस्त्र के तेज को नाश करो। ऐसा कहकर श्रीकृष्णजी सहित अर्जुन शङ्कर का ध्यान करने लगे। अर्जुनने भी शिवजी क स्मरण कर जल का स्पर्श कर प्रणाम करके अपना शवास्त्र छोड़ा। यद्यपि ब्रह्मशिर अस्त्र निष्फल क्रियाबान न था तथापि शैवास्त्र के तेज से शान्त हो गया। तब अश्वत्थामा ने इस संसार को पाण्डवों से सर्वथा रहित कर देने के अभिप्राय से उस अस्त्र को उत्तरा के गर्भगत बालक पर उसकेनाश होने के लिये जन्म दिया। श्रीकृष्णजी समझ गये। उन्होंने अपनासु र्शन चक्र भेज उत्तरा के गर्भ की रक्षा की, शिवजी की आज्ञा से गर्भको कुछ आघात न पहुंचा। शैवराज श्रीकृष्ण ने सब पाण्डवों को ब्राह्मण-श्रेष्ठ अश्वत्थामा के चरणों में गिरवाया। अश्वत्थामा प्रसन्न हो कृष्ण सहित पाण्डवों को अनेकों वर देनेलगा। इस प्रकार महेश्वर प्रभुने द्रोणिरूपसे पृथ्वी पर अवतार लेकर परम लीला की।

* सैंतीसवाँ अध्याय *

(पाण्डवों को शिव-पूजन के लिये व्यासजी का उपदेश)

नन्दीश्वर बोले—जब श्रेष्ठ पाण्डवों को दुर्योधन ने जुए में हरा दिया तो वे अपनी साध्वी द्रोपदी को साथ ले द्वैत बन में जाकर सूर्य से प्राप्त स्थली पर अपना जीवन सुख पूर्वक व्यतीत करने लगे। तब दुर्योधन ने पाण्डवों को कष्ट देने के अभिप्राय से ऋषि पुङ्गम दुर्वासा को उनके स्थान पर भेजकर एक और ही कपट करवा दिया, जिसमें हजारों विद्यार्थियोंको साथ ले दुर्वासाने जाकर इच्छानुसार भोजन माँगा। पाण्डवों ने स्वीकार कर उन तपस्वियों को स्थान के लिये भेजा। पश्चात् अन्न के अभाव से दुःखी पाण्डव प्राण विसर्जन करने लगे। तब द्रोपदी ने जो श्रीकृष्ण का स्मरण किया तो कृष्ण तत्क्षण वहाँ उपस्थित हो गये और स्वयं शाक को खाकर उन सबको तृप्त कर दिया। दुर्वासा अपने शिष्यों को तृप्तहुआ जान चले गये। श्रीकृष्णजी की कृपा से पाण्डवों का यह संकट टल गया। श्रीकृष्णजी पाण्डवों को शिव आराधना बता द्वारका चले गये। पश्चात् पाण्डवों ने दुर्योधन के

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

गुणों की परीक्षा करने के लिये एक भील को भेजा। वह दुर्योधन के पास जा उसमें गुणोदय को जान पाण्डवों के पास आया। उनसे दुर्योधन का गुण सुन पांडव बड़े दुःखी हुए। युद्ध का विचार किया। परन्तु उपयुक्त समय न जानकर मौन रहे। पश्चात् जटा जूट विभूषित, रुद्राक्षधारी, भस्म लगाय व्यासजी 'ॐ नमः शिवाय' पंचाक्षरी मन्त्र जपते उनके पास आये। पाँडवों ने देखा तो व्यासजी शिव के प्रेम में मग्न, तेज—पुंज साक्षात् दूसरे धर्म के समान ही शरीर धारण किये थे, तब ऐसे व्यासजी को देख पाण्डवों ने खड़े हो उनकी अभ्यर्थना की ओर कुशासन पर बैठा विविध प्रकार से उनका पूजन किया। फिर स्तुति कर अपने को धन्य कहते हुए बड़ा हर्ष प्रकट किया। तथा पाँडवों ने व्यासजी से निवेदन कर उनने ऐसे उपदेश की याचना की। जिसमें उनका कष्ट शीघ्र ही दूर हो जावे। जब उन महामुनि व्यासजी ने प्रसन्न होकर कहा—पाँडव! तुम कष्ट के योग्य नहीं हो, क्योंकि तुमने सत्य का लोप नहीं किया है, अतः तुम धन्य और कृतकृत्य हो। सत्य पुरुषों का यह स्वभाव ही है कि वह प्राणों के चले जाने पर भी सद्धर्म को नहीं त्यागते। हमारे लिए तो तुम और कौरव दोनों ही समान हो, तो भी बुद्धिमानो का धर्मात्माओं में पक्षपात होता ही है। पहले तो इस अन्धे धृतराष्ट्र ने ही लोभ वश स्वयं धर्म का परित्याग किया और तुम्हारा राज्य अपहरण कर लिया। यद्यपि उसके लिये तो तुम और कौरव पुत्र ही थे। तथापि उसने अपने पुत्र दुर्योधन को अनर्थ से मना किया यदि वह ऐसा करता तो अनर्थ कदापि नहीं होता। इसके आगे जो हुआ वह तो हुआ ही और वह अन्यथा नहीं हो सकता। किन्तु यह दुष्ट है और तुम सब सत्यवादी हो। अतएव उनका तो अकल्याण ही होगा। क्योंकि जो बीज बोया जाता है, उसी का अंकुर निकलता है। इस कारण तुम लोग दुःख न करो। इसमें सन्देह नहीं कि तुम्हारा कल्याण होगा। इस प्रकार जब व्यासजी ने युधिष्ठरादि पाँडवों को प्रसन्न किया तो पाँडवों ने कहा—नाथ! यह

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

तो आपने सत्य ही कहा है। क्योंकि वे दुरात्मा तो हमको यहाँ बन में भी निरन्तर कष्ट ही पहुँचाया करते हैं। फिर भी हे विभो! मेरे अशुभ को नष्ट करो और शुभ दान दो। पहिले श्रीकृष्णजी ने भी यही कहा था कि तुम लोगों को शङ्करजी की आराधना करनी चाहिये जिसमें हमने प्रमाद किया। अतएव अब आप हमें उस मार्ग का उपदेश दीजिये। तब पाँडवों के इन बचनों को सुनकर व्यासजी बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने शिवजी के चरण कमलों को स्मरण कर कहा-धर्म बुद्धि पाण्डवो! श्रीकृष्ण जी का कहना सत्य था। तुम लोग बड़े प्रेम से शिवजी का सेवन करो। इससे तुम को अतुल सुख की प्राप्ति होगी। शिवजी की सेवा करने से ही सारे दुःख प्राप्त होते हैं। पश्चात उन पाँच पाँडवों में अर्जुन को योग्य जान व्यासजी ने शिवजी की आराधना के लिये उसे इन्द्र सम्बन्धी विद्या का उपदेश कर पार्थिव पूजन का विधान बताया। अर्जुन इन्द्रकील पर्वत के निकट गङ्गाजी के तट पर तप करने चले गये। पश्चात् व्यासजी सब पाँडवों श्रेष्ठ युधिष्ठर से बोले-हे युधिष्ठर! तुम सर्वदा धर्म में ही स्थित रहना। इससे निस्सन्देह तुम्हें सर्वश्रेष्ठ सिद्धि प्राप्ति होगी। ऐसा कह व्यासजी शिवजी के चरणों का ध्यान करते हुए अदृश्य हो गये।

* अड़तीसवाँ अध्याय *

(शिवजी का किरात अवतार)

नन्दीश्वर बोले—अब शिव-मन्त्र के अतुल तेज से अर्जुन प्रकाश मान हो गये। अर्जुन को ऐसा देख पांडवों को अपनी विजयमें सन्देह न रहा। उन्हें अपने में विपुल तेज दिखाई पड़ा। तब अर्जुन शिवजी के लीये तप करने चले तो द्रोपदी सहित पाँडवों ने बड़े दुःख से उन्हें विदा किया किन्तु उन्हें यह विश्वास था कि व्यास के उपदेशानुसार शिवजी की आराधना से हमारा कल्याण होगा। इस प्रकार अर्जुन को तप के लिये भेज पांडव भिन्न हो द्रोपदी सहित वहां रहने

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

लगे। परन्तु अर्जुन के वियोग से उन्हें कभी शान्ति न प्राप्त होती थी तब उन्हें दुःखी जान कृपा सिन्धु ऋषि श्रेष्ठ व्यासजी फिर उनके पास पहुँचे और पांडवों ने उनकी पूजा की और कुछ दिनों के लिये अपने पास रहने की उनसे प्रार्थना की। व्यासजी पांडवों के सुख के लिये वहाँ कुछ समय तक ठहर गये और उन्हें उपदेश की कथाओं से सन्तुष्ट करते रहे। एक दिन युधिष्ठिर ने व्यासजी से पूछा कि महाप्राज्ञ क्या ऐसा कष्ट कभी और किसी ने न पाया है या एक मैं ही ऐसा हत-भाँगी हूँ। मैं तो समझता हूँ कि इस प्रकार का मेरे जैसा दुःख किसी ने न पाया होगा यह सुनकर व्यास जी बोले—नहीं, औरों ने भी इससे कठिन दुःख पाये हैं। निषध देश का स्वामी नल तो आप से भी अधिक दुःख पा चुका है। राजा हरिश्चन्द्र ने भी बड़ा दुःख पाया है।

श्रीरामचन्द्रजी क भी उसी प्रकार का दुःख हुआ है। वे तो दुःखों की राशि ही थे ऐसा कौन है जो शरीर पाकर दुःखी न हो। पहले तो माता के गर्भ में जन्म ही दुःख का कारण है। बल्यावस्था भी कष्ट-कारक ही है। युवावस्था में दुःख रूप कामनायें सताती ही रहती हैं। फिर वृद्धावस्था में मरण रूप है तो महा दुःख प्राप्त होता ही है जिससे मूर्ख मनुष्य बड़ा कष्ट और नरक तक भोगते हैं। अतएव यह सब मिथ्या है। तुम सत्यका आचरण करो। शिवजी सत्य से ही प्रसन्न होते हैं अतः मनुष्य को वही करना चाहिये। इधर तो यह अवस्था थी उधर अर्जुन मार्ग के अनेकों कष्टों को पार करते हुए इन्द्रकील पर्वत पर गङ्गाजी के तटपर पहुँचे। फिर जैसा व्यासजी ने उपदेश किया था उसके अनुसार उन्होंने अपने वेषादि बनाये। फिर इन्द्रियों को वश में कर पार्थिव बना शिवजी का ध्यान करने लगा। वह तीनों काल स्नान कर विविध प्रकार शिवोपासन करता। उस उपासना से अर्जुन के शिरसे तेज निकलने लगा जिसे देख कर जीवों को भय होने लगा कि यह तेजकब शान्त होगा यह कहने के लिये लोग इन्द्र के पास गये। अर्जुन के

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

कठिन तप का वृतान्त कहा। शचीपति बृद्धि ब्राह्मण का ब्रह्मचारी वेष बना अर्जुन की परीक्षा करने चले। तब उन्हें अपनी ओर आते देख अर्जुन ने उनकी पूजा की ओर पूछा कि इस समय कहाँ से आ रहे हैं? ब्राह्मण भेशीय इन्द्र ने वह न कह अर्जुन से यह कहा कि तुम इतनी छोटी अवस्था में तप क्यों कर रहे हो? यह तुम्हारा तप सर्वदा मुक्ति के लिये है या जय के लिये। अर्जुन ने अपना सब मन्तव्य कहा वह सुन ब्राह्मण ने कहा—तुम्हारा यह तप क्षात्र धर्म से युक्ति सङ्गत नहीं हैं। क्योंकि यह तप तो मुक्ति दाता है और इन्द्र मोक्ष का नहीं सुख का दाता है। तुमको यह तप करना योग्य नहीं है। यह सुन अर्जुन ने क्रुद्ध हो इन्द्र से कहा—आप ऐसा क्यों कहते हैं? मैं न तो राज्य के लिये, न मुक्ति के लिए किंतु व्यासजी के बचनों के लिये तप कर रहा हूं। हे ब्रह्मचारी जी! आप कृपा कर यहाँ से चले जाइये आप मुझे पतित करना चाहते हैं। आप ब्रह्मचारी के यहां आने की क्या आवश्यकता थी? इस पर ब्रह्मचारी इन्द्र ने अर्जुन को अपना वास्तविकरूप दिखाया। इन्द्र लज्जित हो गए। फिर अर्जुन को आश्वासन दे इन्द्रने कहा-वर माँगो! अर्जुन ने कहा-शत्रुओं से विजय दीजिये। उस पर इन्द्र ने दुर्योधन सहित भीष्म द्रोण और कर्णादि वीरों को दुर्जय कह द्रोण-पुत्र अश्वत्थामा को शिवजी का अंश बतलाते हुए अपनी असमर्थता व्यक्ति की और कहा इसके लिए शिवजी समर्थ हैं। तुम एक मात्र शिवजी की आराधना करोपार्थिव विधान से अनेक उपचारों युक्त सर्वता भाव से शिवजी की सेवा करो। तुमको अचल सिद्धि प्राप्त होगी। अर्जुन से ऐसा कह इन्द्र उनकी रक्षा के लिए वहाँ अपने कुछ अनुचरोंको नियुक्त कर शिवजी के चरणों का ध्यान करते हुए अपने भवन को चले गये। अर्जुन संग्राम से विजय पाने के लिये वहाँ रह उसी विधि से शिवजी के प्रसन्नार्थ तप करने लगे।

—(*)—

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* उन्तालीसवाँ अध्याय *

(किरात अवतार)

नन्दीश्वर बोले—अर्जुन ने व्यास जी की बताई हुई विधि से शिवार्चन किया। फिर एक पाँव के तलवे से पृथ्वी पर मुनि के समान खड़े हो एक मात्र दृष्टि से सूर्य की ओर देखते हुये मन्त्र जपने लगे। अबाध गति से सर्वोत्तम पंचाक्षरी मन्त्र जपा। फिर तो अर्जुन का तप तेज इतना प्रकाशित हो गया कि उससे देवता भी विस्मीत हो गए। इसी समय दुष्ट दुर्योधन का भेजा हुआ मूक नामक दैत्य शूकर का भेष धारण कर वहाँ आया जिसे कपटी दुर्योधन ने अर्जुनके पास भेजा था। वह अपने वेग से पर्वतो को तोड़ता अनेक वृक्षों को उखाड़ता हुआ तथा अनेक प्रकार के शब्द करता हुआ बड़े वेग से चला। उसे देख शिवजी के चरणों में मन लगाये। अर्जुन विचार करने लगा-कि यह क्रूर कर्म करने वाला कौन है और कहाँ से आता है, ? कहीं यह दुर्योधनका हितकारी सखा तो नहीं है। जिसे देखने पर मन व्याकुल हो वही शत्रु है। आचरण ही कुल को कहता है। शरीर भोजन को कहता है। वचन शास्त्र कहता है तथा नेत्र स्नेह को कहते हैं। इस प्रकार के और भी मन ही मन कई विचार निश्चय कर अर्जुन ने वही बैठे-बैठे इस पर बाण चला दिया। उसी समय अर्जुन की रक्षा और उसकी भक्तिकी परीक्षा करने के लिये भक्तवत्सल शिवजी अपने गणों सहित वहाँ आ पहुंचे। वह कच्छ बाँधे हुये थे तथा शिवकी ध्वजा वाले उनके शरीर में श्वेत रेखा पड़ी हुई थी और वे स्वयं धनुष बाण धारण किए, पीठ पर बाणों से तरकस बाँधे, गणों सहित भीलों के राजा बने थे। ऐसे स्वरूप में वे भीलो-सा शब्द करते हुये चले और शूकर भी शब्द कर रहा था जिसका शब्द दिशाओं में फैल गया था। जब अर्जुनने अपने धनुष पर फिर बाण चढ़ाया तो उसी समय उस शूकर का पीछा करते हुये शिवजी भी वहाँ आ पहुँचे और उन दोनों के बीच में वह शूकर अद्भुत

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

पर्वताकार दिखाई पड़ा। अर्जुन और शिवजी ने साथ ही उसपर बाण छोड़ा। शिवजी का बाण शूकर की पूंछ में और अर्जुन का बाण उसके मुख में लगा उसके लगने से शूकर मूर्छित हो पृथ्वीपर गिर पड़ा। बाण उसके मुख से पार कर पृथ्वी में समा गया और शूकर मर गया। देवताओंने हर्ष-ध्वनिकी और पुष्प बरसाये। शिवजी सन्तुष्ट हुये। अर्जुन को भी सुख प्राप्त हुआ। मरते समय उस दैत्य ने और भी अद्भुतरूप दिखाया जिसे देख अर्जुनने कहा-अहो यह तो शूकर का रूप धारणकर मुझे मारने ही आया था यह तो कहो शिवजी ने मेरी रक्षा कैसे की? फिर 'शिवाशिव' जपते हुए अर्जुन ने वहाँ स्थित हो शिवजी की बड़ी स्तुति की और बारम्बार प्रणाम किया।

* चालीसवां अध्याय *

(किरात अर्जुन विवाद)

नन्दीश्वर बोले—हे सर्वज्ञ सनत्कुमार! इसी समय शिवजी ने अपने सेवक को भेज मृत शूकर के पाससे अपना बाण मंगवाया। उधर से अर्जुन भी अपना बाण लेने आये। उसमें उन दोनों का विवाद हो गया। अर्जुन ने गण को ताड़न कर अपना बाण ले लिया। गण ने कहा यह दोनों बाण हमारे हैं। इनको छोड़ दो। अर्जुन ने शिवजी को स्मरण कर उनकी स्तुति की। गण ने कहा तू झूंठा तपस्वी है। बाण मेरा है। यदि तेरा है तो उसका फल दिखा, मैं पहचान कर लूं। अर्जुन ने कहा—बाण के फल पर मेरा नाम अङ्कित है। तुझे क्या दिखाऊँ। जब तेरा स्वामी आवेगा तब उसे ही दिखलाऊँगा। तेरे साथ मेरा युद्ध शोभा नहीं देता। तेरे स्वामी से युद्ध करूँगा। मेरा बल देखना है तो अपने स्वामी के पास जा और जो इच्छा हो वह कर। अर्जुन के ऐसा कहने पर वह भील वाहिनीपति किरात रूप शिव के पास गया। अर्जुन का सब कहा हुआ बचन कहा। यह सुन किरातेश्वर प्रसन्न हो शीघ्र ही अपनी सेना सहित वहाँ आ गये। अर्जुन भी

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

किरात की सेना देख धनुष वाण ले उनके सामने पहुँचे। तब अर्जुन को अपने समक्ष आया देख किरातेश्वर ने अनुचर द्वारा अर्जुन से यह कहलाया कि, तपस्विन ! सेना को देखो और वाण देकर चले जाओ। थोड़े से कार्य के लिए क्यों मरना चाहतेहो ? तेरे भाइयों को औरविशेष-कर तेरी स्त्री को दुःख होगा। ऐसा कहते हुए अर्जुन के रक्षक और उनकी दृढ़ता के परीक्षक परमेश्वर शुभ उनके निकट आ गये और विस्तार पूर्वक सब वृतान्त वर्णन किया। अर्जुन ने उस गण से भिल्ल राज से कहलाया कि उसका परिणाम विपरीत होगा। यदि मैं अपने वाण दे दूंगा तो निश्चय ही कुल कलंकी कहलाऊँगा। मेरे भाई भले ही दुःखी हो जावें, पर भी मैं युद्ध अवश्य ही करूंगा शृंगाल से सिंह भयभीत हुआ नहीं सुना। वनचर से राजा नहीं डरता। जब अर्जुन ने ऐसा कहा तो वह भील अपने स्वामी के पास जाकर फिर सब वृतान्त कहने लगा। यह सुन किरात नामक शिव अर्जुन के अत्यन्त ही निकट आ गये।

* इकतालीसवां अध्याय *

(किरातेश्वर महादेव की कथा)

नन्दीश्वर बोले—उनको आया देख अर्जुन ने शिवजी का स्मरण कर दारुण युद्ध आरम्भ कर दिया। गणों सहित उस भीलराज ने अपने तीव्र वाणों से अर्जुन को बड़ी पीड़ा दी। अर्जुन अपने स्वामी का स्मरण करने लगे। फिर उनके वाणों को काटते हुए शिवजी पर भी अर्जुन ने अनेकों वाण चलाये जिसे शिवजी ने सहन किया। अर्जुन की भयङ्कर मार से भीलराज के गण भयभीत हो भागने लगे। पराक्रमी अर्जुन अपने तीव्र वाण चला शङ्कर से युद्ध करने लगे। परन्तु शङ्करजी को तो अर्जन पर दया ही आरही थी। इससे वे और भी उनके निकट चले गये। परन्तु अर्जुन उन पर भयङ्कर प्रहार ही करता रहा परन्तु

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

शिवजी पर उसके बाणों का कोई प्रभाव न पड़ा। यह देख भक्तवत्सल लीलाधारी शङ्करजी हँसने लगे। फिर तो भक्त के वश उन्होंने अर्जुन को अपना अद्भुत सुन्दर रूप दिखाया। अर्जुन को आश्चर्य हुआ। उन्हें अपने पर बड़ी लज्जा आई। उन्होंने कहा, यह तो मेरे प्रभु साक्षात् शङ्करजी हैं। हा, इन त्रिलोकीनाथ से मैंने युद्ध क्यों किया? यह जो न कर डाले। प्रभु ने अपना रूप छिपाकर मुझसे युद्ध किया। अर्जुन अपनी बुद्धि में ऐसा विचार, हाथ जोड़े और शिर झुकाकर शङ्कर जी को प्रणाम करने लगे। फिर खेद-खिन्न हो बोले—हे देवाधिदेव शङ्कर! हे करुणा के सागर सर्वेश! मेरे अपराध को क्षमा कीजिये। हे प्रभो! यह आपने क्या किया! आपने अपना वेष छिपाकर मुझे क्यों छला है? आप जैसे स्वामी से युद्ध करने वाला मुझको धिक्कार है।' इस प्रकार का पश्चाताप करते हुए अर्जुन महाप्रभु शङ्कर के चरणों में गिर पड़ा। तब अर्जुन को आश्वासन देते हुए शङ्करजी बोले—"हे पार्थ! तू खेद मत कर। तू मेरा भक्त है। यह तो मैंने तेरी परीक्षा ली थी। तू शोक त्याग दे।" ऐसा कहते हुए शङ्करजी ने अर्जुन को अपने हाथों से उठाकर अपने गणों से कह-समझाकर उनकी लज्जा छुड़ाई। फिर वीरोंमें माननीय अर्जुनको प्रसन्न करते हुए भक्तवत्सल एवं कल्याणकारी शङ्करजी बोले—"अर्जुन! आज मैं तुझ पर इतना प्रसन्न हूँ कि तेरे इन प्रहारों को भी मैं अपनी पूजाही मानता हूं। क्योंकि तुमने अपनी इच्छा से यह अपराध नहीं कियाहै। इसमें तो मेरी ही प्रेरणा थी, अतः जो इच्छा हो वर माँग!" अर्जुन ने कहा, प्रभो! मैं आपकी कीर्ति का वर्णन क्या कर सकता हूँ? किन्तु मैं इतना ही जानता हूं कि आप बड़े ही कृपालु हैं ऐसा कह अर्जुन भक्ति पूर्वक भगवान शङ्कर की यह स्तुति करने लगा—देवाधि देव, कलाशवासी, सदाशिव! आपको नमस्कार है। हाथ में डमरू तथा कपालधारी दशभुजा वाले परमात्मान! आपको नमस्कार है। मुण्ड मालाधारी! आपको नमस्कार है। हे वाघम्बर ओढ़े हुए हस्ति चर्म

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

धारी अङ्गों में सर्पधारी और शिर पर गङ्गाजी को धारण करने वाले आपको नमस्कार है आपके गुणों की संख्या नहीं है। आपके गुणों को वेद भी नहीं गिन सकते। फिर मुझ मूर्ख की तो बुद्धि ही क्या है जो आपके गुण वर्णन कर सकूं महेशान! शङ्कर! मुझ पर कृपा करके शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने का वरदान दीजिये। ऐसा कह अर्जुन हाथ जोड़ शिर झुका शङ्करजी को नमस्कार कर बैठ गया। शङ्कर ने अपने भक्त पर प्रसन्न हो पाशुपत अस्त्र प्रदान किये और कहा कि इस अस्त्र से तुम्हारी विजय होगी। इसके अतिरिक्त मैंश्रीकृष्ण से भी तुम्हारी सहायता करने के लिये कह दूंगा ऐसा कह शँकरजी अर्जुन के शिर पर हाथ फेरते हुए अर्जुन से नमस्कृत हो गये। इस प्रकार शङ्करजी से पाशुपत प्राप्त कर अर्जुन अपने आश्रम को गया और अपने भाइयों सहित द्रौपदी से मिलकर सुख को प्राप्त हुआ।

* व्यालीसवां अध्याय *

(द्वादस ज्योतिर्लिङ्ग)

नन्दीश्वर बोले-मुनि श्रेष्ट! सौराष्ट्र में सोमनाथ, श्रीशैल में मल्लिकार्जुन, उज्जयिनी में महाकालेश्वर, ओंकार में अपरेश्वर, हिमालय पर्वत पर केदार डाकिनी में भीमशङ्कर, काशी में विश्वनाथ गौमती तट पर अम्बकेश्वर चिता भूमि में वैद्यनाथ दारुक वन में नागेश, सेतुबन्ध में रामेश्वर तथा शिवालय में घुश्मेश्वर से बारह अवतार हैं। जो मनुष्य इनके दर्शन और स्पर्श करता है उसे ये परम आनन्द दायक हैं। उनमें प्रथम सोमनाथ चन्द्रमा के दुःख का नाश करने वाले हैं कि जिनका पूजन करने से त्रय तथा कुष्ठादि रोगों का नाश होता है। शिवजी के इन आत्मस्वरूप सोमनाथ महालिंग का जो दर्शन करता है उसके सब पाप छूट जाते हैं तथा उसे भुक्ति और मुक्ति प्राप्त होती है, इसी प्रकार मल्लिकार्जुन का जो दर्शन करता है उसे सब मनोवाँछित फल प्राप्त होते हैं। शिवजी का यह दूसरा लिंग भी दर्शन करने से बड़ा

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

सुखदायक और निश्चय ही मुक्तिदायक है तीसरा उज्जयिनी में महाकाल नामक लिंग का दर्शन करने से सब कामनायें पूर्ण होती हैं तथा अन्त में उत्तम गति प्राप्ति होती है। चौथा ओंकार लिंग भक्तों को इच्छित फल देने वाला है। पांचवाँ केदारेश नामक ज्योतिर्लिंग स्वरूप जो केदार में स्थित है यह नर-नारायण नामक भगवान का अवतार है। जो इसका दर्शन और पूजन करता है उसको ये अभीष्ट फल प्रदान करते हैं। शिवजी का छटवाँ अवतार भीमनामक असुर को मारने से 'भीमशङ्कर' ज्योतिर्लिंग हुआ जिसमें उस दैत्य को मार शिवजी ने कामरूप देश के राजा की रक्षा की थी-यही भक्तों के सब मनोरथों को पूर्ण करने वाला और इस खण्ड का स्वामी है। हे मुने! इसी प्रकार विश्वेश्वर नाम वाला सातवाँ अवतार काशी में हुआ जो समस्त ब्रह्माण्ड का स्वरूप तथा भुक्ति-मुक्तिदायक है इनकी पूजा आदि विष्णु आदि सब देवों ने की तथा ये कैलाशपति और भैरव रूप से वहाँ पर स्थिर हैं। ये जहाँ ज्योतिर्लिंग से स्थित अपने पुरी के स्वामी तथा मुक्तिदायक और स्वयं सिद्ध स्वरूप है। जो इन काशी विश्वनाथ को पूजते और उनके नाम को जपते हैं वे कर्म बन्धन से छूट मोक्ष के भागी होते हैं। इसी प्रकार शिवजी का त्यम्बक नामक ज्योतिर्लिंग आठवाँ अवतार गौमती के किनारे गौतम ऋषि की प्रार्थना और कामना से हुआ हैं। इस ज्योतिर्लिंग के दर्शन तथा स्पर्श से सब कामनायें पूर्ण होती हैं और पश्चात मुक्ति प्राप्त होती है। नवां वैद्यनाथ अवतार हुआ जिसमें अनेक लीलाधारीशङ्करजी रावण के निमित्ति प्रकट हुए। जब रावण शङ्करजी को लिये जारहाथा तब शङ्करजी वहाना करके वहीं ज्योतिर्लिङ्ग स्वरूप से चिता भूमि में स्थित हुए और त्रैलोक्य से उनका वैद्यनाथेश्वर नाम प्रसिद्ध हुआ। उनके दर्शन तथा भक्ति पूर्वक पूजन से भुक्ति मुक्ति प्राप्त होती है। वैद्यनाथेश्वर शङ्कर के इस माहात्म्य को तथा अनुशासन को जो पढ़ता या सुनाता है उसे वे भुक्ति-मुक्ति प्रदान करते हैं। दशवां नागेश्वर अवतार अयोध्या-पुरी में हुआ। शिवजी के इस लिंग का दर्शन और पूजन करने से महा-

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

पातकों का समूह नष्ट हो जाता है इस प्रकार शिवजी का ग्यारहवाँ अवतार रामेश्वर हुआ जिसने रामचन्द्रको प्रिय किया और जो रामचन्द्रजी द्वारा संस्थापित हुआ। इस ज्योतिर्लिंग ने रामचन्द्र से सन्तुष्ट होकर उन्हें जप का वरदान दिया और उनसे प्रार्थित तथा सेवित होकर शङ्करजी ज्योतिर्लिंग स्वरूप से सेतुबन्धु में स्थित हुए। पृथ्वी पर रामेश्वर की अद्भुत महिमा है। ये रामेश्वर भोग तथा मुक्ति के देने वाले और भक्तों की कामना को पूर्ण करने वाले हैं। जो मनुष्य उन रामेश्वर महादेव को श्रेष्ठ भक्तिपूर्वक गङ्गाजलसे स्नान कराता है वह जीवनमुक्त होता है। वह संसार में देव-दुर्लभ भोग भोगकर फिर परमज्ञानको प्राप्त कर कैवल्य मोक्ष प्राप्त करता है। इसी प्रकार शङ्करजी का घुश्मेश्वर नामक बारहवां अवतार हुआ जिसने घुश्मा को आनन्द दिया। दक्षिण दिशा में देवलोक के निकट सरोवर में घुश्मा के प्रिय करने वाले शङ्कर जी प्रकट हुए जिन्होंने सुदेह्य दैत्य से मारे हुए घुश्मा पुत्र को उसकी भक्ति से सन्तुष्ट होकर उसकी रक्षा की। फिर उससे प्रार्थित सर्व काम दायक घुश्मेश्व नामन शिवजी ज्योतिर्लिंग स्वरूप से उस सरोवर में स्थित हुए जिस लिंग के दर्शन-पूजन से यह लौकिक सुख प्राप्ति होती हैं। शिवजी की यह दिव्य बारह संख्या वाली ज्योतिर्लिंगावली मैंने वर्णन की। जो इस ज्योतिर्लिंग कथा को पढ़ता या सुनता है वह सब पापों से छूट भोग तथा मोक्ष को प्राप्त होता हैं यह सौ अवतारों की शतरुद्र नामक संहिता सब कामनाओं के फल को देने वाली है। जो उसे मन लगाकर पढ़ता या सुनता है उसके सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं अन्त में मोक्ष को प्राप्त होता है।

इति श्री शिवपुराण शतरुद्र संहिता सम्पूर्ण

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

श्री शिव महापुराण भाषा

(अथ कोटि रुद्र संहिता)

* पहला अध्याय *

(सदाशिव के बाहर ज्योतिर्लिंग एवं उपलिंगों का वर्णन)

मुनियों ने सूतजीसे कहा–कि प्रभु ! आपने लोक हितके लिये भगवान् शङ्कर की परम पवित्र अनेकों कथाएं सुनाई हैं । भगवान् शङ्करजी की कथारूप अमृत का पान करते-करते कौन पुरुष तृप्त हो सकता है ? अतः आप जगत के मङ्गल के लिये पृथ्वी भर के तीर्थ स्थानों से परम श्रेष्ट सदाशिव के लिङ्ग एवम् और भी प्रसिद्ध २ शिव लिङ्गों की कथाएं वर्णन कीजिए । यह सुन शिव-भक्त सूतजी बोले– ऋषियो ! आपने संसार के हित की कामना से ही बड़ा सुन्दर प्रश्न किया है । आपका शिव कथाओं में महान प्रेम है । और मैं आपको यथामति शिव कृपा से कुछ न कुछ सुनाता हूँ । भगवान् शङ्कर के लिंगों की गणना भला कौन कर सकता है । वे तो पृथ्वी पर क्या असंख्य ब्रह्माण्डों में फैले हुए हैं । अतः मैं मुख्य २ शिव लिंगों की कथाएं सुनाता हूँ आप लोग सुनिए ! सौराष्ट्र देश में सोमनाथ जी, श्री शैल में मल्लिकार्जुन, उज्जैन में महाकालेश्वर, ओंकारजी में परमेश्वर, हिमाचल के शिखर पर केदारजी, डाकिनी देशमें भीम-शङ्कर, काशी में विश्वनाथजी, गोमती नदी के तट पर श्री त्र्यम्बकेश्वरजी, सेतुबन्धु में रामेश्वरजी एवम् शिवालय में घुस्मेश्वरजी ये बारह ज्योलिंग कहे जाते हैं जो भी प्राणी प्रातःकाल उठकर इन बारहों का स्मरण पूजन आराधनादि करते हैं उनके पाप ताप सभी नष्ट हो जाते हैं वे अनेक मनोरथों को प्राप्त करके परम पद को पाते हैं ।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

इन ज्योतिर्लिंगों पर चढ़ाया हुआ नैवेद्य प्रसाद खाने में कोई दोष नहीं उनके प्रसाद ग्रहण से तो सभी प्रकार के पाप भस्म हो जाते हैं ! जो भी मनुष्य इन लिंगों में से किसी का भी निरन्तर पूजन किया करता है उसका पुनर्जन्म नहीं होता । बधिक, कसाई, शूद्र, नाच जाति पतित से भी पतित कोई भी हो ज्योतिर्लिंगों में से किसी भा लिङ्ग का दर्शन करले तो उसका ब्राह्मण के घर में जन्म होता है । फिर वह शुभ कर्म करके मोक्षपद पाता है । ऋषियो ! इन ज्योतिर्लिंगों की महिमा ब्रह्मा विष्णु आदि देवता भी नहीं बर्णन कर सकते । अब उनसे उत्पन्न हुये शिवलिङ्गों की कथा सुनिये ।

समुद्र एवं पृथ्वी के मिलाप वाले स्थान पर श्री सोमेश्वरजी का उप लिंग अन्नकेश नामका लिंग है मल्लिकाजु न से प्रगट हुआ उपलिंग रुदेश्वर नाम से प्रसिद्ध है वह भृगु कच्छ देश में सम्पूर्ण प्राणियों कोसुख देने वाला है नर्मदा नदी के तट पर महाकाल नामक शिवलिंग से प्रकट हुआ दुग्धेश नामक उपलिंग है और जो ओंकार से प्रकट हुआ कर्दमेश्वर नाम का उपलिंग है वह बिन्दु सरोवर में सब प्रकार के मनोरथ पूर्ण करने वाला प्रसिद्ध है केदारेश्वर से प्रकट हुआ भूतेश्वर नामक उप लिंग है वह यमुना के तट पर विद्यमान है भीमशङ्कर से प्रकट हुआ उपलिंगजो बलबुद्धि को बढ़ाता है उसका नाम भीमेश्वर है । वह पर्वत पर प्रसिद्ध है नागेश्वर शङ्कर का उपलिंग पापनाशक भूतेश्वर नाम से प्रसिद्ध है मल्लिका सरस्वती नदा के तट पर विख्यात है श्री रामेश्वरजी का उपलिंग गुप्तेश्वर नामक है । घुश्मेशर नामका उपलिंग व्याघ्रेश्वर नाम से है ये सब लिंग और उपलिंग पापों को भस्म करके भक्तों को अनेकों फल प्रदान करते हैं इनका पूजन एवं दर्शन करने से सब प्रकार के मनोरथ सिद्ध होते है ।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* दूसरा अध्याय *

(पूर्व दिशा के शिवलिङ्ग)

सूतजी बोले-ऋषियो ! पतितपावनी भागीरथी गङ्गाजी के तट पर मुक्तिदात्री काशीपुरी है। वहाँ भगवान शङ्कर का निबास है। इसी पुरी में कृतिका वासेश्वर नामक शिवलिंग है जो कि बालक बृद्ध सभी को अपने समान बनाकर मुक्ति देने वाला है इसी तरह और भी तिल भाँडेश्वर दशाश्वमेध आदि लिङ्ग हैं। कौशिकी नदी के किनारे अन्य दो लिङ्ग हैं जिनका नाम भूतेश्वर और नारीश्वर प्रसिद्ध हैं गाँडवी नदी के तट पर वटुकेश्वर लिंग है और फाल्गुनदी तट पर पूरेश्वर लिङ्ग है। उत्तर प्रदेश में केवल दर्शन मात्र से ही मनुष्यों के सभी मनोरथों को पूर्ण करने वाला सिद्धनाथेश्वर एवं दूतेश्वर दो लिङ्ग विद्यमान हैं। ऋषि दधिचि के युद्धस्थल पर शृङ्गेश्वर वैद्यनाथ तथा जप्पेश्वर लिंग हैं इसी तरह गोपेश्वर, रङ्गेश्वर, रामेश्वर, नागेश कामेश, वितलेश्वर, व्यासेश्वर, सुकेश, भाँडेश्वर, हँकारेश, सुरोचन, भूतेश्वर संगमेश आदि नाम वाले लिंग सभी तरह के पाप नाशक है। तृप्तका नदी के तट पर कुमारेश्वर, सिद्धेश्वर, सैनेश, रामेश्वर, कुम्भेश, नन्दीश्वर, पुञ्जेश नामक शिवलिंग हैं। प्रयाग में दस्वास्त्रमेध नामक तीर्थ पर धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदिके देने वाले ब्रह्मेश्वर नामक शिवलिंग हैं इसको ब्रह्माजी ने स्थापित किया था। इसी स्थान पर सम्पूर्ण दुख विनाशक सोमेश्वर, ब्रह्मतेजवर्द्धक भारद्वाजेश्वर संसार के सभी मनोरथों को पूर्ण करने वाले शूलटंकेश्वर एवं भक्तों की रक्षा करने वाले माधवेश्वर लिंग है अयोध्या में रघुवंशी राजाओं को सुख देने वाले नागेश लिंग हैं। तुरुषोत्तमपुरी में शुभ सिद्धदाता भुवनेश एवं सभी आनंद के देने वाले लोकेश महा शिवलिंग हैं। लोकहित के लिये स्थापित कामेश्वर, परम शुद्धि कर्त्ता गणेश शुक्रेश्वर एवं शुक्रसिद्धि आदि लिंग है। मनुष्य मात्र के सभी मनोरथों को पूर्ण

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

करने वाले एवं सभी पापों के नाशक बटेश्वर, कृपालेश एवं बक्रेश शिव लिंग हैं ये सभी सिन्धु नदी के किनारे पर स्थित हैं। धूत पापेश्वर, भीमेश्वर, सूर्येश्वर यह लिंग अन्श से परमेश्वर हैं। नन्दीश्वरजी तो संसार भर में ज्ञान देने वाले सर्व पूज्य प्रसिद्ध मानेजाते है एवं महापुराण रूप नागेश्वर शिवलिंग हैं। इसी प्रकार रामेश्वर विमलेश्वर कंटकेश्वर तथा समुद्र के किनारे धनुर्केश आदि लिंग महा प्रसिद्ध है। चन्द्रेस्वर लिंग चन्द्रमा के समान काँति देने वाले है सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाले विद्धेश्वरलिग है। विस्व में मशहूर बिस्वेस्वर लिंगहै। इसी कारण आपका नाम शरणेस्वर प्रसिद्ध है। अर्बुदाचल पर्वत पर कर्दमेश लिंग है एवं कोटीश तथा अचलेश नाम से ये लिंग लोक सुख कारक है। कौशिकी नदी के तट पर नागेस्वर एवं कल्याण पात्र अनन्तेस्वर महा शिव लिंग है। योगेस्वर वद्यनाथेस्वर कोटिश्वर सत्पेश्वर भद्रनामक सदाशिव हर चंगोश्वर संगमेंस्वर नाम वाले लिंग पूर्व दिशा में विद्यमान है।

* तीसरा अध्याय *

(अनुसुइया एवं अत्रि का तप)

सूतजी बोले—ऋषियो ! दक्षिण देश में ये लिंग विद्यमान है। पितामह ब्रह्माजी की नगरी में एक चित्रकूट नाम का पर्वतहै वहाँपर श्री ब्रह्माजी ने मत्त गयन्द नामक शिवलिंग की स्थापना की है। वह सब प्राणियों को सभी प्रकार की सम्पत्ति देने वाला है ! उससे पूर्व दिशा में मनुष्यों के मनोरथ पूर्ण करने वाला कोटीस नाम का शिवलिंग है और पापिनाशिनी गोदावरी के पश्चिम की ओर पशुपति नामक शिव लिग है वहाँ से दक्षिण की ओर लोक हितकारक सती श्री अनुसुइया जी को आनन्द देने वाला अत्रीश्वर लिंग हैं।

ऋषि बोले—सूतजी ! तेजो मय अत्रीशनाशक शिव लिंग की किस प्रकार उत्पत्ति हुई कृपा करके विस्तार पूर्वक सुनाइये। सूतजी बोले-

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

ऋषियो ! दक्षिण की ओर चित्रकूट पर्वत के समीप कामद नाम का महावन है। ब्रह्माजी के पुत्र अत्रि महर्षिने अपनी पत्नी अनुसूइयाजीके साथ यहाँ निवास करके बहुत समय तक तपस्या की। एक समय वर्षा होने पर भी उस वन में वर्षा न हुई। इसी प्रकार सौ वर्ष पर्यन्त अकाल पड़ गया। अन्न जल का अभाव होगया। भूख से प्राणी मरने लगे पेड़, पत्ते, फल फूल कुछ भी न रहा। सारी प्रजा दुखी होगई। यह देखकर अनुसूइया अत्यन्त व्याकुल होकर अपने पतिदेव से बोली पतिदेव ! मैं इन प्राणियों का दुःख नहीं देख सकती। आप इसके लिये कोई प्रयत्न करें। यह सुनकर महर्षि पद्मासन लगाकर बैठ गए। प्राणायाम द्वारा वायु ब्रह्माण्ड में जाकर शिव ध्यान में मग्न हो गए। उन्हें शरीर की सुध-बुध न रही। शिव की सारी दिव्य ज्योति द्वारा उनके हृदय में प्रकाश भर गया। जब अत्रिजी समाधि में लग गये तो उनके शिष्य गण यह देखकर भूखे प्यासे वहां से भाग गऐ तब तो अकेला अनुसूइया पति की सेवा में तत्पर हुई। सती ने मंत्रों द्वारा वहाँ पार्थिव प्रतिमा की रचना की फिर नियम पूर्वक उसके अर्चन पूजन में लग गई मानस उपचारों के द्वारा पूजन से शिव को प्रसन्न करने लगी। हाथ जोड़ कर अपने पति तथा शिव की परिक्रमा नित्य का उसका काम था। साध्वी अनुसूइया अपने पतिव्रत के प्रभाव से बड़े तेज वाली थी। महर्षि तथा अनुसूइया दोनों ही शिवाराधन में संलग्न थे। ऋषियो श्री महादेवजी उन दोनों की तपस्या से प्रभावित होकर ऋषि मुनि देवगणों को साथ लेकर वहां पहुंचे और गङ्गादिक पवित्र नदियां भी उनके दर्शनार्थ वहाँ आगईं। उनकी तपस्या की सराहना करते हुए सब बोले—और भी ऋषि मुनि सभी तपस्या करते चले आ रहे है किन्तु अत्रि मुनि की पत्नी अनुसूइया जैसी पति सेवा एवं तपस्या किसी ने भी नहीं की। दोनों धन्य हैं। इस प्रकार सभी देवता ऋषि मुनि उन दोनों की कीर्ति गायन करते २ अपने २ धाम में चले गये किन्तु भगवान शङ्कर अत्यन्त प्रसन्न होकर अपने सम्पूर्ण अंशों से

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

वहाँ रुके रहे। केवल अंशी भाव से कैलाश पर पधारे। पतित पावनी गङ्गाजी भी अनुसूइया के पातिव्रत्य प्रभाव से उस पर अनुग्रह करती हुई प्रेम वद्ध होकर वहां रुक गई और बोली-अब जब तक मैं पति परायण अनुसूइया का हित न करलूं तब तक कहीं न जाऊंगी। अनावृष्टि चौवन वर्ष तक रही किन्तु महर्षि अत्रिजी वैसे ही तपस्या में लगे रहे। इसी प्रकार अनुसूइया जी भी पृथ्वी पर वर्षा न होने तक अन्न जल न लेने की प्रतिज्ञा में पूर्ण रही।

* चौथा अध्याय *

(अत्रीश्वर की महिमा वर्णन)

सूतजी बोले—हे ऋषियो ! इस प्रकार तप करते २ एक बार महाष अत्रिजी ने तप समाधि से जाग कर पत्नी से कहा-हे प्रिये मुझे तो जोरों से प्यास लग रही है कहीं से जल लाओ। इतना सुनते ही पति भक्ता अनुसूइया कमण्डल लेकर जल लाने के लिये बन में चल पड़ी। जल को इधर उधर ढूंढ़ने लगी। इतने में श्री गङ्गाजी ने देखा कि अनुसूइयाजी अपने पति के लिए जल लाने को इधर-उधर व्याकुल होकर फिर रही है। तब तो स्वयं श्री गङ्गाजी अद्भुत शृङ्गार करके रूपवती होकर अनुसूइया के पास आकर मधुर वाणी से बोलीं— देवी मैं आप से बहुत ही प्रसन्न हूँ कहो इस समय आप कहाँ जा रही हैं अनुसूइयाजी बोली-भगवती आप कौन हैं। कहां से आरही हैं? तब श्री गङ्गाजी बोली— पति परायणे ! मैं गङ्गा हूँ। केवल आपके दर्शन करने को आई। तुम्हारे पतिव्रत धर्म शिव पूजन आदि व्रत से सन्तुष्ट होकर मैं आपके पास ही रह रही हूँ। मैं तुम्हारा कुछ हित करना चाहती हूँ। आप इसीलिए कुछ मुझसे वर माँगिये। श्रीगङ्गाजी के इस प्रकार के कथन को सुनकर हाथ जोड़कर अनुसूइया ने प्रणामकर के नम्रता से कहा-मातेश्वरी यदि आप प्रसन्न हैं तो सबसे पहिले मेरे इस कमण्डल को जल से भर दें। यह सुनकर श्री गङ्गाजी ने कहा-

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

कल्याणी आप पृथ्वी में एक गड्ढा खोदिये । तब अनुसुइयाजी ने पृथ्वी में एक गड्ढा खोद दिया । श्री गङ्गाजी उसी गड्ढे में समागईं । श्री अनुसूइयाजी ने विस्मित होकर अपना कमण्डल उस जल से भर लिया । फिर कहने लगी—पतित पावनी गंगे यदि सचमुच तुम मुझपर प्रसन्न हो तो मेरे कहने के अनुसार तब तक इसी गड्ढे में आप इसी प्रकार विराजमान रहो जब तक कि मेरे पतिदेव यहाँ आकर आपका दर्शन न करलें । इतना सुनकर श्रीगङ्गाजी वहाँ जल रूप होकर स्थिर हो गईं । इतने में श्री अनुसूइयाजी शीतल जल लेकर पतिदेव के पास पहुँची उन्हें जल का कमण्डल दिया । ऋषि प्यासे तो थे ही उस जल द्वारा आचमन करके प्रेम पूर्वक जल पान किया । फिर कहने लगे—यह तो जल बहुत मधुर तथा शीतल है । इसका स्वाद तो पहिले जल से निराला है यह कह कर अत्रिजी इधर-उधर देखने लगे उन्हें वर्षा न होने के कारण सभी वृक्ष फल-फूल हीन दिखाई दिये । यह देखकर उनके आश्चर्य की सीमा न रही फिर पत्नी से बोले—प्रिये क्या अभी तक वर्षा हुई ही नहीं । सुनकर अनुसूइया ने कहा—पतिदेव आपके शिव आराधना से सदाशिवके प्रताप तथा हमारी तपस्या से सन्तुष्ट होकर श्रीगङ्गाजी यही पधारी हैं और इसी आश्रम के पास ही विराजमान हैं । यह परम स्वादिष्ट शीतल एवं मधुर जल उसी का है । सूतजी बोले-ऋषियो ! ऐसा कहकर अनुसूइयाजी अपने पति को साथ लेकर श्रीगङ्गाजी के समीप पहुँचगईं और इशारा करके उस गड्ढे में श्रीगङ्गाजी के दर्शन कराने लगीं महर्षि ने दर्शन किये कि उसी गड्ढे में महारानी गङ्गाजी अपनी तरल तरङ्गों से लहराती हुई दिव्य दर्शन दे रही हैं । तब महर्षि ने धन्य२कहकर स्तुति करना आरम्भ किया । फिर दोनों पति पत्नियों ने मिलकर गङ्गा स्नान किया । फिर दैनिक सन्ध्या वन्दन आदि नित्यके कर्म भी किये । उसी समय श्री गङ्गाजी की इच्छा भी पूर्ण हुई । तब अत्यन्त प्रसन्न होकर अपने स्थान पर जाने की श्रीगङ्गाजीने दोनों से आज्ञा माँगी । इतना सुनते ही अनुसूइयाजी ने नम्रता से कहा-पतित

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

पावनी गङ्गाजी ! यदि सचमुच मुझ पर प्रसन्न हो तो मेरी इस अभिलाषा को पूर्ण करें आप इसी तपोवन में विराजें और स्थिर होकर यहीं से आपका प्रवाह चले । तब महर्षि अत्रि ने भी कहा-देवि मैं भी यही प्रार्थना करता हूँ आप हमारी सहायक रूप होकर यहां विराजें हम कृतार्थ होते रहे ।

तब श्री गङ्गाजी ने अनुसूइयाजी से कहा-यदि आप मुझे अपने आश्रम के समीप ही रखना चाहते हैं,तो मेरी भी एक इच्छा पूर्ण करो ? वह यह है कि आपने जो अपने पतिदेव के लिये शिवार्चन किया है । उसके एक वर्ष का फल मेरे लिये अर्पण कर दें तभी मैं आप लोगों के तथा ऋषि मुनियों के हित के लिये यहाँ निवास करूँगी । इतना सुनकर पति परायणा साध्वी अनुसूइया ने शिवार्चन किए हुए पूजन के एक वर्ष का सर्वोत्तम फल श्रीगङ्गाजी के अर्पण कर दिया । इसके बाद भगवान शङ्कर भी श्री अनुसूइयाजी के सेवा धर्म के प्रताप से प्रसन्न होकर शीघ्र ही उस पार्थिव लिंग से साक्षात् रूप में प्रकट हो गये और अतीवप्रसन्न होकर अनुसूइया से बोले-कल्याणी मैं तुम्हारी भक्ति से अत्यन्त प्रसन्न हुआ हूँ वर माँगलो तब पति पत्नी दोनों ने भगवान् शङ्कर के दर्शन किये और विधि पूर्वक पूजन करके स्तुति करते हुए नम्रता से बोले— स्वामिन ! यदि आप प्रसन्न होकर वर देना चाहते हैं तो आपकी अतीव कृपा होगी आप जगदम्बा श्रीपार्वतीजी के सहित इस तपोवन में विराजें फिर वर्षा द्वारा अन्न आदि यहाँ उत्पन्न हो चराचर जीवों का कल्याण हो । यह सब आपकी कृपा द्वारा हो यह सुन कर भगवान् शङ्करने "तथास्तु" कह दिया । फिर अत्रीश्वर रूप से उस तपोवन में विराजमान हुए और गङ्गाजी भी मन्दाकिनी नाम से विख्यात होकर उसी कुण्ड में सदां के लिए निवास कर गईं । ऋषियो ! यह कुण्ड केवल एक हाथ जितना था । श्री गङ्गाजी उसी कुण्ड में से अपनी माया द्वारा अब भी धारारूप से प्रवाहित हो रही है । तब सुकाल हो गया । उस तपोवन से भागे हुए ऋषि मुनि सभी लौट आये ऋषि अत्रिजी का आश्रम हरा भरा होगया ।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* पांचवाँ अध्याय *

(नन्दकेशि की महिमा)

सूतजी बोले-ऋषियों ! कालञ्जर पर्वत पर श्री नीलकण्ठेश्वर नामक भक्तजनों का कल्याण करने बाला शिवलिंग है। वहाँ एक सुन्दर कुण्ड है। उस कुण्ड में जो भी मनुष्य स्नान करता है उसके सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं मुक्ति तो उसके आधीन हो जाती है। रेवा नदी के किनारे पर सदाशिव के असंख्यलिंग हैं जिनके दर्शन ही अमोघफल देने वाले हैं। रेवा नदी भी तो पाप विनाशिनी है ही। फिर भी ऋषियो ! श्री शङ्करजी के लिङ्गों की महिमा एवं नाम अनन्त हैं उनमें मुख्य २ लिङ्गों का नाम एवं महिमा मैं आपको सुनाता हूँ वहाँ एक आर्तेश्वर नामक ज्योति लिंग है। जो सभी पापों को नाश कर देता है और वहाँ पर परमेश्वर तथा सिध्येश्वर नाम दो लिंग और भी विद्यमान हैं। इसी प्रकार रेवा के तट पर रामेश्वर, कुमारेश्वर पुण्डरीकेश्वर एवं मंडपेश्वर नामक और भी लिंग विद्यमान हैं। रेवा के तट पर तीक्ष्णेश्वर नामक शिवलिंग भी है। जिसके दर्शन मात्र से जीवों के असंख्यों पाप नष्ट हो जाते हैं। इसी प्रकार नर्वदा के किनारे धुन्धुरेश्वर शालेश्वर कुम्भेश्वर सोमेश्वर नीलकठेश्वर मङ्गलेश्वर आदि २ बहुत से शिव लिंग हैं। नन्दिकेश्वर महादेवजी तो करोड़ों हत्याओं को नाश करके सब कामनाओं को पूर्ण करके सायुज्य मुक्ति प्रदान करता है। वहाँ श्री महावीरजी द्वारा महा कपीश्वर लिंगभीविद्यमान है वह भी अनन्त फलों के देने वाला है इतना सुनकर ऋषिबोले-सूतजी अब कृपाकरके नन्दकेश्वर लिंग की महिमा वर्णन करें। सूतजी बोले-सुनिए ! चारों वर्णों से सेवित इसी रेवा नदी के पश्चिमीकिनारे पर पवित्र एक कर्णि की नगरी है। उसमें एक ब्राह्मण निवास करतेथेजो उच्चकुल के थे। उनकी एक पत्नी एवं दो पुत्र थे। जब वे ब्राह्मण बृद्ध हुए तो अपनी पत्नी को पुत्रों के आधीन करके स्वयं शिवपुरीकाशी में आकर निवास करने लगे। समय पाकर उनकी वहाँ मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु का वृतान्त सुनकर पुत्र वहाँ पहुँचे और विधि पूर्वक पिता का

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

अन्त्येष्टि संस्कार श्राद्ध पिण्डादि सभी किये उसके बाद ब्राह्मणी स्वयं अपने पुत्रों का पालन पोषण करती रही फिर जितना भी उसके पास धन था उसमें से कुछ अपने पास रखकर बाकी अपने दोनों पुत्रों को बराबर २ बांट दिया। समय पाकर ब्राह्मणी का मृत्युकाल निकट आगया पुत्रों ने उसे बचाने के लिए बहुत से उपाय किए धर्मदान पुण्य किये। किन्तु उसका कष्ट किसी प्रकार से भी निवृत्त न हुआ। तब उस ब्राह्मणी ने पुत्र से कहा—पुत्र सुबाद! मैंने तुम्हारे पिता की तरह काशी में प्राण छोड़ने का विचार किया हुआ था किन्तु ऐसा न हो सका। अब मेरे मरनेकेबाद मेरे पिण्ड श्राद्ध आदि तो काशी में करना और मेरी अस्थियां भी काशी में ले जाकर श्रीगङ्गाजी में प्रवाहित करना। तब सुबाद नामक पुत्र ने विश्वास दिलाते हुए माता से कहा-माताजी! आप निश्चित रहो। सभी बातें आपकी इच्छा अनुसार होंगी। इतनाकहकर माताके लिये भीतरजल लेने गया। इतने में उस ब्राह्मणी ने शिव ध्यान करते २ अपने प्राण त्याग दिये। उसके बाद यह देखकर दोनों पुत्र रोने लगे। कुटुम्बी पड़ौसी सब आगये। अपनी माता का दाह संस्कार किया फिर सुबाद पुत्र ने माता की अभिलाषा के अनुसार माता की अस्थियाँ काशीमें लेजाने के लिएकुछ दूर तक उसे छोटा भाई छोड़ने गया फिर वापिस लौटआया। सुबादफिर अकेला ही काशीको चला गया उसदिन उसने बीस योजन का मार्ग तय कर लिया। जब सूर्य नारायण अस्त होनेलगे तब किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण के घर जाकर उसने रात्रि गुजारी। प्रातःकाल हुआ वह थका माँदा तो था ही, नित्य के कर्मों से निवृत्त होकर विधिपूर्वक शिव पूजन करके अपने अनुचर के साथ वह दिन वहीं गुजारा। जब रात्रिकाल हुआ तो उसे एक अद्भुत सी बात दिखाई दी।

* छटवां अध्याय *

(नन्दकेश्वर-शिव पूजन द्वारा ब्राह्मणी की सद्गति)

सूतजी बोले-ऋषियों! उस घर का स्वामी ब्राह्मण उस रात को शाप के समय जब घर से बाहिर की ओर निकला तो उसे याद आया

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

कि हमने तो आज गाय की धार नहीं निकाली। तब वह अपनी स्त्री से बोला—दूध का बर्तन लाओ और खूँटे से बछड़ा खोलो। यह सुनते ही भार्या ने पति को दूध दुहने का पात्र दे दिया और बछड़ा खोल कर गाय के पास ले आई। कहीं बछड़ा अधिक दूध न पी जाय यह सोचकर बछड़े को गाय के स्तनों से हटा दिया। ऐसा होने पर भी बछड़ा कूदने उछलने लगा। ब्राह्मण के रोकने के प्रयत्न करने पर भी उसके पाँव में बड़ी ठोकर लगी। फिर उसे क्रोध भी आया और डंडा लेकर बछड़े को पीटना शुरू किया। यह देखकर बेचारी गाय रोने लगी और कर ही क्या सकती थी! बछड़े को मारपीट कर ब्राह्मण ने दूध निकाल लिया। फिर चलता बना किन्तु गाय बहुत ही दुःखित होकर विलाप कर रही थी। यह देख कर बछड़ा माता से बोला—माताजी! तुम क्यों रोती हो, यह तो सब कर्मों का खेल है। तुमको दुःखी नहीं होना चाहिये। माता ने कहा—हे पुत्र! मैं बड़ी निर्भाग हूं जो अपने बच्चे को दूध तक नहीं पिला सकती। देखो तुमको उस ब्राह्मण ने कितना पीटा है, मैं अभागिन देखती रही कुछ भी कर नहीं सकी। तब बछड़ा बोला-हे माता! तुम धैर्य धारण करो, यह सब भाग्यों के अनुसार होता रहता है। जो जैसा करता है वैसा ही फल भोगता है सूतजी बोले-इस प्रकार ज्ञान की बातें अपने बछड़े की सुनकर शोक करती हुई गाय बोली—पुत्र! मैं सब कुछ जानती हूँ। किन्तु माया में फँसकर मुझसे यह दुःख देखा नहीं जायगा। मैं तभी शान्त होउँगी जबकि इस ब्राह्मण से बदला चुका लूंगी, मेरी भांति यह ब्राह्मण भी दुःख भोगेगा। बछड़ा बोला—हम लोग अपने पूर्व जन्म के कर्मों से पशु हुए हैं और दुःख पा रहे हैं। फिर भी तुम इस ब्राह्मण को मारोगी तो तुम्हें ब्रह्महत्या का पाप लगेगा। इस लिये माताजी आप धैर्य धारण करके शुभ कर्म करो। पाप कर्म में प्रवृत्त न होओ। यह सुनकर गाय बोली—हे पुत्र! तुम ज्ञान द्वारा मुझे समझा रहे हो। यह ठीक है। किन्तु गाय के सताने का भी ब्राह्मण को दण्ड मिलना चाहिये। मैं दुःखित होकर अवश्य ही प्रातःकाल उस ब्राह्मण

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

का नाश कर दूंगी। बाकी रही ब्रह्महत्या, उसको मिटाने का उपाय भी मैं जानती हूं। मैं वहाँ पहुँचकर ब्रह्महत्या निवारण करलूंगी। सूतजी बोले-यह सुनकर बछड़ा शांत हो गया। उधर सुवाद ब्राह्मण जो अपनी माता की अस्थियाँ काशी ले जाने वाला था, वहाँ गाय और बछड़े की सभी बातें सुन रहा था। तब उसने मन में विचार किया कि प्रातःकाल मैं यह देखूंगा कि गाय किस प्रकार ब्राह्मण से बदला लेती है और कहाँ जाकर अपनी ब्रह्महत्या का पाप निवारण करती है, इसके पीछे-पीछे मैं वहाँ तक चला जाऊंगा। वह सुवाद मन में ऐसा विचार कर रात को वहाँ सो गया। जब प्रातःकाल हुआ तब घर के स्वामी ने अपने पुत्र से कहा-हे पुत्र? मुझे किसी आवश्यक कार्य के लिये बाहर जाना है। तू ही गाय दुह लेना। सूतजी बोले—यह कहकर ब्राह्मण वहाँ से चला गया तब ब्राह्मण पुत्र ने बछड़े को खूंटे से खोला, गाय दुहने की तैयारी की, उस लड़के की माता भी वहाँ पहुँच गई फिर वही कांड हुआ यानी उस ब्राह्मण के पुत्र ने भी बछड़े को पीटा तब गाय को क्रोध आगया और दोनों सींग नीचे करके उस ब्राह्मण-पुत्र की बगल में मार दिये जिसके वह बेहोश होकर पृथ्वी पर गिर गया। उसकी माता ने बहुत कोलाहल मचाया, गाँव के अड़ौसी-पड़ौसी सबके सब वहाँ पहुँच गये। उस बालक का पिता भी भागता-भागता वहां पहुँच गया और अपने पुत्र की यह दशा देखकर रोने लगा तब क्या हो सकता था थोड़ी देर में उस लड़के के प्राण निकल गये तब तो बड़ा हाहाकार मच गया। सभी रोने लग गए। उस गाय को डण्डे से पीटकर खूंटे से खोलकर उस ब्राह्मण ने घर से बाहर निकाल दिया। गाय का बछड़ा भी पीछे-पीछे भाग गया। ब्रह्महत्या के कारण उस श्वेतवर्ण वाली गाय का रङ्ग काला हो गया, यह देखकर सभी लोग विस्मित हो गये। वह पथिक सुवाद ब्राह्मण विस्मित होकर उसके पीछे चल दिया। धीरे-धीरे वह गाय नर्वदा के तट पर पहुँची जहां श्री नन्दिकेश्वर महादेव विराजमान थे। गाय सीधी नर्वदा के जल में घुस गई, नर्वदा की धारा में उसने तीन गोते

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

लगाये। उससे उसका काला रङ्ग धुल गया और फिर सफेद रङ्गकी हो गई। यह देखकर सुवाद आश्चर्य करने लगा कि अरे यह क्या होगया! इस का काला रंग कहाँ गया? तव धन्य-धन्य कहते हुए उसने गाय को प्रणाम किया तव गाय जल से निकल कर अपने पहिले स्थानपर चली गई किन्तु उस दुष्ट ब्राह्मण के घर न गई। उसके वाद यह सब देखकर अपने सेवक के साथ सुवाद ने उसी नदी में स्नान किया फिर अपना नित्यकृत्य करके उस तीर्थ स्थान की प्रशंसा करता हुआ वह काशी की ओर चल पड़ा। तब मार्ग में उसे एक युवती दिखाई दी, जिसने अनेकों अलंकार धारण किये हुए थे, मन्द-मन्द हंसती हुई आकर बोली— ब्राह्मण देवता! तुम अत्यन्त प्रसन्न दिखाई देते हो। कहाँ से आ रहे हो और कहां जारहे हो? यह सुनकर सुवादने अपना सारा वृत्तान्त उस युवती को कह सुनाया और कहा कि मैं अपनी माता की अस्थियाँ काशी में गङ्गाजी में पहुँचाने जा रहा हूँ क्योंकि मरते समय माता ने मुझे यही आज्ञा दी थी। इतना सुनकर वह युवती बोली-अरे ब्राह्मण! तुम तो बड़े भोले-भाले हो। इस तीर्थ को छोड़कर तुम कहाँ भटकने जा रहे हो, यह तीर्थ अत्यन्त पवित्र है। अपनी माता की अस्थियाँ इसी में प्रवाहित कर दो औरप्रति वर्ष वैशाख शुक्ल पक्ष की सप्तमी के दिन इसी नर्वदा नदी की पवित्र धारा में श्री गङ्गाजी आती हैं और आज वही शुभ दिन है। तुम देर मत करो, अपनी माता की अस्थियां को इसी में प्रवाहित कर दो। तुमको अन्यत्र जाने की कोई आवश्यकता नहीं। इस प्रकार कहकर वह युवती देवी वहाँ से अन्तर्धान हो गई, तब तो प्रसन्न होकर वह सुवाद ब्राह्मण अपने दास के साथ उस नदीपर लौटआया और अपनी माताजी की अस्थियां निकालकर श्रीगँगाजीका ध्यान करके नर्वदा की पवित्र धारा में प्रवाहित कर दीं। उसे वहाँ एक आश्चर्यजनक दृश्य दिखाई दिया उसने देखा कि माता दिव्य देह-धारण करके जय-जयकार करती हुई यह कह रही है कि पुत्र! तुम धन्यहो तुमने मेरी सद्गति कर दी तुमको धन-धान्य की कमी कमी

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

न होगी, तुम्हारा वंश बढ़ेगा और सभी दीर्घायु होंगे। परमात्मा तुम्हें सदा सुखी बनाये रखेगा। हे ऋषियों! इस प्रकार उस माता ने अपने पुत्र को आशीर्वाद दिये फिर वह जय-जय करती हुई शिव लोक को प्राप्त हुई।

* सातवां अध्याय *

(नन्दिकेश्वर महिमा)

कथा सुनकर ऋषि बोले—सूतजी! अब आप यह कहिए कि प्रतिवर्ष वैसाख शुक्ला सप्तमी को गङ्गाजी नर्वदा नदी में किस कारण आया करती हैं सूतजी बोले—ऋषियों! किसी ब्राह्मण की पत्नी जिसका नाम ऋषिका था, वह नर्वदा के किनारे रहा करती थी। उसका पति तो पूर्व जन्म के पापों के कारण तरुण अवस्था में ही चल वसा था। तब उस बाल बिधवा को और तो कुछ न सूझा वह श्री नन्दिकेश्वर महादेवजी की भक्त हो गई। उसने पार्थिलिङ्ग स्थापित किया। फिर नन्दिकेश्वर भगवान शिव के पूजन, ध्यान, व्रत आदि में संलग्न हो गई। उसी प्रकार उसने कठोर तपस्या करना भी आरम्भ कर दिया। उन्हीं दिनों कोई महा असुर दुष्ट इधर उधर से घूमता घामता वहाँ आ पहुँचा। वह अत्यन्त वलवान एवं मायावी था उसने उस बाल-बिधवा तपस्विनी को देखा, उसके रूप पर मोहित होकर उसके पास पहुँचकर नाना प्रकार के प्रलोभन देता हुआ उससे विषय वासना पूर्ण करने के लिए कहा। वह दुष्ट काम से अन्धा हो रहा था। तब उससे रक्षा पाने हेतु उस तपस्विनी ने शिव की आराधना में और भी अधिक ध्यान लगा दिया। उसकी तरफ देखा तक नहीं। यह देखकर वह पापी अधिक क्रोध में आ गया। उस कल्याणी को भयभीत करने के लिये अपनी माया द्वारा उसने भयानक रूप दिखाये उसे डराया धमकाया और उसे पकड़ने के लिये दौड़ा। तब तो डर कर वह ब्राह्मण-पत्नी शिव-मूर्ति से जाकर चिपट गई। अपने धर्म की रक्षा करने के लिये आर्त होकर शिव प्रार्थना करने लगी। भगवान

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

शङ्कर का उसकी प्रार्थना से आसन डोल उठा। उस मूर्ति से भगवान् प्रकट हो गये, उनके हाथ में त्रिशूल था और उसके द्वारा उस पापी को भस्म कर दिया। तपस्विनी का सङ्कट दूर कर दिया। तब सौम्य रूप से उस ब्राह्मणी को दर्शन देते हुए बोले—हे कल्याणी! मैं तुम पर अति प्रसन्न हूँ। मन चाहा वर माँगलो। यह सुनकर भगवान शङ्कर के रूप पर मुग्ध हुई, हाथ जोड़कर वह ब्राह्मणी प्रार्थना करने लगी—हे देवाधिदेव महादेव भक्तों के रक्षक नाथ आपके चरणों में मेरा बार-बार नमस्कार हो। हे जगतके मङ्गल करने वाले आपने ही तो मेरा पतिव्रत धर्म बचाया है। यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो इसी पार्थिव मूर्ति में सदा के लिये आप विराजमान रहें और मेरी भक्ति आप में दृढ़ रहे। यह सुनकर भगवान शङ्कर प्रसन्न होकर बोले—देवी! तुम्हारी अभिलाषा पूर्ण होगी। सूतजी बोले—उस समय आकाश से पुष्पों की वर्षा होने लगी। ब्रह्मा आदि सभी देवता अपने-अपने वाहनों पर चढ़कर वहां आये और शिव-स्वरूप दर्शन करके नम्रता पूर्वक प्रार्थना करने लगे। इधर पतिपावनी श्री गङ्गाजी भी उस सती ऋषिका के पास लहराती हुई आगई, अत्यन्त प्रसन्न होकर बोली—कल्याणी! मैं भी प्रतिज्ञा करती हूँ कि, प्रत्येक वर्ष वैशाख की शुक्ला सप्तमी के दिन मैं यहां आया करूंगी। क्योंकि जहाँ सदाशिव का सदा निवास हो जाय वहां मेरा आगमन परम आवश्यक है इतना बचन सुनकर ऋषिका परम आनन्दित हुई। भगवान शङ्कर उसी दिनसे अपने पूर्ण अङ्गों से उस पार्थिव लिंग में निवास करने लगे। तभी से प्रत्येक वर्ष वैशाख शुक्ला सप्तमी के दिन वहां गङ्गाजी आने लगी। उसी दिन से यह तीर्थ नन्दिकेश्वर के नामसे संसार में प्रसिद्ध हुआ है। हे ऋषिगण! यह दिव्य परम तीर्थ सभी घोर पापों का निवारण करने वाला है। इसी तीर्थ के पवित्र कुण्ड के स्नान से ब्रह्महत्यादि जैसे घोर पाप भी नष्ट हो जाते हैं अन्त में उसे शिवपद की प्राप्ती होती है।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* आठवां अध्याय *

(महाबल शिव महात्म्य)

सूतजी बोले—ऋषियो ! अब हम आपको पश्चिम दिशा में सदाशिव के पार्थिव लिंगों का वर्णन करते हैं। कपिला नाम की एक नगरी है उसमें कालनेश्वर नाम का शिवलिंग है। इनके दर्शन से सभी पापों का नाश होता है ! पश्चिमी समुद्रकी ओर सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाले सिद्धेश्वर नामक पार्थिव लिंग प्रसिद्ध हैं और अनेकों तीर्थ वहाँ विद्यमान हैं। समुद्र के किनारे एक गोकर्ण क्षेत्र भी है। वहां स्नान करने से ब्रह्महत्यादिक पापों की भी निवृत्ति हो जाती है। उसतीर्थों में अनेकों पार्थिव लिङ्ग भी विद्यमान हैं। मुनियों, महाबली गोकर्ण सातों रसातल एवं गुफाओं में भ्रमण करते हैं, वे कलिकाल के लगने पर कुछ-कुछ लय को प्राप्त हो जायेंगे। फिर अपने ही पराक्रम से शिव पूजन करके शिव रूप होंगे। मुनियो ! यह वही गोकर्णतीर्थ हैं जिसमें सभी नक्षत्र जाकर शिव स्वरूप हो जाते हैं और जहाँ ब्रह्मा, विष्णु इन्द्र विश्वदेव मरुद्गण वसु सूर्य अश्विनीकुमार चन्द्रमा एवं नक्षत्र अपने२ वाहनो पर चढ़कर उसके पूर्व की ओर भ्रमण करते हैं। यमराज चित्र-गुप्त काल, अग्नि, पितर अपनी-अपनी विभूतियों के साथ दक्षिण की तरफ दर्शन करते हुए भ्रमण कियाकरतेहैं। सागर पति वरुणदेव, गङ्गा, सिन्धु आदि नदियों को साथ लेकर तीर्थके पश्चिमकी ओर दर्शन करते हुए भ्रमण करते हैं। कुबेर पवन भद्रकाली चण्डिका तथा भूत प्रेत पिशाच आदि को साथ लेकर भवानी उत्तर की ओर सदाशिवके दर्शन में लगी रहती है। सारे देवता पितर गन्धर्व चारण सिद्ध विद्याधर किन्नर, किंपुरुष, गुह्यक, खग, वैताल, पिशाच, बली, दिति के पुत्रदैत्य तथा सर्पगण एवं मुनिगण आदि सभी सदाशिव के पवित्र दर्शनकरके अपनी सभी कामनाय पूर्ण करते हैं। वहाँ महाबल सदाशिव की मूर्ति प्रत्यक्षरूपेण मोक्षदीपिका है। वहाँ पर एक वर्ष को माघकृष्णपक्ष की चतुर्दशी के दिन सदाशिव का पूजन होता है। हेमुनियो ! उसके पूजन

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

करने से एक चाँडाली के पाप निवृत्त होगये और वह अन्त में शिव लोक को प्राप्त हुई ।

* नवाँ अध्याय *

(चाण्डाली की मुक्ति)

सूतजी बोले-ऋषियो ! चाण्डाली पूर्व जन्म में एक ब्राह्मणी की कन्या थी । नाम सौमिनी था । जब वह विवाह के योग्य हुई तो उसके पिता ने एक श्रेष्ठ ब्राह्मण के साथ उसका विवाह कर दिया । विवाह होने की देर थी वह विलास में पड़ गई । दिन-रात विषय-विलास में पड़कर उसने अपने पति को रोगी बना दिया कई दिन के बाद उसके पतिकी मृत्यु भी हो गई किन्तु उसकी विषय भोग की लालसा न छूटी वह अब स्वतन्त्र तो हो चुकी थी । अपनी कामाग्नि को बुझाते हुए एक दिन वह वेश्या बन गई । यह देखकर उसके परिवार वालों ने उसकी चोटी पकड़ली घसीटते २ उसे निर्जन बन में छोड़ आये फिर वह उस बनमें घूमने लगी । इसी प्रकार घूमते २ एक दिन किसी अन्यन्त शूद्र के दरवाजे पर पहुँच गई । शूद्र ने उस युवती को ज्योंहीं देखा तब तो वह कामासक्त होगया । उस युवती को और क्या चाहिये था शूद्रकी अर्धाङ्गिनी होकर वहाँ रहने लग गई । शूद्र के साथ माँस मद्य आदि अभक्ष वस्तुयें खा पीकर दिन-रात विषय भोगने लग गई तथा एक लड़की भी उसकी वहां पैदा हो गई ।

सूतजी बोले-एक दिन वह शूद्र किसी काम से कहीं गया हुआ था रातके समय उस शूद्रा चाँडाली को माँस खाने की इच्छा हुई । तब उसने मद्यपान करने के लिये अपने हाथ में नग्न तलवार लेकर एक मेंढ़े को काटने के लिये बाहर निकली उसके खिरक में गाय का बछड़ा तथा मेंढ़ा दोनों पास २ बंधे थे । रात का समय था उसको होश नहीं था भूल से मेढ़े के स्थान पर बछड़े को काट डाला फिर घर में उठा लाई तब उसको बछड़े की पहिचान हुई । पश्चाताप भी हुआ । किन्तु माँस खाने की लालसा एवं भूख उसे एकदम सता रही थी आगा—पीछा न सोचकर

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

उसे भून-भान कर खागई। इसी प्रकार उसका समय पाकर मृत्युकाल भी आ पहुंचा वह मर गई। यम दूत उसे बांधकर यमपुरी में ले गये। यमराज ने उसे गौ हत्यारी समझ कर नरक की अनेक यातनायें दीं इसके बाद उसका किसी शूद्र चाण्डाल के घर में जन्म हुआ। उस नरकागत चाँडाली को भयानक कोढ़ का रोग भी पैदा होगया और वह अन्धी होकर ही जन्मी थी। कोढ़ के कारण कोई भी उसे पास नहीं भटकने देता था वह भूखी-प्यासी होकर भटकने लगी एक दिन उसने कुछ यात्रियों को देखा उनके पासमांगने को गई। उस समय वे आपस में सदाशिव के दर्शनों की बातचीत कर रहे थे माघ कृष्ण चतुर्दशी को शिवके दर्शन अवश्य करने चाहिये। यह सुनकर उस चाँडालिनी ने अपने मनमें निश्चय कर लिया कि मैं भी वहाँ पहुँच कर सदाशिव के अवश्य ही दर्शन करूंगी तब यही धारणा धरकर भीख मांगती २ गोकर्ण क्षेत्र के लिये चल पड़ी। एक दिन उस तीथ पर पहुँच गई। माघ कृष्ण चतुर्दशी की प्रतीक्षा करने लगी। उस दिन से जब एक दिन ही बाकी रह गया तो वह दीन भूखी-प्यासी किसी बनिया के दरवाजे पर पहुंची उस समय उस बनिया के हाथमें बैल की मंजरी थी। ज्योंही उसने भिखारिन की आवाज सुनी तब त्योंही उसकी झोली में वह मंजरी पटकदी, बेचारी भूखी भिखारिन ने दुखित होकर वह मंजरी दूर फेंकदी। वह मंजरी पृथ्वी पर तो न गिरी वह सीधी महाबल सदाशिव के लिंग पर जाकर गिर गई। उस मंजरी के सदाशिव के मस्तक पर लगने की देर थी तो उस चाँडालिनी के सम्पूर्ण पाप नष्ट होगये फिर माघ कृष्ण चतुर्दशी का शुभ दिन भी दूसरे दिन आ पहुँचा। वहाँ इधर उधर के देश देशान्तरों के लोग आगये। उस भिखारिन को भीख माँगने पर भी कुछ न मिला इससे उसका चतुर्दशी निराहार व्रत पूर्ण होगया। भूख के कारण रात भर जागती रही इससे जागरण भी होगया तब सदाशिव उस पर प्रसन्न होगये। उसे आत्मशान्ति प्राप्त हुई। शिव इच्छा से उस दिन उसकी मृत्यु होगई! शिव कृपा से उसके लिये वहाँ

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

विमान आगया उसके ऊपर चढ़कर वह शिवलोक में चली गई। सूतजी बोले-हे ऋषियो! अज्ञानता अथवा भूल से सदाशिव का किसी प्रकार से भी पूजन दर्शन हो जाय तो उस पर भी आशुतोष शङ्कर प्रसन्न जाते हैं। यदि भाव भक्ति से जो कोई भी महाबल शिव का अर्चन करे तो उनको तो मोक्षपद अवश्य प्राप्त होता है।

* दसवां अध्याय *

(महाबल शिवमाहात्म्य वर्णन)

सूतजी बोले—ऋषियो! मित्रसह नाम का एक धनुषधारी राजा हुआ है जो कि इक्ष्वाकु कुल का था वह बड़ा पुण्यात्मा था। उसकी पत्नी का नाम दमयन्ती था। वह भी नल की धर्मपत्नी की तरह पतिव्रता धर्म परायण थी एक दिन वह राजा शिकार खेलने के लिये घोर वन में जा पहुंचा सेना भी उसके साथ थी। राजा ने वहाँ जाकर देखा कि एक कुमठ नामक दानव महात्मा मंडपजी को व्याकुल कर रहा है तब राजा ने क्रोध में आकर उसे बाण द्वारा मार दिया। उसके छोटे भाई ने राजा से बदला लेने का निश्चय कर लिया और उपाय सोचने लगा राजा अपने महल में लौट आये और अपने राज्य कार्य में लग गये। इधर कुमठ का छोटा भाई कपट का वेष बनाकर नोकरी करने के लिये राजाके पास आया और बोला-महाराज! मैं रसोई बनाना उत्तम जानाहूँ। षटरस भोजन बना-बनाकर मैं आपको प्रसन्न करता रहूंगा। तब राजा ने उसे अपना रसोइया बना लिया। इसी प्रकार राजा के घर कई दिनों के बाद गुरु जयन्ती का पर्व आया। राजा ने उस दिन का निमन्त्रण गुरु वसिष्ठजी को भेजा। गुरुदेव नियत समय पर राजा के घर पहुँच गये। तब उस कपटी ने अच्छा अवसर जानकर सागमें माँस राँध दिया और वही गुरु वसिष्ठजी के सन्मुख परोस दिया गुरुदेव जान गये अरे इसमें तो माँस है। तब क्रोध में आकर राजा से बोले-पापी! तू मुझे भी पापी बनाना चाहता है। देख तूने मुझे क्या परोस दिया। यही कि मनुष्य माँस! मैं तुझें शाप देता हूं कि तुम राक्षस हो

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

जाओ। यह कहकरफिर विचारने लगे-अरे! इसमें तो राजा का कोई दोष नहीं। यह तो रसोइया कपटी दैत्य का काम है। अस्तु! यह सोचकर बोले हे राजन्! इसमें तुम्हारा अपराध नहीं है। एक बात है तूने विचार कर अपना रसोइया नहीं रखा यह तो दैत्य है। इसी ने ही यह काम किया है। मेरा दिया शाप तो हट नहीं सकता किन्तु तू बारह वर्ष राक्षस रहेगा। इतना कहकर गुरुजी चले गये। शाप के कारण राजा राक्षस होगया। बनमें जाकर अनेकों जीवों को मार २ कर खाने लगा। वह भयानक रूप था। एक दिन वह घूमते २ एक आश्रम पर पहुँचा वहां उसने एक मुनि को देखा जो अभी किशोर अवस्था का था। उस-को देखकर वह ललचाया हुआ पकड़ने को दौड़ा। मुनी पत्नी तरुणी ने उसे देख लिया। तब तक माँसाहारी राजा ने मुनिको पकड़ लिया वह भूखा तो था ही उसे खाने के लिये तैयार होगया। मुनि पत्नी ने नम्र होकर बड़ी प्रार्थना की-महाराज! इसे छोड़ दो। पर वह भूखा राक्षस कब मानता था। मुनि को बगल में दबाकर उसका शिर फाड़ दिया और खागया। उसकी हड्डियाँ वहां फेंककर चलता बना। मुनि पत्नी ने तब रोते २ पति की हड्डिया चुनीं। चिता बनाकर अंत में उस विकराल रूप धारी राक्षस को शाप देती हुई बोली-नीच राक्षस तूने मेरा पति मार दिया मेरा सुख नष्ट कर दिया। जा तू भी कभी स्त्रियों के साथ विहार करने लगा तो तेरी भी उसी समय मृत्यु होगी इस प्रकार से शाप देकर मुनि पत्नी सती होगई राजाके शाप के बारह वर्ष भी समाप्त होगये। तब राजा को अपना पहिले वाला शरीर मिल गया राजा घर पहुंचा अपना वृतान्त तथा मुनि पत्नी का शाप जाकर अपनी रानी को सुनाया यह सुनकर उसकी पत्नी रति इच्छा रखते हुए पति को कभी अपने पास नहीं आने देती थी। किन्तु उसके कोई सन्तान नहीं थी राजा अत्यन्त दुःखी होगया। एक दिन सभी कुछ छोड़कर राजा बनमें निकल गया। रास्ते में भयानक रूप वाली ब्रह्महत्या को उसने देख लिया। उसे देखकर राजा बहुत डर गया उससे छूटने के लिये वनमें

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

उसने तीर्थ व्रत तप नियम आदि किये किन्तु ब्रह्महत्या ने उसका पिण्ड न छोड़ा। राजा अत्यन्त व्याकुल होगया। इतने में परम पवित्र महात्मा गौतम ऋषि के राजा को दर्शन होगये। तब भागकर राजा मुनि के चरणों में जा गिरा और उन्हें अपना सारा वृतान्त कह सुनाया मुनि पत्नी के शाप का वृतान्त भी कहा। फिर बोला मुनिवर आप ही मेरी रक्षा करें मैं बहुत दुःखी हूं। यह सुनकर परम दयालु गौतम मुनि दया करके बोले—राजन् सुनो यहां से पश्चिमी समुद्र के मध्य में गोकर्ण नामक एक उत्तम तीर्थ है। वहां सब प्रकार के पापोंके नाशक महाबल नामक सदाशिव का ज्योतिर्लिंग विद्यमान है। राजन तुम उसी तीर्थ पर जाओ वहां उस तीर्थ का स्नान करके शिव अर्चन करना। शिव अर्चन करने से तुम्हारा ब्रह्महत्या से पिंड छूटेगा। ऋषियो! राजा इस प्रकार दयालु मुनि के वचन सुनकर आनन्द को प्राप्त होकर गोकर्ण तीर्थ पर पहुँचा। वहां तीर्थ स्नान करके शिव पूजन करते २ राजा के ब्रह्महत्यादि सभी पाप निवृत्त हुये।

* ग्यारहवाँ अध्याय *

(पशुपति नाथ शिवलिङ्ग माहात्म्य)

सूतजी बोले—ऋषियो! उत्तर दिशा के शिव ज्योतिर्लिंगों की महिमा सुनो। एक और भी गोकर्ण नामक तीर्थ है। जो कि सम्पूर्ण पापों का नाशक है महा पवित्र स्थान है। उस स्थान पर बड़ा रमणीक महावन भी है। उसीमें शिवका चन्द्रभाल नामक ज्योतिर्लिंग है जिसे रावण ने लाकर स्थापित किया था। वहाँ चन्द्रभाल विश्वभर के चराचर जीवों को सुख देने वाले हैं वैद्यनाथ की भाँति वहां विराजमान है। उनकी महिमा अत्यन्त अद्भुत हैं। मिश्रर्षि नामक एक सुन्दर तीर्थ है उसमें दधीचि ऋषि द्वारा स्थापित दधीचेश्वर शिव का ज्योतिर्लिंग है। तीर्थ यात्रा के सम्पूर्ण फलों को चाहने वाले वहाँ पहुंच कर तीर्थ में स्नान करके शङ्करजी का पूजन करने से कृतार्थ हो

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

जाते हैं और भोग मोक्ष दोनों की प्राप्ति उन्हें होती है। नैमिषनामक तीर्थ में सारे ऋषियों से स्थापित ऋषीश्वर नामक ज्योतिर्लिंग है। इस लिंग के दर्शन मात्र से पातकों का नाश हो जाता है। फिर मुक्त होकर स्वर्ग अवर्ग को प्राप्त होते हैं। फिर हत्या हरण नामक पवित्र तीर्थ में "अघापह" नामक शिवलिंग हैं जो कि करोड़ों हत्याओं जैसे पापों से मुक्ति कराते हैं। फिर देव प्रयाग नामक तीर्थ में सभी पापों के नाशक ललितेश्वर नामक ज्योतिर्लिंग हैं। नैपाल नगर में सब प्रकार के मनोरथ पूर्ण कर्ता केवल अपने सिरकाही दर्शन देने वाला पशुपति नामक ज्योतिर्लिंग है। फिर इनके समीप ही भोग मोक्ष देने वाला मुक्ति नाथ नामक शङ्कर का ज्योतिर्लिंग है। हे ऋषिगण! पृथ्वी के चारों ओर ही सदाशिव के ज्योतिर्लिंग ही लिंग विद्यमान हैं।

* बारहवां अध्याय *

(लिंग रूप का कारण)

ऋषिगण प्रश्न करने लगे—सूतजी! आपने भगवान शङ्करजीके दिव्य ज्योतिर्लिंग का वर्णन कर दिया, जिनको सुनकर हम कृतार्थ हुए। अब कृपा करके यह सुनाइये कि श्री पार्वती जी जगत माता शिव प्रिया वाणरूप हैं। इसका प्रयोजन और कारण क्या है? यह सुनकर सूतजी बोले—मुनिजनो! प्राचीन समय की बात है। दारुक नामक एक वन है। उसके समीप भगवान शङ्करजीका शिवालय है उसमें शिव के परम भक्त ऋषि नित्य ही प्रात मध्यान्ह एवं सायं तीनों काल वहाँ जाकर शिव पूजन, स्तोत्र, पाठ तथा पूर्ण भक्ति के साथ प्रार्थनाएं किया करते हैं एक समय की बात है जब कि प्रेम से वह पाठ कर रहे थे उस समय बहुत से ऋषि हवन के लिये दारुक नाम के सघन वन में समिधा (काष्ठ) लाने पहुंचे। उस समय अपने भक्तों की परीक्षा करने के हेतु शंकर ने अत्यन्त विकराल रूप धारण किया। नग्न होकर कामी पुरुषों की भांति हाथ में लिंग धारे वहां पहुँच गये। वह ऋषि पत्नियों ने इस प्रकार ज्यों ही देखा तब तो वे बहुत ही घबड़ा

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

गई वे भी कामवश होने लगी। बहुतसी स्त्रियाँ परस्पर आलिंगनकरने लग गईं और कुछ आश्चर्य में पड़कर उस ओर देखने लग गईं इतने में उनके पति भी वहाँ तुरन्त पहुँच गये। उन्होंने देखा यह स्त्रियों के आचरणों को दूषित करनेवाला कौन होगा। अपनी स्त्रियों के प्रति भी उन्हें क्रोध आया। फिर वे भगवान शङ्कर के स्वरूप को जानने वाले अत्यन्त क्रोध में आकर परस्पर बोले—अरे यह कौन होगा? कोई भी उत्तर न दे सका। फिर उस नग्न से बोले-तू है कौन? बताता क्यों नहीं। इस प्रकार बार २ पूछने पर भी दिगम्बर वेषधारी ने कुछ भी उत्तर नहीं दिया। उसके बाद अत्यन्त क्रोध में आकर ऋषि कहने लगे-यह तुम बहुत ही अनुचित कार्य कररहे हो। इससे वैदिक धर्म का लोप होता है इसी कारण हमारे कथन के अनुसार तुम्हारा लिंग शीघ्र ही पृथ्वी पर गिर पड़े। सूतजी बोले—इस प्रकार जब ऋषियों ने कहा तब तो उसी क्षण भगवान शङ्कर का लिंग भूमि पर गिरपड़ा प्रज्वलित अग्नि की भांति इधर-उधर भ्रमणकरता हुआ जीव जन्तुओं को पीड़ित करने लगा। इतना देखकर समस्त ऋषि घवरा गये तुरन्त ही ब्रह्माजी के पास पहुँचकर सम्पूर्ण बृन्तात कह सुनाया। तब ब्रह्माजी समझ गये कि ये सभी ऋषि शङ्करजी की माया के वशीभूत हो चुके हैं। ऐसा जानकर बोले—ऋषियो! यह तुमने शङ्करजी के साथ शत्रुता करके बहुत ही अनुचित कार्य किया है। देखिये मनुष्य मात्र का धर्म है कि मध्यान्स काल में घर में आये अतिथि का समुचित सत्कार करे। ऐसा न करने पर वह पूरा पाप का भागी होता है। अब बात यह है जब तब भगवान शङ्कर का लिंग एक स्थान पर स्थित न हो जायगा तब तक इसी प्रकार के उपद्रव होते ही रहेंगे। यदि तुम संसार का हित चाहते हो तो भगवान शङ्करजी के ज्योतिलिङ्ग का चिंतन करो और उस लिंग की स्थापना के लिये सर्व प्रथम जगदम्बा पार्वतीजी की स्तुति एवं आराधना करो तुम्हारे इस सर्व श्रेय उपाय द्वारा वही श्रीपार्वतीजी ही योनिरूप हो जाँय उसके बाद भगवान शङ्कर तुम्हारी प्रार्थना द्वारा

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

प्रसन्न होकर उस योनि में स्थिर हो जाय तब जाकर विश्व कल्याण हो इसलिये तुम माता पार्वती को प्रसन्न करने हेतु अष्ट दलकी रचना करो फिर शास्त्रों की आज्ञानुसार उस पर एक घट स्थापित करो। फिर उसें दूर्वा के साथ पवित्र तीर्थ जल से भरो। सदाशिव का ध्यान करके विधि पूर्वक उसकी पूजा करो। उसके बाद शतरुद्री मन्त्रों का पाठ करते २ उसी कलश के जल से लिंग को स्नान कराकर तथा मार्जन आदि करके शान्त करो। फिर योनिरूप पार्वती को बाण रूप से स्थापित करके उसी पर सदाशिव के ज्योतिर्लिंग को स्थापित करदो उसके बाद चन्दन, पुष्प,दीप, नैवेद्य आदि शोडषोपचार पूजन द्वारा शङ्कर को प्रसन्न करते हुए प्रणाम, स्तोत्र,पाठ, स्तुति गान आदि करो श्रीब्रह्माजीकी आज्ञा के अनुसार ऋषियों ने जाकर मातेश्वरी पार्वतीजी तथा भगवान शङ्कर का विधि पूर्वक पूजन एवं आराधना की तब प्रसन्न होकर पार्वतीजी योनि रूप हुई उस पर ज्योतिर्लिङ्ग स्थापित किया गया उसके बाद विश्व में शान्ति हुई वही ज्योतिर्लिंग संसार में हाटकेश्वर नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस ज्योतिर्लिंग के अर्चन आराधना आदि करने से उस लोक एवं परलोक के सुख सभी प्राप्त होते हैं।

* तेरहवां अध्याय *

(बटुकनाथकी उत्पति)

ऋषियों ने पूछा—सूतजी! आप कृपा करके अन्धकेश्वर शिव ज्योतिर्लिंग एवं अन्य भी ज्योतिर्लिंग का माहात्म्य सुनाकर हमें कृतार्थ करें। सूतजी बोले-ऋषियो! पूर्व काल में अन्धक नामका एक दानव हुआ है जो कि समुद्र के किसी गढ़े में रहता था। वह बड़ा बली अपने बल पराक्रम से उसने विश्व भर को आधीन कर रखा था इससे सारा जगत दुःखी होगया। देवतागणों ने अत्यन्त दुखित होकर भगवान शङ्कर को अनेकों प्रकार की प्रार्थनाओंसे सन्तुष्ट कर उन्हें अपना दुःख सुनाया। तब भगवान शङ्कर देवताओं को विश्वास दिलाते हुए बोले-

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

देवताओं ! मैं अवश्य ही तुम्हें पीड़ित करने वाले उस दानव का संहार करूंगा। तुम लोग अपनी सेना लेकर उससे युद्धकरने को प्रस्थान करो मैं तुम्हारे पीछे २ आरहाहूं। मेरे गण भी मेरे साथ होंगे। यह सुनकर देवता शिव आज्ञासे अपनी २ सेनाएं सजाकर उसके निवासस्थल पर पहुँच गये। देवताओं को आया जान वह दानव उसगढ़े से बाहर निकल आया, देवताओं ने उसके साथ बहुत ही भयानक युद्ध किया। जिससे वह अन्धकेश्वर युद्धसे पीड़ितहो गया और अपने गढ़े में पीड़ित होकर छिपगया। तबतो भगवान शङ्करजीने उसीगढ़ेमें उसके शरीर में अपना त्रिशूल बाँध दिया। उस त्रिशूलसे छटपटाते हुए वह दानब सदाशिवसे बोला–प्रभो ! मैंने यह सुन रखा था कि मरते समय शिव दर्शन मनुष्य को शिव रूपकर देता है। अब मैंने आपके दर्शन तो करलियेहैं। मैं भी कृतार्थहोगया। तब इस प्रकार की बात सुनकर प्रसन्न होकर सदा–शिव बोले-दानवेन्द्र ! मैं तुम्हारी इस भावना से प्रसन्न हूँ वरमाँगो। यह सुनकर वह दानव बोला-सम्भो ! यदि आप सचमुच प्रसन्न हैं तो मुझे अपनी अविचल भक्ति दें। दूसरा उसी स्थान पर आपका निवास रहे। सूतजी बोले इस प्रकार दानव के बचन सुनकर सदाशिव ज्योतिर्लिंग रूप से वहां स्थित हो गए। सूतजी बोले-इस ज्योतिर्लिंग का छः मास पर्यन्त निरन्तर पूजन करने वालोंकी सभी प्रकार की मनोकामनायें पूर्ण हो जाती हैं। वहाँ यथामति देवलोक भी हो जाता है। तब इतना सुन-कर सूतजी से ऋषियों ने पूछा-भगवान् ! देवलोक कौन होता है ? हमेंअच्छी तरह समझायें तब सूतजी बोले-सुनो ! प्राचीन कालमें दधीचिनाम के एक विप्र हुए हैं जो कि बड़े धर्मात्मा, शिवभक्त एवं सम्पूर्ण वेदोंके ज्ञाता थे। इनका एक पुत्र था जिसका नाम सुदर्शन था वह भी अपने पिता के समान सर्वगुण सम्पन्न था किंतु उसकी पत्नी उच्चकुलकी नहीं थी जिसका नाम टुकूला था। उसने आते ही अपने पिताको आधीन कर लियाथा। इसके गर्भ से चार पुत्र हुए। एकदिन सुदर्शनके पिता दधीचि को अपने जाति बालों से मिलने के लिये किसी गांव में जाना था। तब

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

उसने अपने पुत्र को बुलाकर कहा कि, पुत्र ! मुझे गाँव में कार्य वश जाना है तुम भगवान शिव का पूजन करो । इस प्रकार आज्ञा देकर दधीचि चले गये। वहाँ जाकर जातिवालों के आग्रह से कुछ समय के लिये उनको रुकना पड़ गया। इधर सुदर्शन शिव पूजन करता रहा। कुछ समय बीत जाने पर शिव-रात्रि का पर्व आगया। इस पवित्र पर्व को तो सभी नर-नारी उपवास के साथ किया करते हैं। सुदर्शन ने भी दिन को भगवान शङ्कर का विधि पूर्वक अर्चन किया फिर उसे घर जाना पड़ा। वहां उसे पत्नी ने कामवश कर लिया। जिससे उस पत्नीके साथ काम विलास करके शरीर शुद्धि के बिना ही शिव मन्दिर में पहुँच कर शिवका पूजन करने लग गया। भगवान शङ्कर तो अन्तर्यामी हैं। अप्रसन्न होकर बोले—अज्ञानी मूर्ख ! आज शिव-रात्रि का महा पर्व है। ऐसे पर्व पर भी तूने स्त्री बिलास करके अशुद्धि के साथ मेरा पूजन किया है इसलिए मैं श्राप देता हूँ कि तू मूर्ख हो जा। सूतजी बोले-इस प्रकार भगवान शङ्करके श्राप द्वारा वह सुदर्शन पागलों जैसा जड़ मतिहो गया। इस प्रकार कुछ समय बीत जाने पर इसके पिता दधीचि अपने घर लौट आये। उन्हें सब कुछ मालुम हो गया वे बहुत पछता कर बोले इसने तो अपना क्या अपने सारे कुलका अनुचित कार्य करके सर्वनाश कर दिया। अब क्या किया जाय ? तब विचार करके श्री जगदम्बापार्वती जी की आराधना प्रारम्भ की। तब दधीचिजी की विधि पूर्वक पूजन आराधनासे जगदम्बा गिरजा संतुष्ट हुई तब दधीचिजी की प्रार्थना से श्री अम्बाजीने भगवान शङ्करके चरणारविन्दों में दधीचिपुत्र सुदर्शन को पटकते हुए प्रार्थना की कि स्वामिन् ! यह सुदर्शन तो मेरा पुत्र है। यह कहकर उसे नया जनेऊ पहिना कर सोलह अक्षरों वाला शिव-गायत्री मन्त्र की दीक्षा दी। तब मातेश्वरी गिरजा की कृपासे सुदर्शन ने मन्त्र के उच्चारणों द्वारा षोडशोपचार पूर्वक शिव पूजन किया इस प्रकार पूजन से सदाशिव प्रसन्न होगये और सुदर्शन से बोले—वत्स ! अब मैं तुझ पर अतीव प्रसन्न हूँ। मेरी तुम पर पूर्ण कृपा है। मेरे में

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

समर्पण किये हुए धन, धान्य, घृत, तेल आदि सभी पदार्थ तेरेलियेहैं। इन सबका उपभोग तुम कर सकोगे तुम निरन्तर स्नान करने वाले त्रिपुण्ड (गोल) तिलकधारी, शिव संध्या गायत्री जपन कर्त्ता हो जाओ। मैंने तेरे सभी अपराध, क्षमा कर दिये। सूतजी बोले—यह कहकर भगवान शङ्करजी ने सुदर्शन तथा पुत्रों का वटुक रूप में अभिषेक किया और फिर बोले—पुत्रो! तुममें से जो भी मेरा पूजा वटुक रूप होगा वह विजय पाकर संसारमें पूजनीयहोगा। संसारमें तुम्हारे पूजन करने वाले का मैं इतना आदर करूंगा कि तुम्हारा पूजन अपना पूजन मानूंगा तुम लोग अपने कामों में लगे रहो। सूतजी बोले-ऋषियो! इस प्रकार अपने पुत्रों के साथ सुदर्शन ने शङ्कर से वरदान प्राप्त किया। अभिषेक प्राप्त करके यही सुपुत्र सुदर्शन वटुक नामसे संसार में विख्यात हुये। इस लिये शुभ अशुभ दोनों प्रकार के कर्मों से वटुक पूजा करनी चाहिये।

* चौदहवां अध्याय *

(सोमनाथेश्वर की उत्पत्ति)

सूतजी बोले—ऋषियो! भगवान शङ्कर के जितते ज्योतिर्लिंग हैं उनमें मुख्य सोमनाथजी हैं। अब इनकी महिमा सुनो। चन्द्रमाकोदक्ष प्रजापति की अश्विनी आदि सत्ताइसपुत्रियाँ पत्नी रूपमें प्राप्त हुई उन्हें पाकर चन्द्रमा की शोभा बढ़ गई किन्तु उन सबमें से रोहिनी के साथ चन्द्रमा का अधिक स्नेह था बाकी सियाँ दुःखित होकर अपने पिता के पास पहुँची अपना दुखड़ा सुनाया। वह सुनकर दक्ष चन्द्रमा के पास पहुँचकर समझाने लगे। बोले-चन्द्रदेव! आप उत्तम वंश से उत्पन्न होकर इस प्रकार की विषमता क्यों कर रहे हो? इसमें आपकी सज्जनता नहीं। एक के साथ प्रेम तथा दूसरे के साथ प्रेम न होना इससे तो नरक प्राप्त होता है। इतना कहकर दक्ष प्रजापति तो अपने घर चले आये किन्तु चन्द्रमा ने दक्ष की बात पर ध्यानहीं नहींदिया फिर यही बात लेकर कन्यायें अपने पिता के पास पहुँची उन्हें दुःखी देखकर व्याकुल होता हुआ दक्ष फिर चन्द्रमा के पास गया और बोला—चन्द्रमा पहिले मैं

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

तुमको अत्यन्त दीनता के साथ समझा--बुझा गया था किन्तु आपने मेरी बात पर कुछ भी ध्यान न दिया और मेरा निरादर कर दिया इसी कारण आप क्षीणता को प्राप्त हो जाओ दक्षके ऐसा कहने पर चन्द्रमा खिन्न एवं मलीन हो गया उसके बाद चन्द्रमा ने इन्द्र देवताओंकोप्रेरित किया तब वसिष्ठ ऋषि तथा देवता सभी ब्रह्माजी के पास पहुंचे और उन्हें चन्द्रमा के दुःख का सब वृतान्त जाकर सुनाया। सुनकर फिर ब्रह्माजी बोले-देवताओ! यह चन्द्रमा महादुष्ट है। यह गुरुदेव बृहस्पति की पत्नी तारा को भगा कर ले गया और फिर दैत्यों के पास पहुँच गया था। दैत्यों के साथ देवताओं का युद्ध करा दिया। श्री-बृहस्पतिजी तारा के लिये महा दुःखी थे। तारा को लौटानेके लिये मैंने चन्द्रमा को बहुत समझाया उसने कठिनता से मेरी बात स्वीकार की बृहस्पतिजी ने उस समय तारा को गर्भवती जानकर कहाकि इसके गर्भ में चन्द्रमा का बालकहै। जब तक वह निकलेगानहींमैंतारा को स्वीकार नहीं कर सकता तब मैंने गर्भ को दूर कराया फिर तारा बृहस्पतिजीको दिला दी। ऋषि तथा देवताओं! इस प्रकार चन्द्रमा तो अपनी दुष्टता छोड़ता ही नहीं इसके लिए मुझसे कुछ मत कहो। हां तुम्हारे कहने से एक उपाय बताताहूं यदि यह प्रभास नामक पवित्र तीर्थमें जाकर भगवान शङ्कर का पूजन करे। इस प्रकार आराधन करता हुआ महा-मृत्युञ्जन जप करे तो सन्तुष्ट होकर शङ्कर अवश्यही इसका मङ्गलकरेंगे इसकी क्षीणता का दुःख निवृत होगा। ब्रह्माजीका वचन सुनकर देवता तथा ऋषि चन्द्रमा के पास आये। फिर चन्द्रमा को अपने साथ लेकर प्रभास क्षेत्र में पहुंचे तब सरस्वती आदि तीर्थों का आवाहन कर मृत्यु-ञ्जय विधान के साथ २ भगवान् शङ्कर का पूजन कराया इसके बाद छः महीने तक दृढ़ आसन पर बैठकर चन्द्रमा मृत्युञ्जयजपनकेद्वाराजपनकरने लगा। दश करोड़ तक महामृत्युञ्जय जपन किया तब तो प्रसन्न होकर शङ्कर चन्द्रमाके सामने प्रगट होकर बोले-चन्द्रमा! मैं तुम पर प्रसन्न हो गया हूं अपना मनवाँछित वर माँगलो चन्द्रमा बोला-स्वामिन! यदि

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

आप सचमुच ही मुझ पर प्रसन्न होकर बर देते हैं तो कृपाकरके मुझेयह बर दें कि मेरा यह क्षय दोष दूर हो जाय। तब भगवान् शङ्करजी बोले-चन्द्रमा तुम्हारा दक्ष प्रजापति का श्राप तो नहीं हटाया जा सकता इतना मैं कर सकता हूं कि कृष्ण पक्ष के पन्द्रह दिनों तक तो तेरी कलायें क्षीण होती रहेंगी और शुक्ल पक्ष के पन्द्रह दिनों तक क्रमसे बढ़ती रहेंगी भगवान शङ्कर के इस प्रकार के कथन से चन्द्रमा को आशीर्वाद हुआ और देवगण भी प्रसन्न होते हुए वहां आगये चन्द्रमा को आशीर्वाद देकर हाथ जोड़कर शङ्कर से प्रार्थना करने लगे कि हम आपको प्रणाम करते हैं। फिर कहा-हे प्रभो! आप श्री पार्वतीजीके साथ इसी स्थान पर निबास करें। इस प्रकार देवताओं की प्रार्थना से शिव वहाँ विराजे तभी से सोमेश्वर नाम से वहाँ प्रसिद्ध हुये। देवताओं ने मिल कर एक कुण्ड भी बहाँ बना दिया जिसका नाम चन्द्र कुण्ड हुआ इस कुण्ड के स्नान से सभी पाप छूट जाते है।

* पन्द्रहवां अध्याय *

(मल्लिकार्जुन की उत्पत्ति)

सुतजी बोले—ऋषिगणो ! अब मैं आपको मल्लिकार्जुन शिवज्योतिर्लिंग की उत्पत्ति बतलाता हूं। श्री पार्बतीजी के बड़े पुत्र कार्तिक स्वामीजी जब पृथ्वी भर की परिक्रमा करके वापिस आये तो मार्ग में कैलाश पर ही श्री नारदजी ने उनको बहका दिया और कहा कि तुम्हारे पिता भगवान शङ्कर ने तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया। तुम्हें तो पृथ्वी परिक्रमाके लिये भेज दिया फिर पीछे छोटे पुत्र गणेशजी का बिवाह कर दिया। इस प्रकार नारदजी के बचन को सुनते ही स्वामी कार्तिक क्रोध में आ गये। फिर तो माता पार्वती तथा भगवान शँकर के आग्रह के साथ रोकने पर भी न रुके क्रौंच पर्बतपर चले गये। पुत्र वियोग में श्री पार्वतीजी ब्याकुल होकर बिलखने लगीं फिर मनुष्यों की भाँति शँकर भगवान भी दुःखित हुए, तब श्री शिव तथा पार्वती दोनों ही पुत्र दुःख में कातर होकर क्रोच पर्वत पर पहुँचे।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

तथा पार्वती दोनों ही पुत्र दुःख में कातर होकर क्रौंच पर्वत पर पहुँचे। जब कुमार ने सुना कि श्री पार्वतीजी के साथ स्वयं सदाशिव मुझे देखने को आ रहे हैं, तब तो वहाँ से भी सौ योजन दूर चले गये तब कुमारजी का वहाँ से चला जाना सुनकर भगवान शङ्कर श्री पार्वती के साथ ज्योतिर्लिंग रूप होकर वहाँ ही विराजमान हो गये। तभी से उस ज्योतिर्लिंग का नाम मल्लिकार्जुन प्रसिद्ध हुआ।

* सोलहवां अध्याय *

(महा कालेश्वर उत्पत्ति)

सूतजी बोले— ऋषिगण! अब मैं महा कालेश्वर शिव ज्योतिर्लिंग का वर्णन करता हूँ। अवन्तिका नामक पुरी में शिव के परमभक्त बुद्धिमान् एक ब्राह्मण रहते थे। वे नित्य ही विधिपूर्वक पार्थिव शिवपूजन किया करतेथे। शिवजी की कृपासे उस विद्वान वेदज्ञ विप्र को धन-धान्य की कमी नहीं थी। सभी प्रकार के सुख भोग कर अन्त में उन्होंने शिव लोक गति प्राप्ति की। उनके चार पुत्र थे-देवप्रिय मेधाप्रिय, सुकृत एवं धर्मबाहु यह उनके नाम थे। इन चारों के आचार-विचार अपने माता-पिता के समान थे। वहीं उनके पास रत्नमाला नाम का एक पर्वत था, उस पर दूषण नाम का एक राक्षस रहता था, उसने तप द्वारा ब्रह्माजीको प्रसन्न करके वर पा लिए थे, तभी से वह धर्म का दोषी बन गया। धर्म का नाश करने लगा, अपने बल से सभी देवता तथा दोनों लोकों को अपने आधीन कर लिया। इस प्रकार वह एक दिन अवन्तिकापुरी में आ पहुँचा तब अपने मुख्य-मुख्य चार दानवों को बुलाकर उसने कहाकि प्रिय दानवो! मैंने अपने बल से त्रिलोकी को अपने वश में कर लिया है। किन्तु शिव-भक्त ब्राह्मण अभी तक मेरे आधीन नहीं होरहे। इसलिये तुम जाकर सभी ब्राह्मणों को इकट्ठा करो, उन्हें मेरी आज्ञा सुनाओ, जो मेरी आज्ञा पर चलें तो उनसे कुछ न कहो और जो विरुद्ध हो उसे दण्ड दो। इस प्रकार उस दैत्य दूषण की आज्ञा से वे चारों दानव पुरी के अन्दर जाकर उपद्रव मचाने लगे। किंतु ब्राह्मणों पर उनकाकुछ

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

भी प्रभाव न पड़ा। प्रजा के लोग दुःखित हो गये। ब्राह्मणों के पास जाकर प्रार्थना करने लगे। ब्राह्मण देवताओं! हम आपकी शरण में हैं। मालूम नहीं ये महापापी,दुराचारी दानव कहाँ से आकर नगर भर में उपद्रव मचा रहे हैं। इन्होने बहुत से नगर-निवासियों को मारदिया है हमारी रक्षा करो। ब्राह्मण बोले-हममें इतना पराक्रम नहीं और न हमारे पास कोई अस्त्र-शस्त्र है जिसके द्वारा हम इन्हें मार या डरा सकें। हम तो भगवान शङ्करजी का आश्रय लेकर ही यहाँ पर आये हुएहैं और वे भगवान शङ्करजीहीहमारी रक्षा करेंगे। इतनाकहवहचारों ब्राह्मणकुमार अन्य ब्राह्मणों को साथ लेकर नियम पूर्वक शिव-पूजन में लग गये। इतने में वे चारों दैत्य वहाँ पहुंच गये। वहाँ नगर निवासी तथा ब्राह्मणको देखकर बोले-पकड़ो पकड़ो इन सबको मार डालो। किन्तु ब्राह्मण तो निर्भय होकर शिवपूजन में लग गये। दानवगणज्योंहि ब्राह्मणों को पकड़ने के लिये आगे बढ़े तब झटपट पार्थिवलिंग के नीचे की भूमि भयङ्कर शब्द करके फटगई तब शङ्करभगवान भयङ्कर शब्द करके वहाँ से प्रकट हो आगए तबतो अपने भक्तों की रक्षा करने के हेतु उन दैत्यों को, दैत्यों की सेना तथा दूषण दैत्योंको केवल अपने हुँकार शब्द से ही मार दिया। भगवान शङ्करजी के इस अद्भुत चरित्र को देखकर मुनि तथा देवता सभी प्रसन्न हुए, आकाश से पुष्पवर्षा होने लगी। तव श्री भगवान शङ्कर ने ब्राह्मण-पुत्रों से कहा कि तुम वर मांगो। ब्राह्मण-पुत्रबोले–स्वामिन! आप प्रसन्न हैं तो हमारा आवागमन छुड़ाकर अपने चरणों में स्थान दो और आप यहाँ सदाँ के लिये निवास करो, आपके दर्शन करने वालों की मनोकामना पूर्ण होती रहे। सूतजी वोले- तव इस प्रकार ब्राह्मणों को वर देकर सदाशिव वहाँ महाकालेश्वर नाम से विराजमान हुए।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* सत्रहवां अध्याय *

(महाकाल महिमा)

सूतजी बोले-ब्राह्मणो ! श्री महाकालेश्वरजी की उत्पत्ति तो मैंने आपको सुना दी अब उनकी महिमा सुनाता हूँ । उज्जेन नामक नगरी में चन्द्रसेन राजा थे । इसी चन्द्रसेन राजा की सदाशिव के मुख्य सेवक मणिभद्र के साथ घनी मित्रता थी । एक वार मणिभद्रजी चन्द्रसेन राजा पर प्रसन्न हो गये, तव राजाके प्रति उन्होंने अपनी सूर्य के समान चमकती कौस्तुभ मणि प्रदान करदी । तब तो वह राजा उस मणि को गले में धारण करके सूर्य के समान चमकने लगा । उस मणि को राजा के पास देखकर अन्य राजा ईर्षा करते हुए अनेक उपायों से मणि को हथियाने की चेष्टा करने लगे । राजा के पास आकर उन्होंने वह मणि माँगी भी राजा ने सभी को फटकार दिया तव क्रोध में आकर राजाओं ने युद्ध की तैयारी करली । अपनी अपनी चतुरङ्गिणी सेना लेकर राजा पर चढ़ाई करदी । यह देखकर उस राजा ने महाकालेश्वर महादेवज की शरण ली । ठीक उसी समय एक गोपी आई, उसकी गोद में पांच वर्ष का बालक था । गोपी विधवा थी । वह दोनों वहाँ बैठकर राजा सहित शिव-पूजन को देखने लगे । राजा द्वारा शिव-पूजन को भली भाँति देखकर उस बालक को लेकर गोपी अपने घर चली आई । उस पाँच वर्ष के बालक के मनमें आया कि मैं राजा की भांति शिव-पूजन करूँ, तब तो कहीं से वह पत्थर ढूंढ़ लाया, उसे घर में स्थापित करके गन्ध, पुष्प, धूप, नैवेद्य आदि का मनमें विचार करके वैसे ही पूजन करने लगा, इतनेमें गोपीने स्नेह करके उसे भोजन के लिये बुलाया । परन्तु बालक तो शिव पूजन कर रहा था । माताको क्या मालूम था कि बालक क्या कर रहा है बालक ने माता का बुलाना सुना ही नहीं, तब माता बालक के लिए स्वयँ वहां पहुँची तो देखाकि बालक आंखें बन्द किए आसन पर बैठा है । गोपी ने उसे पकड़ कर खींच लिया और उसे फटकारने लगी; बालक के सामने रखे हुए पूजाके

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyan Kosha

पत्थर को उठाकर कहीं फेंक दिया और उसे खींचकर घरमें ले गई तब तो वह पांच साल का बालक व्याकुल होकर शिव-शिव करताहुआदुःखी होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा और उसके होश जाते रहे। उसकी माता ने जब पुत्रकी यह दशा देखी तो उसके भी होश जाते रहे। कुछ समय बीत जाने पर जब बालक को चेतना आई और उसने आँखें खोलकर देखा कि मैं महाकाल भगवान शिव के अत्यन्त सुन्दर मन्दिर में बैठा हूँ और इस मन्दिर के मध्य में सदाशिव का रत्नमय ज्योतिर्लिंग स्थिर है। ऐसा देखकर आश्चर्य करता हुआ वह सदाशिव को बारम्बार प्रणाम एवं प्रार्थना करता हुआ अपने मनमें अत्यन्त प्रसन्न हुआ और भगवान शिव का ध्यान करता वह अपने घर की ओर गया। वह अपने रहने का बहुत सुन्दर घर देखकर वह आश्चर्य में पड़ गया, फिर माता की ओर देखा उसकी माता तो अमूल्य भूषण धारे रत्नजड़ित पलङ्ग पर सो रही थी। तब बालक ने प्रसन्न होकर माता को जगाया और उस सदाशिव की प्रसन्नता का समाचार सुनाया। गोपी यह सुन तथा देखकर प्रसन्न होगई। इधर जब राजा के शिव-पूजन का नियम पूर्ण हुआ तो गोपी पर शङ्करजी की कृपा का समाचार राजा को मालूम हो गया, राजा भी अपने मन्त्रियों को साथ लेकर गोपी के घर पहुंचा। वहाँ भगवान शङ्कर की कृपा का प्रभाव देखकर उसके आश्चर्य की सीमा न रही। राजा एवं अन्य लोगों ने मिलकर रातभर बड़ा भारी उत्सव किया। प्रातःकाल यह समाचार नगर भर में फैल गया। गोपी के घर भगवान शङ्करजीका दर्शन करने नगर भर के लोग आने लगे। चन्द्रसेन राजा पर चढ़ाई करने वाले राजाओं ने भी यह बात सुन ली। उन्होंने मान लिया कि इस उज्जैन नगरी पर सदाशिव की कृपा है इस नगरी का महाराज चन्द्रसेन महाकालेश्वर शङ्कर का परम भक्त है, इसको हम कभी भी नहींजीत सकते। इसके साथ मित्रता कर लेने में ही हमारा कल्याण है। इसप्रकार विचार करके अपने अस्त्र शस्त्रादि त्यागकर राजा लोग गोपी के घरशङ्कर के दर्शन करने चले गये, वहां बालक की भक्ति सदाशिव का ज्योतिर्लिङ्ग

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

देखकर सभी आनन्दित हुए। राजाचन्द्रसेनजी के साथ भी उनकी मित्रता होगई तब वहां श्री हनुमानजी प्रत्यक्ष रूप से प्रगट होगये जिनकी समस्त देवता पूजाकिया करते हैं। उनके दर्शन करके सभी राजा लोग चकित होकर प्रेमपूर्वक उनकी पूजा करने लगे। इसके बाद श्रीहनुमानजी ने गोपी के बालकको उठाकर अपने गले से लगाया फिर राजाओं की ओर देखकर बोले—राजाओं तथा मनुष्यगण! सभी चराचर प्राणियों कल्याणकर्त्ता तो सदाशिव हैं। देखो इस गोपी के बालक ने केवल राजा चन्द्रसेन को पूजा करते देखा था। उसने अपने घर आकर उसी विधि से केवल पूजन का अनुकरण किया है उसका परिणाम आप लोगों के सामने है इसका परम कल्याण हुआ है। इस लोक में सभी सुख भोगकर अन्त में यह मोक्षपद प्राप्त करेगा- इसके कुल में आठवाँ महायज्ञ पुरुष होगा, जिसका नाम नन्द होगा वह बड़ा धर्मात्मा होगा उसके घरमें विष्णु भगवान का अवतार होगा और वह नन्द के पुत्र श्रीकृष्ण होंगे और आज से इस गोपकुमार की श्रीकर नाम से प्रसिद्धि होगी। इतना कहकर श्री हनुमानजी सभी के देखते-देखते वहाँ अन्तर्धान होगये। आये हुए सभी राजाओंका चन्द्रसेन महाराज ने सत्कार किया। राजा लोग प्रसन्न होकर अपनी-अपनी राजधानियों में चले गये। उसके बाद ब्राह्मणों के साथ श्रीकर तथा चन्द्रसेन महाराज ने भगवान् महाकालेश्वर शङ्करजी को श्री महादेवजी की आज्ञानुसार विधि पूर्वक पूजन आराधना करना आरम्भ किया। इस लोक के सुख आनन्द भोगकर अन्त में सबको मोक्ष प्राप्त हुआ।

* अठारहवां अध्याय *

(ओंकारेश्वर महिमा)

सूतजी बोले-विप्रगण प्राचीककालमें श्रीनारद मुनि ने गोकर्ण नाम भगवान शङ्कर का पूजन किया। उसके बाद वे विन्ध्याचल पर्वत पर पहुँचे। विन्ध्याचल ने श्री नारदजी का भली प्रकार सत्कार एवं पूजन

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

आदि किया। इसके बाद विन्ध्याचल को अभिमान होगया। इस प्रकार बातें करता हुआ श्रीनारदजी के सामने आकर बैठ गया। तब नारद जी बोले—इसमें सन्देह नहीं कि सारे पर्वत तुम्हारे में व्याप्त हैं। किन्तु सुमेरु नहीं। यह तो सब पर्वतों से मुख्य है। तुम सभी गुणों से सम्पन्न होकर भी उसके सामने छोटे हो। सूतजी बोले—इस प्रकार श्री नारदजी वहां से कहकर चले गये। श्री नारदजी के वचन सुनकर विन्ध्याचल व्याकुल होकर अपने आपको धिक्कारने लगा। और बोला-मेरा जीवन तो व्यर्थ हैं मैं निन्दा का पात्र हूँ। अब मैं अपने आपको सुधारने के हेतु भगवान शङ्कर का पूजन तथा प्रसन्न करने के लिये तप करूंगा। इस प्रकार विचार करके उसने ओंकारेश्वर के पास पहुँच कर शङ्करजी का पार्थिव लिङ्ग बनाया। उसे स्थापित करके छः महीने तक निरन्तर उसी के द्वारा विधिपूर्वक शिव-पूजन करके शिव ध्यान में संलग्न होकर तप करता रहा। उसके बाद तप द्वारा प्रसन्न होकर सदा शिव प्रगट होगये और बोले-विन्ध्याचल! मैं तुम पर प्रसन्न हूं। मनो वाँन्छित वर माँगो। तब विंध्या ने साष्टाङ्ग प्रणाम करके कहा—हे स्वामिन् शिव शङ्कर! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो मेरी बुद्धि को शुद्ध करके श्रेष्ठ विचार प्रदान करें। यह सुनकर सदाशिव बोले—विंन्ध्या तुम्हारी मनो कामना पूर्ण होगी। इसके बाद वहां ऋषिगणों ने आकर शिव-पूजन किया फिर आराधना करके प्रार्थना करने लगे-प्रभो! आप कृपा करके यहां विराजमान हों। भगवान शङ्कर ऋषियों की प्रार्थना के अनुसार जगत के कल्याण के लिये परमेश्वर नाम से वहां विराज गये और इसी नाम से प्रसिद्ध हुए। ऋषियो! ओंकारेश्वर तथा परमेश्वर ये दोनों भिन्न हैं किन्तु हैं एक ही ये दोनों ही स्वर्ग मोक्षादिक फल देने वाले हैं। इसके बाद ऋषिगण भगवान शङ्करजी से अनेकों वर पाकर अपने-अपने स्थानों पर चले गये विन्ध्याचल ने भी अपना कार्य सिद्ध किया।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* उन्नीसवाँ अध्याय *

(केदारेश्वर महिमा)

सूतजी बोले-भगवान् के अवतार रूप नारायण हैं बद्रिकाश्रममेंजाकर तपकिया भगवान् शङ्कर उनकी प्रार्थना से नित्य ही वहां पार्थिवलिंग रूप में प्रकट होकर नारायणजी के पूजन को अङ्गीकार करते रहे। इस प्रकार बहुत सा समय व्यतीत होगया। तब प्रसन्न होकर भगवान शिव ने नर-नारायण से वर मांगने के लिये कहा। उन्होंने सुनकर कहा कि स्वामिन ! यदि आप ! प्रसन्न हैं तो हमारी प्रार्थना से आप साक्षात् स्वरूप से यहाँ सदा विराजमान हों। तब भगवान शङ्कर नर-नारायण की प्रार्थना से वहां ज्योतिर्लिंग रूप से सदा के लिए विराजमान हो गये। संसार में केदारेश्वर नाम से प्रसिद्ध हुये। यहाँ दर्शन एवं पूजने से भगवान् शङ्कर सभी कीमनो-कामना पूर्ण करतेहैं। एक समय पाण्डवों ने आपको महर्षि रूप में देख लिया। उसी महर्षि रूप में आप पाण्डवों के देखते २ भाग पड़े। पाण्डवों ने भागकर आपकी पूंछ पकड़ली और उन्हें शङ्करजी जानकर प्रार्थना की—स्वामिन ! आप यहां सदा के लिये विराजमान हों। हम आपका पूजन करते रहेंगे। तब पाण्डवों की प्रसन्नता के लिये आप वहां विराजमान हो गये। तब विधि पूर्वक पाण्डवों ने उनका पूजन किया। जिससे उनके सभी सङ्कट निवृत हुये और अपनी इच्छानुसार फल प्राप्त किया। ऋषि गणों। तभी से अपने भक्तों की इच्छाय शङ्कर पूर्ण किया करते हैं। जो पुरुष आवागमन के चक्र से छूट कर मोक्ष पाना चाहेतो उन्हें केदारेश्वर भगवान का दर्शन एवं पूजन अवश्य करना चाहिये।

* बीसवां अध्याय *

(भीम उपद्रव का वर्णन)

सूतजी बोले-ऋषियो ! पवित्र चरित्र सुनाता हूँ एक समय रावण के छोटे भाई कुम्भकर्ण ने जाकर कर्कटी नामक राक्षसीसे भीमनामकदानव उत्पन्न किया था। उसके बाद अयोध्या के अधिपति श्री रामचन्द्रजी

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

ने लङ्कापर चढ़ाई की थी। उसी युद्ध में कुम्भकर्ण का वध कर दिया था तव कुम्भवर्ण की पत्नी कर्कटी राक्षसी अपने पुत्र भीम को लेकर सह्य पर्वत पर चली गई थी। कुछ समय के बाद जब भीम बड़ा हुआ तो उसने अपनी माता से पूछा कि माताजी! आप सत्य कहिये कि आप यहाँ अकेली क्यों रह रही हो। मेरे पिताजी कहाँ हैं और कौन हैं? इतना सुनकर कर्कटी ने कहा-पुत्र! तुम्हारे पिता तो महावली रावण के छोटे भाई कुम्भकर्ण थे। इससे पहिले मैं विराध राक्षस की पत्नी थी विराध को श्रीराम ने वध कर दिया था। मैं अत्यन्त दुःखी हो गई थी। उसके बाद मैं अपने माता-पिता के यहां चली गई थी। दुर्भाग्य ने वहां पर भी मेरा पीछा नहीं छोड़ा। एक दिन मेरे माता-पिता अगस्त्य ऋषि के शिष्य को खाने के लिये आश्रम पर गये। वे लोग वहीं मुनि के श्राप द्वारा भस्म हो गये। मैं फिर अकेली होगई। इसी पहाड़ पर आकर रहने लगी। यहीं पर पराक्रमी कुम्भकर्ण आये। मुझसे संभोग किया। उसी के द्वारा तुम्हारी उत्पत्ति हुई। तव इस प्रकार माता के शब्द सुनकर भीम दानव को विष्णु भगवान् से द्वेष उत्पन्न हो गया। विष्णु से बदला लेने की ठान ली। तप करने लग गया। उसने एक हजार वर्ष तक ब्रह्माजी को प्रसन्न करने के लिए कठोर तप किया। उसके द्वारा उसके मस्तक से भयङ्कर तेज निकलकर संसार को पीड़ित करने लगा। तव देवताओं ने जाकर भीम को वर देने के लिये ब्रह्माजी से प्रार्थना की। ब्रह्माजी ने भी भीम के पास पहुंचकर उसे वर माँगने के लिए कहा— ब्रह्माजी के वचन सुनकर भीम प्रणाम करके बोला—पितामह! यदि आप प्रसन्न हैं तो मुझे अत्यन्त बलवान होने का वर दें। तव ब्रह्मा ने तथास्तु कहकरउसे वर दे दिया। वर पाकर प्रसन्न होता हुआ भीमअपने स्थान पर पहुंचा। अपनी माता को प्रणाम करके बोला-माताजी! अव तुमको दुःखी नहीं होना चाहिये। मैं अब शीघ्र ही विष्णु की सहायता करने वाले इन्द्र आदि देवताओं के साथ विष्णु का बध करके पिताजी का बदला चुकालूंगा। इस प्रकार माता को समझाकर भीम वहाँ से चल

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

दिया। उसने जाकर देवताओं से घोर युद्ध किया और सभी देवताओंको जीतकर स्वर्ग से बाहिर निकाल दिया। इसी प्रकार देव श्रेष्ठ विष्णु को भी पराजित कर दिया। उसके बाद सारे विश्व को आधीन करने के लिये दक्षिण की ओर कामरूप देश के राजा के पास युद्ध करने पहुँचा। वहां घोर संग्राम करके विजय पाई। और राजा को कैद कर लिया और उसका राज्य खजाना आदि सभी कुछ अपने आधीन कर लिया। राजा अत्यन्त दुःखी होकर जेल खाने में ही शिव पूजन करने लगा। उसने एक पार्थिव शिवलिंग बनाकर वहाँ स्थापना की। इसका पूजन आदि करके ॐ के साथ पंचाक्षर मन्त्र "ॐ नमः शिवाय" इसका जप करने लग गया। उधर उसकी दक्षिणा नामक पतिव्रता पत्नी भी पति के छुटकारे के लिए पार्थिव सदाशिव का विधि पूर्वक पूजन करने लगीं। दानव भीम तो अभिमान में चूर २ होकर यज्ञ उपासना आदि धर्म कर्म पुण्य आदि सभी का विनाश करने लगा। तब भीम दानव के इस प्रकार के उपद्रवों से दुखित होकर विष्णु आदि सभी देवताओं ने महाकेशी नदी के किनारे जाकर सदाशिव के के पार्थिवलिंग की स्थापना की उसकी विधि पूर्वक पूजा आदि करके अनेकों प्रकार से स्तुति आराधना आदि भी की। देवताओं की प्रार्थना से सन्तुष्ट होकर सदाशिव वहाँ प्रत्यक्ष होकर बोले—देवताओ तथा ऋषियो ! अब इस समय आप लोगों को क्या दुःख हैं ठीक २ सुनाओ ? मैं सभी प्रकार के सङ्कटों से तुम्हारी रक्षा करूंगा। देवताओं ने कहा, कि स्वामिन ! कर्कटी नाम राक्षसी के गर्भ से कुम्भकरणके वीर्य द्वारा उत्पन्न भीम नामक दानव संसार को विनाश करने पर तुला है। उस दुराचारी ने कठोर तप करके ब्रह्माजी से वर पा लिया है। जिससे कि वह अभिमान में आकर नाना प्रकार के उपद्रव कर रहा है। सम्पूर्ण धर्म कर्म आदि का नाश करताजा रहा है। स्वामिन शीघ्र ही उसका वध करके आप धर्म की, संसार की और हमारी रक्षा करो। यह सुन कर भगवान शिव बोले—देवगण ! मैं तुम्हारा यह काम शीघ्र ही करूंगा। तुम लोग इस समय मेरे परम भक्त

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

कामरूप देश के राजा से जाकर कहो कि तुम चिन्ता मत करो। भगवान शङ्कर अत्यन्त शीघ्र ही तुम्हारे बैरी भीम का नाश करेंगे। यह सुनकर शिव आज्ञा से सभी देवता कामरूप देश में गये और भगवान शङ्कर की आज्ञा सुनाई।

* इक्कीसवां अध्याय *

(भीमेश्वर उत्पत्ति)

सूतजी बोले—ब्राह्मण गण! उसके बाद भगवान शङ्कर अपने गणों के साथ कामरूप देश में जाकर राजा के पास छिपकर रहने लगे। किन्तु राजा तो शिव ध्यान में संलग्न था इधर किसी ने जाकर दानव भीम से कहा कि दानवराज! आपके मारने के लिये राजा छुपी तौरसे कुछ अनुष्ठान आदि उपाय कर रहा है। तब तो भीम क्रोध में आकर राजा के पास पहुँचा और बोला—दुष्ट! तू किस प्रकार के ध्यान में संलग्न है और किस अभिप्राय से कर रहा है? सच २ बता नहीं तो देख यहाँ तलवार मेरे हाथ में है। इसी के द्वारा तेरा बध निश्चय है। तब उस दैत्य की इस प्रकार की बात सुनकर मन-ही मन में राजा ने शिव से प्रार्थना की कि स्वामिन अब मेरी रक्षा आपके आधीन है मुझे आपकी ही शरण का आश्रय है। इस प्रकार प्रार्थना करके निर्भय होकर राजा ने दानव को फटकारते हुए कहा—कि दैत्य! मैं तो जगत की रक्षा करने वाले भगवान शिवजी की आराधना कर रहा हूँ यह सुनकर अभिमानी भीम ने कहा—नीच राजा! उस शिव को मैं भली-भाँति जानता हूं जिसके आश्रय से तू मुझे जीतने की इच्छा कर रहा है वह तो मेरा बालबाँका नहीं कर सकता। उसका तू पूजन आराधना करना छोड़ दे नहीं तो तुम्हें भारी दण्ड दिया जायगा। राजा बोला—क्या मैं अपने रक्षक स्वामी की आराधना करना छोड़ दूंगा? यह तो कभी नहीं होगा। यह सुनकर उस दानव ने क्रोध में आकर अपनी तलवार शिव निन्दा करते-करते पार्थिव शिव लिंग पर चला दी, उसी समय पार्थिव लिंग

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

से सदाशिव प्रकट हो गये। उस दैत्य की चलाई तलवार को पकड़ कर तोड़कर गिरा दिया। तब दैत्य के चलाये त्रिशूल ने भी अपने त्रिशूल द्वारा सैकड़ों टुकड़े कर दिये उसकी शक्ति के भी अपने बाणों द्वारा लाखों टुकड़े करके गिरा दिये। इधर शिव-गणों ने दानव की सेना के साथ घोर संग्राम किया। उस संग्राम से तो पर्वत वन एवं समुद्र के साथ भूमण्डल भी काँप उठा। ऋषि तथा देवतागण भी आश्चर्य में आकर व्याकुल हो गये। उस समय नारदजी ने आकर हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि स्वामिन आप अब अत्यन्त शीघ्र इस दैत्य का वध करें। तब नारद जी की प्रार्थना से सदाशिव जी ने हुँकार शब्द किया। अग्नि की ज्वाला प्रकट हुई। वह ज्वाला एक वन से दूसरे वन में प्रवेश करते २ सेना के साथ उस भीम दैत्य को भस्म कर गई। ब्राह्मण गण! उसी भस्म के द्वारा उस वन में अनेकों प्रकार की औषधियाँ उत्पन्न हो गई। जो कि समस्त प्रकार के रोगों को नाश करके सब का मङ्गल करने वाली हैं। उसके बाद ऋषि एवं सभी देवता भगवान शङ्कर के पास पहुँचे और बोले-नाथ! चराचर जगत के कल्याण करने के लिये आप सदा के लिए वहाँ विराजें। इस प्रार्थना से शिव वहाँ सदा के लिये स्थिर हुए। तभी से उनका नाम संसारमें भीम शङ्कर हुआ।

* बाईसवाँ अध्याय *

(काशीपुरी में शिवागमन)

सूतजी बोले-सत्य सनातन बिकार रहित सदाशिव ने स्त्री-पुरुष के भेद से स्वरूप धारण करके प्रकृति तथा पुरुष को पैदा किया। उसने विचार किया कि हमारे माता-पिता कौन होंगे जो कि दिखाई नहींदेते? तब तो वह बहुत व्याकुल हुए, इतने में आकाशवाणी हुई कि तप करने से जगत उत्पन्न होता है, इसी कारण तुम भी तप करो। तब दोनों बोले-स्वामिन! तप तो हम करें पर कहाँ बैठ कर करें, हमें तो कहीं स्थान नहीं दिखाई देता? सूत जी बोले-प्रकृति पुरुष! अभी इस प्रकार

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

प्रकाशमय परम सुन्दर एक नगर रचकर उन दोनों के सामने उपस्थित कर दिया। तब दोनों शिव स्मरणकरके उस नगर में तप करने लगगये इस प्रकार तप करते २ उन्हें बहुतसा समय हुआ। तब अधिक परिश्रम के कारण उनके शरीर से पसीने की बूंदें निकल आयीं तब उन्होंने बिस्मत होकर सिर हिलाया तो उनके कान से एक मणि टपक पड़ी इसी कारण इस स्थान का नाम मणि-कर्णिका नामसे प्रसिद्ध हुआ। वह परम पवित्र तीर्थ है, पाँच कोस का विस्तीर्ण वह नगर जल के प्रवाह में बहने लगा! उस समय भगवान सदाशिव ने अपने त्रिशूल की नोंक पर उसे दृढ़ कर लिया। उसके बाद तप के अधिक परिश्रम के कारण भगवान बिष्णु तथा उनकी पत्नी प्रकृति उसी नगरमें सो गये तबभगवान शङ्कर की प्रेरणा हुई तो भगवान विष्णुजी की नाभि कमल से ब्रह्माजी प्रगट हो गये। ब्रह्माजी ने सृष्टि की रचना आरम्भ करदी। पचास करोड़ योजन लम्बा तथा इतना ही चौड़ा ब्रह्माजी ने ब्रह्माण्ड रचडाला। जिस में अद्भुत से चौदह लोक निर्मित थे। तब भगवान शङ्करने विचार किया कि सम्पूर्ण जीवतो कर्मों के बन्धनों में जकड़े रहेंगे तो वे मुझे किस प्रकार पा सकेंगे? ऐसा सोचकर उन्होंने अपने त्रिशूलसे पाँचकोस नगरी उतार कर ब्रह्माण्ड से अलगरखी फिर उसी में अपनी अविमुक्ति ज्योति लिंगकी स्थापना करदी। तब मुक्ति की अभिलाषा वालों को इस काशी का सेवन करना चाहिए इस प्रकार की आज्ञा शङ्करजी ने की। ब्राह्मणो! काशीजी तो ब्रह्माजी के दिन व्यतीत करने पर भी प्रलय काल में नष्ट नहीं होगी। करोड़ों प्रकार की हत्यादिकों के पाप महापाप इसी के सेवन से नाश हो जाते हैं। मोक्ष देनेमें तो यहपुरी प्रसिद्ध एवं सर्वश्रेष्ठ है। इसकी महिमा सहस्त्रों वर्ष तक तो कही नहीं जा सकती। सूतजी बोले–यह तो मैं संक्षेप में अपनी बुद्धि के अनुसार कुछ कहता हूँ जो परमात्मा समस्त प्राणियों के मध्यमें तो सत्वरूप से है और बाहिर तामस रूपसे है वही कैलाश के स्वामी हैं तब सत्वादिगुण युक्त होते हुए भी गुणातीत कालाग्निरूप रुद्रजी ने स्तुति करते हुए कहा-स्वामिन

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

विश्वनाथ ! मैं आपके अंशसे उत्पन्न हूँ। आप मुझ पर कृपा करें, जगत का कल्याण करना आपके आधीन है, इसी निमित्त से मातेश्वरी श्रीपार्वतीजी के साथ इस पवित्र काशीपुरी में आप सदाके लिये विराजें। हे ऋषियों ! तब विश्वनाथ शङ्कर श्रीरुद्रजी की प्रार्थना से जगत के कल्याण के लिए उसी काशीपुरी में विराजमान हुए।

* तेईसवां अध्याय *

(श्री विश्वेश्वर महिमा)

सूतजी बोले-मुनियो ! अब श्रीकाशीजी में स्थित अविमुक्त शिव लिंग की महिमा आपको सुनाता हूँ। इसकी महिमा तो एक बार श्री पार्वतीजी ने सदाशिवसे पूछी थी। इस विषय में भगवान् शङ्करजी ने श्री पार्वतीजीसे कहा था। शङ्करजी बोले—हे प्रिये ! समस्त प्राणियों का भक्ति देने वाला ही सर्व श्रेष्ठ यह काशी धाम है। यह मेरा ही स्थान है यहीं सिद्धपुरुष आकर मेरे नियमों के अनुसार आचरण करते हुए मेरे अनेकों रूपों का वर्णन करते हैं। कल्याणी ! मेरे भक्त तथा ज्ञानी जन अन्य तीर्थों पर जायें या न जायें किन्तु काशी तो दोनोंको मोक्ष देने वाली है। ये चाहे कहीं भी मृत्यु को प्राप्त करे किन्तु इनके लिये मुक्ति तोसिद्ध है। इसपुरीमें किसी भी अवस्थाके मनुष्य की मृत्युहो उसको मोक्ष प्राप्त होजातीहै। स्त्री चाहे शुद्ध हो या अशुद्ध सुहागन हो या विधवा वन्ध्या हो या रजस्वला कन्या हो या प्रसूता ऐसी संस्कार रहितकी भी मुक्ति होजातीहै। वहकेवल इस क्षेत्र में आकर मृत्यु प्राप्त करे। यहाँ न किसी उत्तम जाति, वर्ण, ज्ञान, कर्म, दान, संस्कार, स्मरण-मेरा भजन पूजन आदि किसीकी भी आवश्यकता नहीं है इसमें तो केवल आकर मृत्यु प्राप्त कर लेना ही पर्याप्त है मुक्ति तो उनके लिये स्वतः सिद्ध है। उमे ! यह मेरा काशीधाम अत्यन्त गोप्य है। ब्रह्मा, विष्णु आदि देवता भी इसकी महिमा नहीं जान सकते। जिस मुक्ति के लिए योगीजन अनेकों जन्मों को पाकर कठिन तपस्या किया करते हैं, वही मुक्ति यहां

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyan Kosha

केवल शरीर त्यागने से ही प्राप्त होती है। प्राणी किसी प्रकार का भी योग्य, अयोग्य कर्म करके पाप कर्म क्यों न कर बैठे? कितना ही अधर्मी क्यों न हो,इस पुरी में मृत्यु द्वारा उसका आवागमन का जाल छूट जाता है। यदि विचारपूर्वक भक्ति श्रद्धा से वहाँ रहकर मुझ ईश्वर शङ्कर का ध्यान, अर्चन, आराधना, स्मरण एवं तप, करते हैं। उनके पुण्यों की महिमा तो कल्याणी! मैं नहीं कह सकता। वे तो मेरे स्वरूप में लय हो जाते हैं। यह तीर्थ सभी को मुक्ति देता है। इसी प्रकार पापीजन यहाँ मृत्यु को नहीं पाते तो उन्हें अपने कर्मों के अनुसार कई जन्म लेने पड़ते हैं। कर्मों के फल भोग लेने पर ही उनको मुक्ति मिलती है यदि इस प्रकार के पवित्र धाम में रह कर कोई जन दुष्कर्म कर बैठता है तो उसे मृत्यु के बाद दश हजार भैरवी नरक भोगना पड़ता है फिर जाकर युक्त होता है। इस परम पवित्र क्षेत्र में विचार करके ही निवास करना श्रेष्ठ है। हाँ,यह तो निश्चित है कि किया हुआ शुभ अथवा अशुभ कर्म क्यों न हो, वह फल-कर्म करोड़ों कल्पों तक बिना भोगे नहीं छूटता। शुभ कर्म स्वर्गदायक होता है, अशुभ घोर नरकदायक होता है। ये दोनों प्रकार के कर्म जन्म मरण देने वाले हैं। अधिक शुभ कर्मों के कारण किसी उत्तम घर में जन्म होता है तथा सुख प्राप्त होता है। एवं अधिक दुष्कर्म के कारण नीच किंवा दरिद्री अथवा हीन जाति के घर में जन्म होता है।

देवि! कर्म तीन प्रकार के हैं— (१) पहिले जन्म में किये कर्म संचित होते हैं। (२) इस जन्म में किए हुए क्रियमाण हैं। (३) इन दोनों के फल रूप जो इस शरीर से भोगे जा रहे हैं, उन्हें प्रारब्ध कर्म कहते हैं। इनमें संचित तथा क्रियमाण कर्म तो दानादिक कर्मों से नाश भी हो जाते हैं किन्तु प्रारब्ध कर्म बिना भोगे नाश नहीं होते। संचित क्रियमाण कर्म काशीपुरी को छोड़कर अन्य किसी क्षेत्र पर भली भांति नष्ट नहीं हो पाते। जिन मनुष्यों ने पहले जन्म में विचार पूर्वक काशी निवास किया है, वे ही दूसरा जन्म पाकर काशी में शरीर छोड़ते हैं और

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

कोई भी नहीं। काशीपुरी गङ्गा स्नान ही संचित एवं क्रियमाणकर्मों का नाशक है। प्रारब्ध कर्म काशीधाम में रहकर मृत्यु प्राप्त होने से ही तुरन्त ही नाश हो जाते हैं। काशी का निवासी यदि कारणवश पाप करबैठता है तो उसे काशी के पुण्य प्रताप से फिर काशी में जन्म मिलता है तब जाकर पापों से मुक्त होता है। इस काशी में किसी ब्राह्मण को बसाने वाले को परम पुण्य की प्राप्ति होती है। उसे परमधाम पद मिलता है। किसीने पहिले तो काशी निवास किया फिर किसी सिद्धि के हेतु प्रयागराज चला जाता है, वहीं उसका देह पात होता है, उसे काशी निवास का फल नहीं मिलता। यदि मनोरथ सिद्ध के बिना प्रयागराज जाकर बसता है, वहाँ उसकी मृत्यु होने पर किसी पुण्य की प्राप्ति नहीं होती।

* चौबीसवां अध्याय *

(गौतम-प्रभाव)

प्राचीन काल में गौतम नामक एक महामुनि हुए हैं। इनकी अहिल्या पत्नी थी। गौतम ऋषि दक्षिण में ब्रह्म पर्वत पर हजार वर्षों में सिद्ध होने वाली तपस्या कर रहे थे। उस समय सौ वर्ष पर्यन्त वर्षा न हुई। वृक्ष आदि की तो बात ही क्या है। मनुष्यों को प्राण धारण के लिए जल मिलना भी कठिन था। कई ऋषि-मुनियों ने तो इस सङ्कट काल को बिताने के लिये समाधि लगा ली। उस समय इस सङ्कट को हटाने के लिये बरुण देवता को प्रसन्न कर देने के हेतु तपस्याकी।छःमहिने गुजरने पर वरुण संतुष्टहुए। प्रकट हो गौतमजी को वर माँगने के लिये कहा। तब गौतमजी ने कहा—वरुणदेव! चराचर प्राणी इस समय वर्षा न होने से व्याकुल हो रहेहैं, मैं उन्हें सुखी करने के लिये वर्षा चाहताहूँ। यह सुनकर वरुण बोले—महर्षिजी! मैं स्वतन्त्र नही हूं, मैं तो शङ्करजी के आधीन हूँ। वर्षा करने में उनकी आज्ञा मिलना आवश्यक है। आप कुछ और माँग लीजिये। यह सुनकर गौतमजी बोले-देवेश! मुझेतो और किसीवरकी आवश्यकता नहीं है। आप यदि संतुष्ट हैं तो जलदान कीजिये इससे तो और कोई महान् पुण्य भी नहीं यह कभी नष्ट नहीं होता है। तब

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

गौतमजी की नम्र प्रार्थना सुनकर फिर वरुण ने कहा। आप सत्य कहते हैं किन्तु इसमें मेरा कुछ अधिकार नहीं। यदि आप जल ही चाहते हैं तो एक गड्ढा आप खोदें मैं उसे जल से भर दूंगा। वह कभी खाली न होगा पवित्र तीर्थ होगा। इससे संसार में तुम्हारा नाम भी प्रसिद्ध होगा। यह सुनकर गौतमजी ने तुरन्त एक हाथ लम्बा चौड़ा गड्ढा खोद डाला वरुणजी ने उसे जल से भर दिया और बोले-गौतमजी! इस स्थान में दान, हवन, देव-पूजन, तप, पितृ श्राद्धादि किये कर्म सब सफल होंगे। इतना कहकर वरुणदेव अन्तर्धान होगये। तब परोपकार के लिये अपने मनोरथ की सिद्धि से गौतमजी प्रसन्न होगये। सूतजी बोले-सङ्कट काल में बड़ों की शरण ही मनुष्यों को दुःखों से तार देती है और उसे महान पद प्राप्त होताहै यह बात बड़े पुरुष ही समझते हैं।

सूतजी बोले—तब वरुण से जल पाकर महर्षि गौतमजी ने स्नानादि नित्य कृत्यों से निवृत्त होकर हवन के लिये जौ आदि अन्न पैदा किये। उसी जल के द्वारा फल-फूलों से लदे वृक्ष लहराने लगे। इस आश्चर्यमयी बात को सुनकर ऋषि-मुनि फिर वहां लौट आये।। श्री-गौतमजी की परम कृपा से वह स्थान ऋद्धि-सिद्धियों से युक्त सम्पूर्ण प्राणियों को सुखदायक हुआ।

* पच्चीसवाँ अध्याय *

(महर्षि गौतम की गौहत्या का दोष)

सूतजी बोले-मुनियो! एक बार गौतमजी की आज्ञा से शिष्य गण कमण्डल लेकर जल लेने उस गड्ढे पर गये। उसी अवसर पर जल भरने के लिये ऋषि पत्नियां भी वहाँ आईं तब इन स्त्रियोंने कहा कि पहिले हमें जल भरने दो फिर अपना कमंडल भरना यह कहकर उन्होंने कुछ फटकार भी दिया। तब गौतम शिष्य बिना जल भरे ही आश्रम परपहुँचे और अहिल्याजी को सभी बात जाकर सुनादी। अहिल्याजी उन्हें समझा-बुझा एवं धैर्य देकर स्वयं जल भरने चली गई। महर्षि गौतमजी को जल लाकर दिया। तभी से स्वयं अहिल्या देवी ही जल लाने लगी।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

उसी जल के द्वारा महर्षि का नित्य कृत्य आदि होता था। इस प्रकार चलते-चलते उन दुष्ट स्वभाव वाली ऋषि पत्नियों ने किसी दिन अहिल्याजी को बुरा भला कह दिया। फिर अपने पतियों को भी अहिल्या की जाकर शिकायत करदी कि वह तो हमें पानी भी नहीं भरने देती कहती है कि मेरे पति ने ही वरुण देव से यह वर पाया है तुम्हारा क्या अधिकार है? इस प्रकार अपनी स्त्रियों से शिकायत सुनकर ऋषिलोग गौतमजी पर क्रुद्ध हो गये और उन्हें सन्ताप पहुँचाने के हेतु श्री गणपतिजी का पूजन करने लगे। तब गणपति प्रसन्न होकर प्रत्यक्ष रूप में प्रगट हुए और बोले-मुनियो! मैं तुम्हारे विधिपूर्वक पूजने से प्रसन्न हूँ वर माँगो। तब ऋषि बोले-हे स्वामिन! यदि आप प्रसन्न हैं तो हम चाहते हैं कि यह गौतम ऋषि इस स्थान को छोड़कर कहीं दूसरे स्थान पर चला जाय। तब तो गणेशजी मुनियों के कुटिल शब्दों को सुनकर हंस पड़े और बोले—मुनियों! महर्षि गौतम निरपराध है उन्हें इस प्रकार दण्ड देना उचित नहीं इसमें तुम्हारा भी अमङ्गल है उनसे द्वेष करना छोड़ दो। कोई और वर माँगलो। श्री गणेशजी ने इस प्रकार उन्हें बहुत कुछ समझाया। किन्तु वे तो अपने आग्रह पर डटे रहे। तब गणपति ने कहा-अच्छा यदि तुम यही चाहते हो तो यही होगा यह कह कर अन्तर्धान हो गये।

इस प्रकार वरदे चुकने के बाद गणेशजी ने अपना वर सत्य करने के हेतु एक निर्बल गौ का रूप धारण किया। तब वह गाय गौतमजी के उपजाये जौ आदि जाकर खाने लगी। गौतमजीने देख लिया यह तो हमारी खेती नष्ट कर रही है तब एक तिनका उठाकर उसे खेत से बाहर करने लगे तिनके से पीड़ित होकर गाय पृथ्वी पर गिरपड़ी और उसकी मृत्यु होगई। यह काण्ड देखकर गौतमजी को पश्चाताप हुआ अपनी पत्नी को बुलाकर बोले न मालूम शङ्कर हम पर क्रुद्ध हो गये हैं जिससे कि यह गौ हत्या का महा पाप मुझ पर आ लगा है। उसी समय वे

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

कपटी मुनि भी वहाँ पहुंच गये। गौतमजी को उनकी पत्नी अहिल्याको तथा उनके शिष्यों को बुरा कहते हुए बोले-गौतमजी अब तो तुम इस स्थान पर रहने योग्य नहीं हो अपने शिष्यों और पत्नियों को साथलेकर किसी दूसरे स्थान पर ले जाओ। तुम गौ हत्यारे हो। सूतजी बोले-इस प्रकार के कटु वचनों से भी उनकी तृप्ति न हुई फिर पत्थर आदि भी इन पर बरसाने लगे। तब दुःखित होकर गौतमजी ने वहाँ से चलकर एक कोस की दूरी पर अपना आश्रम बनाया। वहाँ रहने लगे। इस प्रकार रहते-रहते जब उन्हें पन्द्रह दिन गुजरे तब तो गौतमजी उन्ही ऋषियों के पास पहुँच कर पूछने लगे-ऋषि महात्माओ! अब हमें कृपा करके इस पाप से निवृत्त होने के लिये कोई उत्तम उपाय बताओ। ऋषियों ने कहा-तुम प्रायश्चित करो विना इसके पाप निवृत्ति नहीं होगा। आप अपना यह पाप प्रसिद्ध करो फिर सारी पृथ्वी की तीन परिक्रमा करो। फिर यहाँ आकर एक महीने का व्रत धारण करो। ब्राह्मणों तथा पर्वत की एक सौ एक बार परिक्रमा करो। यदि इस तरह का प्रायश्चित न हो सके तो तप करो उसके द्वारा श्री गङ्गाजी को प्रकट करके उसमें स्नान करो। एक करोड़ शिव पार्थिव लिङ्ग रचकर प्रेम और श्रद्धा से उनका विधि पूर्वक पूजन करो तब जाकर इस महापाप से मुक्तहोओगे। सूतजी बोले-गौतमजी इस प्रकार सुनकर जो आज्ञा कहकर वहां से चल पड़े। वे सबसे पहिले ब्रह्मगिरि की परिक्रमा करने गये फिर शिव पार्थिव लिंग रचकर विधिपूर्वक शिव पूजन करने लगे। उनकी पत्नी अहिल्या भी एकाग्र मन से शिव पूजन करने लगी।

* छब्बीसवां अध्याय *

(गौतमी गंगा का प्राकट्य)

सूतजी बोले-मुनियो! गौतम तथा अहिल्या पति-पत्नी ने मिल कर शिवआराधन किया तब भगवान् शङ्कर अपने गणों से युक्त होकर वहाँ प्रकट हो गये और वर माँगने के लिये कहा तब गौतमजीने अद्भुत रूपधारी सदाशिव का दर्शन किया और उन्हें बार-बार प्रणाम तथा

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

स्तुति करके कहा-स्वामिन ! इस गौ हत्या के पाप से मुझे छुड़ाइये। यह सुनकर शङ्कर बोले-गौतमजी तुम तो निर्दोष हो। ये तो उन दुराचारी पाखंडी ऋषियों की माया थी जिससे तुमको इतना दुःख भोगना पड़ा। वे ही दुष्टात्मा हत्यारे हैं तुम तो निर्दोष हो। यह सुनकर गौतम बोले-स्वामिन ! उन्होंने तो मेरे साथ बुरा किया और मेरे लिये उनका बुरा भी भला होगया जिससे मैंने आपके दुर्लभ दर्शन तो प्राप्त कर लिए तब सदाशिववोले-गौतमजी मैं तुमपर प्रसन्न हूँ वर मांगो तब गौतम अपनी प्रतिज्ञा का विचार करके गङ्गाजी के प्रकट होनेका वर मनमे रख कर बोले-स्वामिन ! पतित पावनी श्रीगङ्गाजी को कृपा कर यहां प्रकट करें जिसके द्वारा अन्य सभी प्राणियों का कल्याण हो। सूतजी बोले-तब भगवान शङ्करजी ने गौतमजी को गङ्गा जल दिया। वही गङ्गाजल स्त्री रूप होकर गौतमजी के सामने पधारीं। साक्षात् मूर्तिमती श्री गङ्गाजीके दर्शन करके गौतमजी ने प्रणाम स्तुति आदिकी। फिर बोले-मातेश्वरी पतित पावनी गंगे। तुम पापों का खण्डन करके सबको मुक्ति देने वाली हो। मैं भी आपकी शरण में हूँ मुझे भी पावन करो नरकोंसे मेरी रक्षा करो श्रीगौतमजी ने इस प्रकार श्रीगङ्गा जीसे प्रार्थनाकी फिर भगवान शङ्कर गङ्गासे बोले-गंगे मेरी आज्ञासे गौतमजीको सकुटुम्ब पाप रहित करदो। तब गङ्गाजीनेकहाप्रभो ! आपकी आज्ञा शिरोधार्यहै। गौतमजी को कुटुम्बके साथ निष्पाप कर देती हूँ जब ये पवित्र हो जायेंगे तभी यहांसे मैं आपके लोक में प्रस्थान करूँगी। तब शङ्करजी बोले-हे कल्याणी कलियुगके अट्ठाइसवें मन्वन्तरकीसमाप्तितक तो पृथ्वी पर रहना होगा तब गङ्गाजीने कहा-स्वामिन यह तभी हो सकताहै जबकि आप श्रीपार्वतीके साथ शरीर धारण करके मेरे पास निवास करें और संसार में मेरी कीर्ति हो तबतो मैं पृथ्वीपर रहूंगी। तब सदाशिव बोले देवीतेरे मेरे में भेद ही क्या है हम तो एक ही रूप हैं फिर तुम भी ऐसा चाहती हो तो मैं तुम्हारें समीप निवास करूँगा। इस प्रकार तब वहां परमेश्वर शङ्कर त्र्यम्बकेश्वर नामसे तथा श्रीगङ्गाजी गौतम गङ्गा नामसेवहाँविराजीं।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* सत्ताईसवां अध्याय *

(अम्बकेश्वरी महिमा)

ऋषि बोले—सूतजी ! जल स्वरूप श्री गङ्गाजी की उत्पत्ति कहां से हुई ? फिर महिमा किस प्रकार प्रसिद्ध हुई और यह भी कहिये उन ऋषियों का क्या हुआ जिन्होंने गौतमजी के साथ कपट किया था। वह भली भाँति वर्णन करें सूतजी बोले—ऋषियो ! जब गौतम महर्षि ने अपने श्री गङ्गाजी को जल रूप में दर्शन देने के लिये कहा तो तब ब्रह्मगिरपर पड़े हुए गूलर वृक्षकी शाखा से निकलकर जल रूप में गङ्गाजी बहने लगगई। इस प्रकार दर्शन करके महर्षिने शिष्यों के साथ स्नान किया। उसके बाद गौतमजी के साथ शत्रुता करने वाले भी स्नान के लिए आये किंतु उस समय श्रीगङ्गाजी लुप्त हो गईं। तब तो गौतमजी चकित होकर प्रार्थना करने लगे। मातेश्वरी ! आप कृपा करें। चाहे स्नानार्थी अहंकार परायण होकर सज्जन रहें अथवा दुर्जन आप तो मेरी तपस्या के प्रभाव से इन लोगों को भी दर्शन दें। इस प्रकार गौतमजी की प्रार्थना करने पर आकाशवाणी हुई-मुनि ये लोग मेरे दर्शन के अधिकारी नहीं। ये तो दूसरे के उपकार को मिटाने वाले दुराचारी हैं यह सुनकर गौतमजी ने कहा—देवी ! कल्याणी महात्माजन तो सुजन-दुर्जन दोनों पर कृपा किया करते हैं। अतः इन सब पर कृपा करके दर्शन अवश्य दें। तब आकाशवाणी फिर हुई मुनिवर ! तुम सत्य कह रहे हो, किन्तु इनको भी अपने पापों का प्रायश्चित करना चाहिए तभी इन्हें दर्शन होंगे। ये लोग इस प्रकार प्रायश्चितकरें आपकी शरण में पहले आकर और आज्ञा पाकर एकसौ एक ब्रह्मागिरि की परिक्रमा करें। इस प्रकार आकाशवाणी उन लोगोंने भी सुनी। तब झट श्री गौतमजी की शरण में आये और अपने अपराधों के लिये क्षमा माँगने लगे। तब महर्षि की आज्ञा से उन्होंने ब्रह्मगिरिकी परिक्रमायें कीं तब कहीं श्री गङ्गाजी के उनको दर्शन हुए।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

उस स्थान का नाम तभी से कुशावर्त प्रसिद्ध हुआ। यह सुनकर ऋषियों ने पूछा कि हे सूतजी! हमने तो सुना था कि गौतमजीने उन मुनियों को शाप दिया था इसमें सत्य हो वही हमको सुनाइये। सूतजी वोले—ऋषियो! जव उन बनावटी गाय की गौतमजी से मृत्यु हुई थी तब उन मुनियों ने सव जगह यह प्रसिद्ध कर दिया कि गौतम ने गोहत्या करदी तब शिव-भक्त गौतमजी ने अपने ज्ञान से मालूम कर लिया कि यह तो बनावटी गाय थी। उन्हें क्रोध उत्पन्न हुआ। उससे वे शाप देने लगे। बोले-अरे दुष्ट, नीच ब्राह्मणों! इस प्रकार तुम लोगों ने मुझ से कपट किया है इसलिये मैं तुम्हें शापदेता हूँ कि तुम-विद्या से रहित शिव,भक्तहीन अधर्म परायण हो जाओ। तुम लोग शिव अर्चन न करतेहुए शिवपर्वों से विमुख रहोगे। सूतजी वोले-इस प्रकार शाप देकर गौतमजी अपने आश्रम पर आकर शिव आराधना करने लगे, फिर मुनि लोग इस प्रकार शिव धर्मों से परामुख होकर कांची नगरी में चले गये।

* अटठाईसवाँ अध्याय *

(वैद्यनाथेश्वर शिव-महिमा)

सूतजी बोले-ब्राह्मणों! प्राचीन काल में मान पाने की इच्छा से लङ्कापति रावण कैलाश पर पहूंचा। श्रद्धाके साथ भगवान शङ्करजी को प्रणाम किया किन्तु शङ्करजी प्रसन्न होते दिखाई न दिये। तब उन्हें प्रसन्न करनेके लिये उसने एक गड्ढा खोदाउसमें अग्नि को आधीन करके उसके समीप शिव स्थापित किये। फिर गर्मी में पंचाग्नि तपाकर और वर्षा में पानी सहकर तथा शीत में शीतकी परवाह न करकेकठिन तप करने लगा फिर भी सफल न हुआ। तब वह राक्षस पति अपने मस्तक काटकर चढ़ाने लगा फिरभी सदाशिवप्रसन्न होते दिखाई न दिये आखिर उसने अपना दसवां मस्तक काटना चाहा। उसी समय शिवजी सन्तुष्ट होकर प्रकटहोगये। सदाशिव ने अपनी कृपा द्वारा उसके सभी मस्तक ज्यों के त्यों कर दिये और उसे पराक्रम भी प्रदान किया। तव

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

शङ्करजी को प्रसन्न जानकर रावण ने नम्रता से प्रार्थना की कि,हे नाथ! आप मुझ पर प्रसन्न हों तो मेरे साथ लङ्का पधारें और मुझे कृतार्थ करें। इतना सुनकर सदाशिव बोले—हे लंकेश्वर! मेरी आज्ञा से मेरा स्वरूप यह ज्योतिलिङ्ग अपने साथ लङ्का में ले जाओ किन्तु मार्गमें किसी स्थान पर भी इसे रखना नहीं, नहीं तो यह फिर आगे नहीं जायगा। सूतजी बोले—इस प्रकार सुनकर रावण शिवजी के दिये ज्योतिर्लिंग को उठाकर लङ्का के लिये चल पड़ा। तब चलते-चलते शिव इच्छा से उसे लघुशंका करने की इच्छा हुई। तब रावण ने वह लिंग तो किसी ग्वारिये को सौंपा और आप लघुशंका करने बैठ गया। उस ग्वारिये ने दो-घड़ी तो लिंग को थामा किन्तुबोझ अधिक होने के कारण वह सम्भाल न सका आखिर पृथ्वी पर रख दिया। उसके बाद लिंग तो वहां स्थित होगया। फिर रावण ने शिव स्तुति करके शिव से वरदान मांगा फिर लङ्काकी ओर चल दिया। यही लिंग वैद्यनाथ नाम से प्रसिद्धहुआ। जोकि सब के अभीष्ट सिद्ध करने वाला एवं भोग मोक्ष आदि देने वाला है। रावण ने अपने महलों में जाकर शिव से वर प्राप्त का सम्पूर्ण वृतांत प्रसन्नता पूर्वक अपनी रानी को सुना दिया। रावण को शङ्करजी से वर मिलाइस प्रकार की प्रसिद्धि सुनकर देवता तथा मुनिजन अत्यन्त व्याकुल होगये और विचार करने लगे यह दुष्ट तो स्वाभाविक ही हमारा शत्रु है। फिर महादेवजी के वर से तो हमें और भी दुःखित करेगा। इससे बचने का उपाय तो अब इससे छुपकर रहना ही केवल रह गयाहै। तब वहाँ पर देवर्षि नारदजी आ पहुँचे। तब उनसे देवता तथा ऋषियों ने पूछा—हे देवर्षि! अब हमें रावण से किस प्रकार बचना होगा। यह तो हमें अब वर पा लेने से अधिक दुःख देगा। यह सुनकर नारदजी बोले—देवता तथा ऋषियो! धैर्यधारण करो। इसका उपाय मैं अभी भगवान शङ्कर के पास जाकर करताहूँ। सूतजी बोले—इतना कहकर नारद जी लङ्का में गये। तब रावण ने नारद जी को आया देख इनका आदर सत्कार किया। आसन पर बैठकर नारदजी बोले—राक्षसराज! आप शिवके

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

पूर्ण भक्त हैं एवं मङ्गलरूप हैं। अब आप यह कहिये कि आपको इस प्रकार की सिद्धि कैसे प्राप्त हुई। इसका इतिहास मैं सुनना चाहता हूँ। रावण ने नारदजी के बचन सुनकर सिद्धि पाने का सभी वृतान्त कह सुनाया फिर बोला—नारदजी! अब तो मैं सदाशिव को अपने अनुकूल जानकर तीनों लोक अपने आधीन करनेकी इच्छा में हूँ। तब नारद जी ने कहा–दानवेन्द्र! मैं तुम्हारे हित की बात कहता हूँ उसे मान लेने पर निःसन्देह तुम सुखी हो जाओगे! सुनो शिव का दिया हुआ वर तो बेकार है क्योंकि शिव का कथन तो सत्य होता हुआ कभी दिखाई नहीं देता। इसलिये सबसे पहले तुम शिव को हानि पहुंचाने का प्रयत्नकरो फिर तीनों लोकों पर विजय पा सकोगे। सूतजी बोले–इस प्रकार नारद जी के वचन सुनकर रावण ने अपना हित मान लिया और उसी समय कैलाश पर पहुंचा। दोनों हाथों से कैलाश को हिलाकर उठा लिया। शङ्करजी कैलाश हिलता देखकर विस्मय करके बोले—आज यह कैलाश इतना हिल क्यों रहा है। यह सुनकर श्री पार्वतीजी हंस पड़ी और बोली-देव! आपके शिष्य अपने गुरु की अच्छी सेवा करते हैं, आप द्वारा भक्त रावण को बलशाली बनाने का ही आपको फल मिल रहा है श्री पार्वती जी से ऐसा सुनकर भगवान शङ्कर रावण से बोले मन्दमति नीच रावण। इतना अभिमान करना अच्छा नहीं। याद रख, मेरा अपराध करने वाली तेरी इन भुजाओं को काटने वाला कोई न कोई बलवान पुरुष जन्म लेने वाला है। सूतजी बोले—इस प्रकार भगवान शङ्कर के शाप देने पर भी रावण प्रसन्न होता हुआ अपनी लङ्का में पहुँचा। तब उसने दृढ़ प्रतिज्ञा कर ली कि त्रिलोकीको वश में करके छोड़ूंगा। तब अपने पराक्रम से देव, दानव, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस मानव आदि सभी को अपने वश में कर लिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* उन्तीसवां अध्याय *

(दारूका राक्षिसी की सहायता से राक्षसों के उपद्रव)

सूतजी बोले–ब्राह्मणों ! प्राचीन काल में एक दारुक दानव हुआ है। उसकी स्त्री दारुका नाम की राक्षसी थी। दोनों स्त्री–पुरुष दुर्गाजीके दिए सुन्दर बन में रहा करते थे। वह बन पश्चिम के समुद्र के समीप था। चौंसठ कोस लम्बा और इतना ही चौड़ा था। वहांके निवासी उन दोनों राक्षस और राक्षसी के उपद्रवों से अत्यन्त दुःखी हो गये और और्व नामक एक ऋषि के आश्रम पर पहुँच कर नम्रता के साथ उस ऋषि को अपना दुःख सुनाया और बोले—मुनिराज ! हम लोगों को उस दानवी तथा दानव ने अत्यन्त पीड़ित कर दिया है। हम लोग आपकी शरणमें हैं। हमारी रक्षा करो। तब और्व बोले–डरो मत ! जब भी वे राक्षस जीवों की हिंसा एवं यज्ञ बिनाश करने लगेंगे तभी उनकी मृत्यु हो जायगी। ब्राह्मणों ! इस प्रकार ऋषि ने इन्हें धैर्य देकर और्व ऋषि ने जगत के कल्याण के लिये तपस्या करना आरम्भ किया। उसके बाददेवताओं को ज्ञात हुआ कि और्व ऋषि ने इस प्रकार राक्षसों को शाप दियाहै तब तो वे युद्ध करने के लिये अपने अस्त्र-शस्त्र संभाल कर युद्ध भूमि में आगये तब युद्ध के लिये देवताओं को आया हुआ जान कर राक्षस अपने कर्तव्य के लिये विचार करने लगा। तब राक्षसोंको दुखित देखकर दारुका को अपना वर याद आ गया। तब राक्षसों को कहने लगा राक्षसों ! तुम भय मत करो में इस नगर को तुम्हारे सहित उठाकर जल के मध्यमें रख दूंगी। यह सुनकर राक्षस निर्भय होगये। फिर राक्षसी ने नगर को उठाया और समुद्र के मध्य में जाकर रख दिया। वहाँ जाकर राक्षस लोग सुख पूर्वक रहने लग गये। एक दिन दारुका भूमि पर आई उसने देखाकि एक डोंगी असंख्य मनुष्योंसे भरी हुईसमुद्र में तैरती आरही। तब उसने राक्षसों कों सूचना दी तब राक्षसगण वहाँ पहुंच गये डोंगी पर चढ़कर सभी मनुष्यों को उठाकर अपने नगर में ले गये। उन्हें बेड़ियाँ डालकर केंद करलिया। उन मनुष्योंमें सुप्रियनामक

CC0. JKL Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

बनियाँ भी था जो कि शिव भक्त था उसने जेलखाने में रह कर शिव पूजन करना आरम्भ कर दिया दूसरे मनुष्यों को भी शिव पूजन में लगा दिया। शिव ही इस दुःखसे छुड़ानेवाले हैं। उस उपदेश से सभी शिवजी का पूजन करने लग गये ब्राह्मणो! इस प्रकार शिव पूजन करते २ उन्हें निर्विघ्नता के साथ छः महीने गुजर गये।

* तीसवाँ अध्याय *

(नागेश्वर की उत्पत्ति तथा महिमा)

सूतजी बोले-एक दिन की बात है कि दुष्ट दारुक राक्षस के किसी दूत ने सुप्रिय को शिव का पूजन करते देख लिया। उसने जाकर दारुक को सुना दिया। तब दारुक घबराकर वैश्य के पास पहुँचकर बोला-हे बनियाँ! तू सच-सच कहदे कि तू किस आराधना का पूजन और आराधना कर रहा है। यदि सच २ कह दिया तो मैं तुझे छोड़दूंगा नहींतोमौत के मुंहमें डालदिया जायगा! सूतजी बोले उस राक्षस के इस प्रकार पूछने पर उस बनियाँ ने अपने भाव प्रकट न होने दिये। तब तो उस राक्षस ने क्रोध में आकर बनियाँ को मार देने के लिये आज्ञा देदी। इस प्रकार का सङ्कट देख कर बनियांने आँखें मूंदली और सदाशिवके ध्यान में मग्न हो प्रार्थना करने लगा-हे तीनों लोकों के स्वामी! मैं आपकी शरण हूँ। मुझे इस संकट से बचाओ। इस प्रकार उसकी प्रार्थनापरभगवान शङ्कर वहाँ प्रकट हो गये। सदाशिव का दर्शन करके प्रसन्न होता हुआ बनियाँ उनका पूजन एवं स्तुति करने लगा। तब प्रसन्न होकर सदाँशिव ने अपना पाशुपतास्त्र उठाया और उन राक्षसों का विनाशकर दिया। सभी राक्षसों के नाश हो जाने पर सदाशिव बोले-अब यह बन सदा के लिये निर्भय हुआ। इसमें धर्म पर चलने वाले ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि वर्ण निवास करेंगे यहां शिव धर्मके उपदेश करने वाले शिव भक्त निवास किया करेंगे। अधर्म का अन्त हो गया। तब दारुका राक्षसी अत्यन्त दुःखित होकर जगत माता श्री दुर्गाजीके पास पहुँचकर नम्रता से बोली-भगवती! मङ्गलमयी आप कृपा करके मेरे परिवार की

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

नम्रता से बोली-भगवती ! मङ्गलमयी आप कृपा करके मेरे परिवार की रक्षा करो। मैं भी आपके वंश तथा भक्तों की रक्षा करूंगी। इस प्रकार दारुका राक्षसी की बात सुनकर श्री पार्वतीजीने उसे दिया हुआ अपना वर याद किया फिर क्रोध में आगई। इस प्रकार श्री उमा को देखकर प्रसन्न होते हुए शङ्करजी बोले—कल्याणी ! अब तुम अपनी इच्छा से जो चाहो कर सकती हो। श्री शङ्करजी से इतना सुनकर श्री पार्वतीजी हंसपड़ीं फिर बोलीं-स्वामिन ! आपका कथन सत्य तो अवश्य होगा किंतु युग के समाप्त हो जाने पर अब तो यहाँ राक्षसों का निवास होगा और मेरी शक्ति रूपा यह दारुका ही उन पर शासन करने वाली होगी। तब सदाशिव बोले-देवी ! आपकी इच्छा पूर्ण हो। किंतु मैं भी अपने भक्तों की रक्षाकेलिए यहां स्थिररहूँगा। यदि कोई भी मनुष्य अपनी जाति तथा धर्म के अनुकूल आचरण करता हुआ प्रेम भक्ति के साथ वह मेरा आकर दर्शन करेगा तो अवश्य ही चक्रवर्ती राजा हो जायगा। सूतजी बोले—इस प्रकार कहकर तब भगवान् शङ्कर तथा भगवती पार्वती दोनों ज्योतिस्वरूप होकर नागेश्वरके नामसे वहाँ स्थरहो गये। सूतजी बोले-मुनियो ! एक समय में वीरसेन ने बारह वर्ष पर्यन्त पार्थिवलिंग की पूजा करके कठोर तपस्या की, उससे प्रसन्न होकर बोले, राजन् ! मैं तुझे एक लकड़ी की मछली देता हूँ जो कि राँगे से मढ़ी होगी और उसे मैं अपनी योग-शक्ति से शक्ती वाली कर दूंगा, उसी मछली को लेकर तू अपनी सेना समेत शिवर में पहुँच जायगा। वहां जाकर मेरे स्वरूप नागेश्वर शिवका पूजनकरना, उससे तुझे पाशुपतास्त्र की प्राप्ति होगी। उसके द्वारा दानवगणों का तू नाश कर सकेगा। मेरे उस दर्शन से तुझे किसीप्रकार की कमी न रहेगी। इतना कहकर भगवान शङ्कर अन्तर्धान हो गये। उसके बाद वीरसेन शिवजी का वर पाकर उनकी परम कृपा से कार्य के करने में सामर्थ्यवान हुआ।

—※—

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* इकत्तीसवां अध्याय *

(रामेश्वर महिमा वर्णन)

सूतजी बोले-ऋषियो ! अब हम आपको रामेश्वर शिवलिंग की उत्पत्ति की कथा सुनाते हैं। भगवान् विष्णुने जब रघुवंशी दशरथ के घर श्री रामचन्द्रजी के नाम से अवतार लिया था। तब अवतारलेने का प्रयोजन रावण आदि दानवों का संहार करने का था। उनकी पत्नी का नाम सीता था। अपने पिता की आज्ञा से वे चौदह वर्षों के लिये बन में चले गये। उस समय उनकी पत्नी सीता को माया करने वाले राक्षसराज रावण ने आकर चुरा लिया और लङ्का में ले गया। तब पत्नी के शोक में व्याकुल हो इधर-उधर ढूंढ़ते हुए अपने अनुज लक्ष्मण के साथ राम किष्किंधा पहुँचे। वहाँ वानरेन्द्र सुग्रीव से मित्रता करके उसके भाई बाली का बध किया, कुछ समय तक वहाँ रहे। फिर सीता की खोज करने के लिये हनुमान आदिवानर चारों दिशाओं में पहुँचे। वानरों में श्रेष्ठ हनुमानजी ने लङ्का में जाकर श्री सीताजी का पता निकाल लिया। श्री सीताजी को श्रीराम का सन्देशदेकर और सीताजी से चूरामणि लेकर श्रीरामजी के पास हनुमानजी लौट आये। श्री रामजी को सीताजी का सन्देह देकर प्रसन्न किया। तब अठारह हजार बानरों की सेना लेकर श्रीरामजी दक्षिणी समुद्र के किनारे पहुंच गये। वहाँ अगाध सागर को देखकर श्रीराम व्याकुल हो गये, अब इससे किस प्रकार पार होंगे, इसी चिन्ता में व्याकुल होकर बोले—अपनी प्राण प्रिया का पता पाकर भी मैं मिल नहीं सकता, कितने शोक की बात है। मैं इस अथाह सागर से किस प्रकार पार जा सकूंगा, यह बानरों की सेना कैसे पार होगी ? यह कहकर श्रीराम अत्यन्त दुःखी हो गये तब अङ्गद आदि बानरों ने आकर उनको धैर्य बँधाया। इसके बाद प्यास लग जाने के कारण श्रीरामजी ने लक्ष्मणजी से जल लाने को कहा। श्री लक्ष्मणजी ने जल लाने के लिए बानरों को इधर-उधर भेजा बानर जल ले आये। तब जलपान करते-करते यह विचारने लगे कि

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

मैं भगवान् शङ्कर के दर्शन किये बिना जल पी रहा हूं। उसके बाद भगवान् शङ्कर के पूजन के विचार से श्री रामजी ने पार्थिव लिङ्ग के पूजन का विचार किया। फिर पूजन करने लगे। आवाहन आदि सोलह उपचारों के साथ सदाशिव का पूजन एवं स्तुति आदि करते हुए श्री राम बोले—नाथ! मैं बानर सेना के साथ इस अथाह समुद्र से किस प्रकार पार पहुचूंगा। वहाँ महाबली रावण के साथ युद्ध करके विजय किस प्रकार पाऊँगा। देवाधिदेव महादेव! मैं तो आपकी शरण में हूँ। मेरी सहायता करो। सूतजी बोले—उस समय भगवान् शङ्कर सन्तुष्ट होकर अपने परिवार के साथ उस ज्योति स्वरूप लिङ्ग से प्रकटहो गये। शङ्करजी बोले-रामचन्द्रजी! तुह्मारा मङ्गल हो, मुझसे वर माँगो—उस समय सदाशिव के अद्भुत दर्शन करके स्तुति तथा प्रणाम करते हुए श्री रामचन्द्रजी ने रावण से विजय पाने का वरदान मांगा। सुनकर श्री महादेवजी वोले-श्री रामचन्द्रजी! युद्ध में तुह्मारी अवश्य बिजय होगी। तुह्मारा मङ्गल होगा। तव श्री रामचन्द्रजी ने कहा कि, प्रभो! आप अपनी इच्छा से कल्याण के हेतु दूसरे मनुष्यों के कल्याण करने के लिये यहां विराजमान हो। यह सुनकर सदाशिव उस स्थान पर लिङ्ग रूप से विराजमान हुए, वही स्थान जगत में परमेश्वर नाम से प्रसिद्ध हुआ।

* बत्तीसवां अध्याय *

(सुदेहा सुधर्मा की कथा)

सूतजी वोले—महर्षियों! दक्षिण दिशा में देव नामक एक सुन्दर पर्वत है। उसके पास भारद्वाज गोत्री कोई सुधर्मा नामक ब्राह्मण रहता था, उसकी अति सुन्दर सुदेहा नाम की पत्नी थी। सुधर्मा उत्तम ब्राह्मण था। नित्यप्रति अग्नि होत्रादि कर्म, अतिथि सेवा, शिव पूजन आदि करने वाला शिवजी का परम भक्त था। इन्हीं कर्मों को करते हुए उसे बहुत समय गुजर गया। किन्तु घर में सन्तान नहीं हुई। सुधर्मा को तो इस विषय में कुछ दुःख नहीं था। उसकी पत्नी व्याकुल रहती

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

थी। उसे पुत्र प्राप्ति की चाहना थी। अपने पति को बार-बार कहा करती। उसके परम ज्ञानी पति कहा करते-कल्याणी! पुत्र प्राप्ति से क्या लाभ! सभी सम्बन्धी स्वार्थी होते हैं। माता-पिता, मित्र आदि सबको हमने देख लिया है, इस प्रकार समझा कर कभी-कभी फटकार भी देते। सूतजी बोले-अपनी स्त्री के कहने पर ध्यान नहीं दिया और आप दुःख न पाकर शिव-भक्ति में लगे रहते। एक दिन सुधर्मा की पत्नी सुदेहा अपनी सहेलियों के साथ मन बहलाने को कहीं चली गई। वहां कई स्त्रियों के साथ उसका झगड़ा भी होगया। उस झगड़े में उन स्त्रियों ने कहा-अरी बाँझ? तू भी इतना अभिमान कर रही है। हम जानती हैं, तू धन वाली है लेकिन तेरा धन तो राजा छीन लेंगे। तेरे किस प्रयोजन का धन है। देख हम तो पुत्र वाली हैं। हमारा धन तो पुत्रों के उपयोग में आ जायगा। यह सुन सुदेहा अत्यन्त व्याकुल होती हुई घर लौट आई। आते ही अपने पतिसे उन स्त्रियोंकी सभी बातें रोकर कह सुनाई। सुनकर सुधर्मा दुःखी न हुये बल्कि अपनी स्त्री को धैर्य देते हुये बोले-हे प्रिये! जो कुछ होना है वह वह तो अवश्य होगाउसमें व्याकुल नहीं होना चाहिये। जो कुछ भी कोई कहता हो, उसे कहने दो। दुःखी मत होओ। तब सुदेहा बोली-हे प्राणनाथ! या तो किसी प्रकार पुत्र पैदा करो, या मुझे मार दो। नहीं तो मैं स्वयं मरती हूँ। सूतजी बोले-इस प्रकार सुदेहा के वचन कहने पर उस ब्राह्मण देवता ने शिव-ध्यान करके दो पुष्प अग्नि की ओर फेंके। उन दोनों पुष्पों में दाहिना पुष्प देने वाला है। यही सोचकर ब्राह्मण ने अपनी पत्नी से कहा-तुम पुत्र इच्छा से एक पुष्प उठालो। तब उसकी पत्नी ने शिव माया से बाँई ओर का पुष्प उठा लिया जो कि पुत्र वाला नहीं था। यह देख कर सुधर्मा व्याकुल होकर पत्नी से बोले-हे कल्याणी! अब तुम पुत्र की इच्छा मत करो भगवदभजन में लग जाओ। तुम्हारे भाग्य में पुत्र-प्राप्ति नहीं। इस प्रकार उसे समझा-बुझाकर सुधर्मा शिव पूजन में लग गये। कुछ समय के बीत जाने पर फिर पुत्र-इच्छा से सुदेहा ने कहा-हे प्राणनाथ! यदि

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

मेरे गर्भ से पुत्र नहीं होता तो आप दूसरा विवाह करके पुत्र प्राप्त करो मैं अपनी प्रसन्नता से कहती हूं। तब ब्राह्मण बोला-प्रिये ! हम दोनों इस समय झगड़े से मुक्त हैं ऐसा होने पर क्यों न अपना उद्धार करें यदि फिर उस विपत्ति में पड़ गये तो बड़ा उपद्रव होगा इसलिये इस विवाह की विपत्ति में मुझे मत डालो। सूतजी बोले-इस प्रकार सुधर्मा ने विवाह के लिये इन्कार कर दिया फिर भी सुदेहा ने अपनी छोटी बहिन को घर में बुलाकर पति से कहा-प्राणनाथ ! आप मेरी बहिन के साथ अवश्य विवाह करलें। यह सुनकर सुधर्मा ने कहा-हे कल्याणी तुम मुझे इस झगड़े में मत डालो, यदि इससे पुत्र हो भी गया तुम सगीं बहिनें परस्पर विरोध कर बैठोगी जोकि किसी को भी सुखदायक न होगा।

तब सुदेहा ने हाथ जोड़कर कहा—प्राणनाथ ! यह मेरी बहिन है इसके साथ मैं विरोध क्यों करने लगी ? आप निश्चिन्त रहें। ऐसा कहकर अपनी छोटी बहिन घुश्मा के साथ विधि पूर्वक विवाह करा ही दिया। विवाह कर लेने के बाद सुधर्मा बोला—हे प्रिये ! अब यह तुह्मारी सौत तुह्मारी बहिन है इसे सुखी रखना। फिर घुश्मा से कहा तुम इसकी आज्ञा में रहना। अपने पति की आज्ञा में वे दोनों घर में सुखी रहने लगीं और घुश्मा तो अपनी बड़ीबहिन की आज्ञा से नित्य प्रति एक सौ एक शिव पार्थिव लिंगों की षोडषोपचार पूजा करके वे पार्थिव लिंग नित्य ही तालाब में जाकर बहा देती। इस प्रकार उसका नित्य-क्रम था। एक दिन पुत्र प्राप्ति के लिये शिव पार्थिवपूजन किया। इस प्रकार की संख्या भी एक लाख हो गई। भगवान् शङ्कर की परम कृपा से उसे परम सुन्दर गुणवान पुत्र प्राप्त हुआ। पुत्र पाकर सुधर्मा अत्यन्त प्रसन्न हो गये। किन्तु उनकी बड़ी बहिन पुत्रवती बहिन से ईर्षा करने लग गई।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* तेतीसवां अध्याय *

(घुश्मेश शिव ज्योतिर्लिंग की उत्पत्ति)

सूतजी बोले—मुनियों! इस प्रकार कुछ समय के अनन्तर वह ब्राह्मण कुमार बड़ा होगया। सुधर्मा ने उसे विवाह योग्य देखकर उसी योग्य ब्राह्मण की कन्या से उसका विवाह करा दिया। फिर घुश्माने अपने पुत्र तथा पुत्र-वधू को ले जाकर अपनी बहिन के चरणों में डालकर कहा-ये आपका पुत्रहै और ये आपकी पुत्र-वधू है। यह कहकर अपने पुत्र एवं पुत्र-वधू से भी कहा कि पुत्री! यह तुह्मारी माता है इनकी सेवा करना तुह्मारा काम है इस प्रकार उन दोनों को समझाया फिर वे दोनों ही सुदेहा की आज्ञा में तत्पर होगये। किन्तु सुदेहा की ईर्षा बढ़ती ही गई। उसका व्यवहार भी वैसा हो गया। एक दिन उसने विचार किया कि मेरा यह दुःख तभी शान्त होगा जब घुश्मा की आँखों से पुत्र के मर जाने पर जल की धारायें बहेंगी। अब मुझे यही उपाय करना चाहिये। सूतजी बोले—कुटिल पुरुषों को शत्रुता के वश में आकर बुरे भले का कुछ भी विचार नहीं रहता उनकी बुद्धि बल आदि सभी नष्ट हो जाते हैं।

इस प्रकार सुदेहा ने भी कपट में आकर एक रातको सबके सो जाने पर हाथ में छुरी उठाली। उस सोते हुए पुत्र को जाकर उससे मार दिया फिर उसके टुकड़े-टुकड़े करके रातो-रात उसी तालाब में जाकर डाल दिया। जिसमें घुश्मा नित्य ही शिव पार्थिव लिंग बहा आती थी। यह सब कर कराकर घर में आकर सोगई। प्रातःकाल हुआ घुश्मा सोकर उठी अपने नित्य के कामों में लग गई। सुदेहा भी उठकर अपने काम काजमें लग गई। फिर पुत्र-बधू उठी उसने खाट पर रुधिर एवं शरीरके कुछ कटे टुकड़े देखे तो उसके होश न रहे अपनी सास के पास आकरकहा कि आपके पुत्र कहाँ हैं! मुझे तो ऐसा लगता है कि उन्हे किसीने मार दियाहै। यह कहकर वह बड़े जोर से रोने लग गई। घुश्मा के सिर पर तो मानो पहाड़ आगया हो, वह भी यह देख कर रोने लग गई

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

इधर सुदेहा बनावटी दुःख प्रकट करती हुई वह भी रोने में तत्पर हो गई। किन्तु अपनीसौत को रोता देखकर भीतर ही भीतर प्रसन्न थी। सुधर्मा शिव पूजन से निबृत होकर वहाँ आये। उन्होंने यह कांडदेखकर कहा शोक एवंस न्ताप करना व्यर्थ है। जिसने यह पुत्र दिया है वहा उसका रक्षक है। घुश्मा तुम अपना नित्यकृत्य न छोड़ों। यह कह कर उसे भेज दिया। घुश्मा नित्य की तरह शिव पार्थिव लिंग लेकर उसी तालाब पर बहाने चली गई। वहाँ वहाकर जब लौटने लगी तो उसे तट पर खड़ा हुआ पुत्र दिखाई दिया। वह झट ही माताके समीप पहुँचकर बोला-मातेश्वरी ! तुह्मारे पुण्य प्रताप एवं शिव कृपासे मैं मर कर भी जीवित हुआ हूं तब घुश्मा को पुत्र जीवित देखकर प्रसन्नता न हुई। वह तो उसी प्रकार शिव आराधनामें रही। उसी समय उसकीपरमभक्ति से प्रसन्न होकर ज्योतिस्बरूप शिव प्रत्यक्ष होगये और इस प्रकार बोले-घुश्मे ! तेरे इस पुत्र को सुदेहा ने मार दिया था। अब मैं उस पापिन का बध करता हूँ। मैं तुह्मारी इस भक्ति से प्रसन्न हूँ अपना मन चाहा वर मांगो। यह सुनकर घुश्मा प्रणाम करके बोली-स्वामिन् ! यदि आप प्रसन्न हैं तो मेरी बहिन को अभय दान दें तब सदाशिव बोले अरी घुश्मे ! उसने तो तुह्मारे साथ बुरा किया फिर तू उस पापिनी का भला क्यों चाहती है। यह सुनकर घुश्मा बोली—नाथ ! क्या मैं बुरी हूं जो उस बुरा करने वाली का बुरा चाहूँ। स्वामिन् ! वर देते हैं तो यही वर दीजिये। सदाशिव प्रसन्न होतेहुए बोले अच्छा ऐसा ही होगा और भी मन चाहा वर माँग सकती हो तब घुश्मा बोली-हे स्वामिन् यदि ऐसा है तो आप लोगों के कल्याण एवं पालन के लिये यहाँविराज मानहो जांय यही मेरी प्रार्थनाहै। यह सुनकर भगवन् बोले,हे घुश्मे मैं घुश्मेश नामसे ज्योतिर्लिंग रूप होकर यहां निबास करूँगायहतालाब लिंग स्थल हो जायगा। यह त्रिलोकी में शिवालय नाम से प्रसिद्ध होगा। दर्शनार्थियों के सभी मनोरथ इसके द्वारा परिपूर्ण होंगे। सूतजी बोले-इस प्रकार कहकर सदाशिव वहां सदाके लिये स्थिर होगये इतने

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

❀ रामेश्वर शिवलिंग स्थापना ❀

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

में सुदेहा सुधर्म वहाँ आ पहुँचे तब सबने मिलकर एक सौ एक परिक्रमा शिव पूजन करके सबका परस्पर प्रेम हो गया। घर में जाकर सुख—पूर्वक रहने लगे। सूतजी बोले—मुनियों ? इस प्रकार हमने आप लोगों को बारह शिवज्योंतिर्लिंगों की अद्भुत कथायें सुनादी हैं।

* चौंतीसवां अध्याय *

(विष्णु भगवान् को सुदर्शन चक्र प्राप्ति)

ऋषि कहने लगे-सूतजी ! अब तो हमें आप हरीश्वर नाम के ज्योति लिंगों की कथा सुनाइये-इसी हरीश्वर शिवलिंग पूजन से विष्णु जी ने सदाशिव से सुदर्शन चक्र प्राप्त किया। सूतजी बोले-ब्राह्मणों पहिले अत्यन्त बलवान् दैत्य हुए हैं जो सभी प्राणियों को दुख देते हुए धर्मका विनाश करने पर तुले हुए थे। उन्हीं राक्षसों से दुखित होकर देवगण विष्णुजीके पास पहुँचे और अपना दुःख जाकरसुनाया यह सुनकर भगवान् विष्णुजीने कहा देवताओ तुम भयमत करो में भगवान् शङ्कर का पूजन करता हूं उसी के द्वारा तुम्हारे दुःखों का विनाशहोगा सूतजीबोले इस प्रकार श्रीविष्णुजी के परमशान्ति देने वाले वचन सुनकर सभीदेवता निर्भय होकर अपने २ लोकों में चले गये। उसके बाद विष्णु जी शिव पूजन के लिये कैलाश पर पहुँचे। वहाँ कुण्ड के मध्य में अग्नि स्थापित की फिर शिव पार्थिव लिंग की विधि के अनुसार पूजाकरके तपस्या आरम्भ करदी। भगवान् विष्णु अपना दृढ़ संङ्कल्प करके बैठे थे कि मैं भगवान् शिवको संतुष्ट करके ही अपनी तपस्या छोड़ूँगा। एक पलभर भी यहां से नहीं हिलूंगा इस प्रकार कठोर तपस्या करते-करते विष्णुजी को बहुत सा समय व्यतीत हो गया किंतु शङ्कर सन्तुष्ट न हुए तब हरि ने शिव सहस्रनाम का पाठ-आरम्भ कर दिया। एक एक मन्त्र बोलकर एक एक कमल का पुष्प चढ़ाने लगे। तब एक बार विष्णु की भक्ति की परीक्षा लेने के लिये पूजनके निमत्तहजार की संख्या में आये हुए कमलों में से एक कमल सदाशिवने इधर उधर कर दिया। तब पूजा करते २

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

एक पुष्प कम पड़ गया। भगवान विष्णुको अत्यन्त आश्चर्य हुआ। वे इधर-उधर ढूंढ़ने लगे। पुष्प कहीं से नहीं मिला। तब भगवान विष्णुजी ने कमल के समान अपना नेत्र निकाल लिया। उसे ही शिव अर्पणकर दिया तब तो भगवान शङ्कर अत्यन्त संतुष्ट होकर प्रत्यक्ष हो गये और बोले–विष्णुजी तुम्हारी इस भक्ति द्वारा मैं अत्यन्त प्रसन्न हुआ हूं। मन चाहा वर माँग लो। विष्णु बोले—स्वामिन ! इस समय दैत्यों ने उपद्रव मचारखा है उनका वध करने के लिये मेरे पासका तो अस्त्र सामर्थ्य नहीं रखता इसी कारण मैं आपकी शरण में आया हूं। सूतजी बोले–तबतो भगवान शङ्कर ने विष्णुजी को अत्यन्त चमकता-दमकता सुदर्शन चक्र दे दिया। उसी दिव्य अस्त्र से विष्णुजी ने राक्षसों का नाश किया।

* पैंतीसवां अध्याय *

(शिव सहस्रनाम)

सूतजी बोले-अब मैं आप लोगों को शिवजी के सहस्रनाम सुनाता हूँ कि जिनका उच्चारण विष्णुजी ने किया था।

विष्णु बोले— सदाशिव सृष्टि के हर्ता, सुखदाता तथा दुःखों के हरने वाले, पुष्टि देने वाले परिपुष्ट नेत्र धारी आपकी धर्म, अर्थ, काम मोक्ष को चाहने वाले सदा सेवा किया करते हैं। श्रेष्ठ आचरणवान प्रजा के सुखदाता एवं संहारकर्ता ॥ १०॥ सबके ईश परब्रह्मपरमात्मा मस्तक पर चन्द्रमा से शोभायमान दुष्टस्वरूप विश्व के पालक, वेदान्त तत्व के ज्ञाता कपाली लाल २ एवं श्याम २ जटाधारी अविनाशी ग्यान के आधाररूप ॥२०॥ पार्वतीनाथ प्रथमादिगणों के स्वामिन आकाशादि अष्टमूर्तियोंवाले विश्व स्वरूप धर्म अर्थ काम स्वर्गादि की प्राप्ति के साधन, विज्ञान के पूर्ण ज्ञाता देवाधिदेव, त्रिनेत्रधारी, विपरीत देव॥ ३०॥ सारे देवताओं में महादेव, परमचतुर कुशल एवं रक्षक, पुष्ट बलवान विश्वरूप, त्रिनेत्रवाणी के अधिपति सारे देवों में बड़े सब प्रमाणों के ज्ञाता, वृक्ष लक्षणों वाले ॥४०॥ वृषभ के सवार, सर्वेश्वर, पिनाक धनुष वाले, नतद्वाङ्ग, आयुधारी अद्भुत वेष वाले, त्रिकालाबाधित

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyan Kosha

अज्ञानमय अन्धकार के नासक, महायोगी रक्षक,ब्रह्माण्ड हर्ता ॥५०॥ जटाधारी कालों केभी काल व्याघ्र आदिका चर्म वस्त्रों की भांति धारण करने वाले उत्तम विभव वाले, ओंकार स्वरूप । पापियों को दण्ड देने वाले । सभी प्राणियों में निवास करने वाले सेवा के एवं भजन योग्य दुर्वासा का अवतार ग्रहण करने वाले दैत्य के विनाशक ॥ ६० ॥ श्रेष्ठ अस्त्रधारक कार्तिकेय स्वामी के पिता पर-ब्रह्म प्रकृति से परे आदि अन्त एवं मध्य से रहित पर्वतों के स्वामी उमानाथ कुवेर के भ्राता सुन्दर कण्ठधारी सर्वश्रेष्ठ लोक तथा वर्ण वाले ॥७०॥ सूधे स्वभाव समाधिगम्य धनुर्धारी नीलकण्ठ अद्भुत प्रकाशवान बिशालनेत्र सृष्टि तथा संहार के समय मृगरूप जीवों के लिये शिवकारी देवेश सूर्य के प्रचंड ताप की तरह दुष्टों को तापित करने में समर्थ धर्म के स्वामी ॥८०॥ सहनशक्ति शीतल प्रकृति वैभवों के स्वामी भगवान के नेत्र निकालने वाले क्रोधी जीवों के नाथ गरुण रूपधारण भक्तों के प्रेमी उत्तम तपस्वी सबके दाता दयासागर ॥९०॥ परम चतुर जटाजूट धारक काम के दण्डदाता श्मशानवासी सूक्ष्मरूप से सब में रहने वाले सर्व समर्थ सृष्टिकर्त्ता मृगरूप जीवों के नाथ पंचमहाभूतों के रचयिता ॥ १०० ॥ संसार अवागमन से छुड़ाने में महोषध सोमरस पीने वाले अमृतपान करने वाले नग्न महातेजस्वी उत्तम कान्तिमान प्रकाश मय जल रूप मृत्यु रहित अन्नरूप प्रतापी ॥ ११० ॥ अमृतस्वामी संसार से पार कराने वाले स्वर्ग पृथ्वी पशु वाणी जल एवँ इन्द्रियोंके स्वामी रक्षक विज्ञान से प्राप्य समय से अविनाशी नीतिज्ञ उत्तम नीति रूप शुद्ध अन्तःकरण चन्द्ररूप ॥१२०॥ सोमरस में श्रेष्ठ सदासुखी अजातशत्रु स्वयं प्रकाश माननीय देवताओं को हवि पहुँचाने के लिए अग्निरूप लोक रचियता वेद तथा सूत्ररचयिता अनादि काल रूप । १३०॥ सब वेदों के जानने वाले जगत को प्रकाशित करने वाले त्रिनेत्रधारी पिनाक धनुष वाले पृथ्वी देव ब्राह्मणस्वरू महामङ्गल सुन्दर बुद्धिसम्पन्न पृथ्वी के धारक प्रकाशभक्तों के मनोरथ पूरक ॥ १४० ॥ सबके नाथ वेद तथा ब्रह्मा के रचयिता विश्वकारक सृष्टि-

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

रूप सर्वज्ञाता कनेर पुष्पप्रिय शाखनामधारी विशाखनाम वेद शाखामय, त्रिगुणभिन्न ॥ १५० ॥ उत्तम वैद्य प्रवाहिता गङ्गाजल सम निर्मल, कान्तिमय श्रेष्ठ सृष्टि रचियता स्थिररूप आत्मा को वश में रखने वाले आत्मा के विधाता जीवमात्र को कर्मफल देने वाले गण सेवित ॥ १६० ॥ गण शरीर निर्मल कीर्ति निःसंशय कामस्वरूप इच्छापूरक भस्मधारी भस्म के प्रेमी भस्म की शय्या वाले कामना वालों के प्रेमी वेद रचियता । १७० ॥ संसार चलाने वाले आत्मनिवृत्ति रहित धर्म समूह तथा मङ्गलरूप निष्पाप पवित्रात्मा चतुर्भुज दुष्टों के लिए असह्य दुर्लभ कठिनता से ज्ञेय ॥ १८०॥ महाकठिन अस्त्र शस्त्रों में चतुर विद्याओं के निधान अध्यात्म योगी संसार के आधार सृष्टिवर्द्धक, सुन्दर अङ्गों वाले भ्रमरों की भाँति लोक तत्वज्ञाता, जगदीश, संहार करने वाले, भस्म द्वारा पवित्रता करने वाले ॥ १९० ॥ अभय आत्मबली शुद्ध शरीर कठिनता से लभ्य सज्जनों से भजनीय हनुमान स्वरूप, अग्निरूप, पुराण रूप, शत्रु विनाशक महाबली ॥ २०० ॥ महा कुन्डरूप अपार माया-धारी देवसिद्धि गण वन्दनीय व्याघ्रधर्म गण सर्पों के भूषणधारी महा-विराट उत्पादक संपूर्ण जीवोंके कोश अमर वायुरूप स्वात्मसुखरूप अमृत-पानकर्त्ता शोभामय ॥२१०॥ पच्चीसतत्वों के मध्य में स्थित अग्निरूप कल्पवृक्ष सुलभता से जाति एवं आश्रमों के चालक ब्रह्मचारी ॥२२०॥ शत्रुओं को जीतने वाले आश्रमरूप परिश्रम के दूरकर्त्ता, परमज्ञानी पर्वतों के नाथ, प्रमाण रचियता कठिनलभ्य गरुड़ रूप वायु पर सवार ॥२३०॥ धनुषधारी धनुवेदज्ञ उत्तम स्नान सत्यरूप सत्यसेभा पर दीनता रहित धर्म पृथ्वी तथा धर्मस्वरूप पृथ्वी तथा धर्म के शाशक अपार दृष्टि वाले दण्ड रूपदमनतथा निग्रहकर्त्ता ॥२४० । अभिचारी तथा मायाधारी विश्व की रचनाओं में चतुर, राग द्वेष विनाश भक्तों को नम्र करने वाली तपस्वी जीवों के वर्द्धक, मतवाले, छिपे काम पर विजय पाने वाले विष्णु पर प्रेम वाले उत्तम स्वभाव सबसे प्रथम ॥२५०॥ सभी लोगों की मन की गति जानने वाले वेगवान् उद्धारक बुद्धिमान् मुख्य परमात्मा अविनाशी लोक

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

पालक अन्तर्यामी सब में रहने वाले कल्पोंके आदि कमल नेत्र ॥२६०॥ वेदशास्त्र के अर्थ एवं सार के ज्ञाता नियमरहित नियम आश्रित आनन्द-दायक चन्द्रदायक चन्द्रमास्वरूप सूर्यरूप शनिरूप धूम्रकेतु रूप उत्तमाङ्ग, मूंगे के सामान शोभी शक्ति से वश में होने वाले। २७०॥परब्रह्ममनकी भाँति वेगवान् अनघ निष्पाप पर्वतरूप पर्वतवासीप्रिय श्रेष्ठ आत्माजगत के पिता सभी कर्मों के स्थान सदा प्रसन्न मङ्गल मूर्ति मङ्गलरेवति ॥२८०॥ महातपस्वी दीर्घ तपस्वी अतिस्थूल बृद्धस्वरूप स्थिर दिन वर्षाकाल सर्व व्यापक प्रणामरूप उत्तम ॥२९०॥ ऋत सत्यरूप, संबत्सर कर्ता मन्त्रों के आधीन सबके तापक अजन्मासर्वेश्वर निवृत्त एवं निष्यन्तरूप महातेजस्वी अति बलवान योगसिद्धि ।३००॥अति पराक्रमी सफलस्वरूपसबकेआदि अधर्मीजन अज्ञेय कुबेररूप प्रकाश मय मनस्वी सत्यस्वरूप पाप बिना-शकसुन्दरकीर्ति शोभामय ॥३१०॥मालाधारक वेदवेदांगज्ञ.तामुनिप्रकाश प्रकृतिरूपभोजनकेभोक्ता पुरुषरूपलोकनाथ दुष्टजनोंसेआराधनारहितनित्य अमृमय शान्तरूपवाणहस्त ॥३२०। परमप्रतापी कमण्डलुधारक धनुर्धर मनवाणी से पर इन्द्रिय रहित अत्यन्तमायाधारी सर्व व्यापक चार मार्गों वाले समय में प्राणियों को प्रबृत्तकर्तामयाशब्दकर्ता महाउत्साही ॥३३०॥ महाबली श्रेष्ठ बुद्धि महावीर भूतगण सेवित त्रितुरदैत्य बिनाशक रात्रिमें बिचरने वाले शक्तिशाली महाकान्त अज्ञेय शरीर शोभायमय ॥३४०॥ सभी आचार्यों के मनकी गतिज्ञाता शास्त्र रचियता विधिमाया रचयिता नियत तथा स्थिरआत्मा, चररूप तेजों के भी तेजरूप कान्तिरूप सबके ॥३५०॥ ओंकार अक्षररूप ज्ञानवान मन्त्ररूप समभाव तत्वरूप नौकारूप सत्ययुगगादि युग प्रवर्तकअति गम्भीर बृहभाहन सर्वमहान् ॥३६०॥ महात्माओंके प्रिय सुलभ तत्वशोधक तीर्थस्वरूप तीर्थनाम तीर्थोंमें देखने योग्य तीर्थों के प्रापक सागरूप प्राणियों के स्थान अजेय ॥३७०॥ विज-यज्ञाता प्रशंसनीय प्रमाणज्ञाता सुवर्ण कवच के धारक देवरूप विद्यास्वामी विन्दु के आश्रय वायुस्वरूप त्रितापनाशक पापनाशक ॥३८०। निर्मल प्रपंची विस्तारक कठिन माया द्वारा स्वरूप छिपाने वाले साधक कारणमय

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

स्वयं सर्व कर्ता सभी बन्धनों से मोचक सतचित मात्ररूप॥३९०॥व्यवस्थापक स्थानदाता ब्रह्मस्वरूप शत्रुओं को खण्ड २ करने वाले सर्व सुन्दर द्वैताद्वैत स्वरूप सदानूतनआत्मा में स्थित, वीर स्वामी, वीरभद्रगणरूप ॥४००॥बीरों के आसन विधान में गुरु शूरवीर शिरोमणि सर्वज्ञाताअति आनन्दरूप नन्दीश्वररूप जगत रूप सन्तान को नित्य धारण करने वाले त्रिशूलधारक विष्णुरूप से युगोपर्यन्तस्थित कल्याण वालखिल्यस्वरूप ॥४१०॥अतीवपराक्रमी तापवाले किरणोंकेस्थान सूर्य स्वरूप श्रोत्र इन्द्रिय रहित आकाश में विचरण करने बाले सुन्दर एवं आनन्दयुक्त सुन्दरशरण वेदज्ञों पर प्रेमकर्ता अमृतस्वामी इन्द्ररूप विश्वामित्रस्वरूप ।४२०॥ प्रकाशमान प्राणियों के अन्त सभी कार्यों के साधक मस्तम पर नेत्रधारी सम्पूर्ण विश्व शरीर तत्वरूपसंसारचक्रधारक सफल दण्डदाता सबके अन्तर्गत प्रलय में संसार के संहर्ता । ४३०॥ ब्रह्मतेज स्वरूप मुक्तिदाता माया से पर एकत्रित कर्ता व्याघ्र के कोमल चर्म के धारक छविमय अतिदीप्तवाले वैद्यरूप वाणी के नाथ दिवाकर । ४४०॥ रसग्रहण कर्ता अग्निरूप अग्निरूप से स्रव तथा वायुरूप से शोषण कर्ता शासन के लिये यमरूप युक्ति से उन्नतकीर्तिमय प्रेमस्थान शत्रु विजेता कैलाशनाथ सुन्दर जगत रचयिता ॥४५०॥ सूर्यनेत्र श्रेष्ठ विश्वरूप निर्भय विश्वपालक कर्मों के फलदाता जन्म मरण रहित मङ्गल स्वरूप पवित्र श्रवण कीर्तन प्रसिद्ध विश्वनाशक ॥४६० । ध्येय दुःस्वप्न नाशक संसार सागर से उद्धार करने वाले पापियोंके नाशक भली भाँतिज्ञेय सहन न कर सकने वाले पराक्रमी उत्पत्ति रहित अनादि पृथ्वीस्वर्ग की शोभा किरीट धारक॥४७०॥ स्वर्ग के स्वामी जगत रक्षक विश्वरक्षक अनेक गतियुक्त उत्तम बाजूबन्द धारक जनउत्पादक जगत के जन्मादि कारण प्रेमयुक्त नीतिज्ञ सर्वस्वामी॥४८०॥ वसिष्ठरूप कश्यपरूप प्रकाशमय भयङ्कर भयानक पराक्रमी ॐरूप उत्तम मार्गपर आचरण करने वाले महाकोश उत्तमधन जन्म के स्वामी॥४९०॥ सबसे बड़े देव,सभी वेदों के पूर्ण ज्ञाता सबके साररूप तत्वज्ञ एकरूप सबमें व्यापक विष्णुविभूषण ऋषिएवंब्राह्मणरूपपरमवैभवजन्मजरामरण से रहित

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

॥५००॥ पंचतत्वोत्पादक विश्वेश्वर मङ्गल कर्त्ता आदि अन्त रहित सबके कारण सर्व प्रिय पाँच भूतों के स्वामी लोकों के धारणकर्ता शिवगायत्रीप्रेमी पवित्र किरणधारक विश्वव्यापी ॥५१०॥ दिनकर्ता बालकरूप कैलाश पर्वत प्रिय संसार के राजा देव शत्रु विनाशक नेमिरहित एवं इच्छितनेमि आनन्द दाता सर्व ताप रहित स्वप्रकाशमान परम प्रकाश ॥५२०॥परम-प्रकाशशरीर व्याघ्र धर्मधारा पिंगल वर्ण की डाढ़ी मूछों वाले मस्तकपर नेत्रधारी वेदरूप विज्ञानरूप अमृतदाता जगत् के जन्म दाता दुष्टों को दुःख देने वाले जग विश्वान एवं आदित्यरूप संसार से परे ॥५३०॥ बृहस्पतिरूप मङ्गल एवं गुणरूप नामधारी पापविनाशक पवित्र दर्शन उदार यशस्वी उद्यमकर्ता नित्य योगी सत्यरक्षक असत्यनाशकआकाशरूप उसमें शवनक्षत्र माला रूपस्वर्ग के स्वामी ॥५४०॥ स्वात्म पदके आधार शुद्धस्वरूप अघनाशक मणिप्रदाता आकाशविहारी हृदय कमल में स्थित इन्द्रस्वरूप शान्तिरूप अचंचलधर्मतापयुक्त गृहस्वामी ॥५५०॥ कृष्णरूप सर्व समर्थ अत्याचार विनाशी अधर्म के शत्रु अगम्य अनेकजनों से आराधनीय वेदस्थान महानगर्भ स्थानधारी धर्म की उत्पत्ति के स्थान धनके आगमरूप ॥५६०॥ जगत् हितैषी मोहन कर्त्ता बुद्ध अवमार बालरूप आनन्द दाता सुवर्ण वर्ण प्रकाशमान प्राणियों में रमणकर्त्तानादरूप रोग-रहित नेत्रस्वामी विश्वामित्ररूप ।५७०॥धन के स्वामी महानतेजस्वी एवं अत्यन्त तेजस्वी परम उत्तम सबके माता पिता पवनरूपसर्पों की मालायें धारण करने वाले पुलस्त्य ऋषिरूप पुलहस्वरूप अगस्त्यरूप ॥५८०॥ जातु कर्ण्यऋषिरूप पराशररूप मायामय आवरण से रहित ब्रह्माजी के पुत्रविष्णुरूप आत्मरूप अनिरुद्धस्वरूप अत्रिरूप विज्ञानरूप महायशस्वी ।५९०॥ लोकवीर शिरोमणिशूरक्रोधी सफल पराक्रम नागसर्प धारक महाकल्परूप कल्पवृक्षरूप कलाधारी अधिक तेजस्वी स्थावर ॥६००॥ कान्तिमान पराक्रमी उन्नत आयु एवं शब्द के स्वामी वाचाल दुष्टनाशक अग्नि सारथी अपृस्थरूप अतिथिरूप शत्रु विनाशक वृक्षकेनीचे नाशक-धारी ।६१०। उत्तम श्रवणकर्ता पितृश्वरों प्रति खीर प्रापक अग्निरूप

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

उत्तम तपस्वी विश्व को भोजन दाता भजनीय जराआदि रोग विनाशक बड़े अश्व के वाहन वाले आकाश के कारण सुन्दर अङ्गवाले ॥६२०॥ अज्ञान अन्धकार के निवर्तक ग्रीष्मरूप निर्मल मेघरूप शत्रु पर विजेता सुखदायकवायुरूप संसारकर्त्ता आनन्ददाता शिशिररूप बसंतरूप वैशाख मासरूप ॥६३०॥ ग्रीष्मभाद्रपदरूप धान्यप्रापक शरदहेमंतरूप अंगिरा-ऋषि रूप दत्तात्रेयस्वरूप निर्मलविश्ववाहन पापरहित पुरविजेता इन्द्र-रूप वेदत्रयी ज्ञा नूतन गज की भांति मद वाले मन एवं बुद्धिरूप ॥६४०॥ अहङ्कारस्वरूप क्षेत्रज्ञक्षेत्ररक्षक जमदग्निरूप सर्वमुक्तिरूप अमृत पिलाने वाले विश्व में गालवरूप भयङ्करतारहित सब में बड़ेयज्ञ रूप । ६५०॥ शुभ कल्याण दाता पर्वतरूप गमन कुन्दवत् शोभा बाले दैत्यशत्रु शत्रुनाशक रात्रि रचियता बुद्धिमान लोक एवं कल्प के धारण, ऋग, यजु, साम, अथर्व रूप ॥ ६६० ॥ धर्म आदि चार भाव, कुशल चतुर पुरुषों के प्रेमी वेदों के रूप स्वरूप तीर्थके देवता, तीर्थ स्नान, शिव स्थान वाले अनेक बलों से युक्त बिशालकाय, सर्वस्वरूप, चराचर रूप, न्याय कर्त्ता, रचियता तथा नेता ॥६७०॥ न्याय से पहिचानने के योग्य अति आनन्द उत्पादक हजार शिरों वाले देवों के राजा सभी शास्त्रों के नाशक, मुण्डितसिर सुन्दर स्वरूपवाली वत्सरसरूप धारक इन्द्रिय दमन कारक ॥६८०॥ शब्दरूप उत्तमगुण रूप पिंगलवर्ण के नेत्रों वाले अनेक नेत्रधारी, नीलकण्ठ दुःख रहित सहस्र भुजाधारी सबके स्वामी भक्तों के शरण दाता सर्वलोक धारक ॥६९०॥ पद्मासन लगाने वाले परम तेजस्वी नित्य फलदायक पद्मगर्भ महागर्भ विश्वगर्भ बाचाल सर्वज्ञाता बरदाता बर्णनीय ॥७००॥ महा नाद रूप सुरासुर गुरु सुरु सुरदैत्य नमनीय देबदानव मित्र ईश्वर स्वामी अलौकिक रूपवान देवदानव आश्रय परम देव निश्चिन्त ॥७१०॥ ब्रह्मादिक देवों की आत्मा शीघ्र प्रकट होनेवाले महा असुरों के मारने में व्याघ्र रूप देबों में सिंह दिनकर्त्ता देवताओं में श्रेष्ठ सर्व श्रेष्ठ विष्णु ब्रह्मादि से श्रेष्ठ अपने ही ज्ञान में रमण कर्त्ता शोभा युक्त चूड़ावान

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

॥७२०॥ श्री पर्वत के प्रेमी, वज्र हस्त, तलवार धारक, नृसिंह मद विनाशक, ब्रह्मचारी स्वरूप लोकों में विचरण करने वाले, धर्म का आचरण करने वाले, धन के स्वामी, नन्दीगण, नन्दी के ईश्वर, ॥७३०॥ अन्त रहित, नग्न रहने वाले, व्रत धारी, अवगुण रहित, लिंग स्वामी, देव स्वामी, युग स्वामी, युग नाशक, स्वर्ग स्वामी, स्वर्ग वासी, स्वर्ग के पवन ॥७४०॥ षड़ जाति सात स्वरों के चालक, बाण के स्वामी बीज उत्पादक कार्यकर्ता धर्म संचालक, कपट रूप धारक, लालच से रहित उत्तम स्वभाव सर्वस्वामी श्मशान वासी, त्रिनेत्रधारी ॥७५०॥ सेतु स्वरूप, मूर्ति आकार से रहित, सबके ऊपर रहने वाले, ज्यम्बक, सर्प आभूषण धारी, अधंका सुरशत्रु, मयदानवशत्रु विष्णु स्कन्ध को गिराने वाले, दोष रहित, नित्य गुणवान॥७६०॥दक्ष के शत्रु पूषा के दाँत तोड़ने वाले, सर्व सम्पन्न, संपन्न कर्ता, पवित्र, श्रेष्ठ कुमार वाले, सुन्दर नेत्रधारी, उत्तम मार्ग रक्षक, भक्तों के प्रेमी, धतूरे के सेवन कर्ता, पवित्र यशवान ॥७७०॥व्याधि रहित, मन से भी तीव्र, तीर्थकर्ता जटा धारी, नियतरक्षक, स्वामी, जीवन को समाप्त करने वाले, अपरछिन्न, स्वर्ण समान वीर्यधारी, धनदाता श्रेष्ठ गति ॥७८०॥ सिद्धिदाता, सत्‌चित रूप, उत्तम जाति, दुष्ट नाशक, कलाधारी महाकालरूप, प्राणियों के सत्व में स्थित, लोकों में लावण्यतायुक्त, सबको सुन्दरता देने वाला सुख स्थान, चन्द्रसञ्जीवनी रूप ॥७९०॥ परमशासक सृष्टि तथा प्रलय में ग्राह, स्वरूप, महेश्वर, संसार बन्धु तथा स्वामी, जीवकृत शुभ अशुभ ज्ञाता, चर्म अम्बर से शोभित, अविनाशी, अक्षररूप, प्रिय ॥८००॥ सभी शास्त्रों के ज्ञाताओं में अग्रह, तेजस्वी कान्तिमय, लोकमान्य, कृपासागर, मन्दमुस्कान युक्त प्रसन्न मन अजेय कठिन पराक्रमी प्रकाशमय ॥८१०॥ जगन्नाथ निराकार जल स्वामी, तूमा की वीणा वाले, विशालकाय, शोक रहित, शोक नाशक, त्रिलोकी रक्षक, त्रिलोकी नाथ, पवित्रकर्ता, ॥८२०॥ जिनसे ज्ञान कपट होकर संसार को मिलताहै वे उत्तम ज्ञान; गुप्त लक्षणों वाले, देवरूप स्पष्ट, अस्पष्ट रूप, सभी प्रजा के स्वामी संसार से परे, मङ्गलमय धन, प्राण सत्व, मान धारक, ॥८३०॥

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

सँसार रूप, ब्रह्मा विष्णु रूप प्रजा पालक, योगी, योगियों की गतिपक्षी रूप, विश्वरचयिता, कर्म फल दाता, जगत धारक ॥८४०॥ रचने वाले, विनाशक, चतुर्भुज, कैलाश की शिखर के निवासी, जगत व्यापक नित्य गतिरूप, हिरण्यगर्भ, पारब्रह्म जीव पालक, पृथ्वीनाथ ॥८५०॥ ब्रह्मरूप शुभकर्मों के प्रवर्तक, योग ज्ञाता वरदायक, ध्यानरूप, ब्राह्मणों के प्रेमी, देव प्रिय, देवताओं के साथ देवोमेंवायु, ब्रह्मा, एवंसूर्यसमानदेवगण चिन्तानीय, त्रिनेत्र धारी, विषमनेत्र वान ॥८६०॥ उपदेश दाता, धर्म बर्धक, ममता रहित, निरभिमान, निर्मोह, निरुपद्रव, अभिमानियों के अभिमाननाशक, सदाप्रसन्न, जगत के प्रसन्नकर्ता सभी अर्थों के धारण करने वाले एवं हजारों किरणों वाले ॥८७०॥ भस्मरूपभूषणसे शोभित सरल आकार सम्पन्न, वामदेव, भूतभविष्य-बर्तमान तीनों काल के स्वामी जगत बनानेवाले, शत्रुओं के धन नाशक सबके कारण, इच्छा रहित बड़े खजाने वाले, मुक्तिदाता, निष्कण्टक ॥८८०॥ नित्यानन्दरूप, कपट रहित, कपट के नाशक, बली उद्यमी सत्वरहित, सत्य स्नेह कर्ता शास्त्र रचयिता, निकष्लपगुणज्ञ, सर्वआत्मा, अनेक कार्य कर्ता सुन्दर प्रेमी ॥८९०॥ सुखदाता लघुरूपधारी सुन्दर भुज वाले दक्षिणी पवन रूप, नन्दी एवम् स्कन्द के धारक सर्वज्ञ प्रकट होने वाले प्रीति बर्धक किसीसे न हारने वाले सहन करने में समर्थ ॥ ९०० ॥ गौओं के स्वामी सच्ची सबारी बाले किसी के आश्रय पर न रहने वाले अपने गौरव पर निर्भर पूर्ण पबित्ररूप यश रूप धन वाले वारह के दन्त रूप सींग वाले बल एवम्सेना वाले सर्पकेनेता ॥९१०॥ वेद प्रकाशक वेदरूप जगत के वन्धु अनेकों रूप धारने वाले विष्णु के कल्याण के आरम्भक सज्जन कल्याण कर्ता समान यशस्वी भूशायी सबके शृङ्गार सबीकेसम्पति ॥९२०॥ जीबों को रचने बाले जीबों को बढ़ाने वाले अचल भक्तों जैसे शरीर बाले कालके क्षीण करने बाले कलानाथ सत्यब्रती महात्यागी सदाशाँत रूप धन तथा आजीविका दाता भण्डारी ॥९३०॥ रोगादि रहित चतुर शुभकर्ता सुन्दर कामधारी शुभ रूप चाहना रहित संसार द्रष्टा अकर्ता गुण ग्रहण

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

कर्ता स्वर्ण समान सुन्दर मङ्गलरूप मध्यस्थ न्याय कर्ता ॥ ६४० ॥ शीघ्र गामी शीघ्रता नाशक शिखाकवच त्रिशूल धारक जटाधारी सर्प के कुण्डलों वाले सदा अमर रहने वालेसमदृष्टि प्रकाश मय मणिस्वरूपगण-नारहित अपरिमित शरीरी परम पराक्रमीज्ञेय ॥६५०॥ विशिष्ठ योगी-वर अपर मुनिजनस्वामी सबसे उत्तम कोमल एवं प्रिय शरीर धारी देव स्वामी ध्यान के योग्य समस्त शब्द रूप श्रेष्ठ तपस्वी सहायक समयकाल के भी काल ॥६६०॥ शुभकर्ता वासु की सर्प के रचियता उत्तम धनुष धारक पृथ्वी धारने वाले,निष्कलङ्क,बन्धन रहित, दिन के मणि पार करने के लिये नौका रूप सफल साधना सिद्धदाता माता युक्त विशाल छाती वाले ॥६७०॥ विशाल भुजाधारी संसार के कर्ता सन्तान रहित नर नारायण के प्रेमी निर्लेप माया रहित वशिष्ठ अङ्गोंवाले ॥ व्याधाओं के नाशक स्तुतिमय स्तुति से प्रसन्न होने वाले ॥६८०॥ स्तुतिके योग्य सर्वव्यापकव्याकुलता रहित निरवधस्वरूप मुक्तिदाता विद्याओंके भण्डार उत्तम कर्म कर्त्ता शान्तबुद्धि अपरजित संग्रहकर्त्ता सर्व सुन्दर ॥ ६६० ॥ व्याघ्र चर्मधारी पृथ्वी स्वामी साकलऋषि रूप रात्रि के स्वामी परमार्थ रूप मुक्ति के गुरु भक्तजन अर्पित भेटों को स्वीकार करने वाले शरणा-गत रक्षक विद्वानों पर दयालु पार्वतीजी के साथ रहने वाले रस के स्वादज्ञाता वीर्य दाता समस्त सत्व के आश्रित भगवान् शङ्कर सदाशिव ॥१०००॥ मेरी रक्षा करो।

सूतजी बोले—हे मुनियो ! इस प्रकार विष्णु भगवान ने शिव सहस्र नाम का पाठ करके एक २ नाम पर एक २ कमल पुष्प चढ़ा-चढ़ा कर शिव पूजन किया।

———(*)———

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* छत्तीसवाँ अध्याय *

(शिव सहस्त्रनामका फल)

इसी पाठ एवं पूजनद्वारा शङ्कर प्रसन्नहुए प्रत्यक्ष होकर भगवान विष्णु को दिव्य सुदर्शन चक्र देते हुए बोले-विष्णुजी ! सभी भय से मुक्त होने के अर्थ मेरे हजार नामों का जो पाठ एवं पूजनकिया है उससे तुम्हारे सभी मनोरथ पूर्ण होंगे। और यह सुदर्शन चक्र तुम्हें सभीप्रकार से भय निर्मुक्त करता रहेगा। इसे धारण करो और जो भी पुरुष प्रातः काल उठकर मेरा पूजन करके खड़े होकर इन हजारों नामों का पाठ करेगा उसे सभी सिद्धियाँ प्राप्त होंगी। विष्णुजी मैं तुम पर बहुत प्रसन्न हूँ। अब अपनी इच्छा के साथ वर माँगो। विष्णुजी बोले-स्वामिन् ! इस दास पर आप सदा कृपा करते रहें। मैं सदा आपकी भक्ति में लगा रहूँ। शङ्कर बोले -विष्णुजी ! तुम सभी देवों में श्रेष्ठ स्तुति के योग्य विश्वम्भर कहलाओगे। सूतजी बोले--इस प्रकार कहकर एवं सुदर्शन चक्र देकर भगवान शङ्कर अन्तर्धान हो गये। तब विष्णुजी शिव का स्मरण करते हुए अपने कार्य में संलग्न हुए।

* सैंतीसवां अध्याय *

(शिव भक्तों की कथा)

सूतजी बोले—मुनियो ! भगवान शङ्करजी की पूजा उपासना आदि अत्यन्त श्रेष्ठ कथा है। वही हम सुनाते हैं। यही कथा ब्रह्माजी ने नारदजी से कही थी। ब्रह्माजी ने कहा--नारदजी ! भगवान् शङ्कर का पूजन लक्ष्मी सहित विष्णुजी ने तथा मैंने किया था जिससे हमारी कामनायें सभी पूर्ण हुई थी। भगवान् सदाशिव का पूजन तो दुर्वासा विश्वामित्र, शक्ति दधीचि, गौतम,कणाद, भार्गव, बृहस्पति,वैशम्पायन, पराशर, व्यास, उपमन्यु, यज्ञवल्क्य, जैमिनी, गर्ज आदि सभी ऋषि किया करते हैं। इसी प्रकार शुक्र शौनकादिक आदि भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

शिव आराधना किया करते हैं। अदिति ने बधू के साथ श्रद्धाभक्ति पूर्वक शिव पार्थिव लिंग का पूजन किया। इन्द्रादिक लोकपाल, वसुमहाराजिक देवता, साध्य गन्धर्व किन्नर एवं अन्य भी उप देवता आराधन करते हैं। हिरण्य कशिपु हिरण्याक्ष- प्रहलाद, विरोचन वाणासुर, हिरण्याक्ष पुत्र बृषपर्वादनु दानव आदि सभी शिव भक्त हुए हैं। शेष वासुकि, तक्षक, गरुड़ आदि पक्षी गण शिव पूजक हैं। सूय, चन्द्र, स्वायम्भुव सभी मनुराजा प्रिय ब्रत उत्तानपाद ध्रुव ऋषभ भरत एवं इसके सभी भ्राता शिव भक्त हुये। राजा दिलीप रघु नीतिज्ञ अज गुरु वशिष्ठ की आज्ञा से राजा दशरथ आदि सभी सूर्य वंशी राजा रानियों के साथ शिव पूजन में लगे रहे। तभी तो भगवान शङ्करजी की अतुल कृपा से रानी कौशिल्या के गर्भ से विष्णु के अवतार श्री राम, सुमित्रा से लक्ष्मण शत्रुघ्न एवं कैकई से भरत ये चार पुत्र प्रगट हुये। श्रीराम तो शिव के परम भक्त रुद्राक्ष एवं भस्म धारी थे। शिव पार्थिब लिंग के पूजन कार्य में लगे रहते। श्री वसिष्ठ जी ने अपनी तपस्या के बल सेसुद्युम्न को पुत्र हो जाने का वर दिया। यही सुद्युम्न एक दिन उस बन में गये जिस बन में आ जाने बाले पुरुष को स्त्री भाब प्राप्त हो जाता था इसके लिये श्री पार्वती जी की प्रसन्नता के हेतु भगवान शङ्कर ने ऐसा कह रखाथा। तब उस बन मैं जाकर सुद्युम्न स्त्री हो गये। उसके बाद सुद्युम्न ने शिव पार्थिव लिंग की विधिवत पूजा की जिससे प्रसन्न होकर सदाशिव ने एक महीने पुरुष एक महीने स्त्री रहने का विधान कर दिया। उसके बाद सुद्युम्न ने अपना राज्य-पाठ पुत्रों को दे दिया। फिर वन में जाकर शिव आराधना करके अन्त में परम पद प्राप्त किया। सुद्युम्न के पुत्रपुरू ने भी शिव-भक्ति के द्वारा मुक्ति प्राप्त की। पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण ने बदरीगिरि नामक पर्वत पर निवास करके सात महीने पर्यन्त शिव आराधना किया। शिव प्रसन्न हुये। उनसे वर पाकर ब्रह्माण्ड भर को अपने वश में कर लिया। जगत भर के गुरु कहलाये। श्रीकृष्णजी के वंश उत्पन्न प्रद्युम्न साम्ब आदि भी शङ्कर भक्त हुयेहैं। सूतजी बोले—इस प्रकार अनेकों

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

देवता, ऋषि,मुनि, मनुष्य और राक्षस आदि शङ्कर भक्त हुये हैं उनकी गणना हो ही नहीं सकती है।

* अड़तीसवाँ अध्याय *

(शिवरात्रि का व्रत निधान)

ऋषि बोले—सूतजी ! जिस व्रत के द्वारा भगवान शिव प्रसन्न होते हैं वही व्रत हमें सुनाइये। सूतजी बोले-हे मुनियो? यह प्रश्न श्री पार्वतीजी ने सदाशिव से किया था। पार्वती बोली—शम्भो ! आप किस व्रत से सन्तुष्ट होकर भोग मोक्ष दिया करते हैं। सदा-शिव बोले—उमे ! मुझे प्रसन्न करने के लिये तो अनेकों व्रत एवं उपवास हैं जिससे भोग मोक्ष सुलभ हैं किन्तु वेदवक्ता महर्षियों ने दस उपवास सर्वोत्तम कहे हैं यह दसों उपवास ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य ये तीनों वर्ण भली भाँति करें। प्रत्येक महीने की अष्टमी में उपवास करके रात्रि समय व्रत को खोले। किन्तु कालाष्टमी के दिन का किया गया उपवास रात्रि के समय न खोले अर्थात् भोजन न करे और प्रत्येक महीने की कृष्ण पक्ष की एकादशी को उपवास न करे। दिन के समय शिव पूजन करके रात को भोजन करे। किन्तु शुक्ल पक्ष की एकादशी को तो रात में भी भोजन न करे। शुक्लपक्ष की त्रयोदशी व्रत में रात के समय भोजनकरे किन्तु कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी व्रत में तो रात भर निराहार रहे। कृष्ण तथा शुक्ल पक्ष के सोमवारों के व्रतों में रात्रि समय भोजन करे। यह सभी उपाय अपनी सामर्थ्य के अनुसार शिव भक्त करें। इन सब में शिव रात्रि व्रत सर्वोत्तम है। उसका फल अधिक है। यह व्रत फाल्गुन महीने के कृष्ण पक्ष में होताहै। उमे ! अब इस व्रत का नियम सुनो। प्रातःकाल निद्रा त्याग दे। अपना नित्य कर्म करके शिव मन्दिर मेंपहुंचे वहाँ विधि पूर्वक शिव पूजन करके नमस्कार करते हुये प्रार्थना करे कि नीलकण्ठ ! मैं चाहता हूं कि आज शिव रात्रि का उपवास व्रत धारण करूं उसमें मेरी अभिलाषा को आप अतीव कृपा करके निर्विघ्न पूर्ण करो। कामक्रोधादि शत्रु मेरा कुछ बिगाड़ न सके। मेरी भली भाँति

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

आप रक्षा करें। यह कह कर शिवजी के सामने प्रतिज्ञा संकल्प करे उस के बाद रात होने पर सभी पूजन सामग्री अपने पास इकट्ठी करके उस शिव-मंदिर में पहुँचे जहाँ शिवलिंग शास्त्र सिद्ध हों जिनकी प्राण प्रतिष्ठा शास्त्रों द्वारा हो चुकी हो वहां पहुँच कर शुद्ध स्थान में सामग्री धर कर स्नान करे और शुद्ध वस्त्र धारणकरके उत्तमआसन पर बैठकर शिवपूजन करे। विष्णुजी ! शिवभक्त तो रात्रि के चार पहरों में चार शिवार्थिव लिंगों की रचना करके विधि पूर्वक चारों पहर वेद मन्त्रों के द्वारा पांच वस्तुओं से शिव-पूजन करे। एक सौ आठ शिवमन्त्र बोलकर जलधारा चढ़ावे। उस जलधारा से शिव पर पहिले चढ़ाई वस्तु को नीचे उतारे। उसके बाद गुरुमन्त्र किंवा शिवनाम मन्त्र बोलकर काले तिलों से भगवान शङ्करको पूजकर भव, शर्व रुद्र पशुपति उग्र महान भीम ऐवं ईशान इन आठ नामों को बोलते हुये कमलपुष्प तथा कनेर के फूल शिव पर चढ़ावे। उसके वाद धूप दीप पका हुआ उत्तम अन्न का नैवेद्य आदि निवेदन करे, फिर नमस्कार करे। ॐनमः शिवाय इस पंचाक्षर मन्त्र भी जप करे। जप होजाने पर धेनुमुद्रा दिखा कर निर्मल जल द्वारा शिव तर्पण करे। वित्त सामर्थ के अनुसार भोजन का संकल्प करे, यह सब का पूजन फल शिव-अर्पण करे। फिर विधि पूर्वक विसर्जन करे।

यह पूजन रात्रि के पहले पहर का हुआ। इसी प्रकार दूसरे पहर में भी वस्तुओं द्वारा शिव-पूजन करके दो सौ सोलह शिव मन्त्रों द्वारा शिव पर जलधारा चढ़ावे। इसी तरह हर एक वस्तु को चढ़ाते समय पहले की अपेक्षा हर एक मंत्र दो बार बोले। तिल, जौ, चावल, बेलपत्र, अर्क्त बिजौरे आदि वस्तुओं से पूजन करे, खीर का नैवेद्य चढ़ाकर प्रणाम करे। उसके वाद पहले पहर में जपे हुये मन्त्र से दूना जप करे। ब्राह्मण भोजन व संकल्प करके पूजन फल शिवार्पण करे। फिर विसर्जन करे। तीसरे पहर का पूजन फिर प्रथमवत् हो विशेषतः इसमें जौ के स्थान पर गेहूँ हों और पुष्पों के स्थान पर आक के फूल

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyan Kosha

पूजन में लावे। अनेकों प्रकार के धूप, दीप, नैवेद्य, कुए का शाक भी साथ हो वह फिर चढ़ावे, कपूर की आरती करे। अर्घ्य अनार चढ़ावे फिर पहले की अपेक्षा दुगुना जप करे, दक्षिणा सहित यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन का संकल्प करे। प्रहर समाप्त होने पर पूजन फल शिवार्पण करके विसर्जन करे, उसके बाद चौथाप्रहर लगने पर शिव आवाहान करके उड़द कङ्गनी मूंग सातों धातु अथवा शङ्ख फूल एवं बिल्व पत्रादि से मंत्रों को बोलकर विधिपूर्वक पूजन करे। उसके बाद उड़द के बनाये गये पदार्थ और भी स्वादिष्ट मिष्ठान्न विविध प्रकार के शिव को चढ़ावे। सुन्दर पके हुये केले के फल और ऋतु के अनुकूल अन्न फल प्रेम के साथ शिव के आगे समर्पित करे। फिर जितना जप पहिले किया हो उससे दुगना जप करे। यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन का सकल्प करे। इसी प्रकार सूर्य के उदय होने का उत्सव करता रहे, प्रेम में मग्न रहे। उसके बाद स्नान करके शिव-पूजन करे। अनेक पूजन सामग्रियों से अभिषेक करे उसके बाद रात्रि समय में जितने ब्राह्मणों का संकल्प किया हो उतने ब्राह्मणों तथा यतिजनों को बुलाकर भक्ति पूर्वक उन्हें भोजन करावे फिर शिव को नमस्कार करके हाथों में पुष्प लेकर नम्रता के साथ प्रार्थना करें। दयानिधान मुझे आप अपनी भक्ति का वरदान दीजिये कि सर्वदा मैं आपकी भक्ति में तत्पर रहूं। जो जाने अनजाने योग्य अयोग्य मैंने आपका व्रत पूजन किया है उसे आप कृपा करके अङ्गीकार करें। हे शम्भो! जहाँ पर भी मेरा जन्म हो वहाँ सभी आपके पूर्ण भक्त हों, उनमें मेरा वास हो यह कहकर शिवजी पर पुष्पांजलि समर्पित करे फिर ब्राह्मणों द्वारा तिलक करावे। उनका आशीर्वाद पाकर भगवान शङ्कर का विसर्जन करे। हे विष्णो! इस विधि के अनुसार शिवरात्रि का व्रत का बहुत ही माहात्म्य है जिसका वर्णन अतीव कठिन है। इस व्रत के करने वाले को शिव सानिध्य प्राप्त होता है, वह कभी शिव से अलग नहीं होता। हे पार्वती जी! इस प्रकार से अनायास भी किसी से

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

यह व्रत हो जाय तो उसको भी मोक्षपद प्राप्त होता है ! सूतजी बोले—भगवान् शङ्करजी से इस व्रत का विधान श्री पार्वतीजी के अतिरिक्त श्री विष्णुजी ने भी सुना। सुनकर प्रसन्न होते हुए भगवान विष्णुजी अपने धाम को पधारे फिर लोक के हित लिये इस व्रत को किया।

* उन्तालीसवां अध्याय *

(उद्यापन की विधि)

सूतजी बोले—ऋषियो ! अब हम आपको शिवरात्रि व्रत के उद्यापन की विधि कहते हैं। चौदह वर्ष पर्यन्त शिवरात्रि व्रत करता रहे फिर उद्यापन करे। जब त्रयोदशी का दिन आवे तो उस दिन एक बार भोजन करे। शिवचतुर्दशी को निराहार व्रतधारण करे। रात्रि के समय शिवालय में जाकर शिव के समीप गौरीतिलक नामक मण्डप की रचना करे। उसके मध्य मे लिङ्गतो भद्र सर्व तो भद्र आदि सुन्दर मण्डप बनवाये फिर प्रजापत्य नाम कुम्भों को लेकर वस्त्र फल दक्षिणादि उन पर धारण कर स्थापित करे। सोना किंवा चाँदी का एक कलश मण्डप के मध्य में धरावे फिर पलमात्र किंवा अपनी शक्ति अनुसार शिव गौरी की मूर्ति बनाकर उस कलश के ऊपर वाम भाग में गौरीजी एवं दक्षिण में शिवजी स्थापित करे। फिर ऋत्विजों के साथ आचार्य का वरण करके आचार्य की आज्ञा से शिव के आवाहन से लेकर विसर्जन तकरात के चारों प्रहर विधिपूर्वक पूजन करता रहे। उसमें शिव कीर्तन भी हो जिससे जागरण होता रहे। फिर प्रातःकाल होने पर स्नान आदि नित्य कर्मों से निवृत्त होकर शिव पूजन भक्ति एवं श्रद्धा के साथ करे। शास्त्र विधान से हवन भी कर दे। उसके बाद सपत्नीक ऋत्विजों को वस्त्र आभूषित कर अनेकों दान दे श्रद्धा एवं प्रेम से ब्राह्मण भोजन करावे। बस्त्र आभूषणों से बच्चे वाली गौ सजाकर अनेकों वस्तुओं के साथ आचार्य को दान करे फिर प्रार्थना करे कि इससे भगवान शङ्कर मुझपर प्रसन्न हों फिर मण्डप की सब सामग्री उस कृत्य वाले आचार्य को देदें। उसके वाद अत्यन्त नम्रता के साथ हाथ जोड़कर सदाशिव की प्रार्थना

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

करे। देवाधिदेव ! शरणागतों की रक्षा करने वाले महादेव ! मुझ पर दया करें, यह आपकी परम कृपा है कि मैं इस व्रत को पूर्ण कर सका हूँ, मेरा किया गया यह साधारण व्रत हो तो उसे सफल करें। इस प्रकार कहकर बारबार सदाशिव को दण्डवत एवं प्रणाम करे और अपराधों के लिये क्षमा माँगे। सूतजी बोले-इस विधान से किया गया व्रत सफल होता है।

* चालीसवाँ अध्याय *

(निषाद-चरित्र)

सूतजी बोले-ऋषियो ! प्राचीन समय में एक बन प्रदेश में गुरुद्रुह नामक भील अपने परिवार के साथ रहा करता था। बन के पशुओं का वध तथा चोरी करना ही उसका नित्य का काम था। इसी प्रकार करते २ एक समय शिवरात्रि के व्रत का पवित्र दिन आया। उसी दिन उसके घर कुछ भी नहीं था, उसके परिवार के, माता-पिता सभी भूखे थे उन्होंने कहाकि कहीं से खाने को लाओ, हम तो भूखे मर रहे हैं। यह सुनकर भील ने अपना धनुष-बाण उठाया, शिकार के लिये बनकीओर चल पड़ा। भाग्यवश सारादिन फिरता रहा किन्तु शिकार हाथ न आया। रात हुई शिकारी ब्याकुल हो गया। उसने विचार किया कि मैं खाली हाथ घर कैसे लौटूं उन्हें खाने को क्या दूंगा, वो लोग तो मेरी प्रतिक्षा में होंगे। इसलिए अब मैं इसी तालाब के किनारे ही बैठ जाता हूँ, कोई न कोई पशु जल पीने आयेगा मैं उसी का शिकार करलूंगा। उस प्रकार विचार कर वह भील जल लेकर बेल वृक्ष पर बैठ गया रात्रि के प्रथम पहर में एक हिरनी वहाँ जल पीने आई। भील ने बध करने को धनुष पर बाण चढ़ाया। उस समय उससे पानी तथा कुछ बेल के पत्ते झड़कर वहाँ जा गिरे जहाँ नीचे भगवान शङ्कर का ज्योतिर्लिंग विद्यमान था। इससे उस भील द्वारा पहले प्रहर की शिव-पूजा हो गई। भील के पापों का नाश हो गया। उसके बाद भीलके धनुष की टङ्कार

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

सुनकर हिरनी ने कहा-भील ! यह आप क्या करने लगे हैं ? तब भील ने कहा मेरा परिवार भूखों मर रहा है उन्हें भोजन देने को मैं तुम्हारा बध करूँगा यह सुनकर हिरनी ने कहा कि-तुम लोग तो महा अन्याई हो दया करना तो जानते नहीं, यदि मेरे माँस द्वारा तुम्हारे परिवार की भूख मिट जाय तो इसमें मेरा जीव सफल है, संसार में दूसरों के कष्ट निवारण करने वाले ही मनुष्य प्रशंशा के योग्य हैं, अब तुम थोड़ी देर के लिये रुक जाओ मैं अपने घर जाकर अपने बच्चों को बहिन के हवाले करके आती हूँ, मुझे मारकर ले जाना। मैं इसमें झूंठ नहीं बोल रही हूँ, विश्वास करो मैं लौट कर आती हूँ। यदि मैं लौट कर न आऊँ तो मुझे वह पाप लगे जो विश्वास घाती कृतघ्न एवं शिव द्रोही को लगता है। तब इस प्रकार हिरनी के विश्वास दिलाने पर भील ने उसे जाने दिया। हिरनी प्रसन्नता पूर्वक छलागें भरती हुई चली गई। सूतजी बोले-इस प्रकार उसका प्रथम प्रहर का जागरण भी हो गया ? उसके बाद उस हिरनी की बहिन ढूंढ़ते २ वहाँ आ पहुँची उसे देखकर भील ने झट अपने धनुष पर बाण चढ़ा लिया। तब पहिले की तरह जल एवं बेल पत्र फिर शिवजी पर चढ़ गये। इसीसे उसका दूसरे पहर का पूजन भी हो गया। जो कि भील के लिये सुख दायक था धनुष की टङ्कोर सुनकर वह हिरनी बोली—भीलराज ! आप यह क्या करने लगे हैं ? तब भील ने उसको भी वही उत्तर दिया कि जो कि पहिली हिरनी को दे चुका था यह सुनकर हिरनी बोली—भीलराज ! थोड़ी देर के लिये मुझे घर जाने की आज्ञा दे दो मैं अपने बच्चों को देखकर लौट कर आजाऊंगी। भील ने उसे भी जाने की आज्ञा देदी। वह पानी पीकर चली गई। इसी प्रकार जागते-जागते भील का दूसरे पहर का जागरण हो गया।

तीसरा प्रहर लगा उस समय एक मोटा शरीर वाला हिरन आ पहुँचा। उसे देख कर फिर उसने धनुष पर बाण चढ़ाया, जिससे फिर शिवजी पर जल एवं बेल के पत्ते झड़कर गिरे इससे

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

उसी तीसरे पहर की पूजा हो गई। हिरन ने उसके चढ़े हुए बाण को देखकर पूछा कि आप यह क्या करने लगे हैं? उस हिरन के प्रति भी उसने वही उत्तर दिया जो कि प्रथम कह चुका था। तब हिरन ने अनुनय विनय से कहा, कि भीलराज! मैं अपने बच्चों को धैर्य देकर अभी लौट कर आता हूं। यह मैं शपथ पूर्वक कहता हूं। आप बिश्वास रखिये। भील ने यह सुनकर उसे भी जाने की आज्ञा देदी। हिरन जल पीकर घर की ओर चला गया। उसे भील ने जल्दी लौट आने के लिए कह दिया था। तब वे तीनों घर जाकर एकत्रित हुए आपस में अपना २ वृतान्त सुनाकर बोले–हमने भील के आगे वापिस लौटने की शपथ ले रखी है। इसी कारण हमें वहाँ अवश्य जाना चाहिये। तब उन्होंने अपने बच्चों को धैर्य दिया और आप चलने को तैयार हो गये। तब उस हिरनी ने कहा जो कि प्रथम प्रतिज्ञा करके आई थी। वह बोली–स्वामिन! आप मेरी छोटी बहिन के साथ अपने बच्चों को यहाँ संभाले रहिये मैं भील के पास जा रही हूँ। मैंने भील से प्रतिज्ञा की हुई है। इतना सुनकर छोटी हिरनी बोली–हे बहिन! मैं तो आपकी दासी हूँ इसलिये मैं क्यों न जाऊं मैं भी तो भील से प्रतिज्ञा कर चुकी हूँ। तब हिरन ने कहा–प्रिये! माता के बिना बच्चों का पालन कठिन है। तब यहाँ रहकर मुझे जाने दो। इतना सुनकर दोनों हिरनियां व्याकुल हो गईं। अपने पति की बात न मानकर बोलीं—नाथ! विधवा स्त्रियों का तो जीवन ही ब्यर्थ होता है आपकी मृत्यु हो जाने पर हम किस प्रकार जीवित रह सकती हैं। अतएव हम भी वहाँ अवश्य चलेंगीं। इस प्रकार कहकर वे तीनों अपने बच्चों को समझा बुझाकर चल पड़े। बच्चों ने देखा हमारे माता पिता तो जा रहे हैं हमें यहां नहीं रहना चाहिए वे भी उनके पीछे २ चल पड़े। उन्होंने विचार किया जहाँ हमारे माता-पिता जीवन देंगे, हम भी उन्हीं के साथ अपने प्राण गँवा देंगे। इस प्रकार वे सबके सब वहां जा पहुँचे। भील ने उन्हें आया देखकर झट धनुष पर बाण चढ़ाया तब उसी समय जल तथा बेल पत्र झड़ कर

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

शिवजी पर जा चढ़े। इसमें उसके चौथे पहर की पूजा हो गई इससे उसके सभी दुष्ट कर्म नष्ट हो गये। उसे ज्ञान प्राप्त हो गया, उससे मृग एव मृगनियों ने कहा—भीलराज! अब आप कृपा करके हमारा वध करें जिससे कि हमारी यह देह सफल हो जाय। तब भील शङ्कर की परम कृपा से ज्ञान प्राप्त करके आश्चर्य से सोचने लगा-देखो मुझसे तो यह अज्ञानी पशु ही धन्य हैं जो कि परोपकार परायण होकर अपना शरीर तक दे रहे हैं। एक मैं हूं जो मनुष्य जन्म पाकर भी इतना हत्यारा बन चुका हुँ। सूतजी बोले-इस प्रकार बिचार कर भील बोला-मृगियो! तुम धन्य हो। तुम्हारा जीवन सफल है। जाओ मैं तुम्हें नहीं मारता तुम निर्भय रहो। ऋषियो! इस प्रकार भील के कहने की देर थी। तब तो वहाँ स्वयं शङ्कर अद्भुत रूप से प्रकट हो गये और बोले—भीलराज! मैं तुम पर सन्तुष्टहूं,अपना मन चाहाँ वर माँगलो। भगवान शङ्कर के वचन सुनकर वह भील झट ही शङ्कर के चरणों में गिर पड़ा। आंखों से जल धारा बहने लगी। तब भगवान शङ्कर ने कहा—व्याधर्षे! में अत्यन्त प्रसन्नहूं इस समय तुम शृङ्गवेरपुर की श्रेष्ठ राजधानी में जाकर आनन्द के साथ इच्छित भोग प्राप्त करो। तुह्मारे घर ही भगवान श्री रामचन्द्र पधारेंगे। उनके साथ तुम्हारी भक्ति-पूर्वक मित्रता हो जायगी। ऐसा कहने पर अपने परिवार के साथ वह व्याध कृतार्थ हो गया। पहिले शाप से मुक्त हुआ उस दिन से सभी सुख भोग-कर श्री रामचन्द्र के अनुगृह से व्याध ने परम पद प्राप्त किया। सूतजी बोले-ऋषियो! जब बिना जाने एक पापी व्याधसे शिव चतुर्दशी व्रत हो गया। उसी के उपवास से उसे मोक्ष प्राप्त हो गया तो ज्ञान सहित उस उपवास व्रत के धारण करने से क्यों न मोक्ष पद की प्राप्ति हो इसमें आश्चर्य ही क्या है?

—*—

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* इकतालीसवां अध्याय *

(मुक्ति वर्णन)

ऋषि बोले—सूतजी ! अब आप कृपा करके मुक्ति का स्वरूप वर्णन करें। मुक्ति क्या वस्तु है ? तब सूतजी बोले—ऋषियो ! इस प्रकार भगवान शङ्कर के उपवास व्रत करने से सब प्रकार के पाप नष्ट हो जाते हैं,उसे उत्तम सुखदायक, सारूप्य, सायोक्य, सायुज्य, ये चारों प्रकार की मुक्ति प्राप्त हो जाती है, धर्म, अर्थ, काम ये तीनों वर्ग तो ब्रह्मा, विष्णु आति देवता भी दे सकते हैं किन्तु मुक्ति देने का कामतो भगवान शङ्कर ही का है। ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र ये तीन देवता सत्व, रज, तम इन गुणों के स्वामी हैं। किन्तु भगवान शङ्कर तो परब्रह्म परमात्मा हैं। इन तीन गुणों से क्या वे तो प्रकृति से परे हैं। वे विज्ञानमय, अव्यय, सर्व-दृष्टा, ज्ञानलभ्य, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों फल के दाता हैं। ऋषियो ! इस प्रकार से और भी कठिनता से प्राप्त होने वाली कैवल्य नाम की पाँचवी मुक्ति भी है। अब मैं उसका स्वरूप एवं गुण कहता हूं जिससे सारी सृष्टि उत्पन्न होती हैं एवं उसका पालन होताहै वह भग-वान शङ्कर का स्वरूप सकल निष्कल भेद से दो प्रकार का है। यह शिव स्वरूप तो ब्रह्मा, विष्णु, कुमार, नारद, शुकदेव, व्यास आदि मुनिजन कोई भी भली-भाँति नहीं जान सके। वे ही भगवान शङ्कर सच्चिानन्द, सत्य, ज्ञान, अन्त रहित, अव्य अविनाशी हैं। यह स्वरूप मनवाणी से अतीत है। मनवाणी वहाँ जाकर भी लौट आती है वही सदाशिव पूर्ण ब्रह्म परमात्माहै इस प्रकार का अज्ञान शिव ज्ञानद्वारासूक्ष्म बुद्धि से शिव भजन से प्राप्त होता है। ज्ञान तथा भजन इन दो में से ज्ञान मार्ग मनुष्य के लिये अत्यन्त सरल है इस कारण मुक्ति के हेतु ज्ञान द्वारा शिव भजन श्रेष्ठ है। सदाशिव भजन के आधीन होकर ज्ञान मय परम मुक्ति के दाता हैं जिसकी कृपा द्वारा मुक्ति सुलभ होती है। वह प्रेम का अंकुर रूप प्रेम लक्षण भक्ति है। यह भक्ति गुण युक्त एवं गुण रहित अनेकों प्रकार की है, इसका वर्णन करना अत्यन्त

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

कठिन है। उन सब में जो वैद्य एवं स्वाभाविक है। वह सर्वोत्तम है। यह भी नैष्टिकी अनैष्टिकी भेद से दो प्रकार की हैं। इनमें से नैष्टिकी एक प्रकार की और अनैष्टिकी छः प्रकार की है। उसके बाद फिर वह विहित एवं अविहित भेद से कई प्रकार की है। इसका विस्तार वर्णन अत्यन्त कठिन है। उपरोक्त दोनों श्रवण कीर्तन आदि भेदों से नौ प्रकार के अङ्गों वाली है। जिसके द्वारा अत्यन्त कठिन मुक्ति भी सुलभ हो जाती है ऋषियो! इस प्रकार भक्ति एवं ज्ञान में कुछ भी भेद नहीं रहता। यह तीनों एक हो जाते हैं। भगवान शङ्करजी यही कहते हैं। इसलिये ये दोनों भिन्न नहीं। भक्ति एवं ज्ञान के ऊपर आचरण करने वाले जन सदा सुख पाते हैं।

* व्यालीसवाँ अध्याय *

(सगुण-निर्गुण भेद वर्णन)

ऋषि बोले—सूतजी! शिव, हरि, रुद्र, एवं ब्रह्मा ये कौन हैं! इन चारों में से कौन निर्गुण और कौन सगुण, यह हमें भली-भाँति समझाने की कृपा करें। सूतजी बोले—ऋषियो! जो सृष्टि के आरम्भ में निर्गुण परमात्मा हैं वही शिव हैं। उन्हीं से प्रकृति पुरुष ये दोनों हुए। वे दोनों जल के नीचे तपस्या करने में तत्पर हुए। उसस्थान को पंचकोशी नाम से कहा जाता है। वही काशी क्षेत्र प्रसिद्ध है। यह सभी विश्व जल से व्याप्त है। विष्णुजी यह मानकर ही जल में सोगये। इसी कारण यह नारायण नाम से प्रसिद्ध हैं। इनकी माया भी नारायणी कहलाई। नारायण के नाभि कमल से पितामह ब्रह्मा हुए उस ब्रह्मानेतप द्वारा विष्णु का दर्शन किया फिर दोनों से विवाद छिड़ पड़ा। इस विवाद को निवारण करने के लिये जो देव प्रत्यक्ष हुए वे महादेव कहलाये। फिर जगत के हिम के लिये ब्रह्माजी के कपाल से प्रकट हुए शिव रुद्र नाम से प्रसिद्ध हुये। सोने के आभूषण जिस प्रकार सभी सोना है उसी प्रकार निर्गुण शिव तथा सगुण रुद्र में कोई भी भेद नहीं ये दोनों ही एक स्वरूप होकर अनेकों कर्म तथा लीला करने वाले हैं। यही

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyan Kosha

अपने भक्तों को श्रेष्ठ गति प्रदान करते हैं। इस लिये तो पराक्रमी रुद्र स्वरूप हैं। यही श्री विष्णुजी तथा श्री ब्रह्माजी की सहायता के लिए ही प्रकट हुये हैं।

अन्य देवताओं के भक्त मनुष्य अपने २ देवताओं में विलीन होते रहते हैं। जब वह देवता रुद्र में विलीन होते हैं। तभी जाकर उन देव भक्तों का भी रुद्र में लय होता है। इसमें बहुत समय लगता है। जो साक्षात रुद्रजी की भक्ति करने वाले होते हैं। वे तो शीघ्र ही रुद्रस्वरूप हो जाते हैं! क्योंकि उन्हें किसी देवता की अपेक्षा नहीं रहती है। ऋषियो! विज्ञान एक प्रकार का है और अज्ञान कई प्रकारका है। ब्रह्मा से लेकर तृण पर्यन्त सभी शिवरूप हैं इसमें अन्य सभी प्रकार की कल्पना असत्य है वह नहीं करनी चाहिये। सृष्टि के आदि, मध्य एवं अन्त में शिव ही शिव हैं। इस जगत के लय एवं शून्य होने पर भी शिवस्थित हैं। उसी सदाशिव ने विष्णु को वेद दिये जो कि सनातन हैं इसीप्रकार बहुत से वर्ण मात्रा ध्यान एवं अपना पूजन आदि सभी समझाया इसी कारण सभी वेदों के रचियता विद्याओं के स्वामी सबकी रचना एवं संहार कर्ता वही शिव हैं और सबकी आयु एवं काल गणना हैं। किन्तु स्वयं शिव महाकाली के आश्रित होते हुये भी काली के काल हैं। ब्राह्मणों का कथन है कि रुद्र के समान काली हैं। रुद्र तथा काली को सत्यलीला से सभी कुछ अपनी इच्छानुसार प्राप्त हैं। सूतजी बोले-ऋषियो! यही सदाशिव का ज्ञानतत्व है जो आपको हमने कह सुनाया है इस तत्व ज्ञान को तो ज्ञानी मनुष्य ही जान सकते हैं और किसी का काम नहीं।

* तेतालीसवाँ अध्याय *

(ज्ञान निरूपण)

ऋषि बोले—सूतजी! जब आप हमें इस प्रकार का ज्ञान समझाइये जिसे जान करके शिव स्वरूप की प्राप्ति हो। इसी प्रकार सर्व व्यापक तथा सदाशिव ये किस प्रकार के हैं। यह भी सुनाने की कृपा करें सूतजी बोले—ऋषियो! शोनक, नारद, कुमार, व्यास कपिल

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

आदि ने एक समय सभा की। उसमें यह निश्चय किया कि सारा ब्रह्माण्ड शिव रूप है एवं सारा संसार शिव रूप है। जब शिव इच्छा करते हैं तभी जगत की रचना करते हैं। और आप उस जगत के भीतर भी हैं एवं बाहिर भी। संसार में लिपायमान नहीं चित्स्वरूप हैं। वस्तुतः आप ही सबको शुभ स्वरूप से मालूम होते हैं। इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं। अज्ञान का अर्थ तो चित्त की भाँति है। जब अनेक देवताओं को, देखा जाता है तभी बुद्धि मन्द हो जाती है। किंतु वेदान्त जानने वाले अद्वितीय परब्रह्म है ऐसा ही सदा कहा करते हैं। भगवान शिव के अङ्गरूप प्राणी अज्ञान से मोहित होकर हम अन्य हैं ऐसा मान बैठते हैं किन्तु शिव इस अज्ञान से परे हैं। सब जीवों के रचियता चेतन अचेतन के स्वामी शिव इन सब में व्याप्त हैं। पण्डितजन इन्हें ही देखने के लिये प्रयत्न करते हैं। वेदान्त के अनुसार ही ज्ञान प्राप्त करके उनका दर्शन पाते हैं। शिव से भिन्न और कुछ भी नहीं भ्रम के कारण ही शिव अनेक रूपों से दिखाई देते हैं। कल्याण एवं कार्य में कोई भेद नहीं। अज्ञान के कारण दोनों भिन्न२ दिखाई देते हैं। अज्ञान के नाश हो जाने पर फिर कुछ भेद नहीं मालूम होता। अनेक पन को प्राप्त होने वाले वृक्ष का बीज ही तो कारण है। वही बीज वृषभ नष्ट हो जाता है। किन्तु फिर भी नष्ट नहीं। इसी प्रकार ज्ञानीतो बीज है एवं विकृति वृक्ष है। उससे जब मुक्त हो जाता है तो फिर ज्ञानी ही ज्ञान है। इस कारण सभी शिव रूप हैं एवं शिव सभी रूप हैं। इसमें कोई भेदनहीं। जिस प्रकार सूर्य एक है उसका जल आदि में प्रतिबिंब पड़ता हैं। तो कई रूप दिखाई देते हैं। उसी प्रकार शिव के एक होते हुए भी भ्रम के कारण बहुत से रूप दिखाई देते हैं। प्रत्येक प्राणी अहंकार द्वारा अपने कर्म का फल भोगता है। भगवान शिव तो अहंकार रहित निर्लेप एवं महान हैं उन्हें कुछ भी कर्म फल नहीं पुरुष को चाहिए कि इसी ज्ञानकी प्राप्ति के लिये किसी योग्य गुरु के पास उपस्थित होवे। भक्ति भाव से ज्ञान प्राप्त करके शङ्करजी का पूजन ध्यान आदि करे। तब जाकर

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

उसका पापरूप मैल धुल जाता है। अज्ञान का नाश होकर ज्ञान उदय होता है। उसके बाद उसका अहंकार नष्ट होता है फिर निर्मल बुद्धि होकर वह प्राणी भगवान शङ्करकी कृपासे शङ्कर स्वरूप को पाताहै। वह जीवन मुक्ति हो जाता है। मानव शरीर को त्यागकर शिवमें मिल जाता है। इसे मुक्ति कहते हैं संसार में ज्ञानी वही है जिसे हर्ष है न विषाद। अच्छाई में खुश नहीं, बुराई में क्रोध नहीं। सुख दुःख दोनों बराबरहै। मुक्ति की अभिलाषा तो शरीर द्वारा अथवा आत्मयोग से जब तत्वों का विवेक वान होता है। तब अपना शरीर शिव में विलीन कर देता है। वह संसारिक व्याधियों से छूट जाता है। ऋषियो ! इत्यादिक वचन ज्ञान मैंने सत्सङ्ग द्वारा प्राप्त करके आपको सुना दिया जो कि चित्त में भली भाँति धारण करने के योग्य है। यही ज्ञान सबसे पहिले शङ्करजी ने विष्णुजी को दिया था। विष्णुजी ने ब्रह्मा को, ब्रह्माजी ने सनकादिक मुनियों को, उन्होंने नारदजी को, नारदजी ने व्यासजी को, फिर परम दयालु व्यासजी ने यह ज्ञान मुझे दिया। वही ज्ञान मैंने आप लोगों को सुना दिया। अब आप इस ज्ञान को लोगों के हितके लिए भली-भाँति धारण करें। किंतु ऐसा ज्ञान नास्तिक, अश्रद्धालु, शठ एवं शिव के अभक्त को नहीं देना चाहिये। श्रीव्यासने इतिहास पुराण वेद शास्त्र आदि को सुप्रकार बार-बार पठन कर के उसका तत्वरूप यह परम ज्ञान मुझे दिया है। इसलिये यह अधिकारी को ही देना उचित है। इस ज्ञान के एक बार सुन लेने से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। अभक्तों को शिव भक्ति मिलती है शिव भक्तों की भक्ति बढ़ जाती है। इसके पा लेने पर फिर कुछ भी प्राप्त नहीं रहता। प्राचीन समय तो राजा तथा ब्राह्मण आदिकों ने इसे पांच वार श्रवण किया। फिर वे सिद्धि को प्राप्त हुए हैं। इस समय भी जो मनुष्य एवं श्रद्धा के साथ इसका श्रवण करेंगे वे निश्चय ही शिव ज्ञान को पाकर भोग मोक्ष प्राप्त कर लेंगे।

———

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

श्री व्यासजी बोले-इस प्रकार सूतजी का कथन सुनकर ऋषियों ने परम प्रेम से सूतजी का आदर सत्कार किया और उनकी पूजाकी। नमस्कार एवं स्तुति करके उनको आशीर्वाद से प्रसन्न किया। उसके बाद अपने सभी संशयों के निवृत्त होजाने पर भगवान् शङ्कर को देवताओं में बड़ा मानकर प्रणाम करते हुये शिव भजन एवं पूजन में लग गये।

॥ इति कोटि रुद्र संहिता समाप्त ॥

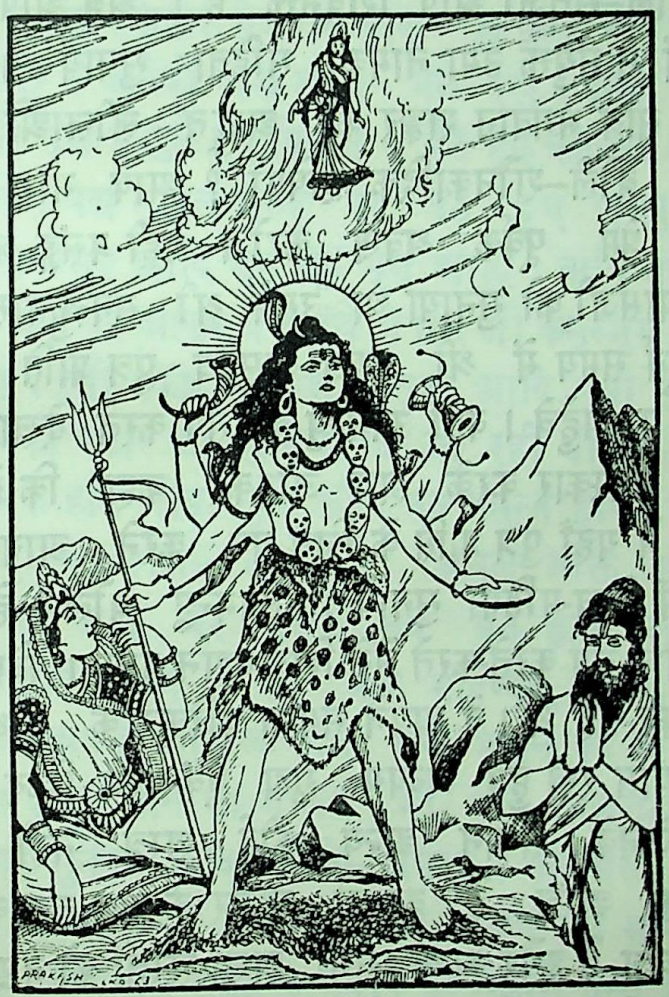

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* ॐ नम, शिवाय *

* श्री शिव महापुराण भाषा *

(अथ उमा-संहिता)

* पहला अध्याय *

(कृष्ण उपमन्यु सम्वाद)

ऋषि बोले-सूतजी आप शिवभक्त हैं। अब आप कृपा करके नाना कथाओं से संयुक्त उमा नामकी संहिता सुनायें। जिसमें श्री पार्वतीजी के साथ भगवान् शङ्कर की अद्भुत लीलाओं का वर्णन है। सूतजी बोले-शौनकादिक ऋषियो ? आप भोग मोक्ष शिव चरित्रों को प्रेम पूर्वक श्रवण करो। यही प्रसंङ्ग श्री सनत्कुमार जी ने श्री व्यासजी को सुनाया था उसमें श्री सनत्कुमारजी बोले-व्यासजी ! पूर्व समय में श्री कृष्ण-वासुदेव पुत्र प्राप्ति के हेतु तप करने कैलाश पर पहुँचे। वहाँ उपमन्यु को तप करते देखा तब उनके पास पहुँचकर नमस्कार करके हाथ जोड़कर कहा कि हे शिव-भक्त उपमन्युजी ! मैं यहाँ पुत्र प्राप्ति के लिये तप करने आया हूँ। आप कृपा करके हमें शिव-महिमा सुनायें। उपमन्यु बोले—हे श्री कृष्ण ! सुनिये एक बार तप करते-करते मैंने शिव दर्शन पाया। विष्णु ब्रह्मादिक उनकी सेवा कर रहे थे। वे अपने समस्त परिवार के साथ थे। फिर मैंने शिव के पास रखे हुए अव्यय गुह्य एवं परम दिव्य अस्त्र-शस्त्र भी देखे जिनके समान अन्य कोई शस्त्र नहीं। जो उनका त्रिशूल नामक अस्त्र है वह तो सागर के जल तक को सुखा देने की शक्ति रखता है और अन्य सभी अस्त्र-शस्त्रों को नष्ट करने वाला लोक विख्यात है। उस त्रिशूल को भी भगवान् शङ्कर ने अभिमानी

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan

लवणासुर पर चलाकर उनका वध किया था फिर वह उस दैत्य का वध करके शिव के पास आ गया। फिर मैंने वहाँ एक फरसा भी देखा जिसकी तीन शिखायें भोंहों के समान थी, सूर्य तथा पाश हाथमें लिये यम के समान था। सर्प आदि जिसे भूषित कर रहेथे। अत्यन्त तीक्ष्ण धार वाला था। प्रलय की अग्नि के समान जल रहा था। शङ्करजी ने वही परशु परशुराम कोदेदिया था। फिरमैंनेसुदर्शनचक्र को देखा। उसके एक हजार तो मुख थे। दो हजार हाथ दो हजार नेत्र एवं एक हजारउसके पैर थे करोड़ों सूर्य के समान प्रकाश कर रहा था। फिर सौ धार का चमकता वज्र देखा। फिर तरकस के साथ पिनाक नामी उत्तम धनुष देखा उसी प्रकार शक्ति तलवार तेजवान पाश अंकुश बड़ी सी गदा और भी लोकपालों के अनेकों अस्त्र-शस्त्र मैंने देखे। इसके बाद शङ्कर की दाहिनी ओर हंस से जुते हुए विमान में बैठे हुए ब्रह्माजी को मैंने देखा। शङ्ख चक्र गदा पद्म सहित गरुड़ पर बैठे हुए विष्णु शिव की बांई ओर थे। स्वयम्भुव आदि मनु एवं भृगु आदि ऋषि तथा इन्द्र आदि सभी देवता वहाँ पर आकर बैठे हुये थे।रुद्र जी केसन्मुख नन्दी त्रिशूल लिये बैठे था। इसी प्रकार भूतगण मातृका आदि सभी सेवामें उपस्थित थे और अनेकों प्रकार की स्तुतियाँ की जा रही थीं तब मैंने इस प्रकार के दर्शन करके हाथ जोड़ स्तुति की। तब प्रसन्न होकर भगवान् शङ्कर हँसते हुए मुझसे बोले—ब्राह्मण ! अचल भक्ति सम्पन्न हो मैं प्रसन्न हूँ। मन चाहा वर माँग तब मैंने हाथ जोड़कर कहा—प्रभो ! यदि आप प्रसन्न हैं तो मुझे भविष्यत, वर्तमान तीनों काल का ज्ञान तथा अपनी अविरल भक्ति मुझे प्रदान करें और मुझे अपने परिवार के साथ दूध भात का भोजन भी सदा मिलता रहे। यही बर मुझे दो। यह सुनकर शिव बोले—उपमन्यु ! तुम मेरी कृपा से अजर अमर होकर अपनी इच्छा से विचरण करते हुए सब मुनियों में ऐश्वर्य-वान् होओगे। तुम क्षीर समुद्र के समीप ही रहोगे उसी का अमृतमय क्षीर तुम्हें बन्धु बान्धवों के साथ सदा मिलता रहेगा और तुम वैवस्वत

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

कल्प को देखते रहोगे। मुनीजी ! मैं भी निरन्तर तुम्हारे पास रहूंगा। जब-जब भी तुम मेरा ध्यान करोगे, तभी-तभी से तुम्हें दर्शन दिया करूँगा। कृष्णजी ! इस प्रकार मुझे कहकर भगवान शङ्कर अन्तर्धान हो गये। भगवान शङ्कर सारे तत्त्वों के ज्ञाता, द्रष्टा, प्रधान पुरुष ईश्वर हैं। कृष्णजी ! यदि तुम पुत्र चाहते हो तो शिव आराधना करो। वही अतीव दयालु आपके भक्तों पर शीघ्र प्रसन्न हो जाते।

* दूसरा अध्याय *

(शिव भक्तों का आख्यान)

श्री कृष्णजी उपमन्यु से बोले—ब्राह्मण ! शिव अर्चन से जो शिव-भक्त सिद्ध हुए हैं, अब कृपा करके वर्णन करे। उपमन्यु बोले—कृष्ण ! हिरण्यकशिपु ने तपस्या करके शिवजी को प्रसन्न किया। तब दस लाख वर्ष तक भगवान शङ्कर ने उसे निष्कण्टक और ऐश्वर्यशाली राज्य दिया। हिरण्यकशिपु के पुत्र नन्दन भी शङ्कर से वर पाकर युद्ध में विजयी हुए तथा उन्होंने इन्द्र को दस हजार वर्ष अपना दास बनाये रखा। सतमुख नामक दानव ने शिव आराधन करके हजार पुत्र प्राप्त किये। याज्ञवल्क्य ऋषि शिव की असीम कृपा से वेद विख्यात ऋषिएवं ज्ञानी हुए। इसी प्रकार महर्षि व्यासजी ने भी शिव-भक्ति द्वारा वेद,पुराण इतिहासादि विद्या में प्रवीणता एवं उन्नति पाई। प्राचीन काल में जब, शिवजी को क्रोध उत्पन्न हुआ तो पृथ्वी भर का पानी भी सूख गया। तब देवताओं ने शिव की पूजा की। उससे प्रसन्न होकर शङ्कर ने अपने कपाल से जल प्रकट कर दिया। चित्रसेन भी शिव-भक्त हुए शिव-पूजन द्वारा शत्रुओं से निर्भय हुए। शिव-पूजन करते हुए इसी चित्रसेन को देखकर गोपी का बालक श्रीकर भी शिव-पूजा परायण हुआ इसी पूजा द्वारा परम सिद्ध प्राप्त की। सीमन्तिनी पत्नी के शिव के सोमवारी व्रत के प्रभाव से उसके पति चित्राँगद राजा यमुना में डूबकर भी मृत्यु को प्राप्त न हुए। यमुना में डूबकर चित्राँगद नागलोक में पहुँचे। यहां नागों

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyan Kosha

से मित्रता करके बहुत-सा धन घर में लाये। चंचल व्यभिचारिणी स्त्री ने अचानक गोकर्ण तीर्थ पर जाकर शिव कथा श्रवण की। उससे उसके सभी दुष्ट कर्मों का नाश हो गया। शिव-भक्ति से शिवलोक प्राप्त किया। फिर अपने दुराचारी विन्दुग पति को भी दया करके सदगति प्राप्त कराई। महाकाल नामक हिंसा करने वाले व्याध ने शिव-पूजन करके सदगति पाई। महामुनि दुर्वासाजी ने शिव कृपा से मोक्षदायक शिव-भक्ति का सिद्धान्त जगत में विख्यात किया। पितामह ब्रह्माजी ने शिव आराधना से ही ब्रह्माण्ड के प्रजापतिपद को पाकर सृष्टि की रचना की। मार्कण्डेयजी ने इन्हीं शिवजी की कृपा से दीर्घायु होकर अद्भुत शोभा एवं शक्ति प्राप्त की। इसी प्रकार वरदान से शाँडिल्य जगत प्रसिद्ध एवं पूजनीय हुए। श्रीकृष्णजी! इस प्रकार के अनेकों भक्त शिव-भक्ति द्वारा सिद्ध हो चुके हैं।

* तीसरा अध्याय *

(शिव माहात्म्य वर्णन)

श्रीकृष्णजी ने उपमन्यु से पूछा—द्विजवर! क्या मुझे भी शङ्कर दर्शन देंगे? उपमन्यु बोले-अवश्य! आप अत्यन्त शीघ्र शिव-दर्शन पाओगे। मैं आपको एक अद्भुत मन्त्र कहता हूँ। उसके जप द्वारा निश्चय आपको शिव दर्शन हो जायेंगे और तुम्हारे समान ही पराक्रमी पुत्र भी आपको प्राप्त होगा। सभी मनोरथों के पूर्ण करने वाला स्वर्ग अपवर्ग के देने वाला "ॐ नमः शिवाय" पञ्चाक्षर मन्त्र ही सबसे उत्तम है। सनत्कुमार बोले—इस प्रकार शिव महिमा एवं मन्त्र महिमा कहते-कहते उपमन्यु को आठ दिन तथा दो घड़ी का समय लग गया। उसके बाद नवम दिनमें जाकर उपमन्युजी ने श्रीकृष्णजी को दीक्षा दी और अथर्व शीर्ष का शिव महा मन्त्र पढ़ा दिया। श्रीकृष्णजी ने उपमन्यु से सारी विधि समझली। फिरजटाजूट धारण करके स्वस्थता पूर्वक चरण के अंगूठे के सहारे पन्द्रह महीनों तक कठिन तप किया, तब सोलहवें महीने लगते ही श्रीपार्वतीजी के साथ भगवान् शङ्कर प्रकट होगये।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

श्री कृष्णजी ने प्रणाम किया, हाथ जोड़कर अनेकों स्तुति की। उसके बाद एक बार श्री पार्वती की ओर देखकर प्रसन्न होते हुए शङ्कर श्री कृष्णजी से बोले—श्री कृष्णजी! मैं जानता हूँ, आप मेरे परम भक्त एवं दृढ़ व्रती हो। इस समय मैं तुमको दुर्लभ वर भी देने को तैयार हूँ। तब बार-बार प्रणाम कर श्रीकृष्ण बोले—देव-देव महादेवजी! मैं तो आठ वर चाहता हूँ। (१) मेरी बुद्धि सदा धर्म में लगी रहे। (२) मैं सारे ससार में अक्षय यश प्राप्त करूँ। (३) आपके समीप मेरा निवास हो। (४) मैं आपकी दृढ़ भक्ति प्राप्त करूँ। (५) मुझे दस पुत्र महा पराक्रमी प्राप्त हों। (६) युद्ध में मैं घमण्डी शत्रुओं से विजय पाऊ। (७) मेरे समस्त शत्रुओं का नाश हो। (८) हारे योगीजनों का मैं प्यारा बनूँ यह सुनकर शङ्कर बोले— श्री कृष्णजी! तथास्तु, तुमको सभी वर दे दिये। तब श्री पार्वतीजी ने कहा–बुद्धिमान् श्रीकृष्ण! मैं भी तुम पर अतीव प्रसन्न हूँ, मुझसे वर माँगों। तब श्रीकृष्णज ने कहा–हे देवीजी! मैं सदा ब्राह्मणों की सेवा करने वाला बनूँ। माता-पिता का भक्त बनूँ। श्री पार्वतीजी बोली–माधव! सभी तुम्हारे मांगे हुए वर मैंने तुमको दे दिये। उसके बाद भगवान् शङ्कर श्री पार्वतीजी के साथ अन्तर्धान हो गये। तब श्रीकृष्णजी सफल मनोरथ होकर उपमन्यु के पास पहुंचे। उपमन्यु को प्रणाम करके वर आदि पाने का सभी वृतांत कह सुनाया। तब उपमन्यु बोले–हे माधव! भगवान् शङ्कर से बढ़कर अधिक वरदाता कोई भी नहीं। श्री शङ्करजी की लीलायें भी अनन्त हैं और एश्वर्यभी अनन्त है। इसी कारण भगवान् शङ्कर का सर्वदा तुम ध्यान करते रहना। श्री सनत्कुमारजी बोले––इतना सुनकर श्री कृष्णजी ने उपमन्यु को प्रणाम किया फिर उनसे आज्ञा लेकर अपनी द्वारिका में लौट आये। अयोध्यापति श्रीरामचन्द्रजी भी तो भगवान शङ्कर की आराधना द्वारा दिव्य अस्त्र पाकर समुद्र पर पुल बाँध रावण का कुल समेत नाश कर दिया और अपनी पत्नी सीता को प्राप्त किया।

मुनिजी! कामधेनु पाने के लोभ में आकर सहस्रार्जुन ने जम

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

दग्नि ऋषि का बध किया। यह समाचार जब परशुराम को ज्ञात हुआ तो अपने पिता का बदला लेने के हेतु परशुराम ने भगवान शङ्कर को प्रसन्न करके उनसे परशु पाकर उसी के द्वारा न केवल सहस्रार्जुन को प्रत्युत पृथ्वी भरके सभी क्षत्रियों को इक्कीसवार युद्ध करके काट डाला चाक्षुपनाम के मनु पुत्र वशिष्ठ ऋषि के शाप से मरूस्थल में मृग हुए। अपने हृदय में ओंकार युक्त शङ्कर का ध्यान न छोड़ा फिर दण्डक वनमें जाकर रहने लगे। उसे वहा रहते-रहते बहुत सा समय बीत गया तब शङ्कर ने उस पर कृपा की उसे श्री गणेषजीका गण बनाकर जन्म-मरण से रहित कर दिया। गर्ग्य मुनिकी आराधनासे प्रसन्न होकर शङ्करजी ने सर्व दुर्लभ मुक्ति काल ज्ञान अपनी इच्छा से विचार के योग्य भूमि सरस्वती पार होने के लिए सामर्थ्य एवं महा पराकर्मी हजार पुत्र आदि का वर प्रदान किया। एक बहुत ही दरिद्र ब्राह्मण था। उसने निर्धनता-के कारण अपना गालव नामक पुत्र छिपाकर गुरुकी कुटिया में रख दिया फिर अपनी पत्नी से भिक्षकों के आने के भय से कहा कि दरवाजे पर कोई अतिथि आवे उससे कह देना कि पति घर नहीं हैं उसकी आज्ञा के विना मैं आप लोगों का सत्कार नहीं कर सकती। इतना स्त्री से कह कर वह स्वयं घर में छुपकर बैठ गया। एक दिन उस ब्राह्मण के दरवाजे पर एक भिक्षुक आया। उसको भी उसकी पत्नी ने पति का कही चला जाना कह दिया। तब यह सुनकर उस भिक्षुक ने दिव्य दृष्टि से उस ब्राह्मण को घर में छुपा हुआ देख लिया फिर बोले—ब्राह्मणी! तू झूंठ क्यों बोलती है तेरा पति तो इसी घर में छिपा हुआ है और वहीं मर भी चुका है। इस प्रकार कहकर वह भिक्षुक वहाँ से चला गया। उसके बाद उस ब्राह्मण के पुत्र गालव को विश्वामित्र द्वारा यह वृत्तान्त मालूम हुआ तो वह घर में पहुँचा। अपनी माता से शाप का सभी वृत्तान्त सुनकर उसने महादेवजी की कठिन आराधना एवं तपस्याकी। जिसके द्वारा प्रसन्न होकर श्री महादेवजी ने उसके पिता को फिर जीवित कर दिया।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

* चौथा अध्याय *

(शिव माया वर्णन)

व्यासजी बोले–सनत्कुमार जी ! कृपा कर अब आप लीलामय शङ्कर के अद्भुत चरित्र सुनाइये। सनत्कुमारजी बोले–व्यासजी ! भगवान् शंकर समस्त प्राणियों के ईश्वर एवं जगत में व्यापक सर्व समर्थ परमात्मा हैं आठ देव योनि, एक मानव योनि एवं पाँच पक्षि योनि इस प्रकार से चौदह योनि भगवान शिव से उत्पन्न हुई हैं। संसार में ब्रह्मा, विष्णु,इन्द्र, चन्द्र,सूर्य आदि देवता,दानव,नाग, किन्नर गन्धर्व मानव आदि सभी योनियों में भगवान शिव ही स्थित हैं। इस प्रकार चराचर जगत में उनकी माया फैली हुई है। शिव माया ने सभी को वश में कर रखा है। कामदेव ने जो ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र आदि सभी देवताओं को आधीन कर लिया है यह भी भगवान शङ्कर की सहायता से हुआ है। इन्द्र ने गौतम पत्नी अहिल्या पर आसक्त होकर उसके साथ व्यभिचार किया था फिर उसके फलस्वरूप में शाप प्राप्त किया यह भी शिव माया थी।

देवताओं में श्रेष्ठ श्रीविष्णुजीभी कामके वशीभूत होकर परस्त्रियों से विहार क्रीड़ा करने लग गये। इसी प्रकार काक पीड़ित होकर चन्द्रमा अपनी गुरु पत्नी को ले गये। चन्द्रमा पर भगवान शङ्कर की ही कृपा हुई जिससे वह इस महा पातक से बच गये। प्रथम मित्रावरुण भी शिव माया से मोहित होकर उर्वशी पर आसक्त हो गये। इससे इन दोनोंका वीर्य पात हुआ। मित्र ने तो अपना वीर्य घड़े में त्याग किया जिससे वशिष्ठ हुए और वरुण ने जल में त्यागा उससे बड़वानल जैसे तपस्वी अगस्त्य पुत्र हुए। शिव माया से मोहित ब्रह्माजी चार बार मोह को प्राप्त हुए। ब्रह्माजी तो अपनी कन्या के साथ भोग करने को तैयार हो गये। गौतम ने शारद्वती को नग्न देखा उससे चिपट गये औरअपने रखस्खलित वीर्य को द्रोण घट में डाल दिया। उससे ही शास्त्र धारियों में पराक्रमी पुत्र द्रोणाचार्य उत्पन्न हुए। विश्वामित्रने काम पीड़ितहोमैनका

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

के साथ भोग किया। इसी विश्वामित्र के साथ वशिष्ठ ने विरोध किया किन्तु शिव कृपा से विश्वामित्र ब्रह्मर्षि हुए। वैश्रवा का पुत्र रावण सीता पर आशक्त हुआ और चुराकर घर में ले आया उसी से उसकी मृत्यु हुई। मुनि श्रेष्ठ बृहस्पति अपने भ्राता की पत्नीके साथ सम्भोग कर बैठे जिससे भारद्वाज हुए। व्यास! शिव माया के प्रभाव का मैं कहाँ तक वर्णन करूँ इससे तो अनेकों ऋषि मोहित हो चुके।

* पाँचवाँ अध्याय *

(महान पातकियों का वर्णन)

व्यासजी बोले-मुनिश्वर! आप अब हमें नरकों में पड़ने वाले प्राणियों का वर्णन सुनायें। श्री सनत्कुमार जी बोले—व्यासजी! शरीर मनवाणी से बारह प्रकार के पाप हुआ करते हैं। पर स्त्री की इच्छा, पर धन कामना दूसरों का बुरा विचारना, अधर्म में प्रवृत्ति होना ये चार प्रकार के पाप मन से होते हैं। रजस्वला नारियों से बात चीत झूंठ बोलना, कठोर बोलना, चुगली खाना चार प्रकार के पाप वाणी द्वारा होते हैं। अभक्ष, भक्षण करना हिंसा करना, असत्य कार्य करना, किंवा छीन लेना ये चार शारीरिक पाप हैं इनके भी अनेकों भेद हैं। जोमहा भयानक फल देनेवाले हैं। भवतारक भगवान शङ्कर का ज्ञान करानेवाले तपस्वी गुरु की माता पिता आदि की निन्दा करनेवाले महापापी नरक गामी होते हैं। देव धन चुरा लेना, ब्राह्मण की वस्तु नष्ट कर देना, शिव ग्रन्थों को नष्ट करना अथवा चुरा लेना जो महापाप हैं।

शिव पूजन देखकर जिन्हें आनन्द नहीं आता शिवलिंग को नमस्कार नहीं करते न-स्तुति आदि करते हैं। शिव के सम्मुख गुरु के समीप स्वच्छन्दता से निर्भय होकर व्यवहार करते हैं। वे भी महा नरकों में पड़ते हैं। गुरू पूजा के बिना शास्त्र श्रवण की इच्छा वाले भक्तिनथा श्रद्धा के साथ गुरु की सेवा से रहित, दुःखित निर्बल विदेश स्थित शत्रु पराजित, कुरुत्यागी, गुरु के कुटुम्बी एवं गुरु के मित्रों के अपानकर्ता मानव नरकगामी होते हैं। ब्रह्महत्यारे, मद्य पीने वाले, गुरुशय्या पर सोने

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

वाले,गुरु स्त्री भोगी महापापी हैं ब्राह्मण को दान करके फिर ले लेने वाले मनुष्य भी ब्रह्म हत्यारे कहलाते हैं। गौ, ब्राह्मण एवं मन्दिर के लिये दी गई भूमि फिर निर्धन होजानेके कारण भी वापिस ले लेने वाले, अनीति से धन संग्रह करने वाले मनुष्य ब्रह्म हत्यारे के समान महापापी हैं। वेदों को पढ़कर भी जो ब्राह्मण शिवज्ञान त्याग देता है किंवा उपवास, नियम, पूजन आदि आरम्भ करके पंचमहायज्ञ करने से त्याग देता है। ये पाप मदिरा पीने के समान है। गौ के मार्ग में, वनमें, नगर में आग लगाने वाला, निर्धनों का धन हड़पने वाला पुरुष, स्त्री हाथी, घोड़ा, गाय, पृथ्वी, चाँदी, वस्त्र, औषध, रस, चन्दन, अगर, कपूर, कस्तूरी, पट्टे, पीढ़े, आसन आदि विना सङ्कट के बेच डालने वाला, दूसरे की, अमानत खा जाने वाला, सोने की चोरी करने वाला ये सब एक समान पापी हैं। विवाह योग कन्या का योग्य वर के साथ विवाह न करने वाला, पुत्रबधू भगिनी भाई की स्त्री से व्यभिचार करने वाला, कुआरी कन्या से व्यभिचार करने वाला, शराबिन स्त्री के साथ व्यभिचार करने वाला महापापी होता है।

* छठवाँ अध्याय *

(पाप पुण्य वर्णन)

सनत्कुमारजी बोले—व्यासजी ! पराया भाग मिटा देना, अभिमान, क्रोध, कपट एवं कृयत्कता करना विषयों में पड़े रहना, साधुओं से द्वेष करना, श्रेष्ठ कन्या के ऊपर कलङ्क लगाना, शिवालय के वृक्ष तथा बगीचे किंवा घर में लगे वृक्ष, फूल टहनियाँ, उजाड़ डालना अपने नौकर, कुटुम्बी आदि का संचित धन लूट लेना, धान्य, तथा पशु चुरा लेने, यज्ञ, वाग कुआ आदिमें स्थित बगीचों के जल को अपवित्र करना, स्त्री पुत्रादि बेच डालना, स्त्री के कमाये धन से जीविका करना, स्त्री के आधीन रहना, स्त्रियों की रक्षा न कर सकना, समयानुसार दान न देना धान्य तथा वर्षा के आधार पर रहना, व्यौपार करते हुए असत्य बोलना मारण, मोहन, उच्चाटन आदि का प्रयोग करना, वैद्यक

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

करना, शास्त्रीय व्रत त्यागना, शास्त्रीय आचार छोड़कर मनमाना करना, नास्तिक शास्त्र मानना, व्यर्थ में तर्क कुतर्क करते रहना, देव, गुरु, अग्नि, ब्राह्मण एवं चक्रवर्ती राजा आदि की सामने अथवा पीछे निन्दा करना, पितृ तथा देवयज्ञों का न करना, कर्म त्यागना, मधुर व्यवहार न करना, नास्तिकता, उत्तम पर्व तथा अनुपर्व का ख्याल न करके जल में, पशुओं में, पर स्त्री में, स्वस्त्री में, रजोधर्म वाली में, व्यभिचार विषय करना, स्त्री, पुत्र, मित्रादि की अभिलाषा त्याग देनी, तालाब, कुएं एवं व्योपार आदि नष्ट कर डालना, एक पंक्ति में भोजन करने वालों से भेद करना इत्यादि, २ पाप करने वाले नर हों या नारी सभी पापी कहे गये हैं।

परस्त्री के लिये संतप्त रहना, कम बोलना, ब्राह्मण होते हुये शूद्री से व्यभिचार करना, मद्यपान, हिंसा करना, बाँस, ईंट, लकड़ी, पटिया, सींग, काल आदि से मार्ग रोककर दूसरों की सीमा हथिया लेना झूंठे कार्यों में उलझना, नौकर तथा पशुओं पर दयारहित हो दंड देना, स्वामी मित्र, गुरु से शत्रुता, दूसरे को भूखा बिठाकर स्वयं खा बैठना, इन्द्रियों के दास बने रहना, सन्यासी होकर घर में टिके रहना, शिव मूर्ति तोड़ना, गाय को मारना, कमजोर पशुओं पर अधिक बोझा लाद कर पीड़ित करना, भोजन ना देकर पशुओं को खेती में जोत लेना, भार से अथवा भूख से व्याकुल गाय बैल का पालन न करना इस प्रकार के पाप करने वाले मनुष्य गौहत्या जितने पापी हैं। बूढ़े बैल कसाइयों को देना, वन्ध्या गाय जोत लेना, आदि पापकर्ता मनुष्य नरक में जाते हैं। भूखे प्यासे रास्ते के चलने से थके हुये भिक्षुक, दीन, वृद्ध, दुर्बल, रोगी, भोजन की इच्छा से आये अतिथि को निराश कर देना, शरणागतों पर दया न करनी इत्यादिक पाप कर्ता अज्ञानी, मूर्ख, नरकों में जाते हैं। मरने के बाद मनुष्य का सहायक तो धर्म है। पाप नाशक और पुत्र कलत्रादिक नहीं।

बकरी तथा भैंस के व्यौपार कर्ता, नीच स्त्री का पति शूद्र किंवा

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

क्षत्रियों जैसी अजीविका इत्यादिक काम करने वाला ब्राह्मण नरक गामी होता है। अन्याय करने वाले राजा ब्राह्मणों से कर लेते हैं। किंवा अन्याय से संगृहीत धन ब्राह्मणों को दान देते हैं, वह भी नरक गामी होते हैं। ब्राह्मण होकर शिल्प करने वाले, बढ़ई, वैद्य, सुनार, संजा की ध्वजा बनाने वाले नौकर इस प्रकार के कपट करने वाले ब्राह्मण नरक गामी होते हैं! राजा पर-स्त्री को चुराकर घर में रखे तथा पर स्त्रियों पर आसक्त रहे वह महा पापी है। जो राजा योग्य पुरुसों को चोर कह कर दण्ड तथा चोरों को अच्छा कहकर छोड़ देना, नीति का विचार न करना आदि किया करते हैं वे नरक गामी होते हैं। घृत, तैल, अन्न, पेय पीने, चीजें, शहद, माँस, मद्य, कमण्डल, ताम्बा, सीसा, राँगा, हथियार, शङ्ख आदि वस्तुओं के चुराने वाले वैद्य, वैष्णव आदि नरक गामी होते हैं। पाप करने वाले चाहे देवता भी हों सभी नरक में जाते हैं। पशु पक्षी मनुष्य दानव आदि पापियों पर शासन करने वाले यमराज हैं। पर स्त्रियों को चुराने वाले, अन्याय का व्यवहार करने वाले, छिपे २ पाप कर्ता सभी के शासक यमराज हैं। इसी कारण पापों के लिये प्रायश्चित करने चाहिये! यदि प्रायश्चित न किये जांय तो पाप फल भोगे बिना करोड़ों वर्षों तक भी मनुष्य नहीं छूट सकता।

* साँतवाँ अध्याय *

(नरक वर्णन)

सनत्कुमारजी वेद व्यासजी से बोले—महर्षि सभी पापी लोग यम-लोक में पहुँच कर पाप का फल अवश्य भोगते हैं। इन में भेद इतना है कि पुण्यात्मा यमराज के पास उत्तर के मार्ग से पहुँचाये जाते हैं और पापात्मा दक्षिण मार्ग से। वेवस्वत नगर यहाँ से छयासी हजार योजन दूरी परहै! धर्मात्मा लोग तो सुगम प्रकार में पहुंच जातेहैंऔर पापी कठिनता से पहुचते हैं पापियों के जाने के मार्ग में बड़े नुकीलेकांटे बिछे रहते हैं। बड़ी गरम बालू होती है और छुरियों के समान पैने कङ्कण पड़े रहते हैं। उसी मार्ग में कीचण, ऊँची-नीची जगह, लोह

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

शकु, सुइयें, अङ्गारों के समान तपी पृथ्वी, बड़ी २ डालियों वाले चुभते-चुभते बाँव, बड़े-बड़े लम्बे वन, दुख दायक अंधकार बन में लगी आग, बर्फीले मार्ग, कड़ाके की सर्दी, गन्दा पानी, सिंह, भेड़िये, व्याघ्र मच्छर आदि से व्याप्त वन बड़ी २ जौंके जहरीले सांप मदमत्तहाथी, तीव्रदाँतों वाले सूअर, बड़े सीगों वालेभैंसे, बड़े२भयानकजीवजन्तु, चोर, डाकिनी, भूत बड़े२शरीर वाले शभी फिरते रहतेहैं कि मार्गमें चलते पापियों जो सता ते हैं। इन्हीं अपार कष्टोंको झेलते-झेलते पपात्मा प्राणी यमपुरपहुंचाया जाताहै। उस मार्ग में अपना मित्र भाई कोई भी नहीं मिलता। उसका रूप प्रेतका होता है नग्न शरीर, होंठ एवं तालु सूखे हुए पानीनमिलने के कारण अत्यन्त प्यासा ऊपर से यमदूतों के निर्दयी डण्डे एवं अंकुश पड़तेहैं। पैरों में पड़े हुये पाशोंसे घसीटते-घसीटते यमदूत लेकर जाते हैं। डरता है, जलता है, भूखा है, प्यासा है इसकी किसी को भी परवाह नहीं। यमदूत तो पांशोंसे बाँधकर घसीटते लिये जा रहे हैं। किसी को अंकुश का प्रहार करते हैं, किसी को कांटे एवं अङ्गारोंसे भरे मार्ग से खींच रहे हैं! किसी की जीभ में रस्सी डालकर खीचते हैं तथा किसी की जीभ में अंकुश चुभा देते हैं। किसी के साथ पैर, किसी के नाक कान किसी के होंठ, किसी की लिंगेन्द्रिय, किसीके अण्ड इसी प्रकार किसीके अन्य २ अङ्गोंको काट २ कर यातनाएँ पहुंचाते जाते हैं। कठोर प्रहार मार पाकर पापात्मा चिल्ला उठते हैं इधर-उधर भागते है देह उनका फटता जाता है। खून तथा पीव बहतीजाती है उसको पीने के लिये बड़े २ डाढ़ों वाले कीड़े चिपटकर नोचते रहते हैं। भूखे-प्यासे व्याकुल होकर पापात्मा याचना करते हैं पर सुनता कौन है यमदूत तो अत्यन्त निर्दयता के साथ घसीट कर यमपुरी ले जाते हैं। जिन पुरुषों ने कुछ दान किया है उनके पास तो कुछ मार्ग का भोजन तथा जल रहता है उसे खाते पीते जाते हैं। यमपुरी में बड़ी कठिनता से पहुँचतेहैं यमराजकी आज्ञा से उन्हें यमदूत यमराज के सन्मुख ले जाते हैं। जो श्रेष्ठ कर्म करने वाले होते हैं उनका तो यम आदर भी

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

करते हैं फिर उनके पुण्यों के अनुसार विमानों में बिठाकर स्वर्ग लोकमें भिजवा देते हैं। यदि उनका कुछ पाप कर्म होता है तो स्वर्ग के अनन्तर उन्हें पापों का भी थोड़ा फल मिलता है। यदि निरन्तर पापात्मा होते हैं तो उन्हें भयङ्कर डाढों वाले विकराल मुँहों से देखते हुए अनेकोंप्रकार के भयानक अस्त्र-शस्त्र धारे हुए अठारह हाथों वाले भैसें पर सवार जलती अग्नि के समान लाल आंखें किये प्रलय काल की अग्नि के समान तेजस्वी इस प्रकार के भयानक रूप धारण कर यमराज दिखाई देते हैं। चित्र गुप्त का भी यही रूप दिखाई देता है। तब उन पापियों को यमराज फटकारते हैं। चित्र गुप्त धर्म युक्त वचन कहते हैं।

* आठवाँ अध्याय *

(नरक वर्णन)

चित्रगुप्त कहते हैं—हे पापियो! तुम सदा पाप करते रहे हो। अब उसका फल भी भोगो। पापात्मा राजाओं से चित्रगुप्त कहते हैं अभिमानी! तुमको थोड़े समय का राज्य सुख मिला था उसे अपना सर्वस्व मान बैठे। अपने सुख को मुख्य रखकर अन्याय पर तुल गये। प्रजा विचारी को बड़े-बड़े कष्ट पहुंचाते अनुचित शासन करते रहे। अब उसका फल पाओ उस समय उनके पाप रूप मैल को छुटाने के लिये धर्मराज यमदूतों को आज्ञा देते हैं—चण्ड एवं महाचण्ड! तुम दोनों इन पापी राजाओं को बल पूर्वक पकड़ कर अग्नि कुण्ड में फेंक दो जिससे कि इनके पापों का मैल जल जाय। इतना सुनते ही यमदूत राजाओं को उठाकर चारों ओर फिरा कर गरम २ भट्टियों में फेंक देते हैं। और ऊपर से वज्र प्रहार करते हैं। तब उनके कानों से रुधिर टपक पड़ता है। बेहोश होजाते हैं। उसके बाद जब पवन लगती है तब जर्जर शरीर होते हुये भी जीवित होजाते हैं। फिर उन्हें नरकों में पटका जाता है। वे नरक इस पृथ्वी के नीचे सात पर्दों के भी नीचे अत्यन्त अन्धकार में हैं वह नरक २८ कोटि हैं। जिनमें १ घोरा कोटि

CC-0. ASI Srinagar. Shiva Agama Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

२ सुघेरा कोटि ३ अति घोरा, ४ महाघोरा, ५ घोर रूपा, ६ तला तला, ७ मयानका ८ कालरात्रि ९ भयोत्तरा १० चण्डा महा चन्डा ११ चण्ड कौलाहला, १२ प्रचण्ड, १३ चण्ड नायका, १४ पद्मा १५ पद्मावती १६ भीता १७ भीमा १८ भीषण नायका, १९ कराला, २० विकराजा २१ वज्रा, २२ त्रिकोण, २३ पंच कोष सुदीर्घ २४ अखिज्ञार्दित २५ सम २६ भीमसव लाभ २७ उग्र, २८ दीप्त प्रायःइस प्रकार से पापात्माओं को यातना पहुँचाने के लिये अट्ठाईस नरक कोटि कही गई हैं। यही सौ रौरव एवं चालीस सौ महानरक कहे गये हैं।

* नवाँ अध्याय *

(साधारण नरक गति वर्णन)

जैसे खोटे सोने को अग्नि में डालकर शुद्ध करते हैं। उसी प्रकार जीवात्माओं के पाप मैल को दूर करने के लिये उन्हें नाना नरकाग्नियों में डाल २ कर शुद्ध किया जाता है। पहिले पापियों के दोनों हाथ रस्सियों से जकड़ लिये जाते हैं फिर उन्हें एक बड़े वृक्ष की ऊंची डाली पर लटका देते हैं। फिर उन्हें बड़े जोर के साथ झोटा देते हैं उसके बाद उन पापियों के पैरों में लोहा बांध देते हैं फिर उस भारी भार के कारण बहुत दुःखी होकर अपने पाप कर्मों को याद करते हैं उसके बाद उनके अङ्ग फोड़े जाते हैं। फिर उबलते हुये तेल के कढ़ावों में डालकर बैंगन की भाँति उन्हें पकाया जाता है। उसके बाद विष्ठा के कूओं में पटक देते हैं जहाँ कीड़ों के झुंड उसे नोंचने के लिये चिपट जाते हैं। बड़े-बड़े पैने डणकों वाले कीट तथा लोहे जैसी कठोर चोंच वाले कौए, कुत्ते, भेड़िये आकर उसे नोंचते, खाते हैं और भी भयङ्कर मुख वघेरे आदि जीव आकर उसे सताते हैं। इस प्रकार की अनेक यातनायें उन पापी प्राणियों को पहुँचाई जाती हैं। उसके बाद बाकी नरकों में भी फेंका जाता है। जहाँ उनकी पीठों पर बड़े-बड़े तपाये हुए हथौड़े पड़ते हैं। कहीं-कहीं आरों से उन्हें चीरा जाता है। कहीं-कहीं उन पापात्माओं को अपने ही माँस तथा रुधिर खाने को वाध्य किया जाता है। इसी

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

प्रकार के पापात्मा अनेकों कष्ट पाते हैं किन्तु मरते नहीं। उनका शरीर यातनामय होता है, वह अनेक दुखों को भुगत लेता है। फिर निरुच्छ्वास नामक नरक में भी श्वास लेने के बिना पापात्मा प्राणी बहुत समय तक पड़ा रहता है। वहाँ रेत के ही भवन होते हैं। जिनसे उसे और भी अधिक पीड़ा पहुँचे। रोरव नरक में तो प्राणियों के पैर मुख गुदा शिर आंखें माथा आदि पर खूब गरम हुए अंकुश एवं कठोर घनोंका तड़ातड़ प्रहार किया जाता है, फिर बार-बार गरम रेत एवं गन्दे कीचड़ में उसे पटक दिया जाताहै। उसके बाद कुम्भीपाक नरकमें बहुत गरमतेलमें उसे पकाते हैं। फिर लाजाभक्ष सूचीपत्र लोह कुम्भ आदि नरकोंमें डाल कर धीरे-धीरे श्वास लेने लगते हैं। फिर तीक्ष्ण क्षारकूप तथा महाज्वाला नरक में पटके जाते हैं। वहाँ बड़ी गरमी होतीहै जिससे पापात्मा इधर-उधर भागते हैं। फिर यमदूत इनके कन्धे को झुका देते हैं पीछेकी तरफ इनका सिर लगा देते हैं। फिर वज्र के समान अपने मुक्कोंका इनपर प्रहार करते हैं। महाज्वाला नरक में तो सभी पापियों को एक ही रस्सी में बाँधकर कीचड़ से लपेट लेते हैं फिर कर्षाडाभ आदि अग्नि में पकातेहैं।

* दसवां अध्याय *

(नरक गति भोग वर्णन)

नास्तिक द्विज हाख्य नरक में जाते हैं। वहाँ उन पर अर्ध कोस लम्बी जीभ के समान बड़े पैने हल चलाते हैं। जिनपापियों ने माता-पिता गुरू को फटकारा हो उनके मुख विष्ठा से भर दिये जाते हैं फिर उन पर प्रहार किया जाता है। जिन पापियों ने शिवालय बावड़ी तालाव कुएँ बगीचे ब्राह्मणों के घर नष्ट-भ्रष्ट किये हों तथा वहाँ व्यभिचार करते रहे हों किंवा काम में अन्धे होकर उबटन मर्दन स्नान आदि किया हो पान, जलपान, भोजन, खेल, द्यूत, विषय, भोग आदि किया हो उन्हें कोल्हू में पेला जाता है फिर सृष्टि के संहार होने तक नरकाग्निमें पकाया जाता है उसी प्रकार पर स्त्रियों के साथ भोग विलासी पुरुषों को अनेकों

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

दुःख देकर यमदूत लोहे की बनाई अत्यन्त गरम २ स्त्री की मूर्ति से चिपटा देते हैं। इसी प्रकार महात्माओं की निन्दा सुनने वाले पापियोंके कानों को लोहे तथा ताम्बे की सलाखो तथा कीलों से गलाये हुए रांग सीसा पीतल आदिसे उबलते दूध से किंवा गरम तेल से भर देते हैं। भौंहें एवं आंखें मटका २ कर जो पापी नर-नारियों को देखते हैं उनकी वहीं इन्द्रियाँ नरकों में नष्ट की जाती हैं जो पापी नर-नारी को बुरीदृष्टि से देखते हैं उनकी आँखों में सुइयें तथा गरम राख भरदी जाती है। जो पापी लालची होकर देवताओंके बाग के फूल तोड़ लेते हैं या उन्हें सूंघते हैं मालाएँ बनाकर पहनते हैं। नरकों में उनके सिरों पर लोह शंकु ठोके जाते हैं। जो पापी महात्माओं के धर्मोपदेशों को देवतागुरु भक्त धर्म शास्त्र आदि की निन्दा किया करते हैं। उन लोगों की छाती कण्ठ जीभ तालु होट नाक शिर आदि में तीन-तीन नोकों वाली गरम २ लोहे की कीलें ठोकी जाती हैं ऊपर से मुग्दरों का प्रहार किया जाता है। पर धन हर्त्ता एवं ब्राह्मणों को पैर लगाने वाले पुरुष सभी प्रकार के नरक भोगते हैं। शिवपूजा सामग्री गौ तथा ज्ञान शिक्षकआदि को जो पैरों से लताड़ा करते हैं,उन पापियों को सभी नरकों में पीड़ित किया जाता है। शिवालय के निकट एवं अन्य देव-मन्दिरों के पास तथा बगीचोंमें जाकर मलमूत्रकरने वाले पापियों के अण्डकोषों के साथ लिंगेन्द्रियों पर मुग्दर प्रहार करके उनको गुदाओं में तथा लिंग छिद्रों में गरम-गरम बालु भर देते हैं। धन होने पर जो धन दान नहीं करते उनकी इन्द्रियों को पीड़ित किया जाता है। घर में आये अतिथि को फटकार कर खाली हाथ निकाल देते हैं,ऐसे पुरुषों की नरकों में बुरी गत होती हैं और जो पुरुष शिव पूजनके पश्चात् विधि पूर्वक हवनकरके शिव मन्त्र बोलकर यम मार्ग को रोककर रहने वाले श्याम एवं शवल दो श्वानों को तथा पश्चिम वायव्य उत्तर,नैऋत दिशाओं के वासी कौओं को जो बलि दिया करते हैं उन्हें यम के दर्शन नहीं करने पड़ते, वे तो सीधे स्वर्ग में जाते हैं। इसी कारण नित्य ही चार हाथ का मण्डप बनावे,

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

उसके ईशान में धन्वन्तरि, पूर्व में इन्द्र, पश्चिम में सुदक्षोम दक्षिण में यह तथा पितृश्वर पूर्व में सूर्य-द्वार पर धाता-विधाता इन सबको बलि देनी आवश्यक है। कुत्ते, श्वपच एवं कौओं के लिए तो बलि पृथ्वी पर रख देनी चाहिए। स्वाहाकार, स्वाधाकार, वषट्कार एवं हन्त कार ये चारों गाय के स्तन हैं। इस कारण गौ सेवा परम आवश्यक है। सब की सुखदायक गौ की सब कोई पूजा करें। इस प्रकार न करने वाले पुरुषों की नरकों में दुर्गति होती है। विशेष पाप कर्मों के कारण नरक भोगने के बाद भी उनको सुख नहीं मिलता। ऐसे पापी जन्म पाकर भी दुःख व्याकुल, भोजन के लिए तरसते हुए, दूसरों को सुखी देखकर व्याकुल रहा कर हैं।

* ग्यारहवाँ अध्याय *

(अन्नदान महिमा)

परम दयालु शुभकर्मकर्ता पुरुष उस भयानकरास्ते से विना कष्ट यमपुर पहुँच जाते हैं। ब्राह्मणों को जूते खड़ाऊं आदि पहिनाने वाले पुरुष घोड़ों पर सवार होकर ही यमपुर पहुँचते हैं। छाते के दानीछाता ताने शय्या एवं आसन दान कर्ता विश्राम करते-करते वगीचे बृक्षआदि लगाने वाले बृक्षों की छाया के सहारे होते हुए यमपुर पहुँचते हैं। फूलों की वाटिका लगाने वाले पुष्प विमानों में बैठकर जाते हैं। देव मन्दिर सन्यासी मठ निर्धनों के घर बनवाकर देने वाले पुरुषों को सुन्दर भवन विश्राम के लिये मिलते हैं। देव अग्नि गुरु ब्राह्मण माता-पिता आदि की सेवा सत्कार करने वाले पुरुषों का आदर होता है। दी प जला कर दूसरों को प्रकाश देने वाले जन परम प्रकाश पाकर निरोगता पूर्वक सुख से विचरण करते हैं। गुरु सेवक विश्राम पूर्वक होकर दीन गरीव एवं ब्राह्मणों को दान देनेवाले अपने घर जैसे सुखभोगतेहुए यमलोक का रास्ता तय करते हैं। गौदान कर्ता मन चाहा सुख भोगते हैं। अन्नजल दाता अन्नजल पाते हैं। ब्राह्मणों के चरण धोने वाले जल सिंचितमार्ग से जाते हैं। ब्राह्मणों के चरणों की मालिश करने वाले घोड़ों पर सवार

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

होकर जाते हैं। ऐसे पुरुषों को यमराज फटकार नहीं सकते। स्वर्ण रत्न आदि के दान से पुरुष बड़े-बड़े किले पार कर जाते है चाँदी आदि के दान से तो सुखपूर्वक गमन करते हैं। स्वर्ण तथा रजत दान दोनों स्वर्ग के सुखदायक हैं अन्न तो सब दानों में उत्तम दान है। यही दान प्राणियों को उत्पन्न कर्ता प्राणियों में उत्साह प्रसन्नता बल बुद्धि रुधिर मांस चर्बी वीर्य आदि वर्द्धक है। अन्न न मिलने पर अनेकों प्रकार के सुख चैन वैभव विलास आदि मनुष्यों को जीवित नहीं रख सकते। इस कारण अन्नदान करने वाले सभी सुख पाते हैं। दान से दिये अन्न खाने से शरीर पुष्ट होता है। उस शरीरसे धर्म होता है उस धर्म का आधा भाग अन्न दाता को मिलता है। शरीर ही तो धर्म,अर्थ, काम मोक्ष साधक है। अतः इस शरीर की पुष्टि के लिये अन्न सबसे उत्तम होता है और यह संसार पर ही कायम है! अन्न बल एवं प्राण है। अतः अपने खर्च से थोड़ा-थोड़ा बचाकर भिखारियों को अन्न देना कल्याण कारक। इस लोक एवं परलोक में चाहने की इच्छा से घरपरआये अतिथियों का यथाशक्ति अन्नद्वारा सत्कार करनाअत्युत्तम है। यही अन्नदान श्रेष्ठ फल दायक तथा फलदार वृक्ष है अन्न दाता को स्वर्ग में सुख रूप फल प्राप्त होते हैं वे स्वर्ग में आनन्द स्वरूप ब्राह्मण होते हैं।

* बारहवाँ अध्याय *

(जलदान एवं तप महिमा का वर्णन)

जल दान उत्तम दान है जल सब प्राणियों का जीवन एवं संतुष्टि कारक है। कूआ खोदने वाले मनुष्यों का आधा पाप नष्ट होजाता है। जिस पुरुष के बनवाये तालावका पानी गौ ब्राह्मण साधु महात्मा पीते हैं उसकी तो सारी वंशावली का उद्धार हो जाता है। जिस तालाब का जल गर्मियों में भी नहीं सूखता उसका बनवाने वाला कभी दुःखी नहीं होता। देव दानव गन्धर्व नाग चर अचर सभी प्राणी जल के आश्रित हुआ करते हैं तालाब ही जीवन तथा लक्ष्मी देनेवाले हैं तालाव के बनवाने से जिस तालाब में बरसात का पानी भर जाय,उसके बनवाने वाले

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

को अग्निहोत्र जितना फल मिलता है। शीत काल में भरे रहने का फल हजार गौ-दान जितना मिलता है। हेमन्त तथा शिशिर ऋतु में भरे रहने का फल अतिरात्रि अश्वमेध यज्ञ जितना मिलता है। इसी कारण तालाब खुदवाना पुण्यदायक, कल्याण कारक है। इसी प्रकार बृक्ष एवं बगीचे लगवाने का भी फल मिलता है कठोर मार्ग में बृक्ष लगवाना महा फलदायक है, उसके सभी पितर तथा आने वाली वंश सभी का उद्धार हो जाता है। बृक्ष लगवाने वाला मरने के बाद अक्षय लोक में जाता है। बृक्ष तो उसके पुत्रों के समान अतः सुख पाने के हेतु प्रत्येक मनुष्य को बृक्ष लगवाना आवश्यक है। फल एवं फूलों वाले बृक्ष बहुत उत्तम होते हैं। फूलों से देवता, फलों से पितृगण, छाया से आने-जाने वाले अतिथि सुख पाते हैं। ये बृक्ष सर्प, किन्नर, राक्षस, देव, मनुष्य सभी को यथोचित सुख देते हैं। सत्य सबसे उत्तम है। यही सत्यब्रह्म, तप, यज्ञ शास्त्र चेतन, धैर्य, देवता, ऋषि पितर आदि का पूजन जल, विद्यादान. ब्रह्मचर्य, परमपद आदि सभी सत्यरूप हैं। यह भूमि सत्य के आश्रय पर ही तो है। इसी कारण मनुष्य सदा सत्य बोले। सत्यभाषी, परम तपस्वी, सत्यधर्म का प्रेमी, सिद्ध पुरुष होता है। उसकी अप्सरायें स्वर्ग में सेवा करती हैं वह अप्सरा-गण सेवित विमान में बैठकर स्वर्ग में जाता है। यदि वेद शास्त्रों के जानने वाला यज्ञादिकों में परिपूर्ण भी हो किन्तु असत्यभाषी हो तो उसके सभी काम व्यर्थ हैं। अतः सत्य भाषण ही सर्व फलदायक है। तप भी सबसे महान् एवं श्रेष्ठ फलदायक है तपस्वीजन देवताओं के साथ सुख पाते हैं। तपस्या द्वारा स्वर्ग, यश, मुक्ति, कामना, ज्ञान, विज्ञान सम्पति, सौभाग्य, रूप आदि और इनसे अधिक पदार्थ होते हैं। मन के मनोरथ सदा पूर्ण होते रहते हैं। तपस्या के बिना ब्रह्मलोक तत्रा शिवलोक आदि किसी की भी प्राप्ति नहीं होती है। तप द्वारा मद्यपान ब्रह्महत्या, गुरुपत्नि से भोग आदि महापापों से भी मुक्ति हो जाती है। तप सारे विश्व को सुख देता है। सुख प्राप्ति से एवं मुक्ति की इच्छा से तप करना आवश्यक है।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* तेरहवाँ अध्याय *

(पुराण माहात्म्य)

जो ब्राह्मण स्वयं वेद शास्त्र पढ़कर दूसरों को पढ़ाया करते हैं, उन्हें दुगना फल मिलता है। एवं जो पुराण सुनकर सभी को नरकों की कथाये सुनाकर सावधान करते हैं,वे ही जन पुराण ज्ञाता हैं। नरकों में गिरने से रक्षा करने वाले ही पात्र कहे जाते हैं। पुराण ज्ञाता धर्मोपदेशक ब्रह्मा विष्णु शङ्कर के समान सर्व श्रेष्ठ गुरु होते हैं उन्हें साधारण मनुष्य नहीं जानना चाहिये। वे तो मनुष्य रूप में आकर जगत के उद्धार के लिसे प्रकट हुयेहैं। अपने ज्ञान द्वारा मनुष्यों को तारते हैं। इस लोक तथा परलोक के सुख की चाहना से इस प्रकार के ज्ञानी पुराणवेत्ता श्रेष्ठ ब्राह्मणों को धन, अन्न, भूमि, स्वर्ण, गौ रथ वाहन हाथी घोड़ा एवं सुन्दर वस्त्र आभूषण आदि यथाशक्ति दान देवे इस प्रकार के सत्पात्र को दान देने से मनवाँछित सुख तथा अश्वमेध यज्ञ जितना पुण्य फल प्राप्त होताहै। धान्य आदि उत्पन्न करने वाले जुते हुए खेत दान करने से दस पीढ़ियाँ पहली एवं दस आने वाली पीढ़ियाँ को संसार सागर से पार करके स्वयं उस संसार के भोग भोगकर सुन्दर विमान पर चढ़करके शिवलोक में जाते हैं। जो पुरुष शिवालय तथा विष्णु सूर्यादि देवों के मन्दिरों में पुराण की कथा रखवाकर सुनते हैं वे राजसूर्य यज्ञ एवं अश्व मेध यज्ञादि का पुण्य पाकर सूर्य लोक के होते हुये ब्रह्मलोक में जाते हैं। देवताओं के सामने पुराणों की कथा कराने से हजार अश्वमेध यज्ञ जितना फल कहा गया है। मुक्ति के अभिलाषी पुरुषों को श्रद्धा पूर्वक शिवपुराण की कथा अवश्य सुननी चाहिये। यदि निरन्तर बैठकर कथा सुनने का अवसर न हो तो दो घड़ी नित्य बैठकर कथा सुनले। यदि ऐसा भी न हो सके तो महीने में एक वार तो शिवपुराण सुनले। इसी से कर्म बन्धनों से मुक्ति हो जाती है। जब तक ज्ञान प्राप्त न हो

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyan Kosha

तब तक निरन्तर योग शास्त्रों का अध्यन पुराण श्रवण आदि करता रहे। इससे पापों का नाश होता रहता है। धर्म की वृद्धि होती है। इसी प्रकार छब्बीस पुराणों में से किसी पुराण का भी श्रद्धा से श्रवण कर लेता है, निश्चत ही उस पुरुष की मुक्ति होती है।

* चौदहवां अध्याय *

(सामान्य दानों का वर्णन)

बड़े-बड़े दान तो सुपात्रों को प्रदान करने से ही परम कल्याण होता है। स्वर्ण पृथ्वी गौ आदि का दान लेने देने वाले दोनों का कल्याण कारक है। गौ पृथ्वी विद्या तथा तुला दान ये चारों दान सर्वोत्तम हैं। आये हुये याचकोंको दूध वाली गौ सुन्दर वस्त्र छाते जूते अन्न भोजनआदि श्रद्धा पूर्वक अवश्य ही संकल्प कर देवे। ब्राह्मण तथा दुःखी दीन पुरुषों को देने से उदारात्मा कल्याण पाते हैं। स्वर्ण तिल हाथी कन्या दासी घर रथ मणि कपिला गौ अन्न ये दस प्रकार के महा दान हैं। इन्हें पाकर बिद्वान ब्राह्मण दान देने वाले के साथ अपने आपको भवसागर से पार कर देता है। राजा रघु के समान स्वर्णमयी पृथ्वी का दान सर्वोत्तम है। जो भी सोने में सीग रूप से खुर मढ़ा कर अनेकों वस्त्र आभूषण अन्य वस्तुओं के साथ अच्छी गुण वाली बछड़े समेत कपिला गायलेकर काँसे के पात्रों सहित सुपात्र कुकुम्बी बिद्वान ब्राह्मण को दान करता है, वह लोक में तथा परलोक के मनोरथ पाकर अन्त में मुक्ति एव उसी प्रकार की सर्वोत्तम गाय पाता है। घर में अपनी प्यारी वस्तु का दान सब से उत्तम है इसी के द्वारा दोनों लोकों में उसी वस्तु की प्राप्ति होती है। इसी प्रकार तुला दान भी उत्तम है। तराजू के एक पलड़े में बैठकर दूसरे को अपनी शक्ति के अनुसार किसी द्रव्य से भर कर अपने समान भार तोल दो, वही द्रव्य सुपात्र को प्रदान करै और कहें—कि मैं अपने भार जितना अमुक द्रव्य दान करता हूँ मेरी बालक युवा वृद्धावस्था के ज्ञात अज्ञात सभी पाप भगवान शिव की कृपा से भस्म हों यह कहकर तुला दान द्रव्य सुपात्र ब्राह्मण को देवे इस प्रकार के तुलादान से पुरुष

CC-0. ASI Srinagar Circle. Jammu Collection

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

सभी पापों से मुक्त होकर चौदह इन्द्रों के राज्य समय तक स्वर्ग में निवास करके दिव्य भोगों को भोगता है।

* पन्द्रहवाँ अध्याय *

(पाताल लोक वर्णन)

सनत्कुमारजी बोले—व्यासजी ! अब ब्रह्माण्ड का वर्णनकरते हैं। ब्रह्माण्ड कितने विस्तार का है ? सो सुनिये ! ब्रह्माण्ड जल के मध्य में है। इसको शिव के अंश शेष नागजी धारण करते हैं विष्णु इसका पालन करते हैं। सिद्धि देवता, ऋषि गण इन्हीं शेष नाग का निरन्तर पूजन किया करते हैं। यही शेष अनन्त नाम से प्रसिद्ध है। अनन्त गुण कीर्ति सम्पन्न स्वर्ण सम मूसला धार जैसे परम तेजस्वी हैं नाग कन्याएँ जिनकी पूजा करती हैं। यह सकर्षण रूप रुद्र हैं। इनका बल एवं रूप देवता लोग भी नहीं जान सकते और न भली भांति कह सकते हैं। पृथ्वी के नीचे भाग में अतल,वितल,सुतल,रसातल,तलातल पाताल ये सात लोक हैं प्रत्येक दस-दस हजार योजन लम्बे चौड़े तथा बीस-बीस हजार योजन ऊँचे हैं इन सबको रत्न स्वर्ण की पृथ्वी एवं आँगन हैं। दैत्य महा नाग यहीं रहा करते हैं। सूर्य चन्द्रमा का प्रकाश घाम सर्दी आदि कुछ भी नहीं व्यापती। अमूल्य मणियों का प्रकाश है सभी प्रकार के सुख यहां विद्यमान हैं। कमलों वाले निर्मल जल के तालाव हैं। जिनमें सदा भौंरे गुजारा करते हैं नदियाँ जलाशय भी हैं। और भी सुन्दर आभूषण सुगन्धित उबटन वेणु वीणा मृदङ्ग अप्सरा गायन, नृत्य देव दानवों की कन्याएँ अद्भुत वैभव विलास आदि सभी विद्यमान हैं पाताल लोकों को तो सिद्धदानव मनुष्य नाग आदि परम तप करके ही भोगते हैं।

* सोलहवाँ अध्याय *

(नरकों से मुक्ति के उपाय)

इन्हीं लोकों से ऊँचे हिस्से में रौरव शूकर महा ज्वाला तप्त कुण्ड लवण विलोहित वैतरणी नदी कृमि-कृमि भोजन कठिन असिपत्रवन

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

बालाभक्ष दारुण सन्देश काल सूत्र महारौरव शाल्मलि आदिक बहुतही दुःखदायक नरक हैं। यहां आकर पापात्मा अनेकों यातना पाते हैं। जो भी ब्राह्मण गौ देवता उनको छोड़कर अन्य किसी अर्थ भी असत्य भाषण करता है वह रौरव नरक में पड़ता है गर्भ पाती बालक हत्यारा सोने का चोर या सोना छीनने वाला गौ को रोकने वाला धोका करने वाला विश्वासघाती शराबी ब्राह्मण हत्याकरने वाला पराए धन को चुराने वाला एवं इन लोगों का साथी गुरू हत्यारा इत्यादि पापात्मा कुम्भीनरकमें पड़तेहैं बहिन,कन्या,माता,गाय,पतिब्रता, स्त्री आदि के बेचने वाला केश वाल बेचने वाला व्याज खाने वाला इत्यादि पापी तप्तलोह नामक नरकमें पड़ते हैं नोकर हटाने वाला गुरु का अपमान करने वाला सबसे प्रथम खाने वाला देव निन्दक देवता बेचने वाला अभोग्य स्त्री से भोग कर्ता आदि सप्त उल नामक नरक में गिरते हैं। चोर एवं गो हत्यारे मर्यादा मिटाने वाले देवता तथा पितरोंसे वैर रखने वाले रत्नों में खोट मिलाकर खोटे बनाने वाले ऐसे मनुष्य कृमिभक्ष नरक में गिराये जाते हैं। जहाँ उन्हें कीड़े भक्षण करते हैं पितर देव ब्राह्मण अतिथि आदिको भोजन न देकर स्वयं खा लेने वाले बनावटी हथियार जोड़ने वाले लाला भक्ष नरक में पड़ते हैं। नीचों की संगति करने वाले अनुचित दान लेने वाले घृत के विना हवन कर्ता अभक्ष्य वस्तु खाने वाले सोमरस बेचने वाले ब्राह्मण रुधिरोध नरक में डाले जाते हैं। द्वार तोड़ने वाले नगर का नाश करने वाले पापी वैतरणी नदीमें डाले जाते हैं युवा अवस्था के मद से चूर-चूर होकर मर्यादा कुल रीति मिटा देने वाले स्त्री की कमाई खाने वाले पापीजन कृत्य नरक में पड़ते हैं बिना मतलब वृक्ष काट डालने वाले असिपत्रवन नामक नरक में पड़ते हैं। क्रुर भूक मृगों का शिकार करने वालेशिकारी तथा अपना धर्म आचार त्याग देने वाले ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य आदि वन्हि ज्वाला नरक में पड़ते हैं। आग लगाने वाले श्वपाक नरक में व्रत नष्ट कर्ता आश्रम से भिन्न होकर रहने वाले सन्देस नरक में पड़ते हैं। स्वप्न में वीर्य गिरने

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

वाले ब्रह्मचारी तथा अपनी सन्तान को विद्या न देने वाले मनुष्य श्व-भोजन नाम नरक में पड़ते हैं। इसी प्रकार असंख्यों नरक हैं जिनमें पापियों को यातनाएँ भोगनी पड़ती हैं पुरुष मनवाणी शरीर द्वारा जिस प्रकार के पास करता है। उसी प्रकार के नरक भोगने पड़ते हैं। स्वायम्भु मुनि कहते हैं–बड़े बड़े-पाप बड़े-बड़े प्रायश्चितों द्वारा छोटे-छोटे पाप प्रायश्चितों द्वारा निवृत्त किए जाते हैं इनके भिन्न भिन्न प्रायश्चित कहे गये हैं। उन सभी प्रायश्चितों से तो बढ़कर भगवान शङ्कर का नाम स्मरण ध्यान सबसे उतम प्रायश्चित है। पाप पुण्य नरक स्वर्ग के कारण रूप हैं पाप दुःख देते हैं पुण्य सुखदाता है किन्तु पाप भी सुख दिखाकर दुःख में डाल देते हैं। इसी कारण सच्चा सुखदाता संसार में कुछ भी नहीं। सुख दुःख सभी मन की कल्पना हैं सबसे विशेष ज्ञान है। ब्रह्म के पहचानने में ज्ञान ही सार है।

* सत्रहवां अध्याय *

(जम्बू द्वीप वर्ष का वर्णन)

सनत्कुमारजी बोले–हे व्यासजी ! अब मैं सात द्वीपों के सात भू-मण्डल का विस्तार सुनाता हूँ आप ध्यान से सुनें। जम्बु, प्लक्षु, शाल्मलि, कुश, क्रौंच, शाक, पुष्कर ये सात महाद्वीप हैं इनके चारों ओर सात समुद्र लहरा रहें। ये ही क्रमशः क्षार,जल, ईख, केसर, मद्य, घृत, दूध, दधि एवं मधुर जल से पूर्ण हैं। जम्बुद्वीप तथा प्लक्ष आदि छः द्वीपों के मध्य में है। इसके मध्य स्वर्ण का सुमेरु पर्वत है। यह पर्वत चौंसठ कोस नीचे तक चला गया है और तीन सौ छत्तीस कोस तक ऊँचा है १२८ कोस शिखरोंका विस्तार है और नीचे मूल में चौंसठ हजार कोह का विस्तार है। इसके दक्षिण की ओर निषध,हिमाचल, हेमकूट नामक तीन पर्वत हैं ये सभी पर्वत ४०४० हजार कोसके विस्तार में ४० हजार कोस ऊँचे भी हैं। चालीस हजार के कोस के विस्तार वाला भारतवर्ष है। कि पुरुष एवं मरु के दक्षिण में हरि वर्ष है। उत्तर में रम्यक है। उसके पास ही हिरण्मय हैं। उधर की ओर भारत के समान कुरव देश है। ये सभी

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

नदियां बहतीं हैं। सह्य पर्वत से कृष्णा वेणी आदि नदियाँ एवं मलया चल से कृत माला ताम्रपर्णी आदि महेन्द्र पर्वत से त्रिमाया, ऋषिकुल्या कुमारी आदि नदियां चलती हैं। इनके तटोंपर बहुत से नगर ग्राम हैं वहाँ के निवासी इन नदियों तथाअन्य तालाबोंका जल पिया करते हैं।

प्लक्षद्वीप-यह द्वीप क्षार समुद्र से घिरा हुआ सौ हजार योजनके बिस्तार में है। इस द्वीप में गोमन्त, चन्द्र नारद दर्दुर सोनक सुमन बैभ्राज नामक पर्वत हैं। अनुतप्ता शिखी पापघ्नी त्रिदिवा कृपा अमृता सुकृभा नामक सात नदियाँ हैं उनके अतिरिक्त और भी अनेकों नदियाँ हैं। यहाँ के मनोहर पर्वतोंके मध्यमें चारोंओर देवता गन्धर्व एवं अन्य भी ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यादि जातियाँ निवास करती हैं। यह देश सदा त्रेतायुग के समान प्रभाव रखता है। यहां की प्रजा उपरोक्त नदियों का जल पीती है। इसी द्वीप में सब लोगों के हित के लिये सदा शिव का ब्रह्मा विष्णु आदि देवता वेदमन्त्र द्वारा पूजन किया करते हैं।

शाल्मलिद्वीप-यह द्वीप प्लक्ष से दुगुना माना गयाहै। इसे मदिरा का सागर लपेटे हुए हैं। इसके मध्य में सेमल का बड़ा-सा बृक्ष है। इसी कारण इसका नाम शाल्मली है। यहाँ श्वेत हरित जीमूत रोहित वैकल मानस सुप्रभु नामक सात वर्ष हैं और शुक्ला रक्ता हिरण्या चन्द्रा शुभ्रा विमोचना निवृत्ता नामक शीतल जल वाली नदियां बहतीहैं। कुशद्वीप मदिरा सागर से बाहर-बाहर इससे दुगुना घृत समुद्र में गिरा हुआ कुश समूह से संयुक्त यह द्वीप है। यहाँ कुशेशय, हरि द्युतिमान पुष्पमान मणिद्रुग हैमशैल एवं मन्दराचलये सात पर्वत हैं तथा द्युतिमान शिवा पवित्रा समिति विद्या दम्भा मही महानदी आदि इनके अतिरिक्त सोने के समान वालु वाली निर्मल जला अन्य भी हजारां नदियाँ हैं। मानव दानव दैत्य देवता गन्धर्व यक्ष किं पुरुष आदि अपने २ काम में लगे हुये ब्रह्मा विष्णु एवं शिवजी का पूजन किया करते हैं।

क्रौंच द्वीप-घृतोद समुद्र से बाहर इससेभी दुगुना विस्तार युक्तदधि समुद्र से घिरा हुआ ही वह द्वीप है। यहाँ पर क्रौंच, वामन अन्श

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

कारक दिवावृत्रि, मन पुण्डरीक दुन्दुभि नामक पर्वत हैं गौरी कुमुद्वती सन्ध्या रात्रि मनोजवा शान्ति पुण्डरीक नामक सात मह नदियाँ तथा और भी स्वच्छजला हजारों नदियां चला करती है।

शाकद्वीप—दधि समुद्र से बाहर इससे द्विगुण विस्तार वाले दुग्ध सागर से घिरा हुआ शाक द्वीप है। यहाँ शाक का बड़ा वृक्ष है उदयाचल अस्ताचल जलधार अविकेश केशरी आदि पर्वत हैं। सुकुमारी कुमारी नलिनी वेणुका इक्षु रेणुका गभस्ति नामक महा नदियाँ तथा अन्य भी छोटी बड़ी हजारों नदियाँ हैं तथा छोटे बड़े और भी अनेकों पर्वत हैं। यहाँ के रमणीक स्थलों ने चारों वर्ण रहते हैं स्वर्गवासी लोग भी यहाँ आकर भ्रमण करते रहते हैं।

पुष्पकर द्वीप—क्षीर समुद्र से बाहर इससे दुगने प्रमाणके मधुर जल वाले सागर से यह घिरा रहता है। इसका मध्यप्रदेश पांच हजारयोजन की ऊँचाई एवं पांच लाख योजन की गोलाई का विस्तार रखता है। यहां मानस नामक पर्वत है। यहाँ जरा (बुढ़ापा) रोग शोक राग द्वेष अधर्म मृत्यु बन्धन आदि कुछ भी नहीं व्यापते, यहाँके निवासी सत्यवक्ता दस हजार वर्ष की आयु वाले सोने के समान दमकते हुए सुख आनन्द से रहते हैं और इसी द्वीप के महावीत घातक नामक खंड में प्रजापति ब्रह्मा रहते हैं। देव दानव आदि सदा इनको पूजते रहते हैं। इसी द्वीप के रहने वालों को समयानुसार स्वयं ही भोजन मिल जाया करता है। इसके लिये इन्हें परिश्रम नहीं करना पड़ता। इससे आगे मनुष्योंके रहने योग्य कोई लोक नहीं जहाँ कोई भी प्राणी नहीं जा सकता। इस प्रकार की सोने की पृथ्वी हैं।

* उन्नीसवां अध्याय *

(राशि ग्रहमडल एवं लोकों का वर्णन)

जिस पृथ्वी के भाग में सूर्य चन्द्रमा का प्रकाश पड़ता है, वह भूलोक कहलाता है। इसी भूमि से लाख योजन ऊपर हजारों योजनके विस्तार वाला सूर्य मंडल है। इससे लाख योजन ऊपर चन्द्रमण्डल है।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

चन्द्रमण्डल से दश हजार योजन ऊपर नक्षत्रों तथा ग्रहों के मण्डल हैं इन मण्डलों से एक लाख योजन ऊपर सात ऋषि और इनसे भी एक लाख योजन ऊपर ध्रुवमण्डल है। पृथ्वी से ऊँचा ध्रुव मंडलहै और ध्रुवमण्डल से एक करोड़ नीचे (भूः भुवः स्वः) ये तीन लोक हैं इनके मध्य ने कल्प निवासी ऋषि हैं ध्रुव से ऊपर महर्लोक यहां पर सनक सनन्दन, सनातन कपिल आसुरि वोढु पञ्चशिख सातब्रह्मा के पुत्र निवास करते हैं। इनसे दो लाख योजन ऊपर शुक्र इससे नीचे दोलाख योजन दूर बुध बुध से ऊँचे दस लाख योजन पर मङ्गल वहां से दोलाख योजन वृहस्पति यहाँ से भी दो लाख योजन ऊपर शनिश्चर मंडल है। ये सभी ग्रह अपनी राशियों पर आरूढ़ रहा करते हैं। इन ग्रहोंके ऊपर ग्यारह लाख योजन की दूरी पर सात ऋषि रहते हैं वहां से ऊपर तेरह लाख योजन दूर ध्रुव निवास है। जनलोक से छब्बीस लाख योजन दूर तपलोक है उससे छः गुना दूर सत्यलोक है। भूलोक में सत्यवादी धर्मात्मा ज्ञानी ब्रह्मचारी रहा करते है। भुवः लोक में मुनिदेवता सिद्धि आदि स्वर्ग लोक में आदित्य पवन वसु अश्वनीकुमार विश्वदेव रुद्र साध्य नागपत्नी नवग्रह निष्पाप ऋषिगण रहते हैं। इस प्रकारकाब्रह्माँड चारों तरफ अण्ड कटाह से घिरा हुआ है। जलसे तथा उससे दसगुना अग्नि पवन आकाश अन्धकार आदि से घिरा हुआ है। इससे भी ऊपर दुगुना महाभूतो का लपेटा है। उसके वाद इस ब्रह्मांड को प्रधान तथा महातत्वों से लपेटकर परम पुरुष विद्यमान है परब्रह्म के गुण संख्या नाम आदि परिणाम से रहित है यही परब्रह्म परमात्मा है। तिलों में तेल एवं दूध में घृत के समान ब्रह्मांड के मध्य व्यापक हैं। यह आदि बीज रूप है। इन्हीं से अन्य अंडज पैदा होते है। इन अण्डजोसेपुत्र एवं अन्य वस्तुओं के वीज पैदा होते है। जब शिव एवं शक्ति का मिलाप होता है। तभी सव देवता प्रगट होते हैं। प्रधान महत्व आदि से मनुष्य सृष्टि होती है। शिव शक्ति से उत्पन्न ब्रह्मांड प्रलय में शिव शक्ति में ही लय होती है। ब्रह्मलोक से आगे वैकुण्ठजी रहते हैं। इसके बाद

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

ही अति अद्भुत कौमार नामक लोक हैं। इसमें शिव पुत्र भगवानस्कन्द हैं इसके बाद उमा लोक हैं। जिसमें ब्रह्मा तथा विष्णुको प्रकट करने वाली आदि शक्ति जगदम्बा देवी का निवास है इससे आगे अक्षय शिवलोक हैं जिसमें तीन देवताओं को जन्म देने वाले परब्रह्म परमात्मा भगवान शङ्करजी रहते हैं। इस लोक के पास गौलोक है जिस में सुशीला नामक गौ तथा उसकी सेवा के लिए शिव आज्ञा से कृष्ण निवास करते हैं। यहाँ अपनी इच्छानुसार विहार परायण स्वतन्त्र लोगों को स्वयं शक्ति ने रचा है।

* बीसवां अध्याय *

(तप के प्रभाव से मुक्ति के उपाय)

देवव्यास ने पूछा-सनत्कुमारजी ! शिव भक्त कर्ता महात्मा किस लोक में जाते हैं जहां से फिर उनका आवागमन नहीं होता अब उस लोक को भली भाँति वर्णन करें ! श्री सनत्कुमारजी बोले-व्यासजी ! यदि शङ्कर कृपा अभीष्ट हो तो तप करना सर्वोत्तम है। विना तपस्या शिवलोक प्राप्ति कठिन है। तपस्या परम पवित्र साधन है। जिसे देखकर स्वर्ग के देवताऋषि मुनि सभी प्रसन्न होते हैं। ब्रह्मा, विष्णु, हरि भी तपस्या करतेहैं। सभी देवी देवताओं ने तप द्वारा सिद्धियाँ प्राप्त की हैं उसकी अभिलाषा इसी लोक में तपस्या द्वारा पूर्ण हो जाती। सात्वक राजस,तामस तीन प्रकार का तप होता है। सभी साधनों का साधन है सात्विक तप देवता सन्यासी एवं ब्रह्मचारियों के अर्थ हैं। दूसरा राजन दानव-मानवों के अर्थ हैं। तामस तप तो राक्षस एवं पापात्माओ के अर्थ हैं। जिस तप को फल की इच्छा न करके किया जाय वही लोक एवं परलोक में सभी मनोरथों को पूर्ण सात्विकतप है किसी कामना को धारकर किया हुआ तप राजस है और जो किसी कामना सिद्धि के हेतु अपना शरीर सुखाकर कष्ट देते हुए किया जाय तो तामस है। सबसे सात्विक तप श्रेष्ठ है ऐसा मानकर धर्म में अचल बुद्धि धारकर हिंसा रहित हो परम पवित्र होकर पूजन, जप, हवन, उपवास, आचार-

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

विचार मोन इन्द्रिय निग्रह आदि करकेही तप करना उचित है। बावड़ी कूंआ, तालाव, मकान, धर्मशालायें बनवाना, यज्ञ तीर्थोंमें बसाये मनुष्यों के परम सुखदायक भगवान शङ्कर की भक्ति के लिए शुभ मार्गहै। मेष संक्राति, तुला संक्रातिके दिन एकान्त में स्थित होकर रेचक पूरक कुम्भक तीन प्रकार के प्राणायाम तथा नाड़ी की गति का ज्ञान एवं प्रत्याहारका नाश ये चारों प्रकार की बुद्धि अणि आदि आठ सिद्धियों से युक्त पूर्व कथित उत्तम ज्ञान के साधन हैं। स्त्री शय्या पीने के पदार्थ वस्त्र धूप लेप ताम्बूल भोजन ये पाँचों वस्तु राजाओं के वैभव हैं। सुवर्ण भार ताम्बे के भवन रत्न मार्ग निपुणता के साथ गान नृत्य आभूषण शंख वीणा मृदङ्ग हाथी छत्र चमर आदि सभी भोग हैं। इन्हीं में मोहित होकर मनुष्य स्नेह करता है इस जगत में सभी कुछ जान-बूझकर जीव सभी चराचर योनियों में कष्ट प्राप्त करके फिरता रहता है। फिर कभी बहुत समय के बाद कोई पुण्य उदय होता है तो उसे मनुष्य जन्म मिलता है, मनुष्य योनि पाकर यदि अपने उद्धार को कोई भी उपाय नहीं करता तो उसके समान कोई दूसरा मूर्ख नही। मृत्यु होने पर फिर उसे पश्चाताप होता है। इसी कारण प्रत्येक मनुष्य का नरकों से वचने के लिये अपने उद्धार का कोई न कोई उपाय कर लेना चाहिये। यह मनुष्य जन्म सभी कामनाओं की सिद्धि के लिये प्राप्त होता है, धर्ममय मनुष्य जन्म पाकर यदि चारों वर्गों की प्राप्ति न कर सका तो किस काम का। यदि किसी कारणवश नहीं प्राप्त कर सकता तो पहिले जन्मके पुण्य संग्रह को व्यर्थ खोने की चेष्टा न करे। पापों का मरना तो छोड़ दे और अपनी बुद्धि धर्म में रखे रहे। मनुष्य जन्म में भी ब्राह्मण जन्म अत्यन्त कठिन है। जो ब्राह्मण जन्म पाकर भी अपना उद्धार नहीं करता उल्टा पापोंमें पड़ जाता है। उसके समान कोई मूर्ख नहीं है।

भारतवर्ष तो कर्म भूमि एवं फल भूमि है। इसमें उत्पन्न होकर ही शुभ कर्म किये जा सकते हैं और उन कर्मों का फल स्वर्ग लोकमें मिलता है। इसी कारण वालकपन से लेकर जब तककोई रोग जरा आदि नहीं

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

आये तब तक धर्म कार्य अवश्य करे फिर तो वृद्धावस्था आने पर यह शरीर रोगग्रस्त एवं बेकार हो जाता है। यदि उस अवस्था में दूसरे चेतावनी भी देते रहें फिर भी अस्वस्थ होनेके कारण उससे कुछ भी नहीं बन पाता। इसलिए अपने साथ अपने सुख के साधन ले जाने के लिये निरन्तर पुण्य-दान करना आवश्यक है। अपने दिए दान के फल से खाते-पीते मनुष्य यम मार्ग को सुख से तय कर लेता है। नहीं तो रोते चीखते-चिल्लाते अनन्त कष्ट भोगते यममार्ग काटता है। धर्म करने वालों को स्वर्ग पाप कर्त्ताओं को नरक प्राप्त होता है। जिन पुरुषों ने थोड़ासा भी समय शिव आश्रय लिया हो, उन्हें भयानक नरक तथा यम दर्शन नहीं होते। किन्तु पाप एवं मोह के कारण शिव आज्ञा से कुछ समय वहाँ रहकर बादमें शिव लोक की प्राप्ति होतीहै। जो लोग सब प्रकार से शिव शरण में हैं वे तो कमल जल की भाँति पापों से सदा भिन्न रहते हैं। इसी कारण सब प्रकारके भय छुड़ाने वालातो शिव नामहीहै।

* इक्कीसवाँ अध्याय *

(युद्ध मर्म का वर्णन)

व्यासजी बोले—सनत्कुमारजी ! ब्राह्मण जन्म मिलना तो कठिन है। शिव मुख से ब्राह्मण भुजाओं से क्षत्रिय जंघाओं से वैश्य एवं चरणों से शूद्रों की उत्पत्ति हुई। अब आप यह कहें कि नीच मनुष्य किस स्थित को पाते हैं। सनत्कुमारजी बोले—व्यासजी ! पाप कर्म करके मनुष्य अपने स्थान से गिर जाता है। इसी कारण श्रेष्ठ मनुष्य सुभ कर्म करके अपने स्थान की रक्षा किया करताहै। जो जीव ब्राह्मण न होकर क्षत्रिय जन्म पाते हैं। वह भी उनके दुष्कर्मों का फल है। इसलिये श्रेष्ठ मनुष्य का कर्तव्य है कि विपत्ति आने पर भी सहन करते हुए बुरे कर्मों में न पड़े। इस प्रकार रहने वाले ही अपना स्थान बचा लेते हैं। जो शूद्र अपने कर्म उचित रीति से पूर्ण करते हुए तीनों वर्णों की सेवा में तत्पर रहते हैं वह शूद्र दूसरा जन्म वैश्य वर्ण में पाता है वैश्य होकर विधिपूर्वक धन खर्च करके अग्नि होत्र आदि कराता है

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

वर फिर क्षत्रिय वर्ण में जन्म लेता है इसी प्रकार फिर वह क्षत्रिय हो कर भूरि दक्षिणा वाले यज्ञों द्वारा परमात्मा की सेवा में तत्पर रहता एवं यथोचित अतिथ्यादि धर्म करता है संग्राम से कभी विमुख नहीं होता वह फिर ब्राह्मण जन्म पाता है। वह ब्राह्मण होकर यदि विधि पूर्वक यह करता है अपने धर्म में स्थिर है तो वह देवताओं को प्रिय होकर स्वर्ग पाता है।

व्यासजी बोले-सनत्कुमारजी ! अब आप कृपा करके युद्ध का महात्म्य सुनायें सनत्कुमारजी बोले—सुनिये जिस फल की प्राप्ति अग्निष्टोयादि यज्ञ करने से नहीं होता वह फलसंग्राम द्वारा प्राप्त होता है जिस क्षत्रिय को युद्धमें कभी पराजय नहीं मिली एवं युद्ध में ही शरीर छोड़ता है उसे अश्वमेध यज्ञ के फल की प्राप्ति होती है वह सीधा स्वर्ग जाता है फिर उसका पुनरागमन नहीं होता। जो क्षत्रिय गौ ब्राह्मण सन्त मन्दिर के स्थान तथा अपने स्वामी के अर्थ युद्ध में प्राण छोड़ते हैं वे परम पुण्यात्मा हैं जो शत्रुओं को मार कर आप मरजाता है वह सदैव स्वर्ग में वास करता है। युद्ध सभी वर्णों के लिये सुख दायक है खास कर क्षत्रियों के लिये तो है ही। यदि वेदान्त जानने वाला ब्राह्मण भी शस्त्र लेकर मारने आवे तो उसे मारने से पाप नहीं ब्रह्महत्या नहीं वह तो युद्धभूमि हैं। यदि मारता हुआ पानी मांग बैठे और उसे मार दे तो उसको ब्रह्महत्या लगती है। रोगी दुर्बल बालक स्त्री टूटे हुए धनुष वाले को मारने से ब्रह्म हत्या होती है। युद्ध में शरणागत को कभी नहीं मारना चाहिये।

* बाईसवाँ अध्याय *

(गर्भ में स्थिर देह तथा वैराग्य)

व्यासजी बोले—अब कृपा करके जीव का जन्म गर्भ की स्थित एवं जीवके वैराग्य का वर्णन करें सनत्कुमारजी बोले–व्यास जी ! सुनिये पकने वाले पात्र में जल तथा अन्न दोनों अलग-अलग हैं। प्रथम अग्नि द्वारा जल गरम होता हैं फिर अन्त में पकता हैं और वह

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

दोनों भागों में बंट जाता है। एक तो रस रूप होकर दूसरा मैल रूप रस रूप तो सारे शरीर में व्याप्त होजाता है जिससे शरीर की पुष्टि होती है। मैल रूप बारह प्रकार से शरीर से बाहिर होजाता है। कान नेत्र, नासिका, जिव्हा, दन्त, लिंग, गुदा, मलाशय, कफ, स्वेद विष्ठा मूत्र इस प्रकार से यह बारह मल स्थान है। सब नाड़ियाँ हृदय कमलसे जुड़ी हुई हैं। उनके द्वारा शरीर भर में रस पहुँचाता है मध्यमें रहने वाली प्राणवायु नाड़ियों के मुख भाग में रस पहुंचता है। फिर तो नाड़ियां समूचे शरीर में रस पहुँचा देती है। वही रस आत्मा से परिपक होती है जब पक जाता है तो प्रथम त्वचा बनकर सारे शरीरमें लिपट जाता है! फिर रुधिर बनता है। उसके बाद रोम बाल स्नायु अस्थि मज्जा नख पैदा होजाते हैं। अन्न से वीर्य होकर दोषरहित शुद्ध होकर ऋतुकाल में स्त्रियों में प्रविष्ट होता है वही वीर्य शरीरबनाता है वायु से प्रेरित हुआ वीर्य स्त्री के रुधिर से मिलकर देह बनने लग जाता है एक दिन में वह कलिल कहाता है फिर पाँच रात्रि में बबूला के समान होता है सात रातिमें माँस पिण्ड बनजाता है एक दो महीने के अन्दर ग्रीवा कन्धे पीठ छाती पेट हाथ पैर लग जाते हैं। तीसरे महीने अंकुर सन्धि चौथेमें अंगुलिया एवं पांचवे में मुख नासिका कान तथा जीव पड़ जाता है। छटे में दन्त गुह्य इन्द्रियें नख कानों के छेद सातवें गुदा उपस्थ तथा नाभि बन जाती है। इस प्रकार से वह जीव माता के गर्भ में अङ्ग तथा प्रत्यङ्गों से पूर्ण होजाता है माता के लिये भोजन के रस से ही पलता है। फिर पूर्व जन्म के कर्मों के अनुसार प्राप्त जीव को सुख दुःख निद्रा स्वप्न आदि प्राप्त होते हैं। उसके बाद जीव को ज्ञान होता है कि मैं बहुत बार जन्म एवं मरण पा चुका हूँ अनेकों योनियों में दुःख उठाता रहा हूँ। अब मैं जन्म लेकर अपनी आत्मा के उद्धार का कोई उपाय करूँगा जिससे फिर मुझे जन्म मरण प्राप्त न हो। इस प्रकार वह जीवात्मा गर्भ में स्थित होकर उपाय विचारता है वहाँ तो पहाड़ से दबे हुए के समान कष्ट भोगता है। जरायु

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

से बंधा रहता है। सुइयों के छिदने जितना उसे गर्भ में कष्ट भोगना पड़ता है। गर्भ के दुःख के समान और कोई दुःख नहीं। इसी कारण धर्मात्मा तो सातवें महीने जन्म लेता है और पापी दस महीने तक गर्भ में रहकर जन्मता है। वह बालक रोम तथा नखों से ढका विष्ठा, मल के गर्त रूप गर्भ में पड़ा होता है। इसके देह में तीन सौ पैंसठ पेशियां होती हैं एवं साढ़े तीन करोड़ नाड़ियों के द्वारा हृदय तथा अदृश्यदोनों भाँति का शरीर वेष्टित होता है, शरीर में बत्तीस दांत होते हैं एवं बीस नख। शरीर में एक पाव पित्त, कफ चार सेर तथा चर्बी दो सेर और एक सेर कपिलत्व तथा पांच तोले मेदा, तीन पल जितना महा रुधिर होताहै। मज्जा तो चौगुनी होती है। वीर्य आध पावहोता है जो पराक्रम कहाता है। हजार पल मांस, सौ पल रुधिर, तथा चार अञ्जलि विष्ठा एवं मूत्र होता है।

* तेईसवाँ अध्याय *

(शरीर की अपवित्रता तथा बालकपन के दुःख)

यह शरीर रज वीर्य के मिलने से पैदा होता है, विष्ठा के गर्त रूप गर्भ में पकता है। उसी कारण अपवित्र है। जिस शरीर की संगति करके पंचगव्य आदि पदार्थ तथा अन्न जल भी अपवित्र हो जाया करते हैं, फिर वह पवित्र कैसे हों! इस देह को कितने पंचगव्यों किंवा कुशाजल से पवित्र करते रहो, फिर भी यह शुद्ध कभी होने का नहीं। काली चीज कभी सफेद नहीं होती, उसी प्रकार यह भी शुद्ध नहीं होता। संसार तो इतना मूर्ख है कि अपनी दुर्गन्ध सूंघते हुए अपना माल देखते हुये भी वैराग्य नहीं पाता। जो अपने देह की इन चीजों को देखते भालते भी वैराग्य नहीं पाता तो उसे कहीं से भी वैराग्य नहीं मिलने का। यदि गङ्गाजल एवं मनों मिट्टी से बार बार मांजते धोते रहो, मरण तक उस क्रिया को न छोड़ो फिर भी यह शुद्ध होने का नहीं। इस प्रकार मलिन आत्मा सैकड़ों वर्ष तपस्या से कभी पवित्र नहीं होती भाव दूषित पुरुष घी, तेल से भर कर अग्नि जलाकर

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

परिक्रमा करके उसमें प्रवेश कर ले फिर भी उन्हें उत्तम फल की प्राप्ति नहीं होती गङ्गाजी में रहने वाली मछलियाँ तथा मन्दिरों में रहने वाले कबूतर आदि पक्षियों की मुक्ति नहीं हुआ करती। ये सब पवित्र स्थानों के निवासी होते हुये भी हवित्र नहीं होते। यदि भावना शुद्ध करके ईश्वर स्तुति हवनादि कर्म करते-करते मृत्यु को प्राप्त हो जाय तो फिर ज्ञान प्राप्त हो जाता है। इससे उसका चित्त शुद्ध हो जाता है। ज्ञान रूप जल एवं वैराग्य रूप मृतिका से वह शुद्धि प्राप्त कर लेता है। देह तो स्वाभाविक अपवित्र है। इसी बात को पूर्ण रूप से जानकर शुद्ध भावना करके चित में शान्ति धारण कर जो परम ज्ञान पाता है, वही संसार से जीवन्मुक्त है। मुनिराज! मेरा तेरा रूप यह ममता ही दुखों का मूल है। जहाँ ममता का नाश है, वहाँ दुःखों का भी नाश है। फिर सुख ही सुख हैं। ममता त्यागने वाले पुरुष ही मुक्त होजाते हैं। जब गर्भस्थ जीव को ज्ञान होता है। तो फिर वह योनि यंत्र की पीड़ा से मुक्त हो जाता है किन्तु उस जीव के बाहर आने पर उसे संसार की वायु का स्पर्श हो जाता है। उसके महाज्वर से ग्रस्त होकर फिर मोह को प्राप्त होजाता है। उसे पहली बातें सभी भूल जाती है। तब तो अपने कर्म छोड़कर ज्ञान भूल जाता है। ईश्वर को भी पहिचान नहीं पाता है।

जीव तो कान रखते भी अपना हित नहीं सुनता। आखें होने पर अन्धा है, तभी तो उसकी बुद्धि पापों से नष्ट हो जाती है। संसार में फंसकर दुःख पाता है तभी तो भगवान् शङ्कर ने कृपा करके मोक्ष साधन के लिये शिवपुराण का वर्णन किया है। बालकपन में चाहते हुए भी जीव कुछ कर नहीं सकता दाँतों के निकलते समय बहुत से रोगों में फंसकर पीड़ा उठाता है। कुमार अवस्था में कानों में दर्द तथा पढ़ने से व्याकुल होकर अनेकों दुःख देखते हुए भी जीव अपने कल्याण का रास्ता नहीं ढूंढ़ पाता यही तो आश्चर्य है, जवानी में इन्द्रियों की वृत्तियों में बल जाता है। काम क्रोधादि जग उठते हैं न दिन में चैन न रात्रि

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

को निद्रा आती है। स्त्रियों में आसक्त हो अपने शरीर से ही निकलते वीर्य का विन्दुओं में अपना सुख समझ लेता है। भिष्ठा मल त्यागने से जितना सुख होता है। उतना ही स्त्रियों में वीर्य त्याग से होता है। इस प्रकार के क्षणिक सुख को मूर्ख महा सुख समझते हैं। वृद्धावस्था आने पर बाल सफेद होजाते हैं। सिर हिलने लगता है। इन्द्रियां कमजोर हो जाती हैं। फिर तो उसे वह क्षणिक सुख कहां स्त्रियों का योवन उसे अप्रिय होजाता है फिर भी यदि इस वृद्धावस्था में स्त्री प्रेमी रहे तो भला उससे बढ़कर और कौन मूर्ख है।

----❀०❀----

* चौबीसवाँ अध्याय *

(स्त्रियों के स्वभाव का वर्णन)

व्यासजी बोले—मुनिराज ! अब कृपा करके पंचचूड़ा नामक अप्सरा ने जो स्त्रियों के कुत्सित अर्थ कहे हैं उनका वर्णन करे। सनत्कुमारजी बोले—व्यासजी ! सुनिये अब लोकों में विचरण करने वाले नारदजी ने एक बार पंचचूड़ा नामक अप्सरा को देख लिया। तब तो उसके पास पहुंच कर बोले—सुन्दरी ! आप कृपा करके मुझे स्त्रियों का स्वभाव सुनाइये यह सुनकर अप्सरा बोली—नारदजी ! मैं स्त्री होते हुये भी स्त्रियों की निन्दा भला किस प्रकार कर सकती हूँ स्त्रियों के स्वभाव को तो तुम जानते हो फिर मुझसे न पूछिये यह सुनकर नारदजीने कहा सुन्दरी ! झूंठ बोलने में तो पाप लगता है। सत्य भाषण में पाप नहीं इसलिये जो भी सत्य हो आप कहदें। तब पंचचूड़ा स्त्रियों के दोष वर्णन करती हुई बोली—नारदजी ! अच्छा सुनिये। नारियों का स्वभाव बड़ा गूढ़ होता है पवित्रता एवं कुलीन कहलाने वाली स्त्रियां भी मर्यादा में नहीं रहती। यही तो उनमें दोष है इनसे बढ़कर संसार में और कोई पापी भी नहीं स्त्रियां तो सब पापों की मूल हैं स्त्रियों में सबसे बढ़कर बुराई यह है कि वे निन्दित एवं पापी पुरुषों को भी सेवन कर लेती हैं। जो भी पुरुष स्त्री कामना से एक बार पास आ जाय और थोड़ा भी

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

अपना प्यार तथा सेवा भाव दिखा दे तो बस स्त्रियाँ उसी की हैं भय से धमकाने से धनसे कभी मर्यादा में स्थिर नहीं रहती जवानी में आभूषण चाहने वाली फैशन करने वाली व्यभिचारिणी स्त्रियोंकी कुसङ्गति में पड़ कर कुलीन एवं अच्छी स्त्रियाँ भी बिगड़ जाती हैं। चंचल स्वभाव की तथा बुरी चेष्टा वाली स्त्रियाँ बड़े-बड़े विद्वानों समझदारों को भी धूल में मिला देती है।

प्राणियों को मारने में जैसे काल कभी सन्तुष्ट नहीं होता उसी प्रकार स्त्रियां पुरुषों से कभी तृप्त नहीं होती। नारदजी स्त्रियों में तो सबसे गूढ़ बात यह है कि पर पुरुष को देखते ही उनकी बुद्धि में विकार हो जाता है जिसके कारण वे पाप प्रवृत हो जाती हैं। तभी तो कामना करने वाले धन दाता मान तथा शान्ति दाता रक्षक रहने वाले अपने पति का विचार भी वे नही करती। आभूषण धन आदि किसी को भी परम सुख नहीं मानती केवल रति विलास को ही सुख मानती हैं। यमराज मृत्यु पाताल वडवानल क्षुरधारा विषसर्प अग्नि आदि समस्त इकट्ठे होकर भी स्त्रियों से समता नहीं कर सकते। स्त्रियाँ इनसे भी महा दारुण होती हैं नारदजी! ब्रह्माजी ने पांच महाभूतों की रचना की। सम्पूर्ण लोक रच डाले। स्त्री-पुरुषों की रचना की अन्य प्राणियों में गुण भी रचे किन्तु स्त्रियों में तो दोष भर दिये। श्री सनत्कुमारजी बोले व्यासजी? इस प्रकार पंचजूड़ा के स्त्रियों के विषयमें सत्य बचन सुनकर नारदजी को स्त्रियों से वैराग्य हो गया।

* पच्चीसवाँ अध्याय *

(काल का ज्ञान वर्णन)

व्यासजी बोले सनत्कुमारजी! अब आप कृपा करके काल ज्ञान सुनाइये। तब सनत्कुमारजी बोले—यही बात एक वार श्रीपार्वती ने श्री महादेवजी से भी पूछी थी। देवीजी ने कहा था कि हे मैंने विधि पूर्वक मन्त्रों द्वारा पूजन प्रकार तो सुन लिया है अब कृपा करके मुझे काल चक्र में जो भ्रम चली आ रही हैं उस संशय को निवारण

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

करें। शिव बोले—हे कल्याणी ! मैं उस शास्त्र को सुनाता हूँ कि जिससे विद्वान लोग काल का ज्ञान मानते हैं। सुनिये ! मृत्यु काल का ज्ञान इस प्रकार होता हैं। जब अचानक ही शरीर पीला पड़ जाय और ऊपरी भाग में लालिमा आ जाये तो छः महीने के अन्दर मृत्यु होती है जब जिव्हा मुख कान आँखें स्तब्ध हो जाँय तो छः महीने के भीतर मौत समझो। जो लोगों का कोलाहल भी न सुन सकें ऐसे भी छः महीने के भीतर मर जाते हैं। एवं जो सूर्य चन्द्र अग्नि न देख सके अन्य सभी वस्तुओं को काला काला देखे उसे भी छः महीने के अन्दर का अतिथि जानो। जिसका वायां हाथ सात दिन तक तड़फता रहे वह एक महीना भर जीवित रहता है। जिसका शरीर काँपता रहे। तालु सूखा रहे वह भी एक महीने तक जीवित रहता है। जिसकी नाक बहती रहें मुख तथा कण्ठ सूख जाय वह छः महीने जीवित रहता है। इसी प्रकार जिसकी जिव्हा मोटी हो जाय दाँत भीगे रहें वह भी छः महीने का अतिथि है जिसको जल तेल घी एवं दर्पण में अपना प्रतिबिम्ब दिखाई न दे अथवा बिगड़ा दिखाई दे वह छः महीने तक जीवित रहता है। जो मनुष्य अपनी छाया को मस्तक के बिना देखे अथवा छाया भी दिखाई न दे वह एक महीने तक भी नहीं जी सकता ध्रुव मण्डल को न देख सकने वाला मनुस्य छः महीने तक जीता रहता है। जिसे सूर्य चन्द्र मंडल की किरण तक दिखाई न दे उसकी एक पक्ष की शेष आयु है। और जो अरुन्धती का तारा, महायान, चन्द्र और तारागण नहीं देख सकता उसकी आयु एक महीने की है। रात के समय इन्द्रधनुष एवं दोपहर को उल्कापात तथा अपने समीप गीध तथा कौए देखे उसका जी छः महीनोंसे विशेष नहीं रहता। जिसे स्वर्ग मार्ग तथा सात ऋषि नहीं दीखते वह भी छः महीनों तक जीता रहेगा जो अचानक ही चन्द्र सूर्य को राहु ग्रास रहा है देखे, दिशाओं में भ्रम है वह भी ६ मास तक जीता है, जिसे नीले वर्ण की मक्खी घेर रही हो उसकी एक महीने तक मृत्यु होती है। कल्याणी ! मनुष्य को यदि

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

अपनी मरण तिथि जानने की इच्छा हो तो वह स्नान द्वारा पवित्र होकर दूध एवं सुगन्धित पुष्पों को दोनों हाथों में लेकर मसले उसके हृदय में उस समय शुभ विचार हों। फिर प्रतिपदा तिथि से तिथियों की गणना करे हाथों को सम्पुटाकार करले। फिर पूर्व दिशा में मुँह करके एक सौ आठ नवाक्षर मन्त्र का जप करे। अपने हाथ के पर्वों को भी बार-बार देखता रहे। जिस पर्व में भ्रमर के समान चिन्ह दिखाई दे उसी पर्व की गणना क्रम से उस तिथि को ही अपनी मरण तिथि जाने। हे सुन्दरि! आत्म विज्ञान चार प्रकार का है, क्षण त्रुटि लव, काष्ट मुहूर्त, दिन रात्रि पक्ष मासऋतु वर्षयुग कल्प महा कल्प इन्हींके अनुसार प्रलयङ्कर शङ्कर जीवों का संहार किया करते हैं। वाम, दक्षिण एवं मध्य इस प्रकार तीन मार्ग हैं। पांच दिनों से आरम्भ करके पच्चीस दिनों तक वाम गति द्वारा नाद का प्रमाण है। बामा चरण नाद में भूत रन्ध्र ध्वजा है। यदि उसमें ऋतु विकृत भूतों के गुण होते हों तो दक्षिणी नाद का प्रमाण होता है। जिस समय ईड़ा आदि नाड़ियाँ प्राणों को धरती है तो एक वर्ष तक उस प्राणी की मृत्यु होती है दस किंवा पन्द्रह दिनों तक प्रवाहित होने पर वह एक वर्ष की आयुवान होता है। एवं यदि वाम ओरकी नाड़ी बीस दिनों तक प्राणोंको बहन करे तो छटे मास मृत्यु जाने। ये सोलह नाड़ियां चार स्थानों में रहा करती हैं। उनका प्रमाण यह है कि ६ दिनों की संख्या से आरम्भ करके यथा विधान इसके अन्तस्थ वायें रन्ध्र प्राणों का प्रकाश होता है एवं यदि ६ दिन पर्यन्तनाद चढ़ता हो तो दो साल आठ दिनों तक पुरुष जीता हैं। यदि सत्रह दिन पर्यन्त प्राण वायु चढ़ता हो तो एक साल सात महीने ६ दिन उसकी आयु है एवं आठ दिनों के भेद से प्राणी दो साल चार महीने चौवीस दिन जीता है। अगर इसी जगह पर नौ दिनों तक प्राण वायु का संचार रहे तो दो महीने ही उसका जीवन रहता है। ग्यारह दिनों तक प्राण वायु का प्रवाह हो तो एक साल नौ महीने आठ दिन तक वह जीता है। बारह दिनों से प्रवाहित होनेपर एक साल

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

सात महीने छः दिन जीवन है। तेरह दिनों तक नाड़ी चलने पर एक साल चार महीने की आयु है। चौदह दिन हो तो एक साल छः महिने चौबीस दिन की आयु है पन्द्रह दिन तक हों तो नौ महीने चौबीस दिन जानो सोलह दिन का प्रवाह हो तो दस महिने चौबीस दिन की आयु है। हे सुन्दरी ! काल ज्ञानी पुरुषों का इस प्रकार का कथन है। अठारह दिन तक प्राण वायु वाम होकर चले तो आठ महीने बारह दिन की उसकी अवधि है तेईस दिनों तक वाम होकर चले तो चौबीस दिन की और चौबीस दिन का प्रवाह हो तो तीन महीने की आयु अवधि है इसमें अठारह दिन विशेष कहे हैं। हे कल्याणी ! यह तो मैंने वाम संचार कहा है। अब दक्षिण संचार सुनिये यदि अट्ठाइसदिन पर्यन्त दक्षिण की ओर से वायु का संचार हो तो उसकी आयु केवल पन्द्रह दिन की है। दस दिन चलता रहे तो दस दिन के प्रवाह से केवल तीन दिन में मृत्यु हो जाती है। बत्तीस दिन के संचार से दो दिन की आयु है। यह सब दक्षिण की ओर से संचार का फल सुना दिया अब आप से मध्यस्थ का प्रचार कहता हूँ सुनिये ? जब पवन का प्रवाह मुंह के एकही हिस्से में दौड़ता अनुभव में आवे तो उसकी मौत एक ही दिन में हो जाती है। हे कल्याणी ! उस प्रकार से नष्ट आयु पुरुषों के लिए काल ज्ञानियों ने काल चक्र का वर्णन किया है।

* छब्बीसवाँ अध्याय *

(काल चक्र के निवारण का उपाय)

उमा बोलीं-नाथ ! आपने सत्य रूप से काल चक्र का वर्णन कर दिया अब इसके बचने अर्थात् निवारण का भी कोई उपाय कहिये यह सुनकर श्रीमहादेवजी बोले-देवी ! भगवती मैं संसार के हित के लिये सँक्षेप से इसका भी वर्णक करता हूँ। पृथ्वी जल तेज पवन आकाश यह पांच भूतों का जब संयोग होता है तब इस भौतिक शरीर की उत्पत्ति होती हैं। इसमें जो व्यापक आकाश हैं उसमें ही सब वस्तुएँ लीन हो जाती हैं क्योंकि यह सब आकाश से ही उत्पन्न होती हैं।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

आकाश के वियोग से विलीन होती है। संयोग से स्थिर होती हैं। यह सुनकर उमाजी ने कहा–नाथ ! यह तो जो स्वर्ग का भी स्वामी है और जिससे आकाश भी नष्ट हो जाता है उस घोर रूप कराल काल को तो आपने जला डाला फिर जब आप स्तुतियोंद्वारा प्रसन्न हुए तब कहीं वह फिर अपनी प्रकृति में स्थिर हुआ। अब वह काल किस प्रकार मारा जा सकता है किन्तु ध्यानकरने वाले योगीजनही इसे मार सकते हैं, तबफिर पार्वतीजी ने कहा-हे स्वामिन् ! इसके जीतने का तो कोई उपाय बताइये। यह सुनकर श्रीमहादेवजी बोले–सुन्दरि ! यहां तो तुम जानती हो कि पांच भौतिक शरीर पार्थिव हैं उन्ही पंचभूतों में इसका लय होता है। आकाश से वायु उत्पन्न होती है वायु से तेज, तेज से जल, जल से पृथ्वी पैदा हो जाती है। इस पृथ्वी के पांच गुण हैं। जल के चार, तेज से तीन, बायु के दो और आकाश का एक गुण है। गुण तो केवल शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध इस प्रकारसे पाँच हैं। जिस समय भूत अपने गुणों का त्याग करते हैं तो प्राणी की मृत्यु होती है जिस समय अपने गुण ग्रहण करते हैं तभी प्राणी की उत्पत्ति होतीहै। देवीजी ! काल को जीतने वाले योगीजन इन्हीं गुणों का विचार करते रहते हैं। पार्वतीजी ने कहा—अब आप कृपा करके यह कहिये कि वह योगी जिस यन्त्र द्वार किंवा ध्यान द्वारा इस काल पर विजय पाते हैं वह किस प्रकार है ! सदाशिव बोले–सुनो जिस समय सारी प्रजा सो जाय तो अन्धकारमय स्थान पर बैठकर कोई दीपक आदि न धरकर कोई सुन्दर आसन जमाकर योग करे। एक घंटा अपनी तर्जनी अंगुलियों के साथ दोनों कान बन्द करले तब उसे अग्नि द्वारा प्रेरित एक शब्द सुनाई देगा इसी प्रकार नित्य ही इस क्रम को करे जब वह दो मुहूर्त तक करने लग जाय और यह शब्द सुनातारहे तो वह पुरुष अपनी इच्छानुसार मृत्यु पाता है। देवीजी ! यह शब्द ब्रह्मरूप है। परम सुख देने वाला मुक्ति का कारण एवं अनश्वर उपाधि रहित है। जब इस प्रकार से उसको ज्ञान हो जाता है तब उसे सुख की प्राप्ति होती है काल

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

के पाशों से जकड़े हुए मौत के वश में हुए साँसारिक जन इस शब्दब्रह्म को क्या पहचानेंगे। इस शब्द तत्व को न जानने वाले पुरुष ही इस आवागमन के चक्र में फंसे रहेते हैं। जिनको इस तत्वकाज्ञान हो जाता है उनकी मुक्ति होती है, सौ वर्ष की आयु का मनुष्य यदि शब्द ब्रह्म का अभ्यास करे तब वह आरोग्यता के साथ-साथ मृत्युञ्जय प्राप्त कर लेता है। भगवती! यह नाद अनाहत है जो उच्चारण नहीं किया जा सकता। इसका ध्यान तो यत्नपूर्वक कल्याणरूप बुद्धि से योगीजन करते हैं उस अनहद नाद से नौ शब्द उत्पन्न होते हैं जिन्हें योगीजन पहिचान सकते हैं। वे यह हैं घोष, काँस्य शृङ्ग, घण्टा, वीणा, वंशज, दुन्दुभि शंख तथा मेघ गर्जित इन नौ शब्दों का तो त्याग करे तुङ्कार शब्द का ही अभ्यास करे इस प्रकार के ध्यान करने वाला योगी कभी पुण्य पाप से लिपायमान नहीं होता। उसी से ही मृत्यु पर विजय पाने वाला शब्द उत्पन्न होता है वह नौ प्रकार का है। प्रथम आत्म शोधक घोषनाद है इसी से सभी व्याधियाँ दूर हो जाती हैं वंशी तथा आकर्षक उत्तम नाद है। दूसरा कांस्य है इसी के द्वारा प्राणियों की गति रुका करती है और यही विषभूत ग्रह आदि को बांधने वाला है, तीसरा शृङ्ग है यह तो शत्रुओं को मारण मोहन उच्चाटन आदि व्यभिचारों का करने वाला है चौथा घण्टा है उसको शिव कहा जाता है यह तो देवगणों को भी आकर्षित कर लेता है। पांचवां वीणानाद है इसे ही योगीजन सदाँ सुना करते हैं—छटा वंशज है इसके ध्यान कर्ता योगियों को सभी तत्व प्राप्त हो जाते हैं। साँतवाँ दुन्दुभि है इससे जरा मृत्यु निवृत्त हो जाते हैं। हे कल्याणी! आँठवां शंखनाद है इससे योगी अपनी इच्छानुसार रूप पा सकता है। नवम्-मेघ गर्जित हैं इससे योगियों के पास कोई भी विपत्ति नहीं आ सकती। हे सुन्दरि! जो नित्य नियम से एकाग्रचित्त होकर तुङ्कार का ध्यान किया करता है उस योगी के लिये कुछ भी असाध्य नहीं रहता है।

CC-0. ASI Srinagar. Digitized by eGangotri

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* सत्ताईसवां अध्याय *

(काल वचन शिव प्राप्ति)

पार्वतीजी ने कहा-नाथ ! यदि आप मुझ पर संतुष्ट हैं तो कृपा करके यह कहें कि योगी वायु का पद कैसे पा सकता है यह सुनकर श्रीमहादेवजी बोले-चन्द्रबदनि सुनिये ! देहली में रखे दीपक की है। तरह हृदयमें स्थितवायु अन्दर तथा बाहिर दोनों तरफ प्रकाश करता। ज्ञान विज्ञान उत्साह आदि सभी वायु द्वारा प्रवृत्त हुआ करते हैं। अतएव जिसने पवन पर विजय पाली हो उसने सम्पूर्ण जगतपर विजय पाली। योगी को चाहिये कि—जैसे लुहार फूंकनी मुख में रख कर वायु भरता हुआ अपने काम में लगा रहता है उसी प्रकार वह भी वायु के भरने का अभ्यास करता रहै इसी अभ्यास के परिपक हो जाने पर उस योगी के हजारों नेत्र एवं हजारों हाथ पैर होते हैं फिर वह सब ग्रन्थियां घेर कर दस अंगुल ऊपर को उठ जाता है। प्राणायाम वह होता है जिसमें सिर एवं व्याहृतियों के साथ गायत्री मन्त्र जपते हुए प्राणवायु का निरोध हो। इसी प्राणायाम को एक वार करने से वही फल मिलता है। जो सौ वर्ष तक तपस्या करके कुशा के अग्रभाग से जल पीने वाले को प्राप्त होता है। हे कल्याणी ! तेज किस प्रकार सिद्ध होता है अब इसका वर्णन करता हूँ। सुनिये ! योगी एक ऐसे स्थान जाकर सोये जो एकान्त हो जहां चन्द्र सूर्य का प्रकाश हो। उस मध्यम देश में निरालस होकर वह अग्नि के तेज को भौंहों के मध्य में देखे। फिर हाथ की अगुलियों द्वारा नेत्र बन्द करके एक घण्टा भर ध्यान परायण रहे फिर उस योगी को अंधकार में ईश्वर की ज्योति दिखाई देती है। तब जाकर वह योगी परम सिद्ध होता है। उसे कारण-प्रशम-आवेश-परकाया प्रवेश अणिमादि गुण सिद्धि तथा मन द्वारा देखना छिप जाना आदि सभी कुछ प्राप्त हो जाते हैं तब परमात्मतत्व को जान कर मृत्यु से छूट जाता है इससे बढ़कर कोई भी मोक्ष पाने का भिन्नमार्ग नहीं। हे कल्याणी ध्यान योगियों को तुरीय गति प्राप्त होती है।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

* अट्ठाईसवां अध्याय *

(छाया पुरुष का वर्णन)

श्री पार्वतीजी ने कहा--कि स्वामिन्! आपने काल वचन का प्रकार तो वर्णन कर दिया अब कृपा करके छाया पुरुष के श्रेष्ठ ज्ञान को कहिये। शङ्करजी बोले--देवीजी! सूर्य किंवा चन्द्र को पीठ देकर श्वेत वस्त्र धारण किये हुए धूप दीपादि से सुवासित होकर सब फलदाता 'ओं नमोभगवते रुद्राय, इस वाक्षर मंत्र का स्मरण करता हुआ अपनी छाया देखे तो उसे ब्रह्मप्राप्ति होती है ब्रह्महत्यादि पाप कोई नहीं छू सकता यदि वह छाया मस्तक बिना दिखाई दे वह छः महीने में मृत्यु पाता है यदि उसका शुक्लवर्ण हो तो धर्म बृद्धि होती है। कृष्ण वर्ण तो पाप है। रक्तवर्ण होने पर बन्धन, पीत होने पर शत्रु जानो यदि छाया नासा के विना हो तो विवाह बन्धु मृत्यु, भूख का डर होता है यदि कटि न होतो पत्नी विनाश, पैरन हों तो विदेह होना। हे पार्वतीजी! उस छाया पुरुष को देखकर नवाक्षर मंत्र का अन्तःकरण में जपन करे यदि एक वर्ष तक जपता रहे तो सभी सिद्धियां उसे प्राप्त होती हैं।

अब कठिनता से प्राप्त होने वाली शक्ति का ज्ञान वर्णन करता हूँ। एक गुप्त विद्या होती है जो कि ब्राह्मणों के सिर पर विद्यमान है जिसकी वेद भी स्तुति करते हैं जो सब विद्याओं की माता है। यही विद्या प्राणियों में भी रहती है खेचरा कहाती है। यह दृश्या अदृश्या, चला, नित्या, व्यक्ता, अव्यक्ता, सनातनी है। वर्णरहिता किंवा वर्ण सहिता यह बिन्दु मालिनी भी है इसका सदा दर्शन कर्ता योगी सफल होजाता है वही फल योगी मालिनी के दर्शन द्वारा प्राप्त कर लेता है इसी कारण बुद्धिमान योगी ज्ञान का नित्य आभास किया करे। अभ्यास द्वारा ही सभी सिद्धियाँ हस्त होती हैं। इसके, बाद सनत्कुमारजी तथा महर्षि व्यासजी अपने २ धाम को गये।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* उन्तीसवाँ अध्याय *

(आदि सृष्टि का वर्णन)

श्रीशौनकजी बोले-हे सूतजी ! आपने वेदव्यास तथा सनत्कुमारजी के सम्वादका तो वर्णन कर दिया अब कृपा करके ब्रह्माजी की सृष्टि का प्रकार कहिये, यह भी तो आप श्रीव्यासजीसे सुन चुके होंगे ? तव सूतजी बोले-हे ऋषियो ! सुनिए—

नित्य सत एवं असत् स्वरूप प्रधान पुरुष परमात्मा ही ब्रह्मा होकर सृष्टि उत्पन्न किया करते हैं। सृष्टि रचियता ब्रह्मा हैं। पालन कर्त्ता विष्णु हैं संहार कर्ता शङ्कर हैं। स्वयम्भू भगवानने जब सृष्टि उत्पन्न करने की इच्छाकी तव पहिले जल पैदा किया। जल नरक पुत्र है। जलमें स्थान रखने वाले नारायण हैं। वह अण्डा प्रथम जल में स्थित हुआ तव उसकी स्वर्ण के समान कान्ति होगई। ब्रह्माजीने स्वयं यज्ञ किया। इसी कारण इनका नाम स्वयंभू हुआ। हिरण्यगर्भ भगवाननेउस अण्डेकेदो भाग किये। जिनसे आकाश तथा पृथ्वी हुए। तव ब्रह्माजीने अधोभागमें चौदहभुवनों की रचना की। मध्यमें आकाशकी रचनाकी जलसे ऊपर पृथ्वीरचीगई। आकाश में दश दिशाओंकी रचनाहुई तव मनवाणीकाम क्रोधरूप रति की रचनाकी। मरीचि, अत्रि, अङ्गिरा, पुलस्त्य, पुलह, ऋतु, वशिष्ठ आदि तेजस्वी ऋषि रचे गये। पुराणों में सप्तऋषि नामसे यही प्रसिद्ध हैं तव ब्रह्मा ने क्रोध द्वारा रुद्र रचे फिर विजली बज्र मेघ इन्द्र धनुष आदि रचे। उसके बाद यज्ञ सिद्धि के लिए ऋग्यजु साम अथर्व वेदों का निर्माण किया। उन्हीं के द्वारा देव पूजन किया वक्षस्थल से पितर, जंघाओं से मानव एवं जंघाओं के नीचे के भाग से दैत्य वनाये गये। इस प्रकार प्रजा की रचना द्वारा भी प्रजावृद्धि न हुई। तव देह के विभाग करके एकसे पत्नी रूप तथा दूसरे से पुरुष रूप हुए। ब्रह्माजी ने इस प्रकार सम्पूर्ण सृष्टि की रचना की। नर नारायण भगवान से वनाई गई सृष्टि प्रजा अमैथुन तथा आयु कीर्तिमती यशस्विनी हुई।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGangotri Gyaan

* तीसवाँ अध्याय *

(सृष्टि रचना क्रम)

सूतजी बोले-जब इस प्रकार से सृष्टि की रचना होने लगी। तब प्रजापति ने भी अयोनिजा शतरूपा नाम की पत्नी प्राप्त की। शतरूपा ने भी सौ दिव्य वर्ष पर्यन्त तपस्या करके ही तपस्वी पति प्राप्त किया। वहीं पुरुष स्वयंभुवसे पैदा होकर मनु नामसे प्रसिद्ध हुये। इन्हींसे इकत्तर मनुओं की मन्वन्तर संज्ञा कहलाती है फिर विराट पुरुष से वीरका पैदा हुई इसी वीरका से प्रियव्रत उत्तानपाद उत्पन्न हुए। धर्मकी पुत्री सुनीति के साथ उत्तानपाद का विवाह हुआ जिससे परम तेजस्वी ध्रुव उत्पन्नहुए उन्होंने तीन हजार वर्ष तक कठोर तपस्या की जिससे ब्रह्माजी ने ध्रुव को सप्तर्षियों से भी उपर स्थान दिया। ध्रुव के दो पुत्र हुए। जिनका पुष्टि तथा धान्य नाम था। पुष्टि की पत्नी सनुत्था हुई। उससे रिपु रिपु-ञ्जय, विप्र, नृकल, वृष, तेजा नामक पांच पुत्र हुए। रिपू से चाक्षुष नामी प्रसिद्ध पुत्र हुआ। पुष्करिणी पत्नी से चाक्षुस ने वरुण पुत्र उत्पन्न किया। अग्नेयी नामक भार्या से पूरु ने छः पुत्र पैदा किये। अङ्ग सुमनस ख्याति, स्मृति अङ्गिरा एवं गय। सुनीथा नाम की पत्नी पाकर अङ्गने बेननामक पुत्र पैदा किया। वह महान पापी था उसको ऋषियों ने मिलकर क्रोध से हुँकार शब्द द्वारा मार दिया। तब सुनीथा की प्रार्थना करने पर बेन के शरीर को ऋषियों ने मन्थन किया बेन के दक्षिण हाथ के मन्थन से पृथुराजा की उत्पत्ति हुई। यह पृथु विष्णु के अवतार थे। धनुष लिए कवच पहिने सूर्य के समान तेजधारी थे। यह पृथु पृथ्वी पर आदिराजा हुए हैं। उन्होंने राजसूय यज्ञ किया। इनके अत्यन्त चतुर सूत तथा मागध नाम के दो पुत्र पृथु राजा ने प्रजा की भलाई के लिए पृथ्वी का दोहन भी किया फिर सौ यज्ञ किये। उनके दो पुत्र विजिताश्वहर्यश्व नामक भी हुए। जो जगत प्रसिद्ध हैं। शिखण्डिनी द्वारा प्राचीन वर्हि-जन्मा इसने बृक्ष की कन्या वीर वर्णिनी से विवाह किया। उसी से दक्ष प्रजापति की उत्पत्ति हुई। ये सोम अंश से थे। फिर दक्ष ने मन द्वारा

CC-0. ASI Srinagar Circle. Digitized by eGangotri

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

चर अचर दो पैर वाले तथा चार पैर वाले जीव पैदा कर दिये। फिर मैथुन सृष्टि रचने लगे वीरण प्रजापति की वीरणी कन्या से विवाह कर लिया। हर्यश्व नामक दस हजार पुत्र उससे उत्पन्न किये। ये ही नारदके उपदेश से वैराग्य को प्राप्त हुए। इसे सुनकर फिर दक्ष ने शवलाश्व नामक दस हजार पुत्र उत्पन्न किये। वे भी नारद के उपदेश से भाइयोंके मार्ग पर चल पड़े। घर नहीं लौटे। फिर नारदने उन्हें भी वेरागी बना दिया। यह सुनकर दक्ष ने नारद को बड़ा क्रोधित होकर शाप दे दिया–हे कलह प्रिय नारद! तुम कहीं बैठ नहीं सकोगे। फिर दक्ष ने कन्यायें उत्पन्न कीं। इनमें से दस कन्या धर्म को व्याह दीं। तेरह कन्यायें कश्यप को देदीं दो कन्या ब्रह्मा के पुत्र अङ्गिरा को दीं। एवं दो कृष्णश्व को दीं बाकी सब चन्द्रमा को व्याह दीं। जिनकी नक्षत्र संज्ञा थी। दक्ष को कन्याओं से देव दानव आदि बहुत सी सन्तानें उत्पन्न हुईं। जिनसे यह सारा जगत भर गया। तभी से प्रजा मैथुन द्वारा पैदा होने लगी। शौनक बोले–हे सूतजी! आपने तो प्रथम कहा था कि दक्ष ब्रह्मा के अंगूठे से पैदा हुए अब फिर यह प्रचेताके पुत्र किस प्रकार हो गये। इस संशयको निवारण करें। सूतजी बोले–प्राणी तो नित्य ही मरते जन्मते रहते हैं! और हर एक कल्प में दक्ष आदि मुनि भी हुआ करते हैं। इसी कारण कल्प २ की कथा होने के कारण कोई विरोध नहीं पड़ता।

* इकत्तीसवां अध्याय *

(सृष्टि वर्णन)

शौनक बोले-हे सूतजी! अब कृपा करके देव दानव गन्धर्व राक्षस एवं सर्प आदि का विस्तार वर्णन करें। सूतजी बोले-सुनो, वीरण! प्रजापतिकी प्रजा न बढ़ने पर वीरण ने तपस्विनी अपनी कन्या को बुला कर इसके तथा धर्म द्वारा मैथुन धर्म से सृष्टि रचना कराई। दक्ष प्रजापति ने उससे पाँच हजार पुत्र पैदा किये जो कि नारद के उपदेश से दिशाओं में ज्ञान के लिये गये फिर घर नहीं लौटे। फिर पाँच सौ पुत्र पैदा किये उनको भी नारदने उपदेश दिया वे भी घर नहीं लौटे उनको

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

भी नारद ने नष्ट कर दिया ऐसा जानकर दक्ष ने फिर श्राप दिया कि तुम जहां भी जाओ वहाँ कलह हो पड़ेगा इस लिए तुम कहीं ठहरनहीं पाओगे फिर उसने अट्ठामन कन्यायें पैदा कीं उनमें से दस धर्म को, तेरह कश्यपको, सत्ताईस चन्द्रमा को, चार अरिष्टनेमके प्रति दो कृशाश्व एवं दो अङ्गिराको देदी इनके ये नाम हैं अरुन्धित, वसु, यामि, लम्बा, भानु मरुवती, संकल्पा, मुबूर्ता, सन्ध्या, विश्वा, ये धर्म पत्नियाँ हैं। इनकी सन्तानों का नाम सुनिए। विश्वके विश्वदेवा, सन्ध्यासे साध्य, मरुवती से मरुत्वान वसुसे आठ वसु, भानुसे बारहभानु, मुहूर्तज, लम्बासे घोसः यामिसे नाग, वीथी एवं अरुन्धतीसे पृथ्वी विषय उत्पन्न हुए। संकल्पा से एकही सत्य वक्ता सङ्कल्प हुआ। वसुसे अय, ध्रुव, सोम, धर अनिल अनल, प्रत्यूषा, प्रभाष से आठ पुत्र हुए। अय से वैनखडश्रम एवं शान्त पुत्र हुए। ध्रुव का संसार प्रसिद्धकाल पुत्र हुआ। सोमसे वर्चा भगवान हुए। धरके पुत्र द्रविण एवं हव्यवह हुए। मनोहरा से शिशिर प्राण रमण पुत्र हुए शिवा पत्नीसे अनिलका पुराजव पुत्र हुआ अनिलसे दो पुत्र हुए। अग्नि पुत्र तथा कुमार स्वामी कार्तिक की उत्पत्ति सरकण्डे बनमें हुई उनसे शाँख विशाख एवं नैगमेय नामी तीन पुत्र हुए एवं देवल के दो पुत्र बुद्धिमान हुए बृहस्पति की बहिन तो ब्रह्मचारिणी थी वह जहां कहीं घूमने लगी। आठवां वसु जो वसु प्रभा था उससे विश्व कर्मा नाम के प्रजापति हुए। वे शिल्प विद्या में निपुण थे। देवताओं से आभूषण विमान गृह आदि वस्तुएं बनाया करते थे। रैवत अज, भव, भीम, वाम, उग्र, बृष कपि अजैकपाद अहिर्बुध्न, बहु रूप एवं महान यह ग्यारह रुद्र प्रधान हैं। इसी प्रकार सरूपाके पुत्र पैदा हुये रुद्रोंकी संख्या तो करोड़ोंहैं उनके नाम इस प्रकार हैं। अजैकपाद, अहिर्बुध्न त्वष्टा रुद्र, वीर्यवान हर, बहु रूप, त्र्यम्बक, अपराजित, बृषाकपि, शम्भ, कर्पदि एवं रैवत यह ग्यारह रुद्र संसार के स्वामी हैं। इस प्रकार गिनते २ तेजस्वी रुद्रोंकी संख्या सौ हो जाती हैं।

—*—

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* बत्तीसवाँ अध्याय *

(कश्यप के वंश का वर्णन)

सूतजी बोले-अब कश्यप ऋषिकी पत्नियोंके नाम सुनिये। अदिति-दिति सुरसा अरिष्ठा, इला, दनु, सुरभि, बिनता, ताम्रा, क्रोध, वशी, कद्रू। मुनिजी अब इनकी सन्तान का नाम सुनो प्रथमके मन्वन्तर में तुषिता नामक बारह देवता हुए हैं। ये सब कश्यप द्वारा आदित से उत्पन्न हुए चाक्षुष मन्वन्तर में लोकों के हितके लिए ही इनकी उत्पत्ति हुई उसके बाद दक्ष कन्यासे विष्णु तथा इन्द्र भी उत्पन्न हुए। अर्यमा, धाता, त्वष्टा पूषा, विवस्वान, सविता, मित्रावरुण, अंटा भाग आदि २ बारह आदित्य चाक्षुष मन्वन्तर में पैदा हुए। इस प्रकार अदितिकी सन्तानें हुई। अब सोम की सुनिये। इसकी सत्ताईस पत्नियांथी। उनकी अतिदीप्ति सन्तति हुई। अरिष्ठ नेमिके सोलह पुत्र हुए। जोकि अति विद्वान्थे और एक कन्या हुई।

कृशाश्व का देव प्रहरण पुत्र हुआ और अति मार्या से धूम्रकेश हुआ। स्वधा तथा सती नाम की इनकी दो पत्नियाँ थी। बड़ी पत्नी स्वधा से पितर उत्पन्न हुए। सती से अथर्वा अंगिरा पैदा हुए। ये सब सहस्र युगके अन्तमें पैदा होते हैं। कश्यप की दिति पत्नी से हिरण्य कशिपु तथा हिरण्याक्ष ये दो पुत्र हुए। दोनों बड़े पराक्रमी वीर थे। विप्रचित्ति द्वारा सिंहका कन्या हुई हिरण्य कशिपुके अनुह्लाद, ह्लाद सह्लाद एवं प्रहलाद ये चार पुत्र हुए चौथे पुत्र प्रहलाद भगवानके परम भक्तथे। हिरण्याक्ष के पांच पुत्र हुए। कुकर, शकुनि, महानाद, विक्रान्त एवं काल ये महा पण्डित एवं महाबलीथे। ये सन्तानें दिति की हुई। अब दनुके परम पराक्रमी सौ पुत्र हुये। अयोमुख, शम्बर, कपाल, वामन, वैश्वानर, पुलोमा, विद्रवण, महाशिर, स्वभानु, वृषपर्वा, विप्रचित्ति स्वर्भानु की प्रभा कन्या हुई। पुलोमा की शची, वृषपर्वा की उपदानवी हयशिरा शामष्ठी नाम की कन्याएं हुई। वैश्वानर की पुलोम एवं पुलोमकनाम की दो कन्याएं हुई। जो कि मरचि ऋषि की पत्नियाँ हुई। इन्हीं से

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGangotri Collection

साठ हजार दानव हुए जो बड़े पराक्रमी एवं सुखदायक थे। उन दानवों के महा पराक्रमी पौलोम काल खंज आदि पुत्र हुए! विप्रचित्ति द्वारा सिंहिका के भी अनेकों पुत्र हुए। उसके नाम इस प्रकार हैं। राहु शल्प सुबलि, बल, महाबल, बातापि, नमुचि इल्वल. स्वसृप, ओजन, नरक कालनाम, शरप्राण, शर, कल्प इत्यादि सबके सब बंश वर्धक हुए। विनिता के गरुण, अरुण ये दो पुत्र हुए। गरुण पक्षियोंमें श्रेष्ठथे। सुरसा से अत्यन्त तेजस्वी अनेकों भाषा ज्ञाता सर्प हुए। उन हजारों सर्पों में वासुकि, तक्षक, ऐरावत, महापद्म एवं दो कम्बल आश्वतरु ये तो प्रधान २ राजा हुए। वे सबके सब आकाश में विचरण करते थे। एला से पद्म, कर्कोटक, धनंजय, महानील, महा कर्ण, धृतराष्ट्र, बलाहक, कुहर, पुष्प-दन्त दुर्मुख, सुमुख, वहुश खरेरामा पाणि आदि २ पुत्र पैदा हुए। इसी प्रकार क्रोध वशाके बहुत गण हुए जिनकी डाढ़ें थीं और अण्डे से पैदा होने वाले पक्षी एवं जीवजन्तु पैदा हुए। अनुसुइया के बलवान पचास पुत्र हुए। सुरभ से शशा एवं भैंसा पुत्र हुये। इला से वैल, एवं बृक्ष हुए। शशा से यक्ष, राक्षस, अप्सरा एवं मुनिगण पैदा हुए। अरिष्ठा से मनुष्य तथा सर्प हुए। इस प्रकार कश्यपजी के पुत्र पौत्र आदि का वर्णन हुआ।

* तेतीसवाँ अध्याय *

(सृष्टि वर्णन)

सूतजी बोले—हे मुनियो! इस प्रकार स्वारोचिष मन्वान्तरकी सृष्टि का वर्णन है। अब वैवस्वान मन्वन्तर में ब्रह्माजी उस सृष्टि का वर्णन करते हैं जोकि हवन आदि करने वाली हुई। उस सृष्टि में पहिले-पहिल सात ऋषि हुए। उन्हें ब्रह्मा ने अपना पुत्र माना। तब उनके चले जाने पर दिति कश्यप ऋषि के पास पहुँचकर सेवा सुश्रुषा एवं स्तुति आदि करने लगीं। तब प्रसन्न होकर कश्यप ने उसे वर मांगने को कहा-दिति ने इन्द्र को मारने वाले पराक्रमी पुत्र प्राप्ति के लिये वर माँगा। तब कश्यपजी ने इन्द्र हन्ता पुत्र प्राप्ति का वर दे दिया। फिर दितिको ऋतु दान देकर कश्यपजी तप करने चले गये। इन्द्र ने इस बात को जान

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

जिया। दितिके व्रत भंग करने के अवसर की प्रतीक्षा करने लगा। जब एक वर्ष की अवधि रह गई तो इन्द्र को अवसर मिल गया क्योंकि एक दिन झूठे मुँह से बिना हाथ पर धोये दिति सो गई थी। तब इसी अपराध के कारण इन्द्र ने झट उसके गर्भ में प्रविष्ट होकर उसके गर्भ के वज्र द्वारा सात टुकड़े कर डाले। किन्तु टुकड़े होने पर भी वे सभी जीवित रहे। सातों टुकड़े रो-रो कर इन्द्रसे प्रार्थना करने लगे—हमें आप क्यों मारते हैं हम तो आपके भ्राता हैं इतना सुनकर इन्द्र ने शत्रुता त्याग दी। तब उन्नचास होकर वे सभी मरुदगण हुए।

ब्रह्मा ने वेन के पुत्र पृथु को आधा राज्य दिया। सोम को ब्राह्मण वृक्ष, नक्षत्र, ग्रह एवं भूतों का राजा बनाया। वरुण जलके राजा हुये। विष्णु आदित्यों के राजा हुये। पावक वसुओं के दक्ष प्रजापतियों के इन्द्र मरुद्गणोंके, प्रहलाद दैत्यों के वैवस्वत यम, पितरों के राजा हुए। भगवान शङ्करजी माता, वृतु, मंत्र,गौ,यक्ष, राक्षस सभी भूत प्रेत पिशाच आदि के राजा हुये, हिमालय पर्वतों के राजा हुये समुद्र नदियों के सिंह बनके पशुओंके बट वृक्ष बनस्पति वृक्षोंके राजा बने। इन सबको राजा बनाकर ब्रह्माजी ने अभिषेक किया पूर्व दिशामें विभु विश्व यात ने प्रजापति के पुत्र को आधिपत्य दिया। दक्षिण दिशा में कर्दम प्रजापति के पुत्र सुधन्वा का अभिषेक किया। पश्चिम दिशामें रजस के पुत्र अच्युत का अभिषेक हुआ एवं पर्जन्यके पुत्र हिरण्य रोमाको राज्य सौंपा उत्तर दिशा का दुर्धर्ष को अभिषेक करके राजा बनाया।

* चौंतीसवां अध्याय *

(सभी मन्वंतरों की उत्पत्ति)

शौनकजी बोले—हे सूतजी ! कृपा करके विस्तारकेसाथ मन्वन्तरों का वर्णन करें मैं सभी मनु सुनना चाहता हूँ सूतजी बोले-हे मुनिजी ! स्वायम्भुव स्वारोचिष उत्तम रैवत चाक्षुष इन पाँच मन्वन्तरों का वर्णन तो मैंने कर दिया। अब छटा वैवस्तव मन्वन्तर कहता हूँ सावर्णि रोच्य ब्रह्मा धर्म सावर्णि सावर्णि रुद्र साधणि देव सावर्णि इन्द्र सावर्णि ये

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

सभी मनु हैं। इस प्रकार भूत भविष्य एवं वर्त मान मन्वन्तर कहे। इस प्रकार ये तानों कालके मन्वन्तर कहे जाते हैं। जिनका हजार युगों तक कल्प बनता है। मरीचि,अत्रि, अंगिरा, पुलह, ऋतु, पुलस्त्य, वशिष्ठ ये सातों प्रह्मा पुत्र हैं। स्वायम्भुव मन्वन्तर में यामनामक देवता सातों ऋषि उत्तर दिशामें रहतेहैं। आग्नीध्र अग्नि बाहु मेधा तिथि बस ज्योतिष्मान धृतमान हव्य पवन शुभ ये दस स्वयं भु मनुके पुत्र हैं उनमें यज्ञ नामक इन्द्र कहे गये हैं। दूसरे मन्वन्तरमें अर्जस्तमा,परस्तम्भऋषभ वसुमान ज्योतिष्मान द्युतिमान एवं सातवें रोचिष्मान इस प्रकार सात ऋषि हैं स्वरोचिष मन्वन्तर में रोचन नाम से इन्द्र तथा तुषिता नामक देवता कहे हैं। हरि सुकृति ज्योति अयोमूर्ति अयस्मय प्रथित मनुष्य, नभ सूर्य ये दस महात्मा स्वारोचिष के पुत्र हैं। अब तीसरे मन्वन्तर कहते हैं। वशिष्ठ के सातों पुत्र एवं हिरण्य गर्भ के ऊर्जानामक तेजस्वी पुत्र ऋषि कहे गये हैं। अब चौथा मन्वन्तर सुनो-जिसमें गार्ग्य पृथु-गग्यां जन्य धाता कपीनक इत्यादि सात ऋषि हैं। त्रिशिख नाम का इन्द्र है। द्युति पोत सौत पस्य तपः शूल तापन तपोरित अकल्याष धन्वी, खड्गी आदि २ तामस मनुके दस पुत्र वर्णनकिये हैं अबपाँचवाँ मन्वन्तर सुनिये। देव बाहु जय मुनि वेदशिरा हिरण्य रोमा पर्जन्य, उध्वर्व बाहु एवं सत्य नैजादिक दूसरे सात ऋषि कहे गये हैं इसमें भूत रज तप प्रकृति आदि देवता एवं विभु नामके इन्द्र तथा तामस के सही दर रैवत नाम धारी मनु कहे गये हैं।

अब छटा मन्वन्तर सुनिये! उसमें रूचि प्रजापति के पुत्र रौच्यतो मनु हैं। राम व्यास अत्रेय बहश्रति भरद्वाज अश्वत्थामा शरद्वान कृपाचार्य कौहिक वंशी गालव रुरु कश्यप ये सब ऋषि एवं देवता कहे जाते हैं। मरीचि के पुत्र एवं कश्यप के पुत्र ही देवता होंगे और विरोचन के पुत्र वलि ही इन्द्र होंगे। विषांग अव नीबासुमन्तधतिमान वसु सूटि सुराविष्णु राजा सुमति ये दस आगे होने वाले सावर्णि मनु के पुत्र होंगे। अब नवम मन्वन्तर सुनिये इसमें मनु दक्षसावर्णि होगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

मेधा तिथि, पौलस्त्य वस्तु कश्यप ज्योतिष्मान् भार्गव अङ्गिरा तथा सवन एवंवशिष्ठ आदि ऋषि ये सब रोहित मन्वन्तरमें होंगे और इनमें देवताओं के गण भी तीन होगे प्रजापति रोहित के पुत्र धृत केतु,दीप्त केतु,पंचहस्त,निराकृत, पृथुश्रवा, भूरिद्युम्नि, ऋचीक, बृहत्गवे ये नौ पहिले सावर्णि के पुत्र होंगे। इस प्रकार जब दूसरा मन्वन्तर लगेगाउसमें दसवाँ मनु होगा। हविष्मान प्रकृति अधोमुक्ति अव्यय प्रयाति भाभार अनेना नाम के ऋषि होंगे। द्विषन्त नाम के देवता होंगे। स्वयं महादेव शम्भु इनके इन्द्र होंगे। अच्चलन उत्तमौजाभटिवेण शतानीक निरामित्र बृषसेन जयद्रथ भूरिद्युम्न सुवर्चा अर्चिये दसमनु पुत्र होंगे। अब तृतीय मन्वन्तर में ग्यारहवां मनु होगा। उसमें-हविष्मान व पुष्पमान वशिष्ठ अनय चारु निखर तेजस अग्नि एवं तीन देवगण ब्रह्माजी के वधृत कहलायेंगे। सर्वग सुशर्मा देवानीक क्षेमक दृढ़ेषु खण्डक आदर्श कुहु बाहु ये मनु पुत्र होंगे। अब चौथे सावर्णि के सात ऋषियों का नाम सुनो-द्युति सुताया अङ्गिरा पौलस्त्य पुलह भार्गव ब्रह्मा के मानस पुत्र पाँच देवता गण होंगे दिवस्पति नामके इन्द्र होंगे। विचित्र चित्र तप धर्म धृतोन्द्र सुनेत्र क्षत्र वृद्धक निर्भय सुतपा द्रोण ये रोच्य मनुके पुत्र होंगे। चौदहवाँ सत्य मनु मन्वन्तरा होगा उसमें आग्नीध्र मागध अति वाह्य शुक्तियुक्ति अजित पुलह इन नामों के सप्तर्षि होंगे। परम पवित्र चाक्षुव देवताएवं शुचिइन्द्र होगा। इस चौदहवें मन्वन्तर में पांच देवता कहे गये हैं। तरङ्ग भीरु दुग्न तनुग्र अनुग्र अतिमानी प्रवीण विष्णु संक्रन्दन तेजस्वी सबल ये सब सत्य मनु पुत्र होंगे। भौम मनुके अधिकार में ही पहिला कल्प पूर्ण हो जाता है। इस प्रकार के वर्णन से मैंने भूत भविष्यत् काल के मनु सुना दिये। इन मनुओं का वर्णन से सनत्कुमारजी व्यासजी के प्रति कह चुके हैं। यही मनु अपने धर्म तपके प्रताप से सहस्रशःयुग पर्यन्त प्रजा पालन करके ब्रह्मलोक में जाते हैं। इकत्तर युगों की चौकड़ी पर्यन्त की स्थिति रहती है इनको कीर्तिवर्धक चौदह मन्वंतर कहा जाता है। इनके अंत होजाने पर फिर सृष्टिका

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by Arangotri Siddhanta Gyaan Kosha

आरम्भ होता है। सौ हजार जब पूर्ण हो जाता है तब एक कल्प पूरा होता है। उस समय सूर्य की किरणों द्वारा सभी चराचर जल जाते हैं। फिर सत्यआदित्यआदि ब्रह्मके साथ विष्णु नारायणमें प्रवेश करजाते हैं।

* पैंतीसवाँ अध्याय *

(वैवस्वत मन्वन्तर का वर्णन)

सूतजी बोले–दक्ष कन्या से कश्यप ऋषि द्वारा विवस्वान सूर्य पैदा हुआ। उसकी संज्ञा, त्वष्टी,सुरेणुका पत्नियाँ हुई। ये सब योवन से मत-वाली थी अपने पति का दुःसह तेज पाकर भी वह सन्तुष्ट न हुई। सूर्यने संज्ञा द्वारा तीन संतान पाई। श्राद्धदेव, मनु एवं प्रजापति यम, यम के साथ यमुना कन्या पैदा हुई। उस समय संज्ञा सूर्य का तेज सहन न कर सकी। तब अपनी छाया बनाई मायारूप होकर छाया ने भक्तिपूर्वक संज्ञा से कहा-अब आप आज्ञा करें मैं आपकी क्या सेवा करू? संज्ञा बोली मैं इस समय पिता के घर जा रहीहूँ। तू मेरे स्थान पर निवासकर, और इन पुत्र तथा पुत्रियों का पालन पोषण किया करना, तब छाया बोली-हे देवि! मैं यह तुम्हाराभेद कष्ट सहते हुए भी केश ग्रहण तक किसी प्रकार नहीं करूंगी तुम आनन्द से जाओ। सूतजी बोले इस प्रकार प्रबन्ध कर संज्ञा अपने पिताके घर पहुँची। पिताने उसे आया देख कर बार-बार धिक्कार किया तब वह घोड़ी का रूप धारण करके कुरु देशों में घूमने लगी। संज्ञाके चले जाने पर सूर्यने छायाको संज्ञामानकर उसके द्वारा सावर्णि मनु पुत्र पैदा किया। इसके बाद छाया अपने पुत्रके साथ विशेष प्रेम करने लगी। संज्ञा के पुत्रों में अब उतना स्नेह नहीं रहा। यमको इस बात पर क्रोध आ गया उसने छाया को एक लात मारी तथा फटकार दिया। तब छाया ने यमको श्राप दिया कि तुम्हारे क्रोध के कारण उठा हुआ यह पाँव गिरपड़े यमने जाकर सम्पूर्ण वृत्तान्त पिताजी से कहा-कि हे पिताजी इसके श्राप से मुझे बचाओ मेरा पाँव न गिरने पाये। तब सूर्यबोले-हे पुत्र! इसमें कोई न कोई कारण अवश्य है। जिससे धर्म रूप तुमभी क्रोधमें आगये। किन्तु माता का श्राप तो असत्य

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

नहीं होने का। इतना यम से कहकर छाया से बोले-हे चण्डिके! यह तुमने किस कुबुद्धि का काम कर डाला। सच-सच कह इस पुत्र से तू क्यों विशेष प्रेम करती है और इससे प्रेम कम क्यों है? तब इतना सुनकर छाया घबड़ा गई और सब सच-सच बतला दिया।

सूतजी बोले-उसके बाद छाया ने सूर्य को शनि चक्रपर चढ़ाया। इस प्रकार सूर्यका तेज कम कर दिया और सूर्य का रूप सुन्दर होगया, तब भगवान् सूर्यने योग-दृष्टिसे अपनी पत्नी संज्ञाको घोड़ी के रूपमेंदेखलिया स्वयं घोड़ेका रूप धारण कर उसके पास पहुँच मैथुनकी इच्छा की, किंतु उन्हें पर-पुरुष जानकर स्वीकार नहीं किया। उसके बाद घोड़े-रूप सूर्य ने उसके मुख एवं नासिका के रास्ते अपना वीर्य निक्षप्त किया वीर्य तो नासिकाके दो भागों से पड़ा था। तभी तो देवताओं के वैद्य अश्विनीकुमार दो होकर पैदाहुए। इतनेमें संज्ञा ने भी अपना पति पहिचान लिया, इससे बहुत प्रसन्न हुई, फिर पति के साथ घर लौट आई फिर तो पहिलेसे भी अधिक प्रेम से दोनों रहने लगे। यमराज इस कर्म द्वारा दुःखी तो बहुत हुए पर करते क्या? किन्तु स्वयं धर्म पूर्वक प्रजा पालन करने लगे इसी से धर्मराज कहलाये। इसीसे लोक पालन तथा पितरों पर शासन इनको प्राप्त हुआ। सावर्णि मनु तपस्वी थे, वे प्रजापति हुए। यही मनु सावर्णि नामक मन्वन्तर में मनु होंगे। अब तो सुमेरु पर्वत पर जाकर कठोरतप करने में लगे हुए हैं। सूर्य की छोटी कन्या यमलोक को पवित्र करती हुई यमुना नामक नदी हुई है।

* छत्तीसवाँ अध्याय *

(मनु पुत्रों के कुल का वर्णन)

सूतजी बोले—वैवस्वत मनु के नौ पुत्र हुए जो कि मनु के समान ही पराक्रमी क्षत्रिय धर्म करने वाले बीर पुरुष हुए। इक्ष्वाकु, शिविन भाच, धृष्ट, शर्याति, नरिष्यन्त, कुरूप, प्रियव्रत, नृग ये उनके नाम हैं। मनुजी की पहले कोई सन्तान नहीं थी फिर, पुत्रेष्ठि यज्ञ करने पर इनकी इला नाम की रूपवती कन्या हुई। जिसे इड़ा भी कहा जाता था। उसे

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGangotri Kosha

देखकर मनु ने कहा-तू यहां मत आ। इड़ा बोली-हे बोलने वालों में उत्तम! मैं तो प्रजापति मित्रा वरुण के अंश से पैदा होकर यहां आईहूँ किन्तु अब मैं वहां ही जा रही हूं। तब वह मित्रा वरुणके पास पहुँचकर हाथ जोड़कर बोली-हे मुनिवरो! मैं मनुके यज्ञ में आपके ही अंशसेपैदा हुई हूँ और आपके पास आगई हूं। मुझे क्या आज्ञा है, मैं क्या करूं? तब पतिव्रता इड़ा से मित्रवरुण बोले-हे सुन्दरी! तुम्हारी इस नम्रता तथा इन्द्रिय दमन एवं सत्य भाषण से हम प्रसन्न हो गये हैं। जा तूही मनु वंश बढ़ाने वाले पुत्रप्राप्त कर, सुद्युम्न तो तेरा नाम होगा। सूतजी बोले-यह सुनकर इड़ा पिता के पास लौटी किन्तु रास्ते में बुधि की प्रार्थना करने पर उसके साथ मैथुन किया। जिससे पुरूरुवा नामक बहुत सुन्दर पुत्र की उत्पत्ति हुई। इसी की सुन्दरता पर मोहित होकर उर्वशी अप्सरा स्वर्गसे भी आकर इसी पुरुरवाके पास रह गई थी। इसके बाद शङ्करजी की कृपा से इड़ा ने पुरुषत्व प्राप्त किया। इस सुद्युम्नके परम धर्मात्मा तीन पुत्र पैदा हुए-उत्कल, गय एवं विनताश्व, उत्कलसे वत्कल देश के ब्राह्मण हुए। विनताश्व से पश्चिम देश के ब्राह्मण हुए। आनति को पुत्र रैन्य हुआ जो रैभय नामसे प्रसिद्ध था, कुशस्थली में उसका निवास हुआ, सौ पुत्र उसके हुए जिनमें ककुद्मी सबसे श्रेष्ठ एवं धर्मज्ञ था इसकी अतीव सुन्दरी रेवती कन्या हुई। जिसके विषयमें ककुद्मी ब्रह्मलोक में ब्रह्माजी से पूछने के लिए पहुँचा। ब्रह्माजी सुनकर हँसते हुए बोले-हे राजन! तुमने जिन राजाओं को अपनी कन्या के वर के लिए विचारा है, उनमेंसे अब एक भी नही सभी काल के गाल में पहुँच गये। तेरी नगरी कोभी यक्ष राक्षसी ने नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। अट्ठाईसवाँ द्वापर है, इस समय भगवान् कृष्ण द्वारिकापुरी का निर्माण करके विष्णु, अन्धक, भोज, कुकुर आदि यादवों के साथ वहां निवास कर रहे हैं। उसी द्वारिका में महाबली बल्देवजी हैं जो कि बसुदेवके पुत्र हैं। उन्हीं को जाकर अपनी पुत्रीरेवती प्रदान करो। वह ही तुम्हारी कन्या के योग्य पति हैं। सूतजी बोले-तब ककुद्मी जान गयेकि इस समय अनेकों युग बीत गयेहैं तब रेवती कन्या

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

दैत्य को मारो। उसके मारे जाने पर लोकों का कल्याण होगा सूतजी बोले-यह सुनकर उस राजाने अपने पुत्र कुवलाश्व को अर्पण करते हुए कहा कि हे महान्! मैं तो शस्त्र त्याग चुका हूँ यह मेरा पुत्र आपको अर्पण है, उस दैत्य धुन्धको यह अवश्य मार देगा। इतनाकहकरराजा वनमें चला गया। भगवान् विष्णु कुवलाश्वमें तेज द्वारा प्रविष्ठहुए। यही कुवलाश्व वहुतसे पुरुषोंको साथ लेकर धुन्धको मारने के लियेउतंक मुनि के साथ बनमें पहुँचा। धुन्धने उसको आता देख क्रोध करके अपने मुख से अग्नि प्रकट की जिससे कुवलाश्वके साथी पुरुषोंको भस्मकर दिया। उनमें केवल तीन वच रहे कुवलाश्व तब झटपट उसके पास पहुँचा अपने अग्निवाण द्वारा धुन्धकी अग्निको नष्ट कर दिया फिर अपने पराक्रम द्वारा उसका बध कर दिया। यह देखकर उतंक ऋषि ने उसे अक्षय धन प्राप्तिका वरदान दिया और कहा-हे राजन्! तुम्हें कोई भी पराजित नहीं कर सकेगा। उसके बाकी बचे नाती पुत्रों में दृढ़ाश्व श्रेष्ठ निकला।

दृढ़ाश्व का हर्य्यश्व, हर्यस्वका निकुम्भ निकुम्भ सहताश्व उसका कृशाश्व तथा हेमबतीएककन्या हुई उसका पुत्र प्रसेनजितहुआ। आगेप्रसे, नजित ने अपनी गौर पत्नी को शाप दिया तब वह वहुदा नामकी नदी हुई पुरुकुत्स का पुत्र जय्यारुणि उसका सत्यव्रत पुत्र हुआ इसने किसी दूसरेके विवाह मन्त्रोंमें विन्घ डालकर उसकी स्त्रीको हर लिया इसी कारण इसको अधर्मी समझकर पिता ने इसका त्याग दिया। तव वह बोला-पिताजी! मैं कहाँ जाऊँ! उत्तरमें पिताने कहाकि तू चाँडालों में जाकर निवास कर। पिता के कहने पर वह चांडालों में रहने लगा। इसअधर्म के कारण इन्द्रने वारह वर्षों तक वर्षा नहीं की। उसके बाद महर्षि विश्वामित्र पत्नी का त्याग करके समुद्र के किनारे पहुंचे वहां तप करने लगे। उसकी पत्नी अपने पुत्र का गला बाँधकर सौ गायों के बदले वेच आई। सत्यव्रत ने जाकर उसे छुड़ाया और उसका पालन करने लगा। गल-बाँधने के कारण इसका नाम गालिव हुआ!

—:-:❀:०:❀:-:—

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

का विधि पूर्वक बल्देवजी के साथ विवाह कर और स्वयं सुमेरु पर्वत पर जाकर तप करने लगा। श्रीबल्देवजी के सौ पुत्र हुए श्रीकृष्णजी के अनेकों पुत्र हुए। दोनों कुलके पुरुष सारी दिशाओंमें जाकर बसगये। सूतजी बोले-अब मनु वंश सुनिये मनुके पत्र वृषध्न को वशिष्ठजी ने गौ रक्षाके काम में लगाया। एक वार रात्रिकाल में व्याघ्रने आकर गाय पर आक्रमण किया। गाय बहुत ही डकरा उठी उसके शब्द सुनकरहाथ में तलबार लिये बृषध्न ने उस अंधेरी रातमें अपने जाने सिंह पर बारकिया किन्तु दैवयोग से वह बार गाय पर हुआ सिंह तो भाग गया गाय कट गई। जब प्रातः गाय को मरा हुआ देखा तो अत्यन्त दुःखी होकर वह बृन्तान्त जाकर गुरुजी को सुनाया। सुनतेही गुरु ने शाप दे दिया कि तू शूद्र होजा। उसके बाद वृषध्न विरक्त होकर वन में पहुंचा वहां दावाग्नि में प्रवेश करके अपना नाशवान् शरीर जला दिया।

* सैंतीसवां अध्याय *

(मनु वंश वर्णन)

सूतजी बोले-मनुजी की नासिका द्वारा एक बालक पैदा हुआ जिसका नाम इक्ष्वाकु था उसके सौ पुत्र हुए। उनमें जो बड़ा था उसका नाम विकुक्षि था, वह अयोध्या का राजा हुआ। यह राजा एकवारअपने पिताके श्राद्ध के लिये शिकार करने वनमें गया। रास्ते में आते हुए एक शशा को पकड़ इसने खालिया इस कारण इसका नाम भी शशाद पड़ गया। अयोधके पुत्र ककुत्स्थ हुए। उसके अरिनाम,अरिनामके पृथु, पृथु के विश्वराट,उसक प्रजापति इन्द्र,इसके युवनाश्व, युवनाश्वके कुवलाश्व, इन्द्र के पुत्र युवनाश्व द्वारा प्रजापति श्राव हुए जिन्होंने श्रीवस्ती पुरी बसाई! कुवलाश्व के सौ पुत्र हुए। कुवलाश्व अपना राज्य पुत्र को सौंप स्वयं वनमें चल पड़ा। मार्गमें उतंक मुनिमिल गये और कहा,हे राजन्! आप तो इस समय धर्म पूर्वक प्रजाका पालन करते हुए राज्य करें वन में न जायें। मेरे आश्रम के पास ही महापराक्रमी धुन्ध दानव है यह उग्र तपस्या करके लोकोंका विनाश करना चाहता है, आपही जाकर उस

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* अड़तीसवां अध्याय *

(सगर तक राजाओं का वंश वर्णन)

सूतजी बोले—तब सत्यव्रत ने विश्वामित्र की पत्नी का पुत्र के साथ मुक्ति तथा श्रद्धा के साथ पूर्ण प्रतिज्ञा से पालन पोषण किया। एक दिन वह राजकुमार मांस न होने पर महर्षि वशिष्ठ की गौओं में से एक को मार कर विश्वामित्रके पुत्र के साथ मिलकर खायगा ! यह सुनकर वशिष्ठ को क्रोध आया और बोले-तुमने तीन पाप कियेहै इसी कारण तू त्रिशंकु होजा इतना कहने पर वह त्रिशंकु होगया। इतने में विश्वामित्र भी तप करके आगये। सत्यव्रत को अपनी पत्नी पुत्र का पालन करते देखकर उस पर प्रसन्न हुए फिर सत्यव्रत को उसके पिता का राज्य दिलाकर यज्ञ कराया देवताओं के सामने उसे स्वर्ग पहुँचादिया। कैकेई वंश की सत्य-रथा नाम की उसकी स्त्री थी जिससे हरिश्चन्द्र राजा हुए। उनके पुत्र हुए रोहित, रोहित के वृक, वृक के बाहू हुए। इसी बाहूराजा ने और्वऋषि के आश्रम में जाकर तालजंघाओं से रक्षापाई उसी स्थानपर जहर सहित इसका पुत्र पैदा हुआ। इसीकारण उसका नाम सगर हुआ। सगरने भार्गव ऋषि से आग्नेय अस्त्र की शिक्षा ग्रहण की जिससे हैहय एवं तालजंघाओं को मार उस सारी पृथ्वी पर विजय पाई। उसके बाद शकवद्दूदक, पारद, तगण, खश, नामी देशों में धर्म स्थापन किया। इसकी कथा इस प्रकार है—बाहूराजा के सब राज्य को हैहय एवं तालजं घाओं ने अपहरण कर लिया था तब अपनी स्त्री को साथ लेकर बाहू राजा बनमें चला गया और वहाँ जाकर प्राण त्याग दिये। उस समय पत्नी गर्भवती थी जिसका नाम यादवी था। वह यादवी और्व ऋषि की आज्ञा पाकर इसके आश्रम में निवास करने लगी सदाशिव के ध्यान में मग्न होकर निरन्तर उस ऋषि को सेवा परायण हुई। समय आने पर उसने महाबलवान् पुत्र उत्पन्न किया। इसी का नाम सगर था ! और्व-ऋषि ने आग्नेयास्त्र की शिक्षा देकर इसे निपुण कर दिया। इसी सगर ने आग्नेयास्त्र द्वारा है यह तालजंघाओं का विनाश करके अपने पिता

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGangotri Ashram

का राज्य प्राप्त किया। उस समय शक, यवन कम्बोज, पाल्हव आदि वशिष्ठ की शरण में पहुंचे। महर्षि ने उनको अभयदान दिया तब सगर राजा ने अपनी प्रतिज्ञा तथा गुरु वचन समझ कर उसे सत्य करनेके लिये ही शकों का आधा सिर मुड़वा दिया। यवन तथा कम्बोजों के सारेसिर का मुंडन करा दिया। पारद एवं पाल्हवों को डाढ़ी मूंछें रखाकर फिर सब को छोड़ दिया। उसकेबाद अश्वमेधयज्ञ रचाया जिसमें संस्कार द्वारा पवित्र करके घोड़ा छोड़ा इन्द्र ने घोड़ा पकड़कर पृथ्वीके नीचे पाताल में जाकर छिपा दिया। सगर पुत्रों ने घोड़ा ढूंढ़ते २ उस स्थानको खोदा। खोदते-खोदते आदि पुरुष कपिलजीके आश्रमपर सबके सब पहुंच गये। वहां जाकर उन्होंने कोलाहल मचाया जिसे सुनकर कपिलदेवने अपनी तजोमयी आखें खोली जिनसे प्रकट होकर अग्नि ने उनको भस्म कर दिया वे सबके सब साठ हजार थे केवल चार वच गये। हर्ष केतु, सुकेतु, धर्म रथ तथा शूरवीर पञ्चजन इन्हींके द्वारा सगर का वंश चला। इसके बाद यज्ञ का घोड़ा सागर के किनारे पर प्राप्त हुआ तब सगर ने सौ अश्वमेध यज्ञ किये।

* उन्तालीसवाँ अध्याय *

(वैवश्वत वंशीय राजाओं का वर्णन)

शौनकजी बोले-हे सूतजी! आपनेसगर राजाके साठहजारपुत्रों को कहा—सगरके येसब पुत्र किस प्रकार हुए! अब कृपा करके यह सुनाइये। सूतजी बोले-सगर राजाकी दो पत्नियां थी। और्व ऋषि से दोनों ने वर मांगा था। एक ने तो साठ हजार पुत्र मांग लिये, दूसरी ने वंशवर्द्धक अति सुन्दर एक ही बालक माँगा। पहली रानीसे एक तूम्बा पैदाहुआ जिससे साठ हजार पुत्र हुए। एक २ को ले लेकर घृतके मटकों में रख दिया कुछ समय के बाद अत्यन्त बलवान होकर सभी राजकुमार बाहर निकल आये। ये ही साठ हजार कपिलदेव की क्रोधाग्निमें भस्महोगये। जिनका उद्धार करना आवश्यक था। इसी सगर के वंश में एकदिलीप राजा हुए उनके पुत्र हुए भागीरथ, यही भागीरथ अपने पूर्वजोंके उद्धार

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

के लिये श्रीगङ्गाजी को स्वर्ग से उतार कर समुद्र तट तक ले आये। श्री गङ्गाजी द्वारा उनका उद्धार करके श्रीगङ्गाजी को अपनी पुत्री बनाया जिससे श्रीगङ्गाजीका नाम भागीरथी हुआ। भागीरथी का पुत्र श्रुतिसेन इसका नाभाग, नाभाग का अम्बरीष उनका सिंधुद्वीप, उसका आयुताजित, उसका ऋतुपर्ण, उसका अरुणपर्ण, उसका मित्रसह उसका सर्व कर्मा, एवं उसका अनरण्य, अनरण्ड, सुडिद्रुह, उसका निषध, निषध का खट्वांग उसकादीर्घ बाहु, उसका दिलीप, दिलीप का रघु, रघु का अज, अजका दशरथ, दशरथ के मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम, श्रीराम के कुश, कुश के अतिथि, उसके निषध, निषध के नल, नल के नभ, नभ के पुण्डरीक, उसके क्षेमधन्वा, उसके देवानीक, उसके अहीनगु, उसके सहस्वान, उसके वीर्यसेन, उसके परियात्रा, उसके बल, बलके स्थल, स्थल से यज्ञ, यज्ञ के अगुण, अगुणके विधृत, उसके हिरण्यनाभ उसके याज्ञवल्क्य, उसके पुष्य, पुष्य के ध्रुव, ध्रुव के अग्निवर्ण, उसका शीघ्र, उसका मरुत, मरुत का प्रथुश्रत, उसका सन्धि, सन्धि का अकर्षण, इससे मरुत्वा, इससे विश्वान्ह, उससे प्रसेनजित, उससे तक्षक उससे बृहदबल हुआ, उससे बृहदरण, उससे उरुक्रिय, उससे वत्सवृद्ध, उसका प्रतिव्योम उसका भानु, भानुका दिवाक उससे सहदेव उससे बृहश्व उससे भानुमान उसका प्रतिकाश्व उसका सुप्रीतक उससे मरुदेव उससे सुनक्षत्र उसके अन्तरिक्ष उससे सुतपा उससे रूणक, रूणक से सुरथ एवं उससे सुमित्र पुत्र होगा। यही सभी विचित्र कर्म करने वाले धर्मात्मा इक्ष्वाकु कुल के राजाओं का वंश सुमित्र तक होगा।

* चालीसवाँ अध्याय *

(श्राद्ध कल्प पितरों का प्रभाव वर्णन)

शौनकजी बोले—हे सूतजी! विवस्वन सूर्य श्राद्ध देवता कैसे बने? कृपा करके अब यह सुनायें। फिर श्राद्ध माहात्म्य एवं उसका फल भी कहें। सूतजी बोले-हे शौनकजी! जो पुरुष पिता, पितामह, प्रपितामह, इन तीन पिण्डोंका फल की इच्छा से नित्य ही श्राद्ध किया करते हैं। उन पुरुषों को धर्म एवं शुभ सन्मान प्राप्त होता है फिर पुष्टि की इच्छा से पितृश्वर

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

उन्हें पुष्टि देते हैं। युधिष्ठिरजी ने एक समय भीष्म पितामहजी से पूछा था कि पितरों को श्रद्धि कैसे प्राप्त होते हैं। कोई तो अपने कर्मोंसेनरक में जाताहै। एवं कोई स्वर्गमें। हमने यह भी सुना है कि स्वर्गमें देवता भी अपने पितरोंका श्राद्ध किया करतेहैं। इन सभी बातोंको आप यथार्थ सुनाने की कृपा करें। भीष्मजी बोले-हे राजन! मैंने एक वार अपने पिताजी को पिण्डदान किया था तव वे प्रकट होकर बोले-हे पुत्र! यह पिंड मेरे हाथ पर रख। मैंने विचार किया कि ऐसा तो शास्त्र नहीं कहते तव मैंने कुशों पर पिंड रख दिया। इससे पिता सन्तुष्ट होकर कहने लगे

हे पुत्र! तुम धर्म के अनुसार कार्य करने वाले धर्मज्ञ हो। मैं तुम पर वहुत प्रसन्न हूँ। मैं तुम्हें त्रिलोकी में दुर्लभ वर देता हूं कि तुझे कोई भी मार नहीं सकेगा। तुम अपनी इच्छा से मृत्यु पाओगे। इसी प्रकार और भी कोई वर माँगलो। तव मैंने हाथ जोड़कर कहा-हे पिताजी! आपने मुझे कृतार्थ कर दिया। मैं एक बात पूछता हूँ अतीव कृपा होगी उसका उत्तर दें। तव राजा शान्तुन बोले-हे पुत्र! तुम्हारी तरह मैंने भी पितृ कल्पके बिषय मार्कण्डेय ऋषिसे पूछा था। तव उन्होंने इस प्रकार कहा था-हे राजन! एक समय मैंने स्वर्ग से उतरते विमान को देखा उसमें एक ही बालक सोरहा था। मैने उससे पूछा कि आप कौन हैं। तब उस बालकने कहा कि मैं ब्रह्मा पुत्र सनत्कुमार हूँ। सातों ऋषि मेरे छोटे भ्राता हैं। क्योंकि मेरे दर्शन के लिये ही तुमने तपस्या की थी। इसी कारण मैं यहाँ प्रकट हुआ हूँ। अब तुम क्या चाहते हो? तव मार्कण्डेय जी बोले-हे स्वामिन! पितरों का आदि स्वर्ग क्या है। इसका यथार्थ वर्णन करें। सुनकर वे वोले सुनो! ब्रह्माजी ने देवताओं को रचकर कहा था कि तुम भजन तप करो। तव देवोंने ब्रह्माजी को छोड़कर आत्म भजन किया। इसी कारण ब्रह्माजी ने उन्हें शाप दिया कि तुम संज्ञा रहित मूढ़ बन जाओगे। उसी समय वे संज्ञा हीन होकर ब्रह्माजी से बोले-हे पिता महजी! हमारे अपराध क्षमा करने की कृपा करें तव ब्रह्माजी ने उन्हें प्रायश्चित के लिए कहा फिर बोले-इस विषय में तुम अपने पुत्रों से भी

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

पूछो तुम्हें उनसे ज्ञान प्राप्त होगा। देवताओं ने जाकर उनसे पूछा-तब वे बोले-हे पुत्रक गण ! तुम चेतना पाकर प्रायश्चित करो। यह सुनकर देवता फिर ब्रह्माजीके पास आकर बोले-हे पितामहजी ! हमारे पुत्र होकर उन्होंने हमें पुत्रक क्यों कहा। ब्रह्माजी बोले-देवताओ ! तुम ब्रह्मावादी नहीं। इसी कारण तुम्हारे पुत्रों का कथन यथार्थ है जिन पुत्रों को ज्ञान नहीं वे तो निरे बालक हैं। इसलिये अब तुम जाकर भजन करो फिर देवताओं ने पुत्रों से कहा कि तुम हमें पुत्रक कहने वाले हो इसी कारण तुम पितरहोओगे। तभीसे वे देव पुत्र पृथ्वीपर पितर नामसे प्रसिद्ध हुए।

* इकतालसवाँ अध्याय *

(सात व्याध पुत्र)

श्री सनत्कुमारजी बोले-हे तपस्विन ! स्वर्ग में पितरोंके गण सात हैं। जिनमें चार तो मूर्तिमान हैं एवं तीन अमूर्त हैं। आद्य देवता एवं ब्राह्मण उन्हीं का भजन किया करते हैं। वही पितर अपने योग द्वारा प्रथम सोम को तृप्त कराते हैं। इसी कारण श्राद्धोंमें ब्राह्मणों तथा योगियों को चाँदी के बर्तनों में भोजन कराना उत्तम है। फिर चाँदी के पात्र उन्हें दान में दे देना चाहिए। श्राद्धों में अग्नि, यम, एवं सोम का आव्हान करे। जो मनुष्य श्राद्धों में पितृ तृप्ति कराते हैं, पितर भी उन्हें पुष्टि, आरोग्य एवं बृद्धि दिया करते हैं। मार्कण्डेय बोले-इस प्रकार ज्ञान देकर देव स्वामियों ने योग की गति प्राप्त की इसलिए हे भीष्मजी ! प्रथम योग का आचरण करने वाले भरद्वाज पुत्र ब्राह्मण कुछ दुराचार में पकड़ कर पतित होगये। बाग्दुष्ट, क्रोधन, हिंस, पिशुन, काव, स्वसृप, पितृबर्ती नामक विश्वामित्र के पुत्र गर्ग के शिष्य हुए। पिता की मृत्यु होने पर सब प्रदेश में रहकर गुरु की आज्ञा से कपिला गौ के पालक हुए। एक दिन की बात है उन दुष्ट कुमारों ने मूर्खता के कारण मार्ग में गौ को मारनेकी कुबुद्धि की और गुरु से आकर कहा कि गाय को सिंह पकड़ कर ले गया है। इस असत्य के बोलनेसे उनको गौ-हत्या का पाप लगा। इसी कारण वे सातों भाई एकलुब्धक के घर पैदा होकर अपने धर्म में तत्पर

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

हुए कालञ्जर पर्वत पर मृगों की भांति वनमें फिरने लगे। कुछ समय के बाद उन्हें कुछ ज्ञान हुआ। उस पाप से मुक्त होने के लिए उनकी इच्छा हुई। तपस्वियोंके घरोंमें जाकर भोजन करते रहे। इस प्रकार करते-करते उन्होंने वनमें ही प्राण त्याग दिये।

अभी तक भी उन व्याध पुत्रों का स्थान कालञ्जर पर्वत परदिखाई देता है। उसके बाद उनके शुभ अशुभ कर्मोंकी निवृत्तिहुई। फिर उन्होंने चक्रवाकयोनि में जन्म पाया। उसके क्रम से जलचर, नभचर पक्षी आदि की योनियां प्राप्त करते हुए उत्तम ज्ञान की प्राप्ति की। उस पक्षियोनि में एक बार उन्होंने उस वन में के पानीके स्थ नीपदेश के परम सुखीराजा को आया देखकर विचार किया कि इस प्रकार का कौनसा पुण्य नियम होगा जिसके करने से हम भी इसी प्रकार राजाकी भाँति सुख, सौभाग्य भोग सकें। उसी समय दो चक्रवाक पक्षी उनके पास आकर बोले-हम दोनों आपके हित चिन्तकहैं। हमें अपना मन्त्री बनाओ। वहां एक सुमना पक्षी भी आ गया था। उसने योगबल से कहा-हे चक्रवाक पक्षियो! तुम दोनों योग्य धर्म पाचुके हो। जिसके तुम मन्त्री होना चाहते होतो वह काँपिल्य नगरी के राजा होंगे और तुम उनके मन्त्री बनोगे। यह कहकर ब्रह्मचारी सुमना प्रसन्न होते २ उनसे बोला—अब तुम्हारा शाप भी निवृत्त हो जायगा। योग को प्राप्त होकर पितरों की कृपा से तुम्हें पुण्य प्राप्त होगा। तुमने गौका प्रोक्षण करके पितरों को अर्पणकिया था,इसी कारण से पुण्य प्राप्त होगा। इस प्रकार कहकर सुमना पक्षी मौन हो गया।

* व्यालीसवाँ अध्याय *

(पितरों के प्रभाव का वर्णन)

भीष्म पितामह बोले-हे मार्कण्डेयजी! अब इसके बाद क्या हुआ? कृपा करके अब यह सुनायें। यह सुनकर मार्कण्डेयजी बोले-सुनिये, वे सात पक्षी अपने धर्म पूर्वक मानसरोवर में घूमते हुए केवल जल तथा वायु का आहार करके अपना शरीर शोषण करने लगे, और वह राजा

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyan Kosha

भी पत्नीके साथ अपनी नगरीमें लौट आया। तब उस विभ्राज राजाने अपने पुत्र अनूपको राज्य दे दिया, स्वयं वनमें चला गया। उसी वनमें पहुँचा जहां कि उसके वही सहचारीरहा करते थे। वह केवल पवनहारी होकर तप करने लगा। उसके तप का तेज सारे वन में जगमगा उठा। तब वहां चार शकुनों से तथा भोग भृष्ट तीन पक्षियों ने शरीर छोड़ा। दूसरा जन्म उन्हें कांपिल नगरमें मनुष्यका प्राप्त हुआ। इनका नाम ब्रह्मदत्त आदि हुआ, इनमें तीन मोहित हुए और शेष चारों को अपने पूर्व जन्मका बृत्तान्त भी याद था। ब्रह्मदत्त तो पाप रहित होगयाथा,उसको राजा ने राज्य दे दिया और स्वयं परम गति प्राप्ति की और पंचाल एवं पुण्डरीकने भी अपने पुत्रों को मन्दिरका अधिकार दे दिया, उन्होंने भी परम गति पाई। हे भीष्मजी! उन सातोंमेंसे बाकी चार जो थे, वे उसी नगरीमें एक दरिद्र ब्राह्मणके कुलमें जन्मे। वे चारों वेद,शास्त्रोंकी विद्या में निपुण होगये। भगवान् शङ्करकी भक्तिमें तत्पर होकर वनमें चले गये। भगवान शङ्कर की भक्ति एवं स्मरण करने से मुक्ति प्राप्त होती है।

* तेतालीसवां अध्याय *

(आचार्य पूजन का नियम वर्णन)

शौनक बोले-हे सूतजी! अब आप आचार्यके पूजनकी विधि कहिये और ग्रन्थ आदि सुनने के बाद क्या कर्तव्य होना चाहिये। तब सूतजी बोले-सुनिये, पुराण ग्रन्थ कथा सुन लेनेके बाद आचार्य पूजन आवश्यक है। आचार्य को प्रसन्नता पूर्वक दान दे। जब शिव-पूजन समाप्त हो तभी आचार्य ब्राह्मणको बछड़े वाली गो दान करे। एक पल जितना स्वर्णका आसन बनवाये उस पर सुन्दर लिखे हुए ग्रन्थको स्थापित करके आचार्य को समर्पण करे। इस प्रकार उसके बन्धन मुक्त होजाते हैं। हे मुनिजी! पुराण वक्ता महात्मा होते हैं, उन्हें तो ग्राम, राज्य, घोड़ा, हाथी आदीआदि उत्तम एवं उपयुक्त वस्तुयें यथा शक्ति देने से कल्याण होता है। ग्रन्थ को विधि पूर्वक सुनने से फल मिलता है।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

* चवालीसवां अध्याय *

(व्यासजी का जन्म)

शौनक कहने लगे—हे सूतजी ! अब वेद व्यासजी की जन्म कथा सुनाइये। इनकी मातातो सत्यवती हैं। किन्तु उसके साथ तो राजा शांतनु ने विवाह किया था और व्यासजी तो महायोगी पराशरजी के पुत्र कहलाते हैं। इसका क्या अभिप्राय है। सूतजी बोले-मुनिये, श्रीपराशरजी ! तीर्थ यात्रा करते-करते एक दिन यमुना तट पर आ गये। वहां मल्लाह भोजन कर रहा था उससेयमुना पार पहुँचाने के लिए कहा। उस निषाद ने मत्स्यगन्धा पुत्रीसे कहा कि हे पुत्री! यह दृश्यन्तीके पुत्रतपस्वी पराशर ऋषि यमुना पार होना चाहते हैं। अब इन्हें नाव द्वारा तुमही पार पहुंचा दो। यह सुनकर उसने नाव में विठा लिया और पार ले जाने लगी। तब उस पर मोहित होकर पराशरजीने उसका दाँया हाथपकड़ा। मत्स्यगन्धा यह देखकर हंस पड़ी और बोली—ऋषिजी ! आप ऐसा निन्दित कर्म क्यों कर रहे हो। आप तो वसिष्ठजीके उत्तम कुलसे उत्पन्न हुए हो। फिर मैं निषाद कन्या आपके साथ मेरा संयोगकैसे हो ! इतना सुनकर पराशरजीने उसका हाथ छोड़ दिया। पार पहुंच गये। किंतु कामदेव ने उन्हें विवश कर दिया। तब उन्होंने उसे फिर पकड़ लिया। काँपती हुई मत्स्यगन्धाने कहा-हे ऋषिदेव ! मैं दुर्गन्धियुक्त काले रङ्गकी निषाद पुत्री हूँ और आप योगी श्रेष्ठहैं अतः कांच और सोनेका संयोग भला कैसे हो और यह भी शास्त्रों की आज्ञा है कि भोग रातको करें। आप यदि चाहते भी हैं तो रात होने दीजिये। यह सुनकर पराशरजीने अपने योग द्वारा दिन को ही रात्रि के समान अन्धकार कर दिया। तब उसके साथ भोग किया। तब लज्जित तथा आतिश्चत होकर वह बोली-हे योगिराज अब आप तो चले जायेंगे मेरा क्या होगा ! आपका वीर्य अमोघ है मुझे गर्भ रह गया तो फिर क्या होगा ! यहसुनकरऋषिबोले-हे बाले ! इस समय तो तू मेरे साथ संभोग कर अपनी कामना कह मैं पूर्ण करूंगा। मेरी आज्ञा पूर्ण करने के कारण तू सत्यवती कहलायेगी।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

तब वह बोली—मेरे इस कर्मको माता-पिता आदि कोई भी न जान सके मेरा कन्या धर्म भी न जाय और आपके समान पूर्ण तपस्वी शक्तिमान पुत्र भी प्राप्त हो। पराशरजी बोले-सुनो! तुम्हारी सभी कामनाएँ पूर्ण होंगी और तेरे गर्भसे विष्णुका अन्श तेजस्वी यशस्वी पुत्र होगा इतना कहकर पराशरजीने यमुना स्नान किया फिर चले गये सत्यवतीने समय आने पर सूर्य समान महा तेजस्वी पुत्र उत्पन्न किया, बालक ने उत्पन्न होते ही माता से कहा—हे माताजी! जब भी तुम्हें कोई काम आ पड़े तो मुझे याद करना मैं झट ही आपके पास पहुँच जाऊँगा इतना कहकर और प्रणाम करके व्यासजी तप करने चले गये। सत्यवती पुत्रस्नेह से कातर होकर पिताके पास पहुँची। इधर उस बालक ने भी तपस्या पूर्ण की। फिर वेदों की शाखाओं का विभाग किया। इसी कारण इनका नाम वेद व्यासजी प्रसिद्ध हुआ। उसके बाद व्यासजी तीर्थ यात्रो करने लगे। सभी तीर्थों की तथा पिंड दानादि करके शिव लिङ्ग के विषय विचार करने लगे कि कोई ऐसा सिद्धिदायक लिंग हो जिसकी आराधना द्वारा सब विद्याएँ प्राप्त करके मैं पुराण रचनाकी शक्तिपालूं। इस विचारमें वे ध्यान में लग गये। थोड़े समयके बाद उनका ध्यानखुला और बोले मुझे मालूम हो गया कि धर्म अर्थ काम मोक्ष देने वाले इस अतिमुक्त महाक्षेत्र में मध्येश्वर लिंग है। इनके समान काशी भर में और कोई लिंग नहीं। ये लिंग सभी कामनाएं पूर्ण करते हैं इसलिये मैं इसी लिंग की पूजा एवं साधना करूंगा। जिससे कि मैं पुराण निर्माता हो जाऊँ। इस प्रकार विचारकरके व्यासजी नेगङ्गास्नान किया फिर व्रत आरम्भ कर दिया। कभी पत्राहारी कभी फल शाकाहारी कभी जलाहारी तथा पवनाहारी फिर निराहारी होकर मध्येश्वर लिंग की पूजा की, एक दिन जब वे गङ्गा स्नान करके आये तो उसी ज्योतिर्लिङ्ग मध्येश्वर सदाशिव के दर्शन हो गये। अङ्ग में श्रीपार्वतीजी थी इस प्रकार जटाधारी गङ्गाजी को जटाओं में धारण किये मस्तक पर देदीप्यमान चन्द्रमाकी शोभा वाले पार्वती शङ्कर विराजमान हैं। तब इस प्रकार दर्शनपाकर व्यासजीप्रसन्न

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

होकर प्रणाम एवं स्तुति करके बोले-हे सदाशिव ! आप मन वाणी से अगोचर हो । वेद भी आपकी महिमा नहीं जान सकता । सारे जगतके कर्त्ता-धर्त्ता एव संहर्त्ता आप ही हो । हे सच्चिदानन्द ईश्वर ! आप जन्म, मरण, देश, कुल आदिसे रहित त्रिलोकी के स्वामी हो । तब इस प्रकार स्तुति सुनकर भगवान शङ्कर बालक रूपमें प्रकटहोकर बोले-हे व्यासजी ! तुम मन चाहा वर माँगो । तुम्हारे लिये तो कुछ भी अदेय नहीं तब व्यासजी ने कहा-हे स्वामिन ! आप तो सर्वज्ञ हो फिर क्या निवेदन करूँ यह सुनकर हँसते हुये सदाशिव बोले-हे ब्रह्मवेत्ता महर्षिजी ! आपकी मनो कामना शीघ्र एवं अवश्य पूर्ण होजायगी । मैं ही तुम्हारे कण्ठ में स्थित होकर इतिहास एवं पुराण आदि निर्मित करूंगा । तुम्हारे द्वारा पढ़े हुये इस स्तुति अष्टकको जो एक वर्ष तक तीनों काल मेरे सामने बैठकर स्तुति करेगा उसे इच्छित फल की प्राप्ति होगी । सूतजी बोले-इस प्रकार वेद व्यासजी ने वर पाकर अठारह पुराणादि शास्त्रोंकी रचना की । अब उनके नाम सुनिये-ब्रह्म, पद्म, विष्णु, शिव, भागवत, भविष्य, नारद, मार्कण्डेय, अग्नि, ब्रह्मवैवर्त, लिंग, वाराह, स्कन्द कूर्म मत्स्य गरुण वामन ब्रह्माण्ड । ये अठारह पुराण पुण्य तथा यश के देने वाले है । इनके पढ़ने सुनने से मुक्ति प्राप्त होती है सूतजी बोले-इस प्रकार पराशरजीका सत्यवती से सयोग हुआ फिर शान्तनु राजा को सत्यवती प्राप्त हुई इनमें किसी प्रकार की शङ्का मत करो । व्यासजीकी उत्पत्ति आश्चर्य मयी होते हुये भी इस कारण से हुई । विद्वान लोग बड़ोंके गुणग्राही बनें दोषग्राही नहीं । यह रहस्य मयी कथा भी पुण्यदायक है । इसके पढ़ने व सुनने से सभी प्रकार के पाप नष्ट हो जाते हैं ।

* पैतालीसवाँ अध्याय *

(मधुकैटभ वध महाकाली का वर्णन)

मुनि बोले-हे ऋषिजी ! अब आप जगत की माता उमाका चरित्र सुनाइये । सूतजी बोले-हे महात्मा पुरुषो ! अब मैं उमा चरित्र कहता हूँ तुम लोग धन्य हो जो उमा चरित्र को सुनना चाहते हो स्वारोचिषनाम

CC-0. JK Sri Amagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

के मन्वन्तर में एक राजा हुआ है। जिसका नाम विरथ था उसका सुरथ नाम का पुत्र हुआ जो कि वीर पुरुष था ! वह दानी सत्यवादी देवीभक्त था। इन्द्रकेसमान पराक्रमी तथा तेजस्वी होकर ही वह राज करनेलगा। किन्तु अन्य नौ राजाओं ने मिलकर उसपर आक्रमण कर दिया। उससे राज्य छीनकर राज्यसे निकालदिया। वह घोड़े पर सवार होकर शिकार के बहाने वन को चला गया। वन में जाकर उसने एक सुन्दर आश्रम देखा। जहाँ सभी जीव जन्तु शान्त होकर विचरण कर रहेथे। वहाँमुनि जनों से स्वागत पाकर राजा उसी आश्रम में निवास करने लग गया। एक दिन उसके मन में विचार हुआ कि मैं बड़ा मन्द भाग्य हूँ जिससे अपना राज्य खो बैठा हूँ। ठीक उसी समय वैश्य भी वहां आ पहुँचा। राजाने उसे दुःखीदेखकर दुःख का कारण तथा उसका नाम आदि पूछा। उस वैश्य ने राजा को प्रणाम किया फिर आंखों में पानी भरकर बोला। हे राजन् ! मैं एक धनाढ्य कुल से उत्पन्न हुआ समाधि नाम का वैश्यहूँ मुझे अपने ही पुत्र पौत्रादिकोंने धनके लोभमें पड़कर घरसे निकालदिया है। इसी कारण मैं इस वन में आ पहुँचाहूँ। अब तो मैं उन लोगों को अपना भी नहीं समझता और उनकी कुशलता भी नहीं चाहता। राजा बोला—किन्तु तेरा प्रेमतो मूर्खों की भाँति कुछ न कुछ उन पुत्र पौत्रादिकों में दिखाई देता है। यद्यपि उन दुराचारियों ने तुझे घर से भी निकाल दिया है वह वैश्य बोला-हे राजन ! आपका समझना सत्य है। इस प्रकार राजा और वैश्य परस्पर बात-चीत करते २ दोनों मेधा ऋषिकेपास पहुँच उन्हें प्रणाम करके अपना सभी वृन्तान्त कह सुनाया और प्रार्थना की कि आप ही हमारा मोह दूर करें। ऋषि बोले-हे राजन् ? सबके मन को आकर्षित करके मोहित करने वाली तो सनातनी माया शत्य रूपा देवी है। जो कि जगत की रचना पालन संहार किया करतीहैं। राजा यह सुनकर बोला-हे स्वामिन ! विश्व को मोहित करने वाली वह माया देवी कौन है कृपा करके इसका वर्णन करें। ऋषि बोले-हे राजन् ।सुनिये जिस समय प्रलय हुई तो योगिराज विष्णु शेष शय्या पर योग निद्रा में

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

सो गये। तब विष्णुके कानके मैल से दो दैत्यों की उत्पत्ति हुई मधु तथा कैटभ इस नाम से वे विख्यात हुये। उन्होंने विष्णु की नाभि कमल में ब्रह्माजी को देखा और उसे मारने के लिये तैयार हो गये और बोले-तू कौन है। ब्रह्माजी ने उस दैत्य को देखा फिर विष्णु तथा परमेश्वरी देवी की स्तुति करने लगे। बोले-हे महामाये! शरणागतों की रक्षा करने वाली देवी इन दैत्यों से मेरी रक्षा करो। आपको बार-बार प्रणाम हो। आप ही इन दोनों दुर्धर्ष दैत्यों को मोहित करें फिर नारायण को जगा कर मेरी रक्षा करें। मुनि बोले—ब्रह्माजी की इस प्रार्थना द्वारा ही महामाया फाल्गुन शुक्ल पक्षकी द्वादशी को प्रकट होकर महाकाली नामसे प्रसिद्ध हुई। और आकाश वाणी करके कहा कि हे ब्रह्माजी! तुम भय मत करो मैं युद्ध द्वारा इन दोनों का बध करके तुम्हारी रक्षा करूंगी। इस प्रकार कहकर विष्णुजी के मुख तथा नेत्रोंसे प्रकट होकर ब्रह्माजी को साक्षात उस देवी ने दर्शन दिये। तभी जनार्दन भगवान भी जग गये। उन दोनों दैत्यों को विष्णु ने भी देखा क्रोध में आकर हजार वर्ष पर्यन्त उन दोनोंसे बहु युद्ध करते रहे। उसके बाद महामाया के प्रभाव से मोहित हुए दोनों दैत्य विष्णु से बोले-हे विष्णो! तुम मन चाहा वर मांगलो। विष्णु बोले—यदि तुम वर देना चाहते हो तो यह वर दो कि तुम दोनों मुझसे मारे जाओ। यह सुनकर दैत्य बोले-जिस पृथ्वी पर जल दिखाई न दे उसी स्थान पर तुम हमको मार सकोगे, बहुत अच्छा यह कह कर भगवान ने चमकता सुदर्शन चक्र उठा लिया और उन्हें अपनी जंघाओं पर लिटाकर उनके सिर काट दिये।

* छयालीसवाँ अध्याय *

(महालक्ष्मी अवतार कथा)

ऋषि कहने लगे—दैत्यों के कुल में रम्भासुर नाम का एक श्रेष्ठ दैत्य हुआ था। महर्षि नामक महापराक्रमी उसका पुत्र हुआ। वह युद्ध में सभी देवताओं को जीत कर इन्द्रके सिंहासन पर बैठ कर स्वर्ग का राज्य करने लगा। तब दुःखी होकर देवता ब्रह्मा जी के साथ विष्णु भगवानतथा

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGangotri Ash

शङ्करजी के पास पहुँचे। देवताओं से सभी बृतान्त सुनकर विष्णु तथा शङ्करजी को क्रोध उत्पन्न हुआ। तब उन दोनों के मुखसे तथा देवताओं के शरीर से एक तेज उत्पन्न हुआ। वही तेज सबका मिलकर एक स्त्री का रूप धारण करके प्रकट होगया। तब उसेदेखकर प्रसन्न होते हुएदेवताओं ने अनेकों आयुध तथा आभूषण दिये। जिन्हें धारण करके उस देवीने महान अट्टहास करके गर्जनाकी। उस गर्जनाद्वारा पृथ्वी आकाश भर गये। तब देव-शत्रु दैत्यों ने उस शब्द को सुनकर अपने २ हथियार उठा लिये। महिषासुर भी सभी दैत्यों कों साथ लेकर संग्राम करने वहां आगया और महामाया को देखा। महामाया के प्रभाव से वहाँ आये हुए करोंड़ों दैत्योंके सभी शस्त्र बेकार होगये। तब उस मातेश्वरीने अपने शूल शक्ति तोमरादि शस्त्रों द्वारा अनेकों चिक्षु रात्रि दैत्यों का विनाश कर दिया तब दैत्यों के मर जानेपर महिषासुर भी देवी के श्वाससे उत्पन्नहुए देवताओं को मारने लगा। उनके मारे जाने पर वह दैत्य देवी वाहन सिंह की ओर भागा यह देखकर दैवी एक दम क्रोध में आगई तब वह पराक्रमी दैत्य अपने खुरों द्वारापृथ्वीको तथा साँगों द्वारा पर्वतो को उखाड़ २ कर फेंकने लगा। तब महामाया ने उसके मारनेका उपाय सोच कर दैत्यपर अपना पाश फेंका। उसके बाद वह दैत्यमहिषकारूप त्याग करके सिंह रूप होगया। जगदम्बा ने झट पट उसका सिर काट डाला किन्तु फिर भी वह हाथ में तलवार लेकर खड़ा होगया। तब देवीजीने तलवार के साथ उसका हाथ काट दिया। तब वह हाथी बनगया अपनी सूड़से सिंह को मारनें दोड़ा। देवीजी ने उसकी सूड़ काटदी। फिर वह राक्षस अपने रूप में आगया। इस प्रकार के युद्ध से सब त्रिलोकी काँप उठी। जीव दुःखी हो गये। देवीजी ने क्रोध में आकर उसदैत्य से कहा-अरे नीच दुष्ट बुद्धि! तू तो व्यर्थ में ही मेरे साथ हट कर रहा है त्रिलोकी भरमें कोई भी मेरे सामने नहीं टिक सकता। यह कहकर महामाया ने उछल कर उसे अपने पैरोंमें कुचल डाला। और उसकी ग्रीवामें अपना त्रिशूल बींध दिया। जिससे वह पृथ्वी पर सदा के लिये सोगया

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

हा-हा कार करते हुए उसके सभी गण इधर-उधर भाग गये। इन्द्रादिक देवताओं ने आकर देवी की स्तुति की गन्धर्व गाने लगे अप्सरायें नाचने लगीं।

* सैंतालीसवाँ अध्याय *

(धूम्रलोचन चण्ड मुण्ड बीज वध वर्णन)

ऋषि बोले-शुम्भ निशुम्भ नामके दो दैत्य परम पराक्रमी हुए। जिनके तेज से चराचर त्रिलोकी कांप उठी। दोनों से दुःखी होकरसभी देवता हिमाचल पर जगत् की जननी श्रीपार्वतीजी के पास पहुंच उन्हें प्रणाम स्तुति करके बोले-हेभवानी महेशानी! आपको प्रणाम हो हमारी रक्षा करें! तब देवताओं की स्तुति सुनकर गौरी बोली—तुम लोगकिस की स्तुति कर रहे हो। इतना कहने के बाद उस गौरी के देह से एक कुमारिका प्रकट होगई तब देवताओं के देखते २ गौरीजी से उसने कहा—हे मातेश्वरी! सभी स्वर्गवासी देवता मेरी ही स्तुति कर रहे हैं। तब उस कुमारी का नाम शरीर कोश से निकलने के कारण कौशिकी तथा प्रकट होने के कारण मातंगी प्रसिद्ध हुआ। फिर उसने देवताओंसे कहा-तुम डरो मत मैं अकेली ही तुम्हारा कार्य करूंगी। इतना कह कर देवी अन्तर्ध्यान होगई फिर शुम्भ निशुम्भ के दो सेवकों ने ज्योंहीं उसके रूप सौन्दर्य को देखा तो मोहित होगये। अपने राजा शुम्भ निशुम्भ के आगे उसके रूपकी प्रशंसा करते हुए बोले-एक बड़ी सुन्दर स्त्री हिमाचल के शिखर पर सिंह वाहनी होकर निवासकर रही है। देव कन्याएं तो आपके आगे सेविका रूप हैं त्रिलोकी में कोईभी उसके समान सुन्दर नहीं वह नारी रत्न है। हे राजन! आप तो रत्न भोक्ता हो वह नारी रत्न तो आपके महलों में होनी चाहिए। यह सुनकर उनअसुरोंने सुग्रीव दैत्य को बुलाकर उस सुन्दरी को ले आने के लिये तुषार पर्वत पर भेजा तब वह हिमाचल पर पहुँचकर मातेश्वरी जगदम्बा से बोला-हे देवीजी इन्द्रादिक देवताओं को वश में करके सभी रत्नों के भोक्ता शुम्भ निशुम्भ नामक सो दैत्य ने मुझे आपके पास भेजकर कहा है कि तुम स्त्री रत्न हो

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

हम दोनों में से किसी के साथ आकर विवाह करलो इतना सुनकर देवी जी ने कहा-हे दूत तुम सत्य कह रहे हो। शुंभ निशुम्भ दोनों पराक्रमी वीर हैं किन्तु मैंने एक प्रतिज्ञा कर रखी है। जो वीर मुझे युद्ध में जीत लेगा मैं उसके साथ विवाह करूंगी। यह सन्देश तुम उन्हें पहुंचा दो। तब आकर उस दैत्य ने शुंभ को सभी बृतान्त सुना दिया उसको क्रोध उत्पन्न हुआ अपने सेनापति धुम्राक्षसे बोला-तुम तुषार पर्वत निवासिनी नारी को लेआओ। यदि प्रेम से न आयेतो युद्ध करके किसी न किसी प्रकार जबरदस्ती से ले आओ यह सुनकर धूम्राक्ष हिमाचल पर पहुँच-कर मातेश्वरी से बोला-हे देवीजी! तुम प्रेम पूर्वक हमारे स्वामी के पास चली-चलो। नहीं तो मेरे पास इस समय साठ हजार दैत्य हैं। उनसे में तुमको पकड़वाकर ले चलूंगा। तब जगदम्बा बोली वीर मैं कैसे करूं अपनी प्रतिज्ञा तो तोड़ नहीं सकती हूँ युद्ध करके मुझे भले ही ले जाओ। तब धूम्राक्ष शस्त्र उठाकर मारने के लिये ज्योंही दौड़ा त्योंही देवीजी ने हुँकार शब्द द्वारा उसे भस्म कर दिया। उसके भस्म हो जाने पर देवीजी के वाहन सिंहने क्रोध में आकर उसकी सेना के राक्षसों को भक्षण कर लिया और कुछ भाग गये। जब उस शुंभने अपने सेनापति धूम्राक्ष का मारा जाना सुना तो उसे क्रोध हुआ तब चण्ड मुण्ड एवं रक्तबीज आदि दैत्यों को बुलाकर युद्ध के लिये भेज दिया। तब सिंह सवार उस जगदम्बा को देखकर वे दैत्य बोले-देवी! तू प्रेम पूर्वक शुम्भ निशुंभ में से किसी को अपना पति बनाकर शोभाको प्राप्तकरो। इतना सुनकर वह देवी बोली-जिनकी विष्णु आदि सभी देवता स्तुति करते हैं और जिनके तत्व का भेद भी नहीं जान सकते उस परब्रह्म परमात्माकी में सूक्ष्म प्रकृति हूँ। फिर भला किसी और को किस प्रकार पति बनाऊं हे दैत्य लोगों! यदि कुछ शक्ति है तो मुझे विजयी करके ले जाओ। तब दैत्य बोले-देवीजी! हम आपको एक अबला नारी समझकर मारना तो नहीं चाहते थे किन्तु तुम स्वयं ही मारना चाहतीहो इसलिये अब तैयार हो जाओ, यह कहकर बाणों की वर्षा कर लगे। तब युद्ध

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

में देवी ने चण्ड, मुण्ड, रक्त बीज आदि सभी दैत्यों का अपनी खड्ग द्वारा बध कर दिया देवी-शत्रु होते हुए भी उन दैत्यों ने देवी के भक्तों की गति प्राप्ति की।

* अड़तालीसवाँ अध्याय *

(सरस्वती का प्रवट होना)

राजाने कहा-स्वामिन ! चण्ड, मुण्ड आदि के मर जाने पर शम्भु निशुम्भ ने फिर क्या किया अब आप कृपा करके पाप विनाशिनी महा-माया का चरित्र सुनाते जाइये। ऋषि बोले-इस प्रकार चण्ड मुण्डादि दैत्यों का माराजाना सुनकर तब काल केय, मौर्य, दौह्रद बड़े-बड़े दैत्यों को युद्ध करनेके लिये भेज दिया और स्वयं भी रथ पर सवार होकर युद्धके लिये चल पड़ा। युद्धकेबाजे बज उठे। सभी योधा शस्त्र से सुसज्जित होकर युद्ध-भूमिमें पहुंच गये। तब जगदम्बाने शत्रुसेना को देखा अपने धनुष पर चिल्ला चढ़ाकर वाणोंकी वर्षा करने लगी। घण्टा बजादिया जगदम्बका बाहन सिंह भी गर्जने लगया। उस समय हिमाचल वासिनी देबीको देखकर निशुंभ बोला माजतीके पल्लव के समान देह धारणी विलासवती ! तुम्हारा कोमल शरीर देखकर हमें दुख होता है। तूकिस प्रकार कोमल शरीरसे युद्ध कर सकोगी। तब चण्डिकाने कहा-अरे नीच अब बातें बहुत न कर या तो युद्ध कर या पाताल में प्रवेश कर। यह सुनकर निशुंभ क्रोधमें आकर वाण वर्षा करने लगा। इधर चण्डिकाजी ने भी अपने वाण परशु त्रिशूल आदिसे उत्तर दिया। उस युद्ध के काल देवीने असंख्यों घोड़े काट डाले। वाहन सिंहने तो असंख्य दैत्योंके प्राण हर लिये रुधिरका नदी वह चली इस बिकराल युद्ध को देखकर निशुंभ विचारमें पड़ गया। उसने सोचा कि बड़े आश्चर्य की बात हैकि मैं एक नारीसे पराजित हो जाऊंगा। इस कराल कालकी बलिहारीहैजो दरिद्रों को धनी एवं धनियोंको दरिद्रबनादेताहै। इस नारीने तो मूली गाजर का भांति मेरी सारी सेना काट डाली। अस्तु देखा जायगा। तब सुन्दर

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

रथमें सवार होकर स्वयं देवीके सम्मुख जाकर बोले देबि ! यदि युद्ध करना हो तो मेरे साथ युद्ध कर, इन बिचारे सिपाहियों के मारनेसे क्या प्रयोजन। इतना कहकर निशुम्भ बाण बरसाने लगा। देवीजी ने सभी शस्त्र बाणों द्वारा काटदिये। तब दैत्यने ढालतलवार उठाली और देवी की ओर लपका, उसी समय चण्डिका ने उसको काट डाला। फिर विष बुझे शत्रुओंका रुधिर चाटने वाले बाण छोड़े जिससे शीघ्रही निशुम्भ मरकर पृथ्वी पर गिर गया। दैत्यराज शुंभ ने अपने छोटे भाई निशुम्भ को मरता देख लिया तब स्वयं रथपर सवारहोकर युद्धके लिये आगया। उसको आया देखकर चंडिका ने भयानक अट्टहास किया। जिससे दैत्य-गण घबड़ा गये। उस समय शुम्भ ने प्रज्वलित शक्ति चण्डिका के ऊपर फेंकी। महामाया ने अपने बाणों से उसके हजारों टुकड़े कर डाले और क्रोधमें आकर त्रिशूल उस दैत्यकीछातीमें घुसेड़ दिया, जिससे छातीफट गई। ऐसा होने पर भी हाथमें चक्र लेकर वह दैत्यदेवी को मारनेदोड़ा। चण्डिकाने त्रिशूलसे वह चक्र काट कर उसका सिर भी काट डाला इस प्रकार मृयु पाकर उस दैत्यने परमगति प्राप्त की। उन दोनों दैत्यों केमर जाने पर बाकी बचे खुचे दैत्य पाताल में प्रवेश कर गये देवताओं को प्रसन्नता हुई।

* उनन्चासवां अध्याय *

(उमा की उत्पत्ति)

ऋषियोंने कहा-हेसूतजी ! अब कृपा करके उमाके अवतार का वर्णन करें जिसले सरस्वती का प्रादुर्भाव हुआ। सूतजी बोले—ऋषिगण सुनिये, एक बार देवता दैत्यों का भयानक युद्ध हुआ। तब मातेश्वरी के प्रतापसे देवता विजयी हुए। इस कारण देवताओंको गर्व हुआअपनी अपनी प्रशंसा करने लगे। तब उन्ही से एक कूप रूप तेज प्रकट हुआ। देवताओंने ज्योंही उस तेजको देखा तो बहुतही घबड़ा गये इन्द्रसेजाकर बोले-वह क्या है ? तब इन्द्रने उसकी परीक्षा लेने के लिये कहा—प्रथम वायु वहां पहुँचा। उस तेजने बायुसे पूछा तू कौन है ! वायु बोला मैं

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

सारे जगत का प्राण हूँ। मेरे द्वारा जगत चल रहा है। सुनते हीतेजने कहा, अच्छा तो अपनी शक्ति से जरा इस तिनके कोतो चलाकर दिखा दो। तब वायु ने अपनी सारी शक्ति लगादी किन्तु तिनका तिलभर भी न हिल सका। वायु लज्जित होकर इन्द्रकेपास पहुंचा,अपनी पराजयका सम्पूर्ण वृतान्त सुनाया यह सुनकर इन्द्रने अन्य देवताओं को भी उसकी परीक्षा के लिये भेजा किन्तु वे सभी पराजित हो गये। इन्द्र स्वयं वहां पहुंचा। इन्द्रको वहाँ आया जानकर तेज उसी समय अन्तर्धान होगया इन्द्रइससे अत्यन्त विस्मितहुआ। तब उस हजारनेत्रों वाले इन्द्रने विचार किया कि जो इस प्रकार की शक्ति रखता है, मैं उसकी शरण में क्यों न जाऊं ? यह सोचकर मन द्वारा इन्द्र शरण को प्राप्त हुआ। वह चैत्र मास के शुक्लपक्ष की नवमी का तथा मध्यान्ह का समय था ठीक उसी समय हेतुके बिना कृपा करने वाली सबका अभिमान मिटाने वाली देवी प्रकट हो गई। इन्द्रसे बोली, हे सुरराज इन्द्र ! ब्रह्मा, विष्णु शिव आदि भी मेरे सामने गर्वनहीं कर सकते, तो फिर अन्य देवताओंकी तो सामर्थ्यही क्या है। मैं परब्रह्म प्रणव स्वरूप देवी हूँ मेरी कृपा से तुमलोगों ने दैत्यों पर विजय पाई है। हे देवतागण ! तुम अपना अभिमान त्याग करके नम्रताके साथ मेरा भजन करो। इतना सुनकर देवताओंने प्रणाम तथा स्तुति करके कहा-हे महामाये ! अब तो आप क्षमा करें। आगे इस प्रकार का वरदान दें जिससे हमें फिर अभिमान न हो। सूतजी बोले-तभी से देवताओं ने अभिमान त्यागकर उमा देवी की आराधना आरम्भ कर दी।

* पचासवाँ अध्याय *

(शताक्षीआदि अवतार वर्णन)

मुनि बोले-हे सूतजी ! उमादेवी के अद्भुत चरित्र और सुनाइये। सूतजी बोले-हे मुनिगण ! एक महापराक्रमी रुद्र हुए,उनका पुत्र दुर्गम हुआ। ब्रह्माजीसे वरदानोंमेंउसनेचारोंवेदों की प्राप्ति की और यह भी वर पाया, जिससे उसे देवता भी न जीत सकें। तब वह पृथ्वी पर अनेकों

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

उपद्रव करने लगा ! इस कारण देवता भी स्वर्ग में भय करने लगे। वेदों के न रहने पर सब क्रिया जाती रहीं। ब्राह्मणों ने आचार धर्म त्यागदिये इस प्रकार प्रजा दुखी होगई। प्रजाके इस संकटको देखकर देवता महादेव की शरण में पहुँचे और बोले-हे महादुर्गे ! जिस प्रकार आपने शुम्भ निशुम्भका बध करके हमारी रक्षा की अब भी इस दुष्टका बध करकेहमारी रक्षा करो। इस प्रकार देवताओं के वचनसुनकर तथा प्रजाको दुःखीदेख कर देवी ने अपने नेत्रोंको दयाके जलसे धो दिया तब नौ दिन एवं नौ रातों तक नेत्रोंद्वारा उस जलकी हजारों धारायें बहने लगीं। उनसे संपूर्ण वृक्ष औषधि आदि हरे-भरे हो गये। नदियां,तालाव, समुद्र आदि सभी पूर्ण हो गये, इसीसे सभी देवता ब्राह्मण आदि सन्तुष्ट होगये। उसकेबाद देवी ने कहा,हे देवताओ ! अब और तुम्हारा कौनसा कार्य करूं ? तब सभी देवताओंने प्रार्थना की कि, हे भगवति ? दुर्गम द्वारा चुराये गये वेद हमें मिल जायें, अब यही कृपा करे। तब देवी ने प्रसन्न होकर तथास्तु कहा,फिर बोली, अब तुम अपने धामको चले जाओ वेद तुमको मिल जायेंगे, इसके बाद देवताओंनेदेवी को प्रणाम किया फिर अपने-अपने धामको सिधारे। ठीक उसी समय गुरुपुत्र दुर्गमने नगरी पर चारों ओर से आक्रमण कर दिया,इधर महाकाली भी चक्र लिए आ पहुँची दोनों ओरसे घोर युद्ध छिड़ गया, पैने वाण छूटने लगे। तबतो देवी के शरीर से और दस देवियाँ प्रकट हो गई जिनके नाम यह हैं-काली, तारा, छिन्न मस्तका,श्रीविद्या, भुवनेश्वरी, रौरवी, बगुला,धूम्रा, त्रिपुरा, मातङ्गी इन सभी देवियों ने मिलकर दैत्य की सौ अक्षौहिणी सेनाका विनाशकर दिया फिर त्रिशूल से उस दुर्गम दैत्यका भी बध कर दिया। इस प्रकार उसका बध करके उससे वेद देवीने प्राप्त किये। वह वेद देवताओंकोजाकर दे दिये तब देवता बोले-हे मातेश्वरी ? आपने हमारी रक्षाके लिये अनन्ताक्षिभय रूप धारे। इसी कारण आपका नाम शताक्षी होगा और अपने शरीरसे उत्पन्न किए गये शोक द्वारा लोकपालन किया इसीकारण शाकम्भरी भी कहलाओगी। दुर्गम दैत्य के बध के कारण आपका नाम

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

दुर्गा होगा। हे योगनिद्रे ! महाबले ! हे ज्ञानप्रदे ! हे विश्वजननि ! आपको हमारी नमस्कारहो। समय-समय पर आपही हमारी रक्षा किया करें तब दुर्गा बोली-तुम लोग चिन्ता मत करो जैसे कि मैं अब तक असुरों का विनाश करती आरही हूँ उसके आगे भी करके आप लोगों की रक्षा करती रहूँगी इसे सत्य समझो। जब-जबभी असुर लोग आकर उपद्रब करेंगे तभी-तभी मेरा अवतार होगा। मैं ही तुम्हारी रक्षा करूंगी। सूतजी बोले-लोक प्रसिद्ध शताक्षी शाकम्भरी दुर्गा ये एक ही दुर्गा के नाम हैं।

* इक्यावनवाँ अध्याय *

(क्रियायोग का वर्णन)

मुनि कहने लगे-हे सूतजी ! एक बार श्री व्यासजीने सनत्कुमार जी से श्रीपार्वतीजीके क्रियायोग के विषय में पूछा वही क्रिया योग अब हमको भी आप सुनावें। तब सूतजी बोले-हे मुनिगण ! सुनिये श्रीव्यास जी बोले-हे सनत्कुमारजी ! आप उस महादिव्य क्रिया योग का वर्णन करें। उस क्रियायोग से क्या फल मिलताहै और उसका क्या लक्षणहै। सनत्कुमारजी बोले-हे व्यासजी सुनिये। जगजननी के ज्ञान योग, क्रिया योग एवम् भक्तियोग ये तीनों योग भुक्तिमुक्तिदाता हैं। ज्ञानयोग, चित्त का आत्मा के साथ संयोग होना क्रिया योग,इस योग के साथ बाह्य अर्थ के संयोग का नाम क्रियायोग है। भक्तियोग—श्रीदेवीजी तथा आत्मा की एक भावना को भक्तियोग कहते हैं जब इन तीनों योगो का संयोग होता है, उसे क्रियायोग कहते हैं कर्म द्वारा भक्ति पैदा होतीहै। भक्ति से ज्ञान एवं ज्ञान से मुक्ति होती है। हे मुनिवर ! योग ही मुक्ति का मुख्य हेतु हैं। क्रियायोग ही योग का मुख्य साधन है। हे मुनिजी ! पत्थर लकड़ियाँ एवं मृत्तिका आदि से जो श्री मातेश्वरी का मन्दिर बनवाता है उसे जिस फल की प्राप्ति है, उसको श्रवण करो। हर रोज योग द्वारा यज्ञ करने वालेका फल मन्दिर बनवाने से मिलताहै। मातेश्वरी के मन्दिर बनवाने से हजार कुल का उद्धार हो जाता है। मातेश्वरीका

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

मन्दिर बनवाने से जन्म में मान प्रतिष्ठा एवम् वैभव की प्राप्ति होती है। उस मन्दिर की जितने वर्षों तक ईटें टिकी रहती हैं। उतने दिव्य तक वह द्वीप में सुख भोगता रहता है। जिस भक्त ने श्री पार्वतीजी की मूर्ति बनवाई हो वह दुर्गाजी के लोकोंमें निश्चयही जाताहै। त्रिलोकों की स्थापना के पुण्य से भी कोटिगुना पुण्य देवीजी के मन्दिर बनवानेसे प्राप्त होता है। जो पुरुष श्रीदेवीजी की मनोहर मूर्ति के मध्य में स्थापना करके उसके चारों ओर पन्चाहना देवों की स्थापना करताहै उसका पुण्य तो असंख्य है। सूर्य, चन्द्रमा के ग्रहण लगने पर विष्णुसहस्रनामके पाठ से जितना फल मिलता है उससे सौ गुना शिवनामके जप करने से मिलता है। श्रीदेवीजी के नाम जपन से तो उनसे भी सौ गुना अधिक फल मिला है। जो पुरुष चलते सोते बैठते उमा इन दो अक्षरों की रट में रहते हैं वे श्रीदुर्गाजी के गण हो जाते हैं। जो मनुष्य नित्य नैमित्तिक कार्यों में धूप, दीप नैवेद्य आदि से श्रीदुर्गाजी का पूजन करते हैं, एवं देवी के मन्दिर को मिट्टी अथवा गोबर से लीपते हैं अथवा मन्दिर में झाड़ू लगाते हैं इस प्रकारके मनुष्य निश्चयही उमालोक प्राप्त करते हैं। जो नित्य नियम से पूजते हैं वे परम पद पाते हैं। कृष्ण पक्षकी अष्टमी, नवमी तिथियोंमें विशेषतया श्रीसूक्त देवीसूक्तअथवा मूलमन्त्रों द्वारा पूजन करना परम आवश्यक है तुलसी को न लेकर अन्य सभी पुष्प देवी पर चढ़ाये जाते हैं। कमल पुष्प तो विशेष प्रिय है। एवं सोना चाँदी, पुष्प आदि कुछ भी देवी को भेंट करता है वह परम गति पाता है पूजन के पश्चात क्षमा की याचना भी आवश्यक है। देवीजी का ध्यान करके नैवेद्य चढ़ावे उसमें अनेकों फल भी हों देवी का प्रसाद खाने वाला अपने पाप रूप कीचड़ को धोकर निर्मल हो जाता है। जोमनुष्य चैत्र शुक्ला तृतीया के दिन मातेश्वरी का व्रत करता है वह कर्म वन्धनों से मुक्त होकर मुक्ति पाता है। प्रति वर्ष इस दिन देवी का महा उत्सव करना आवश्यक है। इस प्रकार उत्सव करने वाले पुरुषको देवीजी सभी प्रकार के फल देती हैं। वैशाख शुक्ल अक्षय तृतीया के दिन यथाशक्ति

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

देवी का रथोत्सव भी करना चाहिये। रथ तो पृथ्वी को समझे तथासूर्य, चन्द्रमा को दो चक्र समझे। वेदों को घोड़े एवं ब्रह्माजी को सारथिजाने। इस प्रकार अनेकों मणि मालाओं से सुसज्जित कर उसमें पुष्प मालायें भी चढ़ाकर उस रथ में देवीजीकी मूर्ति स्थापित करे। धीरे-धीरे रथचलावे एवं धीरे-धीरे देवीजी के नाम उचारे और बोले-हे भक्त दुःख हारिणी देवि ? हमारा पालन करो। इस प्रकार के वाक्यों द्वारा देवी को प्रसन्न करे। इस प्रकार नगर की सीमा तक रथ ले जावे। उसके बाद सौ बार प्रणाम करे। फिर प्रार्थना करे। इस प्रकार उत्सव मनाने वाला मनुष्य इसलोक में सुख भोगकर अंतमें देवीजी के धाम को प्राप्त करता है।

आसोज के शुक्ल पक्ष में नवरात्रि तक व्रत का विधान है। उसके द्वारा सभी मनोरथ सिद्ध होते हैं। हे मुनिवर ! इसी व्रत को विरध के पुत्र सुरथनामी राजा ने किया था। उसका हरण किया हुआ राज्य फिर प्राप्त हो गया। समाधि वैश्य ने भी व्रत एवं पूजन करके संसार बन्धनों में मुक्त होकरमुक्ति पाई। जो भी तृतीया,पंचमी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी आदि तिथियों में विधि पूर्वक देवी पूजन तथा नवरात्रि व्रत धारण करता है उसके सभी मनोरथ स्वयं पूर्ण करदेती है और जो भी कार्तिक, मार्गशीर्ष,पौष, माघ, फागुन महीनों में शुक्ला, तृतीया तिथि में देवी व्रत करता है, धूप दीप नैवेद्यआदि से जो देवीजी को पूजता है तो मङ्गलादेवी उसका मङ्गलाकरती है। नारियों को तो अपने सौभाग्य की रक्षा के लिये इस व्रत को करना चाहिए और पुरुष भी विद्या, धन पुत्र आदि प्राप्ति के लिए अवश्य करें।

अब उमा संहिता समाप्त हो रहीहै, यह संहिता परम पवित्र एवं शिव भक्ति देने वाली है इसमें अनेकों पवित्र कथाएं हैं भुक्ति तथा मुक्ति देने वाली इस संहिता को सावधानी से सुनने,पढ़ने वाला पुरुष परमधाम को प्राप्त करता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* ॐ नम, शिवाय *

* श्रीशिव महापुराण भाषा *

* अथ कैलाश-संहिता आरम्भ *

* पहला अध्याय *

(श्री व्यासजी से शौनकादि की वार्ता)

मङ्गलमय आदि माया शक्ति सहित पार्षद गणेश और स्कन्द सहित प्रधान पुरुष शिवजी को नमस्कार है। ऋषियोंने कहा—अब तक हम लोगों ने अनेक आख्यानों युक्त 'उमा-संहिता' सुना। अब आप हमें शिवतत्व को बढाने वाली 'कैलाश संहिता' सुनाइये। व्यासजीबोले-पुत्र ! अब तुम प्रेम सहित उस कैलाशसंहिता को सुनो जो कि परम दिव्य शिव तत्व को बढ़ाने वाली है। समय की बात है, जब हिमालय पर्वत पर स्थिति तपस्वी मुनियोंने काशीपुरी चलनेकी इच्छा की। तब काशी में पहुंचकर उन लोगों ने मणिकर्णिकामें जाकर गङ्गाजी में स्नान किया और विश्वेश्वर का दर्शन करने गये। वहाँ पहुँचकर उन मुनियोंने शिवजी को नमस्कार किया और शतरुद्रीय मंत्रीसेशिवजी की स्तुति कर वहाँ ध्यानसे स्थिति की। फिर पंचक्रोशीदेखने की इच्छा से जो वहाँ सूतजी आये तो उन्हें देखकर सब ऋषियों ने उनका यथोचित अभिवादन किया और सूतजी ने उनकी कुशल पूछी। मुनियों ने अपना कुशल समाचार कहा। तब प्रणय का अर्थ जानने वाले उन मुनियों ने कहा कि-हे महाभाग ! हे व्यासजीके शिष्य परम पौराणिक सूतजी!आप धन्यहैं कि जो आपमें इतनी प्रगाढ़ शिव-भक्ति विद्यमान है तथा आप विज्ञान-सागर हैं। तभी तो भगवान वेदव्यासजी ने आपको पुराणोंमें अभिसिक्त कर पुराणज्ञाता गुरु कर दिया है। आपके हृदयमें पुराणों का कथा सर्वथा स्थित है और जिन पुराणों में वेदोंके अर्थ भरे हुएहैं तथा

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

वेद ओंकार से और ओंकार का रूप शिवसेहै और जिसके आप प्रतिष्ठा करने वालेहैं। अब हम लोग आपके मुखकमलसे निकली हुई कथारूपी मनोहर उस मकरंद रूपी अपूर्व अमृतका पान करनाचाहतेहैं कि जिससे ज्वर रहित हो जावें। आपसे बढ़ कर हमारा कोई गुरु नहींहै। अतएव आप कृपाकर हमें महेश्वर का परमज्ञान सुनाइये। तब ऋषियों के ऐसे बचनोंको सुनकर व्यासजीके प्रिय सूतजी कहने लगे-हे मुनीश्वरो! आप बड़े ही भाग्यशाली और धन्य हैं कि जो कथाओं के सुनने में आपकी इतनी दृढ़ मति है। अतएव हमारे गुरुव्यासजी ने नैमिषारण्य के वासी मुनियों को जो उपदेश दिया था वही मैं आपसे कहता हूँ जिसको सुन कर मनुष्य की शिवजी में भक्ति होती है। उसी को आप प्रसन्नता से सुनिए। जब स्वारोचिष मनु थे तब उसके अन्तमेंदृढ़व्रती तपस्वी ऋषियों के नैमिषारण्य में सब सिद्धियो का देने वाला यज्ञपति का सहस्र वार्षिक एक ऐसा यज्ञ किया कि जिससे समस्त ऐश्वर्यों की जानकारी हो जावे। तब इस परमेच्छा से उन्होंने मन ही मन व्यासजी को प्रणाम कर शिव भक्ति परायण हो सर्वदा भस्म और रुद्राक्ष को धारण किया! तब उन्हें ऐसा करते देख व्यासजी वहाँ आ उपस्थित हुये,जिन्हें सुवर्ण का आसन देकर मुनियों ने बैठाया और सम्पूर्ण उपचारों से उनकी पूजा की। जब व्यासजी सुख पूर्वक बैठ गए, तब उन्होंने उन मुनियों से पूछा कि, हे मुनीश्वरो! कहो, तुम्हारे इस यज्ञमें सब प्रकार कुशल तो है न! आपने सम्यक् प्रकारेण यज्ञपति का पूजन तो किया है, फिर यह कहिये कि आपने किस लिए यह यज्ञ किया है! तब नैमिषारण्य वासी उन मुनियों ने महातेजस्वी पराशर पुत्र, शिव के परम प्रेमी व्यासजी को प्रणाम कर बोले कि, हे भगवन्! हे मुनिशार्दूल! हे नारायण के अंश से उत्पन्न, कृपासागर! हे महाप्राज्ञ! आज आपके चरणोंका दर्शन कर हम कृतकृत्य होगए हैं। हे महाभाग! इस महाक्षेत्र नैमिषारण्यमें जा हमने इस महान् यज्ञ का अनुष्ठान किया है उसका एक मात्र कारण यही है कि 'ओंकार' का अर्थ प्रकाश होवे। हम परमेश्वर के उस परम भावको सुनना चाहते

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

हैं कि जो महेश्वर का परमरूप है। हे प्रभो! हम इस सम्बन्ध में कुछ नहीं जानते। एक मात्र आपकी शरणागत है। आप हम अल्पबुद्धियों का सन्देह दूर करने योग्य हैं। आप हमें शिव-ज्ञान रूपी नौका से तार दीजिये। हमारी एक मात्र श्रद्धा शिव-तत्व जानने की है। जब इसप्रकार ऋषियों ने उन वेद के जानने वाले व्यासजी से प्रार्थना की तो सम्पूर्ण वेदार्थ के ज्ञाता महामुनि व्यासजी ने ओंकार रूप परमेश्वर शिव का पार्वती सहित मनमें ध्यान करते हुए प्रसन्न हो उन मुनियों से इस प्रकार कहा—

* दूसरा अध्याय *

(पार्वतीजी का महादेवजी से प्रणव प्रश्न)

व्यासजी बोले हे विप्रों! यह तो आपने बड़ा ही उत्तम प्रश्न किया है जिससे प्रणव का अर्थ प्रकाशित करने वाला शिव का दुर्लभ ज्ञान निहित हैं। शिव का वास्तविक ज्ञान ही प्रणाव अर्थ का प्रकाश करने वाला है और यह उसी को प्राप्त होता है जिस पर शूलपाणि शङ्करजी प्रसन्न होते हैं। शिव-भक्ति विहीनों को इसकी प्राप्ति नहीं होती और यह दीर्घ ज्ञान अम्बिका पति भगवानके ही उपासकों को प्राप्त होता है। इस पर मैं आप लोगोंसे एक प्राचीन इतिहास कहता हूँ जो उमा महेश संवाद से युक्त है जब पूर्व काल में दाक्षायणी सतीने अपने पिता दक्ष के यज्ञ में जाकर शिव निन्दा सुन अपना शरीर त्याग दिया था तो फिरतपकर उन्होंने ही हिमालय के घर जन्म लिया और नारद के उपदेश से फिर शिवके निमित्त उन्होंने तप किया तथा हिमालय ने स्वयम्वर की विधिसे उन पार्वतीको शङ्करजीके साथ विवाह कर दिया जिसमें देवी देवनेमहान सुख की प्राप्ति की। एक समय महा शिखर पर बैठी हुई पार्वतीजी ने अपने पति शङ्कर से कहा कि, हे देव! हे परमेश! हे पञ्चकृत विधायक सर्वज्ञ भक्ति सुलभ! परमामृत विग्रह! मैं आपकी वही स्त्री हूं जो आपकी निन्दासे शरीर त्यागकर अब हिमालयकी पुत्री हुई हूँ। अतः एव अब आप मुझे मन्त्र दीक्षा के विधान से विशुद्ध तत्व की प्राप्ति-

CC-0. ASI Srinagar Circle. Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

करा देवें। तब देवी पार्वती की इस बातको सुनकर शशिभूषण शङ्करजी ने पार्वती से कहा—हे देवि! यदि तुम्हारी ऐसी ही इच्छा है तो चलो कैलाश शिखर पर मैं तुम्हें विशुद्ध तत्व में स्थित करूंगा। तब शिवजी हिमालय से उठ कैलाश को गये। वहाँ उन्होंने देवी पार्वती को प्रणव मन्त्र से दीक्षित कर उन्हें शुद्धात्मा में स्थित किया और पुनः महादेवजी वहाँ से उठ कर देवोद्यान में गये जहां सुमालिनी आदि देव सखियों ने कल्पवृक्षके नवीन खिले हुये फूल लाकर देवी पार्वतीको अलंकृत किया। शिवजी उनका सुन्दर मुख देखकर बहुत प्रसन्न हुये। तब श्रुति के अर्थों से युक्त पार्वतीजी उन परमेश्वरसे लोक हितकारिणी कथा पूछती हुई इस प्रकार बोली कि हे देव! आपने यह ॐकार रहित उपदेश क्यों किया। कृपाकर इसे मुझे प्रणव सहित बतलाइये। प्रणव कैसे प्रगट हुआ! इसकी कितनी मात्रा है और वेदके आदिमें यह कैसे कहा जाता है। इसके कितने देवता हैं, वेदादि की भावना किस प्रकार की जाती है और उसमें कितने प्रकार की क्रिया हैं तथा इसकी क्या व्यापकता हैं। इसकी कितनी कलाये हैं और इसमें पंचात्मकता क्या है। इसके वाच्य वाचक का सम्बन्ध और स्थापन किस प्रकार का है और इसका क्या विषयहै। इसका सम्बन्ध क्या है, प्रयोजन क्याहै और इसका उपासक उपासना का स्थान, उपास्य वस्तु, उपासना का फल, अनुष्ठान विधि, पूजा का स्थान मंडल, उनके ऋषि और व्यास की विधि का क्या क्रम है! हे शिवजी! यदि आपकी मुझ पर कृपा है तो मुझे यह सब बतलाइये। मुझे इतना तत्व जानने की बड़ी इच्छा है। देवीके इस प्रकार पूछने पर शिवजी पार्वतीजी की प्रशंसा करते हुये बोले।

* तीसरा अध्याय *

(प्रणव पद्धति)

शिवजी बोले—हे देवि! जो कुछ तुमने मुझसे पूछा है वह मैं तुमसे कहता हूँ, ध्यान देकर सुनो। इसके श्रवण मात्र से जीव शिव के समान

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

हो जाता है। जो प्रणव का अर्थ जान लेता है जानो वह मेरे ज्ञान का जान गया। प्रणवात्मक मंत्र सब मंत्रोंका बीजहै और वही बीज वृक्ष के समान सूक्ष्मसे भी सूक्ष्म और बहुत स्थूल,वेदका आदि,वेदका सार और मेरा स्वरूप। वह तीनों गुणों से परे, सर्वज्ञ और सबका कर्त्ता है। प्रणव अर्थात् ॐ यह एक अक्षर का मन्त्र ऐसा है जिसमें सर्वगत शिवजी सर्वथा ही विद्यमान हैं और जगत की यह समस्त वस्तुयें गुण मयी हैं जो उद्यान के संयोग से सब कुछ विराटरूप स्थावर जङ्गमात्मक दिखाई पड़ती हैं। इस प्रकार यह सब कुछ प्रणव का अर्थ ही है। यह एक ही अक्षर ब्रह्म और सब अर्थों का साधक है। इसी ॐ ऐसे अकार युक्त प्रणव से शिवजी ही सर्व प्रथम जगत के निर्माण कर्त्ता हैं। शिवही प्राणरूप और प्रणव ही शिव रूप है। इस वाच्यवाचक में कुछभेद नहीं है। इस प्रकार में ही ब्रह्म ऋषि और एकाक्षर रूपहूँ। मुझवाच्य वाचक की इस एकताको विद्वानही जानते हैं। प्रणवही सबका कर्ताहै। मुमुक्ष ही इस निर्विकार परमेश्वर प्रणव को जानेंगे। यही सब मन्त्रों का शिव मणि है और इस ओंकारको ही मैं काशीमें प्राण त्यागनेवालों को देता हूं। हे अम्बके! पहले मैं इसी प्रणवोद्धार का वर्णन करता हूं जिसकी जानकारी होने मात्रसे परम सिद्धि प्राप्त होतीहै। इस ओंकार की प्राप्ति के लिए सबसे पहले कलाका उद्धार करे। पहले आकार के आश्रित निवृत्त कलाका उद्धार करे। फिर उकारमें ईधन कलाका-मकार में काल-कलाका, नाद में दण्ड और विन्दुमें ईश्वर कलाका उद्धार करे। इसप्रकार पंचवर्ण रूप प्रणवका उद्धार होता है यह तीन मात्रा और विन्दु नादात्मक का जाप तो महा मुक्ति दायक है। ब्रह्मासे लेकर सब प्राणियों तक यह प्रणव ही सबका प्राण है और उकार मकारके क्रमसे इसकीयह तीन मात्राये हैं और फिर यही ॐ होजाता है। यही ॐ वेदों के आदि में कहा जाता है और वह ओंकारात्मक भी मैं ही हूँ इसी महान बीज के आकार के रजोगुण से ब्रह्मा और उकारजो उसकी प्रकृति योनि है उससे सत्यगुणके पालन करने वाले हरि और मकार पुरुष बीज तमोगुण से

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

संहारकर्त्ता शिव उत्पन्न होते हैं तथा जब इन साक्षात् महेश्वर देवका तिरोभाव होता है जो विन्दु रूप हैं और सब पर कृपा करनेकेलिए वहीनाद रूप भी हैं। जब ध्यान में बैठे तब इन्हीं नाद रूप शिव को मस्तक में विचारकर वहाँ ध्यान करे। क्योंकि यह पर से परे और मङ्गलरूप है। यही सर्वज्ञ, सत्य के कर्त्ता, सर्वेश, निर्मल अविनाशी, अद्वैत और परब्रह्म हैं। वही आकार की अपेक्षा से व्यापक और आकार की अपेक्षा से ओंकार रूप में सबमें व्यापक और उकार के नीचेके भाग में व्याप्त हैं। इस प्रकार की भावना करे। इसीप्रकार इन अकारादिक पाँच वर्णों में ब्रह्म के स्वरूप को देखे। सद्य, वामदेव, घोर, पुरुष, एशान। यह क्रम से मेरी ही मूर्ति हैं।

* चौथा अध्याय *

(सन्यास का आचार)

शिवजी ने कहा—हे महादेवि! अब मैं तुम्हारे अनुरोध से सन्यास और आह्णिक कर्म कहता हूँ जो सम्प्रदायका अनुरोध है। यतीकोउचित है कि वह ब्राह्म मुहूर्त में उठकर अपने उस गुरु का ध्यान का सहस्र दल वाले श्वेत कमलमें बैठे हुये हैं। उस प्रकार के मनोहर भावोंसे युक्त हो उनकी पूजा कर नमस्कार करे। और यह कहे कि मैं प्रातः से सायंकाल तक जो कुछ करूँगा उसमें आपही की प्रेरणा होगी। मुझे आपही का बल है। हे जगन्नाथ! यहाँ आपकी पूजा है। गुरू से ऐसा कह उनकी आज्ञा लेकर जितेन्द्रिय हो आसन पर बैठ प्राणायाम करे। और मूलसे लेकर ब्रह्माध्र तक के छःहों चक्रों का ध्यान करे जिसमें करोड़ों बिजलीके समान सारा तेज समाया हुआ है। फिर उसके मध्यमें वहमुझ सच्चिदानन्द निर्गुण ब्रह्म और अनामय रुद्र शिव का चिंतन करे। फिर उठकर जहां तक इच्छा हो टहलने के लिये बाहर दूर तक चला जावे। फिर अपने नित्य नैमित्तिक कर्मों को करे और स्नानसे शुद्ध हो इस प्रकार गुरु से सारीविधियां सीख और पद्धतियोंमें देखकर पंचाक्षरीका उच्चारणकरते हुये ६ प्राणायाम करे और ओंकाररूपी ईश्वर को बड़ी सावधानीसे मन

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

में ध्यान करे तीन अर्घ्य देवे। फिर एक सौ आठ मन्त्र जप कर बारह बार तर्पणकरे और आचमन कर तीन प्राणायाम करे। मौन हो ऋषियों को स्मरण करे। और जब पूजा के स्थान में जाना हो तो मौन हो पैर धोकर विधि पूर्वक आचमन कर पूजाके मण्डपमें जावे। और जब आना हो तो पहले दाहिना पैर उठावे।

* पांचवाँ अध्याय *

(सन्यास मण्डल की विधि)

ईश्वर बोले-फिर पृथ्वीको लीपकर दर्पण के समान चिकनी बनावे और हाथ भरके चार वस्त्रको लेकर चौकों के स्थान की कल्पना करे। ताल पत्र लेकर उसके समान लम्बे और चौड़े समान तेरह भागकरके उसे ले उसी चतुर्थ मण्डल में पश्चिमकी ओर मुख करके बैठे। पूरबकी ओर सूत्र लेकर दक्षिण और उत्तर के क्रमसे चौदह सूत्रबिछावे। ऐसा करनेसे एक सौ उनहत्तरकोण हो जायेंगे। जिनके बीचकी कणिका के आठ कोष्ठ के बाहर उस मध्य कोष्ठका दलाष्टक होता है। इस प्रकार सभी श्वेत वर्ण के दल की कल्पना करे। फिर उसको पीली और काली करे। कर्णिका सुरेश्वरि ? फिर उसकी दल संधिको भी लाल और काली करे। कर्णिका में प्रणव अर्थ का प्रकाशन करने वाला ऐसा मन्त्र लिखे कि जिसके नीचे पीठ और ऊपर श्री कण्ठ लिखे। उसके ऊपर अमरेश, मध्यमें महाकाल और महाकालके सिरके निकट दण्ड लिखकर फिर ईश्वर लिखे और श्याम रङ्गसे सिंहासन और पीत रङ्गसे श्रीकण्ठको चित्रित कर अमरेशकोलाल और महाकालको श्वाम वर्ण करे। इसी प्रकार दण्डको धूम्रवर्ण, ईश्वर को धवल वर्ण करे। ऐसा लाल यन्त्र लिखकर "संध्योजा" मन्त्रसे आज्ञ दान करे। फिर उसमें उठे हुए नाद से ईशान को भेदकर अग्ने-आदि क्रम से उसकी बाहरी पंक्तिको ग्रहण करे। फिर उसके कोने के चार कोणोंको श्वेत और लाल धातुसे रङ्गकर चार द्वार बनावे जिसके इधर-उधर के कोष्ठ पीले रङ्गसे भरे हुए हों और दक्षिण दिशाके कोष्टकेआगे आठ दल का कमल लिखे। इस प्रकार विधि पूर्वक पृथ्वीमें जैसा गुरु एवं आचार्य

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

बतावें सब दिशाओं के मण्डलको चित्रित कर सूर्य की पूजा करे।

* छटवां अध्याय *

(सन्यास पद्धति का न्यास वर्णन)

ईश्वर बोले-इस प्रकार उस कमल की रचना कर फिर शक्ति कमल की रचना करे और चतुर्थी विभक्ति के सहित अन्त में नमः लगा कर "शक्तिकमलाय नमः" इत्यादि उच्चारण कर "अग्नेक्रतिभस्म" इत्यादि मन्त्रोंसे वस्तुओंको धारणकर गुरुको फिरसे नमस्कार करे। फिर बाहरकी ओर त्रिकोण बृत क्रम से चार अस्त्र प्रमाण कर 'ॐ अर्चन" मन्त्र से पीठ को धारण कर शंख की पूजा करे और प्रणव से शुद्ध सुगन्धितजल से सात बार गन्ध पुष्पादिसे 'ॐ' की पूजा कर धेनु मुद्रा दिखावे। फिर शंख मुद्रा दिखावे। इस प्रकार अपनी आत्मा को शुद्ध करे। फिर तीन प्राणायाम करके ऋषि आदि का स्मरण करे। फिर अङ्गन्यास कर अस्त्र मन्त्रसे अग्निकोणके कमलका प्रोक्षण करे। श्वेत वस्तुओंसे ही इसदक्षिण कमलको पूजे। इस प्रकार उसकी ऊपर नीचे और चारों ओरसे पूजा करे। पश्चात सौर नामक योग पीठको पूजे औरसिंहासनके ऊपर मूल मन्त्रसे मूलाधार में प्राण रोक आसनसे बैठ पिंगला नाड़ी के प्रवाह से शक्तिको उठावे जहां पार्वती सहित भगवान देव रुद्राक्ष की माला पहिने पाशखट्ट बांट, कपाल, अंकुश कमल और शंख धारण किये, चार मुख और बारह नेत्रों से शोभित स्थित हैं। तब प्रकाश सहित सूर्य का आवाहन करता हूं-ऐसा कहते हुए "नमः"लगाकर उनका आवाहन करे और मुद्रादिक स्थापना कर मुद्रा दिखावे और व्हां ध्रूं इनबीज मन्त्रों से अंगन्यास कर फिर तीन बार! हे महेश्वरि! पद्मके केशरोंमें और छःहों अन्गोमें अग्नि ईश्वर राक्षस और वायुआदिकी चारों मूर्तियोंका आवरण में पूजे पूरब से लेकर उत्तर तक कसल दलके मूल से आदित्य भास्कर, भानु और रवि को इन चार नामों से तथा सूर्य,ब्रह्मा,विष्णु, महेश और ईशान को तीसरे आवरण में पूजे और इस प्रकार भस्मधारणकर शिव भक्तिके लिये अङ्गन्यास कर नम्रता पूर्वक गुरू की पंचोपचार पूजा

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

कर 'ओं श्री गेरुवे नमः' ऐसा कहते हुए नमस्कार करे। इस प्रकार पूजा के विधानों से युक्त हो 'ओं ब्रह्मात्मने नमः'के क्रम से ईशानादिका न्यास कर पञ्च कला क्रमसे सद्योजातकी कल्पना करे। बुद्धिमान इस प्रकार का प्रणवन्यास कर फिर परमात्माको बाधक हंसन्यास करें।

* सातवाँ अध्याय *

(शिवजी का ध्यान और पूजन)

शिवजी कहते हैं—इस प्रकार अपने बायें ओर चौकोण मण्डलबना ॐ का अर्चन करे और उसे अस्त्र मन्त्र से शोभित करे। उसके भी आधार पर प्रणव को ही पूजे और चन्दनादि तथा सुगन्धित वाले जल से उसे पूर्ण करे। फिर धेनु मुद्रा दिखावे। फिर उसके आगे चौकोणशङ्ख मुद्रा, अर्द्धचन्द्र और उसके बाद त्रिकोण मुद्रा दिखावे षटकोण मुद्रा करे। फिर उसमें ओंकार को गन्ध पुष्पादि से पूजे। फिर उसमें पवित्र जल भरे। इस प्रकार जैसा गुरु बतलावे उसके अनुसार गुरुमूर्तिकीकल्पना कर 'गुरुभ्यो नतः' ऐसा कहते हुए गुरु की प्रदक्षिणा कर उनका ध्यान करे। फिर गणानात्वा इत्यादि मन्त्रों से मूर्ति स्थापित कर देवता का आवाहन करे और एकाग्र मन से ध्यान करे। इस प्रकार गणेश का षोडशोपचार से पूजन करे। फल, फूल चढ़ावे। नमस्कार करे। फिर स्कन्ध को पूजे और आग्नेय मण्डल में सूर्य, चन्द्रमा सम्बन्धी ध्यान करे। फिर कमल के सब आसनों पर सुन्दर श्वेत पुष्प रक्खे और आधार शक्तिसे आरम्भ कर शुद्ध विद्या से आसन पर्यन्त उँकार सहित चतुर्थी विभक्तिके अन्त में नमः लगाकर मन्त्र करता हुआ सविधि ईशानादि पाँचों ब्रह्म को पूजे। फिर सावधान मन से मौन होकर मोन्मनी गोरी की पूजा करे मुद्रा दिखावे। हे देवि! जो इस प्रकार सविधि पूजन और ध्यान मेरी और तुम्हारी उपासना करता है और शङ्खके जलसे स्नान कराकर उँकार से मोक्षण करता है, वह सिद्ध होता है।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* आठवाँ अध्याय *

(वर्ण पूजा वर्णन)

ईश्वर बोले—देवि ! इस प्रकार पूजन के क्रमसे बुद्धिमान को उचित है कि वह सर्व प्रथम गणेश कार्तिकेय का पूजन करे फिर वेद के आदि स्वरूप महेश्वर का आवाहन कर पूर्व दिशा के भागमें कमलकी कणिका के ऊपर चारों ओर से पूजा करे और 'आयो राजानम्' इस ऋचा से रुद्र की पूजा करे और कणिका के दलों में आवाहन करे। शिवको पूर्व हर को दक्षिण शिव को उत्तर और भव को पश्चिम दिशाके पत्र में यथा क्रम से पूजे। फिर ओं राँ, ओं पाँ ओं ज्ञा, ओं लाँ, ओं अर्पण पूर्वक अं, ओं, वाँ,ओं, साँ और वेद के आदि में ओं श्री बीजं, इन दसबीजों से लोकपालों को पूज ईशान देवको दक्षिण भागमें पूजे। फिर ब्रह्मा विष्णु का सविधि षोड शोपचारसे पूजन करे तथा पंचम आवरणमें देवे शिवका का आवाहन करे। फिर देवेश कोअर्चना कर ओंकार युक्त शिव का स्मरण कर गन्धादि उपचारों ये सविधि शङ्करजी की पूजा कर नैवेद्य चढ़ावे और आचमनीय अर्घ्यादि प्रदान कर भोजन की सामिग्री और ताम्बूल निवेदन करे। फिर नीराज्जनादिक क्रमसे शेष पूजाको विसर्जित कर देवी देव का ध्यान कर एक सौ आठ मन्त्र जपे। फिर उठकर पुष्पांजलि ले'यो देवानामिति' उपनिषद की नारायणीय इनञ्चः ऋचाओं का जप करे और यो वेदादौ स्वरः प्रोक्तः तक जपे। फिर पुष्पाँजलि अर्पित कर तीन प्रदक्षिणा करे और परम भक्तिसे साष्टाँग प्रणाम करे और इस प्रकार प्रदक्षिणा करते हुए अनेकों प्रणाम करे तथा आसन पर बैठकर शिव महेश्वरादि के नाम का आठ बार उच्चारण करके कहे कि हे भगवान ! शम्भो ! यह सब आपही का आराधन किया है ऐसा कहते हुए शंख जल और पुष्पों को चढ़ावे और पूजा समाप्त कर अर्घ्य सहित आठ बार फिर नाम जपे। हे देवी ! इसके आगे भी मैं तुम्हारी भक्ति कहता हूं, ध्यान से सुनो।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

* नवाँ अध्याय *

(प्रणव पद्धति)

ईश्वर बोले-हे देवि ! यों तो परमात्मा शङ्करजी के शिव, महेश्वर रुद्र, पितामह, संसार-वैद्य, सर्वज्ञ और परमात्मा ये आठ नाम मुख्य और नित्य प्रतिपादक हैं फिर भी उपाधि निवृत्त होने पर शिव शङ्कर और महादेव ये तीनों ही नाम शिवरूप हैं। उपाधि युक्ति होने से वह अनेक नाम धारण करते हैं। इसलिये अत्यन्त परिशुद्धात्मा होने से ही उन महादेव को शिव और गुणों का आधार होने से उन्हीं ईश्वर को शिव तत्वदर्शी महात्मा लोग शिव कहते हैं। फिरजो तेईस तत्वोंसे परे प्रकृति और प्रकृति से परे पच्चीसवाँ पुरुषहै उसीको वाच्य वाचक के भावसे वेद आदि में ओंकार कहते हैं और जो वेद से जानने योग्य आत्म स्वरूप वेदान्त में प्रतिष्ठित और पर से भी पर है वही परमेश्वर कहलातेहैं तथा पुरुष और प्रकृति जिनके आधीन है और जो त्रिगुण तत्व की अविनाशिनी माया है वही प्रकृति तथा वही महेश्वर हैं। महेश्वरके प्राप्त होने पर ही नारायण की माया से मोक्ष की प्राप्ति होती है तथा दुखोंको दूर करने के कारण ही उनका नाम रुद्र पड़ा है और वही परम कारण शिव हैं। यह सुनकर ब्रह्माजी बोले-जब इस प्रकार शहुरजीने कहा तब उनके वचन सुनकर शिवजी की वेद से भरे हुए अनेक प्रकार स्तोत्रसे भरी हुई उनकी स्तुति की और उन परमेश्वरी ने शिवजीके श्रीचरण कमलों में बार-बार प्रणाम किया। हे मुनियो ! उससमय पार्वतीजी अपने मनमें बड़ी हर्षित हुई। हे ब्राह्मणो ! यह प्रणव अर्थ का प्रकाशन करने वाला अति गुह्य विधान मैंने तुमसे कहा जो सर्वथाही दुःखनाशक है। सूतजी कहते हैं हे मुनिबर ! जब मुनि शारदूल पाराशर पुत्र व्यासजी ने इस प्रकार कहा तो वेदवादी सब मुनियों ने भक्ति-भाव से उनकी बड़ी पूजा की। पश्चात वेदव्यासजी कैलाश पर्वतका स्मरणकर वहाँ चले गयेऔर ऋषियों ने भी प्रसन्न होकर अपने अनुष्ठार किये हुए यज्ञ के अन्त में चन्द्रशेखर शिवजी की परम भक्ति से पूजा कर यज्ञादिमेंमन लगा शिव

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

ध्यान में स्थिति प्राप्त की। इस कथा को देवी ने स्कन्द से और स्कन्द ने नन्दीसे तथा नन्दीने भगवान सनत्कुमारजीसेऔरसनत्कुमारजीनेव्यासजी से कहा था जिसे परम तेजस्वी गुरु व्यासजीसे मैंने प्राप्त कर तुम्हें सुनाया ऐसा कहकर पुराणवेत्ता श्रेष्ठ सूतजी तीर्थ यात्राकरने चले गये और वहाँ स्थित सभी मुनिगण इस गुप्त रहस्य को ग्रहण कर काशीमें वासकर मुक्त हो शिवजी के धाम को चले गये।

* दसवाँ अध्याय *

(सूतोपदेश वर्णन)

व्यासजी बोले–सूतजी के चले जाने पर सब मुनियों को बड़ा आश्चर्य हुआ और वे आपसमें कहने लगे कि एक प्रश्न तो हम लोगों ने भुला ही दिया जिसे सूतजी ने पहिले वर्णन किया था। वह वामदेव का मत बड़ा कठिन हैं। अब नजाने कब हमको उन श्रेष्ठका दर्शन प्राप्त होगा कि जब हम उनसे इस विषय पर पूछेंगे। इस प्रकार वे मुनि चिंतन करते हुए अपने हृदय में व्यासजी का पूजन कर दर्शन की इच्छासे वहां स्थित रहे। एक संवत्सर के पश्चात् सूतजी का काशी में फिर आगमन हुआ। तब सूतजी को आया देख ऋषियोंने उनका अभिनन्दनकर बड़ा स्वागत किया और जब सूतजी आसन पर बैठे तो उन मुनियोंसेपूजित हो बोले कि हे उत्तत ब्रती मुनियो! तुम धन्य हो, तुम्हारे लिये जिस कारण से मैं आया हूं वह वृतान्त सुनो। जब मैं तुमसे प्रणव का अर्थ एवं उपदेश कर तीर्थ यात्रा करने चला गया तो दक्षिण सागर के तट पर पहुँचकर जो मैंने कुमारी शिवा देवीका पूजन किया और काल-हस्त शैल पर जाकर सुवर्ण मुखरा में स्नान कर देवता तथा ऋषियों को तृप्त करते हुए शङ्करजी का स्मरण कर चन्द्रमा की कान्ति वाले उन काल हस्तिश को तृप्त कियाकि जो पश्चिमकी ओर मुख किये पाँचशिर वाले और बड़े अद्भुत हैं तथा जिनका एक ही बार दर्शन करने से सारे पाप नष्ट हो जाते हैं। उनको पूजकर फिर उनके दक्षिण भागमें स्थित

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyan Kosha

पार्वती का भी मैंने पूजन किया। फिर एक सहस्र एक सौ आठ वार पंचाक्षरी विद्या का जप किया और प्रदक्षिणा कर बार-बार उनको नमस्कार किया। इस प्रकार में नित्य उनकी प्रदक्षिणा करते हुए कालहस्ति शैल पर उस क्षेत्र में निवास करने लगा। हे मुनीश्वरो? मैंने वहाँ चार महीने का समय व्यतीत किया। तब ज्ञानरूपी प्रसून कालिका महादेवी का मुझे प्रसाद प्राप्त हुआ। मैं शीघ्र ही वहाँ से उठ शिवाशिव को भक्ति पूर्वक प्रणामकर उनकी बारह बार प्रदक्षिणा कर दण्ड प्रणाम करते हुए गुरु की आज्ञा से उस क्षेत्र से चलकर चालीस दिन में यहां तुम्हारे पास आया हूँ। हे मुनि श्रेष्ठो! अब मुझ पर कृपा कर आप सब यह कहिये कि है क्या करूं? सूतजी के यह बचन सुनकर ऋषि मन ही मन प्रसन्न हो उनसे कहने लगे:—

* ग्यारहवां अध्याय *

(वामदेवजी द्वारा ब्रह्म निरूपण)

ऋषि बोले-हे महाभाग सूत जी! आप हमारे पूज्य हैं,इसलिये हम पर दया कर हमें बतलाइये कि वामदेव का मत क्या है! यह सुनने की हमारी बड़ी इच्छा है। तब उनके यह बचन सुनकर गम्भीरवाणी से बोले कि हे मुनियो! आपका मङ्गल हो, क्योंकि आप सबकी मति सर्वदा शिव भक्ति में तत्पर है। पहले रयन्तर कल्प में वामदेव नामके मुनि हुए जो गर्भ से उत्पन्न होते ही स्वयं शिव ज्ञान जाननेवाले और देव असुर मनुष्य सब देवों के जन्म कर्म के जानकार थे! वे सब शरीर में भस्म लगाये जटा मण्डल मण्डित इच्छा रहित निर्द्वन्द और अहंकार रहित थे। वे सर्वदा दिगम्बर महाज्ञानी और दूसरे शिवके समान अपने चरणों के स्पर्श से पृथ्वी को पवित्र करते हुए इधर-उधर विचरते तथा ब्रह्म में लीन रहा करते थे। उन्हीं ने एक समय मेरु के दक्षिण कुमार शिखर पर जाकर स्कन्धजी से भेंट किया जहाँ स्कन्ध नामक सागर के समान एक सरोवर है और जिसका जल ठण्डा और बढ़ा स्वादिष्ट है। तब शिखर के ऊपर बठे हुए मुनि वृन्दों से से बित भगवान शिवजी के पुत्र स्कन्द

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

कुमार को उदित-सूर्य के समान जिनके चार भुजा, सुन्दर शरीर और मुकुट आदि से विभूषित अगल-बगल रत्न भूत दो शक्तियाँ उपासना कर रहीं थीं और जो मोर पर बैठे हुए थे, देखकर उन मुनीश्वरने परम भक्ति से उनकी पूजा की और हाथ जोड़कर एक दिव्य स्तोत्र में बड़ी स्तुति की। तो महेश्वर पुत्र प्रभु स्कन्दजी प्रसन्न होकर बोले कि—हे मुनि ! मैं तुम्हारी पूजा से प्रसन्न हूं। तुमने जो यह प्रेम भक्ति से मेरी स्तुति की है उसके लिये मैंतुम्हारा क्याप्रायश्चितकरूं। क्योंकि आप जैसे योगियों में मुख्य, परिपूर्ण और निस्पृह को इस लोक में कुछ भी प्रर्थनीय नहीं है फिर भी आप जेसे लोग लोक-कल्याण के लिये पृथ्वीमें विचरते हैं। हे ब्रह्मन् ! आपकीजो इच्छा हो वह कहिये, लोक रक्षार्थ मैं उसे कहूंगा। तब स्कन्द के ऐसे बचन सुनकर महा मुनि वामदेव प्रसन्न हो यह मेघवत गम्भीर वाणी बोले-हे भगवन ! आप परअपरके स्वामी सर्वज्ञ सबके कर्त्ता और सर्व शक्ति धर हैं ! हमारे जैसे जीव आपका गुण वर्णन करने में सर्वथा ही असमर्थ हैं। यह तो आपकी कृपा है जो आप हमसे ऐसा कहते हैं। हे महाभाग ! अब मैं आपसे जो पूछता हूँ, उसे आप क्षमा कीजियेगा। क्योंकि मेरा यह अतिक्रम है। प्रण वही साक्षात परमेश्वर वाचक या वही देव पशुपति वाच्य है कि जो पशुओंका पाप मोचक है। यदि शिवजी को प्रणव के द्वारा बुलाया जाता है तो वे क्षण मात्र में ही पाप दूर कर देते हैं। इस प्रकार प्रणवोपासना ही तो पाप मोचक हुई और प्रणव की ही वाचकता सिद्ध हुई। ओंकारही तो सर्व स्वरूप है। औरॐ इति सर्व हो तो इस प्रकार सबकी श्रुतिऔर ब्रह्म स्वरूप है। हे देवताओं के पति ! आपको नमस्कार है आप ही पतियों के हति और परिपूर्ण हैं। अतएव आपको नमस्कार है। हे सेना पते ! हमारे विचार से जगत की स्थिति में शिव के शिवाय दूसरा कोई नहीं है। सर्व व्यापक स्वामी महेश्वर ही सब रूप वाले हैं।। हमने सुना है कि समष्टि और व्यष्टि के भाव से यह सब कुछ प्राणवार्थ ही है।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by Sangeeta Siddhanta Gyaan Kosha

* बारहवाँ अध्याय *

(सन्यास की विधि वर्णन)

स्कन्दजी बोले-हे महाभाग वामदेवजी ! तुम धन्य हो । तुम बड़े ही शिव भक्त और शिवज्ञान जाननेवालोंमें श्रेष्ठ हो । तुमको त्रिलोकी में कुछ भी अविदित नहीं है। फिर भी लोककल्याणकी दृष्टिसे मैं तुमसे कहता हूँ । इस लोक में जीव अनेक शास्त्रों से मोहित हो रहे हैं जिससे परमेश्वरकी विचित्र मायाको नहीं जान पाते । प्रणव ही साक्षात महेश्वर है और जिसे वे मोहित प्राणी नहीं जानते । यद्यपि वही देव सगुण, निर्गुण और ब्रह्म इन तीनों का प्रकट करने वाला और परम देव है। प्रणव का अर्थ तो साक्षात शिवजीने ही किया है और श्रुति स्मृतिशास्त्र पुराण और आगमों में भी कहीहै । जिनमें मनवाणी की कोई गमनहीं है और जिसे पाकर विद्वान कभी भयभीत नहीं होता । ब्रह्मा, रुद्र, इन्द्र पूर्वक यह साराजगत वही उत्पन्न करतेहैं और वह कभीभी कहींसेउत्पन्न नहीं होते । उनमें विद्युत,सूर्य और चन्द्रमाका कोई प्रकाश नहीं है और जिसकी भाषा से ही सारा जगत प्रकाशित होता है । यह सारा ऐश्वर्य उन महेश्वर को ही प्राप्त है कि जो मुमुक्षुओं के ध्यानकी वस्तु है । वही सर्व व्यापी, निर्गुण, सगुण निष्फल तथा शिव हैं । स्थूल सूक्ष्म और उनसे भी परे यह उनके तीन रूप हैं । वही सब देवाधि देव, सन्तान, निष्फल और ज्ञान क्रियाके स्वभाव वाले और परमात्मा भी कहे जातेहैं। वही देव पंचक और कला पंचक भी हैं उनका मन सर्वदा शुद्ध स्फटिक मणि के समान प्रसन्न और शीतल होता है जिनके पाँच मुख,दश भुजा और पन्द्रह नेत्रहैं । जोईशन देव,मुकुट युक्त, पुरातन पुरुष और ओघर हृदयी,वामदेव,गुह्यतथा प्रदेशवान हैं । सद्योजात तन्मूर्ति, साक्षात, सम्पूर्ण,निष्फल और मूर्ति वे यह छः प्रकारका शरीर धारण करने वाले हैं । शब्द की शक्तियों से भी वे स्फुरित होते, हृदयों में विराजमानरहते अपनी मनोन्मनी शक्तिसे वाम भाग विभूषित है । मन्त्रादिसे जिनके छः प्रकारके अर्थ मन्त्रों द्वारा होते हैं, जो उपन्यास मार्गी,समष्टि व्यष्टि भाव

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

वाले प्रणवात्मक-अर्थ वाले हैं, मैं इनके अर्थ को कहता हूं, सुनो। पहिले उपदेश का क्रम कहता हूं। हे महाराज ! लोक में वर्ण विख्यात हैं इनमें तीन के लिये ही वेदचार कहा गया है। शूद्रवेद का अधिकारी नहींहै। उसे केवल सेवाही करने को कहा गया है शेष तीनों वर्ण अपने ही आश्रम में रत रहें। इन्हे तो श्रुति, स्मृति धर्म का ही अनुष्ठान करना चाहिए, अन्य नहीं। इसीसे इन्द्र सिद्धि प्राप्त होगी। वेद मार्ग के प्रदर्शक परमेश्वर की यही आज्ञा है ! तब श्रुति स्मृति जैसा कहती है उसी के अनुसार वर्णाश्रम धर्मसे अपने आचारों द्वारा परमेश्वर की वह पूजा करे कि जिसके करने से कितनेही श्रेष्ठ मुनियों ने सायुज्यता प्राप्त की है ।

* तेरहवाँ अध्याय *

(प्रणव का अर्थ)

स्कन्द जी बोले-ऐसा यती मध्यान्ह में प्रसन्नता पूर्वक स्थान पर गन्ध पुष्प और अक्षतादि पूजाकी सामग्रियों को लेकर पहले देव पूज्य तथा शिव-पुत्र गणेशकी विधि पूजा और ध्यानकर पूर्णाहुती दे हवन समाप्त करे और गायत्री का जप करता हुआ अपरान्ह को कर्म समाप्त करे। फिर सायंकाल को स्नान कर संध्याकाल की सन्ध्या समाप्त करे। औरइससमय सद्योजात के पाँच मन्त्रोंसे हवन करे। अन्त में उमासहित महादेवका अग्नि में ध्यान करे। फिर सावित्रीके प्रथम पादका उच्चारण करते हुए गायत्री के दूसरे पादका उच्चारण करे। फिर तीन पादका उच्चारण करेऔरसावित्री प्रवेशियामि ऐसाकर 'भूर्भुवःसुवरोत्र' ऐसा कहते हुए उन शङ्कर साक्षात् का ध्यान करे कि जो अर्धनारीश्वर हैं, जिनके पाँच मुख, दश भुजा, पन्द्रह नेत्र और बड़ा उज्वल शरीर है और जिन सदाशिव और मनोहरदेवकी जगन्माता त्रिलोक को उत्पन्न करने वाली त्रिगुण और निर्गुणमयीशिव धर्म पत्नी हैं। ऐसा विचार कर बुद्धिमान पुरुष उस गायत्री देवीका जप करे। क्योंकि वह आदि देवी, त्रिपदा, ब्राह्मणत्वदात्री और अजा है। वही व्याहृतियोंसे उत्पन्न, उन्हींमेंलीन होनेवाली और वेदकी आदि, प्रणव और शिवपात्री है। यह मन्त्रराज सब मन्त्रोंका वीजरूप मन्त्र है। वह

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

प्रणव शिव और शिव ही प्रणव है। उसमें वाच्य वाचकया भेद नहीं है। इसी महामन्त्रको काशीमें शरीर त्यागने वालेको मरतेसमय उपदेश देकर शिवजी मुक्त करते हैं। इस कारण उन परमकारण देव, एकाक्षर श्रेष्ट को यति श्रेष्ठ हृदयकमल में धारण कर पूजे।

* चौदहवाँ अध्याय *

(शिवरूप वर्णन)

वामदेव बोले-हे भगवान्! हे सब देवताओंके ईश्वर शिवजीकेपुत्र! हे प्राणनारति भंजन! छः प्रकार के अर्थ का ज्ञान क्या है! छः प्रकारके अर्थ कौन-कौनसे हैं और उनका क्या ज्ञान है! इसका प्रतिपादक कौन है और इस ज्ञान का क्या फलहै,जिसके जानेबिना जीव शास्त्रोंसे विमोहित हो रहा है और मैं भी शिव मायो विमोहित होरहाहूँ। मैं आपकी शरण हूँ आप मुझ पर कृपाकर उसी ज्ञानसृत को पिलाइये कि जिसे पाकर मोहरहित हो जाऊ। क्योंकि शिवपद अद्वैतहै। तब मुनियों के इन वचनोंको सुनकर शक्तिधारी प्रभुशास्त्रके विरोधोंकोशिवपद अद्वैत है। तब मुनियोंके इन वचनोंको सुनकर शक्तिधारी भुशास्त्र विरोधकों के लिए यह महात्रासजन बचन कहने लगे कि-हे मुनिशार्दूल! जो कुछ आपने पूछा है वह समस्त प्रणवार्थ परिज्ञान रूप मैं तुमसे सादर कहता हूँ जो समष्टि व्यष्टिके भावसे सर्वथा ही महेश्वर का है। हे सुव्रत! अब उन छः प्रकारके अर्थों को कहताहूँ कि जिससे एक ही का परिज्ञान होता है पहला मन्त्र रूप,दूसरा मन्त्रभाव,तीसरा देवार्थ,चोथा प्रपंचार्थ, पाँचवाँ गुरुरूप का दिखाया हुआ अर्थ और छठवाँ शिष्यके आत्मानुरूप कार्य। यही छः प्रकार अर्थ पहले कहे हैं। हे मुनि सत्तम! पहलेउस मन्त्र स्वरूपको सुनिये कि जिसके बिज्ञानमात्रसे पुरुष ज्ञानी हो जाता है। पहला स्वर अकार है जिसके बाद पाँचवां उकार पड़ता है और इसी प्रकार पवर्ग का अन्त मकार, यही विन्दु और नारद है। इन्हीं पाँचोंको वेद में ॐकार कहा है। यही समष्टिरूप है और इसी को वेद में ॐकार कहा गया है इसी प्रकार नाद भी सबकी समष्टि है और अकार उकार मकार

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ये सब विन्दु की आदिमेंहै। यही व्यष्टि रूप से सिद्ध हो ओंकारशिवका याचकहै। इन्हीं पाँचों वर्णोंकी समष्टि और विन्दु आदि चारका समष्टि-कला प्रणव शिवका वाचकहै और शिवजीके उपदेश मार्ग से जो उसका विचार हैं वही मन्त्ररूप है। इसी को प्रणवराज कहते हैं जो शिव का ही रूप है।

* पन्द्रहवाँ अध्याय *

(उपासना मूर्ति वर्णन)

ईश्वर बोले-अब इसके बाद सृष्टि की पद्धति कहता हूं जो महेशादि चतुष्टय और सदाशिव कहलाती है। वही समष्टि प्रभु आकाश के अधिपति हैं और उन्हीका महेशादि चार रूप इसीकी व्यष्टिहै जिन सदाशिव के सहस्रांशसे महेश्वरकी उत्पत्ति होतीहै और जो पुरुष अनन्त रूप होने से ही वायुके भी अधिपति हैं जिनके वाममें मायाशक्ति है और जो सब क्रियाओंके अधिपति हैं तथा जिनकी ईश्वरादि चतुष्टय व्यष्टि रूप है। ईश्वर, विश्वेश्वर, परमेश और सर्वेश्वर। यही श्रेष्ठ तिरोभाव चक्र है। यह तिरोभाव भी दो प्रकारका होता है। एक रुद्रादि,गोचर, दूसरा जीव समूहका शरीर रूप। यहां पाप पुण्य रूप शरीर जब तक स्थित है तब तक वह रहता है और इसमें कर्म की साम्यता है। किन्तु यह एक ही होता है। उसी एकमें अनुग्रह करनेकी सामर्थ्य है और वही विभु भी है जिसमें तिरोभाव और कर्मको साम्यता है। उसीको साक्षात, परब्रह्म, निर बिकल्प तथा निरामय इस प्रकारसे ईश्वरादि चार देवता कहे हैं। इसमें तिरोभावका चक्र शान्ति कला मय है और इसीको उत्तम पद तथा महेश्वरसे अधीष्ठित कहा है। महेश्वर की चरणोंकी सेवा करने वाले इसी को प्राप्त होते हैं। महेश्वरके हजारहवें अँशसे रुद्र की उत्पत्ति होती है जो अधीर शरीरके होते हैं और जो समस्त तेज तत्व के स्वामी हैं तथाजो प्रभु अपने वाम भागमें गौरी शक्ति धारण किये और संहार करने वाले है। इन्हीं व्यष्टि रूप शिव, हर, हर मुड भव ये चार शिवादि अद्भुत चक्र विदित हैं। सप्तावरण से रक्षित है और जो जिसके ऊपर नीचे दस

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

गुणा जल व्याप्त है। इसी हिरण्यमय स्वरूप जलके मध्यमें जो रहता है उसीको श्रुतिने जलमध्य सायी कहा है जिसमें अपने अनुग्रह, तिरोभाव, संहार, स्थित और सृष्टिसे युक्त हो निरन्तर एक शक्ति युक्त रह कर शिवजी लीला करते रहते हैं। हे मुनियों! अधिक कहने से क्या! मैं सार कहता हूँ यही निश्चय जानो कि शिवजी ही सर्व शक्तिमान हैं।

* सोलहवाँ अध्याय *

(शिव तत्व विवेचन)

सूतजी बोले-जब इस प्रकार गुरुने वेदार्थ उपदेश कियातो उसे सुनकर मुनिश्रेष्ठ को परमात्मा में सन्देह हुआ। तब उन्होंने कहा कि हे स्वामिन्! आपके मुख-कमल से जो मैंने ओंकार रूप अमृत का पान किया है उससे अब मेरा ज्ञान दृढ़ होगया और इस विषय में कुछ भी सन्देह न रहा। फिर भी मैं आपसे यह थोड़ा प्रश्न करता हूं कि सदा-शिवसे लेकर कीर्ति पर्यन्त यह जो जगत रूप की स्थिति है औरजिसमें सर्वत्र स्त्री पुरुष रूप से दीखती हैं और जिसमें कुछ सन्देह नहीं है, इस प्रकारके रूपवान जगत के लिये वही सनातनदेव कारणहैं यही स्त्री पुरुष नपुंसक रूप और कोई है अथवा उसका क्या रूप है! विद्वान् और शास्त्र तो मोहित होकर उसे अनेक प्रकार से कहतेहैं। परन्तु इसमें जो एक मत हो और जगतश्रष्टा जैसे एक भाव को प्राप्त हो वह आप मुझे बतलाइये। क्योंकि मुझे ब्रह्मा विष्णु आदिक देवता और सिद्ध कुछ नहीं जान पड़ते मुझे तो "यह करताहूं" यह व्यवहार ही स्पष्ट दिखाई पड़ता है और यह सब क्रियात्मक व्यवहार हो सब अनुभवों से सिद्ध होता है, और वह देह, इन्द्रिय, मन, बुद्धि तथा अहङ्कार से उत्पन्न होताहै अथवा यह महान् आत्मा काही रूप है, इसमें भी कुछ सन्देह नहीं है। परन्तु इन दोनों बातोंमें यह अद्भुत विवाद है। आप मेरे इस संशय रूपी विष वृक्ष को उखाड़ कर ऐसा कर दीजिये कि जिसमें हमारे चित्त की भूमि शिव के अद्वैत कल्पवृक्ष जन्म योग्य हो जावे। हे देवेश! मुझे आशा है कि आपकी कृपासे मुझे दृढ़ ज्ञान प्राप्त होगा। जब मुनिने इस प्रकार

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

पूछा तो उपनिषद गर्भित इस समय रहस्य को समझ कर प्रभु स्कन्दजीकुछ हंसते हुए बोले कि, हे मुने ! इस गुह्य ज्ञान को शिवजी ने कहा है। हे वामदेव ! जिस समय शिवजी अम्बा से कह रहे थे उस समय मैं अम्बा का दूध पीता हुआ बड़े आनन्द से सब कुछ सुन रहा था और वह सब मुझे स्मरण है। हे पुत्र वामदेव ! अब उस परम रहस्य को मैं तुम पर दया करके कहता हूं, ध्यान देकर सुनो। कर्मसत्ता से लेकर जितना कुछ शास्त्रवाद है वह सब ज्ञानदायक है विचारवान् उसे विवेक पूर्वक सुनते हैं। भला आप लोगों के जैसा कौन है कि जो आपने इस बड़े विस्तार युक्त शास्त्रवाद को शिष्यों को उपदेश किया है। परन्तु जिनकी नीच बुद्धि है वे अभी तक कपिलादि शास्त्रों को पढ़कर भी ऐसा ही कहते हैं ईश्वर नहीं हैं। ऐसे शिव निन्दक पहले से ही छः मुनियों के द्वारा शापित और अन्यथावादी है। अतएव उनकी वार्ता कदापि सुनने योग्य नहीं है। क्योंकि उन्हें तो क्षिति और अंकुरादि कर्ता जन्य देखने से भी और अनुमान-प्रयोग से भी पदमेश्वर का रूप सिद्ध नहीं होता और वे अन्य अवसर की प्रतिज्ञा करते हैं। किन्तु जसे उपरोक्त पंचावयव युक्त धूम के देखने से पर्वत अग्नि वाला है। ऐसे ही यह तो प्रत्यक्ष प्रपञ्च का दर्शन एवं अवलम्बन है। परमेश्वर परमात्माको जाने, इसमें सन्देह नहीं। स्त्री-पुरुष रूप विश्व प्रत्यक्ष ही दिखाई पड़ता है। श्रुतियों ने ऐसा कहा है कि सच्चिदानन्द ब्रह्म इन रूपों से सत्य है और वही प्रञ्चकी निवृत्ति करने वाला शब्द तथा सदात्मा कहलाता है। फिर वही अपने प्रकाश से चित होकर जगतका कारण होजाता है। परन्तु वह एक ही शिव शक्ति भाव को प्राप्त हुए हैं। जिन शिव-शक्ति के संयोग से ही आनन्द की प्राप्ति होती हैं।

* सत्रहवाँ अध्याय *

(सृष्टि क्रम वर्णन)

वामदेवजी बोले-हे भगवन् ! पहले तो आपने यह कहाकि प्रकृति नीचे नियति और ऊपर पुरुषहै, वह अब आप यह दूसरा क्या कहते हैं !

CC-0. ASI Srinagar Circle. Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

माया से संकुचित रूप को तो आपने कहा है कि वह नीचे है, अस्तु हे नाथ ! मेरा यह संशय दूर कीजिए। स्कन्दजी बोले–हे मुने यह अद्वैत सेववाद में किसी प्रकार भी द्वैत का समावेश नहीं है। यह नश्वर अविनाशी है। इस प्रकार वह एक ही शिव सच्चिदानन्द रूप वाले और ब्रह्म हैं जिन्हें सर्वज्ञ सबका कर्ता और त्रिवेदों का उत्पादक कहा जाता है। शिवजी ही अपनी माया और इच्छा से संकुचित रूप के समान पुरुष हो गये हैं जिनमें पांचों कला हैं और जो भोक्ता है। वही पुरुष प्रकृतिके गुणों के भोक्ता हैं। वही समष्टि और वही चित्त प्रकृति तत्व है। सत्वादि भेद से प्रकृति के गुण गुणों से बुद्धि और बुद्धि से तीन प्रकार का अहंकार उत्पन्न हुआ है। फिर उससे तेज और उससे मन,बुद्धि तथा इन्द्रियों की उत्पत्ति हुई है और मनका रूप संकल्प विकल्पात्मक है। इसी प्रकार बुद्धि,इन्द्रय, कान,त्वक, चक्षु, जिव्हा, शब्द रूप, स्पर्श, रस, गन्ध प्रवृत्ति और बुद्धि तथा इन्द्रियों में श्रोत्र का क्रम कहा गया है, और वैकारिक अहंकार से कर्मेन्द्रियों की उत्पत्ति हुई है जिन्हें तत्वदर्शी मुनियों ने सूक्ष्म कही है और कार्य सहित सब कर्मेन्द्रियाँ हैं और वाक पाणि,पाद,उपस्थ इस प्रकार बोलना, ग्रहण करना, जानना और त्यागना जिनकी क्रिया हैं। फिर उनकी तन्मात्रायें हुई जिनसे शब्दादि रूप हुए और जिनसे आकाश,वायु,अग्नि, जल और पृथ्वी की उत्पत्ति हुई और जो पंच महा भूत कहलाये तथा अवकाश, वहन पाचन, वेग और जो पंच महा हुए। सूतजी बोले–जब वेदान्त युक्त इस प्रकार का वचन स्कन्दजी ने कहा तो ऋषि वामदेवजी नम्र हो बार–बार पृथ्वी पर गिरकर उनकी दण्डवत करने लगे। क्योंकि उनके चरणारविन्द में विहरते हुए उन्हें परम तत्व की प्राप्ति हो गई।

* अठारहवाँ अध्याय *

(शिष्य करने की विधि)

शौनकजी बोले-इस परम रहस्य को सुनकर वामदेवजी ने महेश्वर के पुत्र से क्या कहा ? वे वामदेवजी तो बड़े ही धन्य हैं कि जिनके द्वारा

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

इस परम पावनी कथा की उत्पत्ति हुई है। तब मुनियों के इस प्रेमगर्भित वचन को सुनकर प्रसन्नहो महापण्डित सूतजी उन शिव प्रेमियों से बोले-हे मुनियो! आप सब महादेवजी के भक्त धन्य हैं जो इस प्रकार लोकोपकार कर रहे हैं। अतः अब मुझसे उनदोनों महात्माओंका सम्वाद फिर सुनिये। तब वामदेवजी ने स्कन्दजीसे पूछा कि हे भगवन्! हे सर्व तत्व विषारद षड्मुखजी! अब आप मुझे सम्प्रदाय के उस ज्ञान को बतलाइये कि जिसके उपदेश बिना जीवों को भोग मोक्षादि सिद्धि नहीं प्राप्त होती और जिन्हें उपदेश का अधिकार नहीं है। इनके क्षौरकर्म और स्नान इस प्रकार क्यों है,वह कहकर आप मेरा संशय दूर कीजिये। यह सुनकर स्कन्दजी बोले–हे वामदेवजी! अब मैं एक परम गुप्त तत्व आपसे कहता हूं, ध्यान देकर सुनो। वैसाख, श्रावण, आश्विन, कार्तिक अगहन, माघ इन महीनों के शुक्लपक्ष और शुभ दिन में पंचमी अथवा पूर्णमासी को शुद्ध हो गुरुके चरण धो उनके निकट मृग चर्म के आसन पर शंख में पुष्प रख प्रणव मन्त्र से अभिमन्त्रित करे और गन्ध पुष्पादि से पूजन करे, दीपक दिखा, मुद्रासे रक्षाकर, कवच मन्त्र से आच्छादित करे। फिर अर्घ्य के विधान से उत्तम मण्डल कर उसे सुगन्धित पुष्पों से पूजे। आधार को शोधे और फिर उसपर शुद्ध घट रख उसे सूतसे लपेट कर उसमें सुगन्धित जल भरे। फिर पीपल, पियखग, जामुन, आम,वड़ इन पाँचों की छाल और इन्हीं पाँचों के पत्ते और हाथी,घोड़े, रथ बांवी और नदी के संगम स्थान की मिट्टी में सुगन्धि मिलाकर उस कलश पर लेपन करे। फिर सब आम के पत्ते, कुश का अग्र, नारियल और फूल मिला इस प्रकार सब वस्तुओंसे उस घट को अलंकृत करे। उस वट में पंचरत्न डाले और पंचरत्न न हो तो भक्ति सहित उसमें सुवर्ण ही डाल देवे। फिर नील माणिक्य सुवर्ण, मूँगा और गोमेद इन पाँच रत्नों को ले "नृमलस्क" का उच्चारण करतेहुए अन्तमें'ग्लूम्'ऐसा उच्चारणकरतेहुए प्रेमपूर्वक सविधि पूजन करे। फिर खीर और ताम्बूल रख आठ नामों से पूजा कर अभिनन्दन करे। इस प्रकार गुरु की कृपा से निर्मलात्मा

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

होवे। क्योंकिगुरुही शिव है और वह जैसा बतलाये उक्त-प्रकार के अनुष्ठान सहित उनकी पूजा करे। फिर गुरु अपने ऐसे शिष्यको'हस सोऽहं' मन्त्र का उपदेश दे जिसके आहिमें'ह'के अर्थ सहित आत्मा स्वयं शिव है। इस प्रकार गुरु उपदेश दे यह सोचे कि वही मैं शिव हूं। फिर वह शिष्य को भस्म का परोक्ष ज्ञान दे और सादर उसका तात्पर्य इस प्रकार बाईस वाक्यों में समझावे।

* उन्नीसवां अध्याय *

(योगपट्ट वर्णन)

स्कन्दजी बोले-तब गुरुजी इस प्रकार कहे कि १ मैं ब्रह्म हूं, २ वह तू है, ३ आत्मा ही ब्रह्म है, ४ सारा जगत ईश्वर से अधीष्टित है, ५ मैं ही प्राण हूं, ६ आत्मा ही ज्ञान है,७प्रज्ञानात्मा अर्थात जो यहां,८विरित अविसिस वह पर है,९वही तुम्हारा आत्म अन्तर्यामीऔर अमृतहै१०वह एकही पुरुष में और आदित्य में हैं, ११ परब्रह्म भी मैं ही हूँ, १२ सबसे परे सबका ज्ञाता,वेद शास्त्र का गुरु और स्वयं आनन्द लक्षण मैं ही हूँ, १३ वह एक सर्वभूतों के हृदय में मैं ही हूं,१४ तत्व और पृथ्वी का प्राण मैं ही हूँ, १५ जल का और तेज का भी प्राण मैं हूं, १६ वायु और आकाश का भी प्राण मैं हूं, १७ त्रिगुण का भी प्राण मैं हूं, १८ सर्वात्मक एक अद्वितीय मैं हूं, १९ यह सब कुछ ब्रह्मरूप ही है. २० मैं सभी मुक्तस्वरूप हूँ,२१ जो यह है वही मैं हूं और हंस भी मैं ही हूँ २२ इसी प्रकार सबका ध्यान करो। यह कहकर स्कंदजी ने वामदेवजी को क्षौर स्नान की विधि बतलाई।

* बीसवाँ अध्याय *

(क्षौर स्नानादिक विधि)

स्कन्दजी बोले हे वामदेव! अब मैं स्नान और क्षौर की वहविधि कहता हूँ जिससे यतियों को परम शुद्धि प्राप्त होती है। हे मुनीश्वर! जब इस प्रकार शिष्य योग पदको प्राप्त हो पूर्ण व्रती होवे तब उसे पहले क्षौर करा लेना उचित है। वह गुरु को नमस्कार कर उनकी आज्ञा ले

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

क्षौर करावे। फिर उस कपड़ेको जो नाई के पास हो उसे मिट्टी और जल से धुला डाले तथा उसके हाथ भी मिट्टी देकर धुला देवे और शिव-शिव उच्चारण करता हुआ दोनों हाथों की अनामिका और अँगूठे को अभिमन्त्रित करे। फिर नेत्र मूँदकर अस्त्र मन्त्र पढ़े और फिर नेत्र खोलकर नापति के अस्तुरे और कैंची आदिकी स्वच्छताको देख उसे भी अस्त्र मंत्र से अभिमन्त्रित कर प्रोक्षण करे तथा प्रभाव से छुरेको ग्रहण करा दाहिनी ओरसे क्षौर करावे और पहले कुल आगेके बाल दूर करावे पीछे सब बाल मुड़ावे फिर एक पत्ता ले उसमें बालोंको रख कहीं दूर डाल देवे और मूँछ भी मुड़ा लेवे। फिर हाथ पर हाथ रख नखोंको कटावें और बेल पीपल या तुलसीके नीचेकी मिट्टी लेकर रख ले। फिर बारह बार जलमें डुबकी लगाकर किनारे पर बैठ उस मिट्टीके तीन भाग कर शुद्ध स्थानमें रख उसे प्रोक्षण कर अस्त्र मन्त्र से अभिमन्त्रित करे। फिर उसमें से एक भागकी मिट्टी ले उससे बारह बार हाथको मलकर जलसे धोवे और एक ढेले ही से शरीर लेपन कर जलसे धो फिर जल में प्रवेश करे। फिर दूसरे भाग की मिट्टी ले बारह बार शिर से मुख तक लपेट कर बारह बार जल में डुबकी लगावे और फिर तट पर जाकर सोलह कुल्ला करें और दो बार आचमन कर ॐपूर्वक सोलह प्राणायाम करे। फिर बची हुई मिट्टी को लेकर उसके तीन भाग कर उसमें से एक भाग ले कमर और पैर धोकर दो बार कुल्ला आचमन करे। फिर मौन होकर ऊँकार पूर्व सोलह प्राणायाम करे। फिर दूसरे भागको ले ॐकहते हुए जङ्घामें लगाये और प्रणव से तीन प्रोक्षण करे। फिर रखी हुई मिट्टीको सातबार अभिमन्त्रित कर उससे अपना हाथ तीन बार धोवे और अपनी कक्षामें सूर्यको देखते हुए सिर से पैर तक मिट्टी लगावे और तीसरे भागकी मिट्टीको ले पृथ्वी पर रखे हुए अपने दण्डको उठा अपने मन्त्रदाता गुरुको ज्ञान सहित स्मरण करते हुए तीन बार साष्टांग प्रणाम करे और तीर्थमें प्रवेश कर बार-बार डुबकी लगावे और ॐ कहता हुआ तीन बार शिवके चरण कमलों का ध्यान करे जो संसार सागर से तारने वाले हैं। हे मुनिवर्य! यह तो मैंने

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

आपके स्नेह से कहा। अब आगे और क्यासुननेकी इच्छा है,वह कहिये।

* इक्कीसवां अध्याय *

(योगियों के मरने के बाद)

वामदेवजी बोले–हे गुरो! मैंने यह सुना है कि यतियोंका दाहकर्म नहीं होता और केवल शुद्ध भूमि में उन्हें स्थापित कर दिया जाता है इसका क्या कारण है! यह आप प्रेम पूर्वक कहिए,क्योंकि आपके समान कोई वक्ता नहीं है। सूतजी बोले-जब बामदेवजी ने इस प्रकार कहा, तब असुरनिकन्दन स्कन्दजी शिवसे सुने हुए इस परम रहस्यको फिर उनसे कहने लगे। स्कन्दजी बोले-हे मुने! यह बड़ी गुह्य बात है। इसी प्रकार का प्रश्न तो शिव योगी भृगु नामके मुनिने भी सर्वज्ञ शिवजीसे किया था जिसे उन साक्षात् शिवजीने एक कथाके लय में वर्णन किया था। हे ब्रह्मन्! वही कथा मैं तुमसे कहता हूं। यह ज्ञान हर एक को नहीं देना चाहिए। यदि ऐसा ही कोई शान्त चित वाला शिव भक्त शिष्य होतो उसे ही दे। क्योंकि ऐसा ही महा धैर्यवान् योगी जिसे समाधि अवस्था प्राप्त हो वही शिवरूपसे परिपूर्ण होता है। परन्तु जिसका चित्त समाधि से परिचित नहीं और अधीर हो उसका भी एक उपाय है। ऐसे पुरुषको चाहिए कि वह गुरु के मुखसे सुनकर शिवजीके ध्यानमें परायणहो योगाभ्यास करे और जिससे तीनों पदार्थोंकाज्ञान होताहै ऐसे त्रिपुटीमेंध्यान करनेके लिये यम नियमादि का अभ्यास करे। नित्य प्रणवमें मन लगावे। यदि कभी शरीर शिथिल पड़ जाये और शरीर न चलता होतो केवल शिवजी को स्मरण करता रहे। इससे भी सदाशिवके प्रसादसे नन्दी द्वारा प्रेरित हो वह पुण्यात्माओं के लोक में जाता है। कैसे भी हो उसे उत्तरायणकी प्राप्ति हो जाती है।

* बाईसवाँ अध्याय *

(एकादशी–पद्धति)

स्कन्दजी बोले-हे मुनि! अब एकादशी-विधि सुनिये! ग्यारहवें दिनके आने पर जो विधि कही गई है वह मैं आपके स्नेहसे कहता हूं।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

एक वेदी को शुद्ध लीप कर पश्चिम पूरव पांच मंडल बनावे और उसमें देवेश्वरी अति वाहिक जैसा पहले कहा गया है, वैसे पांच देवताओं की पूजा करे। इसका एक विस्तृत विधान है और इस प्रकार उनके दिव्य रूपका ध्यान करे। शिवजी की कृपा से क्या नहीं सिद्ध हो सकता? वे सब पर कृपा करने वाले हैं। शिवजी ने अपने पास सब कार्य करने वाली दिव्य और अनुग्रह करने वाली ऐसी पाँच मूर्तियों स्वीकार करली हैं। उन शिवात्म देवताओं का ध्यान करके उनके चरणोंमें शंखके जल विन्दु समर्पण करे। सविधि और भी बहुत-सी पूजा करे। "ॐ भूर्भुवः स्वहः" इस मन्त्रसे प्रोक्षणादि करे और धूपदीप देकर प्रदक्षिणा और नमस्कार कर सिर पर अंजलि धारणकर प्रार्थना करे कि, हे माताओं! तुम प्रसन्न होकर इस यति को शिवचरणों में रक्षित करो। ऐसी प्रार्थना कर किये हुए सब कर्मों को विसर्जित कर उनके प्रसाद को कन्याओं को बांट दे अथवा गउओंको खिलावे। अथवा जलमें डालदे। अन्यत्र कहीं न डाले। इसी प्रकार उनका पार्वन श्राद्ध करे। क्योंकि यति का एकोद्दिष्ट श्राद्ध नहीं होताहै। इसकी भी एक अलग विधि है। इस विधिको करके चार ब्राह्मणों को बुलाकर उनके चरण धो शिवकी सविधि पूजा कर शिवके संमुख भोजन करावे। फिर गोवर से लीपकर जिस पर पहले ही से कल्पित कुश रखा हो उस पर बैठ प्राणायाम करके कहे कि मैं पिंडोंकोदान करता हूं ऐसा संकल्प करके तीन मण्डलोंका अपने पर मात्मा, अन्तरात्मा और आत्माके लिये पूजा करे तथा चतुर्थीको अन्त तकइसका विचार करे कि हमने आत्माको पिंड दिया है, फिर पिण्ड दे। फिर कुशसे जल छिड़क कर प्रदक्षिणा और नमस्कार करे। ब्राह्मणोंको दक्षिणादे। उसी स्थान में नारायण वलि करे। फिर रक्षाके लिये विष्णु की महापूजा का अलग विधान है। अन्तमें वेदपाठी बारह ऐसे ब्राह्मणों को जिनका केशवादिक नाम हो-बुलाकर उन्हें गन्ध अक्षत और पुष्पसे पूजदेवे। फिर उपानह तथा छत्र देकर भक्ति पूर्वक विविधि शुभ वचनों द्वारा यथा विधि सन्तुष्टकरे। कुशाओं पर पायस वलि करे। मुनीश्वर

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

यह एकादशकी विधि मैंने कही। हे द्विज ! अब द्वादशीकी विधि सुनो-

* तेईसवाँ अध्याय *

[शिष्य वर्ग वर्णन]

स्कन्दजी बोले-बारहवें दिन प्रातः उठ स्नान तथा आन्हिक कर्मसे निवृत्त हो शिव-भक्त यति अथवा शिव-प्रिय ब्राह्मणों को मध्यान्ह में निमन्त्रण कर स्वादिष्ट अनेक प्रकार के भोजन करावे। फिर उसी स्थान में गुरु पूजन का मनमें सकल्प कर कुशा छूवे। उनके चरण धोवे। पर मेष्ठी स्वरूप गुरू और उनके भी पर गुरु का ध्यान करे। आसन दे, कुशाओं से पूज, धूप, दीप दे, सारी आराधनायें समाप्त करे औरसंपूर्ण शुभमस्तु कहते हुए उठकर नमस्कार करे। देवा, इत्यादि मन्त्र जपते हुए अक्षतों को छोड़े और नमस्कार कर सवंत्र अमृतस्तु, ऐसा कहे। फिर ब्राह्मणोंको भोजन करा स्वयं उनका हाथ धोनेको जल दे। फिर आसनों पर विठा, ताम्बूल दे दक्षिणा में छतरी और पादुकासन अर्थात् पनहीं दे, पंखा चौकी, वेणुदंड देने प्रदक्षिणा और नमस्कार से उन्हें संतुष्ट कर आशीर्वाद ग्रहण करे और फिर प्रणामकरके विदा करे। फिर यह कहते हुए कि आप सर्वदा शिवादि हैं। जैसी इच्छा हो, जाइये। ऐसा कहते हुए द्वार तक उनके साथ जावे और जब ब्राह्मण कहें कि जाओ तबलोट कर कार पर बैठे हुए अतिथियों, ब्राह्मणों, दोनों अनाथों सहित भोजन कर सुखी होवे। इसमें कोई व्यतिक्रम नहीं करना चाहिये। प्रतिवर्ष इसी प्रकार गुरुकी पूजा करता रहे। उत्तम गुरु का आराधक यहां के बड़े-बड़े भोगों का भोग शिवलोक में जा पहुंचता है सूतजी बोले-इस प्रकार अपने शिष्य वामदेव पर अनुग्रह कर श्रेष्ठमहात्मा स्कन्दजी जो दूसरों पर भी अनुग्रह करने वाले हैं प्रसन्न हो फिर कहने लगे कि जो कुछ नैमिषारन्य में मुनियों से व्यासजी ने कहा है वे ही आदि गुरु व्यासजी सब भुवनों में प्रख्यात हैं वही इसे फिर कहेंगे और उन्हींसे सुनकर इस कथा को फिर शुकदेवजी कहेंगे तथा एक-एक के चार-चार शिष्य जो वेदाध्ययन सम्पन्न होंगे वे धर्म की स्थापना करेंगे। उनके नाम हैं वैशम्पायन

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

पैल, जमिनि और सुमन्तु। ये चारों तेजस्वी व्यासके शिष्य हैं और हे मुने! वामदेव! अगस्त्य, पुलस्त्य और क्रतु ये चारों महात्मा तुम्हारे शिष्य हैं और सनक, सनन्दन, सनातन और सनत्कुमार शिवप्रिय योगिवर्य सनत्कुमारजी के शिष्य हैं। यहसभी मुनिमण्डली बड़ी अद्भुतऔर परम शिवका अधिष्ठान रूप है जिसको यतीन्द्रों और वेद के अर्थ और उसके विचारोंको जानने वाली है। इन्होंने ही वेदादिके विभागसेकल्पित पंच महाभूतों से आवृत वेदान्त सिद्धान्त का परम निश्चय किया है जो मोह नाशक, ज्ञानदायक, संतोषदायक और जगत का कल्याण कारक तथा लक्ष्मी का देने वाला है। मुझसे सुनने के कारण पण्डित इसे वामदेव का मत कहते हैं और शिवका ध्यान कहतेहुए ये यति शिवस्वरूप हो जाते हैं और इस प्रकार ब्रह्मा, विष्णु और शिव का भजन कर जैसे नदियों को सागर की प्राप्ति हो जाती है वैसे ही वे उनकी समानता के मोक्षपद को पा मुक्त हो जाते हैं। इस प्रकार वामदेवजी को उपदेश कर स्कन्दजी देव पूजित अपने माता पिता के चरणों को स्मरण कर शिखरावृत कैलाश शिखर पर चले गये। ऐसा दिव्य ज्ञान दे गुरुजी चले गये। फिर वामदेवजीने भी स्कन्दजीकाही अनुसरण किया और कैलाश पर जा शिव पार्वती के चरणों में शिर नवाया। उन चरणोंकी भक्तिसे वे सर्वाङ्ग पूर्ण होगये। फिर उन्होंने पृथ्वी पर गिर कर शरीरशून्य हो इस प्रकार बार-बार नमस्कार कर उठे और वेद शास्त्रोंके आशय पूर्ण अनेकों स्तोत्रों से उनकी स्तुति करने लगे। इन मुनिने अम्बासहित एवं पुत्र सहित शंकरजी की बड़ी स्तुति की। देव देवी के चरण कमलों में शिर नवाया। फिर तो उनकी कृपा पा वहीं रहने लगे। हे मुनियो इसी प्रकार आप लोग भी उन्हीं ओंकारार्थ महेश्वर को जानकर सुख से यहाँ विश्वेश्वर के चरण कमलों में रहिये जो वेदों में गुप्त सर्वस्व तारक मंत्र देने वाला और मुक्ति के दाता हैं। और मैं श्री गुरुदेव के चरण कमलों की सेवा के लिये बद्रिकाश्रम को जाऊँगा। देखें फिर कब आप से मेरा समागम हो। हे मुनीश्वरो! आपने जो पूछा था वह सब मैंने कहा।

॥ इति श्री शिव पुराणस्य कैलाश संहिता सम्पूर्ण ॥

CC-0. JK Sanskrit Academy, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* श्रीशिवमहापुराण भाषा *

[अथ वायवीय-संहिता आरम्भ]

* पहला अध्याय *

(विद्यावतार का कथन वर्णन)

व्यासजी बोले-शिव गणेश और स्वामिकार्तिक तथा सृष्टि उत्पत्ति, पालन तथा संहार करने वाले शङ्करको मैं प्रणाम करता हूं, जिनकी शक्ति अद्वितीय और जो सबमें गमन करने वाले तथा व्यापकता ही जिनका स्वभाव है, उन अजन्मा, विश्वकर्ता, अविनाशी शिव महात्मा, महादेव की मैं शरण हूं। जब धर्म स्थान महा गङ्गा यमुना के सङ्गम-स्थलप्रयाग तथा नैमिषारण्यमें ऋषियोंने फिर यज्ञ का अनुष्ठान किया तो उन अक्लिष्टकर्मा मुनियों के उस यज्ञका वृतान्त सुनकर व्यासजी के पुत्र सूतजी उस स्थान में आये। तब उन्हें आया हुआ देखकर सब मुनि प्रसन्न हो गये और प्रेम पूर्वक विधिसे ऋषियोंने उनका सत्कार पूजन आदि किया, फिर उन्हें सर्व श्रेष्ठ आसन पर बिठाकर प्रार्थना करने लगे-हे सर्वज्ञ शाली सूतजी। आपका आगमन शुभ हो आप सब पुराण इतिहास को जानने वाले हमारे आश्रम पर पधारे हैं। हमारे अहोभाग्य हैं आप तो श्री व्यासजी के शिष्य हो सब कथा रहस्यों को जानतेहो कृपा करके हमलोगों को भी दिव्य कथा रूप अमृत का पान कराइये। इस प्रकार मुनि गणों की प्रार्थना सुनकर श्रीसूतजी ने अपने मनमें पहिले भगवान शङ्कर श्री गणेशजीका ध्यान किया। फिर जगदम्बा पार्वतीजी तथा अपने गुरुदेव को प्रणाम करके बोले-हे मुनियो? अब मैं आपको सभी विद्याओंके रूप पुराणों के प्रकट होने का बृतान्त सुनाताहूं। पुराण क्यों हैं ? श्वेत कल्प के समय वायु देव ने जो कुछ कहा था उन्हीं शब्दों तथा अर्थों से युक्त

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

न्याय से पूर्ण शास्त्रोंके अर्थों से शोभित यथाक्रमही पुराण कहे जाते हैं चार वेद, छः शास्त्र,मीमाँसा, न्याय, धर्मशास्त्र,सभी पुराण इत्यादिकों में चौदह प्रकार की विद्याएं हैं। फिर आयुर्वेद,धनुर्वेद,गन्धर्ववेद,अर्थशास्त्रये चार उन चौदहोंमें युक्त करदेनेसे विद्या अठारहप्रकारकी हो जाती हैं। इन अठारह विद्याओंके उत्पादक भगवान शङ्कर हैं। संसारको बनानेके लिए आपने प्रथम ब्रह्माको उत्पन्न किया और ये अठारह विद्याएं ब्रह्माकोप्रदान कीं। ब्रह्माकी रक्षा के लिए विष्णु को शक्ति प्रदान की विष्णुजी तो ब्रह्माकी रक्षा करने वाले मध्य पुत्र हैं। ब्रह्माजीने अठारह विद्यायें पाकर पुराणों का विस्तार किया। फिर ब्रह्माजी के चार मुखोंसे चार वेद उत्पन्न हुए। उसके बाद अन्य सभी शास्त्र पैदा हुए। हे ऋषिगण! इन पुराणों को स्वयं ब्रह्माजी ही प्रकट करने वाले हैं। अतः इनका पढ़ना समझना पृथ्वी के सभी लोगोंके लिये कठिनथा। यह देख कर परम कृपालु शङ्कर की प्रेरणा पाकर स्वयं विष्णु द्वापरकी समाप्तिके समय व्यास रूप में अवतरित हुए। इन्होंने ही वेदोंका विभागकरके शास्त्रों को संक्षेप रूप में बनाया। इसी प्रकार सभी द्वापर युगोंके अन्तमें विष्णु व्यासरूपमें प्रकट होकर वेदादि विभाग आदि२क्रिया करतेहैं। फिर नवीन-नवीन पुराणों की रचनाएं भी किया करते हैं। इस द्वापर की समाप्ति में सत्यवती पुत्र कृष्ण द्वैपायन नामसे व्यासजी प्रकट हुए हैं। वेदोंको आपने चार भागों में विभक्त किया है। इसीलिये आपका नाम वेद व्यास प्रसिद्ध हुआ है। फिर सामान्य रूपसे पुराण रचनाकी है। संक्षेपमें सभी पुराणोंके चारलाख श्लोक रचे। हे ऋषीश्वरो! जब तक इन पुराणों को न पढ़ा जाय तब तक वेद उपनिषद वेदों के अङ्ग पढ़ने में कुछ भी ज्ञान नहींहोता। पुराण संख्या में अठारह हैं। जैसे कि–ब्रह्म, पद्म, विष्णु,शिव,भागवत, भविष्य, नारद, मार्कण्डेय, अग्नि, ब्रह्मवैवर्त, लिंग, वाराह, वामन, कूर्म, मत्स्य, गरुण,ब्रह्माण्ड,स्कन्द इस प्रकार ये अठारह पुराण हैं। इनमें चौथा शिव महापुराण शैवों की सभी कामनाएँ पूर्ण करने वाला है। इसी शिव पुराणोक्त धर्म तथा विधि के द्वारा शिव आराधना करनेसे ही तीन वर्णों

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

के मनुष्यों तथा देवताओं को शिव कथा से शीघ्र शिव लोक की प्राप्ति होती है। जिसे मुक्ति कहा जाता है। मुक्ति की अभिलाषा से शिव आराधना ही फलदायक है।

* दूसरा अध्याय *

(ब्रह्माजी से मुनियों का प्रश्न करना)

सूतजी बोले-हे ऋषियो ! सर्व प्रथम अनेकों कल्पों के बीतजाने पर जब बाराह कल्प प्रारम्भ हुआ, तब सभी ऋषियों में विवाद छिड़ गया। विवाद परब्रह्म के विषयका था। परब्रह्म कौन है। कोई किसी को कहता था कोई किसी को किन्तु निर्णय न हो सका, तब सभी मिल कर ब्रह्माजी के पास पहुंचे। प्रणाम करके, स्तुति की। ऋषियों पर प्रसन्न होकर ब्रह्माजी बोले-हे ऋषियो ! आप लोग किस कामना से मेरे पास आये हो ? ऋषियों ने कहा-हे स्वामिन् ! हम एक सन्देह रूप अज्ञान के अन्धकार में पड़ गये हैं बहुत व्याकुल हैं कृपा करके हमारा वह संशय निवारण करें। हमें मालूम नहीं कि अविनाशी, नित्य, शुद्ध, चित्त स्वरूप परिपूर्ण परब्रह्म परमात्मा कौन है ? अपनी लीला से संसार को रचकर इसका पालन संहार करने वाला कौन है ? तब इसप्रकार मुनियों का कथन सुनकर ब्रह्माजी ने अपने आसन से उठकर भगवान शङ्करजी का ध्यान किया फिर आकर ऋषियों से बोले—

* तीसरा अध्याय *

(नैमिषारण्य की कथा)

ब्रह्माजी बोले—हे ऋषियो ! जो मन एवं वाणी से अतीत हैं। जो ब्रह्मा विष्णु रुद्र आदितथा मूल इन्द्रियों के साथ सबको रचते हैं। पण्डित जन जिनके परम आनन्द को प्राप्त करके अभय हो जाते हैं जिनकी कृपा द्वारा मुझे परम प्रजापति पद प्राप्तहुआ। जिसके द्वारा सारा ब्रह्माण्ड व्याप्त हो रहा है। जो सारे ब्रह्माण्ड को पैदा करके सब पर शासन करता है। वह अद्वितीय सदाशिव हैं। और कोई भी परब्रह्म नहीं। जो भी प्राणी तत्व रूप द्वारा उस शिव का ध्यान करता है वह मर जाने के

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

बाद सांसारिक बन्धनोंसे मुक्त होकर परम पद पाता है। जो सूर्य चन्द्र अग्नि बिजली आदिको अपने प्रकाश द्वारा प्रकाशित करके सभीविश्व को प्रकाशमय बना देता है श्रुतियों का कथन इसी प्रकार है। इस अद्वितीय महेश्वर शिवजी की अनन्त महिमा जानी नहीं जासकती। इसके समान कोई भी नहीं। यही अनन्त महिमा अखण्ड ब्रह्माण्ड अण्ड को रचने में निपुण उदार गम्भीर माधुर्य मकरन्द से सभी प्राणियों के स्वामियों के भी नाथ अद्भुत लीला वाले भगवान सदाशिव हैं। अपने अन्दर से ही संसार उत्पन्न करते हैं। प्रलय काल में फिर अपने में ही विलीन कर लेते हैं सारा ब्राह्मण इनके आधीन हैं ये ही मनुष्य आदि सभी प्राणियों को प्रपंच में लगाते हैं। इन्हें अज्ञानी दुष्ट पतित अधम देख ही नहीं सकते। भक्त जनही इनका पूजन आराधन करके अपने अन्दर तथा बाहर इनके दर्शन पाते हैं। ये तीन रूपों वाले हैं। स्थूल, सूक्ष्म से भी सूक्ष्म। इनके स्थूल रूप को देवता सूक्ष्म रूप को योगिजन देख सकते हैं। तीसरा सूक्ष्मातिसूक्ष्म नित्य एवं अविनाशी रूप है। वह रूप तो शिवजी के परम भक्त शिव व्रत के अनुकूल चलने वाले ही देख सकते हैं शिवजी वेदों में कहे गये साधनों द्वारा प्रसन्न होते हैं वेदोक्त साधनों से पहले जन्म के पाप पुण्य समान हो जाते हैं। तब भगवान शङ्कर कृपा करने लगते हैं। धर्म के विशेष होने पर अधर्म का नाश हो जाता है। इस प्रकार धर्म के विशेष हो जाने पर उसके द्वारा जन्म जन्मान्तरोंके पाप संग्रहोंके नाश होने पर भगवान शङ्कर की ज्ञान सहित अचल भक्ति प्राप्त होती है। उनके गुण समूहोंकोसमझनेके लिये प्रथम उनकी परम कृपा चाहिये वह साधनों द्वारा मिल जातीहै। फिर कर्म बन्धनों से बिमुक्त होता है निष्काम कर्मों द्वारा शिव धर्म में प्रवृत्त होता है। गुरु अपेक्षित तथा गुरू अनपेक्षित वह धर्म दो प्रकार का है गुरु अनपेक्षित तथा गुरु अपेक्षित धर्म सौ गुना विशेष है गुरु अपेक्षित धर्म द्वारा ही शिव धर्ममें प्रवृत्तहोकर मनुष्य को शिव ज्ञान होताहै फिर उसे संसार आसार दिखाई देता है वह सभी साँसारिक विषयों से निवृत्त

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

होकर भाव साधन में प्रवृत्त हो जाताहै। भाव सिद्ध हो जाने पर ध्यान कार्य में निष्ठाहोतीहै। फिर ज्ञान तथा ध्यानयुक्त होकर मनुष्य योग में प्रवृत हो जाता है। योग से भक्ति, भक्ति से शिव कृपा, शिव कृपा से संसार से मुक्ति होजाती है। फिर तो वह मनुष्य शिव समानरूप होकर शिव धाम पाता है। इसी कारण हे ऋषियों! तुम भी परब्रह्म शङ्करकी कृपा पानेके लिये यत्नकरो मन तथा वाणीके कमल निवृत्त करके निरन्तर अग्नि होत्र करने लग जाओ। उसमें परब्रह्म परमात्मा शिवके ध्यानका अभ्यास करो। उसीके द्वारा सदा शिव में प्रेम को प्रवल करके वढ़ाते जाओ। तुम लोग ऐसा करो देवताओं के हजार वर्ष पर्यन्त महा यज्ञ करने का संकल्प करलो। आरम्भ करके जव यज्ञ की पूर्णता होजा— यगी। तव तुम्हारे मन्त्रों द्वारा आवोहन किया गया वायुदेव तुम्हारे पास आजायगा। उसी से ही तुम्हें अपने कल्याण का मार्ग प्राप्त होगा। उसके वाद तुम लोग परम पवित्र वाराणासी नगरी में चले जाना वहां पिनाक धारी भगवान शङ्कर जगत माता श्री पार्वतीजी के साथ भक्तों पर कृपा करने वाले लीला करते हुए विराजमान हैं इस समय मैं मनो-मय नामक अपना चक्र छोड़ने वाला हूं उस चक्र की नेमि जिस स्थान पर टूट जाय तुम लोग उसी स्थान को अपने महायज्ञतपके लिये पवित्र समझाना वही स्थान मुक्ति दाता होगा यह कहकर ब्रह्माजीने शिवध्यान पूर्वक उस सूर्य के समान चमकते चक्र को छोड़ दिया फिरतो सभी ऋषि ब्रह्माजी को प्रणाम करके चक्र के पीछे २ चल पड़े। वह चक्र चल कर किसी परम पवित्र विशाल भूमि खण्ड पर जाकर गिरा। वहाँ एक बड़ी शिला थी। उसके साथ टकरा कर उसकी नेमि टूट गई। इसी कारण वह पृथ्वी खण्ड परम पवित्र यक्ष गन्धर्वादिकोसे सेवित नैमिषारण्य नाम से विख्यात हो गया। ऋषि लोगों ने वहाँ पर ही महा यज्ञकरने की दीक्षा ग्रहण की। एक समय राजा पुरूरव उर्वशीके साथ विहार करता २ वहाँ आ पहुँचा वह अठारह समुद्र द्वीपों का स्वामी होते हुए भी उस रमणीक भूमि खंड के लिये ललचा गया। मोह में आकर अज्ञान से मुनियों की

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उस स्वर्ण वेदी तक छीनने को तत्पर हो गया। मुनि लोगोंने भी क्रोधमें आकर राजा पर कुशा का प्रहार करके मार गिराया और यह वह भूमि खण्ड है जिस पर बैठकर ब्रह्माजी ने पहले पहिल सृष्टि रचना आरम्भ की थी। इस भूमि खण्डको पाकर ऋषि लोग अत्यन्त आनन्दित हुए।

* चौथा अध्याय *

(वायु आगमन)

सूतजी ने कहा—हे ऋषियो ! उस भाग्यशाली ऋषियों ने उसी नैमिषारण क्षेत्र में भगवान शङ्कर के आराधन में महान यज्ञ किया उन्होंने दस हजार वर्ष में जाकर उस यज्ञको पूर्ण किया तब ब्रह्माजी की प्रेरणा पाकर वायुदेव नैमिषारण्य क्षेत्र में आ गये उनके देखते ही ऋषि लोग आसनों से उठ खड़े हुए। वायुदेव को उत्तम आसन पर बिठाकर सत्कार करके स्वयं बैठे। तब वायुदेव बोले—हे ऋषियो ! आप लोगों का यह महायज्ञ तो निर्बाध हो रहा है। कोई देव शत्रु दानव तो विघ्न पहुँचाने नहीं आ पहुँचा ? फिर आप लोगों को कोई प्रायश्चित तो नहीं करना पड़ा और कष्ट तो नहीं हुआ ? आप लोगोंने शास्त्र स्तोत्र आदि से देवताओं को तथा पितृ-कर्मों से पितरों को पूजकर क्या यज्ञ विधि विधान पूर्वक पूर्ण करलिया है ? अब आपका इस समय क्या विचार हैं ? इस प्रकार वायुदेवका कथन सुनकर ऋषि बोले-हे वायु देव ! सुनियेहमलोगों ने अपना अज्ञान अन्धकार दूरकरने के लिये ब्रह्माजी का आराधन किया था। तब प्रसन्न होकर उन्होंने इस महायज्ञ के लिए कहा। साथ में ब्रह्मा विष्णु रुद्र आदि देवों के स्वामी पर ब्रह्म परमेश्वर भगवान को संतुष्ट करने के लिये शिव मन्त्र के जपन करने को निर्देश था। और इसी के सहारे आपके शुभ आगमन के लिये भी ब्रह्माजीने कहा था आप उनके कथनानुसार यहाँ पधारे हैं हमें निश्चय होगया कि हमारे दस हजार वर्ष के महायज्ञ की पूर्णता हुई। आपके दर्शन करने से हम अपने आपको सफल एवं कृतार्थ समझ रहे हैं।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGangotri Foundation

* पांचवां अध्याय *

(शिव तत्व वर्णन)

ऋषि बोले—वायुदेव ! सबसे प्रथम आप हम लोगों को यह कहें कि आपने यह ईश्वरी ज्ञान किस प्रकार पाया और जिनका जन्म अप्रकट है ऐसे ब्रह्माजीसे शिव भाव आपको कैसे मिला ? यह सुनकर वायुदेव बोले—ऋषियों ! प्रथम जब इक्कीसवां श्वेतरूप नामका कल्प लगा। तब ब्रह्माण्डकी रचनाके लिये ब्रह्माजीने शिवको प्रसन्न करने के लिये कठोर तपस्या की। उसके द्वारा सन्तुष्ट होकर प्रकट हो, अपना स्वरूप दिखाते हुये शिवजी ब्रह्म ज्ञान का उपदेश करने लगे। हे ऋषियो ! अपने तपके प्रभाव से उसी ब्रह्म ज्ञानको मैंने ब्रह्माजी से पाया। ऋषि बोले-अस्तु अब यह कहिये परमानन्द प्राप्ति कराने वाला परम पवित्र वह ब्रह्मज्ञान फिर आपको कैसे मिला। वायु बोले-प्रथम जो मैंने पशु पाशपतिसंज्ञयक ज्ञान प्राप्त किया। सुख इच्छुक पुरुषों को उसमें परम—निष्ठा रखनी चाहिये ज्ञान से ही अज्ञान द्वारा उत्पन्न दुःख दूर होता है। ज्ञान ही तो वस्तु विनाशक है। देखो जीव तो चेतन है और प्रकृति जड़ है इस कारण यह दो वस्तु हैं। इन दोनों का नायक ज्ञान है। वही ज्ञान पशुपात एवं पति इन तीनोंके क्रमसे अक्षर क्षरतथाक्षर अक्षरसे अतिरिक्त तीन संज्ञाओं का है। अक्षर तो पशु है। क्षर पाश है एवं क्षर अक्षर से बाहर पति संज्ञक है। ये तीनों नाम तत्वज्ञ कहते हैं क्षर प्रकृति है अक्षर पुरुष है इन दोनोंका प्रेरक परमेश्वर परे से भी परे वह दूसरा है। प्रकृति तो माया है माया से युक्त मूल कर्मका सम्बन्ध रखने वाला पुरुष है इन दोनोंके प्रेरक शिवपरमेश्वर हैं। माया तो महेश्वर की शक्ति है माया से ढका हुआ चिद्रूप उस चिद्रूपको भी ढक देने वाला मल है। वह शिव द्वारा स्वयं कल्पित है वह मल महा अन्धकार है उससे बाहर परमेश्वर शिवका शुद्धस्वरूप है। जीव कर्म फल भोगने के लिए व्यापी माया से आच्छादित रहता है कला आदि से वह उत्पन्न होता है। फिर जल मल का नाश हो जाता है तो वह जीव भी मुक्त हो जाता है। ऋषि बोले-

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

हे वायुदेव ! कालादि किसे कहा जाता है। उसका कर्म क्या है? एवं उसका फल तथा आशय क्या है? भोग किसे कहते हैं? कौन से भोग के साधन हैं? मल विनाश का क्या हेतु है? मल विनाश हो जाने के वाद पुरुषका क्या रूप होजाता है? यह सब कुछ स्पष्ठ रूप से हमें वर्णन करके सुनायें। वायु बोले-कला, विद्या, राग, काल एवं नियति इत्यादि हैं। इनका भोक्ता पुरुष है। सुख, दुःख रूप फल देने वाले कर्म पुण्य पाप करके दो प्रकार के हैं अनादि मल भोग के समाप्त हो जाने तक अज्ञान तो आत्माके साथ रहता है। भोग कर्म विनाश के लिये है। यही प्रकृति अर्थात माता कहाती है। अन्तःकरण तथा वाह्यइन्द्रियों के द्वार वाले इस शरीर को ही भोगका साधन कहा है। जव भावना विशेष होजाती है तब शिव की कृपा होती है उससे मल विनाश होता है इस मलके नष्ट होजाने पर मनुष्य शिवजी के स्वरूपकी समता पा लेता है। विद्या दिक्त्रय भावनाका ज्ञान कराती है। रागको कला बढ़ाती है उसका नाशक काल है। देवशक्ति उसकी नेता है जो अप्रकट है और तीन गुणों वाला हैं, ऐसा होने पर प्रधान प्रकृति नामसेकहाता है। उसकी कला से अभिव्यक्त एवं अनभिव्यक्त लक्षण कहे गये हैं। सुख, दुःख में मोहित होकर जो आत्मा हैउस कला वाला पुरुष प्रकृति जन्यसत्व, रज, तम, इन तीन गुणोंको भोगता है। सुख के कारण रूप दुःख को साधारण राजस एवं प्रवृत्ति निवृत्ति रहित स्तम्भ तथा मोह ये दोनों तामस कहे गये हैं। सात्विककी गति उर्ध्व है। राजसकी मध्यम एवं तामस की अधोगतिकही गई है। पञ्च भूत,पंचतन्मात्रा, पञ्च ज्ञानेन्द्रिय, पंच कर्मेन्द्रिय, प्रधान बुद्धि,मन, अहङ्काह ये चारों अप्रकट विकार युक्त हैं। इनके हेतु दशा प्राप्त करके अव्यक्त कहाता है। ये शरीर आदि तो कार्यहै प्रकट हुए घड़े की तरह व्यक्त कहाता हैं ये शरीर आदि व्यक्त अव्यक्त से भिन्न नहीं, जैसे मिट्टी के घट कार्य भिन्न नहीं। इसलिये अव्यक्त ही कर्मोंका एक कारण है उसके भोगनेके योग्य कर्म शरीर आधारहै। वुद्धि, इन्द्रिय एवं शरीर से व्यापी को व्यतिरेक तो है किन्तु आत्मा का कारण समझना

CC-0. JK Sanskrit Cell, Jammu Collection.

Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दुर्बोध है। श्रेष्ठ पुरुषोंने आत्मा को इन्द्रिय शरीरादिसे भिन्न माना है। इसी कारण इनसे भिन्न ही आत्मा है। इसमें संशय नहीं कि वही कर्मों का फल भोगता है। सम्पूर्ण जगतके मध्यमें रहने वाले ईश्वरसर्वज्ञ सर्व अगोचर अन्तर्यामी नामसे विख्यातहै उन्हें वेद वेदान्त इस प्रकारसेगायन रूप धारण करने वाले ज्ञानी पुरुषों को दिखाई देतेहैं, विशेष क्या कहा जाय वे देहों से भिन्न हैं जो उन्हें भिन्न नहीं मानते वे अज्ञानी हैं। शरीर तो नश्वर पराश्रित दुखों की खान है। वार-बार नष्ट हो जाता है। जीव एक शरीर में स्थितनहीं रह सकताहै। जन्म मरण के संसार चक्रमें पड़कर यह घूमता रहता है। भिन्न-भिन्न देहों में आत्मा का प्रवेश होताहै, इसी कारण इसकी वृत्तियाँ भिन्न-भिन्न मालूम होती हैं। वास्तव में है एक। यह आत्मा किसीकी नहीं न इसका कोई है। देहके मध्य रह कर देह को ही देखता है देह इसे नहीं देख सकती। शरीर एवं देह का दृष्टा तो कोई दूसरा है। किन्तु ये दोनों उसे नहीं देख सकते। यह जीवात्मा ज्ञान हीन होकर परमेश्वर से प्रेरणा पाकर सुख दुःख भोगने के लिए स्वर्ग नर्क में जाता है।

* छटवाँ अध्याय *

(शिव तत्व ज्ञान वर्णन)

ऋषि बोले-हे वायु देव ! पशु एवं पाश इन दोनों का आपने वर्णन किया। इनका स्वामी कौन है? वायु बोले-हे ऋषियों ! पशु पाश का निवारक परमेश्वरहै। वह सर्व व्यापक गुणस्थान निर्माता है बिना उसके संसार निर्माण नहीं हो सकता। ईश्वर की प्रेरणा पाकर पशु अर्थात् जीव कर्तृत्वके रूपमें भासमान होताहै वस्तुतः कर्ता नहीं। परमात्माही कर्ता है जैसे नेत्रहीन पुरुषको कुछ नहीं दिखाईदेता वैसे ही प्राणियों को ईश्वर नहीं दीखता। प्राणियोंके दिव्यनेत्र प्रधान मायासे ढके हुए हैं इसी कारण ईश्वर नहीं दीखता। जब पशुपाश तथा पतितीनोंकोज्ञानप्राप्त होताहैतब ब्रह्मज्ञानियों को मुक्ति मिलती है। संसार रूप बन्धन में जकड़ लेने वाले परमात्माक्षर अक्षरके संयोगद्वारा व्यक्त अव्यक्त को धार लेते हैं वहाँविश्व है और वही विश्व- विनाशक रहते हैं। भोक्ता योग्य एवं प्रेरक ये तीनों

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

माननीय हैं। विद्वान लोग इनसे आगे नहीं जानते परमेश्वर मायावी है वह अपनी ईशानी शक्तियों से अकेला ही सम्पूर्ण सँसारको अपने आधीन कर लेता है वह सदाशिव है विश्वकीसृष्टि स्थिति संहार करने वाला है। सारा विश्व इस विराट पुरुष के नेत्र, भुजा, मुख आदि हैं। आकाश, पृथ्वी आदि रचयिता केवल भगवान् शङ्कर हैं। वहां देवों के आदि देव ब्रह्माको रचतेहैं सभी देवों के पालन आदि कार्य भी वही करते हैं। नेत्रों के बिना ही वे सब कुछ देखते हैं, बिनाकान सुनते हैं, छोटे बड़े अणु परमाणु सबमें वही एक निवास करते हैं। अतःपुराण पुरुष हैं। अपनी शक्ति द्वारा अकेले ही त्रिलोकी की रचना करते हैं और रच कर फिर इसे नाश भी कर देते हैं इस विश्व रचना के अद्भुत कार्य करने वाली यह शिव-शक्ति अजानाम करकेहैं। उसका बर्णलोहितशुक्ल तथा कृष्ण है। अपने समान रूप वाले दूसरे से यह सेवित उत्पन्न करने वाली है इसीके साथ पुरुष सोता है, उपभोग करने के बाद इसे त्यागभी देता है संसार रूपी वृक्ष की भाँति अवस्थावाले जीवात्मा एवम् परमात्मा रूप दो पत्ते हैं, इन दो में जीवात्मा अपने किये कर्म भोगता है परमात्मा इसको दृष्टा रहता है। सदाशिव अकेला है और अनेकों प्रकार से एक एक को रचकर उसमें अपने ईश्वर का अधिकार भी स्थापित करताहै। दसों दिशाओंमें अपना तेज प्रकाश फैला देता है फिर भी वह अद्वितीय उदासीन होकर रहताहै। गुह्योपनिषदमें में लिखा है कि इस परब्रह्मकोतो देवता तथा ऋषियोंने जाना है जोकिगुह्योपनिषदमें छिपे जगत्के आदि ब्रह्माको रचने वाले हैं और इस भावनासे प्राप्य अनीहभाव तथा अभाव एवं कलाके रचने वाले हैं इन्हें जानकर ही मनुष्य जन्म-मरणके चक्र से मुक्त हो जाता है। सबके स्वामी स्थिति पालन संहार करने वालेहैंइनका उत्पादन तथा इनका स्वामीकोई नहीं। सबकी कामना पूरक मोक्ष प्रदाता अविनाशी हैं। इनके ज्ञान द्वारा भव बन्धनों से मुक्ति होती है। ब्रह्मको पैदा करके वेद पढ़ाने वाले सदाशिव के भजन से मोक्ष की इच्छा करनी चाहिए। जो अमृत के परमसेतु हैं,जलते हुए काष्ठकी अग्नि के समान

CC-0. ASI Shimagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyan Kosha

हैं, चर्म की भांति आकाश को ढक रहे हैं। परब्रह्म शिवके ज्ञानके बिना मुक्ति नहीं मिलती। इन्हीं कारणों से सर्व व्यापक परब्रह्म सदाशिव हैं। सदा उन्हीं का ध्यान करना चाहिये।

* सातवां अध्याय *

(काल महिमा वर्णन)

ऋषि बोले—यह साराविश्व सारीसृष्टि जिसके आधीन होकर सृजन संहार रूप से चक्रकी भांति निरन्तर चलता है, जिसके द्वारा सभी कुछपैदा होता है फिर नाश भी हो जाता है। ऐसा प्रचण्ड काल कौन है जिसके आधीन रहता है और इसके कौन-कौन आधीन हैं। इस रहस्यको हमें वर्णन करके सुनायें। वायु बोले—हे ऋषियो! कलाकाष्ठा निमेष आदि से युक्त शरीर वाला यह काल भगवान है यह भगवान शङ्कर का ही तेजरूप है इसका कालात्मानाम प्रसिद्ध है चराचर सृष्टि में कोई भी इसका बाधक नहीं। ईश्वरकी इच्छा से ही यह विश्वम्भरका नायक बन रहा है। महेश्वर की अंशाशा रूप शक्ति इस कालात्मामें कार्य कर रही है इसीके द्वाराही यह विश्व को आधीन किए हैं और आप स्वच्छन्द रहता है। यह काल सदाशिव के आधीन है क्योंकि शिवशक्ति इसमें विद्यमान है तभी तो इसका रोकना महा कठिन है। कोई भी इसका उल्लंघन नहीं कर सकता यह अपने बल से ही त्रिलोकी पर अरना अखण्ड राज्य कर रहा है। शिवशक्ति द्वारा यह भी सबको इच्छित अनिच्छत सुख दुःखका फलदेने वाला है। समय समय पर यह शीत उष्ण वायु चलाता है समयानुसार मेघ जल बरसा देते हैं। समय-समय पर ही सूर्यनारायण अपनी तीक्ष्ण किरणोंसे जगतको तप्त करते हैं। फिर शान्त भी कर देते हैं, समयानुसार खेतोंमें अन्नादिक पैदा हो जाते हैं वृक्षादिकों में फूल-फल भी समयानुसार लगजाते हैं। इन्हीं करणों से यह कालभगवान् शिवशक्तिद्वारा जगत को जीवन देता हुआ कारण बनरहा है जो इस काल तत्वको तत्व रूप से समझ जाते हैं, वेही इसका उल्लंघन करलेते हैं। फिर जाकरउनको परमेश्वर शिवजीके दर्शन हो जाते हैं।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* आठवां अध्याय *

(तीनों देवो की आयु का वर्णन)

ऋषि बोले—हे वायुदेव ! अब आप कृपा करके आयु का परिमाण एवं संख्या सुनाइये। वायु बोला-हे ऋषियो ? हम पहिला आयु का परिमाण निमेषमात्र ही कह आये हैं। वैसे तो प्रलयकाल तकही संख्यारूप काल की पूर्ण अवधि है। जब पन्द्रह निमेष व्यतीत होते हैं तब काष्ठा होती है। तीस काष्ठाओ के व्यतीत होने हर एक कला होती है। तीस कलाओंका एक मुहूर्त, तीस मुहूर्तों का एक दिन-रात, पन्द्रहदिन-रातों का एक पक्ष, यह पक्ष शुक्ल कृष्ण नामसे दो प्रकारकाहै। फिर दो पक्षों का एक महीना। दोनों पक्ष पितरों के दिन-रात हैं। कृष्णपक्षमें पितरोंकी रात है और शुक्लपक्षमें दिन होता है। लौकिक मानसे जब छःमहीने गुजरते हैं तो एक अयन होता है,इस प्रकार जब दो अयन होते हैं तो मनुष्योंका एक वर्ष होता है। मनुष्यों का साल भर देवताओं का दिन-रात होता है। मनुष्योंकी एक अयन दक्षिण दूसरी उत्तर इसप्रकार दक्षिणायन होने पर देवताओं की रात तथा उत्तरायण होने पर दिन होता है। मनुष्योंके तीन सौ आठ वर्ष देवताओंका एक वर्ष गुजरताहै। इस प्रकार देवताओंके वर्षों से युगों की गणना की जातीहै युग चार होते हैं। सत्य युग, त्रेता,द्वापर तथा कलियुग देवताओं के चार सहस्र वर्षों का सतयुग होता है, इसमें चारसौ वर्ष सन्ध्या तथा चारसौ वर्षों का संध्याँश होता है। सतयुगको छोड़कर बाकी सभी युगोंकी संध्या एवं संध्यांशके साथ प्रमाण से एकपाद कम रहते हैं। जैसे कि तीस हजार वर्ष त्रेता के होते हैं। उनकी दो सौ वर्ष सन्ध्या इतने ही वर्ष संध्याँश। कलियुग एक हजार वर्ष का हैं उसकी सन्ध्या एक सौ वर्ष तथा सन्ध्यांश भी एकसौ वर्ष का ही होता है। इस प्रकार सतयुग से लेकर सन्ध्या, सन्ध्यांश के साथ सभी युगों का बारह हजार वर्षोंका वर्ष प्रमाणहोताहै। जब यह चारों युग (सतयुग,द्वापर, त्रेता,कलियुग) एक हजार वर्ष गुजर जाते हैं तो एक कल्प हो जाता है। इसप्रकार इकहत्तर चतुर्युगीका एकमन्व

CC-0. ASI Srinagar Circle Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Cyaan Kosha

न्तर होता है। एक ही कल्प के मध्य में चौदह मनु हुआकरते हैं। इस प्रकार गणना करते-करते सैकड़ों हजारों मनु मन्वन्तर कल्प आदि अब तक गुजर गये हैं। न कोई जान सकता है न गिन सकता है। अव्यक्त रूप परब्रह्म शिव द्वारा पैदा हुए ब्रह्माका कल्प नामका एकदिन एवंकल्प का एक वर्ष कहा जाता है जब आठ हजार वर्ष बीतजाते हैं तो ब्रह्माका एक युग हो जाता है। हजार युगों का एक सवन होता है।

इस प्रकार तीन हजार सवनोंका समय जब बीत जाता है, ब्रह्माकी आयु पूर्ण हो जाती है। ब्रह्माका एक दिन पूरा होने पर चौदह इन्द्रहो जाते हैं। यही इद्र ब्रह्मा के एक महीने में चारसौ बीस होते हैं। एक साल में पांच हजार चालीस होते हैं, ब्रह्माकी आयु में पांच लाख चालीसइन्द्र उत्पन्न भी होते हैं। और मर भी जाते हैं। इस प्रकार ब्रह्माकी पूरीआयु विष्णु का एक दिन रुद्र का जब एक दिन होता है। विष्णु की आयुपूरी होती है ईश्वरका जब एक दिन होता है। तो रुद्रकी आयु पूरी हो जाती है, इस प्रकार कालकी गणना की गईहै। सदाशिवकी पाँचलाख चालीस हजार साल की आयु होने पर सारी सृष्टि पैदा होती है,संहार भी होता है सबका नाश हो जाता है किन्तु परब्रह्म सदाशिवका नाश नहींहोता। सदाशिव पर तो कभी कालात्मा आक्रमण नहीं कर सकता। ये सृष्टिका सभी कालान्तर ईश्वर का एक दिन एवं इतना ही समय एक रात परमेश्वर के एक दिन में सृष्टिको उत्पत्ति तथा रातमें संहार होता है। इस प्रकार से ईश्वर काल गणना केवल लोगों के हितके अर्थ की गई है, बस्तुतः परमेश्वरकी न कोई रात है दिन।

* नवाँ अध्याय *

(प्रलय कर्ता का वर्णन)

ऋषि बोले—हे वायुदेव ! आपने बड़ा अद्भुत आख्यान सुनाया,अब संसारकी रचना भली-भाँतिसे हमें सुनानेकीकृपाकरें। वायुबोले-ऋषियो ! सुनो,सर्व प्रथम सर्वशक्ति सम्पन्न पर शिव ब्रह्मसे शक्तिकी उत्पत्ति होती हैं। वह शक्ति माया होती है,माया से फिर प्रकृति पैदा हो जाती है।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

सर्व प्रथम उत्पन्न हुई शक्तिके आगे शान्त्यतीत पद होता है. उसके आगे विद्या पदके आगे प्रतिष्ठा पद उससे आगे निवृत्त पैदा होता है। ये तो शङ्कर प्रेरणा की साधारण सृष्टि हुई इन सबकी अनुलोभ से उत्पत्ति तथा प्रतिलोभ से नाश होता है। इन पाँचों पदों का उद्देश्य क्या है वह तो परस्रष्टाकी भी इच्छा नहीं करता तभी तो यह जगत् पाँच कलाओं से पूर्ण एवं अप्रकट कारण रूप है। इसके मध्यमें स्थित सभीकुछआत्मा से अनुष्ठितहै महत् आदि से आरम्भ करके विशेष तक रचना होती हैं। इसी कारण सर्वज्ञ सर्व शक्तिमान अनादि अनन्त महेश्वरसदाशिव ही सृष्टिकी रचना, पालन, संहरादि कार्य किया करतेहैं अन्वयसे रहितहैं। सृष्टिकी आदिसे समाप्ति तक ब्रह्मा के सौ वर्ष गुजरते हैं। यह सौ वर्ष ब्रह्माकी पूरी आयु होती है ब्रह्मा की आयु के दो भाग किये गये हैं। प्रथम परार्द्ध, द्वितीय परार्द्ध दोनों परार्द्धों की समाप्तिसे ब्रह्माकी आयु समाप्त होती है। तव अव्यक्त आत्मा अपने मध्य कार्य को ग्रहण करलेता है। इस कार्य जगत का अव्यक्त में समावेश होने पर विकारके संहार होने पर प्रधान तथा पुरुष ये दोनोंधर्मके सहित रहते हैं सत्वएव तमोगुण युक्त अनन्त दोनों प्रकृति पुरुष समानहैं परस्पर ओत-प्रोत होकर मिले रहते हैं। जब ये दोनों गुणोंमें समान हो जाते हैं तव अंधकार के कारण ये पृथक-पृथक नहीं किए जा सकते। उस समय जब शान्त वायु द्वारा निश्चल होता है उसमें कुछ भी ज्ञात नहीं हो सकता तव अज्ञात जगत् के मध्य में अद्वितीय महेश्वर अपनी माहेश्वर रूप रात्रिका सेवन करते हैं फिर प्रात होने पर महेश्वर महायोग द्वारा प्रकृति पुरुषसे प्रवृष्ट हो जाते हैं तव इन दोनोंमें क्षोभ उत्पन्न कर देते हैं तभी महेश्वरजी आज्ञा द्वारा अव्यक्त से चराचर सभी प्राणियों की उत्पति होने लगती है।

* दसवाँ अध्याय *

(सृष्टि-रचना वर्णन)

सबसे पहले ईश्वर की प्रेरणा से पुरुष रूप से जो अधिष्ठित हुआ है उस अव्यक्त से वुद्धि आदि से लेकर विशेष तक क्रमशः वकार उत्पन्न

CC-0. ASI Srinagar Circle Jammu Collection.

Digitized by Jangamwadi Math Varanasi Gyaan Kosha

होते हैं उसके बाद उन विकारों से सर्व कारण रूप रुद्र विष्णु ब्रह्मा से तीन देवता तथा सर्व व्यापिनी अभेद्य शक्ति अपरिमत ज्ञानादि सभी अणिमादि वेभवों केसाथपैदाहुए। इन तीन देवताओंका क्रमशः सर्जन पालन,संहार ये तीन कार्य हुए। ये सभी रुद्रआदि ईश्वरत्वयुक्त हैं ऐसा देखकर महेश्वर प्रसन्न हुए। एक कल्प समाप्त हो जाने के बाद दूसरे कल्प के आरम्भमें फिर इन तीनों देवों को जोकि स्पर्द्धा बुद्धिमोह युक्तथे उन्हें सर्जन आदि काम महेश्वरजी ने दे दिये। ये तीनों देवता एक दूसरे से पैदा होकर एक दूसरे को धारते हैं। एक दूसरे से वृद्धि तथा अनुसरण करने वाले हैं। परस्पर एक दूसरे की ब्रह्मा, विष्णु रुद्र कभी कभी प्रशंसा भी करतेहैं। तभी तो एक दूसर से अधिक तथा कम नहीं हो पाते इन्हें एक दूसरेसे किसीको अधिक माननेवाला मूर्खपिशाच तथा राक्षस योनि पाता है प्रधान से प्रथम बृद्धि ख्याति बुद्धि एवं महत्तत्व पैदा हुए। महत्तत्व के क्षोभसे तीन प्रकार के अहङ्कार उत्पन्न हुए। अहङ्कार से पांच महाभूत तन्मात्राइन्द्रियाँ पैदा हुई विकृत अहंकार के सत्वगुण से अतिरिक्त सात्विक तत्व उत्पन्न हुआ। वैकारिक सृष्टि तो एक साथ ही ज्ञानेन्द्रिय पाँच, कर्मेन्द्रियां पांच तथा मन है। तमोगुणो अहंकार पाँच महाभूत पंचतन्मात्रा आदिसे उत्पन्न ग्यारहवाँ मन अपने गुण द्वारा दो प्रकार का होता है। सम्पूर्ण प्राणियों से प्रथम आदि भूत होता है। उस आदि भूतसे शब्द गुणवान आकाश पैदा होता है फिर आकाशसे स्पर्श गुण उससे वायु,वायु से रूप गुण,रूपसे तेज, तेजसे रस गुण,उससे गन्ध गुण, गन्धसे पृथ्वी पैदा हो जाती है फिर इन पाँच महाभूतों द्वारा सारा संसार निर्मित हो जाता है। ये पांच महाभूत अव्यक्त महेश्वरी की कृपा द्वारा पुरुष से अधिष्ठित रहते हैं। तव महदादिक से आरम्भ कर विशेष तक इस अण्ड को उत्पन्न करते हैं। उस समय कार्य कारण सेसिद्ध हुआ ब्रह्म उस अंड में वृद्धि पाकर ब्रह्मा नाम करके क्षेत्रज्ञ हो जाता है यही सर्व प्रथम शरीर धारी पुरुष है। सम्पूर्ण प्राणियों से पहिले उत्पन्न हुआ यही आदि कर्त्ता एवं ब्रह्मा कहाता है अव्यक्त की प्रेरणा द्वारा इसके मनसे

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनेकों मनोरथ पैदा होते हैं और किसी प्रकारसे नहीं। इसका तीनों गुणों को अपने आधीन रखने का स्वभाव है। और उन तीनों गुणोंकी अपेक्षाभी इसे होती है। उन्हीं तीनगुणों द्वारा फिर अपने शरीर के तीन विभाग कर देता है। सृष्टिकार्य में ब्रह्मका भागसंहार कार्य में रुद्र पालन कार्य में सहस्र शीर्ष विष्णु होता है। वह नायक रहता है। यह नायक विराट रूपमें होजाता है स्वर्णमय सुमेरू पर्वत उसका गर्भ बन्धन होता है। समुद्र जल गर्भ तथा गर्भाशय होता है। उस अंडमें लोकहैं लोकों में सूर्य चन्द्र,नक्षत्र,वायु आदि रहते हैं। उनके साथ-साथ विश्व व्याप्त हो रहा है। इससे दशगुना बढ़कर जल इस अंड़ेको ढक रहा है। जल से दसगुना तेज, तेज से दशगुना वायु वायु से दश गुना आकाश फिर उसे आदि भूत ढकरहे हैं उन्हें पांच भूतादि, इनको फिर महत्तत्वादि महत्तत्वादि को प्रकृति चारों ओर ढके रहती हैं यह सात आवरण हैं जिनसे अण्ड आवृत रहता है। ये सब आठ प्रकार की प्रकृतियाँ हैं। अंड के बाहर परस्पर एक दूसरे को ढककर स्थित हैं। सृष्टिके रचनाआदि कार्य कर्ता तीनों देवता एक दूसरे से पैदा होकर एक दूसरे को धारणकिये रहते हैं आधार आधेयभाव वाले जितने विकारी हैं उनमें विकार रहता है। अपने अङ्गोंको संकुचित तथा विस्तृतकर देने वाले कछुए की भाँति यह अव्यक्त विकारोंको रचते हैं फिर अपने में छुपा लेते हैं। अव्यक्त द्वाराही सम्पूर्ण संसारक्रमशः निर्मित होता है और विपरीत उसके क्रमश लयभी होजाताहै। काल के आधीन होनेके कारण गुण भी सम तथा विषम हुआ करते हैं गुणों की कमी एवं विशेषता होने परही सृष्टि की रचना होती है। इनका समानत्व होने पर प्रलय होजाती है। ब्रह्मा की योनियही है। महा कठिन अंड ही ब्रह्माका निश्चयात्मक क्षेत्र है। तभी तो ब्रह्म क्षेत्रज्ञ हैं। प्रकृति सर्व गामिनी है इसी प्रकार इसप्रकार के सहस्रशः कोटिशःअंड रहा करते हैं उन-उन अण्डों में चतुर्मुख विष्णु तथा रुद्र इन देवोंको प्रकृति रचती हैवे तीनो देवता शिवजीकीसमीपतापाकर स्थिर रहते है महेश्वर तो व्यक्त से भी परे हैं। व्यक्त से अव्यक्त अव्यक्त

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

से अण्ड, अण्डसे ब्रह्मा पैदा होता है फिर यही ब्रह्मा सम्पूर्ण लोक रचता है पहिले प्रवृत्त होने वाली प्रधान सृष्टि तथा प्रलय काल में सबकाप्रलय ये दोनों कार्य तो केवल परमेश्वर की लीला मात्र हैं। सम्पूर्ण सृष्टि के अतुल कारण प्रकृतिसे पैदा हुए ब्रह्मा आदि अन्त मध्य रहित हैं अन्त पराक्रम श्वेत रक्त वर्ण वाले एवं पुरुष संयुक्त हैं।

* ग्यारहवाँ अध्याय *

(सृष्टि की आदि का वर्णन)

ऋषि बोले—वायुदेव ! अब हमें सारे मन्वन्तर एवं कल्प तथा उन मन्वन्तरों में तथा कल्पों में होने वाले सर्ग प्रति सर्ग का वर्णनकरकेसुनायें वायु बोले–ऋषियो ! सुनिये सर्व प्रथम ब्रह्माउत्पन्न होते हैं उनकेएकदिन में चौदह मन्वन्तरहो जातेहैं असख्य होने के कारण उन मन्वन्तरोंकापूर्ण रूपसे ज्ञान नहीं हो सकता। अब मैं इस समयके कल्प की प्रवृत्तिका उदाहरण देकर कहता हूं। आप लोग फिर अन्य कल्हों की कल्पना इसी के अनुसार कर लेना। अब इस समय बाराह कल्प हैं इसमें भी चौदह मन्वन्तर हैं। उनमें से सातों का स्वायंभुव तथा अन्य सातोंका सावणिक नाम है। इन चौदहमें न सातवाँ वैवस्त मनु प्रवृत्त है। सारे मन्वन्तरों में में एक जैसी रचना स्थित संसार होता है। जब प्रथम कल्प समाप्त होने लगा तब एक ऐसी प्रलय कारक पवन चलपड़ी जिसने वनोंको 'वृक्षों'को पर्वतोंको जड़से उखाड़कर फेंकदिया तब तीनों देवताओंके मध्यचिनगारी की भाँति अग्नि देवता प्रकट होगये। उन्होंने जगत् भरको जलादिया। वर्षा जलसे पूर्ण होकर सागर उछलपड़े फिर सम्पूर्ण संसारको डुबोदिया उसके बाद पितामह ब्रह्माने देखा कि यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड नष्ट होगया है दशो दिशाएं जलसे भरगई हैं। तब वे भी नारायण रूप होकर जल पर सुख पूर्वक सो गये। जलका नाम नार जलसे उत्पन्न भी जल कहा जाता है। जल ही जिनका स्थान हो वह नारायण शब्द वाच्य है। जब सृष्टिका आदिकाल होता है तो श्रुतियाँ जिस प्रकार ईश्वर को निद्रा से जगाती हैं उसी प्रकार योगमयी निन्द्रा में सोते हुए त्रिदिशाधिपतिब्रह्मा

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप शिव को भी प्रातः होने पर देवता तथा जन-लोक निवासी सिद्धोंने हाथ जोड़२ कर अनेकों स्तुतियों से जगादिया। उसके बाद निद्रा त्याग कर जल शय्या पर बैठकर चारों ओर देखने लगे। आश्चर्य में पड़ कर विचारने लगे। वे ब्रह्मा तो थे ही तब अपने जनक त्रिलोचन शिवजीका स्मरण किया उससे उनको ज्ञात होगया कि पृथ्वी जल में डूब गई है। उसको निकालने के लिये बाराह रूपको स्मरणकिया स्वयं पर्वतके समान विशालकाय बाराह रूप बनकर अपने दीर्घ निश्वासों द्वारा प्रलय समुद्र को झक-झोरतेहुए ब्रह्माजी पृथ्वी लानेकेलिये रसातल में चल दिये। फिर उसके बाद बाराह रूप वाले ब्रह्माने जलके मध्य पृथ्वी को ढूंढ़ा। जब मिल गई तो इसे अपनी डाढ़ों पर रखकर रसातल से आये। उस समय उनकी अद्भुत शोभा थी जिसे देखकर जनलोक निवासी सिद्ध आदि ने प्रसन्न होकर फूलों की वर्षा की फिर प्रसन्नता में नाचने लगे।

* बारहवां अध्याय *

(सृष्टि वर्णन)

वायु वाले-हे ऋषिगण ! उसके बाद ब्रह्माजीकी सृष्टिकी चिन्ता होने लगी। उसके ध्यान में पड़कर उन्हें तपोमय मोह पैदा हो गया। जिससे चारों तरफ अन्धेरा ही अन्धेरा छा गया। तब तो बीज कुम्भ की भाँति अन्दर तथा बाहर के अन्धकार से व्याप्त स्तब्ध तथा संज्ञा शून्य होने से सभी मोहों से घिरी हुई, वृद्धि, मुख, इन्द्रियाँ आत्मा इस प्रकारसे आत्मा वाली सृष्टि पैदा हो गई। यह सृष्टि उपयुक्त न थी यह देखकर ब्रह्माजी व्याकुल हो गये। फिर दूसरी सृष्टि रचना के लिए ध्यान लगाया उससे पक्षियों की सृष्टि पैदा हुई किन्तु यह सृष्टि अन्दर तो ज्ञान वाली और बाहर ज्ञानहीन थी यह सृष्टि पैदा होते ही कुमार्ग में पड़ गई। फिर ब्रह्माजी ने सात्विक देवताओं की सृष्टि तीसरी बार रची। यह सृष्टि भीतर बाहर से ज्ञान वाली एवं ब्रह्माजी को सन्तोष कारकथी फिर उन्होंने ध्यान द्वारा संसार के साधन रूप उग्र दुःख युक्त मानव सृष्टि का निर्माण किया। ये सृष्टि अन्दर तथा बाहरसे प्रकाशमयी सूक्ष्म तमोगुण एवं विशेष कर

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyan Kosha

रजोगुण वाली हु । ब्रह्माजी द्वारा प्रथम महत्त सृष्टि,दूसरी तन्मात्राओं की भूत सृष्टि, तीसरी वैकारिक इन्द्रिय सम्बन्धिनी सृष्टि हुई। यहां तक बुद्धिहीन प्राकृतिक सृष्टि कहलाई । चौथी सृष्टि मुख्य स्थान हुई । फिर पांचवीं वक्र स्तोत्रसे पैदा हुई पक्षियों की सृष्टि हुई । छठी ऊर्ध्व स्तोत्रसे देव सृष्टि हुई । सातवीं अर्वक स्तोत्र से मानव सृष्टिहुई । आठवींसृष्टि अनुग्रह वाली, नौवीं तौ कुमार सृष्टि हुई । प्राकृतिसृष्टियां तीनताज्ञान हीन हुई एवं वैकारिक मुख्य ज्ञानादिक युक्त पाँच सृष्टियाँ हुई । प्रथम ब्रह्माजीने सनक, सनन्दन, सनातन, सनत्कुमार, तथाऋभु यह मानस पुत्र पैदा किए । ये सब रागद्वेषादि से विमुक्त एवं योग मार्ग गामी हुए तभी तो इस सृष्टि निर्माणमें निष्ठा न धार कर वहां से चले गये । यहदेख कर सृष्टि की इच्छासे ब्रह्माजी ने फिर तपस्या की। तपस्या करते-करते बहुतसा समय लग गया किन्तु फल कुछ भी न निकला। बहुत थक कर ब्रह्माजी क्रोध में आकर अश्रुपात करने लग गये । उन आँसुओंकेकणों से भूत प्रेतादिक पैदा हो गये । यह देखकर उनका क्रोध और भी बढ़ गया । इस कारण देह त्याग कर दिया । उसके बाद प्राण स्वामी नील लोहित भगवान् रुद्र ब्रह्मा को प्रसन्न करने के लिये उनके मुख द्वारापैदा होगये। तब तो भगवान रुद्रने अपने ही शरीरसे ग्यारह स्वरूप पैदाकर दिये और कहा—हे पुत्रो ! मैंने आप लोगों को लोक हित के लिये प्रकट किया है। इसी कारण प्रजा रचने के काम में लग जाओ। इस प्रकारकी आज्ञा पाकर वे रोने लगे और वहाँसे भाग गये,इसलिए इन सबका नाम रुद्र विख्यात हुआ । उसके बाद महेश्वर ने ब्रह्माके मृतक देह में प्राणों का संचार कर दिया । तब तो रुद्र देव संतुष्ट होकर ब्रह्मा से बोले-हे लोक पितामह ? तुमको फिर जीवित कर दिया है । अबतोसुखपूर्वक उठबैठो। तब इस प्रकारके मधुर बचन सुनकर ब्रह्माने आंखें खोल दी और पासमें बैठे हुए रुद्र भगवान को देखकर हाथ जोड़े। फिर कहने लगे कि आपने मुझ पर दया की जो इस प्रकार मुझको दर्शन दिये। कृपा करके अब यह बतावें कि आप ग्यारहवें रूप कौन हैं ! तब रुद्रजी बोले-मैं परमे

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

श्वर हूँ। किन्तु इस समय तुम्हारा ही पुत्र हूं और ये ग्यारह रुद्र तुम्हारी रक्षा के लिए मेरे साथ ही आगये हैं। अब तो तामसूर्छा त्याग कर ज्ञान प्राप्तकरो फिर मेरीही कृपाद्वारा पहलेकी तरह फिरसे सृष्टि आरम्भ करो। यह सुनकर ब्रह्माजी आनन्दित होकर शिवनामाष्टकको पढ़ते हुए संसार की आत्मा रुद्रकीस्तुति करनेलगे। फिर हाथ जोड़कर प्रार्थनाकी- हे महेश्वर! आप तो सृष्टि निर्माणके लियेही मेरे अङ्गोंसे पैदा हुए हो। इसी कारण इस कार्यमें आप भी मेरे सहकारी बनें। यह सुनकर रुद्रदेव ने तथास्तु कहा फिर उनकी आज्ञासे ब्रह्माने अपने मनसे मरीचि आदि बारह पुत्रपैदा किये। रुद्रदेव ये सबके सब मानस पुत्र हैं। इनमें देवताओंतथा क्रियात्मक महर्षियोंके बारह वंश मिल गये। उसके बाद ब्रह्माजी ने मुखसे देवता, गलेसे पितर, जांघोंसे दैत्य, गर्भसे मानव, उपस्थेन्द्रिय से राक्षस पैदा किये। ये निशाचार राक्षस बलवान थे प्रायः रजोगुण एवं तमोगुण वाले थे। इसप्रकार सर्प यक्ष भूत गन्धर्व आदि पैदा हुए। ब्रह्माजी की दोनों कांखोंसे पक्षी एव वक्षसे दूसरे पक्षी मुखसेबकरी, फिर काँखों से उरग, पाँओंसे घोड़े, हाथी शलभ, मृग ऊंट, खच्चर नेवले, तथा अन्य जातिके पशु पैदा हुए। रोगोंसे भरीं औषधियाँ हुई। ब्रह्माजी के पूर्व मुख से गायत्री एवं तीन वृतों वाले स्तोत्र, रथन्तर अग्निष्टो आदि यज्ञ पैदा होगये। दक्षिण मुख से यजुर्वेद, त्रिष्टुह छन्द पन्द्रह स्त्रोत,वृहत्साम तथा सामवेद आदि। पश्चिम मुख से सामवेद, जगती छन्द, सत्रह स्तोत्र आदि हुए। उत्तर के मुखसे इक्कीस आसयाम वाले अथर्व वेद, अनुष्टुपछन्द वैराज आदि हुए। इनके फिर देह द्वारा अनेक भेद होगये। ये सबके सब अपने-अपने कार्य में लग गये। अपने अपने कर्मोंके अनुसार जन्म मृत्यु के चक्र में पड़कर फल भोगने लगे। ब्रह्माजी स्वयं ही इनके कर्मों के अनुसार सुख,दुःख, धन, आय, व्यय, सम्पति विपत्ति आदि विधान कर दिया करते हैं। युग एवं समयके अनुकूलही सभी प्राणियों के गुण, कर्म, स्वभावादि होते हैं।

—:—:(:०:):—:—

CC-0. Asri Sinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

* तेरहवाँ अध्याय *

(ब्रह्मा तथा विष्णु की सृष्टिका वर्णन)

ऋषि बोले-हे वायुदेव! जब सृष्टि का आरम्भ होने लगता है तो पहले महेश्वर द्वारा ब्रह्मा विष्णु उत्पन्न होते हैं। महेश्वर अपनी लीला द्वारा सम्पूर्ण संसारको रचते हैं फिर प्रलय समयमें अग्नि विष्णु एवं ब्रह्मा के साथ-साथ ही उनका नाश भी कर देते हैं। इस प्रकार सर्व समर्थमहेश्वरजी का ब्रह्मा का पुत्र होना तो असम्भवहै फिर वे ब्रह्मा के पुत्र किस प्रकार हुये। हमारे इस संशय को निवारण करे।

वायु बोले-मुनियों! महेश्वरजी ने जगत के निर्माण पालन तथा संहारके लिये ब्रह्मा, विष्णु रुद्र इन तीन देवों को पैदा किया। उन्हें एक दूसरेसे बढ़ती होनेकी ईर्ष्या पैदा होगई तब तो वे महेश्वरजी सन्तुष्टि के लिए तप करने लगे। उनकी कृपा प्राप्त करके सर्वात्म पद पाया। यह तो महेश्वरजी कल्प-कल्प की लीला है किस कल्प में तप द्वारा प्रसन्न होकर ब्रम्हा विष्णु को पहले पैदा करते हैं। किसीमें महेश्वर की लीला से ब्रह्मा ही विष्णु रुद्रको पैदा करदेते है। किसी २ कल्प में विष्णु ब्रह्मा रुद्रको प्रकट करते हैं इसी प्रकार कल्प भेदसे ब्रह्मा विष्णु रुद्र एक दूसरेको प्रकट किया करते हैं। जब मेघ वाहन नामका कल्प लगा तो इस समय भगवान विष्णु ने मेघ रूप धार लिया। तब दिव्य दस हजार वर्ष पर्यन्त पृथ्वीको धारे रहे उनके इस दिव्य प्रभाव को देखकर महेश्वरजी ने विष्णु जी को अव्यय शक्ति प्रदानकी जिसमें सर्वात्माभव संयुक्तथा। इस प्रकार के विष्णुजीके वैभवको देखकर ब्रह्माजी को ईर्ष्या द्वेषपैदा होगया क्योंकि विष्णु भगवान ब्रह्माजी के साथ मिलकर विश्व निर्माण कर रहे थे। तब विष्णुजी के प्रति ब्रह्मा बोले-मैं तुम्हारा यह हेतु भली-भाँतिजान चुका हूँ इसलिये आप अब चले जांय। भगवान महेश्वरही हम दोनों से विशेष समर्थ एवं हम दोनोंके स्वामी हैं। अब मैं उन्हें तप द्वारा सन्तुष्ट करना चाहता हूं। जिससे मैं तुमको तथा सम्पूर्ण विश्व को उनकी कृपा से रच सकूं इतना कहकर शीघ्रही वे महेश्वरजीके पास पहुँचगये। उन्हें प्रणाम करके हाथ जोड़कर कहनेलगे। देवाधीश! आपनेही तो अपनेवाम अङ्ग

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

द्वारा विष्णु तथा दक्षिण अङ्ग द्वारा मुझे पैदा किया है। फिर हम दोनों एक जैसी सामर्थ वाले क्यों नहीं दिखाई देते ! आपकी कृपा पाकर विष्णु ने मेरे साथ-साथ सम्पूर्ण विश्व पैदा किया फिर ईर्ष्या द्वेष में आकर मुझे फटकार भी दिया। क्या यह विष्णु मुझसे बढ़कर आपके भक्त हैं ! इसी कारण आप मुझे भी पौरुष प्रदान करें जिससे मैं आपकी शक्ति द्वारा सामर्थ्य वान हो जाऊं। तब इस प्रकार ब्रह्माजी की प्रार्थना करने पर महेश्वर जी ने तथास्तु कह दिया। तब तो ब्रह्माजी तत्काल ही सर्वज्ञ-होगये। भगवान विष्णुजी के पास पहुँचे। उस समय भगवान विष्णु क्षीर सागर में अनन्त नामकी शय्या पर रत्न जटित आभूषणोंसे भूषित पीताम्बरधारी होकर योग निद्रा में शयन कर रहे थे। तब वहाँ ध्यान कर ब्रह्माजी ने उनकी पुरुष सूक्त द्वारा प्रार्थना की। फिर भयानक रूप होकर बोले-हे विष्णु। अब मैं तुमको अपने बल द्वारा उसी प्रकार बाँधने वाला हूँ। जैसा कि तुमने प्रथम मुझे ग्रस्त कर लिया था। इतना कहकर विष्णु जी को झट पकड़ लिया फिर कर ज्योंही अपनी छाती से लगाने लगे विष्णु उस समय अन्तर्ध्यान होगये। इधर लक्ष्मी अपनेपतिकोइधर-उधर देखने लग गई। विष्णुजी उसे भी दिखाई न दिये ब्रह्माजी को क्रोध मूर्तिमें खड़े देखकर वह भी अन्तर्ध्यान होगई अपने पति की लीला तथा पौरूष तो लक्ष्मी जानती थी। इसी कारण दुःखित न हुई तब विष्णु ब्रह्माजीकी दोन भृकुटियों के मध्यसे शक्ति द्वारा प्रकट होकर ब्रह्माजीको दिखाई देने लगे इसीकारण हे मुनियो ! महेश्वरजी की कृपा से दोनों ही एक जैसे शक्तिमान थे। तब अपनी २ शक्तिद्वारा एक दूसरे की शक्ति घटाने लगे। उनका द्वन्द युद्ध छिड़ गया। उसे देखने के लिये भगवान शंभु वहाँ प्रकट होगए। किन्तु उन दोनों की शक्तिको अप्रकट रूप से देखने लगे फिर प्रकट रूप से उनके सामने प्रकट हो गए। उनका दर्शन करके ब्रह्मा विष्णु दोनोंने प्रणामतथा स्तुतिकीमहश्वरजीने अपनी अमोघ शक्तिसे उन दोनों का क्रोध निवारण कर दिया फिर वे अन्त-र्ध्यान भी हो गए।

CC-0. ASI Srinagar. Shodhganga Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* चौदहवाँ अध्याय *

(रुद्र की उत्पत्ति)

वायु बोले-हे ऋषियों ! अब मैंउस रुद्र भगवान कीउत्पत्तिका कारण कहता हूँ जिसके द्वारा नष्ट हुई प्रजा सृष्टि फिर पैदा होजातीहै। ब्रह्माजी जब अण्ड से प्रकट होकर कल्प-कल्प में जब देखते हैं कि मेरा रचीहुई सृष्टि बढ़ नहीं रही तब अत्यन्त दुःखी होजाते हैं। इनका दुःखमिटाने के हेतु ही उन्हीं कल्पोंमें महेश्वरकी इच्छासे काल स्वरूप रुद्र भगवान पुत्र रूप होकर ब्रह्माजी से प्रकट हो जाते हैं फिर कृपा करके ब्रह्मा की सृष्टि बढ़ातेहैं। भगवान शङ्करकी सृष्टि रचना कार्य के लिए कभी ब्रह्माजी ने प्रार्थना की। तब आपने स्वरूप जैसे जटाधारी अनेकों रुद्र प्रकट कर दिए। सारे विश्व में वे सभी छागए। सबके सब भयानक रूप थे। यह देखकर ब्रह्माजी ने हाथ जोड़कर रुद्रजी से प्रार्थना की कि हे रुद्र भगवान् ! यह आप क्या कर रहे हैं हमें तो इस भयानक सृष्टिकी आवश्यकता नहीं। आपतो इस प्रकारकी प्रजा रचना करें जो पैदा भी रहे और मरती भी रहे ब्रह्माजी के बचन सुनकर भगवान शङ्कर कुछहंस पड़े और बोले हे ब्रह्मदेव ! मैं तो ऐसी ही प्रजा रचूंगा। तुम्हारी चाही नहीं। इसलिए तुम ही मन चाही प्रजा रचना करो। इस प्रकार आज्ञा देकर आप प्रजा रचना कार्यके विमुक्त होगए।

* पन्द्रहवाँ अध्याय *

(शिव शिवा की स्तुति)

वायु बोले-हे ऋषियों ! ब्रह्माजीको अनेको सृष्टि पैदा करने पर भी प्रजा बृद्धि दिखाई न दी। तब मैथुन द्वारा होने वाली सृष्टि रचना का विचार किया। इसी कारण तप द्वारा महेश्वरीजी को सन्तुष्ट करने का भी उनका निश्चय हुआ। शक्तिके साथ श्रीमहेश्वरजीके ध्यानमें संलग्नहोकर कठोर तप करने लगे। उससे प्रसन्न होकर आधा रूप स्त्री एवं आधारूप पुरुषका धारकर महेश्वर जी ब्रह्माजी के सामने प्रकट होगये तब दर्शन करके ब्रह्माजी अपने आसनसेउठकर शक्तिके साथ महेश्वरजी की अनेकों

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

स्तोत्रो द्वारा स्तुति करने लगे। हे सर्व-गुण निधान महेश्वर जी तथा बड़ी बड़ी अमोघ लीलाएं करने वाली जग की जननीशक्तिदेवि आपकी जय हो। आपतो सभी विश्व की रचना में समर्थ हो अनेकों वैभव वाली हो जयहो। इस प्रकार अनेकों स्तोत्रों द्वारा शिव शिवा की स्तुति का

* सोलहवाँ अध्याय *

(मैथुन सृष्टि की उत्पत्ति का वर्णन)

वायु बोले-इस प्रकार शिव शिवा की विविध प्रकारसे स्तुति करने पर प्रसन्न होकर मन्द २ हास्य करते २ शंकर बोले ब्रह्मदेव ! मैं तुम्हारी कामना भली प्रकार समझ गया हूं। तुम्हारी तपस्या सृष्टिबढ़ाने के लिये है मैं इससे प्रसन्न हूं। यह कहकर महेश्वरजी ने अपने ही अङ्ग द्वारा दिव्य गुणव्रती परमशक्ति नारी रूप में प्रकट करदी। उसे देखकर ब्रह्मा प्रसन्न होकर हाथ जोड़े नम्रताके साथ उस देवीसे प्रार्थना करने लगे-हेभगवती मैं सृष्टि रचनाके लिये ही महेश्वर द्वारा उत्पन्न हुआ हूँ। मैंने मन द्वारा देवताओं ऋषि आदि रच दिये। ऐसा करने परभी सृष्टि बढ़नहींरही सृष्टि बढ़ानेके हेतुमैं मैथुन सृष्टि चाहता हूँ यह तभी हो सकता है जब नारी की रचना हो इसलिये आप अपने अंशाश द्वारा मेरे पुत्रदक्षकी पुत्री बनने की कृपा करें तभी आपके द्वारा सृष्टि बृद्धि को प्राप्त होगी इस प्रकार ब्रह्माजी की प्रार्थना सुनकर प्रसन्न होकर देवी ने अपनी भृकुटियोंके मध्यसे अपने जैसे तेज वाली एक शक्ति पैदा करदी महेश्वरजी ने उस शक्ति को देखा तब उससे बोले-देवि ! तुम तप द्वारा ब्रह्मा की आराधना करो और इनकी इच्छा पूर्ण करो तब उस शक्ति ने महेश्वर जी की आज्ञा स्वीकार करली। इस प्रकार ब्रह्माजी को ब्रह्मरूप बाली शक्ति प्राप्त होगई। फिर महाशक्ति श्रीमहादेवजी के रूप में समा गई। महेश्वरजी भी अन्तर्ध्यान होगये। ऐसा होजाने पर ब्रह्माशक्ति ने तपकरना आरम्भ किया। फिर सिद्धिप्राप्तकरके ब्रह्माजीकी इच्छाके अनुसार दक्षके यहाँ जन्म लिया उसी से मैथुन सृष्टि चलपड़ी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* सत्रहवां अध्याय *

(मनुकी सृष्टि का वर्णन)

वायु बोले-हे ऋषियों ! महेश्वरजीकी कृपा द्वारा परम शक्ति पाकर मैथुन सृष्टिकी रचनाके लिये ब्रह्माजी ने अपने आधे शरीर से तो शतरूप नामक नारी उत्पन्न की और आधे से स्वायं भुव नामक मनु पुरुष पैदा किया। उसी शतरूपा कन्या ने कठिन तप द्वारा परम यशस्वी मनुजी को पतिरूप में पाया। इन दोनोंसे मिलकर मैथुन द्वारापिय व्रत, उत्तान पाद नामक दो श्रेष्ठ पुत्र तथा आकूति, देवहूति, प्रसूति, नाम की तीन कन्याएं पैदा कीं। स्वायम्भुव मनुजी ने दक्ष को प्रसूति, विवाहदी और आकूति प्रजापति रुचि को विवाह दीं। रुचिद्वारा आकूति सेयज्ञ पुरुष तथा दक्षिण नामक दो युगल पुत्र पैदा हुए। प्रसूतिसे दक्ष प्रजा पति ने श्रद्धा, लक्ष्मी, धृति,पुष्टि, तुष्टि, मेधा,क्रिया, बुद्धि, लज्जा वपु शाँति, सिद्धि,कीर्ति,ख्याति, सती, सन्भूति, स्मृति, प्रीति, क्षमा, सन्नति, अनुसूया, ऊर्जा, स्वाहा, स्वधा नामों वाली चौबीस कन्यायें पैदा कीं। इनमें से श्रद्धा आदि तेरह कन्यायें धर्म के साथ व्याही गईं ख्याति आदि दशा भृगु, मरीचि, अङ्गिरा, पुलह, कृतु पुलस्त्य, अत्रि, वशिष्ठ, एवं अग्नि के साथ व्याही गईं। बाकी ऊर्जा आदि तीन पितरों को समर्पित हुईं। धर्म ने श्रद्धा आदि तेरह पत्नियां पाकर उनसे काम से लेकर यश तक तेरह सुखोन्तर पुत्र पैदा किए अधर्म ने हिंसा नामक पत्नीसे अधर्म लक्षण वाले दुःखोन्तर निकृत्ति आदि पुत्र पैदा किये। यह सबके सब नियमहीन स्त्री सन्ततिरहित, धर्मविनाशक सिद्धहुए। दक्ष प्रजापतिजी की पुत्री सतीजीने रुद्रदेव को पति पाकर अपने पिताके यज्ञ में पतिका अपमान न सहन कर पिता माता आदि कुटुम्बियोंकीनिन्दा करके योगाग्निमें अपना शरीर भस्म कर दिया। फिर मैंना द्वारा हिमाचलकी पुत्री हुई, उमा नाम हुआ। कठिन तपस्या द्वारा रुद्र भगवानको फिर पतिरूप में प्राप्त किया। भृगु ऋषि ने ख्याति नामक पत्नी से लक्ष्मी एवं मन्वन्तरधारी धाता, विधाता नामक दो पुत्र पैदा किये। उन दोनों पुत्रोंने तो

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

सैकड़ों हजारों पुत्र पैदा कर दिए। वे सबके सब स्वाभ्भुव मनन्तर में भार्गववंशी कहलाये। मरीचि ऋषिने स्मृति पत्नी से चार कन्याओं के साथ पौर्णमास पुत्र पैदा किया। इसका वश बहुत बढ़ा इसी वंश में कश्यप ऋषि हुए। स्वभूतिनामक पत्नीसे अङ्गिरा ऋषि ने अग्नींध्र तथा शरभ दो पुत्र और चार कन्यायें पैदा की। हजारों पुत्र तथा नीतियों वाले यह सब हुए। प्रीति नामक पत्नी से पुलस्त्यने दन्तअग्निपुत्र पैदा किया। जो स्वायम्भुव मन्वन्तर में प्रथम जन्म में विख्यात अगस्त्यऋषि हुए। उनकी सभी सन्तान पौलस्त्य कहलायी। क्षमी नामक पत्नी से कर्दमने, आसुरि एवं सहिष्णु पैदा किये ये त्रेताग्नि जैसे तपस्वी हुए। इनका वंश भी वहुत बढ़ा। सन्नति नामक पत्नीसे क्रतुके बाल खिल्यादि साठ हजार पुत्र हुए। ये सबके सब ब्रह्मचारी सूर्य नारायण को चारोंओर घेरे रहते हैं। अनुसुइया पत्नी से अत्रिऋषिने सत्य नेत्र हव्य आपोमूर्ति शनैश्चर तथा सोम इस प्रकार पांच पुत्र पैदा किये श्रुति नामक एक कन्या भी पैदा की। इसी से शङ्ख नामक पुत्र हुए जोकि ऋषि थे। स्वायम्भुव मन्वन्तर में अत्रि में पुत्रों के बहुतसे हजारों पुत्र,नातीहुए। वसिष्ठजीने अपनी पत्नी में से पुण्डरीक, रज गात्र ऊर्ध्वबाहु, सवन, अनय, सुतया एवं शत्रु नामक सात पुत्र पैदा किए। ये सप्त ऋषि हुए, इनके नाम द्वारा इनकी सन्तानके गोत्र प्रसिद्ध हुए। वशिष्ट पुत्रोंकी स्वायभ्भुव मन्वन्तरमें सैकड़ों अरब संख्या में सन्ताने हुईं हे मुनियो ? ये सब मैंने ऋषि सृष्टि का वर्णन किया है। अब दूसरोंकी सृष्टि का वर्णन करता हूं। ब्रह्माजी के मानस पुत्र रुद्र रूप जो अग्नि हुए उन्होंने अपनीस्वाहा पत्नी से पावक,पवमान,शुचि इन नामों के तीन पुत्र पैदा किये। पवमान मन्थन की अग्नि है। पावक विद्युतकी अग्नि है। सूर्यकी अग्नि और एवं शुचि कहाती है। हव्यवाह कव्यवाह एवं सह रक्षा इनतीन अग्नियों के क्रमशः देवता पितर ऐवँ असुर संज्ञक पुत्र पैदा हुए। इन्हींके उनचास पुत्र हुए। यह तो नित्य, नैमित्तिक एवं काम्य इन तीनों कर्मों में स्थित हैं रुद्र स्वरूप एवं रुद्र परायण हैं। तभीतो अग्निमें होमित पदार्थ

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

रुद्रको ही प्राप्त होता है। मुनियो ? यह भी मैंने आपको संक्षेपसे कह सुनाया। अब पितृवंश सुनिये। बसन्त आदि छहों ऋषि पितरोंके स्थान हैं। गृहस्थ लोगों के दो प्रकार के पितर होते हैं। अज्यवान, अग्निस्वान्त एवं यज्वान ये तो बर्हिषद है। स्वधा नामक पत्नी द्वारा अग्नि स्वान्त पितरों ने जगत प्रसिद्ध मैंना तथा वर्हिषद पितरों ने धरणी नामक कन्या पैदा अग्निस्वन्त पितरों ने मैंना को हिमाचलसे व्याहा मैंना द्वारा हिमाचलने मैंनाक क्रौंच नामक दो पुत्र तथा रुद्र पत्नी उमा एवं परम पावनी गङ्गा पैदा की। बर्हिषद ने धरणी कन्या मेरुको व्याहदी। धरिणीने तो सुन्दर २ गुफाओं वाले तथा दिव्य औषधि वाले मदराचल पुत्रको पैदा किया। भगवान रुद्र के शाप से दक्षप्रजापति भी चाक्षुष मन्वन्तर में इनके पुत्र हुए। वायु बोले–इस प्रकार धर्म आदि वंश का विस्तार मैंने कह सुनाया यह तो संक्षेप से कहा गया पूरा वर्णन तो सैकड़ों वर्षों तक भी असम्भव है।

* अठारहवाँ अध्याय *

(दक्ष को शिव श्राप)

मुनि बोले–हे वायुदेव ? रुद्रभार्या दक्षनन्दिनी सती भगवती ने दक्ष से उत्पन्न अपना शरीर तो यज्ञ में भस्म कर दिया फिर किस कारण से हिमाचल के घर जन्म लिया और दक्षप्रजापति ने शिव निन्दा क्यों की ? फिर शिव श्राप से दूसरा जन्म पाया। यह आख्यान अब कृपा करके हमें सुनाइये। वायु बोले–हे ऋषिगण ! सुनिये ! एक वार देवता, दैत्य, सिद्ध मुनि आदि शिव दर्शन के लिये हिमालय के शिखर पर पहुँचे। वहां जाकर दर्शन किया। उस समय भगवान देवी सती के साथ दिव्य सिंहासन पर विराजमान थे। ठीक उसी समय देवताओं को साथ लिये अपकी कन्या तथा भगवान शङ्कर को देखने के लिये दक्ष भी आ पहुंचा। उस समय भगवती सती को अपने पिता के आगमन का ध्यान नहीं रहा। इतना देखकर दक्ष को क्रोध आ गया। केवल अपनी पुत्री द्वारा सम्मान न होने के कारण वह अज्ञानी अपनी कन्या का शत्रु बन

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

गया। इसी कारण भगवानशङ्कर को तथा कन्या को यज्ञ में निमन्त्रित नहीं किया। अन्य सभी कन्या तथा दामादों को बुलवा लिया। नारदजी किसी कारण उस समय कैलाश पर पहुँचे। दक्ष के यज्ञ का सतीजी की सभी बहिनों को निमन्त्रि करने का सभी वृतान्त भगवान शङ्कर तथा सती को कह सुनाया तव दक्ष के यहां जाने की आज्ञा सती भगवती ने आग्रहके साथ भगवान शिवसे प्राप्त करली। नन्दी गण पर सवार होकर वहाँ पहुंच गई। यज्ञमें सती को आया देखकर दक्ष के क्रोध का पाराचढ़ गया। कुछ भी उसका सम्मान नहीं किया। उस समय सतीजी में अपना सम्मान तथा शिवजी का न बुलाना यह देखकर नम्रताके साथ पिता दक्ष से कहा-हे पिताजी! मैं तो आपकी बड़ी कन्या हूं मुझे आपने यज्ञ में निमंत्रित क्यों नहीं किया? क्या बड़ी कन्या को एक दम भुला बैठे। ब्रह्मा आदिक देवता, दानव, मानव, ऋषि, मुनि सभी आपके इस यज्ञ महोत्सवमें आगये हैं। उन सबका यथेष्ठ पूजन भी हुआ किन्तु भगवानशङ्कर को तुमने पूछा तक नहीं जो कि सभी चराचर के स्वामी हैं। इससे तो तुमने उनका अपमान किया है। यह अच्छा नहीं हुआ। इतना सुनकर क्रुद्ध हुए दक्षने कहा। मेरी अन्य सभी कन्याएँ सुपात्र एवं पूजनीय हैं उन सबके पति भी पूजनीय हैं। केवल तू ही अयोग्य एवं अपूजनीय है। क्योंकि रुद्र तुम्हारा पति तमोगुणी आलसी निरुद्यमी है इसीकारण तू भी वैसी ही बन गई है तभी तो तुम दोनों का सम्मान नहीं हुआ। यह सुनते ही भगवती को क्रोध आगया तव सभी सभासदों के सामने बोली-तूने बिना अपराध मेरे पूज्य पतिदेव का बुरे शब्दों में अपमान किया है इस कारण तू दण्डनीय है क्योंकि विद्या के चोर, गुरुनिन्दक, शिवद्रोही, दण्डनीय हुआ करते हैं तुम शिव निन्दक हो इसलिए तुम्हारे कुल का विध्वंस होगा। तह कहकर जगदम्बा सतीजी ने अपना शरीर उसी यज्ञमें योगाग्नि द्वारा भस्म कर दिया। हे ऋषियो! ठीक उसी अवसर पर पुत्री पान के हेतु हिमालयराज तपस्या कर रहे थे। उनकी तपस्या सफल करने के हेतु जगदम्बा ने वहाँ जाकर जन्म लिया। इधर

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

सतीजी देह त्यागने का सभी बृत्तान्त भगवान शङ्कर को ज्ञात होगया। तब क्रोध में आकर शकरजी ने दक्ष तथा भृगु आदि सभी ऋषियों को शाप दे दिया। इस दक्षने केवल मेरी पत्नी होने के कारण मेरी प्रिया सती देवी का अपमान किया है इसलिये वह दक्ष चाक्षुष मन्वन्तर में प्रचेता का पुत्र होकर जन्मे और जिन जमाइयों का दक्ष ने सम्मान किया है वे अयोनिज होते हुए भी योनि द्वारा जन्म पावें। हे मुनियों! भगवान रुद्रके इस प्रकार के शाप से ब्रह्मा पुत्र दक्ष का शरीर छूट कर पृथ्वी पर गिर पड़ा। उसके बाद वह चाक्षुष मन्वन्तर में प्राचीन बर्हिपका पोत्र एवं प्रचेता का पुत्र होकर जन्मा। इसी प्रकार भृगु आदि ऋषि तथा उसके जमाई भी वैवस्वत मन्वन्तर से यज्ञ में आकर वरुणदेह धारी पैदा हुए।

* उन्नीसवाँ अध्याय *

(वीरगण का यज्ञ में जाना)

ऋषि बोले-हे वायो! दक्ष तो धर्म एवं अर्थ में लगा हुआ था। भगवान शङ्करजी ने उसका यज्ञ किस प्रकार विध्वंस किया! कृपा करके यह कथा सुनाइये। वायु बोले—हे ऋषियो! सुनो! इधर तपस्या के फल स्वरूपमें हिमाचल राजने भगवती जगदम्बाको पुत्री रूपमें प्राप्त किया। अत्यंत आनन्दके साथ अपनी पुत्री पार्वती उमादेवीका भगवान शङ्करजी से विवाह भी कर दिया। इसके उपरान्त शिव-पार्वती दोनों बहुत समय तक हिमालयके शिखर पर विराज कर तरह २ की लीलायें करते रहे। उसके बाद स्वायम्भुव मन्वन्तरके लगने पर दक्ष प्रजापति शिव शाप से जब प्रचेताके पुत्र हुए तो बड़े होने पर हिमाचल पर्वत पर अश्वमेघ यज्ञ किया। उसमें भगवान शङ्कर को छोड़कर वसु मरुद्गण अश्विनीकुमार पितर, आदित्य, विष्णु आदि सभी देवता ऋषि महर्षि सबको निमंत्रित किया और भी जो यज्ञ भाग के अधिकारी थे वे सभी वहां आये। उन सबमें शिवभक्त दधचि ऋषि भीथे। वहां शिव उपस्थित न देखकर क्रोध में दधीचि बोले-चराचर जगत् के स्वामी भगवान शङ्कर को इस यज्ञ में

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

निमंत्रित क्यों नहीं किया गया। जहां पूजनियों की पूजा न हो वहां महान् पाप होता है। यहां इस यज्ञमें पूजनीय शिवका पूजन नहीं हो रहा उनके बिना सभी अपुज्य हैं। इस कारण यहां महान् उपद्रव होने वाला है। दक्ष! पूजनीय शंकरजी का तुम इस समय पूजन क्यों नहीं कर रहे हो। इसका कारण कहो तब दक्षने कहा-हे ब्रह्मर्षे! यहां जटाजूट तथा त्रिशूल धारक ग्यारह रुद्र तो उपस्थित हैं ही फिर अन्य कौन रुद्र रहा, हम नहीं जानते। यह सुनकर दधीचि बोले—भगवान शंकर तो यज्ञपति हैं उनके पूजन न करने से तुमको किसी फल की प्राप्ति नहीं होगी। यह शंकर रुद्र चराचर के स्वामी ब्रह्मा विष्णु आदि सभी देवताओं को उत्पन्न करने वाले सबके अधिष्ठाता हैं। ग्यारह रुद्र भी तो उन्हीं से उत्पन्न हुए हैं। यह सुनकर दक्षने कहा-हे दधीचि! अब तो यह मन्त्र पवित्र हवि स्वर्णपात्र में रखा हुई केवल भगवान विष्णु के लिए ही है। इस कारण इसका भाग कर आप हवन कराते जांय। बहुत कहने की आवश्यकता नहीं। हे मुनियो! दक्षके वचन सुनकर दधीचिने कहा—तुम भगवान शङ्कर का पूजन नहीं कर रहे हो तुम्हारा यह यज्ञ सफल नहीं होगा। इतना कह दधीचिजी वहाँ से चले गये। यह सम्पूर्ण वृत्तान्त भगवान शङ्कर को ज्ञात होगया तब भगवती की प्रेरणा से शङ्करने उस यज्ञ को विध्वंस करने के लिए वीरभद्र गण को प्रकट कर दिया। उस गणके हजार मुख हजार नेत्र एवं आयुध वाले हजार हाथ थे। मस्तक पर आधा चन्द्रमा शोभित था तब उसने पृथ्वीपर घुटने टेक कर हाथ जोड़े और शिव को प्रणाम करके सामने खड़ा होगया। उसके बाद वीरभद्रकी सहायता के लिये जगदम्बा पार्वतीजीने अपने शरीर से भद्रकाली का देवी भी प्रकट करदी तब उसे देखकर प्रसन्न होकर शङ्करजी से प्रार्थना करने लगा हे देवाधिदेव! क्या सेवा करूं! मुझको आज्ञा करिये। महेश्वरजी बोले—हे वीरभद्र! तुम भद्रकालिका को साथ लेकर जाओ! शीघ्रही दक्ष कायज्ञ विध्वंस करो फिर जगत्जननी श्री पार्वतीजी बोली—हे वीरभद्र तथा भद्रकालिके! तुम दोनों योद्धाओं को हमने अपने कार्य की सिद्धि करने के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

लिए ही प्रकट किया है उस कारण तुम दोनों शीघ्र ही जाकर दक्ष का यज्ञ नष्ठ भ्रष्ट कर डालो फिर सभी नष्ट करके दक्ष का भी हनन करदो। इतना सुनकर वीरभद्रने अपने शरीर से हजारों करोड़ों गण पैदा कर लिये। फिर यज्ञ विध्वंस के लिये चल पड़ा। इस प्रकार से जाते हुये देखकर देवताओं ने आनन्द में आकर उन पर फूलों की वर्षाकर दुन्दुभी बजाने लगे।

* बीसवां अध्याय *

(दक्ष यज्ञ का वर्णन)

वायु बोले-हे मुनियों ! वीरभद्रजी गणोंके साथ यज्ञमें पहुँचगये। वह यज्ञ स्थल कुशाओं से आच्छादित स्वर्ण पताकाओं से शोभायमान था। यज्ञ कराने वाले यथोचित वेदमन्त्र के घोस से यज्ञ करा रहे थे। यज्ञ भाग के अधिकारी विष्णु आदि सभी देवता वहां उपस्थित थे। वहाँ पहुंचकर वीरभद्रजीने सिंह गर्जना की। उस गर्जनासे पृथ्वी आकाश भर गये। देवता वीरभद्र की गर्जना से डरकर इधर-उधर भागने लगे। तब अपने गणों को साथ लेकर वीरभद्र वहाँ घुस आये। उन्हें आया देखकर दक्ष डर गया किन्तु जैसे-तैसे वहाँ बैठा रहा। क्रोधमें आकर वीरभद्रसे पूछने लगा—तुम कौन हो ! कहाँ से आ रहे हो ! यहाँ आने का क्या कारण है ! यह सुनकर बलवान् वीरभद्र गम्भीर होकर बोले—अज्ञान के कारण तुम लोगों की अकल मारी गई है उसे ठिकाने लगाने के लिये मैं आया हूँ। जिस मन्त्र द्वारा तुमने प्रथम शिव पूजन नहीं किया उसको बोलकर क्या कर रहे हो ! हे विष्णु आदि सभी देवता लोगों ! तुम लोगों को भी अपने बलका अभिमान हो रहा है। जिससे उन मन्त्रों का अर्थ तुम्हारी समझमें नहीं आया, तभी तो शिवजी का अपमानकर रहे हो। तुम्हारा मद चूर्ण करने के लिए ही मैं आया हूँ। ह मुनियों ! इस प्रकार कहकर वीरभद्र ने अपने नेत्रों से अग्नि प्रकट करदी उसके द्वारा सारे यज्ञस्थल को जलाने लगे। गणोंने भी यज्ञकर्त्ताओं को यज्ञस्तूपों के साथ बाँध दिया। यज्ञपात्र सभी तोड़ फोड़ कर गङ्गाजी मेंवहा दिय।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eSangoti Gardhana Gyaan Kosha

अन्न आदि दूषित करके देवताओं को पीटने लगे इस प्रकार उस यज्ञ में अनेकों प्रकार के विघ्न उपद्रव करने लगे। तब सारी यज्ञ भूमि को नष्ट भ्रष्ट कर डाला यह देखकर सभी नरनारियों घबरा उठे।

* इक्कीसवाँ अध्याय *

(देव दण्ड वर्णन)

वायुदेव बोले—मुनियों! तब इस प्रकार के उपद्रव से सभी देवता डरकर वहाँ से भागने लगे। वीरभद्र का संकेत पाकर गणोंने उन सबको घेर लिया। वीरभद्रने सभी देवताओं पर अपने त्रिशूल का प्रहार करके उनके अङ्ग-उपाङ्ग खण्ड २ कर दिये। सरस्वती को नासिका का अग्रभाग, अदितिके हाथका अगला भाग, अग्नि की बाहु एवं दो अंगुल जितनी जीभ स्वाहाकी नासिकाका पुट एवं स्तनका अग्रभाग आदि काट दिये। भगदेवकी आंखे निकाल लीं पूषा के दाँत तोड़ दिये। चन्द्रमा को पैर के अंगूठे के नीचे डालकर कुचल दिया दक्षका माथा फोड़कर भद्रकाली के अर्पित किया। भद्र कालो भी माथा लेकर आनन्द पूर्वक गेंद की भांति उछालने लगी। दक्ष पत्नी वीरणी इस प्रकार कांड देखकर अपने हाथ पैर पटकती हुई हाय-हाय मचानेलगी तब विष्णु भगवान क्रोध में आकर सभी देवताओंको साथ लेकर वीरभद्र केसाथ युद्ध करने को उद्यत होकर लड़ने लगे।

युद्ध करनेके लिये विष्णु आदिदेवताओंकोआया देखकर वीर भद्रजो हंस पड़े तब दिव्य रथ आकाश से उतरा और वीरभद्रके सामने आ कर उपस्थित होगया शिव प्रेरणा से ही यह रथ ब्रम्हाजी द्वारा लाया गया था। तब हाथ जोड़कर वीरभद्रसे प्रार्थना करते हुये बोले-वीरभद्रजी! महेश्वरजी की आज्ञा से यह आपके लिये लाया गयाहै। आप इस पर सवार होकर युद्ध करें उधर भगवान शङ्कर उमाजी के साथ रम्य आश्रम के पास विराजमान होकर तुम्हारे इस पराक्रमको देख रहेहैं। वीरभद्रजी इस प्रकार ब्रम्हाजीका कथन सुनकर आनन्द में आगया उस रथपर सवार होकर चन्द्रमा की भाँति शोभितहुआशंख बजाने लगा। शङ्ख ध्वनि से

CC-0. ASI Srinagar Circle. Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

सभी देवता डर गये। युद्ध देखने की इच्छा से सिद्ध आदि सबके सब विमानों में चढ़कर आकाश में आगये। उसके बाद भगवान विष्णुजी ने अपने शार्ङ्ग धनुष पर बाण चढ़ाकर वीरभद्र पर प्रहार किया। यहदेखकर वीरभद्रजी ने अपने धनुष पर टङ्कोर किया। फिर धनुष पर बाण चढ़ाकर विष्णुजीके मस्तक का लक्ष्य करके छोड़ दिये। विष्णुजी ने भी वीरभद्र की भुजा का लक्ष्य करके बाण छोड़े ईस प्रकार दोनों का भयानक युद्ध छिड़ गया। इस पर वीरभद्रजी ने एक कठोर बाण धनुष पर चढ़ाकर विष्णुजी की छाती पर मारा तब तो विष्णुजी व्याकुल होकर पृथ्वीपर गिर पड़े और मूर्छित होगये। कुछ क्षणों के बाद चेतना में आकर विष्णुजी अपने अस्त्र शस्त्र चलाने लगे। तो वीरभद्रजी ने उन सभी अस्त्र-शस्त्रों को अपने बाणों द्वारा शान्त कर दिया फिर एक बाण द्वारा विष्णुजी के धनुष को तथा दो बाणों से गरुणके पंखों को काटकर गिरा दिया। उस समय विष्णुजी अपना सुदर्शन चक्र उसपर चलाने लगे तब तो वीरभद्र जी ने कुछ भी उपाय नहीं किया खड़े देखते रहे। किन्तु शिव प्रभाव से वह चक्र विष्णुजी से हिलातक नहीं! उसके बाद वीरभद्रजीने सभी देवताओं को अपने पैने बाणों का लक्ष्य बना दिया जिससे सभी देवता घायल होकर इधर-उधर भाग निकले।

* तेईसवाँ अध्याय *

(देवताओं पर शिव कृपा)

उसके बाद बीरभद्रजीके संकेत से गणों ने सभी देवता बाँध लिए। उन देवताओं को दुःख में पड़ा देखकर ब्रह्माजी ने वीरभद्रजी से प्रार्थना की। हे वीरभद्र? आप इन देवताओं का अपराध क्षमा कर देवतालोग अपने कर्मों का फल भली-भाँति पा चुके हैं। ब्रह्माजी के कथन को सुन कर वीरभद्रजी शान्त हो गये उनका क्रोध जाता रहा देवताओंके बन्धन खुल गये। सबने मिलकर बीरभद्रजीको प्रणाम किया और स्तुति की। इसके बाद वीरभद्रजी विष्णु आदि सभी देवताओंको साथ लेकर भगवान शङ्करके पास पहुँचे। उन्हें आया देख सदोशिव मन्द-मन्द हंस पड़े और

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

बोले-हे देवताओ ? अब तुम भयमत करो । तुम लोग तो मेरीही संतान हो मैं तो तुम्हारे हितके लिए तुम्हें दण्ड देता हूं, क्रोध से नहीं । वायु बोले-हे ऋषियो ? इस प्रकार शिवजीके प्रेम पूर्ण वचन सुनकर सभी देवता प्रसन्न हो गये हाथ जोड़कर सदाशिव की स्तुतियां करने लगे । विष्णु बोले-हे शङ्कर ! आप ही तो रजोगुण सत्वगुण एवं तमोगुण द्वारा उत्पत्ति पालन संहारादि क्रिया करते हैं ब्रह्मा विष्णु रुद्रतो आपकेही स्वरूप हैं। आप सबके भीतर बाहर रहने वाले चराचर के स्वामी विद्याओं के भंडार अभिमानियों के मद को चूर्ण करने वाले सबपर कृपा करने वाले हो। हम लोग सभी आपकी शरण में आये हैं हमारे अपराध क्षमा करें । ब्रह्माजी ने कहा-हे देवाधिदेव ? आप तो दुःखियों के दुःख करने वाले हो, इन दुःखी देवताओं को सुखी करो । बहुत से देवताओंके शरीर युद्धमें छिन्न भिन्न हो चुके हैं और बहुत से मरभी चुके हैं । आप कृपा करें सभी स्वस्थ हो जाँय और जीवित हो जाँय, तव ब्रह्माजो की प्रार्थना सुनकर श्री पार्वतीजी की ओर देखते हुए भगवान शङ्करजी ने सभी देवताओं का कल्याण कर दिया । उसके वाद भगवान शङ्करजीकी इच्छा से ब्रह्माजी ने दक्षके पापों के अनुसार उसके शरीर पर एक बृद्ध वकरे का सिररख दिया । वह जीवित हो गया । उसने स्वय शिवजी कोबारवारप्रणामकिया हाथ जोड़कर स्तुति करने लगा । हे जगत् के स्वामी ! भगवान शङ्करजी आप मुझ पर कृपा करें मेरे अपराध क्षमा करें, मैंने अब समझलिया है कि जगतके कर्ता धर्ता पालन संहर्ता सभी कुछ आपही हैं इतना कह कर दक्षजी अश्रुएं बहाने लगे । दक्षकी प्रार्थना सुनकर सदाशिव संतुष्ट हो गये और उसे अक्षय गणपति बनाकर बोले–हे दक्षजी ! अब तुम भय मत करो मैंने तो तुम्हें अपने गणों का स्वामी बना दिया है । जो कुछ भी तुम्हारे साथ हुआ है सभी तुम्हारे कर्मोंका फल था । सारासंसार ही अपने २कर्मोंसे बंधा हुआ है। जब तक कर्मों का फल नहीं पा लेता तब तक मुक्ति नहीं होती है। अब तुम कर्मों का फल भोग चुके हो मैं तुम पर प्रसन्न हूं तुम लोग अपने २ स्थान पर जाओ इतना, कहकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

भगवान शङ्कर श्री पार्वती जी के साथ अन्तर्ध्यान हो गये। ब्रह्मा विष्णु आदि सभी देवता वीरभद्रजी के पराक्रम का वर्णन करते हुए अपने २ लोक में चले गये।

* चौवीसवाँ अध्याय *

(मन्दराचल पर निवास)

ऋषि बोले—हे वायुदेवजी ? भगवान शङ्कर वहाँ से अन्तर्ध्यानहोकर फिर कहां पधारे और कहां निवास किया ? अब आप कृपा करके यह सुनाइये। वायु बोले—हे मुनिजनों ! सुनिये, मन्दराचल पर्वत ने अपने ऊपर शिव पार्वतीजी के निवास करने की इच्छा धारकर कठोर तपकिया था। भगवान शङ्कर अब उसकी कामना पूर्ण करने के लिये अपने गणों के साथ मन्दराचल पर्वत पर पधारे। मन्दराचल पर्वत अनेकों मणियोंसे चमकता हुआ अनेकों गुफाओंसे शोभायमान अति रमणीक होरहा था, तव श्री पार्वतीके साथ भगवान शिव वहाँनिवास करके अनेको लीलायें करने लगे। इस प्रकार इन्हें बहुतसा समय गुजर गया। उस समय प्रजा बहुत बढ़ गई थी, उनमें शुम्भ निशुंभ नामके दो दानव पैदा हो चुके थे। अपने स्वार्थ के लिए इनदोनोंने कठोर तपस्या द्वारा ब्रह्माजीकोप्रसन्न कर लिया था। ब्रह्माजी ने प्रत्यक्ष होकर उन्हें वर देने के लिए कहा तब दोनों ने अपने आपको अवध्य रहने का वर माँग लिया। ब्रह्माजीने कहा तुम दोनों बलवान होओगे, कोई तुम्हें नहीं मार सकेगा। किन्तु अयो निज जन्म रहित जगदम्बाके अंशसेउत्पन्न जिसको किसी भी पुरुष का स्पर्श न होगा, इस प्रकार की कन्या की अभिलाषा करोगे तभी तुम्हारी मृत्यु होगी। इसलिये तुम इस प्रकार की अभिलाषा न करना। इसप्रकार उन दोनों को कहकर ब्रह्माजी अंतर्ध्यान हो गये। उस वरदान को पाने से दोनोंने मदोन्मत्त होकर देवताओंकोभी जीत लिया और आप इन्द्रासन पर बैठकर त्रिलोकी का राज्य भोगने लगे। फिर धर्म मर्यादा को नष्ट करने पर तुल गये। इस प्रकार का अत्याचार देखकर ब्रह्माजीने सदाशिव की प्रार्थना तथा स्तुति की और बोले-हेमहेश्वरजी ! अब आप कृपो

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

करके श्रीउमाजी को क्रुद्ध करने की चेष्टा करिये जिससे शुम्भ निशुम्भ दोनो दैत्यों का नाश हो यह सारा संसार उनके अत्याचारोंसे दुखित हो रहा है उनके नाश से संसार को सुख मिले तब ब्रह्माजीकी प्रार्थना करने पर भगवान शङ्कर हंसे। फिर स्त्रियों की बुराई करने लगे तब तो श्रीउमा देवी क्रोध से भड़क उठीं क्योंकि आप नारी ही थीं और उनके द्वारा नारीकुल उत्पन्न हुआ था।

भगवान् शङ्कर से बोलीं–हे देवाधिदेव ! मेरे से उत्पन्न हुए स्त्रीकुल से मालुम होता है कि आप अप्रसन्न हैं। यदि ऐसा है तो आप इतना समय मेरे साथ किसप्रकार निकालसके हो ? पहले मुझे क्यों नहीं जताया गया ? यदि मेरे साथ प्रेम नहीं था। तो फिर विलास क्यों करते रहे फिर भी आप नारी निन्दक हैं तो मैं इस शरीर को त्यागदेती हूं। किसी दूसरे कुल में पैदा हो जाऊंगी। वायु बोले-हे मुनियो ! इतना कहकरजगत् जननी उठी और तपकरने का निश्चय करलिया। फिर भगवानशङ्करजी को सन्देह होगया कि हमारा प्रेम भी क्या नष्ट होने वाला है तबशङ्करजी नम्रताके साथ बोले–हे देवीजी ? तुम किस प्रकार की बातेंकर रही हो। मेरे आशय को समझे बूझे बिना आप किधर जा रही हो। सारे संसार का मैं पिता हूं और तुम माता हो मेरे तुम्हारे संयोग से तो यह संसार पैदा हुआ है, काम द्वारा नहीं। इस कामने मुझे साधारण देवता समझ कर कुछ बाधा पहुंचाई थी। मैंने तो उसे केवल अपनी दृष्टि द्वारा ही भस्म कर दिया था। अब हम किसी अन्य कार्य को करना चाहते हैं। वह कार्य केवल आपके क्रोध द्वारा ही पूर्ण हो सकता है। मैं तो आपके प्रेम के वशीभूत हूं। आप सन्देह न करे। श्री उमाजी बोली–हे स्वामिन ! मैं आपकी सभी बातें जानती हूँ। पहिले भी आप मुझे त्याग चुके हैं, अब भी उसी कारण से त्यागरहे हैं। संसार में तो वही स्त्री प्रशंसाके योग्य होतीहैं जो पति को प्यारीन लगने पर अपने प्राणहीत्याग दे। मालूम होता है कि वह मेरा काला वर्ण आपको पसन्द नहीं और मेरा बचपन का काली नाम भीं आपको पसन्द नहीं। उसी कारण अब

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

मैं इस शरीर का तप द्वारा त्याग कर दूंगी। तब शङ्कर-बोले यदि आप यही चाहती हैं तो मेरी अथवा अपनी इच्छा से कोई और रूप धारण करो। उमाजी बोली, मैं आप द्वाराऔर रूप नहीं चाहती। मैं तो तपस्या से ब्रह्माजी को प्रसन्न करके गौरी बनना चाहतीहूँ। भगवान शङ्कर बोले-हे देवि! ब्रह्माजी ने ब्रह्मपद मेरी ही कृपा द्वारा प्राप्त किया है। उनके प्रसन्न करने के लिये तप की क्या आवश्यकता है। वैसे ही उनकोबुला सकती हो। श्रीउमा बोली-इसमें कोई सन्देह नहीं। सभी देवताओं ने आपकी कृपा द्वारा उत्तम पद प्राप्त किये हैं। किन्तु फिरभी आपके वियोग से तप करके ही मैंने आपकी प्राप्ति के लिए ही दक्ष के यहाँ जन्म लिया था। इसी कारण आप मुझे रति रूपमें प्राप्त हुए और आज भी ब्रह्माजी को प्रसन्न करके गौरी होना चाहती हूँ।

* पच्चीसवां अध्याय *

(कालिका की उत्पत्ति)

इस भगवान शङ्करकी इस प्रकार प्रार्थना करके तथा परिक्रमा कर और आज्ञा लेकर भगवती उमाजी वहांसे चल पड़ी। सीधी हिमालयपर पहुंचकर अपने पिता-माता से मिलकर फिर पहिले वाले स्थान पर तप करने के लिये पहुँच गई। अपने शुद्ध हृदय में भगवान शङ्कर के चरणों का ध्यान करके सभी वाह्य क्रियायें त्यागकर कठोर तपस्या करने लगगई। प्रतिदिन प्रातः मध्यान्ह सायंकाल तीनों समय स्नानादिक करके वन के पुष्पादिक लेकर पूजन करती थी। बनके ध्यानमें यही भाव थे कि स्वयं सदाशिव ही ब्रह्माजी की मूर्ति में विराजमान होकर पधारें और मुझे इस तपस्या का फल प्रदान करे। इस प्रकार के पूजन, ध्यान, तप करते-करते आपको बहुत-सा समय व्यतीत होगया। उस समय वहाँ एक उग्रसिंह आ पहुंचा। भगवती के निकट पहुँच कर वह भगवतीमाता को भक्षण करने के लिये तत्पर हुआ किन्तु भगवती के उग्रतेज प्रकाश के आगे उसकी एक भी न चली। वह मूर्ति जैसा वहाँ खड़ा का खड़ा रह गया। वह भूखा तो था ही उसे अन्यत्र कही मांस मिल नहीं रहा

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

था भगवती के शरीर का लोभी होकर रात दिन भगवती को देखते देखते वहां खड़ा रहा। भगवती उमा जब उसे देखती तो अपने मन में यही धारणा करलेती कि यह सिंह मेरा भक्त है। अन्य हिंसक जीवों से मेरी रक्षा करनेके लिये यहां खड़ा रहता है। उस प्रकार की धारणा द्वारा उस सिंह के सभी पाप भगवती ने नाश कर दिये और उसे दया की दृष्टि दी जिससे वह पाप मुक्त होकर भगवती के प्रभाव से भूख प्याससे छुटकारा पा गया उसका जीवन सफल होगया। फिर तो भगवती उमा जीकी सेवामेंतत्पर होगया हिंसक जीवों से भगवती की रक्षाकरता हुआ स्वतंत्रता पूर्वक वनमें विचरण करने लगा। इधर दैत्य गण अत्यन्त उपद्रव कर रहें थे। देवता लोग उनके उपद्रवों से बहुत व्याकुल होगये। सीधे ब्रह्माजी के पास पहुँचे उन्हें अपना दुखड़ा सुनाया। तब ब्रह्माजी देवताओंको दुःखोंसे विमुक्त करनेके लिये भगवती उमाजीके पासआये। उन्हें तपमें लीन देखकर मन ही मनमें प्रणाम किया। भगवतीजी ने भी देख लिया उठकर उनका आदर सत्कार किया। आदर पाकर जब ब्रह्माजी बैठगये तब उन्होंने पूछा-हे मातेश्वरीजी! आप तो तपस्याओं का फल देने वाली हैं। फिर आप इस प्रकार की कठोर तपस्या किस कारण कर रही हैं भगवतीजी बोली-हे ब्रह्माजी! सृष्टि के आरम्भ होते ही आप भगवान शंकरजीसे उत्पन्न हुए हो इस कारण तुम मेरेज्येष्ठ पुत्र हो। फिर प्रजावृद्धि के लिए भगवान रुद्र आपके मस्तक से प्रकट हुए है इस कारण आप मेरे श्वशुर भी हो। इसके बाद मेरे पिता हिमाचल राजा आपके पुत्र हैं - इस नाते से आप मेरे पितामह (दादा) हुए। इन कारणों से मैं मनोरथ आपके सामने किस प्रकार प्रकट करूं किन्तु कहना ही पड़ता है। अब प्रार्थना यह है कि मैं अपना यह काले वर्ण का शरीर त्याग कर गौरी बनना चाहती हूँ। यह सुनकर ब्रह्माजी बोले-हे देवीजी! इस छोटे से कार्यके लिये इतकी बड़ी तपस्या! मुझे आश्चर्य है कि आप सर्व शक्तिमयी होते हुए स्वयं ही क्यों न इस प्रकारका रूप धारण कर लेती हो। अस्तु मैंने जान लिया कि इसमें एक रहस्य है यह आपकी लीला

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

जगतके सुखके लिये है। इस प्रकार से ही मेरी कामना पूर्ण होगीइसी रूपसे शुंभ निशुभ नामक महा उपद्रवी दैत्योंका आप विनाश करोगी। ये दोनों मुझसे वर पाकर महा पराक्रमी हो रहे हैं सारी प्रजा कोदुखित कर रहेहैं। अतः आप गौरी स्वरूप धारकरइनका नाश करके जगतको सुखी करो। ये दोनों विना आपके और किसीसे नहीं मर सकेंगे तब ब्रह्माजीं का कथन सुनकर भगवती ने उस शरीर का त्याग कर दूसरा शरीर गौरी रूप वाला धारण कर लिया। भगवतीके उसदेह द्वारा मेघों के समान श्याम वर्ण कौशिकी नामक कन्या उत्पन्न हुई। भगवती स्वयं माया स्वरूपिणी थी। उसने आदि योगिनी-अष्ट भुजावाली जिनमें शङ्ख चक्र त्रिशूल आदि आयुध धारित थे इसप्रकार शक्ति सम्पन्नादेवी प्रकट करके स्वयं सुन्दरी होकर दर्शन देने लगी। तब ब्रह्माजी ने शंभु निशुम्भ दैत्यों के बध के हेतु उसे शक्ति प्रदान की और सवारीके लिये सिंह दिया- विन्ध्याचल पर निवास देकर मद्यमाँस पूआ आदि वलियोंसेउसका पूजन किया। फिर तो वह शक्ति उमा देवी ब्रह्मा को प्रणाम करके विन्ध्याचल पर पहुंची। वहां आकर शुम्भनिशुम्भ दोनों दैत्यों का विनाश करके सभी देवताओं को सुखी कर दिया।

* छब्बीसवां अध्याय *

(सिंह पर दया)

वायु बोले—हे मुनियों! अपनी प्राचीन त्वचा द्वारा गौरी ने कौशिकी कालिका को उत्पन्न करके उसे ब्रह्माजी के काम को पूर्णकरनेके लिये लगा दिया। उसके बाद अपने सेवक उससिंह पर दया करके उसके हित के लिये ब्रह्माजी से कहा—हे ब्रह्माजी! यह सिंह मेरा परम भक्त है। यह तो तपस्या करते समय अन्य हिंसक जीवों से मेरी रक्षा किया करता था। इस कारण यह सदा के लिये मेरे ही पास रहे इसका निवास मेरे ही राजभवन में होगा। अब मैं इसको भी साथलेकर अपने घर जाना चाहतीहूं। मुझे आज्ञा प्रदान करें। इतना सुनकर ब्रम्हाजी बोले—हे जगदम्बे! यह तो आप सांप को अमृत पिला रही हो। मुझेतो

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

यह कोई कपटी दैत्य मालूम होता है। इस प्रकार तो यह ऋषि मुनियों की एवं असंख्य जीवों की कई रूप बना कर हिंसा किया करेगा। इस-लिये इसे अपने कर्मों पर ही छोड़ दें। तब गौरीजी बोली-हे ब्रह्माजी आपका कहना तो सत्य है किन्तु यह मेरी शरण में आ चुका है और निरन्तर सेवा किया करता है फिर किस प्रकार छोड़ा जाय। ब्रह्माजी बोले-हे परम कल्याणी! मैं तो इसे कर्मों का फल भोगने वाला समझ रहा था। मुझे मालूम नहीं था कि यह आपकी भक्ति में रङ्ग चुका है और आपका परम भक्त है। यदि ऐसा है तो फिर यह निष्पाप है। आपका परम सेवा पात्र है। वायुदेव बोले—ब्रह्मा ऐसा कहकर वहांसे अन्तर्ध्यान हो गये उसके बाद श्रीगौरी देवीजी अपने माता-पिता के यहाँ से होकर सिंहको साथ लिये मन्दराचल पर्वत पर भगवान शङ्करके पास पहुंच गई।

* सत्ताईसवां अध्याय *

(श्री गौरी मिलाप)

वायुदेव बोले हे ऋषियो! श्री गौरीजीने अपने राज महलमेंपहुंच कर भगवान शंकर की चरण वन्दना की तब शंकरजी ने श्री गौरी जी को अपने चरणोंसे उठाकर छाती से लगा लिया। श्री गौरी जी हंसते-हँसते शय्या पर बिराजी भगवान शङ्कर भी प्रसन्न होतेहुए वहां पहुँचकर उन्हें गोदमें लेकर मुख कमल का अस्वाद पाकर बोले-हे प्राणेश्वरीजी! आपको क्रोध करने का कारण तो भूल गया होगा। अपने स्वभाव से ही काली तथा गौरी रूप द्वारा मेरे मनको लुभा दिया है। हम दोनोंका प्रेम तो साधारण जीवों की भाँति नही इस कारण हमारा परस्पर किसी प्रकार विद्वेष नहीं होना चाहिये। हम तो संसार के कारण एवं आधार हैं। इसी कारण हम दोनों मिल कर रहें हमारा वियोग न होने पावे। इस प्रकार भगवान शंकर के वचन सुनकर गौरीजी कुछ शरमा गईं फिर कहने लगी-हे देवाधिदेव! आपकी कृपा से मैंनेकौशिकी नाम की एक कन्या उत्पन्न की है। वह अत्यन्त रूप बल पराक्रम से युक्त है और उसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

ने जाकर विन्ध्याचलकी गुफा में युद्ध करके शुम्भ-निशुम्भ दो दैत्यकासंहार किया है और यह वह शक्ति है जिसकी आराधना से मानवगण प्रत्यक्ष ही फल पाएंगे। ब्रह्मादिक देवता भी उसकी आराधना किया करेंगे। इसी के द्वारा लोकों की रक्षा होगी श्रीगोरीजी ने इतना कहकर फिर अपनी सखियों द्वारा सिंहको बुलवाकर सदाशिवसे फिर कहा—हे स्वामिन! उस अपने अनुचर सिंहको मैं अपने साथ लेती आईहूं। तपस्या करते समय मेरी सेवा तथा रक्षा किया करता था। अब इस पर भी आप अनुग्रह करें यह मेरे द्वार पर द्वारपाल होकर बैठा रहे। वायु बोले-हे ऋषियो! इस प्रकार श्रीगौरीजीका नम्रता पूर्वक वचन सुनकर शङ्करजी ने मुस्कराकर सिंहको द्वारपालों के चिन्हों से सुशोभित कर दिया। फिर सोमनन्दा नामक द्वारपाल को राजमहल का मुख्य द्वारपाल बनादिया। इसके बाद अनेकों आभूषण तथा वस्त्रोंद्वारा श्रीगौरीजी का अपने हाथों से ही शृङ्गार किया।

* अट्ठाईसवां अध्याय *

(सोम अमृत, अग्नि का ज्ञान)

वायु बोले-हे ऋषीश्वरो! भगवान शङ्करजी का रूप तेजयुक्त है। इसी कारण कठोर अग्नि रूप है और श्री गौरीजीका कलेवर परशाँत अमृत मय चन्द्र रूप है इस प्रकार शान्तमय है। इस तेज में अमृत ही अमृत है। यह विद्या एवं कला रस रूप सभी प्राणियों में सूक्ष्म रूप से विद्यमान है। सूर्य रूप तथा अग्निरूप के कारण तेज दो प्रकार का है। इस प्रकार जल रूप एवं सोमरूप के कारण रसवृत्ति भी दो प्रकार की है। विद्युत आदि रूप वाला तेज है मधुरता आदि रस है। इस प्रकारसे तेज तथा रस सभी चराचर प्राणियोंमें विद्यमान है। देखो अमृत अग्नि से पैदा होता है और अमृत से बृद्धि पाती है। इसी कारण तो संसार सुखके लिए अग्नि में अमृत की आहुतियाँ दी जाती हैं। हवि के लिये अन्न पैदा होता है अन्न वृद्धिके लिये वर्षा होतीहै। इसी कारण हवि वृत्ति देने वाली है। अतएव अग्नि तथा अमृत दोनों ही

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

संसार को धारण कर रहे हैं। अग्नि जल कर ऊपर को वहां तक पहुँच जाती है जहाँ पर सोम रूप अमृत टपकता रहता है इसी कारण कालाग्नि नीचे जलायी जाती है और ऊपरसे शक्ति ही सोमयय अमृतटपका देती है। ऊपर तक पहुंचने वाले इस कालाग्निको भी शक्ति धारे रहती है इस प्रकार नीचे टपकने वाला अमृतमय सोम शिव शक्ति में स्थित है। यह समझो कि संसार के नीचे शक्ति है और ऊपर को सदाशिव है इन दोनों से संसार व्याप्त हो रहा है। एक बार इस अग्नि ने संसार जला कर भस्म कर दिया तभी से यह भस्म अग्नि का वीर्य कहलाई उस भस्म का पूरी तौर ज्ञान पाकर "अग्निरित्यादि" मन्त्र बोल कर भस्म से स्नान करने वाला मनुष्य साँसारिक बन्धनों से शीघ्र मुक्त हो जाता है।

* उनत्तीसवां अध्याय *

(छः मार्गों का वर्णन)

वायु देव बोले-हे ऋषीश्वरो ! जितने भी शब्द हैं वे सब अर्थयुक्त हैं प्रकृतिका परिणाम रूप शिव तथा पार्वतीजीका शब्द तथा प्राकृतिक एवं मूर्ति रूप होने से दो प्रकार का है शब्द रूप बाली विभूति तो स्थूल सूक्ष्म तथा परा इस प्रकार से तीन प्रकार की है। स्थूल चिन्ता रहित है सूक्ष्म चिन्ता सहित है इनसे परे शिवतत्व का आधार रूप पराशक्ति है। ज्ञान तथा शक्ति इन दोनों के योग द्वारा इच्छा के साथ सारी शक्तियों की समष्टि रूप एक ही शक्ति तत्व प्रसिद्ध है। सभी कार्योंको कर देने कीजो शक्ति है वही प्रकृतित्व को प्राप्त होती है वही शुद्ध मार्गरूप है उसे पर मादेवी कुंडलिनी माया कहा जाता है। उसी के विभाग करने से छः मार्गों वाली हो जाती है। तीन शब्द मार्ग एवं तीन उनके अर्थ मार्ग हैं अपनी २ शुद्धि के अनुकूल ही सभी तत्व विभागों से लय भोग तथा अधिकार है कलाओं द्वारा वही तत्व अनुकूल स्थानों पर व्याप्त रहते हैं। इस प्रकार परिणाम रूप से परा प्रकृति के भी पाँच भेद हैं वे सभी कला तथा निवृत्त आदि द्वारा व्याप्त मन्त्र मार्ग पदमार्ग एवं वर्ण मार्ग ये तीन भेद तो शब्द के एवं भुवनमार्ग तत्व मार्ग तथा कला मार्ग ये

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

तीन भेद अर्थ के हुए ये सब परस्पर व्याप्त व्यापक भाव से रहते हैं वाक्यों से पद पदों से वाक्य पूर्ण रहते हैं। वर्णों के समूह को पद कहा जाता है। वर्ण भुवनोंमें व्याप्त हैं भुवनों में वर्णों का ही तो आधार है ये सब कारण तत्वसेपैदा होते हैं तभी तो अनन्त है और कुछ ऐसे भी भुवन हैं जो भीतर से उत्पन्न होते हैं इसके अतिरिक्त अन्य शिव शास्त्रों में प्रसिद्ध हैं जो कि पौराणिक हैं सांख्य योग विख्यात जो तत्व हैं अथवा शिव शास्त्र विख्यात अथवा इनके अतिरिक्त अन्य तत्व सबके सबकलाओं से परिपूर्ण है जो प्रकृति है उसके परिणामरूप द्वारा निवृत्त आदि पाँच कला हैं वे सभी उत्तरोत्तर के क्रम से व्याप्त हो रहे हैं। छः भागों में विभक्त परा शक्ति तो इनसे बाहर है वह परा शक्तिके भाव सत्व से और शिव तत्व से परा शक्ति विद्यमान है हे ऋषियो? शक्ति से आरम्भ करके पृथ्वी तक शिव तत्व से ही पैदा होते हैं सब उसी शिवतत्व से ही पूर्ण हैं जैसे घड़ों में मिट्टी परिपूर्ण रूपेण है इस प्रकार छहों मार्गों द्वारा व्यापिका तथा अध्यापिका शक्तिके पांचों तत्वों की शुद्धिकर लेने के कारण ही प्राण शिवतत्व के परम उत्तम स्थान को पा लेता है निवृत्त कलासे आरम्भ करके रुद्र पर्यन्त अण्डस्थितको शुद्ध किया जाता है। फिर प्रतिष्ठा कलाके आगे है अव्यक्त वह अगोचर है उसकी शुद्धि होती है इसी प्रकार विद्याकलासे आगेविश्वेश्वर पर्यन्त की शुद्धि होती है है। फिर इससे आगे ऊर्ध्व मार्ग पर्यन्त शान्तिकला द्वारा शुद्धि होती है शाँतिके बाहर जब पराप्रकृतिका मेल होता है उससे आकाश है इसी प्रकार के पाँच तत्व गिने गये हैं। इन्हीं से सारा संसार भरा हुआ है सारे संसार की आधार रूप होकर जो शक्ति, आज्ञा, परा, शैवी, चित्ररूपा, परमैश्वरी देवी है उसे भगवान सदाशिव ने सम्पूर्ण जगत् में स्थिर कर रखा है किन्तु यह वह शक्ति है जिससे आत्मा विकार वन्धन मुक्त आदिसे युक्ति नहीं होत। त्युत यह तो वन्धन तथा मुक्ति दाता है। इसमें परमात्मा शिवका कोई व्यभिचार नहीं। भगवान् शङ्कर गृही हैं अर्थात पुरुष हैं। शक्ति गृहिण अर्थात् पत्नी है इसी से सारा ससार जन्म पाता है। हैं

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

ये दोनों एक ही। इस प्रकार कारण कार्य के भेद से स्वयं शिव ही दो प्रकार के हुए। कई लोग कहा करते कि शिव तथा शक्ति परस्पर पति-पत्नी जैसा व्यवहार करते हैं एवं कई लोग शिव तथा शक्ति को एक रूप मानते हैं। हां कार्य कारण रूप से पृथक-पृथक भासते हैं। यह पराशक्तिशिव आज्ञा द्वारा तीन गुणों वाला होता है ये कार्य क्रमके भेद द्वारा तीन प्रकार की होती हुई छः मार्ग पैदा करती है। ये छहों शब्द तथा अर्थरूप हैं। छहों के छहों सारे संसार में व्यापक हैं। इनका विस्तृत वर्णन शास्त्रों में वर्णित है।

* तीसवाँ अध्याय *

(महेश्वर के सगुण निर्गुण के भेद)

ऋषि बोले-हे वायुदेव! भगवान शङ्करकीलीलायें तो अत्यन्तअद्भुत और कठिन-सी हैं ये तो पूरी तौरसे नहीं जानी जा सकती, शिव शक्ति के विषयमें किसी प्रकार का साँसारिक दोष नहीं। इन दोनोंकी क्रीड़ातो प्रकृतिका खेल है। ब्रह्मा आदि सभी देवता शिव कृपा से जगत् के उत्पादन आदि की सामर्थ्य पाते हैं किन्तुशिव किसी कृपा के वश नहीं। ये तो स्वच्छन्द हैं इनका सभी वैभव स्वाधीन है। इनका स्थान भी स्वभाव सिद्ध रूपवान् है। यदि बिना कारण मूर्ति भी कार्य रूप सिद्ध मानी जाय तो सर्वत्र परम भाव होगा। तव अन्य परम भाव रहित क्यों हो। ये तो परमेश्वर हैं। यदि ये कला रहित निर्गुण स्वभाववान् हैं तो कला सहित सगुण विपरीति स्वभाववान् क्यों हो। क्या सगुण निगुण ये पृथक-पृथक हैं? परमात्मा शिव द्वारा सबमें मौजूद रहनेवाला एक सूक्ष्म तत्व है। यदि मूर्ति स्वरूप ही शिवमूर्ति मानली जाय तो क्या उसप्रतिमा में प्रतिमा वाला पराधीन हो सकेगा? यदि यह नहीं होनेका तो अपेक्षा रहित मूर्तिमें क्यों स्वीकार की जाती है। मूर्ति में साध्य फलकी चाहनासे अपनी इच्छा द्वारा देह स्वाधीनताके लिये होता ही नहीं। यह इच्छाभी अपने-अपने कर्मोंके अनुसार हुआ करती है ब्रह्मासे आरम्भ करके पिशाचों तक अपने-अपने कर्मोंके आधीन रहते हैं क्या सब अपनी-अपनी इच्छा

CC-0. ASI Srinagar Circle. Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

से जन्म विनाश होना मानते हैं। भगवान शङ्कर सब पर कृपा करने वाले कहे गये हैं सबको दुष्कर्मों का दण्ड भी देने वाले हैं। शिव निन्दा करते हुए ब्रह्मा के पाँचवे सिर को तभी तो काट दिया था। सिंह रूपधारी विष्णुको अपने पैरोंके नीचेदबाकर अपने पैने नखों द्वारा उनकी छाती विदीर्ण करदी दक्षयज्ञमें अपराध कर्ता सुर तथा सुरनारी सभी को वीरभद्र द्वारा दण्ड दिया गया आपने अपने नेत्रोंसेही प्रचण्डअग्नि प्रकट करदी। जिसके द्वारा दानवके प्रजा कुटुम्बियों के साथ ही त्रिपुर भस्म कर डाले। सांसारिक रति वर्धक रति पति, कामदेव भी आपकी क्रोधाग्निमें भस्म होगया। श्रीदेवीजी को समझाते हुए बल पराक्रमद्वारा हविरूप स्वाहाकोअग्निमें उत्तेजित कर दिया फिर अग्निके अंश गङ्गा में समर्पित हुए। स्वाहा देवी स्त्री स्वरूपा मानीगई सुमेरु पर्वतपर जाकर निवासकरके उसे सोने जैसी कान्ति वाले शरीरसेसुशोभितकर दिया यही समझलो कि उसे स्वर्ण का ही बना दिया वही निवासकरके देवी जी के साथ अनेकों लीलाएं की। एक पुत्र भी वहां प्रकट हुए वह दिव्य रूप तथा सौन्दर्यवान बालक था सुरासुर सभी उस बालकको देखकर मोहित होगये थे। शिव पार्वतीजीने उसे गोदमें ले लिया उसका मुख स्वादन लेने लगे। उस अवसर पर तपस्या करने वाले नर-नारियोंके मनमुग्ध होगये सभी तपस्या छोड़कर उस प्रसन्नता में नाचने लगे उस बालक के खेल अद्भुत थे। माता-पिता का प्रेम भी दिव्य था शङ्करजी पार्वती जी को हँसते २ बोले-लो इसबालकको स्तन्य पान कराओ तब देवीजी ने भी बालक को चूमकर अमृत समान स्तन्य पान कराया शिव। पार्वती पुत्र प्रेमसे परम प्रसन्न हुए ऐसा होने पर भी जगतकी रक्षाके लिये इन्द्र की प्रार्थना करने पर अपने बालकको तारकासुर के साथ युद्ध करने की आज्ञा देदी। युद्ध में विजय पाने के लिये पुत्रको कालाग्नि के समान क्रौंची भेमिनी अमोघ शक्ति दे दी। शिव कृपासे उस बालकनेतारकासुर का बध कर दिया विष्णु ब्रह्मा आदि सभी देवताओंने स्तुतियाँ की शिव महिमा अपार है अपने भक्त ब्रह्मचारी मार्कण्डेय की थोड़ी आयु को

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

बड़ा दिया और उसे चिरंजीव कर दिया। वह भी अकाल मृत्युसे छूटकर प्रणाम करने लगा। सदाशिवने तो वड़वाग्निको अपनी सवारी के लिए जा पकड़ा बृषवाहन होते हुए भी उसका गला प्रलय के समान पकड़ कर उस पर चढ़ बैठे इसलिये परमात्मा शिव सगुण तथा निर्गुणदोनों ही स्वरूप वाले हैं। प्रारब्ध के सभी कर्म जाल शिव ही निवृत्त कर सकते हैं और कोई भी देवता नहीं कर सकता है।

* इकत्तीसवाँ अध्याय *

(ज्ञानोपदेश)

वायु बोले-हे ऋषियो ! अब मैं आपको संशय नाशक नास्तिकता छुड़ाने वाला रहस्यमय ज्ञान समझाता हूं। सज्जन पुरुषों को यदि मोह होताहै तो शिवशङ्करमें ही अन्यत्र कहीं भी नहीं। जिस विषयका ज्ञान न हो उसे समझने के लिए संशय करके प्रश्न किया जाय तो यह कोई नास्तिकता नहीं। शिव विषय में प्रश्न करना तो आस्तिकता के लक्षण हैं। सदाशिव त घट-घट के ज्ञाता अन्तर्यामा हैं। उनके द्रोही को तो संसारमें कहीं भी सुख नहीं न कोई उसका सहायक होता है। हम लोग परमात्मा की साकार मूर्ति द्वारा निराकार परमात्मा के मूर्ति स्वरूप का ध्यान कर सकते हैं किन्तु पहले पहल निराकार ध्यान में नहींआ सकता। इसी कारण शिव प्रतिमा साकार शिवरूप है। उसे नित्य सत्य मानकर उनका पूजन अर्चन ही फलदायक है। इसी साधना द्वारा ही भक्त अपने लक्ष्य पर पहुंच जाता है ध्यान द्वारा ईश्वरका साक्षात्कार होता है ध्यान तो मूर्तिका ही सहज है। उस मूर्ति से चेतनस्वरूप परमात्मा व्यापक है। वही परमात्मा ध्यान से दर्शन देते हैं। शुद्ध भावना मूर्ति में होना आवश्यक है इसलिये शिवमूर्ति बनाकर उसकी आराधना विशेष भक्ति से करना चाहिये वही आराधना ही परमात्मा का होना बोध कराती है। पूजक को सांसारिक निन्दा नहीं प्राप्त होती। आत्मा की मुक्ति-भुक्ति के लिये शिवतत्व का ज्ञान आवश्यक है। साँसारिक भोग तो कर्मोंद्वारा होतेहैं। सुख दुःख सभी कर्मोंका फलहै। इस प्रकार के सुख दुःखदायक

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

कर्म सदाशिव में नहीं फिर उनका उपभोग किस प्रकार उन्हें प्राप्त हो ! सदाशिव तो श्रीकण्ठ नाम से विख्यात हैं। वे तो विश्वकी लीला में ही विराजमान हैं। इन्द्रियों निग्रह करना ज्ञानसे होता है उसी ज्ञानसे शरीर स्थिर होता है। भक्ति द्वारा सिद्धियां प्राप्त होती हैं। आराधना द्वारा दैहिक साहस बृद्धि पाता है। अपराधी को दण्ड दान परम नीति है। ईश्वर रूपमें संलग्न होकर नृत्यादिक सर्वोच्च सिद्धि है। ईश्वर इच्छा ही दैव अथवा विधाता कही जातीहै वेदोंकी आज्ञा पर चलना अनुशासन है उसीके अनुसार कार्य करना ही श्रेष्ठ पुरुषों का लक्षण है। उससे विपरीत कर्म वाला असाधु है। भला बुरा प्राप्त होता तो दैववश है सबसे हिल-मिलकर सबका कल्याण चिन्तन यह ईश्वर विधान है किसी भी काम को धैर्य द्वारा न करना ही लोकनिन्दा है। जिस प्रकार विना सिले कपड़ोंसे शरीर ढाँपने वाला लोकों से निन्दक होता है सिले कपड़ोंसे नहीं। पक्षपात करना अन्याय है। श्रेष्ठ कार्य करना कर्तव्य है अपना आराध्यदेव एक ही होना अनन्यताहै किंतु किसी निमित्तसे दूसरे देवोंका पूजन करना बुरा नहीं हित के लिए पुत्रोंकी ताड़ना हिंसा नहीं। इसीके द्वारा वह मनुष्य बनता है। रोगीसे निर्दयताके साथ व्ययहारकरना वैद्योंके लिए बुरा नहीं वह तो रोगी को अच्छा कर रहा है हिंसा करने वाले बुरे जीवों पर दया करना श्रेष्ठ नहीं उनको मार देना श्रेष्ठ है तभी तो बहुतसे जीवोंका कल्याण होताहै। साँपको पालना श्रेष्ठ नहीं वह तो बढ़कर बहुतसे प्राणियोंको काट खायेगा ! उसी प्रकार खल पुरुष बहुतों का घातक हो जाता है ऐसे दुष्टको समाप्त कर देना ही उत्तम है अथवा उससे पृथक रहना ही उत्तम है। अग्निमें मलिन ताम्बा डालनेसे अग्न दूषित नहीं होता है। तांबा ही शुद्ध हो जाता है। शिवजी के संयोग द्वारा आत्मा शुद्ध होजातीहै। अग्निके संयोगसे काला लोहा भी अग्नि जैसा चमक उठता है उसी प्रकार अज्ञानी पुरुष शिव भक्ति द्वारा अपनी आत्मा का अन्धकार निवृत्त करता है और जिस प्रकार लकड़ियों को भस्म करती हुई आग लोहे को भस्म न करके उसे अपना रूप देती है

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

उसी प्रकार शिव प्रेमकी लौ भी ऊंची उठकर भक्त मनुष्यको शिवरूप चेतन बना देती है क्षमा,चतुरता मित्रता आदि ये गुण तो गौण हैं, भिन्न-वृत्ति हैं। इन्हीं गुणोंके संयोग द्वारा मानसिक वृत्ति गुण तथा दोष का कारण हो जाती है किंतु जो गौण मुख्य सभी गुणोंकी वृत्तियां हैं वे तो शिव अनुग्रह से दोष अथवा गुण कारण बनती ही नहीं। अनुग्रह शब्द का अर्थ ही यह है कि संसार से मुक्त कराने वाले सदाशिव की हितकारी आज्ञा पर चलनेमें दृढ़ रहना श्रेष्ठहै तभी शिव अपना लेतेहैं। इस प्रकार की उनकी आज्ञा गौण नहीं उसी आज्ञा पर चलना हित है और यहहित ही अनुग्रह का वास्ताविक अर्थ है अर्थात् कृपा पा लेना अनुग्रह का पर्या-यवाची उपकार शब्द भी है इसी लिये सदाशिव अपने भक्तों पर सदा उपकार ही करते हैं। भक्तजन भी भक्ति में तत्पर सभी कुछ कर लेनेमें सामर्थ्य पाते हैं। भगबान शकर तो चेतन स्वरूप हैं वे जान लेते हैं कि यह मनुष्य जगत् का कल्याण चाहता है सब कामनायें उसकी पूर्ण कर देते हैं। जीव दैहिक सम्बन्धसे परतन्त्रसे होकर अनेकोंकष्टपाता है। जब वह शिव कृपा से स्वतन्त्र हो जाता है तब उसे कोई कष्ट नहीं छू सकता। जीवात्मा तो अमर है न तो उसे कोई शस्त्र काट सकता है न अग्नि जला सकता है, वायु भी उसको सुखा नहीं सकती फिर उसे दुःख काहे का। यह तो देह सम्बन्धसेही भोग भोगता रहताहै। सुकर्म एवं कुकर्म के भेद से दो प्रकारके कर्म हैं। पूजन पाठ भजन अपने जीवन सुधारने के उत्तम उपाय ये सब सुकर्म है। लोक निन्दनीय सभी कर्म कुमर्महैं। इस प्रकार के कर्मों का माया द्वारा वन्धन केवल जीवात्मा का होता है। वह प्रकृति के अनुसार ही उपाधिरूप होकर व्यापनहो जाता है। प्रकृति को स्वभाव कहतेहैं स्वभाव सबके अद्भुत होते हैं। कार्यों के भेदसे इनकी कल्पना नहीं की जा सकती। जो कर्म तथा माया को अनु-बन्ध कहा गया है वह अत्यन्त विचित्र है। कोई प्राणी तो मायाचक्र में बद्ध है और कोई मुक्त है। किसी का लयहै। इस प्रकार से माया के फेरमें पड़कर प्राणी अनेकों झंझटोंमें पड़ा हुआ हिरणकी तरह इधर-उधर

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

भटकता रहता है। जैसा भोगों का उसे अधिकार मिलता है उसी तरह उसकी ऊंच नीच गति होती है उनमें कोई तो भूर्त्यात्मामें मङ्गलरूपहोकर षड़ध्वज में निवास किया करते हैं कितने तो मध्यस्थ जो महेश्वर हैं अथवा रुद्र हैं उनका स्वरूप होकर अन्तिम पदमें पहुँच जाते हैं। इस प्रकार से ये तीन स्थान माने गये हैं। सबसे ऊपर परमात्मा मध्य में अन्तरात्मा अधोभाग में आत्मा होता है। उसी प्रकार से सदाशिव सबसे ऊपर मध्य में पितामह-ब्रह्मा,नीचे विष्णुदेव हैं। कोई२शिवजी को अन्तरात्मा मानते हैं। सर्वत्र विद्यमान प्रतिष्ठित आत्माही शिव हैं। स्वरूपवान विष्णु हैं और परमात्मा ब्रह्मा हैं ऐसा मानते हैं। देवयोनियां आठ हैं,वे श्रेष्ठ हैं। मनुष्य-योनि मध्यम है, पशु, पक्षी,कीट पतङ्गादि की ये चौदह योनियाँ अथवा पाँच योनियां नीचे हैं। उच्चात्मा होते हुए नीचयोनियां पाना येतोमनुष्यों के आधीन है यदि वे अच्छे कर्म करेंगे तो उच्चयोनियों में यदि नीच कर्म करेंगे तो नीच योनियों में जाँयगे। इस प्रकार कर्मों द्वारा उच्चनीच पद भी मिलता है। सत्व,रज तम, ये तीन गुणों से त्रिगुणात्मक योनियाँ प्राप्त होती हैं पशुसंज्ञक जीव प्राकृतिक, सात्विक, राजस, तामस इन गुणोंकी यथाक्रम प्रधानता होने से गाय, सिंह, ऊँट आदि योनियाँ प्राप्त होती हैं। इसी प्रकार पक्षी, सर्प, कृमि,कीट, पतङ्ग आदिकी योनियाँ भी समझना चाहिये। समस्त गुणोंके स्वामी, सगुण निर्गुणमूर्ति सच्चि-दानन्द रूप केवल एक ही शिव है। यह सारा ब्रह्माण्ड, महाभूमि रूप, रुद्र भगवान में व्याप्त है। पुरुष जीवतो अंगुष्ठ मात्र होते हुए मायाद्वारा घिरा हुआ है। मायाका चक्र तो रथके चक्र की तरह घूमा करता है। कभी ऊपर चलाजाता है तो कभी नीचे। इसी प्रकार जीव अनेकोंकोटु-म्बिक सम्बन्ध से यातनाएं भोगता है। बिना शिवकृपाके कभी भी उसका उस चक्र से मोक्ष नहीं होता। इसका परिणाम यह निकलता है कि वह जीव पुरुष आवागमन के चक्रमें उलझ कर रोगों का घर हो जाता है उससे तीन प्रकार के ताप चिपट जाते हैं। इन तापों के निवारक सच्चे वैद्य तो शिवशङ्कर हैं। उनकी प्रार्थना अर्चना करने पर ही भवका निवा-

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

रक औषधि मिलजाती है अन्यथा नहीं। उनकी तो केवल नामोच्चारण ही परम औषधि सब दुःखों को मिटा देती हैं। शारीरिक रोगों की निवारक जैसे वेद्योंकी औषधि होती है उसी प्रकार संसार भवके अनन्त दुखों के नाशक भव बन्धनों से मुक्त कराने वाले परम वैद्य तो सदाशिव हैं। यह परमवैद्य सर्व प्रथम जीबि के मूल का नाश करते हैं फिर जीवकेनिर्मल हो जाने पर उसे वह शक्ति देते हैं जिसके द्वारा वह माया से तर जाता है फिर शिव सानिध्य पा लेता है। जिसप्रकार लोहकर्षक चुम्बुक लोह को दूर से आकर्षित कर लेता है वैसे ही भक्तों की पुकार भी चुम्बक होकर परमात्मा को अपनी ओर आकर्षित कर लेती है भगवान शङ्करजी की एक आत्मिक शक्ति है बह सदैव शिवमाया तत्पर रहती है, वही शिव शक्ति सदाशिव के विचार के अनुसार जीवों को सत्कार्यों में लगा देती है। अज्ञानके मदमें अन्धा हुआ जीव सदाशिव को ईश्वर नहीं मानता। इस प्रकार वह अपना सारा जीवन खो बैठता है। सदाशिव तो जहांबुद्धि की सभ्यता नहीं, सूर्य चन्द्रकी गति जहाँ पहुंच नहीं पाती वह ज्योतिरूप भगवान सदाशिव वहाँ ईश्वर भक्ति द्वारा भक्तों के पास आकर्षित हो कर आते हैं।

* बत्तीसवां अध्याय *

(अनुष्ठान का विधान)

मुनि बोले-हे वायु महात्मन ! उस ज्ञान का अनुष्ठान किस प्रकार किया जा सकता है जिसके द्वारा प्रत्यक्ष ज्ञान होकर मुक्ति प्राप्त हो जाय अब कृपा करके हम लोगों को यही समझाइये। वायु बोले-हे मुनियों ! इस प्रत्यक्ष ज्ञान की प्राप्ति के लिये तो शिव अर्चन ही एक उत्तम अनुष्ठान है। शिव आराधन द्वारा ही मोक्ष पद प्राप्त होता है। उस आराधन का अनुष्ठान पाँच प्रकार का है। क्रिया, जप, ध्यान, ज्ञान, इन साधनों द्वारा किया जा सकता है। यह साधन हैं तो कठिन लेकिन जब शिव कृपा होती है तब यह सहज होने लगते हैं इनके द्वारा सिद्धि पा लेना ही उत्तम धर्म है। जो मुक्ति देने वाला परोक्ष अपरोक्ष नाम से होता है। यह

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

धर्म भी वेदों में वर्णित है। और दो प्रकार का है। एक उत्तम धर्म है दूसरा अधम। इन दोनों को बताने वाले वेद तथा उपनिषदोंके योग से आरम्भ करके जो धर्म किया जाय वह परम धर्महैऔर इससे अधोभाग में जो किया जाय वह अधम धर्म कहाता है। परम धर्म के तो निर्मल आत्मा वाले जन ही अधिकारी हैं और अधम धर्म के अधिकारी सभी साँसारिक जन हैं। धर्म शास्त्र आदि द्वारा साँग उपाङ्ग से वृद्धि पाकर ये परम धर्म अपर अमर का साधन है। इस शिव के परम धर्म तथाइसके सस्कार अधिकार आदिका वर्णन शिव शास्त्र इतिहास एवं पुराणों में भली भाँति मिलता है। शिव शास्त्र, श्रुति, स्मृति नामसे दो प्रकारके हैं वेदों के तत्वरूप श्रोत शास्त्र हैं और दूसरे स्वाधीन स्मार्त शास्त्र हैं ये स्वाधीन स्मार्त शास्त्र प्रथम दश प्रकार के थे। उसके बाद कामिनीआदि नामक सिद्धान्त प्रसिद्ध हुए वेद तत्वरूप जो श्रोतशास्त्र हैं उनमें पाशु पति ब्रत तथा परम ज्ञान का वर्णन है इस प्रकार से उसका विस्तार एक अरब के लगभग हो जाता है हर एक युग में स्वयं भगवान शङ्कर ही योगाचार्य रूप से अवतार लेते हैं और इनका प्रचार करते हैं। उसे सूक्ष्म रूपसे बनाने बाले रुद्र, दधीचि अगस्त्य, एवं उपमन्यु नामक महर्षि हैं ये चारों महर्षि पाशु पतिब्रत की संहिता के प्रचारक हैं। इनके शतशः सहस्रशः शिष्य हो जाते हैं। जो इस शिवधर्म का प्रचार करते हैं। उन्हीं शिष्यों ने चर्या आदि रूप के परमधर्म को चार प्रकार का कहा है। उनमें पाशुपति योग के अनुष्ठान द्वारा ही शिवका साक्षातकार हो जाता है क्योंकि यह योग अनुष्ठान सर्वोत्तम है इसके साधन पितामह ब्रह्माजीनेकहे हैं। मैं उन्हीं के साधनों को आपलोगों को सुनाता हूं। उनमें स्वयं शङ्करजी ने आठ प्रकार के योग कहे हैं उन्हीं द्वारा शीघ्र ही शिवमति हो जाती है उस मति द्वारा धीरे-धीरे परम ज्ञान स्थिर हो जाता है। इसी प्रकार के ज्ञान से ही शिव प्रसन्न होते हैं। तब उनकी कृपा होजानेसे परमयोग मिलता है। फिर उसीसे शिव प्रत्यक्षता हो जाती है उसी के द्वारा मुक्ति प्राप्त होती है। शिव महेश्वर, रुद्र पितामह, विष्णु संसार वैद्य, सर्वज्ञ

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

एवं परमात्मा ये आठों परम कल्याण कारक हैं। इनमें शिवसे आरम्भ करके पितामह तक ये पाँच शान्त्यतीत आदि क्रमशः ज्ञातव्य हैं। ये पांचों उपाधि से मुक्ति हो जाने पर फिर आत्मासे पृथक होते नहीं। एक स्वरूप हो जाते हैं। शिव आदि पाँच आत्मान्तर हैं इनसे अतिरिक्त ससार वैद्यादि ये तीन नाम उपादानके मिलनेके कारण त्रिप्रकारक उपाधि वचनों के द्वारा शिवजी के अनुकूल होकर वर्तते हैं। अनादि गुणों का संयोग तो स्वभावतः प्रथम से ही होता है फिर जब यह आत्मा विशुद्ध निर्मल हो जाती है वह शिवरूप है। शिवतत्ववेत्ता ज्ञानी पुरुष यह भी करते हैं कि जो सम्पूर्ण मङ्गल मय गुणों के आधार हैं एवं सबके स्वामी हैं। वही सदाशिव कहे जाते हैं। प्रकृति तो तेईस तत्वों से प्रथक है। प्रकृति से बाहर पुरुष है उससे बाहर भगवान् महेश्वर हैं प्रकृति तथा पुरुष इन्हीं के आधीन रहते हैं। प्रकृति माया है, माया रचयिता महेश्वर परमात्मा ही मायावी हैं इन्हीं के सम्बन्ध से कालात्मा आदि स्थूल तथा सूक्ष्म रूप से हैं। रुद्र शब्द का अर्थ है जो दुःख तथा दुःखों के कारणों को दूर करने वाला हो। श्रेष्ठ पुरुष इनको भी शिव जानते हैं। तत्व आदिकों से भूत रूप हुए पृथ्वी पर देह आदि रूप धारकर यही शिव निवास करते हैं। संसार के साक्षात् जनक हैं इसी कारण पितामह हैं। भव रोग दूर कर देने के कारण लय भोग अधिकार के अनुरूप उपायरूप औषधि देकर कल्याण करने वाले ये संसार वैद्य हैं। संसारकी सभी अवस्थाओं के ज्ञाता होने के कारण सर्वज्ञ हैं। परम गुणों से इनका नित्य सम्बन्ध है अपने से अन्य आत्मा के विरह के हेतु स्वयं शिव परमात्मा हैं। इस प्रकारके परमात्मा के आठ नाम हैं इन्हें भली-भांति आचार्य द्वारा समझकर क्रमशःशिव आदि पांच नामों का उच्चारण करे। फिर निवृत्ति आदि कलात्मक ग्रन्थि विभेदन करके गुणों के अनुसार आवृत्ति करे। उदान वायु द्वारा अपान वायुको दवावे फिर मूलाधार से वायु उठा कर उसके द्वारा मस्तक पर प्रहार करता हुआ प्राण वायु को चला कर क्रमशः उसके हृदय, कण्ठ तालु भृकुटियों के मध्य में ब्रह्म रन्ध्रके साथ

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

आठ रूपों की पुरी को छेदकर सुषुम्ना नाड़ी द्वारा आत्माको बारहदलों के मध्य में रहने वाले चन्द्र में लेजाकर इसके ऊपर शिवका प्रहार है उसमें अपनी आत्मा को लय करके अपने बमन का संहार करदे। फिर शक्तिरूप अमृतसे सिचित शरीर में जन्म पाकर अमृत रूप अपनेप्राणों को हृदयमें बाह्य दल के मध्य में रहने वाले चन्द्रके आगे श्वेत कमलमें विराजने वाले भक्तों पर कृपालु भगवान शङ्कर का ध्यान करे। शिव आदि आठ नाम उच्चारण करे। भावमय पुष्पों द्वारा पूजन करना चाहिए। उसके प्राण वहीं स्थापित करके स्थित चित्त होकर शिवजीके आठ नामों का जपन करे। नाभि के मध्यमें शिवजीकेआठ नाम धारण करके इस प्रकार आठ आहुतियाँ देकर फिर पूर्णाहुति देकर प्रणाम करके आठ फूल चढ़ावे फिर बाली का पूजन करे। उसके बाद चुलुआ जल मार्ग द्वारा अपनी आत्मा शिवजीको समर्पण करे। इस प्रकारकी क्रिया द्वारा अल्प काल में परम ज्ञान प्राप्त होजाता है।

* तेतीसवाँ अध्याय *

(पाशुपत व्रत का रहस्य)

वायु बोले-हे ऋषिगण ! अबमें आपको अथर्व, शिरस, उपनिषद में आये पाशुपत व्रतके रहस्य को समझाता हूँ। इस व्रत को किसी वन अथवा उपवन में जाकर चैत्रकी पूर्णिमा तिथि के दिन करना चाहिए। उससे पहले त्रयोदशीको अपना नित्यकृत्य करके गुरु पूजन करे फिर उनसे आज्ञा पाकर श्वेत वस्त्र, यज्ञोपवीत, चन्दन,माला आदि धारण करके कुशासन पर बैठ जाय हाथमें मुट्ठी भर कुशा लेले। फिर उत्तराभिमुख होकर तीन प्राणायाम करे। श्रीपार्वती के साथ शिव ध्यान में संलग्न होकर जितने दिन के व्रत की इच्छा हो उतने दिनों पर्यन्त व्रत करनेका संकल्प लेले। जैसा कि मरणविधि एक दो, तीन वर्ष, एक दो छः महीने,एक दो तीन दिन, इत्यादि उतने काल का संकल्प करे। विधि पूर्वक विराज हवन के लिये अग्नि स्थापनाकरे। उसमें समिधा एवं चरुकी आहुतियाँ करे इसके द्वारा पाप नष्ट हो जाते हैं इस हवनके मूल

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

मंत्र बोलकर हवन करे। ध्यान तो देह के तत्व को शोधन के लिये हो। उसके बाद मंत्र द्वारा गोबरका एक गोला बनाकर अग्निमें स्थापित करे। भोजन हविष्य अन्नका करना चाहिए। दूसरे दिन चतुर्दशीको भी त्रियोदशी के पूजनकी भाँति हवनपूजन करे। किन्तु भोजन न करे फिर पूर्णिमा के दिन वैसे ही पूजन हवन करके रुद्राग्नि बुझादे फिर उसकी भस्म ग्रहण करे। तब जटा धारकर शिकारियों जैसे वेष में स्नान करे। यदि लोक लज्जा न हो तो दिगम्बर होकर नहावे। नहीं तो कोई टाट का टुकड़ा या चमड़ा लपेट ले अथवा वृक्ष के वल्कल की लंगोटी लगावेफिरमेखला दण्ड धारण करे। पैर धोकर दो आचमन करे अथर्व वेद के "अग्निरीत्यादि" छः मन्त्रबोले। क्रमशः छः अङ्गोंमें"ओंशिव ओंशिव, ऐसा कह कर शरीर भस्म लगावे। "त्र्यायुष्य जमदग्नि," इस मंत्र से मस्तक पर भस्म का त्रिपुंड लगावे। इस प्रकार शिव रूप होकर शिव योगमेंप्रवृत्त होजाय। इस प्रकार प्रातः मध्यान्ह, सायं तीन कालों में पाशुपत व्रत का आचरण करे। इस विधानसे मनुष्य पशुत्वसे मुक्त होजाताहै। इसके बाद स्वर्णका अष्ट वल कमल बनावे उसकी नौ रत्नों से रचित शर युक्त कली हो इस प्रकार के कमल का आसन बनावे। यदि पासमें धन न हो तो श्वेत कमल पर अथवा अपने भावनामय कमलासन पर भगवान शङ्कर की कल्पना करे कि वे विराजमान हैं। उस कमल की कलियों में स्फटिक के पच मुख वाले शिव लिंगकी स्थापना करके विधानसे पूजन करे। आहवान, आसन,पाद्य,अर्घ्य,आचमन आदि कराकर फिर दूध, दही, शर्करा मधु,आदि पंचामृतसे भिन्न २ करके स्नान करावे फिर सहस्रशः घटजलों से स्नान करावे उसके बाद रोली चन्दन,सुगन्धित पुष्पों को लेकर दूध चावल धूप दीपक नैवेद्य आदि चढ़ावे। उसके बाद एक हजार आठ अथवा एक सो आठ कमल एवं बेल पत्रों से शिव पूजन करे। क्रमशः शिवजी के चार मुखों की धूप दीप आदि से पूजन करके अर्घ्य आचमन प्रदान करे। फिर प्रथम आवरण में गणपति स्वामि कार्तिक का पूजन करके ब्रह्मा आदि देव पूजन करे। द्वितीय आवरणमें विघ्नेश्वरका

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

पूजन करे। तीसरे में भव आदि शिवजी की आठ मूर्तियोंकी पूजा करे। कमल से बार पंचम आवरण में अस्त्र एवं अनुचरों के साथ दश दिक-पाल तथा ब्रह्माजीके सारे मारिच आदि मानस पुत्र, ग्रह, नक्षत्र, सभी मुनि, योगी यज्ञ मातृका गणोंके साथ क्षेत्र पाल सभी चराचर आदि की पूजा करे। शिव भक्त सदा गुरुजनों का यथोचित पूजन करे। अनेकों वस्तुएं देकर उन्हें सन्तुष्ट करे। व्रतमें तो दुग्ध फल फूल आदि ग्रहण करे। रातके समय कुछ न कुछ आहार करले। भूमि पर शयनकरे। घास तृणादिका शय्या विस्तर बनाले मृग चर्म अथवासिंह चर्म होने परव्रतधारी उस पर सो जाय। रविवार आद्रा नक्षत्र, पूर्णमासी, अमावस्या चतुर्दशी, अष्टमी इन तिथियों में उपवास करे। अपवित्र अभक्ष्य वस्तुओं से भिन्न रहे। अहिंसा व्रत दान स्वभावमें संलग्न होकर शांति एवं तपका अभ्यास करता रहे। इसमें तीनों काल स्नान भस्म धारण यह नैत्यिक कार्य समझे। इस प्रकार यह व्रत का विधान अत्यन्त सूक्ष्म रूप से बता दिया है। अब हर एक महीनेकी अधिक विधि कही जाती है। वैशाख में हीरे का लिंग हो जेठ में मरकतका, आँषाढ़ में मोतियों का, श्रावण में नीलमका भादों में पद्मराग मणि का, आसोज में गोमेदमणि का, कार्तिक में मूंगेका, मगशिरमें भैवडूर्य मणिका, पौषमें पुखराजका, माघमें सूर्य कांत मणिका, फाल्गुन में चंद्रकान्त मणि का, चैत्र में रत्नों का तथा अधिक मास में स्वर्ण का लिंग बनवावे। सोने की अथवा चाँदी की मूर्तिमेंऊपर कही धातुओं को जटित करावे इस प्रकार लिंग बनावे। यदि शिव भक्त को धन की सामर्थ न हो तो किसी प्रकार का लिंग बनाकर उपरोक्त वस्तुओं का केबल ध्यान ही करले। शिव लिंग पाषण अथवा मृतिका का भी बनाया जा सकता है। शिव लिंगों की सुगन्धित द्रव्यों से पूजा करे। फिर चीर, मेखला जटा, दण्ड आदि करके विधि पूर्वक पंचाक्षर मन्त्रों द्वारा विसर्जन करे मृत्यु होने तक सावधानी पूर्वक शिव व्रती इस प्रकार दीक्षा ग्रहण करे। इस प्रकार का नैष्टिक व्रतधारी कहाता है। मुमुक्षु जन पाशुपत व्रती तप के प्रभाव से परम पद पाते हैं। जो बारह

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

दिनों तक निराहार रहते हैं वे तो तीव्रव्रतीनैष्टिक व्रती तुल्य समझे जाते हैं

* चौंतीसवां अध्याय *

(उपमन्यु की भक्ति)

ऋषि बोले-हे वायुदेव ! अब आप कृपा करके शिव के परमभक्त धौम्य के बड़े भाई उपमन्यु जो बचपन से ही शिव भक्त हुए हैं उनकी कथा विस्तार से सुनावें । वायु बोले-हे मुनियो उपमन्यु बालकपन से ही परम तपस्वी हुए हैं । इनका पहिला जन्मभी तपस्या सिद्धथा । उसी संस्कार से यह इस जन्ममें भी सिद्ध तपस्वी हुए । ये परम तपस्वी व्याघ्र पाद मुनि के पुत्रथे । इन पर शिवजी की अपूर्वकृपा हुई जिससेये तपस्यिों में अग्रणीय सिद्ध हुए । भगवान् शंकरजीने अपने पुत्र गणेश एव कार्तिक स्वामीजी के साथ २ इनको भी शरीर का समुद्रप्रदान कर दिया शंकरकी कृपा द्वारा ही सभी शास्त्र इनको अधिगत हुए, ज्ञान प्राप्ति हुई । धारण शक्ति तो इन्हें बालकपन से सिद्ध थी । एक दिन बालकपन में उपमन्युजी ने दूध के लिये हठ किया किन्तु आश्रममें धन न होने के कारण दूध कहाँ । तब उपमन्युके हठ करने पर माता रो उठी ! और पुत्र से बोली-हे पुत्र ! दूध कहाँ है ? उपमन्युने कहा-अभी २ मेरे भ्राता ने भी तो दूध पी लिया है उसे कहां से मिल गया है इसलिये मुझे भी गाय का स्वादिष्ट दूध दो । तब तो माता व्याकुल होकर अपने पुत्र को गोदी में कर लेबोली-पुत्र ! घबरा नहीं दूध भी मिल जायगा । इतना सुनकर बालक ने और विशेष हठ किया रोने लगगया मुझेभी दूध दो । किन्तु माता समझायेतो उसकोकिस प्रकार समझाये । वह बिचारी कल्पती हुई घरमें पहुंची भुने हुए गेहूँ को पीसकर उस चूनको पानी में घोल कर लेआई और बोली-लो यह दूध है बालकने उसके दो घूंट पिये फिर बोला-माताजी यह तो दूध अच्छा नहीं में नहीं पीता । यह देखकर माता अत्यन्त दुःखित हुई पुत्र कासिर सूंघ कर रोते २ उससे बोली-पुत्र!संसार में दूधकी कमी नहीं । रत्न धन सोना भी है किन्तु भाग्यहीन पुरुषों को नहीं मिलता । शिव भक्तिके बिना किसी भी वस्तुकी प्राप्ति नहीं होती ।

CC-0. ASI Delhi. Digitized by eGangotri

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

राज्य भोग दूधका पीना उत्तमपदार्थ स्वर्ग सुख आदि केवल उनकी कृपा से प्राप्त होते हैं। हे पुत्र ! हमलोग वन में रहने वालों को दूध कहाँ से प्राप्त हो ? तू रोता क्यों है ? इससे तो मैं अत्यन्तदुःखपाती हूं। वायुबोले इस प्रकार माताके दुःख भरे बचन सुनकर बालक ने धैर्य धारण करके कहा-हे माताजी ? तुम दुखी न हो और मैं अब शिवको प्रसन्नकरके ही दूध प्राप्त करूंगा। किंतु इतना कहदो वह शिव कहाँ मिलते हैं ? उनके पास बहुतसी गाय होंगी। मैं उनसे एक गाय तो अवश्य माँग लाऊंगा। उस प्रकार बालक के प्रिय बचन सुनकर माता समझाती हुई उससे बोली पुत्र शिवतो सभी जगह हैं जहाँ परभी उन्हें पुकारा झट वहीं मिलजाते हैं। सारे संसारके रचने वाले तो सदाशिवहैं सबको दूध पिलानेवालेभी सदाशिव है उनको "नमः शिवाय" मन्त्र द्वारा प्रसन्न करना चाहिये इसी मन्त्र द्वारा सभीसिद्धि प्राप्त होती है। जब इस प्रकार माताने, बालक, उपमन्यु को समझाया तब वह चुपचाप होकर सो गया। फिर माता उसके पास सो गई। उसके बाद आधी रात के समय एकदम बालक की आँख खुल गई उसने द्वार के पास ही साक्षात शिवके दर्शन किये जिन्होंने दूध का पात्र भर कर अपने हाथ में उठाया हुआ था और उसे बुला रहे थे। ऐसा देखकर उपमन्यु उठा और दरवाजे तक जा पहुँचा। किन्तु सदाशिव झट वहाँ से अन्तर्ध्यान हो गये बालकने बिचार किया कि कहीं सदाशिव बाहर न चले गये हों। फिर वह भी घर से बाहर निकल आया बाहर भी शिव दिखाई न दिये। बालक "ॐ नमः शिवाय" बोलते-बोलते बन की ओर चल पड़ा कुछ दूर पहुंचने पर उसे सुनाईपड़ा, बालक ! तुम्हारा कल्याण हो बालक इधर-उधर देखने लगगया। अपने मन में बिचारने लगा कि अब तो अवश्य ही दूध मिलेगा इस प्रकार की पुकारतोसदाशिव की ही है। कुछ आगे चलकर उसे एक शिवालय दिखाई दिया बालकने उसमें प्रवेश करके शिव लिंग के दर्शन किये फिर विचार किया कि अवश्य ही शिव लिंग के पीछे छुपेहुए हैं तब तो रोकर उस छिपी मूर्ति से दूध माँगनेलगा। उस समय माताकी सभी बातें उसे स्मरण हो आई।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

उन्हें स्मरण कर के "ॐनमःशिवायः" मन्त्र जपने लग गया। शिव मूर्ति से लिपट भी गया फिर तो अपने शरीर का भी ध्यान न रहा। तीन दिन गुजर गये। उसी मूर्ति से लिपटा रहा इधर माता सोकर उठी अपने बालक को देखकर रोती चिल्लाती वन में जाकर ढूंढ़ने लगी। उस समय बालक भूख प्यास से व्याकुल होते हुए भी मन्त्र उच्चारण में लगा हुआ था। वहां एक पिशाच भी आ पहुँचा उस वेहोश बालक को देखकर वह बिकराल पिशाच उसे उठा ले गया। पिशाच एक पर्वतकी कन्दरा के पास बैठकर भूख के कारण जब उसे मारने के लिए तैयार हुआ तो शिव कृपा से वहाँ एक भयानक सांपने पहुंच कर पिशाच को डस लिया। वह बालक उससे छूटकर नीचे गिर गया, किन्तु उसे कोई भी चोट न आई फिर उसकी आँख खुलने पर शिवमूर्ति न देखकर बहुत ही व्याकुल हुआ। फिर उसी वन में शिवको ढूंढ़ने लगा। उस बालक ने केवल पांच दिन में ही निराहार रहकर प्रसन्न कर लिया।

* पेंतीसवाँ अध्याय *

(उपमन्यु की कथा)

वायु बोले-हे ऋषियो ! उस समय बालक का गला सूख गया था। निर्बल होजाने के कारण मृत्यु उसके पास ही थी, इधर भक्तवत्सल शिव ने भी कुछ खाया पिया नहीं। वहां से चलते हुए सदाशिवसे श्रीपार्वतीजी ने पूछा हे स्वामिन ! आप बिना खाये पिये किधर चल पड़े कोई ऐसा प्रिय भक्त तो नहीं पुकार रहा। यह सुनकर महादेवजी बोले–यह बालक मुझे सूखे गले से पुकार रहा है। और उसकी माता भी रोती बिलखती उसे इधर-उधर ढूंढ़ रही है। हे प्रिये मैं तो उसी के पास जा रहा हूं। सदाशिव इस प्रकार अभी कह ही रहें थे कि उसी समय ब्रह्मा विष्णु आदि सभी देवता शिवजी के पास पहुंच कर बोले-हे नाथ! संसारमें यह अमङ्गल कारक दुर्भिक्ष क्यों पड़ रहा है। जिससे सर्वत्र हा-हा कार मच रहा है सम लोग भी व्याकुल हो रहे हैं। तब विष्णुजी सभी कुछ जानते हुए बोले–हे देव ! यह पूछने के लिए इन देवताओं

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

को साथ लेकर हम आपके पास आये हैं। अब आप ही कृपा करके इस दुःख का निवारण करें। इतना सुनकर सदाशिव बोले-हे देवताओ तथा विष्णुजी! उपमन्यु नामक बालक का तप पूर्ण हो चुका है। अब मैं उसी का दुःख दूर करने जा रहा हूं! उसका दुःख दूर होते ही आपसब का कष्ट निवृत्ति हो जायगा। अब इस समय आप लोग निश्चिन्तता पूर्वक अपने २ धाम को जाओ इतना सुनकर सभी देवता अपने अपने धामों में चले आये। फिर भगवान शङ्कर देवेन्द्र का रूप धारकर अपनी माया से बनाये गये ऐरावत हाथी पर सवार होकर श्रीपार्वतीजी के साथ ही उस बालक के समीप पहुंचे। उन्हें देखकर बालक उपमन्यु ने नमस्कार करके कहा-हे देवेन्द्र! आपने यहाँ पधार कर इस आश्रम को पवित्र किया, आपका स्वागत हो। तब देवेन्द्र रूप में शङ्कर बोले-हे बालक! तुम्हारे तप से हम प्रसन्न हो गये जो चाहो बर माँगलो तब बालक ने कहा-हे देवराज आप तो कृपाकर के यही वर दें जिससे मेरी भगवान शङ्करमें भक्ति बनी रहे। तब देवेन्द्ररूप कैलाशपति बोले-तुम शिव-भक्ति क्यों चाहते हो, उससे तुम्हें क्या लाभ? मैंतो सभी देवताओं का राजा हूँ साक्षात इन्द्र तुम्हारे पास आया हूं तुम और कोई इच्छानुसार वर क्यों नहीं पा लेते। उपमन्यु बोला-हे देवेन्द्र! आप शङ्करजी की व्यर्थ में निंन्दा कर रहे हो। मैं इसे सुनना नहीं चाहता। फिर भी आप शिव निन्दक होकर कुछ कहने लगोगे तो स्मरण रहे, मुझे अपना शत्रु मान लेना। वायु बोले-हे ऋषियो! इस प्रकार कहकर उस बाल ने भस्म उठाई और उसे अघोर मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रकर इन्द्र रूपधारी सदाशिव पर छोड़ दी। तब शिव आज्ञा से उस भस्मास्त्र को नन्दीश्वरने धारण कर लिया उसके बाद परम प्रसन्न होकर सदाशिव अपने रूप में आकर उसे दर्शन देने लग गये। दर्शन करते ही उपमन्यु निहाल हो गया फिर बार-बार नम्रतापूर्वक प्रणाम करने लगा। भगवान शङ्करजी बोले—हे वत्स उपमन्यु! मैं तुम पर तुम्हारी भक्ति तपसे अतीव प्रसन्न हूँ। यह श्रीपार्वतीजी तुम्हारी माता हैं और मैं तुम्हारा पिता हूं। अब

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

तुम मेरी कृपा द्वारा सभी विपत्तियों से छूट गये गये। तुम्हारा परिवार सम्पन्न हो जायगा। तुम्हें नाना प्रकार के स्वादिष्ट पदार्थ घृत, दुग्ध मधु, आदि प्राप्त होंगे। मैं प्रसन्न होकर तुमको क्षीर का समुद्र देता हूं। वायु बोले-हे महर्षियो! इतना कहकर सदाशिव ने उस बालक उपमन्यु को अपनी गोद में ले लिया और श्री पार्वतीजी से बोले-देवीजी! यह तो आपका ही पुत्र है इसे प्यार करो। यह कहकर इसे श्री पार्वतीजी की गोद में दे दिया। श्रीगिरजा देवीजी ने बालक को प्यार करके अक्षय वायु होने का बरदान दिया। तब खीर-सागर ने वहाँ पहुँचकर कभी न नाश होने वाला परम स्वादिष्ट दूध का एक गोला बनाकर उपमन्यु को समर्पित किया और कभी भी न नष्ट होने वाली ब्रह्म विद्या ऋद्धि सिद्धि आदि प्रदान की। फिर उसे परम तपस्वी मानकर पाशुपत ब्रत के योग का तत्व उपदेश का प्रचारक तथा कुमार अवस्था में रहने का वर ये सभी उसे प्रदान की। फिर उसे परम तपस्वी मानकर पाशुपत ब्रत के योग का महत्व उपदेश का प्रचारक तथा कुमार अवस्था में रहने का वर ये सभी उसे प्रदान किये। तब उपमन्यु बोला-नाथ! मुझे तो आप अपनी भक्ति का वर दें जो कभी नष्ट न हो और अपने भाई बन्धुओं को भी आपका भक्त बनाऊं और मेरी आपके भक्तोंके साथ प्रीतिहो। सदाशिव बोले-हे उपमन्यु! तुम मेरे त्यारे भक्त हो। मेरी कृपा द्वारा कोई भी कष्ट न पाओगे। तुम्हारी सभी कामना पूर्ण होंगी वायुदेव बोले-इस प्रकार उपमन्यु को वर देकर श्री पार्वतीजी के साथ शङ्कर वहाँ से अन्तर्ध्यान हो गये। उपमन्यु भी इस प्रकार बर पाकर प्रसन्नता पूर्वक अपने घर लौट कर आ गया।

॥ इति श्रीशिवमहापुराणस्य वायवीय-संहिता सम्पूर्णम् ॥

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

* ॐ नमः शिवाय *

* श्रीशिव महापुराण भाषा *

* अथ वायवीय-संहिता *

[उत्तरार्ध]

* पहला अध्याय *

(श्रीकृष्णजी को पुत्र प्राप्ति)

श्रीपार्वतीजी के साथ क्रीड़ा विहार कर्ता संसार चक्र के चालक भगवान शङ्करजी को नमस्कार हो। इस प्रकार मङ्गलाचरण तथा प्रणाम करके सूतजी बोले-ऋषिगणों ? मैंने आपको उपमन्युकी कथा सुनाई है जिन्होंने दूधपानकेलिये तपस्याकर के महेश्वर जी को प्रसन्नकर लिया था अब आगे क्या सुनना चाहते हैं ! इतना सुनकर ऋषिगण बोले– धन्य हो सूतजी ! अब कृपा करके यह सुनाइये भगवान श्रीकृष्णचन्द्रजी ने उपमन्यु का दर्शन पाकर उनसे पाशुपत व्रत करने की आज्ञा प्राप्तकी थी परन्तु उस परम व्रत का ज्ञान उन्हें किस प्रकार हुआ ! वायु बोले– हे ऋषियो ! वासुदेव श्रीकृष्णने अपनी इच्छासे ही अवतार ग्रहण किया था। फिर मानव शरीरकी निन्दा करते हुए दैहिक शुद्धि तथा पुत्रप्राप्ति के विचारसे मुनियों के आश्रम पर तप करने पहुँचे। उस आश्रम पर जटा-जूटधारी भस्म रमाये हुए त्रिपुण्ड तिलक लगाये उपमन्यु तपस्वीके उनको दर्शन हुए। श्रीकृष्णचन्द्रजी ने उन्हें प्रणामकिया। तीन परि-क्रमा करके हाथ जोड़े नम्रता से स्तुति प्रार्थना की। तपस्वी उपमन्यु जी ने "त्रयायुष्यं जमदग्नेः" इस मन्त्र द्वारा उनका भस्मका विलेपन किया। फिर बारह महीनों तक उनसे पाशुपत व्रत धारण कराया और उत्तम

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

ज्ञान दिया। उस दिनसे भगवान श्रीकृष्ण जी उनके आश्रम पर निवास करने लगे। भगवान श्रीकृष्ण ने साम्ब पुत्र प्राप्ति के निमित्त गुरुके उपदेश द्वारा तपस्या की। एक वर्षके अनन्तर उनके तप द्वारा प्रसन्न होकर श्रीपार्वतीजी के साथ शिवजी ने दर्शन दीये। तब भगवान श्रीकृष्णजी ने उन्हें प्रणाम किया और स्तुति की। तब प्रसन्न होकर शङ्कर बोले मैं आपकी कामना जान गया हूं आपको पुत्र प्राप्त होजायगा, इस प्रकार वर देकर शङ्कर अन्तर्ध्यान होगये। उसी वरके प्रभावसे श्रीकृष्णजी को उनकी धर्मपत्नी जाम्बवती द्वारा साम्ब नामक पुत्र की प्राप्ति हुई।

* दूसरा अध्याय *

(शिव गुणों वर्णन)

ऋषि बोले-हे वायो! ज्ञान किस प्रकार काहै! भगवान शङ्करका पाशुपति नाम कैसे हुआ! भगवान श्रीकृष्ण ने उपमन्यु से किस प्रकार के प्रश्न किये! यह अब हमें सुनायें। यह सुनकर वायु बोले-सुनो, एक दिन श्रीकृष्णजीने उपमन्युसे कहा कि हे महर्षि! श्री पार्वतीजी को जो शंकरजी ने पाशुपति ज्ञान दिया था उसे तथा उसकी विभूति का वर्णन आप करें। पशु कौन है! किस प्रकार की रस्सी से बंधे हुए हैं! और किस प्रकार छूटते हैं! श्रीशङ्कर पशुपति किस प्रकारसेहुए! यह सब वर्णन करें। इस प्रकार के प्रश्न सुनकर उपमन्यु बोले-हे श्रीकृष्ण! ब्रह्मासेलेकर सभी स्थावर पर्यन्त प्राणी श्रीशङ्कर भगवान के ही पशु हैं। शङ्करजी उन सबके स्वामी हैं, इसलिये आप पशुपति कहलाते हैं। फिर मल माया आदि दृढ़ रस्सियोंसे बाँधे हुए हैं। जब उनकी भक्ति उपासना दृढ़ देखते हैं तब उस मायारूप रस्सियों से झट उन्हें छुड़ा देते हैं। चौवीस तत्व मायाके गुण कर्महै और यही विषय भीहैं, उन्हीसे ही जीव बंधा रहता है। विषयोंद्वारा बांधने वाले को स्वयं शङ्कर हैं तभी तो अपना कार्य ब्रह्मा से लेकर स्तम्ब पर्यन्त पशुओं से करा लेते हैं। इन्ही महेश्वर के अनुशासनसे ये आकाश सर्वव्यापक है। वायु प्राणादिक नामों से आकर सारे जगत का बाहरसे पालन करता है। हव्य-कव्य भी ग्रहण कर

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

लेता है। जलरूप जगतमें जीवन भर देताहै फिरपृथ्वी जगत् को धारण करती है। साराँश देवादिकों का पालन तथा दत्यों का संहार करने वाले शङ्कर हैं! उनके ही अनुशासन से इन्द्र तीनों लोकों की रक्षा करता है वरुणादेव को जल का आधिपत्य दिया है। संसार में सभी कुछ कार्य शङ्करजी के अनुशासन से चल रहा है। इसलिये भगवान शङ्करकापूजन आराधन ही सद्गति देता है।

* तीसरा अध्याय *

(अष्ट मूर्ति वर्णन)

उपमन्यु बोले-हे श्रीकृष्ण! भगवान शङ्कर ही अपनी मूर्तियोंद्वारा ब्रह्माण्ड में व्यापक में होरहे हैं। ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, महेशान, सदाशिव ये सभी उनकी प्रतिमायें हैं जिनसे सारा जगत व्याप्त होरहाहै। इस प्रकार और भी पाँच मूर्तियां ईशान, पुरुष अघोर, वामदेव, सद्योजात आदि प्रसिद्ध हैं। ईशान तो सबमें मुख्य है। यही मूर्ति क्षेत्रज्ञ है। मूर्तिमान स्थाणु मूर्ति पुरुष है। बुद्धि तत्व का आश्रय लिए अघोर मूर्ति है। श्री महादेवजी के अहङ्कार की अधिष्टात्री वामदेव नामक मूर्ति है। शङ्करजी के हृदयमें निवास करने वाली सद्योजात मूर्ति है। इशानी मूर्ति श्रोत्र, वाणी, शब्द आकाश की अधिष्टात्री है। ईश्वराय मूर्ति तात्विक, हस्त, स्पर्श, वायु की अधिष्ठात्री है। अघोर मूर्ति नेत्र, चरणरूप अग्नि की अधिष्ठात्री है। वामदेव मूर्ति रसना, वायु, रस, एवं जल की अधियात्री है। सद्योजात प्रतिमा घ्राण, उपस्थ, गन्ध, पृथ्वी की अधिष्ठात्रीहै। इस प्रकार शङ्करजी की आठ प्रतिमा हैं। सूत्रमें जैसे मणियां ग्रथित रहती हैं, उसी प्रकार इन मूर्तियों में संसार ग्रथित है। वे आठ मूर्तियां-शर्व, भव, रुद्र, उग्र, भीम, पशुपति, ईशान, महादेव इत्यादि पृथ्वी, जल, तेज, पवन, आकाश, क्षेत्रज्ञ, सूर्य, चन्द्र आदि को धारे हुए हैं। विश्वधारिका शिव की शार्वी, जल जीवनी वायिका भावी मूर्ति है। जगत के अन्दर वाहर बिचरने वाली तेजोमयी रौद्री मूर्ति है। जगतकी संचालिका पवन मूर्ति है। आकाशत्मिका भीमा मूर्ति सारे विश्व में व्याप्त है। पाशुपति मूर्ति

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

पाशुपाश छेदन करने वाली, सर्व क्षेत्रों में निवास करने वाली सभी आत्माओं की अधिष्ठात्री है। ईशानी मूर्ति सूर्य रूप होकर जगत को प्रकाश देने वाली है। महादेव मूर्ति, चन्द्रमा रूप द्वारा किरणों से जगत को तृप्त करती है। आठवी मूर्ति तो व्यापक है इसी कारण सारा जगत् शिव रूप है। अतएव शिव जी का आराधन ही अभय अनुग्रह होकर दायक उपकार करने वाला है। भगवान शङ्कर ही इस विस्तार से जटाधारी होकर प्रसन्न होते हैं।

* चौथा अध्याय *

(गौरी शंकर की विभूति)

श्रीकृष्ण बोले-हे महर्षि! यह सारा विश्व इस प्रकार शिवजी की आठ मूर्तियों से व्याप्त होरहा है यह तो आपने सुना दिया। अब कृपा करके यह कहें कि स्त्री पुरुष द्वारा यह विश्व किस प्रकार अधिष्ठित है! यह सुनकर उपमन्यु बोले-हे श्रीकृष्ण! अब मैं इस विभूति का वर्णन करता हूँ, स्त्री पुरुष श्री महादेवजी की ही विभूति कही जाती है। श्रीमहा देवजी शक्तिमान हैं और महादेवी उनकी शक्ति हैं और यह चराचर विश्व उनका विभूति का लेशमात्र ही है। जो कुछ भी चेतन जड़ हैंशुद्ध अथवा अशुद्ध है,पर तथा अपर है और जो भी अचित चक्र है उसके साथ २ चेतन चक्र चलताहै वह अपर अशुद्ध पर शुद्ध है,यह दोनों ही चितचित स्वरूप शिव भवानीके स्वाविक एक ही रूप हैं। शिव भवानी के वशमें तो यह संसार है,स्वयं इसके वशमें नहीं। तभी तो वह विश्वेश्वर हैं। शिव शक्ति के द्वारा ही शङ्कर सभी प्राणियों को भुक्ति-मुक्तिदेते हैं। किन्तु वह शक्ति उनके ही आश्रय में रहती है। शिव-समान ही धर्म-वाली वह शक्तिहै। यही एक चिद्रूपा शक्ति बिश्व को विभक्ति करती है। सारा विश्व ही उस पार्वती शक्तिसे विस्तार को प्राप्तहै। उसी शक्ति मान् से क्रियात्मक शक्ति होती है फिर वह क्षोभ को पाकर प्रथम नाद को पैदा करती है। नाद से विन्दु, विन्दु से सदाशिव देव, उससे महेश्वर, महेश्वर से शुद्ध विद्या पैदा होजातीहै। यह ईश्वर की वाणी शक्ति ही

CC-0. ASI Srinagar Circle. Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

है, फिर वर्ण तथा रूप द्वारा मात्र का कहाती है। जङ्गम स्थावर संसार को रचने वाली शक्ति ही है यही निश्चयात्मक ज्ञान है। ज्ञान तथा क्रिया की अभिलाषा वाली तीन शक्तियों द्वारा ही ईश्वर शक्तिमान है। जगत् भरमें स्त्री पुरुषोंकी विभूति शिव भवानी से आश्रितहै शिव तो महेश्वर हैं एवं भवानी मायारूपा है। सभी रस रूपा भवानी है और उसके रस के आस्वादक शिव हैं। भवानी शिवा क्षेत्ररूपा है क्षेत्रज्ञरूप शिव हैं। श्री पार्वतीजी पृथ्वी रूप हैं, सदाशिव आकाररूपहैं। समुद्र रूप शिव हैं, तरङ्गरूपा भवानीहै। लता रूपा भवानीहै, वृक्ष रूप शिव हैं। विशेष क्या कहें पुल्लिंगवाचक महेश्वर हैं। स्त्रीलिंगवाचक पार्वती की विभूति हैं। उपमन्यु बोले—हे श्रीकृष्ण! मैंने यह अपनी मति के अनुसार परमेश्वरकी विभूति आपको सुना दी। इसे वर्णन करना सबके लिये कठिन है। हे कल्याणरूप कृष्ण! इसका वर्णन आप भी अधिकारी, समझकर उसके आगे करना सबके आगे नहीं। इन विभूतियोंको सुननेवाले अधिकारीको सुनानेवाला शिव सायुज्य पासकता है। इसका कीर्तन करना भी पापनाशक है।

* पाँचवां अध्याय *

(पशुपतित्व ज्ञान योग)

उपमन्यु बोले—हे श्रीकृष्ण! सभी चराचर जीव माया पाशमें बँधे हुए हैं इसीकारण जान नहीं सकते कि यह सारा ब्रह्माण्ड श्रीशङ्करजी का स्वरूप है ऋषि मुनि शङ्करजी के अविकल्प प्रभाव न पाकर उन्हें अनेकों भावों से वर्णन करते हैं। उन्हें अपरब्रह्म रूप पर ब्रह्मात्मक भी कहते हैं। इसी प्रकार अनादि अनन्तररूप भी महादेवजी कहाकरते हैं। भूत, इन्द्रिय, अन्तकरण, प्रधान, विषयात्मक, अपरब्रह्म एवं चेतनात्मक परब्रह्म कहा गया है। यह बहुत ही बड़ा है और विश्वका विस्तार करने वाला है इसी कारण ब्रह्म कहाता है। विद्या अविद्या दोनों ही ब्रह्मके रूपहैं। चेतना अचेतना दोनों विद्या अविद्या के रूप हैं और विश्व शिवरूप है और सब जीव शिव के आधीन हैं। विद्या, भ्रान्ति

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

एवं परा ये शिवरूप हैं। भ्राँति तो पदार्थों में मिथ्यापन है। यथार्थ ज्ञानकी बुद्धि विद्या है! विकलारहित तत्व सत है विपरीत असत् है। शिव तो दोनों के स्वामी हैं। अन्य जन उन दोनोंको क्षर अक्षर कहते हैं। सभी प्राणी क्षर हैं एवं अव्यय अक्षर है। ये दोनों परमात्मा के रूप हैं। कोई-कोई तो इन्हें समीष्ठ व्यष्टरूप से भी कहते हैं और कोई-कोई जात रूप तथा प्रकृति पुरुष रूप द्वारा भी कहते हैं कई एक विद्वान, जन तेईस तत्व कहा करते हैं। कार्य रूप जगत के परिणाम का काल तो एक है। इस तरह एक ही प्रवर्त्तक एवं एकही निवर्तक ईश धाता है और वही संसार के आविर्भाव तिरोभाव का कारण है तभी तो महेश्वर ही कारण हैं नेता हैं स्वामी हैं धाता हैं। कोई-कोई तो ब्रह्मा को लीक कारण कहकर उसे ही ईश्वर कहते हैं कबिजन शिवको अंतर्यामी रूपेण गाते हैं ओर कोई-कोई प्रमाता प्रमाण प्रमेय आदि यथाबुद्धि कहा करते हैं इस प्रकार अनेकों ज्ञानी महात्मा अपनी बुद्धि के अनुसार बिरोधाभासों द्वारा ब्रह्म का अनेकों प्रकार से प्रतिपादन करते हैं किन्तु अनेकों में विश्वास हो जाने के कारण वहां भी निश्चय नहीं कर सकते। जो पुरुष सर्वात्म:भाव परमात्मा शिवकी शरण में आ चुके हैं उनको सहज ही शिवतत्व का ज्ञान हो जाता है।

* छटवाँ अध्याय *

(शिव तत्व वर्णन)

उपमन्यु बोले–हे श्रीकृष्ण! भगवान शङ्कर तो बन्धन रहित हैं उनको प्रकृति माया बुद्धि अहङ्कार आदि कोई भी किंचिन्मात्र नहीं बाँध सकता। उस परमात्मा में तो वासना मोह अथवा भोगों के संस्कार नहीं। उनमें कारण कर्तृत्व आदि अन्त अन्तर कर्म कारण अकार्य नार्य आदि किंचिन्मात्र भी नहीं। वन्धु अबन्धु नियन्ता प्रेरक पति गुरु,त्राता, अधिक, समान, कांक्षित, अकांक्षित, जन्म,मरण, विधि, निषेध,मुक्तिबन्धन आदि कुछ भी उनमें नहीं। कल्याण–कर्ता सभी रूप भगवान शङ्कर के हैं।इस प्रकार सम्पूर्ण जगत् में व्यापक रूप सदा

CC-0. ASI Srinagar Circle Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

शिवको जिसने जान लिया है वह कभी मोह को प्राप्त नहीं होता। परमात्मा शिवको बारम्बार नमस्कार हो। वह हिरण्यबाहु भी शिव रूप से काल के अग्रभाग जितना है। हृदय के मध्य में उनका ध्यान करें। सभी चराचर विश्व को उसी पुरुष ने पा लिया है जो शंकर का ध्यानी है।

* सातवां अध्याय *

(शिव शक्ती वर्णन)

उपमन्यु बोले–हे श्रीकृष्ण! परब्रह्मपरमात्मा विश्वमें विलक्षण स्वभाव की शक्ति वाले एक ही रूप हैं। सूर्य किरणों के समान उनकी तेजोमयी किरणें सर्वत्र फैली हुई हैं इच्छा, ज्ञान, क्रिया आदि रूपों से उनकी अनेकों शक्तियाँ हैं। उसीसे ही विश्वेश्वर सदाशिव आदि पुरुष हुए हैं। ज्ञान कारिका आनन्द दायिका पार्वती सूक्ष्म शक्ति कहाती हैं एवं चन्द्र शेखर देव शक्तिमान हैं। प्रज्ञा श्रुति स्मृतिरूपी शिवाविद्या हैं। श्री शङ्कर भगवान वैद्य हैं। यह शक्ति तो विश्वभर की विमोहिका है। विश्व को मुक्त कर देती है। यह सत्ताईस प्रकार वाली माया है।

जो कोई भी शक्ति के साथ शिव स्वरूप को अपने हृदय में ध्यान द्वारा देख लेता है, उसको परम शान्ति की प्राप्ति होती है। शक्ति शक्तिमानसे कभी पृथक नहीं होती तभी तो दोनों तादात्म्य सम्बन्ध है। मुक्ति पाने में ज्ञान तथा कर्म आवश्यकनहीं। भवानी शिवाके प्रसन्न होते ही मुक्ति सुलभ हो जाती है। भक्ति द्वारा उनकी प्रसन्नता प्राप्त होती है प्रसन्नता द्वारा भुक्ति-मुक्ति से आनन्द मिलता है। जो पुरुष शिव में थोड़ी सी भावना रखता है,उसे तीन जन्मों के बाद मुक्तिमिलती है सेवा भक्ति दो प्रकार की है एक साँग, दूसरी अनङ्ग, ऐसा होने पर फिर वह मन, वाणी तथा साधना द्वारा तीन प्रकार की हो जाती है। मनमें तो शिव विचार हो, मनोमयी वाणी द्वारा शिव जपन हो, वाचक कर्म एवं पूजन कार्य की सेवा हो, इस प्रकार से यह सेवा तीन प्रकार की शिव धर्म रूप कही है तप,कर्म, जप, ज्ञान, ध्यान, चान्द्रायण आदि व्रत तप हैं, शिवलिंग पूजन कर्म। शिव नाम अभ्यास जपन है, शिव

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyan Kosha

चिन्तन स्थान है। शिव शास्त्रोंसे इस प्रकार की शिक्षा ज्ञान है। ये सभी शिवशास्त्रों में वर्णित हैं।

* आठवां अध्याय *

(व्यासावतार चरित्र)

श्री कृष्णजी बोले-हे महर्षि! अब आप वेदों का सार रूप ज्ञान सुनाइये। वह परम ज्ञान महादेवजीने किस प्रकार से कहा जो कि छः अङ्गों के साथ वेद साँख्य आदि शास्त्रोंसे निकाला है। और पूजन करने में किसका अधिकार हो? इन सभी बातों का विस्तार पूर्वक वर्णन करें। उपमन्यु बोले-हे श्रीकृष्णजी! सुनो, जब स्थाणु रूप शिवने सृष्टि रचना की इच्छाकी उस समय आप स्वयं प्रकट होगये, फिर देवों के देवता ब्रह्माजी को पैदा किया। फिर रुद्र भगवान की आज्ञा ब्रह्माजी को सृष्टि रचने के लिये हुई। ब्रह्माजी ने सृष्टि रचना की फिर वर्ण आश्रम आदि की व्यवस्था भी कर दी। फिर यज्ञार्थ सोम रचनाकी। सोम द्वारा स्वर्ग बन गया। फिर पृथ्वी, अनल, सूर्य, यज्ञ, विष्णु, इन्द्र आदि सभी देवताओं ने उनकी स्तुति की। तब परमात्मा ने सबका ज्ञान हरण कर दिया। इस प्रकार वह पूछने लगे कि आप कौन हैं? तब रुद्र देव बोले—मैंपुराण पुरुष त्रिकाल बाधित, भूत, भविष्य, वर्तमान में रहने वाला हूं। मुझसे अतिरिक्त एवं परे और कोई भी नहीं मैं ही सबका नियंता हूं। इतना कहकर रुद्र देव अन्तर्ध्यान हो गये। तब देवता उन्हे न देखकर व्याकुल होगये। फिर सोम मन्त्रों द्वारा स्तुति करने लगे पाशव्रत करके शरीर भस्म रमाई। तब देवों पर कृपा करने के हेतु पार्वती के साथ शङ्करजी प्रकट होगये। दर्शन करके देवताओं ने स्तुतियाँकी? शङ्करजी बोले-हे देवताओ! तुम क्या चाहते हो। देवता बोले-हे स्वामिन! आप कृपा-करके अपने पूजनका विधान हमें सुनाइये। वह किस प्रकार होता है? और उस पूजन में किस२ का अधिकार है? यह सुनकर देवाधिदेव शङ्कर भगवान ने परम तेजस्वी अष्ट भुजाओं वाला अपना चतुर्मुख रूपका दर्शन कराया। उनके तेजसे चकित होकर देवताओं ने शङ्करजी को सूर्य तथा

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

पार्वतीको चंद्रमा मान लिया। फिर उन्हें अर्घ्य प्रदान करके प्रणाम करने लगे और बोले-हे सिंदूरकी तरह आभा वाले सुन्दर मण्डल वाले सुवर्ण भूषण भूषित कमल सम तेजस्वी देव ! आप हमारा अर्घ्य स्वीकार करें। उस समय भगवान शङ्कर सूर्य मण्डलमें विराजमान थे। तब देवताओंको शास्त्रों का उत्तम ज्ञान देकर अन्तर्ध्यान होगये। उसके बाद देवताओं को ज्ञान हुआ कि शिव पूजनमें तीनों वर्णों को अधिकार है। ऐसा जानकर स्वर्गमें चले गये। इसके बाद वे शास्त्र पिरोहित होगये। श्रीपार्वती जी ने शङ्करजीसे पूछा ! तब शङ्करजी ने अपने दोनों हाथ उठाकर लोकमें शास्त्र प्रकट कर दिये। अगस्त्य बृहस्पति दधीचि इन तीनों महर्षियों ने उसका विस्तार किया। भगवान शङ्कर भी स्वयं अवतार ले लेकर इसका विस्तार किया करते हैं।

* नवां अध्याय *

(शिव के शिष्यों का वर्णन)

श्रीकृष्णजी बोले-भगवान शङ्करने हर एक युगमें अवतार लेकरकौन से शिष्य प्रशिष्य बनाये। अब कृपा करके यही सुनाइये। उपमन्यु बोले-हे श्रीकृष्णजी ! सुनिये मैं सदाशिव के शिष्योंका नाम कहता हूं श्वेत, मदन, सुनेत्र, सुहोत्र-कङ्का, लौगाक्षि, जैगीषव्यद, धिवाह, ऋषभ, उग्र, अत्रि, सुपालक, गौतम, वेदशिरा, गो कर्ण, गुहावासी, शिखण्डी जटामाली, दारुक, लाँगुली, महकाल, शूली, दण्डी, मुण्डीश, सहिष्णु सौमशर्मा, नकुलीश्वर ये अट्ठाईस योगाचार्य हुए जो कि बाराह कल्प में सातवें वैवस्वत मन्वन्तर में पदा हुए थे। उन सबके चार२ शिष्य हुए। उनके नाम श्वेत, श्वेतकेतु, प्रवेत शिखा श्वेताश्व, श्वेत लोहित, दुन्दुभि शतरूप, ऋषीक, केतुमान, विकोश, विकेल, वियाश, पाप नाशन, सुमुख दुर्मुख, दुर्गम, दुरतिक्रम, सनत्कुमार, सनक, सनन्दन, सनातन, सधामा, आदि २ थे, संख्या में एक सौ बारह होते हैं। सभी शिव भक्त भस्म-धारी, वेदशास्त्रज्ञाताजितेंद्रिय शिवध्यानकर्त्ता हुए हैं। इन्हें अपनाआचार्य समझने वाला शिवलोक गामी होता है।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* दसवां अध्याय *

(शिवोपासना निरूपण)

श्री कृष्णजी बोले-हे महर्षि ! भगवान शंकरजी से श्री पार्वती जी ने कौनसा प्रश्न किया ! यह सुनकर उपमन्यु बोले-हे श्रीकृष्ण जी ! एक समय की बात है। भगवानशङ्कर से पार्वतीजीने पूछा-हे नाथ ! आप कृपा करके यह कहें कि आप थोड़ा भक्ति शक्ति एवं बलवानों पर प्रसन्न कैसे होजाते है। शङ्कर जी बोले-हे देवी ! मैं कर्म जप यज्ञ समाधि आदि से इतना प्रसन्न नहीं होता जितना कि श्रद्धा भक्ति से प्रसन्न हो जाता हूं। अतएव मुझे वशमें करने का उपाय ही यही है कि मेरी भक्ति एवं श्रद्धा हो। जो भी अपने आश्रम के आचरण करने वाला होता है वह मुझमें श्रद्धा रखता है। ब्रह्माजी ने मेरी ही आज्ञा द्वारा वर्ण आश्रमों के धर्म वर्णन किये हैं। किन्तु वे धर्म तो बहुत से धन तथा परिश्रम से सिद्ध हो सकते हैं उसी धर्म से ज्ञानी पुरुष दुर्लभ श्रद्धा पाता है फिर एकाग्र चित्त से मेरे पूजन भक्ति द्वारा मुझे प्राप्त हो जाता है मैंने अपने भक्तों के लिए वर्णाश्रम का भी अन्तर बना दिया है। इसमें तो केवल मेरे भक्तों का अधिकार है वर्ण आश्रम पर चलने वाले जन मल माया आदि पापों से छूट कर मेरे लोक को पाकर मेरी समानता पा लेते हैं। फिर जो कोई केवल श्रद्धा द्वारा ही वर्णाश्रम धर्मी होकर या न होकर मेरा भक्त होजाता है, वह अपनी आत्मा का शीघ्र ही उद्धार कर लेता है। हे कल्याणी ! सनातन धर्म के चार पद हैं। ज्ञान, क्रिया, चर्या, एवं योग। छः मार्गोंसे शुद्धि विधान को क्रियाकहते हैं। वर्णाश्रम चार युक्त मेरी कथित विधि द्वारा अर्चन विधि को चर्या कहा जाता है। मुझसे वर्णित मार्ग द्वारा केवल मुझमें ही चित्त लगा देना अन्य वृत्तियों का निरोध करना यह योग है। हे सुरेश्वरी ! चित्त को निर्मल करके ध्यान करना सौ अश्वमेधके यज्ञका जितनाफल मिलता है। इतना विषय वासना वाले प्राणियों के लिये महा कठिन है। संसार से विरक्त हुए पुरुषों के लिये योग कहा है। जो पुरुष यम नियमों द्वारा

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyan Kosha

इन्द्रियाँ आधीन कर लेते हैं वे ही विरक्त हैं। वैराग्य के साथ २ ज्ञान हो जाने से योग होता है चाहे वह कितना भी पतित क्यों न किन्तु योग ज्ञान से मुक्ति पा लेता है।

हे प्रिय ! मन वाणी शरीर के भेदसे मेरा भजन तीन प्रकार का है। कोई २ तो तप, कर्म, जप, ध्यान, ज्ञान इन भेदों से उसे पांच प्रकार का भी कहते हैं। दूसरे लोगों से निर्मित पूजन बाह्य है और स्वयं ज्ञान से पूजन आभ्यतर है। मुझमें मन लगाना मन का भजन है। मेरे नामों के गायनमें वाणी लगाना यह वाणी भजन। मेरे कहे त्रिपुण्डादि तिलक करना एवं अन्य चिन्ह धारण करना यह कायिक भजन है। केवल मेराही पूजन कर्म है मेरे लिए शरीर शोषण तप है। पंचाक्षर क्रियाओं का चिन्तन उच्चारण जप है। रुद्रीका स्वाध्याय अभ्यास है ! मेरा रूप चिंतन ध्यान है। शास्त्रों के सच्चे अर्थ का ज्ञान ही ज्ञान है। आभ्यन्तर शुद्धि वाह्य शुद्धि है। जिसकी आत्मशुद्धि नहीं वह तो सदा अपवित्र है। अतएव भावना के साथ भजन करना श्रेष्ठ है। जो पुरुष निष्काम भाव से मेरा भजन ध्यान करते हैं। यदि उसके पीछे उनको फलकी भी इच्छा होजाय तो भी वे मुझे प्रिय है।

* ग्यारहवाँ अध्याय *

(ब्राह्मण कर्म निरूपण)

शङ्करजीबोले-हे कल्याणी ! अब मैं उन विद्वान् ब्राह्मणों का वर्ण कर्म कहता हूं जो अधिकार युक्त हैं। तीन वार नहाना, अग्नि कर्म करना लिङ्ग पूजा, दान, ईश्वर भाव युक्त स्थान, सभी कालों में दया भाव, सत्य, संतोष, आस्तिकता, अहिंसा, लज्जा, श्रद्धा, पढ़ना, पढ़ाना, उपदेश, ब्रह्मचर्य, श्रवण, तप, क्षमा शौच इत्यादि २ वर्ण धर्म हैं। ये सब सामान्य कहे हैं। ब्राह्मणों के लिए तो विशेष हैं। क्षमा शान्ति सन्तोष सत्य अस्तय ब्रह्मचर्य मेरे तत्व का ज्ञान वैराग्य भस्म सेवन सर्व सङ्गमें निवृत्ति ये दश ब्राह्मणों के लक्षण हैं। अब योगियोंके सुनो-दिन में भिक्षा एवं भोजन ये तो वानप्रस्थी के समान हैं। ब्रह्मचारियों को रात्रि भोजन

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyan Kosha

निषिद्ध है। पढ़ाना, यज्ञ कराना, दान लेना ये क्षत्रियोंके लिये निषिद्ध हैं। क्षत्रियों के लक्षण ये हैं। सभी वर्णोंकी रक्षा, संग्राममें शत्रुओं पर विजय, दुष्टजनों को मारना, अन्य सभी जनोंपर विश्वास न करना किन्तु मेरे भक्तोंपर पूर्ण विश्वास का होना, ऋतुकालमें स्त्री गमन, सेना रक्षण इत्यादि क्षत्रिय धर्म हैं। गोरक्षा, व्यापार, खेती आदि करना ये वैश्य हैं। तीनों वर्णों की सेवा करना ही शूद्र धर्म कहा गया है। गृहस्थियों का धर्म तो अपनी धर्म पत्नी का सेवन मुख्य है। ब्रह्मचारी यतियों का धर्म ब्रह्मचर्य पालन है। नारियोंका धर्म पति सेवा है। हे देवीजी! मेरा पूजन भी पति की आज्ञा होने पर ही है। जो स्त्री पति आज्ञा के बिना मेरा पूजन करती है वह नरकगामिनी होती है। विधवा स्त्रियों का धर्म व्रत, दान, तप, शौच, भूमि शयन, रात्रि भोजन, ब्रह्मचर्य भस्म एवंजल से स्नान, शान्ति, मौन क्षमा दुष्टों से दूर रहना अष्टमी चतुर्दशी पूर्णमासों एवं एकादशी तिथियोंमें निराहार व्रत मेरा पूजन इत्यादि २ है। हे पार्वतीजी! सारे धर्म को सारतो सदा मेराध्यान तथा मेरे षडक्षरमन्त्र का जपन ही है। तभी तो "ओं नमः शिवाय" इस मन्त्र द्वारा सभी सिद्धियाँ सहज हैं। यही मन्त्र यत्नपूर्वक जपता रहे।

* बारहवाँ अध्याय *

(पंचाक्षर मन्त्र की महिमा)

श्रीकृष्णजी बोले-हे महर्षे! अब कृपा करके पञ्चाक्षर मन्त्रकीमहिमा सुनाइये। उपमन्यु बोले-हेश्रीकृष्णजी! वेदोंमेंतथा दिव्य शास्त्रोंमें ॐकार के साथ षडक्षर मन्त्रकी महिमा आई है। यही मन्त्र भक्तोंकी सभी कामनायें पूर्ण करता है। इसके अक्षर तो थोड़े से हैं वेदों का सार रूप होने के कारण इसमें अर्थ सिद्ध बहुत है। मुक्तिदाता है। सभी सिद्धियाँ इसीमें विद्या मान हैं। मन रंजक तथा परेसे परे है। यह मन्त्र धीरे २ "ओं नमः शिवाय" ऐसा उच्चारण करता रहे। सभी विद्याओंका बीज तथा सबसे मुख्य यही एक मन्त्र है बहुत सूक्ष्म तथा बड़ी महिमा वाला है। तीनों गुणों से परे सर्वज्ञ समर्थ ब्रह्म इसी एकाक्षर ॐ" में स्थित

CC-0. ASI Srinagar Circle Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGangotri Archive

है। ईशान आदि सूक्ष्म ब्रह्माण्ड "नमः शिवाय" इसी मन्त्र में अव्यक्त रूप से करते हैं। सदाशिव तो वाच्य वाचक भाव से सदैव मन्त्र में रहा करते हैं। उसमें शिव तो वाच्य है और वाचक मन्त्र है। तभी तो सदाशिव इस मन्त्र द्वारा संसार से मुक्त कराने वाले हैं। ॐ "नमः शिवाय" इस मन्त्र पर विश्वास होना आवश्यक है। जो भी इस पर विश्वास नहीं करता वह नरकका अधिकारी है। इसमें सात करोड़ मन्त्र हैं, एवं असंख्यों उपमन्त्र हैं यहतो एक सूत्रमें अनेको मणियों के समान है। सम्पूर्ण शिवका ज्ञान तथा सभी विद्याओंके तत्व तो इसी षडक्षर मन्त्र के भाष्य बन रहे हैं। अन्य बहुतसे शास्त्रों की उस पुरुष को कोई भी आवश्यकता नहीं, जिसके हृदय में "ॐ नमः शिवाय" महा मन्त्र व्याप्त हो चुका है।

* तेरहवां अध्याय *

(कलि-नाशक मन्त्र)

श्री पार्वतीजी बोलीं-हे प्राणनाथ ! कलि युग तो निरन्तर संसारमें डालने वाला है उसमें पाप रूप अन्धकार फैल जाता है। धर्मसे विमुखता होजाती है वर्णाश्रम धर्म आचार विचार सभी नष्ट हो जाते हैं। किसीका भी अधिकार निश्चत नहीं होता। गुरुएवं शिष्यों की मर्यादा भी नष्ट हो जाती है। ऐसा हो जाने पर फिर आपके भक्तोंकी क्यागति होगी। वे किस उपाय से मुक्त हो सकेंगे। अब कृपा करके आप यही कहिये। भगवान शङ्कर बोले-हे देवि ! सुनो कलियुग में तो केवल मेरा पञ्चाक्षर मन्त्र ही पर्याप्तहै उसीके द्वारा भक्ति करने वालेको मुक्ति मिल जाती है। शरीर मन वाणी द्वारा नित्य ही पाप करनेवाले पापी कृतघ्नी निर्दयी कुटिलात्मा पुरुषभी केवल मेरे पंचाक्षर मन्त्र से शीघ्रही भवसागरसे तर जाते है। हे कल्याणी। अनेकोंवार मैं इसबात की प्रतिज्ञाकरके कह चुका हूँ. पतित सेपतीत भी मेरा भक्त इसी पञ्चाक्षरी विद्या द्वारा मुक्ति पा सकता है। श्रीपार्वतीजी बोली-हे देव ! पतित पुरुष तो अधम कर्म करता है उनके तो वह नरक का अधिकारी है फिर वह किस प्रकार

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

इस विद्या द्वारा मुक्त हो सकता है । महेश्वर बोले-हे कल्याणी ! पतित पुरुष यदि पंचाक्षर मन्त्र को छोड़कर अन्य मन्त्रोंसे भी यदि मेरा पूजन करता है तो उसे नरकगामी होना पड़ता है । केवल जल पवन के आहार से अनेकों व्रत तप करने वाले मानव मेरा लोक नहीं पा सकते । एकही बार पंचाक्षर मन्त्र जपने वाले शीघ्र ही मेरा लोक पा लेते हैं । पंचाक्षर मन्त्रके करोड़वे अंश के तुल्य भी तप यज्ञ व्रत नियम आदि साधनकभी नहीं हो सकते । तभी तो यह सर्वोत्तम मन्त्र है । महर्षि लोग इसी के प्रभाव से स्वधर्माचरण करते हैं । जिस समय प्रलय हुई । सभी स्थावर जंगम जीव नष्ट हुए । उस समय केवल मैं ही एक रह जाता हूँ । तब वेद शास्त्रादि सभी पञ्चाक्षर मन्त्र में लीन हो जाते हैं तभी स्थावर तो वे सभी नष्ट नहीं होने पाते । उसके पास प्रकृति पुरुषके भेद द्वारा मुझसे फिर सृष्टि चल पड़ी उस समय माया के साथ भगवान नारायणक्षीर समुद्र में शयन करने लगे । तब उनकीनाभि कमलसे पञ्चमुखी ब्रह्माकी उत्पत्ति हो गई । ब्रह्माजी का विचार सृष्टि की उत्पत्ति के लिये असहाय होने के कारण उन्हें रचना करने की शक्ति नहीं हुई । फर भी मेरी कृपा से मम द्वारा दस ऋषि उत्पन्न करके प्रार्थना करने लगे । तब मैंने पाँच मुख धारण कर ब्रह्माजी के सामने प्रकट होकर उसे यही पाँच अक्षर सुनाये । ब्रह्माजी ने भी अपने पाँच मुखों द्वारा उन्हें ग्रहण कर लिया । वाच्य वाचक रूप में मेरा स्वरूप जानकर पुत्रों को भेद दिया । स्वयं उस मन्त्र रत्न को पाकर मेरे आराधन के लिये मेरु शिखर पर पहुँचे । वहाँ मुंच नामक पर्वत पर जगत निर्माण के लिये दिव्य हजार वर्ष पर्यन्त वायु आहार करके तप करने लगे । तब मैंने ब्रह्माजी की तपस्यासे प्रसन्न होकर दर्शन दिये । जगतरचना के लिये फिर मैंने मन्त्रका उपदेश किया। उसी मंत्र के प्रभाव से ऋषियों ने देव मानव सबकी सृष्टि रचली । यह इस प्रकार का पंचाक्षर मंत्र है । अब इसका रूप श्रवण करो पहिले 'नमः अन्त में 'शिवाय' इस प्रकार उच्चारण करे 'नमः शिवाय, यह पंचाक्षर मंत्र महा महिमावान है । वेदों से भी उत्तम सारे जगत का बीज

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGaan Kosha

रूप है। यही विद्या प्रथम मेरे मुख द्वारा प्रकट हुई है। मेरी वाचिका है उसकी आकृति इस प्रकार है।सोने जैसा तो वर्ण है अनन्त कुच हैं, चार भुजा हैं, तथा तीन नेत्र हैं, इस स्वरूप से यह कोई साधारण शक्ति नहीं। बीजों में इस मन्त्र का दूसरा बीज है। वामदेव तो इसका ऋषि है और पंक्ति छन्द है। हे प्रिये !मैं भी शिव इसका देवता हूं। हे कल्याणी ! मुझमें चित्त लग कर क्रम अथवा अक्रमसे भी इसका जपन करनेवाला युझे परम प्रिय है। कलियुग में यही मन्त्र तारने वाला है। और जो भी भक्त इस मन्त्र को क्रम नियम में जपना चाहता है। उसके लिये सभी नियम शास्त्रों में वर्णित हैं। अब मैं मन्त्र ग्रहण करनेका प्रकार तुमको सुनात हूं जिसके न होने पर सब जपना व्यर्थ चला जाता है।

* चौदहवाँ अध्याय *

(व्रत ग्रहणकरने का विधान)

शङ्करजी बोले–हे प्रिये जो भी जपन आज्ञा से हीन हो क्रिया से हीन हो,दक्षिण पूर्व श्रद्धा से रहित हो वह निष्फल होता है। तभी तो सिद्ध पुरुष अपनी भाव श्रद्धा बढ़ाते हैं फिर तत्वज्ञाता स्वयं जपन कर्ता आचार्य गुरुदेव के पास जाकर उन्हें करते हैं। शरीर, मन, वाणी द्वारा उनका पूजन भी करते हैं। यदि धनवान हुआ तो हाथी घोड़े आदि उत्तम वस्तुओंकी भेंट भी करते हैं यह सब अवश्य करना चाहिये, अपनी योग्यता के अनुसार फिर उनसे मन्त्र ग्रहण करें प्रसन्नहोकर गुरु देव भी एक वर्ष तक उसकी परीक्षा करते रहें। जब देखे कि यह निरहङ्कार हो चुकाहै तब शिष्य की पवित्रता के लिये उसे घृत से स्नान करावे तब मन्त्र से परमपवित्रता औषधि आदि द्रव्य मिलाकर जल से स्नान करावें। वस्त्र आभूषणों से भूषित करके पुण्याह वाचन कराकर ब्राह्मणों का पूजन करे। उसके बाद गौशाला अथवा मन्दिर आदि पुण्य स्थान में जाकर कृपा करके शिष्यको विधि पूर्वक, मेरे ज्ञान का उपदेश करे। तब शिष्य उस मन्त्रको एक हजार आठ बार नित्यही अपने जीवन पर्यन्त जपता रहे। तब उसे परमगति प्राप्त हो जाती है। मन्त्रके जितने

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

अक्षर हैं उससे चोगुना (लक्ष हो) केवल रात्रिको भोजन करे, सयमरखे। जिस पुरुष पुरश्चारण करके नित्यके जपनका नियम कर लिया हो उसके समान तो पुण्यात्मा भी नहीं। बाचिक जप द्वारा एक गुना फल है उपाश जप का सौ गुना, धानस का हजार गुना फल होता है। सगर्भ करने के द्वारा लक्ष गुना फल है। सगर्भ को मन्त्र के आदि में तथा अन्त में ओंकार होना चाहिये। ध्यान के साथ जप करना तो सगर्भ जप से हजार गुणा विशेष है। हे देवीजी! इस प्रकार मैंने पाँच विधियाँ सुना दीं। उनमें से किसी को भी ग्रहण कर ले सूर्य, अग्नि, गुरु, चन्द्रमा, दीपक, जल, ब्राह्मण, गौ इनके पास ही स्थिर होकर जप करे। वशीकरण में पूर्वामुख, घात करने में दक्षिण मुख धन प्राप्ति के लिये पश्चिम मुख तथा शान्ति पाने के लिए उत्तर मुख होकर जाप करे। उस समय श्वान चाण्डाल को देखे नहीं, यदि अचानक दिखाई पड़ जाय तो आचमन करले। सदाचार रखना परम धर्म है। परम, तप, उत्तम धन श्रेष्ठ विद्या परम गति ये सब आचार हैं। आचार हीन पुरुष लोक-निन्दक हैं। उसे परलोक का भी सुख प्राप्त नहीं होता। पुरुष सदाचारी होकर रहे, हे देवीजी! इस रहस्यको अधिकारी के बिना किसी के आगे नहीं करना चाहिए। सदाचार हीन, पतित, चाण्डाल आदि जातियों को भी सुधारने वाला यह मन्त्र किसी नास्तिक, द्वेषी, असूयक को मन्त्र परम फलदायक है। सिद्ध गुरुसे प्राप्त हुआ यह मन्त्र सिद्ध दायक है किन्तु असिद्ध से लिया हुआ भी निष्फल नहीं। इसी एकके सिद्ध हो जाने पर भी सभी मन्त्र सिद्ध हो जाते हैं।

* पन्द्रहवाँ अध्याय *

(दीक्षा विधि)

श्रीकृष्णजी बोले-हे महर्षे! आप जिन्हें पहले सूक्ष्म रूप से कह चुके हैं अब उन उत्तम शिव संस्कारों को विस्तार पूर्वक सुनाने की कृपा करें। उपमन्यु बोले-सुनिये, छः मार्ग शुद्ध कर लेने को संस्कार कहा जाता

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

है, जिससे ज्ञान प्राप्ति एव साँश बधन विनाश हो वह संस्कार दीक्षा कहाती है,यह दीक्षा तीन प्रकार की है,शाम्भवी 'शाक्ती एवं मांत्री। शाम्भवी दीक्षा गुरु दर्शन स्पर्श सम्भाषण आदिसे नाश बिनाशिनी होती हैंयह शाम्भवी तावा तीव्रत्तरा भेद द्वारा दो प्रकार की है। जिसके द्वारा पाप समूह नष्ट हो जाँय वह तीव्र तथा जिसके द्वारा शीघ्रति शीघ्रआनंद प्राप्त होजाय वह तीव्रत्तरा शाम्भवी दीक्षा हैं। गुरुजी योगके मार्ग द्वारा शिष्य के शरीर में प्रवेश करके जो ज्ञानमयी दीक्षा देते हैं उसे शाक्ती दीक्षा कहा जाता है। कुण्ड कुण्डल के साथ २ जो क्रिया वाली दीक्षा दी जाय वह माँत्री दीक्षा है। गुरुदेव भी शिष्य परीक्षा करके ही दीक्षा प्रदान करें। ज्ञान तथा क्रिया द्वारा शिष्य का शोधन करलें। शिष्य भी गुरुदेव को अपना साथ दे पूजन करे गुरु संगतिमें रहे। इस प्रकार अपने गुरु के गौरव को वढ़ाने का प्रयत्न करे। शिव ही गुरु हैं और गुरुदेव ही शिव हैं कभी इसमें भिन्नता न जाने। गुरुदेवकी आज्ञा द्वारा ही सभी काम करे गुरुके सामने आसन पर बैठे। आसन से गुरु के सन्मुख विरुद्ध बोलना भी पाप है रौरव नरक होताहै। गुरू यदि गुणवान तत्व ज्ञाता है एवं शिव भक्त है तो वह परम मुक्ति दायक है। गुरूदेव अपने घर में आये हुए ब्राह्मण वर्ण शिष्य को एक वर्ष तक तथा क्षत्रिय वर्ण को दो वर्षों तक एवं वैश्य को तीन वर्षों तक परीक्षण करे। जिन शिष्यों को फटकारा जाय अथवा ताड़ा जाय फिर भी वे मौन धार कर दुःख का अनुभव न करें। वेही शिष्य तत्पात्र एवं शिव संस्कारयोग्य हैं। स्त्रियों का शिव संस्कार ग्रहण करने में अधिकार नहीं। वे तो पति की आज्ञा पाकर शिव पूजन करें। पतिहीन नारी पुत्र अथवा अन्य किसी से आज्ञा लेले। कन्या हो तो पिताकी आज्ञा ग्रहण करे।

* सोलहवाँ अध्याय *

(शिव भक्ति वर्णन)

उपमन्यु बोले-हे श्रीकृष्णजी ! जब कोई साधन कराने लगेतब वह प्रथम पवित्र स्थान में जाकर समयाव्हय नाम का संकार करे। उसमें शुभ

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Eyaan Kosha

दिन पुण्य समय प्रथम देख लेवे। वहाँ की सुगन्ध, वर्ण, रस आदि द्वारा परीक्षण करले फिर उसी भूमि पर शिल्प शास्त्र कथित विधि द्वारा मनोहर मण्डल रचना करे, मध्यम में वेदी हो। ईषान कोण से लेकर आठों दिशाओंमें कुन्डल वनावे। पश्चिम दिशामें प्रधान कुण्डल होना चाहिए अथवा आठ कुण्ड ही न वना कर एक ही कुण्ड वहुत सुन्दरबनवाले। चन्दोवा, ध्वजा, पताका, पुष्प मालाओं से उसे शोभित करे। उस वेदी के मध्यमें सुन्दर मण्डल होना चाहिए। फिर चाँदी सोने द्वारा ईश्वरका आव्हान करे। यदि शक्ति न हो तो चावल सिन्दूर पुष्पों द्वारा आव्हान करे। एक या दो हाथ श्वेत या लाल कमल बनावे। कमल की आठ कर्णिका हों, आधे में तो केश तथा आधेमें पल निर्माण करे, यदि दो हाथ विस्तृत कमल हो तो सोलह अंगुल कर्णिका हो। वेदी पर धान चावल, सरसों, तिल, पुष्प कुशा आदि बिछावे फिर कलश स्थापनाकरे। कलश चाहे धातु का हो या मृतिक का उसे शुद्ध जल से भरले उस पर सुगन्धित पुष्प, अक्षत कुशा, दूर्वा, नया लाल वस्त्र तथा श्रीफल हरा धारण करे। कमल के उत्तर दलमें उसके आसन की कल्पना करके स्वयं आसन पर बैठ जाय। चन्दन मिश्रित जल द्वारा आचमन करके षोड़शोपचार द्वारा विधि पूर्वक कलश पूजन स्थापना आदि करे। उसके वाद गुरुदेव भी अपना नित्य कृत्य करके प्रसन्नतासे पूजा भवन में जावें। मण्डलके मध्य महेश्वरका पूजन करें फिर शिव कलशमें शिवका आव्हान करके विधान के साथ उस कलश का पूजन करें। फिर पश्चिमाभिमुख होकर यज्ञ रक्षक भगवान शिव का ध्यान करते हुए दक्षिण में शिवजी के अस्त्रों कों पूजें, मुद्रा आदि दिखा कर मन्त्रोच्चार पूर्वक यज्ञ आरम्भ करें। शिव अग्नि में प्रधान आचार्य होम करे। आचार्य प्रार्थना भी करे हेसदाशिव! आप मेरे शरीरमें प्रविष्ठ होकर इस भक्तको सासारिक दुःखों से छुड़ाओ। उसके वाद उपवास कर्त्ता अथवा हविष्य अंन भोक्ता ओंकार के जपन करने वाले शिष्य को मण्डप के दक्षिण या पश्चिम द्वार पर उत्तराभिमुख करके कुशासन पर बिठा देवें! और आप पूर्वाभिमुख होकर

CC-0. ASI Srinagar Circle. Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

उसे जल द्वारा प्रोक्षण करे, फिर फूलों द्वारा उसका ताड़न करे मन्त्र द्वारा शोधित नवीन वस्त्र से उसकी आंख बांधकर उस शिष्य को मंडप में ले जांय, गुरुदेव की आज्ञा पाकर शिष्य शिवको तीन परिक्रमा करे, उसके बाद पूर्व या उत्तर की ओर मुख करके स्वर्ण के साथ पुष्पाञ्जलि अर्पण करे दण्डवत् प्रणाम करे-उसके बाद फिर शिष्यका प्रोक्षण करके आचार्य उसकी आँखें खोल देवे। शिष्य आँखों द्वारा मण्डल का दर्शन करके प्रणाम करे उस शिष्यको आचार्य मन्डल के दक्षिणी और कुशासन पर बिठावे स्वयं शिव आराधन करके उसे हाथसे स्पर्श करे और शिव मन्त्र का उचारण करे शिव शास्त्रानुसार प्राणों का विनिर्गम करके शिष्यके शरीर में प्रविष्ट होकर मन्त्रों द्वारा तर्पण करे मूल मन्त्र के तर्पण में दस आहुतिया अंग देवताओंके लिए तीन आहुतियां प्रदान करे उसके बाद दस आहुतियां आचार्य का देवे। उसके बाद महेश्वर का पूजन करके आचमन करे क्षत्रियहो अथवा वैश्य इनका उद्धार करके उनमें ब्राह्मणत्व को उत्पन्न करे फिर उसे रुद्र कहकर सम्बोधित करे। गुरुदेव वायुको नाड़ी द्वारा निकाल कर सुषुम्ना नाड़ी द्वारा धारण करे। फिर मन्त्रों से हृदय में प्रवेश करे। शिष्यको आसन पर बिठा दे घटजलसे मन्त्रों द्वारा उसका प्रोक्षण करे। उसके बाद शिष्य फिर जाकर स्नान करे और शुद्ध वस्त्र धारण करके मन्डपमें आजाय। पहिले की तरह गुरु उसे कुशाके आसन पर बिठा कर देवपूजन करके कर न्यास आदि करे फिर आचार्य भस्म लेकर शिष्य का स्पर्श करते हुए शिवस्मरण करे। हाथ जोड़कर प्रार्थना करेकि हे देवाधिदेव? आप यहाँ अचल होकर विराजें। फिर शिवजीके तेज का स्मरण करे। इसके बाद गुरुदेव शिष्य के कानमें धीरे-धीरे शिव मन्त्र का उपदेश करे और शिष्य भी हाथ जोड़कर सुनता जाय। फिर आचार्य की आज्ञा पाकर शिष्य शिव मन्त्रका उच्चारणकरे।गुरुदेव उससे शक्ति मन्त्र बुलवा कर मङ्गलचरण करे योगासन की शिक्षा दे। उसके बाद गुरुदेव की आज्ञासे शिष्य शिव, अग्नि तथा आचार्यके पास भक्ति के साथ दीक्षा वचनों का उच्चारण करे। भगवान शिवका जब तक पूजन

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

न करले कभी भी प्रथम भोजन न करे। इस प्रकारसे विधि पूर्वक पूजन करने वाला शिष्य समयनामी गुरुदेवकी आज्ञा पालने का अधिकार पा लेता है। इसके वाद करन्यास आदि करके हाथ से भस्म लेकर शिष्य को देवे अभिमन्त्रित रुद्राक्ष भी दे। शिव शंकरजीका मूर्तिभीदे। पूजन, हवन, जपन, ध्यान आदि साधन समझा दे, शिष्य इन सब वस्तुओं को आदर के साथ ग्रहण करे।

* सत्रहवाँ अध्याय *

(शिव दीक्षा विधि)

उपमन्यु बोले-हे श्रीकृष्णजी! इसकेवाद अपने शिष्यकी योग्यता जानकर बन्धनों से मुक्ति पाने के लिए षडध्व शोधक करे। कला तत्व भवन वर्ण, पद,मन्त्र इस प्रकार यह छः अध्याय हैं। निवृत्ति, प्रतिष्ठा, बिद्या शान्ति,अतीत यह पाँच कलाध्वा कहीजातीहैं। इन्हीं पाँचोंभागों द्वारा पाँच मार्ग आवृत रहते हैं। शिव तत्व से लेकर पृथ्वी तत्वाध्वा कहा जाता है। यह शुद्ध अशुद्ध के दो भेदोंसे छब्बीस संख्या वाला होता है आधार से प्रारम्भ करके उन्मना तक भुवनाध्वा कहा है यह साठ प्रकार का होता है। रुद्ररूप वर्ण पचास प्रकार के होनेसे वर्णाध्वा कहे जाते हैं। पदाध्वा तो अगणित भेदों वाला है। सारे उपमन्त्र मन्त्राध्वा कहे जाते हैं। समाशिव तो तत्व नायक हैं उनके तत्वों की गणना अशक्य हैं इसी प्रकार उ के मन्त्रोंकी गणना भी अशक्य हैं। सबसे प्रथम मार्गस्वरूपका ज्ञान होनाचाहिए। फिर अ वविशोधन करे। प्रथम वर्णन किये गये कुण्ड के मण्डल तक कृत्य करके पूर्व दिशा में दो हाथ जितना कलश मण्डल बहावे। तब आचार्य स्नान कर नित्य कर्म करे फिर शिष्यके साथ मण्डलमें जाकर शिव पूजन करे। चार सेर चावलोंकी खीर बनाकर आधो शिवजीको समर्पण करे आधा हवन के लिये रख छोड़े। अपने सामने वर्णसज्जित मंडलकी रचना करे। उसकी सभी दिशाओं में पाँच कलश स्थापित करे। नकार मकार तक पांच वर्ण पाँच कलशों पर धारण करे। मध्य में ईशान, पूर्व में पुरुष,

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

दक्षिण में अघोर, पश्चिम में सद्योजात उत्तर में वामदेव स्थापित करे। फिर रक्षा विधान करके कलशों को प्रोक्षित करके हवन आरम्भ कर देवे, उसी आधी खीर से होम करे, और उस होम द्वारा बची सामिग्री को शिव प्रसाद समझे, प्रथम की तरह तर्पण कृत्यतकर्म करके पूर्णाहुति होने तक हवन कार्य करे, ओंकार के साथ हुँकारके साथ (ओं हुँ नमः शिवाय स्वाहा) इस प्रकार क्रमशः अङ्गों में प्रदीपन करके तीन आहुतियां देवे। उसके बाद कन्या द्वारा कराते गये सूत को अभिमन्त्रित करके फिर उसे त्रिगुण करके गुरुदेव बालक शिष्य की शिखामें बाँध दे, इसी क्रम से पूजन होना चाहिए बिना भोजन के शिवका ध्यान करते २ शिष्य शयन करे, प्रातःकाल उठकर जो रात्रि को स्वप्न हुआ हो वह गुरुदेव से निवेदन करे।

* अठारहवाँ अध्याय *

(षडध्वज शुद्धि निरूपण)

उपमन्यु बोले-हे श्रीकृष्ण ! इसके बाद आचार्य की आज्ञासे स्नान आदि सभी नित्य कर्म पूरे करके ध्यान करते हुए हाथ जोड़कर वहां से प्र स्थन करे,उसकेबाद फिर उसके नेत्र बाँधकर गुरुदेव शिवद्वारा पुष्प फैलावे जहाँ २ पुष्प गिरतेजाँय वहाँ उस नामका उच्चारण करता जाय फिर मण्डल में आकर निर्माल्य स्वीकार करे ईशान देवका पूजन करे। अग्नि होत्र करे। यदि शिष्य को रात्रिकालमें दुःस्वप्न हुआ हो तो उसे शान्त करने के लिए मूल विद्या द्वारा सौ अथवा पचास आहुतियाँ डाले फिर वागीश्वरी पूजन करे, उस वक्त वागीश को प्रणाम करके मण्डल में देवपूजन करे। तीन आहुतियां देवे। उसके बाद वागीश्वरी में अपने आपको निविष्ठ कर देवे। शिष्यको गुरुदेव मन्त्रों द्वारा शुद्ध करके चेतन करे फिर पूर्णाहुति डाले उसके बाद ब्राह्मण पूजन करे फिर तीन आहुतियाँ डालकर शिव स्मरण करे। उसके बाद नीलरुद्र वागीश्वरी, तेजस्विनी शिवशक्ति का चिन्तन करे। उसके बाद गुरुदेव शिष्यको अपने सामने बिठादे कैंची को जल प्रोक्षण द्वारा शुद्ध करले उसीके साथ शिष्य

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

की सूत्र सहित शिखा छेदन कर डाले। उसे गोवर में स्थापित कर अग्नि में हवन करदे। फिर मण्डल में विराजमान शिव पार्वती का ध्यान करे और प्रार्थना करे कि हे देवाधिदेव! आपकी कृपा द्वारा ही सड़ध्वा का शोधन हुआ है। उसी कारण इसे अव्यय धाम की प्राप्ति हो। तब नाड़ी सन्धानके साथ पञ्चभूतोंकी शुद्धि करे। तीन आहुतियाँ डालकर अणिमा आदि गुणों का निरूपण करे। आवरण के साथ गौरीशङ्करको पूजकर आसन दे फिर प्रार्थना करे कि मेरा किया हुआ पुण्यकार्य सफल हो।

* उन्नीसवां अध्याय *

(साधन भेद निरूपण)

उपमन्यु बोले–हे श्रीकृष्णजी। अब तो हम मन्त्र साधनेका प्रकार निरूपण करते हैं। मण्डप के मध्य में शिव पूजन करके कलश स्थापन करे हवन करे। फिर सिर खोले हुए शिष्य को मंडप में बिठा देवे। उसके बाद एक सौ आहुतियों का हवन करे, पुष्प मिले जल से अभिषेक करे। फिर शिव सम्बन्धिनी विद्या प्रदान करे, तदनन्तर शिष्य को साधन की रीति बतावे। इस प्रकार शिष्य साधन उपदेशको ग्रहण करके गुरुदेव के सामने ही मन्त्र साधे। यह साधन मूल मन्त्रका पुरश्चरणहोताहै।जब इस प्रकार साधन आराधन पूर्ण हो जाय तव सुन्दर स्वादिष्ट खीर निवेदन करे, प्रणाम करे फिर एक करोड़ अथवा आधा करोड़ जपन करे, इतना भी न हो सके तो बीस अथवा दस लाख जप अवश्य करे। इसके बाद नमक के बिना भोजन अथवा खीर का भोजन करे। हे श्री कृष्णजी! इस प्रकार मन्त्र साधने वाले पुरुष को इस लोक तथा परलोक में कुछ भी असाध्य नहीं है।

* बीसवां अध्याय *

(अभिषेक प्रकार)

उपमन्यु बोले-हे श्रीकृष्णजी! शिष्य जब इस प्रकार मन्त्र साध चुके तो फिर पाशुपति व्रत धारण करे। फिर उसे गुरुदेव योग्य समझे और उसका अभिषेक करे। पहले कहे विधानसे शिवपूजन करे। शिष्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

को अभिषेक करने के लिये आसन पर बिठादे। पंचकलाओं से परिपूर्ण कलश शिवजी के लिये स्थापित करे उसका पूजन करे तब मध्य के कलश का जल लेकर शिष्यका अभिषेक करे फिर भगवान शङ्करजी को वस्त्रालङ्कारोंसे सुशोभित करके शिवमण्डल में आराधन करे फिर एकसौ आहुतियों से हवन करके पूर्णाहुति देवे। शिष्य को भी साथ २ समझाता जाय फिर मण्डलसे शिवजी को उठाले, शिव घट तथा अग्नि सभी का पूजन करे। शिवजी के सदस्य भी पूजे अध्वशोधन की भाँति सभी क्रियायें करे। इस प्रकार शिव शास्त्र ज्ञाता विद्वान ज्ञानी ही शिवमन्त्रको दुर्लभ समझकर शक्ति संस्कार का निरूपण करते हैं।

* इक्कीसवां अध्याय *

(नित्य नैमित्तिक कर्म निरूपण))

श्री कृष्णजी बोले—हे महर्षि! अब मैं शिव शास्त्र के अनुसारकर्म कर्ता पुरुषों के नित्य नैमित्तिक कर्म सुनना चाहता हूं। अब कृपा करके यही निरूपण करैं। उपमन्यु बोले—सुनिये! जब प्रातकाल ब्रह्म मुहूर्त लगे तभी उठकर चाहिये। उस समय शिव पार्वती का ध्यान करे और अपने दैनिक कार्य को विचार करले। फिर अरुणोदय होते-होते घर से बाहर निकल जाय जहाँ कोई विघ्न-बाधा न हो, एसे स्थान पर जाकर विधिके साथ शौच आदि करके दांतुन करे। फिर आचमन आदि करके नदी तालाब आदि अथवा घर पर आकर स्नान करे। नये शुद्ध वस्त्र धारण करे। विधवा, ब्रह्मचारी, तपस्वी इन जनों को दाँतुन तथा सुगन्धित वस्तुओं से नहाना उचित नहीं, फिर जल के मध्य में तीन मंडलोंकी कल्पना करके यथा शक्ति शिव मन्त्र जपे। फिर घुटनों से पृथ्वीपर बैठकर प्रणाम करके अर्घ्यपात्र माथे पर चढ़ा कर शङ्करजी को अर्घ्य देवे अथवा मूल विद्या द्वारा कुश मिले जलसे अर्घ्य दे। उसके बाद पहली विधि से भस्म धारे। मस्तक दोनों भुजा और छाती पर त्रिपुण्ड लगावे। इस प्रकार रुद्राक्ष भी मस्तक, कंठ, कान एवं हाथों में धरले फिर ब्राह्मणों को सुफेद लाल पीत रङ्गीन नूतन वस्त्र धारण करावे। इस प्रकार सभी कार्य

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

करके पूजन स्थान पर जाकर पूर्व अथवा उत्तर मुख बैठकर शङ्करजी का ध्यान करे। श्वेत आदिसे आरम्भ करके नकुल शतक तक फिर शिष्य गुरुको प्रणाम करे, शङ्करजी को प्रणाम करके नामाष्टक पढ़े।

* बाईसवाँ अध्याय *

(पूजन का न्यास निरूपण)

उपमन्यु बोले–हे श्रीकृष्णजी ! न्यास उत्पत्ति स्थित लय के क्रमानुसार तीन प्रकार का होता है। स्थित न्यास गृहस्थियों के लिये हैं। उत्पत्ति न्यास ब्रह्मचारियों के लिये है। लय न्यास सन्यासियों के लिए है। बनवासी तथा विधवाओं के लिये भी न्यास विधि है। अंगुष्टसे लेकर कनिष्टका तक स्थित न्यास होता है। लय न्यास तो वाम अंगुष्टसे दक्षिण उत्पत्ति न्यास है। लय न्यास है। लय न्यास तो वाम अंगुष्ट से दक्षिण अंगुष्ट तक है, इस प्रकार विन्दु के साथ २ नकारादि वर्णों का क्रमशः न्यास करना उचितहै। तल एवं अनामिका में शिव का न्यास करे। दशों दिशाओं में अस्त्र मन्त्रों द्वारा अस्त्र न्यास होना चाहिये। पांच भूतों के स्वामियों के साथ २ निवृत्ति आदि पाँच कलाओंकों हृदय कण्ठ तालु भृकुटियों के मध्य ब्रह्म रन्ध्र में धारे। ग्रन्थि शोधक के लिये पञ्चाक्षरी विद्याका जपन करे। प्राणवायु का अवरोध करके गुण संख्याके अनुसार अस्त्र मुद्राओंसे भूतग्रन्थि का छेदन करे। सुषुम्ना नाड़ी से प्राण वायु प्रेरित करे फिर जो ब्रह्म रन्ध्रसे निकलरहा हो उसे अस्त्र तेज द्वारा जपन करे। उसके बाद वायु द्वारा शरीर षोषण करके कालाग्नि द्वारा जलादे फिर कलाओं का संहार करे। दग्ध शरीरमें कलाओं का स्पर्शकरे उसे अमृत द्वारा सिक्त करके शरीर कोउचित स्थान पर स्थित करदे फिर भौतिक शरीर को भस्मी द्वारा अमृत स्नान करावे। उसी शरीरद्वारा ब्रह्म रन्ध्र से निःसृत तेज को शिव तेज मान ले। उसी का हृदय पद्म में ध्यान करे अमृत वर्षासे विधात्मक देह को सींचे। हाथ धोले करन्यास करे फिर महती मुद्रा द्वारा देह करे। शिव कथित मार्ग द्वारा अङ्गादि न्यास करके कटि एवं चरण आदि में वर्ण न्यास होना चाहिये।

CC-0. ASI Srinagar Circle. Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

फर जाति के साथ षडंग न्यास करके कोणों से लेकर क्रमानुसार अग्नि की दिशा बन्धन करे। उसके बाद शरीर शुद्ध करके शिव तत्व को प्राप्त होकर ही ईश्वरको पूजे। पहले मातृका न्यास, ब्रह्मन्यास प्रणव न्यास, हंस न्यास आदि करके इनका क्रमशः पूजन करे। प्रकार तो सिर में आकार मस्तक पर ईं ईं नेत्रों में उं उं कर्णों में ऋं ॠं गालों पर लृं लॄं दोनों ना सिकाओं में ऐं ऐं दोनों अधर ओठों में ओं औं दन्तावलि में अं को जिव्हा तथा तालु से इस प्रकार न्यास करना उचित है कि बर्ग दक्षिण हाथ की पांचों सन्धियों में, च वर्ग वाम हस्त की पांचों सन्धियों में, ट वर्ग त वर्ग दोनों पैरों को सन्धियों में, य एवं फ दोनों पसलियोंमें 'न' 'भ' नाभिमें, हृदय में मकार न्यास करना चाहिये। त्वचा से लेकर सातों धातुओं में मकार से सकार तक वर्ण न्यास करे। हकार हृदयमें सकार भृकुटि मध्य में इस तरह पचास वर्ण रुद्र मार्ग द्वारा न्यास करे। फिर क्रमशः अघोर, वामदेव, प्रणाम हंस न्यास पंचाक्षरा आदिका न्यास करे। यदि शिव भक्त न हो तो शिव अभ्यास पूजन ध्यानादि न करे। ध्यानी ज्ञानी पुरुष संसार सागर से तरताहै। ध्यान यज्ञ द्वारा आनन्द मोक्ष मिलता है।

* तेईसवां अध्याय *

(मानसिक पूजन)

उपमन्यु बोले—हे श्रीकृष्ण! पार्वतीजीके लिये जैसाकि शंकरजी ने शिव शास्त्रों में वर्णन किया है उसीके अनुसार मैं पूजा विधिका निरूपण करताहूं। अगन्यास आदि कृत्य तक पूर्ण करे। उसके बाद अपने मन द्वारा पूजन सामिग्री की कल्पना करे उससे विधिपूर्वक गणेश पूजन करके दक्षिणा तथा उत्तर में नन्दीश तथा सुभद्रा को पूजे। फिर निर्मल कमलासन की भावना करे उस पर शिव पार्वतीजीकी स्थापना करे ध्यान करे। भावनामय सामिग्री साधन से भक्तिके साथ पूजन करे। भावनामय पुष्प चढ़ावे फिर प्रथम कथित विधान से मूर्ति में न्यासादि करे। बाह्य क्रम से ध्यान करके पूजे उसके बाद भावनामय समिधा घृत आदि द्वारा

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

परमेश्वर की नाभि में होम कर। फिर भृकुटि मध्य में परम पवित्र दीप ज्योतिके आकार वाले शङ्कर का ध्यानकरे। इसप्रकार अपने सभी अङ्गों में अग्नि कर्मपर्यन्त विधि करता जाय। यही मानसिक भावनामय आराधना है इसे पूर्ण करके फिर देव का अग्नि या स्थंडिल अथवा लिंग में पूजन करे।

* चौबीसवाँ अध्याय *

(पूजन निरूपण)

उपमन्यु बोले-हे श्रीकृष्णजी ! पूजास्थानको पवित्रताका अर्थ गन्ध चन्दन तथा पुष्प जल से मूल मंत्र से प्रोक्षण करे। अस्त्रों द्वारा विघ्नों का निवारण करके कवच द्वारा अवगुंठन करके सारी दिशाओं का अस्त्र न्यास करके पूजास्थलकी कल्पना करे। प्रथम कुशा बिछादे उसे जल से मार्जित करे। प्रोक्षणी पात्र, अर्घ्यपात्र, पाद्य आचमन आदि सभी चार पात्रों को शुद्ध करके उनमें जल पूर्ण करे पाद्य जलमें खस तथा चन्दन डाले। एवं आचमन के जलने ककोल, कपूर, कीमता तमाल, चन्दन आदि चूर्ण मिलावे। अर्घ्यपात्र में चावल, कुशा, दूर्वा जौ, अक्षर तिल घृत सरसों,पुष्प तथा भस्म मिलावे। सबमें मंत्रन्यासादि करके कवच से वेष्ठित करके अस्त्र द्वारा रक्षित करके धेनु मुद्रा दिखावे। उसके बाद विनायक देवके आगे भक्ष्म भोज्म आदि पदार्थ निवेदन करके पूजन करे। फिर नन्दीश्वर तथा उसकी धर्मपत्नी को पूजे। फिर परमेष्ठी के भवन प्रविष्ट होकर अनेकों पदार्थोंद्वारा शिवलिंग पूजन करे। बहांसे निर्माल्य हटाकर फूलों को धोकर शिव मस्तक पर पधारे। ऊर्ध्व भाग में मनोहर कमलासन की भावना करे। उसके आठों दल आठ प्रकार की सिद्धिदाता हैं। वामादिक शक्तियाँ वीज हैं इन सबका न्यास करे इसकेबाद अनादि अन्तरूप शङ्करजी का पूजन करे। पंचगव्य द्वारा स्नान करावेफिरपवित्र जलमें पिसे आंवले एवं हल्दी मिलाकर इसका लेपकरे। प्रथम देवस्नान होना चाहिए फिर देवी स्नान। स्नानादिक होजानेके बाद मनोहर वस्त्र तथा यज्ञोपवीत चढ़ावे। पाद्य, अर्घ्य आचमन, धूप, दीप, नैवेद्य, गन्ध

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

पुष्प, भूषण, जल, मुखवास पुनः आचमन आदि निवेदन करके रत्न जटित मुकुट और भी आभूषण, अनेकों प्रकारके पुष्प, छत्र, चँवर, ताल व्यजन दर्पण आदि सभी वस्तुएं समर्पण करे। मङ्गलगायनकरकेआरती उतारे। गायन वाद्य जय जयकार ध्वनिसे देव मन्दिर को गूंजित करदे फिर वह आरती पात्र शिवलिंगपर तीनबार फिरावे। माथे पर सुगन्धित भस्म रमावे फिर नैवेद्य तथा पुष्पाञ्जलिअर्पण करे। जलद्वारा आचमन करावे। शङ्करजी को प्रणाम करके अपराधियोंके लिए क्षमामांगे। इत्यादिक पूजन यदि मानसिक भावना द्वारा किये जांय तो परम फल की प्राप्ति होती है। शिव पूजन के पहिले और भी भोजन न करे चाहेप्राण भी निकल जांय।

* पच्चीसवां अध्याय *

(नित्य कृत्य विधि निरूपण)

उपमन्यु बोले-हे श्रीकृष्णजी! दीप दान करलेने के अन्तर सवि समर्पण से प्रथम आरति होते समय आवरण पूजन भी होना चाहिये। उस समय ईशान देवसे लेकर सद्योजात तक शिव अथवा शिव का जपन पहिले आवरण में हो। हृदय से लेकर अस्त्रन्यास तक पूजन करे। पूर्वमें इन्द्र, दक्षिणमें यम, पश्चिममें वरुण, उत्तरमें कुवेर, अग्निकोण में अग्नि नैऋत में निऋति, वायुकोणमें वायुकी,इस प्रकार क्रमशः सबकी पूजा करे। कमलसे बाहिर वज्रादिक आयुध पूजे! सभी स्थानोंमें आठ लोकपाल पूजे फिर देवी का दर्शन करके आवरण देव की पूजा करे। योग ध्यान जप होम इत्यादि कृत्योंमेंतो छःतरह का नैवेद्य होना चाहिये उसके बाद कपूर, कंकोल, जावित्री, कस्तूरी,केसर भृगमद,सुगन्धित पुष्प आदि २ अर्पण कर घृत का दीपक जलावे। फिर हस्तीदन्त निर्मित आसन तथा दिव्य छत्र,चंबर,भेरी, मृदङ्ग आदि २ निवेदित करे। अपनी शक्तिसे किया हुआ शिव पूजन धनवान तथा निर्धन दोनों को समान फल देता है। हे श्रीकृष्णजी! सबसे गुप्त तथा विशेष बात तो यह है कि शिव में अनन्य भक्ति हो तभी प्राणी की मुक्ति होती है!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

* छब्बीसवां अध्याय *

(सांगोपांग पूजन विधि)

उपमन्यु बोले–हे श्रीकृष्णजी ! शिव पूजन तो परम फलदायक है बड़े २ पापी, ब्रह्महत्यारे, मद्यप, चोर, गुरुपत्नी को कुदृष्टि से देखने वाले व्यभिचारी पुरुष भी यदि मन्त्रोंके बिना भी पूजन करे तो उनके सभी पाप तुरन्त क्षीण हो जाते हैं। इसी कारण पतित पुरुषों को अवश्य ही शिव पूजन करना चाहिए। बन्धन में पड़े मनुष्य के बन्धन मुक्तहोजाते हैं। शिव पंचाक्षर मन्त्र ही उनका निस्तारक है। जोभी तीन दो अथवा एक ही बार भी पंचाक्षर मन्त्र से निर्वाचन करता है। वह तो साक्षात महादेव होजाता है। यह मानव जन्म अत्यन्त कठिन मिलताहै। इसको पाकर जो शिवार्चन नहीं करता वह अपना जन्म खो रहा है। पूजन अर्चन करने वालों का ही जन्म सफल है। अतएव शिव पूजन भक्ति प्रत्येक मनुष्यके लिये आवश्यकहै। इसके समान तो कोई धर्म भी नहीं। पूजन करने के अनन्तर पारवारिक पुरुषों को तथा अन्य जीवों को भी प्रसाद बाँटना चाहिए।

* सत्ताईसवाँ अध्याय *

(अग्नि कृत्य विधान)

उपमन्यु बोले–हे श्रीकृष्णजी ! अबमैं आपको अग्नि कार्य सुनाता हूँ। अग्नि कृत्य तो कुण्ड, स्थंडिल, वेदी लोहे के पात्र अथवा मिट्टी के पात्र में कर्तव्य है उसमें विधि पूर्वक अग्नि स्थापन करे फिर शिव पूजन करके हवन करना आरम्भ करे। कुण्ड का बनाना तो पहिले कही विधि के अनुसार हो। उसकुण्डके चारोंतरफ तीन मेखला होनी चाहिए। पीपल के पत्तो के समान या हाथी के होठ की भाँति कुण्डमें योनि रचनाकरे। फिर कुण्डको मृत्तिका गोबर से लीये। पात्र माँजकर अग्निसे तपा ले। जिस वेदोक्त सूत्रके अनुसार हवन करना हो उसे कुण्डमें लिख दे। फिर कुशा पुष्पोंसे प्रोक्षित कर। अग्निदेव के आसनकी भावना करे। पूजार्थ तथा हवनकेलिये सभी साधन सामिग्री सिद्ध कर रखे। मणि द्वाराउत्पन्न

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

की हुई अथवा काष्ठ पैदा की गई अथवा किसी ब्राह्मण के घर से लाई गई अग्नि आधार के साथ ग्रहण करे। फिर कुण्ड की तीन बार परिक्रमा करके अग्निका बीज मन्त्र बोलता हुआ योनिमार्ग द्वारा कुंड में अग्नि स्थापना करे। मन्त्र ज्ञाता आचार्य अग्न्याधान पूर्वक आज्य सस्कार तक मूल मन्त्र द्वारा कार्य करे। फिर दक्षिणकी ओर शिवपूजन करके मन्त्रन्यासादि करके घृतमें धेनु मुद्रा दिखावे। सुक्रुश्रुवा आदि या तो तैजस पदार्थों के अथवा काष्ठके होनेचाहिये। इन्हें अग्निमें तपाकर प्रोक्षण करे। संस्कार की सिद्धि के निमित्त सात बीज मन्त्रों द्वारा होम करे। इस प्रकार की क्रिया से शिवाग्नि सम्पन्न हो जाती है। फिर शिव आसन स्मरण करे, उसीमें अर्घ नारीश्वर शिवका आव्हान करके पूजन करे। फिर दीपक तक सिंचन करे समिधाओं को होम करे। समिधायें तो बारह अंगुल उतनी ढाक की होनी चाहिये। दूर्वा दलों की भाँति घृत की आहुतियाँ दे। धान की खीलें, जौ, सरसों, तिल इन्हें घृतमें मिलाकर होम करे। घृतकी आहुतियों को श्रुवा द्वारा, सामग्री को हाथ द्वारा आहुतियां दे। यदि सब चीजे न मिल सकें तो एक ही के द्वारा हवन करे फिर तीन प्रायश्चित आहुतियाँ दे। फिर बाकी बचे तो घृतको श्रुवा में भर ले, उस पर एक पुष्प रखे, धर्म के साथ मूल से ढाँपकर वैषट तक मन्त्र द्वारा जो जितनी धारा द्वारा हवन करे। फिर विसर्जन करके अग्नि की रक्षा करे। फिर अग्निमें आसन कल्पित करके प्रथमवत आव्हान करे, देव देवी का पूजन करके कार्य समाप्त करे। वह भस्म अपबित्र स्थान पर न डाले। उसे लेकर मन्त्र द्वारा धारण करे। देव विसर्जन कर लेने के वाद भस्म ग्रहण करे। यही भस्म चन्ड भस्म कहाती है। अग्नि कृत्य समाप्त हो जाने पर शिव शास्त्रानुसार बलि कर्म करे। विद्यासन कन्यासन करके मण्डल को लीप ले विद्या को स्थापित करके उसे पुष्पादिकों से क्रमशः पूजे। फिर विद्या के सामने गुरु मण्डल रचना करे उस पर सुन्दर सा आसन बिछावे फूल आदिसे गुरु पूजन करे। उसके बाद पूजनीयों का पूजन भी होना चाहिये। फिर निर्धनों को भोजन

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

खिलावे। उसके बाद स्वयं भोजन करे। हविष्यान्न का भोजन हो वहभी देव निवेदित प्रसाद हो। फिर आचमन करे। शिव ध्यान करके अन्तः करण में मूल मन्त्र का जपन करे।

* अट्ठाईसवां अध्याय *

(नैमित्तिक पूजन विधि।)

श्री कृष्णजी बोले-हे श्रीकृष्णजी! सभी महीनोंके दोनों पक्षकीअष्टमी चतुर्दशी के दिन उत्तरायणमें संक्रान्ति आने पर ग्रहणकालमेंयर विशेष पूजन करे। माघके महीनेमें पंचगव्य को शोध करके उसके द्वारा शिव स्नान करावे। फिर स्वयं उसे पीवे। उसके पाने से ब्रह्मादिक पाप भीनष्ट हो जाते हैं। पौष के महीने में पुष्य नक्षत्र हो तो शिव की आरती करे। माघ महीने के मघा नक्षत्र में कम्बल घृत का दान करे। फागुन के उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र के दिन बड़ा उत्सव करे। चैत्र के चित्रा नक्षत्र में शिवजीको ढोला उत्सव करे। वैशाखके विशाखानक्षत्रमेंफूलमण्डली का उत्सब करे। जेठ के मूल नक्षत्र में शीतल जल का कुम्भदान करे। आषाढ़के उत्तराषाढ़में पवित्रब्रत धारणकरे। श्रावणके श्रवणनक्षत्रमेंप्राकृत प्रकारके सभी मण्डल बनाकर पूजन करे, श्रवण नक्षत्र हो उत्तराभाद्रपद नक्षत्र हो उसमें प्रोक्षण करे। पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में जलक्रीड़ा होनीचाहिये। असौज में खीर भोजन हो, शतभिषा नक्षत्रमें अग्निकर्म करे। कार्तिक के कृतिका नक्षत्र सहस्र दीपक जलाकरदान करे। मृगशिर महीने के आर्द्र नक्षत्र में बृत स्नान करावे यदि दोनों काम न हो सकें, शक्तिसे बाहर हों तो उत्सव अवश्य करे। पूजन भी विशेष करे। यदि शुभ कार्य किया जा रहा हो तो उसमें चित्त खेद को पावे, दुराचार में लगने लगे कोई कुस्वप्न देखा जावे। दुष्ट पुरुष दिखाई दे जाय। कोई उपद्रव हो। समय शुभ न हो रोगी हो जाय तो इन बातों में जपन स्नान, पूजन, ध्यान हवन, दानआदि कर्म पुरश्चरण प्रायश्चित में कर लेने चाहिये। उसके बाद शिराग्नि के समीप जाकर कार्य करे। जिस पुरुषका नित्यका धर्महो इस प्रकारसे वह एकही जन्ममें मोक्ष पा लेताहै।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

* उन्तीसवां अध्याय *

(काम्य कर्म निरूपण)

श्रीकृष्णजी बोले-हे महर्षे ! अब कृपा करके शिवधर्मके अधिकारी पुरुषोंका कर्त्तव्य कर्म निरूपण करे उपमन्यु बोले–हे श्री कृष्णजी ! ऐहिक एवं आयुष्मिक भेदसे कर्म दो प्रकार के होते हैं । फिर आयुष्मिककर्म पांच प्रकारके हैं । क्रियामय,तपोमय.जपमय, ध्यानमय, सर्वमय क्रियामय कर्म जिसमें हवन,दानपूजन आदि किये जाँय। यह कर्म शक्तिमान पुरुषोंसे सफल होते हैं । यह शक्ति भगवान शङ्करकी आज्ञाही मुख्य है । इसी कारण शिव आज्ञा पालक पुरुष का कर्तव्य है । वही पुरुष काम्य कर्म करे । यह काम्य कर्म तो इस लोक तथा परलोक में फलदायक है । शिव एव महेश्वर एक ही है । ज्ञान यज्ञ कर्ता शिव भक्त हैं । कर्म यज्ञ कर्ता भक्त महेश्वर है । तभी आभ्यन्तर कर्म शैव तथा वाहा कर्म महेश्वर हैं । गन्ध रस वर्ण आदि द्वारा भूमि परीक्षा कर के मन चाहे विधान पूर्ति के लिये पृथ्वी के पृष्ट पर प्रथम पूर्व दिशाकी उत्पत्ति करे । वहाँ पर एक हाथ अथवा दो हाथ मण्डल रचे । फिर पहिले की विधि से महेश्वर को पूजे । उसके बाद तीन तत्व से युक्त साक्षात विद्या मूर्ति सदाशिव की परम शक्तिद्वारा आह्वान करके पाँच उपकरणों के साथ २ पूजन करे । उसके बाद पाँच आवरणों का पूजन आरम्भ करे ।

* तीसवां अध्याय *

(आवरण पूजन का विधान)

उपमन्यु बोले-हे श्रीकृष्णजी ! सर्व प्रथम सदाशिव के दक्षण की ओर गणनायक,बाईं ओर कार्तिकेयस्वामी एवंचारों ओर ईशानसे लेकर सद्योजात तक क्रमशः इनको पूजे । फिर द्वितीय आवरण में पूर्व दिशाके पत्र में अनन्त वाई ओर और उसकी शक्ति दाईं ओर, शक्ति के साथ सूक्ष्मतत्व, पश्चिम की ओर शक्ति सहित शिव उत्तर दिशा में एक नेत्र ईशान कोण के एक दल में शक्ति सहित रुद्र इत्यादि क्रमशःपूजै । तृतीय आवरणमें क्रमशः आठों मूर्तियोंको पूजे फिर क्रमानुसार महादेव आदि

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

आरम्भ करके आठों प्रतिमाओं को पूजे। फिर देव-देव ईशान भवोद्भव को, अग्निकोण तथा पूर्व में दोनोंके मध्यमें पूजे। उसी आवरणमें वृषेन्द्र को पूजे। नदी को दक्षिण में, महाकाल को उत्तरमें, शास्त्रों को अग्निकोण में मातृकाओं को दक्षिणदिशाके दल में पूजे। गणपतिजीको नैऋत्य कोणमें पूजे। कार्तिक स्वामी को पश्चिम दिशामें, ज्येष्ठा को वायव्य में, गौरीजी को उत्तरमें,चण्डको ईशान कोण में पूजे। फिर चौथे आवरण में प्रथम ध्यान करे। फिर भानुको पूर्व दलमें, ब्रह्माको दक्षिण में रुद्रजी को पश्चिम में, विष्णुजी को उत्तर में इस प्रकार इन चारों देवताओं को पूजे। द्वितीय आवरण में भी चार मूर्तियों का पूजन आवश्यक है। इसके बाद आदित्य, भास्कर भानु, रवि इनको भी पूर्व आदि के क्रम से चारों तरफ पूजे। चन्द्र भौम, बुद्ध गुरु शुक्र शनि राहु केतु उन आठों ग्रहों को तृतीय आवरण में पूजे।

फिर चौथे आवरणमें ब्रह्माको पूजकर दक्षिण तथा पश्चिममें आवरणके साथ रुद्रको पूजे फिर क्रमसे हर एक देव आचार्य गुरु आदिको पूजे। पाँचवे आवरण में सब तरफ से देव योनियाँ पूजें। इस प्रकार देव देवियों को आवरण पूर्वक पूजकर विक्षेप शान्त्यर्थ फिर देवेश को पूजे। पञ्चाक्षर मन्त्र भी बोलता रहें। उसके बाद शङ्कर पार्वती के अर्थ अमृत के तुल्य अनेक शाक व्यंजन आदि के साथ २ शुद्ध चरु अर्पित करे। इस प्रकार पूजन पूर्ण करके स्तुति गायन करे फिर एक सौ आठ पञ्चाक्षरी विद्या जपे। क्रमानुसार गुरुदेव का पूजन करके श्रद्धासे सदस्यों को पूजें। फिर सभी आवरणों के साथ देव विसर्जन करे। यज्ञात्मक सभी सामग्री सामान के साथ २ मण्डल गुरुदेव आचार्य को अर्पित करे। इसे योगेश्वर योग कहा जाता है इसके तुल्य तो कोई योग भी नहीं। यह तो चिन्ता मणिके तुल्य है मन माँगी वस्तु देने वाला है।

——(❀)——

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

* इकत्तीसवाँ अध्याय *

(शिवस्तोत्र निरूपण)

उपमन्यु बोले-हे श्रीकृष्णजी ? अब हम आपको वह पवित्र स्तोत्र सुनायें जिसमें पंचवरण वर्णन है। सुनो—हे जगत के नाथ ? प्रकृतिसे सुन्दर नित्य चेतन स्वरूप सदा जय-जयकार हो। हे सरल स्वभाव पवित्र देहावान ! अति पवित्र चरित्रवान सर्व शक्ति सम्पन्न ! पुरुषोत्तम ! जय जय हो। हे मङ्गल मूर्ति देवाधिदेव ! आपको प्रणाम हो। हे प्रभो ! यह सम्पूर्ण विश्व आपके वशमें है। आप कृपा करके अपने भक्तोंकी कामनायें पूर्ण करें। हे जगत मातेश्वरी ! आप हमारे मनोरथ पूर्ण करें। हे गणनायकजी ! तथा स्कन्द भगवान ! तुम दोनों शिव आज्ञा पालक हो, शिवज्ञानरूप अमृतके पीने वाले हो आप भक्तजनों की रक्षा करो। हे पाँचों कलाओं से परिपूर्ण शिव ! मेरी अभिलाषायें पूर्ण करो। हे ब्रह्मन् ! सदाशिव के चरणारविन्दों में भक्ति करने वाले ! सदाशिव के पश्चिम मुखरूप भगवान ! मेरी कामना पूर्ण करें। हे आठ प्रकार की शक्तियों ! आप लोग भी शिव आज्ञा से हमारी कामनायें पूर्ण करें। सातों लोकोंकी माताओ ! परमेश्वर आज्ञा द्वारा ही आप प्रार्थना श्रवण करें। हे शङ्करपुत्र ! देवोंके विघ्नविनाशक ! विनायक ! आप सभी विघ्न निवृत्त करें। हे भगवान शङ्कर ! पञ्चावरण द्वारा संसार को आवृत्त करने वाले महादेव ! नमस्कार हो। हे श्रीकृष्णजी ! यह आवरण स्तोत्र है। इसे नित्य कीर्तन तथा श्रवण करने वाला सब पापों से छूटकर शिव सायुज्य पाता है।

* बत्तीसवां अध्याय *

(इस लोक की सिद्धियों के कर्मों का निरूपण)

उपमन्यु बोले-हे श्रीकृष्णजी ! अब मैं शिवभक्तों के लिये उन महान कर्मों का निरूपण करताहूंजिन में पूजन हवन, जपन, दान, तप ध्यानादिकों के फल शीघ्र प्राप्त होजाते हैं। सर्व प्रथम यन्त्रों मन्त्रों के अर्थ करते हैं। जब प्राण वायु जीत ली जाय तो अन्य सभी वायुओं पर

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

विजय होजाती है। क्रमानुसार अभ्यन्त किया गया यह प्राणायाम सभी दोषों को हटा देता है। शरीर की भी रक्षा करता है। जब प्राण वायु पर जय होजातीहै तो यह सभी लक्षण दिखाई दे जाते हैं। विष्टा, मूत्र कफ आदि सभी मन्द पड़ जाते हैं। श्वासवायु लम्बी तथा विलम्ब से आती जातीहै। हल्कापन द्रुत गमन, उत्साह बोलने में चातुर्य, सभी रोगोंका विनाश आदि सबके सब प्राणायाम की सिद्धिसे पूर्ण होजातेहै।

सब इन्द्रियां विसयोंमें संलग्न हुआ करतीहैं। विषयों से उन्हें खींच कर वश में कर लेने का नाम प्रत्याहार है। मन आदि सभी इन्द्रियाँ ग्रहण की जाय अथवा छौड़दी जाय तो वह स्वर्ग अथवा नरक के लिये होतीहैं। परम सुख तो और है उसको चाहने वाला विद्वान ज्ञान तथा वैराग्य को अपनाता है इसी कारण इन्द्रिय रूप घोड़े को वशमें करके आत्माका उद्धार करना सर्वोत्तमहै। चित्त एकाग्र कर लेना धारणा कहाती है। एक स्थान तो शिव हैं। उसमें चित्त को एकाग्र कर लेना उचितहै। अन्य सभी स्थान दोष वान हैं,इसलिये समय की अबधि बिचार करपरम स्थान सदाशिव में मन को स्थिर कर देना उचित है।

* तैंतीसवाँ अध्याय *

(योग गति में विघ्न)

उपमन्यु बोले-हे श्रीकृष्णजी! अब मैं योग में पड़ने वाले विघ्न कहता हूँ, आलस्य, व्याधि, प्रमदो, स्थान, संशय, चित्त, का एक जगह न टिकना, अश्रद्धा, भ्रांति दर्शन, दुःख, दौमनस्य,विषयके लिये चचलता इत्यादि दस प्रकार के विघ्न होते हैं। इन विघ्नों को सदैव शान्त करते रहना चाहिये। इनके शान्त हो जाने पर सिद्ध सूचक छः उपसर्गउत्पन्न होजातेहैं। प्रतिभा,श्रवण वार्ता दर्शन आस्वादन वेदना यही योगके विषय हैं। जब सूक्ष्म बीत जाते हैं विप्र कृष्ट नहीं होता और यथार्थ ज्ञान हो जाता हैयह प्रतिभा है। यत्न के बिना सभी शब्द सुनाई दे यह 'श्रवण'है। सभी मनुष्यों की बात समझ लेने को 'वार्ता' कहते हैं। प्रयत्न के बिना सभी पदार्थ दिखाई देने लग जाँय उसे 'दर्शन' कहते है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

दिव्य पदार्थों के स्वाद का नाम 'आस्वादन' है। सभी प्रकार के स्पर्शों का ज्ञान 'वेदना' है। इस प्रकार से योगी छः उपसर्ग पाकर सिद्ध होता है। अब में योग का प्रयोग कहता हूं। इस योग के प्रयोग का अभ्यास अग्नि तथा जल के पास सूखे पत्तों पर जहाँ डांस मक्खियाँहो उस स्थान पर हिंसक पशु सिन्ध आदि जहां हों, नदी नद हों समुद्र तट गली गोशाला विष्ठा मूत्र स्थान आदि जगहों पर न करे। यह तो शिव पृथ्वी हो पुष्पादिकों से विभूषित हो वितान आदि लगे हुए हों। कुश मन्दिर हो निर्जन वन हो शुभ देश हो सुन्दर लिपी पुती सुगन्धमयी जल फल फूल युक्त स्थान हो वहाँ पर शुभ समय देखकर करे। चिन्ता नहीं होनी चाहिये भूख प्यास से व्याकुलता न हो। थोड़ा भोजन, थोड़ा बोलना, कर्मों में थोड़ा पड़ना थोड़ा सोना शीघ्र जगजानां सभी परिश्रमों से रहित रहना इत्यादिक बातें सोचकर योग करे। आसन हो। सर्व प्रथम गुरुजनों की बन्दना करे। फिर सरल स्वभाव सीधी ग्रीवा सीधा मस्तक एवं वक्षस्थल सीधा करके मस्तक कुछ ऊंचा करके बैठजाय। उस समय दाँतों से दांत न टकरायें। जिव्हा अचल हो ऐड़ी से लेकर वृषणों पर्यन्त एवं इन्द्रियाँ ढकी रहें। अपने दोनों हाथ बिना यत्न जंघाओं पर हों। दांये हाथ के पृष्ट भाग बाँये तलपर रखकर धीरे पीठ ऊंची उठाकर छाती सामने तानकर अपनी नासिका का अग्रभाग देखते हुए प्राण वायु का निरोध करे। फिर पत्थर के समान निश्चल होजाय। अपनी देहके भीतर हृदय कमल है शिव पार्वतीजी का विचार तथा ध्यान यत्नके साथ करके उनका पूजन करे। मूल नासिका अग्र नाभि कण्ठ तालु छिद्र ललाट मस्तक भूमध्य द्वारदेश आदि अङ्गोंमें शिव स्मरण करे। सोलह दलों का कमल हृदय मध्यमें कल्पित करे। उसमें पूर्व से लेकर ककार से टकार पर्यन्त वर्ण विन्यास करे। मूलाधार कमल में तो वकार से सकार पर्यत बर्ण विन्यास करे। इन कमलों में जिस प्रकार मन का रमण हो उसे वहीं रमाकर धीर वुद्धि द्वारा देव देवीका चिन्तन करे। यदि योग द्वारा ध्यानी पृथ्वी आदि तत्वों पर विजय चाहे तो पहिले कहे अनुसार

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

स्थूल शिवमूर्ति को विचारे। ब्रह्मा से लेकर शिव पर्यन्त शिवजी की आठों स्थूल मूर्तियां शिव शास्त्रों में लिखी हुई हैं। उन्हीं आठों मूर्तियों को मुनि जनों ने घोरा मिश्र एवं प्रशान्त भेद से तीन प्रकार की कामना है। जो निपुण पुरुष फलाभिलाषी नहीं वे इन मूर्तियोंका चिन्तन करें। यदि घोरा मूर्तियों का ध्यान होतो पाप रोग नष्ट होते हैं। मिश्रित मूर्तियों का ध्यान अधिक कालमें फलदायकहै। प्रशांत मूर्तियां शीघ्र फलदायक हैं। सौम्यमूर्ति तो विशेष कर मोक्ष देती है। शांत मूर्ति बुद्धि को पवित्र करता है।

* चौतीसवाँ अध्याय *

(योग वर्णन)

उपमन्यु बोले-हे श्रीकृष्णजी! महादेवजी का योगी जनसदैव ध्यान किया करते हैं। इन्हीं के ध्यान तथा स्मरण से सभी सिद्धियां प्राप्त होती हैं। शिव ध्यान से सिद्धि होती है। जहाँ मन एकाग्र हो रहा हो वहाँ बार २ ध्यान करे। वह पहला ध्यान सविनय होताहै। उसके बाद यही निर्विषय होजाता है। सज्जन जनोंका सिद्धान्त है कि निर्विषय मन कभी ध्यान नहीं कर सकता। निर्विषय ध्यानी लोग तो कठिनता से बुद्धि के विस्तार का ध्यान करते हैं। निर्विषय ब्रह्ममें निर्विषय बुद्धिका प्रवेश होता है। इसी कारण सविषय ध्यान सूर्य किरणों के आश्रय वाला समझे। शान्ति, प्रशान्ति, दीप्ति, प्रसाद ये दिव्य सिद्धियाँ देवी ध्यान में प्राणायाम द्वारा सिद्ध होती हैं। सभी आपत्तियों का नाश शांतिहै। वाह्य आभ्यन्तर अन्धकार का विनाश प्रशान्ति है। वाह्य अभ्यन्तर प्रकाश को दीप्ति कहते हैं। बुद्धि का स्वस्थ होजाना प्रसाद है। जब बुद्धि का प्रसाद होजाता है। तब बाहर भीतर के सभी कार्य पूर्ण होजाते हैं। सबके सब कारण शीघ्र प्रसन्न होजातेहै। श्रद्धा पूर्वक एक क्षण भी यदि परमेश्वरका ध्यान लग जाय तो सभी पाप तत्काल नष्ट होजातेहैं। बुद्धि का प्रवाह जो ध्यान होताहै। उसका आश्रय ध्येय कहताहै। मुक्ति में विश्वास संपूर्ण ऐश्वर्य अणिमा आदि सिद्धियाँ ये सब शिव ध्यान से

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

प्राप्त होती हैं। शिवध्यान से तो सुख मोक्ष दोनों मिलते हैं। ज्ञानी एवं ध्यानी पुरुष ही संसार सागर से पार हो सकता है। ध्यान तुल्य कोई तीर्थ नहीं। अतएव ध्यान आवश्यक है। ज्ञान योग जानने की इच्छा भी अनेक यज्ञों से बढ़कर फल देती है योगीजन योग सिद्ध होकर लोक हितकेलिये भोग प्राप्त करके अपनी इच्छा में ही लोक भ्रमण करते है। और विषय सुख को तुच्छ मानते हुए वैराग्य करके सभी कर्मों को त्याग देते हैं। अनशन करके अथवा शिव अग्नि में अपने शरीर को होम करते हुए शिव तीर्थों का स्नान एवं शिव शास्त्र विधिके अनुसार देह त्याग आदि करते हैं। इससे उनकी मुक्ति हो जाती है। जो पुरुष बेबसी से भी शिव क्षेत्र में शरीर त्याग करते हैं। वेभी मुक्ति पा लेते हैं और जो शिवनिन्दकों को मार देते हैं अथवा उन्हींसे मारे जातेहैं, वे भी जन्म मरण के चक्रसे छूट जाते हैं।

* पैंतीसवाँ अध्याय *

(मुनि लोगों का नैमिषारण्य से गवन)

श्रीसूतजी बोले—हे मुनियो! इस प्रकार महर्षि उपमन्युजीने भगवान श्रीकृष्णजी को ज्ञान योग समझाया और उसी ज्ञान योग को श्रीवायु-देवजी ने ऋषियों के प्रति सुनाया। ऋषि गण जिसे सुनकर अत्यन्त हर्षित हुए उन्होंने वायुदेव को बार-बार प्रणाम किया। उसके बाद जब प्रातःकाल हुआ नैमिष तीर्थ में रहने वाले सभी मुनि जन यज्ञान्त स्नान करने के लिए परम पवित्र नदी को ढूंढ़ने चले। उस समय श्री ब्रह्माजीकी आज्ञा द्वारा वहाँ परम पवित्रा सरस्वती नदी बहने लग गई। उस पर सभी इकट्ठे होकर यज्ञान्त स्नान करने लगे। फिर सन्ध्या पितृ तर्पण आदि नित्य कृत्य करके ब्रह्माजी के पूर्वोक्त कथन को स्मरण करके वहीं से ही काशी धामके लिये चल दिये वहाँ पहुँचकर भागीरथी गङ्गाजी का पवित्र दर्शन तथा जल स्नान एवं परमात्मा विश्वनाथजी का दर्शन पूजन आदि विधि पूर्वककिया, परम आनन्द को प्राप्त हुए। फिर वहाँ से चल पड़े तब उन्हें एक परम दिव्य एवं अद्भुत सा प्रकाश दिखाई

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

देने लगा। वह इस प्रकार का तेज था जिसमें हजारों पाशुव्रत की सिद्धियां प्राप्त भस्मधारी मुनिजन विलीन हो रहे थे। उसके बाद वह तेज भी विलीन हो गया। इतना देखतेही नैमिषारण्य के सभी मुनि अचिन्त हुए तब शीघ्र ही ब्रह्माजीके दर्शनार्थ चल पड़े। ब्रह्म लोक में सभी मुनि ब्रह्माजी की सभा में प्रविष्ट हुए और उन्हें प्रणाम आदि करके बैठ गये। तब ब्रह्माजी ने कहा-हे मुनियो! सुनाओ आनन्द मङ्गल में तो हो ना? मैंने तो आप लोगों का वृतान्त वायुदेव द्वारा सुन लिया है। यह सुनकर मुनि बोले-हे पितामहजी! जब वायुदेव वहां से पधार आये तब हम सब ने यज्ञ समाप्त करके यज्ञान्त स्नान किया फिर श्रीगङ्गाजी होते हुए काशी में पहुँचे वहां गङ्ग स्नान विश्वनाथ दर्शन एवं पूजन करके जब वहाँ से हम चलने लगे तो हमें एक दिव्य तेज के दर्शन हुए उस तेज में सैकड़ों तपस्वी विलीन होते दिखाई देते थे और वह तेज स्वयं विलीन हो गया हमें इसका महान आश्चर्य हुआ इसी कारण हम लोग आपके चरणों में उपस्थित हुये हैं यह सुनकर ब्रह्माजी बोले-हे ऋषिगण! इस प्रकाश के दर्शन से तुमको शीघ्रातिशीघ्र दिव्य लोक की प्राप्ति होने वाली है। क्योंकि बहुत काल तक यज्ञों द्वारा भगवान शङ्करजी को आप लोगों ने संतुष्ट किया है उस तेज में प्रवेश करने वाले पाशुपत व्रतधारी मुनि लोग थे। उसी तेज ने इस संकेत द्वारा आपको ज्ञान दिया कि तुम भी अब पाशुपत व्रत धारण करो मोक्ष प्राप्ति होगी। अब तुम लोग शीघ्रतिशीघ्र सुमेरु पर्वत पर चले जाओ वहाँ मेरे श्रेष्ठ पुत्र सनत्कुमार जी के आने की राह देख रहे हैं क्योंकि यहाँ सनत्कुमार सर्व प्रथम अपने आपको योगीराज मानने लग गये थे। यह उनका अज्ञान था। तभी तो नम्रता रहित थे। वहां भगवान शङ्करजी आये तो अपने अभिमान के हेतु उनका कुछ भी स्वागत आदर नहीं किया। यह देखकर शिवजी के पार्षद नन्दजीने क्रोधमें आकर श्राप दे दिया कि हे सनत्कुमार! तुम ने भगवान शङ्करजी का आदर सत्कार नहीं किया इसी कारण तुम इस अभिमान का फल पाओ। ऊँट की योनि में तुम्हारा जन्म होगा।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

ब्रह्माजी बोले-उससमय इसप्रकार के पापसे मुक्ति दिलानेकेहेतु मैंने श्रीपावती जी की आराधना अर्चना की जिससे शङ्कर जी सन्तुष्ट हुए और सनत्कुमारजी की ऊंट योनि से मुक्ति। तब प्रसन्न हो नन्दीजी के प्रति यह भी कहा कि अपराधके कारण सनत्कुमारजी दण्ड तो पाचुके। अब उनको मेरे परम ज्ञान का उपदेश भी दो जिससे वह मेरे स्वरूपको समझ सकें और ब्रह्माजी के ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण मेरे परम तत्व का उनको पूर्ण ज्ञान होना चाहिए वे अब मेरी आज्ञा द्वारा तुमको अपना गुरु मानेंगे और धर्मराज के पद पर तुमको अभिषिक्त करेंगे। हे ऋषिजन? भगवान शंकरजी की आज्ञा सुनकर नन्दीश्वरजी ने यह बात स्वीकार कर ली। अब वही सनत्कुमारजी नन्दीश्वरजी की सन्तुष्टि के लिये सुमेरु पर्वत पर अचल भावसे तपमें संलग्न हैं। वहाँ तुम लोगों को नन्दीश्वरजी के अवश्य दर्शन मिल जांयगे।

* छत्तीसवां अध्याय *

(मुनियों को मोक्ष)

सूतजी बोले-हे मुनिजन! ब्रह्माजी के वचन सुनते ही वे उन को प्रणाम करके श्रीसनत्कुमारजी के निकट पहुँचने के लिये सुमेरु पर्वतपर पहुंच गए। उसके शिखर पर एक सुन्दर तालावके समीप ही बहुत से मुनि तपस्या कर रहे थे। उस तालाब के उत्तर में सनत्कुमारजी तपस्या में संलग्न थे। इस प्रकार उनका दर्शन करके मुनिजन प्रसन्न हुए और प्रणाम करके पास में बैठ गये।

फिर अपने नेत्र खोलकर श्रीसनत्कुमारजीने ऋषियोंको देखा और कहा कि हे ऋषिजन? आप लोग कहाँसे आ रहे हो? इतना सुनकर मुनिजनों नेअपना सम्पूर्ण वृत्तान्त कहा। उस समय गणोंके साथ श्री नन्दीश्वर जी भी विमाना रूढ़े होकर वहाँ आ गये। उनका दर्शन करके सारे ऋषियोंके साथ सनत्कुमारजीने अपने आसनसे उठकर साष्टांग दण्डवत प्रणाम किया और हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगे कि हे नन्दीश्वरजी? इन नैमिषारण्य निवासी मुनिजनों ने दस हजार वर्ष का

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta eGyaan Kosha

बड़ा विस्तृत यज्ञ किया है। उसकी समाप्ति होजाने पर फिर पितामह ब्रह्माजी आज्ञानुसार आपकी शरण पानेके हेतु यह लोग यहाँ आए है अब आप इनका परम कल्याण करें सूतजी बोले—इस प्रकार सनत्कुमारजी के वचन सुनकर नन्दीश्वरजी ने उन मुनियों की ओर कृपा दृष्टि द्वारा देखा। फिर शिवजी के दिव्य ज्ञानका उपदेश दिया हे ऋषियो ? यह परमज्ञान वेद व्यासजी को आकर सनत्कुमार जी ने सुनाया फिर मेरे गुरुदेव श्री वेद व्यासजीने यही परम ज्ञान मुझे दिया अब आकर मैंने आप लोगोंको सुनाया है। यह निःसंशय धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों पदार्थों को देने वाला है। इस पुराण को सुनाने से आप लोगों के साथ मैंने अपना भी कल्याण किया है। हे ऋषिगण ? अब मुझे जानेकी आज्ञादें। भगवानशंकर आपका कल्याण करें। इस प्रकार कहकर सूतजी चले गये। इसके बाद सभी ऋषि गणों ने प्रयाग तीर्थ पर जाकर अपना महान योग पूर्ण किया। कलियुग आ रहा है यह देखकर वे वाराणसी काशीधाममें चल दिये। यहाँ पशुपाश से मुक्ति की कामना द्वारा पाशुपत व्रत धारण किया। उनको सिद्धि का फल प्राप्त हो गया। उससे सम्पूर्ण ज्ञान पाकर अचल होकर शिव ध्यानमें मग्न हो गये।

शिव महापुराणकथा एक बार सुनने से सभी पाप मुक्त हो जाते हैं। दो बार सुननेसे शिवभक्त तीन बारसे शिवलोकमें शिव सायुज्य पा लेता है। इसी कारण कलिकाल में मोक्षाभिलाशी जन निरन्तर ही उस शिवपुराण की कथाएं सुनते रहे और इसका पूजन करते रहे क्योंकि इस पुराणकी कथाओं द्वारा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि भुक्ति एवं मुक्ति पाते है। ॥ इति श्रीशिव महापुराण सम्पूर्णम् ॥

Archaeological Survey of India,
Frontier Circle Library, Srinagar.
Acc. No. 3924
Date 20.12.69

श्री रामायण प्रेस, वृन्दावन दरवाजा, मथुरा।

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

ARCHAEOLOGICAL SURVEY OF INDIA
FRONTIER CIRCLE LIBRARY,
SRINAGAR.

—:o:—

Accession No. 3924

Class No. 294.592 *Book No.* _____

Pur | Vijas

DATE DUE

5.6.76			
8.9.77			
5.6.78-27			
10/11/81-21			

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

CIRCLE LIBRARY

Call No.

Author—

Title—

"A book that is shut is but a block"

CENTRAL ARCHAEOLOGICAL LIBRARY

GOVT. OF INDIA
Department of Archaeology
NEW DELHI.

Please help us to keep the book clean and moving.

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.

Digitized by eGangotri Siddhanta Gyaan Kosha

CC-0. ASI Srinagar Circle, Jammu Collection.